किताब-ए मुक़द्दस

तौरेत - तारीख़ी सहाइफ़ - सहाइफ़-ए हिक्मत और ज़बूर - सहाइफ़-ए अन्बिया - इंजील

अस्ल इब्रानी, अरामी और यूनानी मत्न से नया उर्दू तर्जुमा

नाशिरीन

जियोलिंक रीसोर्स कन्सल्टेंट्स

बार __________________________________ अव्वल

The Old and New Testament in Modern Urdu. Translated from the Original Hebrew, Aramaic and Greek

उर्दू जियो वर्झ़न (देवनागरी) Urdu Geo Version (UGV Devanagari) (beta version 121215)

© 2012 Geolink Resource Consultants, LLC

Published by
Geolink Resource Consultants, LLC
10307 W. Broad Street, # 169, Glen Allen, Virginia 23060
United States of America

http://urdugeoversion.com

जुम्ला हुक़ूक़ ब-हक़्क़-ए नाशिरीन, जियोलिंक रीसोर्स कन्सल्टेंट्स, एल-एल-सी महफ़ूज़ हैं

तौरेत

अस्ल इब्रानी मत्न से नया उर्दू तर्जुमा

पैदाइश

दुनिया की तख़्लीक़ का पहला दिन : रौशनी

1 1 इबतिदा में अल्लाह ने आस्मान और ज़मीन को
बनाया। 2 अभी तक ज़मीन वीरान और ख़ाली
थी। वह गहरे पानी से ढकी हुई थी जिस के ऊपर
अंधेरा ही अंधेरा था। अल्लाह का रूह पानी के ऊपर
मंडला रहा था।
3 फिर अल्लाह ने कहा, "रौशनी हो जाए" तो रौशनी
पैदा हो गई। 4 अल्लाह ने देखा कि रौशनी अच्छी है,
और उस ने रौशनी को तारीकी से अलग कर दिया।
5 अल्लाह ने रौशनी को दिन का नाम दिया और तारीकी
को रात का। शाम हुई, फिर सुब्ह। यूँ पहला दिन गुज़र
गया।

दूसरा दिन : आस्मान

6 अल्लाह ने कहा, "पानी के दर्मियान एक ऐसा
गुम्बद पैदा हो जाए जिस से निचला पानी ऊपर के
पानी से अलग हो जाए।" 7 ऐसा ही हुआ। अल्लाह ने
एक ऐसा गुम्बद बनाया जिस से निचला पानी ऊपर
के पानी से अलग हो गया। 8 अल्लाह ने गुम्बद को
आस्मान का नाम दिया। शाम हुई, फिर सुब्ह। यूँ
दूसरा दिन गुज़र गया।

तीसरा दिन : ख़ुश्क ज़मीन और पौदे

9 अल्लाह ने कहा, "जो पानी आस्मान के नीचे है
वह एक जगह जमा हो जाए ताकि दूसरी तरफ़ ख़ुश्क
जगह नज़र आए।" ऐसा ही हुआ। 10 अल्लाह ने ख़ुश्क
जगह को ज़मीन का नाम दिया और जमाशुदा पानी
को समुन्दर का। और अल्लाह ने देखा कि यह अच्छा
है। 11 फिर उस ने कहा, "ज़मीन हरियावल पैदा करे,
ऐसे पौदे जो बीज रखते हों और ऐसे दरख़्त जिन के
फल अपनी अपनी क़िस्म के बीज रखते हों।" ऐसा
ही हुआ। 12 ज़मीन ने हरियावल पैदा की, ऐसे पौदे जो
अपनी अपनी क़िस्म के बीज रखते और ऐसे दरख़्त
जिन के फल अपनी अपनी क़िस्म के बीज रखते थे।
अल्लाह ने देखा कि यह अच्छा है। 13 शाम हुई, फिर
सुब्ह। यूँ तीसरा दिन गुज़र गया।

चौथा दिन : सूरज, चाँद और सितारे

14 अल्लाह ने कहा, "आस्मान पर रौशनियाँ पैदा हो
जाएँ ताकि दिन और रात में इमतियाज़ हो और इसी
तरह मुख़्तलिफ़ मौसमों, दिनों और सालों में भी।
15 आस्मान की यह रौशनियाँ दुनिया को रौशन करें।"
ऐसा ही हुआ। 16 अल्लाह ने दो बड़ी रौशनियाँ बनाईं,
सूरज जो बड़ा था दिन पर हुकूमत करने को और
चाँद जो छोटा था रात पर। इन के इलावा उस ने
सितारों को भी बनाया। 17 उस ने उन्हें आस्मान पर
रखा ताकि वह दुनिया को रौशन करें, 18 दिन और
रात पर हुकूमत करें और रौशनी और तारीकी में
इमतियाज़ पैदा करें। अल्लाह ने देखा कि यह अच्छा
है। 19 शाम हुई, फिर सुब्ह। यूँ चौथा दिन गुज़र गया।

पाँचवाँ दिन : पानी और हवा के जानदार

20 अल्लाह ने कहा, "पानी आबी जानदारों से भर
जाए और फ़िज़ा में परिन्दे उड़ते फिरें।" 21 अल्लाह
ने बड़े बड़े समुन्दरी जानवर बनाए, पानी की तमाम
दीगर मख़्लूक़ात और हर क़िस्म के पर रखने वाले
जानदार भी बनाए। अल्लाह ने देखा कि यह अच्छा है।
22 उस ने उन्हें बर्कत दी और कहा, "फलो फूलो और
तादाद में बढ़ते जाओ। समुन्दर तुम से भर जाए। इसी
तरह परिन्दे ज़मीन पर तादाद में बढ़ जाएँ।" 23 शाम
हुई, फिर सुब्ह। यूँ पाँचवाँ दिन गुज़र गया।

छटा दिन : ज़मीन पर चलने वाले जानवर और इन्सान

24 अल्लाह ने कहा, “ज़मीन हर क़िस्म के जानदार पैदा करे : मवेशी, रेंगने वाले और जंगली जानवर।” ऐसा ही हुआ। 25 अल्लाह ने हर क़िस्म के मवेशी, रेंगने वाले और जंगली जानवर बनाए। उस ने देखा कि यह अच्छा है।

26 अल्लाह ने कहा, “आओ अब हम इन्सान को अपनी सूरत पर बनाएँ, वह हम से मुशाबहत रखे। वह तमाम जानवरों पर हुकूमत करे, समुन्दर की मछलियों पर, हवा के परिन्दों पर, मवेशियों पर, जंगली जानवरों पर और ज़मीन पर के तमाम रेंगने वाले जानदारों पर।” 27 यूँ अल्लाह ने इन्सान को अपनी सूरत पर बनाया, अल्लाह की सूरत पर। उस ने उन्हें मर्द और औरत बनाया। 28 अल्लाह ने उन्हें बर्कत दी और कहा, “फलो फूलो और तादाद में बढ़ते जाओ। दुनिया तुम से भर जाए और तुम उस पर इख़्तियार रखो। समुन्दर की मछलियों, हवा के परिन्दों और ज़मीन पर के तमाम रेंगने वाले जानदारों पर हुकूमत करो।”

29 अल्लाह ने उन से मज़ीद कहा, “तमाम बीजदार पौदे और फलदार दरख़्त तुम्हारे ही हैं। मैं उन्हें तुम को खाने के लिए देता हूँ। 30 इस तरह मैं तमाम जानवरों को खाने के लिए हरियाली देता हूँ। जिस में भी जान है वह यह खा सकता है, ख़्वाह वह ज़मीन पर चलने फिरने वाला जानूवर, हवा का परिन्दा या ज़मीन पर रेंगने वाला क्यूँ न हो।” ऐसा ही हुआ। 31 अल्लाह ने सब पर नज़र की तो देखा कि वह बहुत अच्छा बन गया है। शाम हुई, फिर सुब्ह। छटा दिन गुज़र गया।

सातवाँ दिन : आराम

2 1 यूँ आस्मान-ओ-ज़मीन और उन की तमाम चीज़ों की तख़्लीक़ मुकम्मल हुई। 2 सातवें दिन अल्लाह का सारा काम तक्मील को पहुँचा। इस से फ़ारिग़ हो कर उस ने आराम किया। 3 अल्लाह ने सातवें दिन को बर्कत दी और उसे मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस किया। क्यूँकि उस दिन उस ने अपने तमाम तख़्लीक़ी काम से फ़ारिग़ हो कर आराम किया।

आदम और हव्वा

4 यह आस्मान-ओ-ज़मीन की तख़्लीक़ का बयान है। जब रब्ब ख़ुदा ने आस्मान-ओ-ज़मीन को बनाया 5 तो शुरू में झाड़ियाँ और पौदे नहीं उगते थे। वजह यह थी कि अल्लाह ने बारिश का इन्तिज़ाम नहीं किया था। और अभी इन्सान भी पैदा नहीं हुआ था कि ज़मीन की खेतीबाड़ी करता। 6 इस की बजाय ज़मीन में से धुन्द उठ कर उस की पूरी सतह को तर करती थी। 7 फिर रब्ब ख़ुदा ने ज़मीन से मिट्टी ले कर इन्सान को तश्कील दिया और उस के नथनों में ज़िन्दगी का दम फूँका तो वह जीती जान हुआ।

8 रब्ब ख़ुदा ने मशरिक़ में मुल्क-ए-अदन में एक बाग़ लगाया। उस में उस ने उस आदमी को रखा जिसे उस ने बनाया था। 9 रब्ब ख़ुदा के हुक्म पर ज़मीन में से तरह तरह के दरख़्त फूट निकले, ऐसे दरख़्त जो देखने में दिलकश और खाने के लिए अच्छे थे। बाग़ के बीच में दो दरख़्त थे। एक का फल ज़िन्दगी बख़्शता था जबकि दूसरे का फल अच्छे और बुरे की पहचान दिलाता था। 10 अदन में से एक दरया निकल कर बाग़ की आबपाशी करता था। वहाँ से बह कर वह चार शाख़ों में तक़सीम हुआ। 11–12 पहली शाख़ का नाम फ़ीसून है। वह मुल्क-ए-हवीला को घेरे हुए बहती है जहाँ ख़ालिस सोना, गूगल का गूँद और अक़ीक़-ए-अह्मर[a] पाए जाते हैं। 13 दूसरी का नाम जैहून है जो कूश को घेरे हुए बहती है। 14 तीसरी का नाम दिजला है जो असूर के मशरिक़ को जाती है और चौथी का नाम फ़ुरात है।

15 रब्ब ख़ुदा ने पहले आदमी को बाग़-ए-अदन में रखा ताकि वह उस की बाग़बानी और हिफ़ाज़त करे।

---

[a] carnelian

16 लेकिन रब्ब ख़ुदा ने उसे आगाह किया, “तुझे हर
दरख़्त का फल खाने की इजाज़त है। 17 लेकिन जिस
दरख़्त का फल अच्छे और बुरे की पहचान दिलाता
है उस का फल खाना मना है। अगर उसे खाए तो
यक़ीनन मरेगा।”

18 रब्ब ख़ुदा ने कहा, “अच्छा नहीं कि आदमी
अकेला रहे। मैं उस के लिए एक मुनासिब मददगार
बनाता हूँ।”

19 रब्ब ख़ुदा ने मिट्टी से ज़मीन पर चलने फिरने
वाले जानवर और हवा के परिन्दे बनाए थे। अब वह
उन्हें आदमी के पास ले आया ताकि मालूम हो जाए
कि वह उन के क्या क्या नाम रखेगा। यूँ हर जानवर
को आदम की तरफ़ से नाम मिल गया। 20 आदमी ने
तमाम मवेशियों, परिन्दों और ज़मीन पर फिरने वाले
जानदारों के नाम रखे। लेकिन उसे अपने लिए कोई
मुनासिब मददगार न मिला।

21 तब रब्ब ख़ुदा ने उसे सुला दिया। जब वह गहरी
नींद सो रहा था तो उस ने उस की पसलियों में से एक
निकाल कर उस की जगह गोश्त भर दिया। 22 पसली
से उस ने औरत बनाई और उसे आदमी के पास ले
आया। 23 उसे देख कर वह पुकार उठा, “वाह! यह
तो मुझ जैसी ही है, मेरी हड्डियों में से हड्डी और मेरे
गोश्त में से गोश्त है। इस का नाम नारी रखा जाए
क्यूँकि वह नर से निकाली गई है।” 24 इस लिए मर्द
अपने माँ-बाप को छोड़ कर अपनी बीवी के साथ
पैवस्त हो जाता है, और वह दोनों एक हो जाते हैं।
25 दोनों, आदमी और औरत नंगे थे, लेकिन यह उन
के लिए शर्म का बाइस नहीं था।

गुनाह का आग़ाज़

3 1 साँप ज़मीन पर चलने फिरने वाले उन तमाम
जानवरों से ज़ियादा चालाक था जिन को रब्ब
ख़ुदा ने बनाया था। उस ने औरत से पूछा, “क्या
अल्लाह ने वाक़ई कहा कि बाग़ के किसी भी दरख़्त
का फल न खाना?” 2 औरत ने जवाब दिया, “हरगिज़
नहीं। हम बाग़ का हर फल खा सकते हैं, 3 सिर्फ़
उस दरख़्त के फल से गुरेज़ करना है जो बाग़ के
बीच में है। अल्लाह ने कहा कि उस का फल न
खाओ बल्कि उसे छूना भी नहीं, वर्ना तुम यक़ीनन
मर जाओगे।” 4 साँप ने औरत से कहा, “तुम हरगिज़
न मरोगे, 5 बल्कि अल्लाह जानता है कि जब तुम उस
का फल खाओगे तो तुम्हारी आँखें खुल जाएँगी और
तुम अल्लाह की मानिन्द हो जाओगे, तुम जो भी अच्छा
और बुरा है उसे जान लोगे।”

6 औरत ने दरख़्त पर ग़ौर किया कि खाने के
लिए अच्छा और देखने में भी दिलकश है। सब से
दिलफ़रेब बात यह कि उस से समझ हासिल हो
सकती है! यह सोच कर उस ने उस का फल ले कर
उसे खाया। फिर उस ने अपने शौहर को भी दे दिया,
क्यूँकि वह उस के साथ था। उस ने भी खा लिया।
7 लेकिन खाते ही उन की आँखें खुल गईं और उन को
मालूम हुआ कि हम नंगे हैं। चुनाँचे उन्हों ने अन्जीर
के पत्ते सी कर लुंगियाँ बना लीं।

8 शाम के वक़्त जब ठंडी हवा चलने लगी तो उन्हों
ने रब्ब ख़ुदा को बाग़ में चलते फिरते सुना। वह डर के
मारे दरख़्तों के पीछे छुप गए। 9 रब्ब ख़ुदा ने पुकार
कर कहा, “आदम, तू कहाँ है?” 10 आदम ने जवाब
दिया, “मैं ने तुझे बाग़ में चलते हुए सुना तो डर गया,
क्यूँकि मैं नंगा हूँ। इस लिए मैं छुप गया।” 11 उस ने
पूछा, “किस ने तुझे बताया कि तू नंगा है? क्या तू
ने उस दरख़्त का फल खाया है जिसे खाने से मैं ने
मना किया था?” 12 आदम ने कहा, “जो औरत तू ने
मेरे साथ रहने के लिए दी है उस ने मुझे फल दिया।
इस लिए मैं ने खा लिया।” 13 अब रब्ब ख़ुदा औरत
से मुख़ातिब हुआ, “तू ने यह क्यूँ किया?” औरत ने
जवाब दिया, “साँप ने मुझे बहकाया तो मैं ने खाया।”

14 रब्ब ख़ुदा ने साँप से कहा, “चूँकि तू ने यह
किया, इस लिए तू तमाम मवेशियों और जंगली
जानवरों में लानती है। तू उम्र भर पेट के बल रेंगेगा
और ख़ाक चाटेगा। 15 मैं तेरे और औरत के दर्मियान
दुश्मनी पैदा करूँगा। उस की औलाद तेरी औलाद

की दुश्मन होगी। वह तेरे सर को कुचल डालेगी
जबकि तू उस की एड़ी पर काटेगा।”
16 फिर रब्ब ख़ुदा औरत से मुख़ातिब हुआ और
कहा, “जब तू उम्मीद से होगी तो मैं तेरी तक्लीफ़ को
बहुत बढ़ाऊँगा। जब तेरे बच्चे होंगे तो तू शदीद दर्द
का शिकार होगी। तू अपने शौहर की तमन्ना करेगी
लेकिन वह तुझ पर हुकूमत करेगा।” 17 आदम से उस
ने कहा, “तू ने अपनी बीवी की बात मानी और उस
दरख़्त का फल खाया जिसे खाने से मैं ने मना किया
था। इस लिए तेरे सबब से ज़मीन पर लानत है। उस
से ख़ुराक हासिल करने के लिए तुझे उम्र भर मेहनत-
मशक़्क़त करनी पड़ेगी। 18 तेरे लिए वह ख़ारदार पौदे
और ऊँटकटारे पैदा करेगी, हालाँकि तू उस से अपनी
ख़ुराक भी हासिल करेगा। 19 पसीना बहा बहा कर
तुझे रोटी कमाने के लिए भाग-दौड़ करनी पड़ेगी।
और यह सिलसिला मौत तक जारी रहेगा। तू मेहनत
करते करते दुबारा ज़मीन में लौट जाएगा, क्यूँकि तू
उसी से लिया गया है। तू ख़ाक है और दुबारा ख़ाक
में मिल जाएगा।”
20 आदम ने अपनी बीवी का नाम हव्वा यानी
ज़िन्दगी रखा, क्यूँकि बाद में वह तमाम ज़िन्दों की माँ
बन गई। 21 रब्ब ख़ुदा ने आदम और उस की बीवी
के लिए खालों से लिबास बना कर उन्हें पहनाया।
22 उस ने कहा, “इन्सान हमारी मानिन्द हो गया है,
वह अच्छे और बुरे का इल्म रखता है। अब ऐसा
न हो कि वह हाथ बढ़ा कर ज़िन्दगी बख़्शने वाले
दरख़्त के फल से ले और उस से खा कर हमेशा
तक ज़िन्दा रहे।” 23 इस लिए रब्ब ख़ुदा ने उसे बाग़-
ए-अदन से निकाल कर उस ज़मीन की खेतीबाड़ी
करने की ज़िम्मादारी दी जिस में से उसे लिया गया
था। 24 इन्सान को ख़ारिज करने के बाद उस ने बाग़-
ए-अदन के मशरिक़ में करूबी फ़रिश्ते खड़े किए
और साथ साथ एक आतिशी तल्वार रखी जो इधर
उधर घूमती थी ताकि उस रास्ते की हिफ़ाज़त करे
जो ज़िन्दगी बख़्शने वाले दरख़्त तक पहुँचाता था।

क़ाबील और हाबील

4 1 आदम हव्वा से हमबिसतर हुआ तो उन का
पहला बेटा क़ाबील पैदा हुआ। हव्वा ने कहा,
“रब्ब की मदद से मैं ने एक मर्द हासिल किया है।”
2 बाद में क़ाबील का भाई हाबील पैदा हुआ। हाबील
भेड़-बक्रियों का चरवाहा बन गया जबकि क़ाबील
खेतीबाड़ी करने लगा।

पहला क़त्ल

3 कुछ देर के बाद क़ाबील ने रब्ब को अपनी
फ़सलों में से कुछ पेश किया। 4 हाबील ने भी नज़राना
पेश किया, लेकिन उस ने अपनी भेड़-बक्रियों के
कुछ पहलौठे उन की चर्बी समेत चढ़ाए। हाबील का
नज़राना रब्ब को पसन्द आया, 5 मगर क़ाबील का
नज़राना मन्ज़ूर न हुआ। यह देख कर क़ाबील बड़े
ग़ुस्से में आ गया, और उस का मुँह बिगड़ गया।
6 रब्ब ने पूछा, “तू ग़ुस्से में क्यूँ आ गया है? तेरा मुँह
क्यूँ लटका हुआ है? 7 क्या अगर तू अच्छी नीयत
रखता है तो अपनी नज़र उठा कर मेरी तरफ़ नहीं
देख सकेगा? लेकिन अगर अच्छी नीयत नहीं रखता
तो ख़बरदार! गुनाह दरवाज़े पर दबका बैठा है और
तुझे चाहता है। लेकिन तेरा फ़र्ज़ है कि उस पर ग़ालिब
आए।”
8 एक दिन क़ाबील ने अपने भाई से कहा, “आओ,
हम बाहर खुले मैदान में चलें।” और जब वह खुले
मैदान में थे तो क़ाबील ने अपने भाई हाबील पर हम्ला
करके उसे मार डाला।
9 तब रब्ब ने क़ाबील से पूछा, “तेरा भाई हाबील
कहाँ है?” क़ाबील ने जवाब दिया, “मुझे क्या पता!
क्या अपने भाई की देख-भाल करना मेरी ज़िम्मादारी
है?” 10 रब्ब ने कहा, “तू ने क्या किया है? तेरे भाई
का ख़ून ज़मीन में से पुकार कर मुझ से फ़र्याद कर रहा
है। 11 इस लिए तुझ पर लानत है और ज़मीन ने तुझे
रद्द किया है, क्यूँकि ज़मीन को मुँह खोल कर तेरे हाथ
से क़त्ल किए हुए भाई का ख़ून पीना पड़ा। 12 अब

से जब तू खेतीबाड़ी करेगा तो ज़मीन अपनी पैदावार देने से इन्कार करेगी। तू मफ़रूर हो कर मारा मारा फिरेगा।” [13]क़ाबील ने कहा, “मेरी सज़ा निहायत सख़्त है। मैं इसे बर्दाश्त नहीं कर पाऊँगा। [14]आज तू मुझे ज़मीन की सतह से भगा रहा है और मुझे तेरे हुज़ूर से भी छुप जाना है। मैं मफ़रूर की हैसियत से मारा मारा फिरता रहूँगा, इस लिए जिस को भी पता चलेगा कि मैं कहाँ हूँ वह मुझे क़त्ल कर डालेगा।” [15]लेकिन रब्ब ने उस से कहा, “हरगिज़ नहीं। जो क़ाबील को क़त्ल करे उस से सात गुना बदला लिया जाएगा।” फिर रब्ब ने उस पर एक निशान लगाया ताकि जो भी क़ाबील को देखे वह उसे क़त्ल न कर दे। [16]इस के बाद क़ाबील रब्ब के हुज़ूर से चला गया और अदन के मशरिक़ की तरफ़ नोद के इलाक़े में जा बसा।

क़ाबील का ख़ान्दान

[17]क़ाबील की बीवी हामिला हुई। बेटा पैदा हुआ जिस का नाम हनूक रखा गया। क़ाबील ने एक शहर तामीर किया और अपने बेटे की ख़ुशी में उस का नाम हनूक रखा। [18]हनूक का बेटा ईराद था, ईराद का बेटा महूयाएल, महूयाएल का बेटा मतूसाएल और मतूसाएल का बेटा लमक था। [19]लमक मतूसाएल की दो बीवियाँ थीं, अदा और ज़िल्ला। [20]अदा का बेटा याबल था। उस की नसल के लोग ख़ैमों में रहते और मवेशी पालते थे। [21]याबल का भाई यूबल था। उस की नसल के लोग सरोद [b]और बाँसरी बजाते थे। [22]ज़िल्ला के भी बेटा पैदा हुआ जिस का नाम तूबल-क़ाबील था। वह लोहार था। उस की नसल के लोग पीतल और लोहे की चीज़ें बनाते थे। तूबल-क़ाबील की बहन का नाम नामा था। [23]एक दिन लमक ने अपनी बीवियों से कहा, “अदा और ज़िल्ला, मेरी बात सुनो! लमक की बीवियो, मेरे अल्फ़ाज़ पर ग़ौर करो! [24]एक आदमी ने मुझे ज़ख़्मी किया तो मैं ने उसे मार डाला। एक लड़के ने मेरे चोट लगाई तो मैं ने उसे क़त्ल कर दिया। जो क़ाबील को क़त्ल करे उस से सात गुना बदला लिया जाएगा, लेकिन जो लमक को क़त्ल करे उस से सतत्तर गुना बदला लिया जाएगा।”

सेत और अनूस

[25]आदम और हव्वा का एक और बेटा पैदा हुआ। हव्वा ने उस का नाम सेत रख कर कहा, “अल्लाह ने मुझे हाबील की जगह जिसे क़ाबील ने क़त्ल किया एक और बेटा बख़्शा है।” [26]सेत के हाँ भी बेटा पैदा हुआ। उस ने उस का नाम अनूस रखा।

उन दिनों में लोग रब्ब का नाम ले कर इबादत करने लगे।

आदम से नूह तक का नसबनामा

5 [1]ज़ैल में आदम का नसबनामा दर्ज है। जब अल्लाह ने इन्सान को ख़लक़ किया तो उस ने उसे अपनी सूरत पर बनाया। [2]उस ने उन्हें मर्द और औरत पैदा किया। और जिस दिन उस ने उन्हें ख़लक़ किया उस ने उन्हें बर्कत दे कर उन का नाम आदम यानी इन्सान रखा।

[3]आदम की उम्र 130 साल थी जब उस का बेटा सेत पैदा हुआ। सेत सूरत के लिहाज़ से अपने बाप की मानिन्द था, वह उस से मुशाबहत रखता था। [4]सेत की पैदाइश के बाद आदम मज़ीद 800 साल ज़िन्दा रहा। उस के और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए। [5]वह 930 साल की उम्र में फ़ौत हुआ।

[6]सेत 105 साल का था जब उस का बेटा अनूस पैदा हुआ। [7]इस के बाद वह मज़ीद 807 साल ज़िन्दा रहा। उस के और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए। [8]वह 912 साल की उम्र में फ़ौत हुआ।

[9]अनूस 90 बरस का था जब उस का बेटा क़ीनान पैदा हुआ। [10]इस के बाद वह मज़ीद 815 साल

[b]लफ़्ज़ी तर्जुमा : चंग। चूँकि यह साज़ बर्र-ए-सग़ीर में कम ही इस्तेमाल होता है, इस लिए मुतर्जमीन ने इस की जगह लफ़्ज़ “सरोद” इस्तेमाल किया है।

ज़िन्दा रहा। उस के और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए।
11 वह 905 साल की उम्र में फ़ौत हुआ।
12 क़ीनान 70 साल का था जब उस का बेटा
महलल-एल पैदा हुआ। 13 इस के बाद वह मज़ीद
840 साल ज़िन्दा रहा। उस के और बेटे-बेटियाँ भी
पैदा हुए। 14 वह 910 साल की उम्र में फ़ौत हुआ।
15 महलल-एल 65 साल का था जब उस का बेटा
यारिद पैदा हुआ। 16 इस के बाद वह मज़ीद 830
साल ज़िन्दा रहा। उस के और बेटे-बेटियाँ भी पैदा
हुए। 17 वह 895 साल की उम्र में फ़ौत हुआ।
18 यारिद 162 साल का था जब उस का बेटा हनूक
पैदा हुआ। 19 इस के बाद वह मज़ीद 800 साल
ज़िन्दा रहा। उस के और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए।
20 वह 962 साल की उम्र में फ़ौत हुआ।
21 हनूक 65 साल का था जब उस का बेटा
मतूसिलह पैदा हुआ। 22 इस के बाद वह मज़ीद 300
साल अल्लाह के साथ चलता रहा। उस के और बेटे-
बेटियाँ भी पैदा हुए। 23 वह कुल 365 साल दुनिया में
रहा। 24 हनूक अल्लाह के साथ साथ चलता था। 365
साल की उम्र में वह ग़ाइब हुआ, क्यूँकि अल्लाह ने
उसे उठा लिया।
25 मतूसिलह 187 साल का था जब उस का बेटा
लमक पैदा हुआ। 26 वह मज़ीद 782 साल ज़िन्दा
रहा। उस के और बेटे और बेटियाँ भी पैदा हुए। 27 वह
969 साल की उम्र में फ़ौत हुआ।
28 लमक 182 साल का था जब उस का बेटा पैदा
हुआ। 29 उस ने उस का नाम नूह यानी तसल्ली रखा,
क्यूँकि उस ने उस के बारे में कहा, "हमारा खेतीबाड़ी
का काम निहायत तक्लीफ़दिह है, इस लिए कि
अल्लाह ने ज़मीन पर लानत भेजी है। लेकिन अब हम
बेटे की मारिफ़त तसल्ली पाएँगे।" 30 इस के बाद वह
मज़ीद 595 साल ज़िन्दा रहा। उस के और बेटे-बेटियाँ
भी पैदा हुए। 31 वह 777 साल की उम्र में फ़ौत हुआ।
32 नूह 500 साल का था जब उस के बेटे सिम, हाम
और याफ़त पैदा हुए।

लोगों की ज़ियादतियाँ

6 1 दुनिया में लोगों की तादाद बढ़ने लगी। उन के
हाँ बेटियाँ पैदा हुईं। 2 तब आस्मानी हस्तियों
ने देखा कि बनी नौ इन्सान की बेटियाँ ख़ूबसूरत हैं,
और उन्हों ने उन में से कुछ चुन कर उन से शादी की।
3 फिर रब्ब ने कहा, "मेरी रूह हमेशा के लिए इन्सान
में न रहे क्यूँकि वह फ़ानी मख़्लूक़ है। अब से वह
120 साल से ज़ियादा ज़िन्दा नहीं रहेगा।" 4 उन दिनों
में और बाद में भी दुनिया में देओ थे जो इन्सानी
औरतों और उन आस्मानी हस्तियों की शादियों से
पैदा हुए थे। यह देओ क़दीम ज़माने के मश्हूर सूर्मा
थे।
5 रब्ब ने देखा कि इन्सान निहायत बिगड़ गया है,
कि उस के तमाम ख़यालात लगातार बुराई की तरफ़
माइल रहते हैं। 6 वह पछताया कि मैं ने इन्सान को
बना कर दुनिया में रख दिया है, और उसे सख़्त दुख
हुआ। 7 उस ने कहा, "गो मैं ही ने इन्सान को ख़लक़
किया मैं उसे रू-ए-ज़मीन पर से मिटा डालूँगा। मैं
न सिर्फ़ लोगों को बल्कि ज़मीन पर चलने फिरने
और रेंगने वाले जानवरों और हवा के परिन्दों को
भी हलाक कर दूँगा, क्यूँकि मैं पछताता हूँ कि मैं ने
उन को बनाया।"

बड़े सैलाब के लिए नूह की तय्यारियाँ

8 सिर्फ़ नूह पर रब्ब की नज़र-ए-करम थी। 9 यह उस
की ज़िन्दगी का बयान है।
नूह रास्तबाज़ था। उस ज़माने के लोगों में सिर्फ़
वही बेक़ुसूर था। वह अल्लाह के साथ साथ चलता
था। 10 नूह के तीन बेटे थे, सिम, हाम और याफ़त।
11 लेकिन दुनिया अल्लाह की नज़र में बिगड़ी हुई और
ज़ुल्म-ओ-तशद्दुद से भरी हुई थी। 12 जहाँ भी अल्लाह
देखता दुनिया ख़राब थी, क्यूँकि तमाम जानदारों ने
ज़मीन पर अपनी रविश को बिगाड़ दिया था।
13 तब अल्लाह ने नूह से कहा, "मैं ने तमाम जानदारों
को ख़त्म करने का फ़ैसला किया है, क्यूँकि उन

के सबब से पूरी दुनिया ज़ुल्म-ओ-तशद्दुद से भर गई
है। चुनाँचे मैं उन को ज़मीन समेत तबाह कर दूँगा।
14 अब अपने लिए सर्व[c] की लकड़ी की कश्ती बना
ले। उस में कमरे हों और उसे अन्दर और बाहर
तारकोल लगा। 15 उस की लम्बाई 450 फ़ुट, चौड़ाई
75 फ़ुट और ऊँचाई 45 फ़ुट हो। 16 कश्ती की छत
को यूँ बनाना कि उस के नीचे 18 इंच खुला रहे। एक
तरफ़ दरवाज़ा हो, और उस की तीन मन्ज़िलें हों।
17 मैं पानी का इतना बड़ा सैलाब लाऊँगा कि वह
ज़मीन के तमाम जानदारों को हलाक कर डालेगा।
ज़मीन पर सब कुछ फ़ना हो जाएगा। 18 लेकिन तेरे
साथ मैं अह्द बाँधूँगा जिस के तहत तू अपने बेटों,
अपनी बीवी और बहूओं के साथ कश्ती में जाएगा।
19 हर क़िस्म के जानवर का एक नर और एक मादा
भी अपने साथ कश्ती में ले जाना ताकि वह तेरे साथ
जीते बचें। 20 हर क़िस्म के पर रखने वाले जानवर
और हर क़िस्म के ज़मीन पर फिरने या रेंगने वाले
जानवर दो दो हो कर तेरे पास आएँगे ताकि जीते बच
जाएँ। 21 जो भी ख़ुराक दरकार है उसे अपने और उन
के लिए जमा करके कश्ती में महफ़ूज़ कर लेना।”
22 नूह ने सब कुछ वैसा ही किया जैसा अल्लाह ने
उसे बताया।

सैलाब का आग़ाज़

7 1 फिर रब्ब ने नूह से कहा, “अपने घराने समेत
कश्ती में दाख़िल हो जा, क्यूँकि इस दौर के
लोगों में से मैं ने सिर्फ़ तुझे रास्तबाज़ पाया है। 2 हर
क़िस्म के पाक जानवरों में से सात सात नर-ओ-मादा
के जोड़े जबकि नापाक जानवरों में से नर-ओ-मादा
का सिर्फ़ एक एक जोड़ा साथ ले जाना। 3 इसी तरह
हर क़िस्म के पर रखने वालों में से सात सात नर-ओ-
मादा के जोड़े भी साथ ले जाना ताकि उन की नसलें
बची रहें। 4 एक हफ़्ते के बाद मैं चालीस दिन और
चालीस रात मुतवातिर बारिश बरसाऊँगा। इस से मैं
तमाम जानदारों को रू-ए-ज़मीन पर से मिटा डालूँगा,
अगरचि मैं ही ने उन्हें बनाया है।”
5 नूह ने वैसा ही किया जैसा रब्ब ने हुक्म दिया था।
6 वह 600 साल का था जब यह तूफ़ानी सैलाब ज़मीन
पर आया।
7 तूफ़ानी सैलाब से बचने के लिए नूह अपने बेटों,
अपनी बीवी और बहूओं के साथ कश्ती में सवार
हुआ। 8 ज़मीन पर फिरने वाले पाक और नापाक
जानवर, पर रखने वाले और तमाम रेंगने वाले जानवर
भी आए। 9 नर-ओ-मादा की सूरत में दो दो हो कर वह
नूह के पास आ कर कश्ती में सवार हुए। सब कुछ
वैसा ही हुआ जैसा अल्लाह ने नूह को हुक्म दिया था।
10 एक हफ़्ते के बाद तूफ़ानी सैलाब ज़मीन पर आ
गया।
11 यह सब कुछ उस वक़्त हुआ जब नूह 600 साल
का था। दूसरे महीने के 17वें दिन ज़मीन की गहराइयों
में से तमाम चश्मे फूट निकले और आस्मान पर पानी
के दरीचे खुल गए। 12 चालीस दिन और चालीस रात
तक मूसलाधार बारिश होती रही। 13 जब बारिश शुरू
हुई तो नूह, उस के बेटे सिम, हाम और याफ़त, उस
की बीवी और बहूएँ कश्ती में सवार हो चुके थे।
14 उन के साथ हर क़िस्म के जंगली जानवर, मवेशी,
रेंगने और पर रखने वाले जानवर थे। 15 हर क़िस्म
के जानदार दो दो हो कर नूह के पास आ कर कश्ती
में सवार हो चुके थे। 16 नर-ओ-मादा आए थे। सब
कुछ वैसा ही हुआ था जैसा अल्लाह ने नूह को हुक्म
दिया था। फिर रब्ब ने दरवाज़े को बन्द कर दिया।
17 चालीस दिन तक तूफ़ानी सैलाब जारी रहा।
पानी चढ़ा तो उस ने कश्ती को ज़मीन पर से उठा
लिया। 18 पानी ज़ोर पकड़ कर बहुत बढ़ गया, और
कश्ती उस पर तैरने लगी। 19 आख़िरकार पानी इतना
ज़ियादा हो गया कि तमाम ऊँचे पहाड़ भी उस में छुप
गए, 20 बल्कि सब से ऊँची चोटी पर पानी की गहराई
20 फ़ुट थी। 21 ज़मीन पर रहने वाली हर मख़्लूक़

[c] इब्रानी लफ़्ज़ मतरूक है। शायद इस का मतलब सर्व या देओदार की लकड़ी हो।

हलाक हुई। परिन्दे, मवेशी, जंगली जानवर, तमाम जानदार जिन से ज़मीन भरी हुई थी और इन्सान, सब कुछ मर गया। 22 ज़मीन पर हर जानदार मख़्लूक़ हलाक हुई। 23 यूँ हर मख़्लूक़ को रू-ए-ज़मीन पर से मिटा दिया गया। इन्सान, ज़मीन पर फिरने और रेंगने वाले जानवर और परिन्दे, सब कुछ ख़त्म कर दिया गया। सिर्फ़ नूह और कश्ती में सवार उस के साथी बच गए।

24 सैलाब डेढ़ सौ दिन तक ज़मीन पर ग़ालिब रहा।

सैलाब का इख़तिताम

8 1 लेकिन अल्लाह को नूह और तमाम जानवर याद रहे जो कश्ती में थे। उस ने हवा चला दी जिस से पानी कम होने लगा। 2 ज़मीन के चश्मे और आस्मान पर के पानी के दरीचे बन्द हो गए, और बारिश रुक गई। 3 पानी घटता गया। 150 दिन के बाद वह काफ़ी कम हो गया था। 4 सातवें महीने के 17वें दिन कशती अरारात के एक पहाड़ पर टिक गई। 5 दसवें महीने के पहले दिन पानी इतना कम हो गया था कि पहाड़ों की चोटियाँ नज़र आने लगी थीं।

6–7 चालीस दिन के बाद नूह ने कश्ती की खिड़की खोल कर एक कव्वा छोड़ दिया, और वह उड़ कर चला गया। लेकिन जब तक ज़मीन पर पानी था वह आता जाता रहा। 8 फिर नूह ने एक कबूतर छोड़ दिया ताकि पता चले कि ज़मीन पानी से निकल आई है या नहीं। 9 लेकिन कबूतर को कहीं भी बैठने की जगह न मिली, क्यूँकि अब तक पूरी ज़मीन पर पानी ही पानी था। वह कश्ती और नूह के पास वापस आ गया, और नूह ने अपना हाथ बढ़ाया और कबूतर को पकड़ कर अपने पास कश्ती में रख लिया।

10 उस ने एक हफ़्ता और इन्तिज़ार करके कबूतर को दुबारा छोड़ दिया। 11 शाम के वक़्त वह लौट आया। इस दफ़ा उस की चोंच में ज़ैतून का ताज़ा पत्ता था। तब नूह को मालूम हुआ कि ज़मीन पानी से निकल आई है।

12 उस ने मज़ीद एक हफ़्ते के बाद कबूतर को छोड़ दिया। इस दफ़ा वह वापस न आया।

13 जब नूह 601 साल का था तो पहले महीने के पहले दिन ज़मीन की सतह पर पानी ख़त्म हो गया। तब नूह ने कश्ती की छत खोल दी और देखा कि ज़मीन की सतह पर पानी नहीं है। 14 दूसरे महीने के 27वें दिन ज़मीन बिलकुल ख़ुश्क हो गई।

15 फिर अल्लाह ने नूह से कहा, 16 "अपनी बीवी, बेटों और बहूओं के साथ कश्ती से निकल आ। 17 जितने भी जानवर साथ हैं उन्हें निकाल दे, ख़्वाह परिन्दे हों, ख़्वाह ज़मीन पर फिरने या रेंगने वाले जानवर। वह दुनिया में फैल जाएँ, नसल बढ़ाएँ और तादाद में बढ़ते जाएँ।" 18 चुनाँचे नूह अपने बेटों, अपनी बीवी और बहूओं समेत निकल आया। 19 तमाम जानवर और परिन्दे भी अपनी अपनी क़िस्म के गुरोहों में कश्ती से निकले।

20 उस वक़्त नूह ने रब्ब के लिए क़ुर्बानगाह बनाई। उस ने तमाम फिरने और उड़ने वाले पाक जानवरों में से कुछ चुन कर उन्हें ज़बह किया और क़ुर्बानगाह पर पूरी तरह जला दिया। 21 यह क़ुर्बानियाँ देख कर रब्ब ख़ुश हुआ और अपने दिल में कहा, "अब से मैं कभी ज़मीन पर इन्सान की वजह से लानत नहीं भेजूँगा, क्यूँकि उस का दिल बचपन ही से बुराई की तरफ़ माइल है। अब से मैं कभी इस तरह तमाम जान रखने वाली मख़्लूक़ात को रू-ए-ज़मीन पर से नहीं मिटाऊँगा। 22 दुनिया के मुक़र्ररा औक़ात जारी रहेंगे। बीज बोने और फ़सल काटने का वक़्त, ठंड और तपिश, गर्मियों और सर्दियों का मौसम, दिन और रात, यह सब कुछ दुनिया के अख़ीर तक क़ाइम रहेगा।"

अल्लाह का नूह के साथ अह्द

9 1 फिर अल्लाह ने नूह और उस के बेटों को बर्कत दे कर कहा, "फलो फूलो और तादाद में बढ़ते जाओ। दुनिया तुम से भर जाए 2 ज़मीन पर फिरने और रेंगने वाले जानवर, परिन्दे और मछलियाँ सब

तुम से डरेंगे। उन्हें तुम्हारे इख़तियार में कर दिया
गया है। 3 जिस तरह मैं ने तुम्हारे खाने के लिए पौदों
की पैदावार मुक़र्रर की है इसी तरह अब से तुम्हें हर
क़िस्म के जानवर खाने की इजाज़त भी है। 4 लेकिन
ख़बरदार! ऐसा गोश्त न खाना जिस में ख़ून है, क्यूँकि
ख़ून में उस की जान है।

5 किसी की जान लेना मना है। जो ऐसा करेगा उसे
अपनी जान देनी पड़ेगी, ख़्वाह वह इन्सान हो या
हैवान। मैं ख़ुद इस का मुतालबा करूँगा। 6 जो भी
किसी का ख़ून बहाए उस का ख़ून भी बहाया जाएगा।
क्यूँकि अल्लाह ने इन्सान को अपनी सूरत पर बनाया
है।

7 अब फलो फूलो और तादाद में बढ़ते जाओ।
दुनिया में फैल जाओ।”

8 तब अल्लाह ने नूह और उस के बेटों से कहा,
9 “अब मैं तुम्हारे और तुम्हारी औलाद के साथ अह्द
क़ाइम करता हूँ। 10 यह अह्द उन तमाम जानवरों
के साथ भी होगा जो कश्ती में से निकले हैं यानी
परिन्दों, मवेशियों और ज़मीन पर के तमाम जानवरों
के साथ। 11 मैं तुम्हारे साथ अह्द बाँध कर वादा
करता हूँ कि अब से ऐसा कभी नहीं होगा कि ज़मीन
की तमाम ज़िन्दगी सैलाब से ख़त्म कर दी जाएगी।
अब से ऐसा सैलाब कभी नहीं आएगा जो पूरी ज़मीन
को तबाह कर दे। 12 इस अबदी अह्द का निशान
जो मैं तुम्हारे और तमाम जानदारों के साथ क़ाइम
कर रहा हूँ यह है कि 13 मैं अपनी कमान बादलों में
रखता हूँ। वह मेरे दुनिया के साथ अह्द का निशान
होगा। 14 जब कभी मेरे कहने पर आस्मान पर बादल
छा जाएँगे और क़ौस-ए-क़ुज़ह उन में से नज़र आएगी
15 तो मैं यह अह्द याद करूँगा जो तुम्हारे और तमाम
जानदारों के साथ किया गया है। अब कभी भी ऐसा
सैलाब नहीं आएगा जो तमाम ज़िन्दगी को हलाक
कर दे। 16 क़ौस-ए-क़ुज़ह नज़र आएगी तो मैं उसे देख
कर उस दाइमी अह्द को याद करूँगा जो मेरे और
दुनिया की तमाम जानदार मख़्लूक़ात के दर्मियान है।
17 यह उस अह्द का निशान है जो मैं ने दुनिया के
तमाम जानदारों के साथ किया है।”

नूह के बेटे

18 नूह के जो बेटे उस के साथ कश्ती से निकले
सिम, हाम और याफ़त थे। हाम कनआन का बाप था।
19 दुनिया भर के तमाम लोग इन तीनों की औलाद हैं।

20 नूह किसान था। शुरू में उस ने अंगूर का बाग़
लगाया। 21 अंगूर से मै बना कर उस ने इतनी पी ली
कि वह नशे में धुत अपने डेरे में नंगा पड़ा रहा।
22 कनआन के बाप हाम ने उसे यूँ पड़ा हुआ देखा
तो बाहर जा कर अपने दोनों भाइयों को उस के बारे
में बताया। 23 यह सुन कर सिम और याफ़त ने अपने
कंधों पर कपड़ा रखा। फिर वह उलटे चलते हुए
डेरे में दाख़िल हुए और कपड़ा अपने बाप पर डाल
दिया। उन के मुँह दूसरी तरफ़ मुड़े रहे ताकि बाप की
बरहनगी नज़र न आए।

24 जब नूह होश में आया तो उस को पता चला
कि सब से छोटे बेटे ने क्या किया है। 25 उस ने
कहा, “कनआन पर लानत! वह अपने भाइयों का
ज़लीलतरीन ग़ुलाम होगा।

26 मुबारक हो रब्ब जो सिम का ख़ुदा है। कनआन
सिम का ग़ुलाम हो। 27 अल्लाह करे कि याफ़त की
हुदूद बढ़ जाएँ। याफ़त सिम के डेरों में रहे और
कनआन उस का ग़ुलाम हो।”

28 सैलाब के बाद नूह मज़ीद 350 साल ज़िन्दा रहा।
29 वह 950 साल की उम्र में फ़ौत हुआ।

नूह की औलाद

10 1 यह नूह के बेटों सिम, हाम और याफ़त
का नसबनामा है। उन के बेटे सैलाब के
बाद पैदा हुए।

याफ़त की नसल

2 याफ़त के बेटे जुमर, माजूज, मादी, यावान, तूबल,
मसक और तीरास थे। 3 जुमर के बेटे अश्कनाज़,

रीफ़त और तुजर्मा थे। 4यावान के बेटे इलीसा और
तरसीस थे। कित्ती और दोदानी भी उस की औलाद
हैं। 5वह उन क़ौमों के आबा-ओ-अज्दाद हैं जो
साहिली इलाक़ों और जज़ीरों में फैल गईं। यह याफ़त
की औलाद हैं जो अपने अपने क़बीले और मुल्क में
रहते हुए अपनी अपनी ज़बान बोलते हैं।

हाम की नसल

6हाम के बेटे कूश, मिस्र, फ़ूत और कनआन थे।
7कूश के बेटे सिबा, हवीला, सब्ता, रामा और
सब्तका थे। रामा के बेटे सबा और ददान थे।
8कूश का एक और बेटा बनाम नमरूद था। वह
दुनिया में पहला ज़बरदस्त हाकिम था। 9रब्ब के
नज़्दीक वह ज़बरदस्त शिकारी था। इस लिए आज
भी किसी अच्छे शिकारी के बारे में कहा जाता है,
“वह नमरूद की मानिन्द है जो रब्ब के नज़्दीक
ज़बरदस्त शिकारी था।” 10उस की सल्तनत के पहले
मर्कज़ मुल्क-ए-सिनआर में बाबल, अरक, अक्काद
और कल्ना के शहर थे। 11उस मुल्क से निकल कर
वह असूर चला गया जहाँ उस ने नीनवा, रहोबोत-
ईर, कलह 12और रसन के शहर तामीर किए। बड़ा
शहर रसन नीनवा और कलह के दर्मियान वाक़े है।
13मिस्र इन क़ौमों का बाप था : लूदी, अनामी,
लिहाबी, नफ़्तूही, 14फ़त्रूसी, कस्लूही (जिन से
फ़िलिस्ती निकले) और कफ़्तूरी।
15कनआन का पहलौठा सैदा था। कनआन ज़ैल
की क़ौमों का बाप भी था : हित्ती 16यबूसी, अमोरी,
जिर्जासी, 17हिव्वी, अर्की, सीनी, 18अर्वादी, समारी
और हमाती। बाद में कनआनी क़बीले इतने फैल गए
19कि उन की हुदूद शिमाल में सैदा से जुनूब की तरफ़
जिरार से हो कर ग़ज़्ज़ा तक और वहाँ से मशरिक़ की
तरफ़ सदूम, अमूरा, अदमा और ज़बोईम से हो कर
लसा तक थीं।
20यह सब हाम की औलाद हैं, जो उन के अपने
अपने क़बीले, अपनी अपनी ज़बान, अपने अपने
मुल्क और अपनी अपनी क़ौम के मुताबिक़ दर्ज हैं।

सिम की नसल

21सिम याफ़त का बड़ा भाई था। उस के भी बेटे
पैदा हुए। सिम तमाम बनी इबर का बाप है।
22सिम के बेटे ऐलाम, असूर, अर्फ़क्सद, लूद और
अराम थे।
23अराम के बेटे ऊज़, हूल, जतर और मस थे।
24अर्फ़क्सद का बेटा सिलह और सिलह का बेटा
इबर था।
25इबर के हाँ दो बेटे पैदा हुए। एक का नाम फ़लज
यानी तक़्सीम था, क्यूँकि उन अय्याम में दुनिया
तक़्सीम हुई। फ़लज के भाई का नाम युक़्तान था।
26युक़्तान के बेटे अल्मूदाद, सलफ़, हसरमावत,
इराख़, 27हदूराम, ऊज़ाल, दिक़्ला, 28ऊबाल,
अबीमाएल, सबा, 29ओफ़ीर, हवीला और यूबाब थे।
यह सब युक़्तान के बेटे थे। 30वह मेसा से ले कर
सफ़ार और मशरिक़ी पहाड़ी इलाक़े तक आबाद थे।
31यह सब सिम की औलाद हैं, जो अपने अपने
क़बीले, अपनी अपनी ज़बान, अपने अपने मुल्क
और अपनी अपनी क़ौम के मुताबिक़ दर्ज हैं।
32यह सब नूह के बेटों के क़बीले हैं, जो अपनी
नसलों और क़ौमों के मुताबिक़ दर्ज किए गए हैं।
सैलाब के बाद तमाम क़ौमें इन ही से निकल कर
रू-ए-ज़मीन पर फैल गईं।

बाबल का बुर्ज

11 1उस वक़्त तक पूरी दुनिया के लोग एक
ही ज़बान बोलते थे। 2मशरिक़ की तरफ़
बढ़ते बढ़ते वह सिनआर के एक मैदान में पहुँच कर
वहाँ आबाद हुए। 3तब वह एक दूसरे से कहने लगे,
“आओ, हम मिट्टी से ईंटें बना कर उन्हें आग में ख़ूब
पकाएँ।” उन्हों ने तामीरी काम के लिए पत्थर की
जगह ईंटें और मसाले की जगह तारकोल इस्तेमाल
किया। 4फिर वह कहने लगे, “आओ, हम अपने
लिए शहर बना लें जिस में ऐसा बुर्ज हो जो आस्मान

तक पहुँच जाए फिर हमारा नाम क़ाइम रहेगा और
हम रू-ए-ज़मीन पर बिखर जाने से बच जाएँगे।”
5 लेकिन रब्ब उस शहर और बुर्ज को देखने के लिए
उतर आया जिसे लोग बना रहे थे। 6 रब्ब ने कहा,
“यह लोग एक ही क़ौम हैं और एक ही ज़बान बोलते
हैं। और यह सिर्फ़ उस का आग़ाज़ है जो वह करना
चाहते हैं। अब से जो भी वह मिल कर करना चाहेंगे
उस से उन्हें रोका नहीं जा सकेगा। 7 इस लिए आओ,
हम दुनिया में उतर कर उन की ज़बान को दर्हम-बर्हम
कर दें ताकि वह एक दूसरे की बात समझ न पाएँ।”
8 इस तरीक़े से रब्ब ने उन्हें तमाम रू-ए-ज़मीन पर
मुन्तशिर कर दिया, और शहर की तामीर रुक गई।
9 इस लिए शहर का नाम बाबल यानी अब्तरी ठहरा,
क्यूँकि रब्ब ने वहाँ तमाम लोगों की ज़बान को दर्हम-
बर्हम करके उन्हें तमाम रू-ए-ज़मीन पर मुन्तशिर कर
दिया।

सिम से अब्राम तक का नसबनामा

10 यह सिम का नसबनामा है :
सिम 100 साल का था जब उस का बेटा अर्फ़क्सद
पैदा हुआ। यह सैलाब के दो साल बाद हुआ। 11 इस
के बाद वह मज़ीद 500 साल ज़िन्दा रहा। उस के
और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए।
12 अर्फ़क्सद 35 साल का था जब सिलह पैदा
हुआ। 13 इस के बाद वह मज़ीद 403 साल ज़िन्दा
रहा। उस के और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए।
14 सिलह 30 साल का था जब इबर पैदा हुआ।
15 इस के बाद वह मज़ीद 403 साल ज़िन्दा रहा। उस
के और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए।
16 इबर 34 साल का था जब फ़लज पैदा हुआ।
17 इस के बाद वह मज़ीद 430 साल ज़िन्दा रहा। उस
के और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए।
18 फ़लज 30 साल का था जब रऊ पैदा हुआ।
19 इस के बाद वह मज़ीद 209 साल ज़िन्दा रहा।
उस के और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए।
20 रऊ 32 साल का था जब सरूज पैदा हुआ।
21 इस के बाद वह मज़ीद 207 साल ज़िन्दा रहा।
उस के और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए।
22 सरूज 30 साल का था जब नहूर पैदा हुआ।
23 इस के बाद वह मज़ीद 200 साल ज़िन्दा रहा। उस
के और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए।
24 नहूर 29 साल का था जब तारह पैदा हुआ।
25 इस के बाद वह मज़ीद 119 साल ज़िन्दा रहा।
उस के और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए।
26 तारह 70 साल का था जब उस के बेटे अब्राम,
नहूर और हारान पैदा हुए।
27 यह तारह का नसबनामा है : अब्राम, नहूर और
हारान तारह के बेटे थे। लूत हारान का बेटा था।
28 अपने बाप तारह की ज़िन्दगी में ही हारान कस्दियों
के ऊर में इन्तिक़ाल कर गया जहाँ वह पैदा भी हुआ
था।
29 बाक़ी दोनों बेटों की शादी हुई। अब्राम की बीवी
का नाम सारय था और नहूर की बीवी का नाम
मिल्काह। मिल्काह हारान की बेटी थी, और उस की
एक बहन बनाम इस्का थी। 30 सारय बाँझ थी, इस
लिए उस के बच्चे नहीं थे।
31 तारह कस्दियों के ऊर से रवाना हो कर मुल्क-
ए-कनआन की तरफ़ सफ़र करने लगा। उस के साथ
उस का बेटा अब्राम, उस का पोता लूत यानी हारान
का बेटा और उस की बहू सारय थे। जब वह हारान
पहुँचे तो वहाँ आबाद हो गए। 32 तारह 205 साल का
था जब उस ने हारान में वफ़ात पाई।

अब्राम की बुलाहट

12 1 रब्ब ने अब्राम से कहा, “अपने वतन,
अपने रिश्तेदारों और अपने बाप के घर को
छोड़कर उस मुल्क में चला जा जो मैं तुझे दिखाऊँगा।
2 मैं तुझ से एक बड़ी क़ौम बनाऊँगा, तुझे बर्कत दूँगा
और तेरे नाम को बहुत बढ़ाऊँगा। तू दूसरों के लिए
बर्कत का बाइस होगा। 3 जो तुझे बर्कत देंगे उन्हें मैं
भी बर्कत दूँगा। जो तुझ पर लानत करेगा उस पर मैं

भी लानत करूँगा। दुनिया की तमाम क़ौमें तुझ से
बर्कत पाएँगी।”
4 अब्राम ने रब्ब की सुनी और हारान से रवाना
हुआ। लूत उस के साथ था। उस वक़्त अब्राम 75
साल का था। 5 उस के साथ उस की बीवी सारय और
उस का भतीजा लूत थे। वह अपने नौकर-चाकरों
समेत अपनी पूरी मिल्कियत भी साथ ले गया जो उस
ने हारान में हासिल की थी। चलते चलते वह कनआन
पहुँचे। 6 अब्राम उस मुल्क में से गुज़र कर सिकम के
मक़ाम पर ठहर गया जहाँ मोरिह के बलूत का दरख़्त
था। उस ज़माने में मुल्क में कनआनी क़ौमें आबाद
थीं।
7 वहाँ रब्ब अब्राम पर ज़ाहिर हुआ और उस से
कहा, “मैं तेरी औलाद को यह मुल्क दूँगा।” इस लिए
उस ने वहाँ रब्ब की ताज़ीम में क़ुर्बानगाह बनाई जहाँ
वह उस पर ज़ाहिर हुआ था। 8 वहाँ से वह उस पहाड़ी
इलाक़े की तरफ़ गया जो बैत-एल के मशरिक़ में है।
वहाँ उस ने अपना ख़ैमा लगाया। मग़रिब में बैत-एल
था और मशरिक़ में अई। इस जगह पर भी उस ने
रब्ब की ताज़ीम में क़ुर्बानगाह बनाई और रब्ब का
नाम ले कर इबादत की।
9 फिर अब्राम दुबारा रवाना हो कर जुनूब के दश्त-
ए-नजब की तरफ़ चल पड़ा।

अब्राम मिस्र में

10 उन दिनों में मुल्क-ए-कनआन में काल पड़ा।
काल इतना सख़्त था कि अब्राम उस से बचने की
ख़ातिर कुछ देर के लिए मिस्र में जा बसा, लेकिन
परदेसी की हैसियत से। 11 जब वह मिस्र की सरहद्द
के क़रीब आए तो उस ने अपनी बीवी सारय से कहा,
“मैं जानता हूँ कि तू कितनी ख़ूबसूरत है। 12 मिस्री
तुझे देखेंगे, फिर कहेंगे, ‘यह इस का शौहर है।’ नतीजे
में वह मुझे मार डालेंगे और तुझे ज़िन्दा छोड़ेंगे।
13 इस लिए लोगों से यह कहते रहना कि मैं अब्राम
की बहन हूँ। फिर मेरे साथ अच्छा सुलूक किया
जाएगा और मेरी जान तेरे सबब से बच जाएगी।”
14 जब अब्राम मिस्र पहुँचा तो वाक़ई मिस्रियों ने
देखा कि सारय निहायत ही ख़ूबसूरत है। 15 और
जब फ़िरऔन के अफ़सरान ने उसे देखा तो उन्हों
ने फ़िरऔन के सामने सारय की तारीफ़ की।
आख़िरकार उसे महल में पहुँचाया गया। 16 फ़िरऔन
ने सारय की ख़ातिर अब्राम पर एहसान करके उसे
भेड़-बक्रियाँ, गाय-बैल, गधे-गधियाँ, नौकर-चाकर
और ऊँट दिए।
17 लेकिन रब्ब ने सारय के सबब से फ़िरऔन और
उस के घराने में सख़्त क़िस्म के अमराज़ फैलाए।
18 आख़िरकार फ़िरऔन ने अब्राम को बुला कर
कहा, “तू ने मेरे साथ क्या किया? तू ने मुझे क्यूँ
नहीं बताया कि सारय तेरी बीवी है? 19 तू ने क्यूँ
कहा कि वह मेरी बहन है? इस धोके की बिना पर
मैं ने उसे घर में रख लिया ताकि उस से शादी करूँ।
देख, तेरी बीवी हाज़िर है। इसे ले कर यहाँ से निकल
जा!” 20 फिर फ़िरऔन ने अपने सिपाहियों को हुक्म
दिया, और उन्हों ने अब्राम, उस की बीवी और पूरी
मिल्कियत को रुख़सत करके मुल्क से रवाना कर
दिया।

अब्राम और लूत अलग हो जाते हैं

13 1 अब्राम अपनी बीवी, लूत और तमाम
जायदाद को साथ ले कर मिस्र से निकला
और कनआन के जुनूबी इलाक़े दश्त-ए-नजब में
वापस आया।
2 अब्राम निहायत दौलतमन्द हो गया था। उस के
पास बहुत से मवेशी और सोना-चाँदी थी। 3 वहाँ से
जगह-ब-जगह चलते हुए वह आख़िरकार बैत-एल से
हो कर उस मक़ाम तक पहुँच गया जहाँ उस ने शुरू
में अपना डेरा लगाया था और जो बैत-एल और अई
के दर्मियान था। 4 वहाँ जहाँ उस ने क़ुर्बानगाह बनाई
थी उस ने रब्ब का नाम ले कर उस की इबादत की।
5 लूत के पास भी बहुत सी भेड़-बक्रियाँ, गाय-बैल
और ख़ैमे थे। 6 नतीजा यह निकला कि आख़िरकार
वह मिल कर न रह सके, क्यूँकि इतनी जगह नहीं

थी कि दोनों के रेवड़ एक ही जगह पर चर सकें।
7 अब्राम और लूत के चरवाहे आपस में झगड़ने लगे।
(उस ज़माने में कनआनी और फ़रिज़्ज़ी भी मुल्क में
आबाद थे।) 8 तब अब्राम ने लूत से बात की, "ऐसा
नहीं होना चाहिए कि तेरे और मेरे दर्मियान झगड़ा
हो या तेरे चरवाहों और मेरे चरवाहों के दर्मियान।
हम तो भाई हैं। 9 क्या ज़रूरत है कि हम मिल कर
रहें जबकि तू आसानी से इस मुल्क की किसी और
जगह रह सकता है। बेहतर है कि तू मुझ से अलग
हो कर कहीं और रहे। अगर तू बाएँ हाथ जाए तो मैं
दाएँ हाथ जाऊँगा, और अगर तू दाएँ हाथ जाए तो मैं
बाएँ हाथ जाऊँगा।"

10 लूत ने अपनी नज़र उठा कर देखा कि दरया-ए-
यर्दन के पूरे इलाक़े में ज़ुग़र तक पानी की कस्रत
है। वह रब्ब के बाग़ या मुल्क-ए-मिस्र की मानिन्द
था, क्यूँकि उस वक़्त रब्ब ने सदूम और अमूरा को
तबाह नहीं किया था। 11 चुनाँचे लूत ने दरया-ए-यर्दन
के पूरे इलाक़े को चुन लिया और मशरिक़ की तरफ़
जा बसा। यूँ दोनों रिश्तेदार एक दूसरे से जुदा हो गए।
12 अब्राम मुल्क-ए-कनआन में रहा जबकि लूत यर्दन
के इलाक़े के शहरों के दर्मियान आबाद हो गया।
वहाँ उस ने अपने ख़ैमे सदूम के क़रीब लगा दिए।
13 लेकिन सदूम के बाशिन्दे निहायत शरीर थे, और
उन के रब्ब के ख़िलाफ़ गुनाह निहायत मक्रूह थे।

रब्ब का अब्राम के साथ दुबारा वादा

14 लूत अब्राम से जुदा हुआ तो रब्ब ने अब्राम
से कहा, "अपनी नज़र उठा कर चारों तरफ़ यानी
शिमाल, जुनूब, मशरिक़ और मग़रिब की तरफ़ देख।
15 जो भी ज़मीन तुझे नज़र आए उसे मैं तुझे और
तेरी औलाद को हमेशा के लिए देता हूँ। 16 मैं तेरी
औलाद को ख़ाक की तरह बेशुमार होने दूँगा। जिस
तरह ख़ाक के ज़र्रे गिने नहीं जा सकते उसी तरह तेरी
औलाद भी गिनी नहीं जा सकेगी। 17 चुनाँचे उठ कर
इस मुल्क की हर जगह चल फिर, क्यूँकि मैं इसे तुझे
देता हूँ।"

18 अब्राम रवाना हुआ। चलते चलते उस ने अपने
डेरे हब्रून के क़रीब मम्रे के दरख़्तों के पास लगाए।
वहाँ उस ने रब्ब की ताज़ीम में क़ुर्बानगाह बनाई।

अब्राम लूत को छुड़ाता है

14 1 कनआन में जंग हुई। बैरून-ए-मुल्क
के चार बादशाहों ने कनआन के पाँच
बादशाहों से जंग की। बैरून-ए-मुल्क के बादशाह यह
थे : सिनआर से अम्राफ़िल, इल्लासर से अर्यूक, ऐलाम
से किदर्लाउमर और जोइम से तिदआल। 2 कनआन
के बादशाह यह थे : सदूम से बिरा, अमूरा से बिर्शा,
अदमा से सिन्याब, ज़बोईम से शिमेबर और बाला
यानी ज़ुग़र का बादशाह।

3 कनआन के इन पाँच बादशाहों का इत्तिहाद हुआ
था और वह सिद्दीम में जमा हुए थे। (अब सिद्दीम नहीं
है, क्यूँकि उस की जगह बहीरा-ए-मुर्दार आ गया है)।
4 किदर्लाउमर ने बारह साल तक उन पर हुकूमत की
थी, लेकिन तेरहवें साल वह बाग़ी हो गए थे।

5 अब एक साल के बाद किदर्लाउमर और उस के
इत्तिहादी अपनी फ़ौजों के साथ आए। पहले उन्हों ने
अस्तारात-क़र्नैम में रफ़ाइयों को, हाम में ज़ूज़ियों को,
सवी-क़िर्यताइम में ऐमियों को 6 और होरियों को उन
के पहाड़ी इलाक़े सईर में शिकस्त दी। यूँ वह एल-
फ़ारान तक पहुँच गए जो रेगिस्तान के किनारे पर
है। 7 फिर वह वापस आए और ऐन-मिस्फ़ात यानी
क़ादिस पहुँचे। उन्हों ने अमालीक़ियों के पूरे इलाक़े
को तबाह कर दिया और हससून-तमर में आबाद
अमोरियों को भी शिकस्त दी।

8 उस वक़्त सदूम, अमूरा, अदमा, ज़बोईम और
बाला यानी ज़ुग़र के बादशाह उन से लड़ने के लिए
सिद्दीम की वादी में जमा हुए। 9 इन पाँच बादशाहों ने
ऐलाम के बादशाह किदर्लाउमर, जोइम के बादशाह
तिदआल, सिनआर के बादशाह अम्राफ़िल और
इल्लासर के बादशाह अर्यूक का मुक़ाबला किया।
10 इस वादी में तारकोल के मुतअद्दिद गढ़े थे। जब
बाग़ी बादशाह शिकस्त खा कर भागने लगे तो सदूम

और अमूरा के बादशाह इन गढ़ों में गिर गए जबकि
बाक़ी तीन बादशाह बच कर पहाड़ी इलाक़े में फ़रार
हुए। 11 फ़त्हमन्द बादशाह सदूम और अमूरा का
तमाम माल तमाम खाने वाली चीज़ों समेत लूट कर
वापस चल दिए। 12 अब्राम का भतीजा लूत सदूम में
रहता था, इस लिए वह उसे भी उस की मिल्कियत
समेत छीन कर साथ ले गए।

13 लेकिन एक आदमी ने जो बच निकला था इब्रानी
मर्द अब्राम के पास आ कर उसे सब कुछ बता दिया।
उस वक़्त वह मम्रे के दरख़्तों के पास आबाद था। मम्रे
अमोरी था। वह और उस के भाई इस्काल और आनेर
अब्राम के इत्तिहादी थे। 14 जब अब्राम को पता चला
कि भतीजे को गिरिफ़्तार कर लिया गया है तो उस ने
अपने घर में पैदा हुए तमाम जंगआज़्मूदा ग़ुलामों को
जमा करके दान तक दुश्मन का ताक़्क़ुब किया। उस
के साथ 318 अफ़राद थे। 15 वहाँ उस ने अपने बन्दों
को गुरोहों में तक़्सीम करके रात के वक़्त दुश्मन पर
हम्ला किया। दुश्मन शिकस्त खा कर भाग गया और
अब्राम ने दमिश्क़ के शिमाल में वाक़े ख़ूबा तक उस
का ताक़्क़ुब किया। 16 वह उन से लूटा हुआ तमाम
माल वापस ले आया। लूत, उस की जायदाद, औरतें
और बाक़ी क़ैदी भी दुश्मन के क़ब्ज़े से बच निकले।

मलिक-ए-सिद्क़, सालिम का बादशाह

17 जब अब्राम किदर्लाउमर और उस के इत्तिहादियों
पर फ़त्ह पाने के बाद वापस पहुँचा तो सदूम का
बादशाह उस से मिलने के लिए वादी-ए-सवी में
आया। (इसे आजकल बादशाह की वादी कहा
जाता है।) 18 सालिम का बादशाह मलिक-ए-सिद्क़
भी वहाँ पहुँचा। वह अपने साथ रोटी और मै ले
आया। मलिक-ए-सिद्क़ अल्लाह तआला का इमाम
था। 19 उस ने अब्राम को बर्कत दे कर कहा, "अब्राम
पर अल्लाह तआला की बर्कत हो, जो आस्मान-ओ-
ज़मीन का ख़ालिक़ है। 20 अल्लाह तआला मुबारक
हो जिस ने तेरे दुश्मनों को तेरे हाथ में कर दिया है।"
अब्राम ने उसे तमाम माल का दसवाँ हिस्सा दिया।

21 सदूम के बादशाह ने अब्राम से कहा, "मुझे मेरे
लोग वापस कर दें और बाक़ी चीज़ें अपने पास रख
लें।" 22 लेकिन अब्राम ने उस से कहा, "मैं ने रब्ब
से क़सम खाई है, अल्लाह तआला से जो आस्मान-
ओ-ज़मीन का ख़ालिक़ है 23 कि मैं उस में से कुछ
नहीं लूँगा जो आप का है, चाहे वह धागा या जूती
का तस्मा ही क्यूँ न हो। ऐसा न हो कि आप कहें,
'मैं ने अब्राम को दौलतमन्द बना दिया है।' 24 सिवा-
ए-उस खाने के जो मेरे आदमियों ने रास्ते में खाया
है मैं कुछ क़बूल नहीं करूँगा। लेकिन मेरे इत्तिहादी
आनेर, इस्काल और मम्रे ज़रूर अपना अपना हिस्सा
लें।"

अब्राम के साथ रब्ब का अह्द

15 1 इस के बाद रब्ब रोया में अब्राम से
हमकलाम हुआ, "अब्राम, मत डर। मैं ही
तेरी सिपर हूँ, मैं ही तेरा बहुत बड़ा अज्र हूँ।"

2 लेकिन अब्राम ने एतिराज़ किया, "ऐ रब्ब क़ादिर-
ए-मुतलक़, तू मुझे क्या देगा जबकि अभी तक मेरे
हाँ कोई बच्चा नहीं है और इलीअज़र दमिश्क़ी मेरी
मीरास पाएगा। 3 तू ने मुझे औलाद नहीं बख़्शी, इस
लिए मेरे घराने का नौकर मेरा वारिस होगा।" 4 तब
अब्राम को अल्लाह से एक और कलाम मिला। "यह
आदमी इलीअज़र तेरा वारिस नहीं होगा बल्कि तेरा
अपना ही बेटा तेरा वारिस होगा।" 5 रब्ब ने उसे
बाहर ले जा कर कहा, "आस्मान की तरफ़ देख
और सितारों को गिनने की कोशिश कर। तेरी औलाद
इतनी ही बेशुमार होगी।"

6 अब्राम ने रब्ब पर भरोसा रखा। इस बिना पर
अल्लाह ने उसे रास्तबाज़ क़रार दिया।

7 फिर रब्ब ने उस से कहा, "मैं रब्ब हूँ जो तुझे
कस्दियों के ऊर से यहाँ ले आया ताकि तुझे यह
मुल्क मीरास में दे दूँ।" 8 अब्राम ने पूछा, "ऐ रब्ब
क़ादिर-ए-मुतलक़, मैं किस तरह जानूँकि इस मुल्क
पर क़ब्ज़ा करूँगा?" 9 जवाब में रब्ब ने कहा, "मेरे
हुज़ूर एक तीनसाला गाय, एक तीनसाला बक्री और

एक तीनसाला मेंढा ले आ। एक क़ुम्री और एक कबूतर का बच्चा भी ले आना।” 10 अब्राम ने ऐसा ही किया और फिर हर एक जानवर को दो हिस्सों में काट कर उन को एक दूसरे के आमने-सामने रख दिया। लेकिन परिन्दों को उस ने सालिम रहने दिया। 11 शिकारी परिन्दे उन पर उतरने लगे, लेकिन अब्राम उन्हें भगाता रहा।

12 जब सूरज डूबने लगा तो अब्राम पर गहरी नींद तारी हुई। उस पर दह्शत और अंधेरा ही अंधेरा छा गया। 13 फिर रब्ब ने उस से कहा, “जान ले कि तेरी औलाद ऐसे मुल्क में रहेगी जो उस का नहीं होगा। वहाँ वह अजनबी और ग़ुलाम होगी, और उस पर 400 साल तक बहुत ज़ुल्म किया जाएगा। 14 लेकिन मैं उस क़ौम की अदालत करूँगा जिस ने उसे ग़ुलाम बनाया होगा। इस के बाद वह बड़ी दौलत पा कर उस मुल्क से निकलेंगे। 15 तू ख़ुद उम्ररसीदा हो कर सलामती के साथ इन्तिक़ाल करके अपने बापदादा से जा मिलेगा और दफ़नाया जाएगा। 16 तेरी औलाद की चौथी पुश्त ग़ैरवतन से वापस आएगी, क्यूँकि उस वक़्त तक मैं अमोरियों को बर्दाश्त करूँगा। लेकिन आख़िरकार उन के गुनाह इतने संगीन हो जाएँगे कि मैं उन्हें मुल्क-ए-कनआन से निकाल दूँगा।”

17 सूरज ग़ुरूब हुआ। अंधेरा छा गया। अचानक एक धुआँदार तनूर और एक भड़कती हुई मशअल नज़र आई और जानवरों के दो दो टुकड़ों के बीच में से गुज़रे।

18 उस वक़्त रब्ब ने अब्राम के साथ अह्द किया। उस ने कहा, “मैं यह मुल्क-ए-मिस्र की सरहद्द से फ़ुरात तक तेरी औलाद को दूँगा, 19 अगरचि अभी तक इस में क़ीनी, क़निज़्ज़ी, कदमूनी, 20 हित्ती, फ़रिज़्ज़ी, रफ़ाई, 21 अमोरी, कनआनी, जिर्जासी और यबूसी आबाद हैं।”

हाजिरा और इस्माईल

16 1 अब तक अब्राम की बीवी सारय के कोई बच्चा नहीं हुआ था। लेकिन उन्हों ने एक मिस्री लौंडी रखी थी जिस का नाम हाजिरा था, 2 और एक दिन सारय ने अब्राम से कहा, “रब्ब ने मुझे बच्चे पैदा करने से महरूम रखा है, इस लिए मेरी लौंडी के साथ हमबिसतर हों। शायद मुझे उस की मारिफ़त बच्चा मिल जाए।”

अब्राम ने सारय की बात मान ली। 3 चुनाँचे सारय ने अपनी मिस्री लौंडी हाजिरा को अपने शौहर अब्राम को दे दिया ताकि वह उस की बीवी बन जाए उस वक़्त अब्राम को कनआन में बसते हुए दस साल हो गए थे। 4 अब्राम हाजिरा से हमबिसतर हुआ तो वह उम्मीद से हो गई। जब हाजिरा को यह मालूम हुआ तो वह अपनी मालिकन को हक़ीर जानने लगी। 5 तब सारय ने अब्राम से कहा, “जो ज़ुल्म मुझ पर किया जा रहा है वह आप ही पर आए। मैं ने ख़ुद इसे आप के बाज़ूओं में दे दिया था। अब जब इसे मालूम हुआ है कि उम्मीद से है तो मुझे हक़ीर जानने लगी है। रब्ब मेरे और आप के दर्मियान फ़ैसला करे।” 6 अब्राम ने जवाब दिया, “देखो, यह तुम्हारी लौंडी है और तुम्हारे इख़तियार में है। जो तुम्हारा जी चाहे उस के साथ करो।”

इस पर सारय उस से इतना बुरा सुलूक करने लगी कि हाजिरा फ़रार हो गई। 7 रब्ब के फ़रिश्ते को हाजिरा रेगिस्तान के उस चश्मे के क़रीब मिली जो शूर के रास्ते पर है। 8 उस ने कहा, “सारय की लौंडी हाजिरा, तू कहाँ से आ रही है और कहाँ जा रही है?” हाजिरा ने जवाब दिया, “मैं अपनी मालिकन सारय से फ़रार हो रही हूँ।” 9 रब्ब के फ़रिश्ते ने उस से कहा, “अपनी मालिकन के पास वापस चली जा और उस के ताबे रह। 10 मैं तेरी औलाद इतनी बढ़ाऊँगा कि उसे गिना नहीं जा सकेगा।” 11 रब्ब के फ़रिश्ते ने मज़ीद कहा, “तू उम्मीद से है। एक बेटा पैदा होगा। उस का नाम इस्माईल यानी ‘अल्लाह

सुनता है' रख, क्यूँकि रब्ब ने मुसीबत में तेरी आवाज़
सुनी। 12 वह जंगली गधे की मानिन्द होगा। उस का
हाथ हर एक के ख़िलाफ़ और हर एक का हाथ उस
के ख़िलाफ़ होगा। तो भी वह अपने तमाम भाइयों के
सामने आबाद रहेगा।"

13 रब्ब के उस के साथ बात करने के बाद हाजिरा
ने उस का नाम अत्ता-एल-रोई यानी 'तू एक माबूद
है जो मुझे देखता है' रखा। उस ने कहा, "क्या मैं ने
वाक़ई उस के पीछे देखा है जिस ने मुझे देखा है?"
14 इस लिए उस जगह के कुएँ का नाम 'बैर-लही-रोई'
यानी 'उस ज़िन्दा हस्ती का कुआँ जो मुझे देखता है'
पड़ गया। वह क़ादिस और बरद के दर्मियान वाक़े
है।

15 हाजिरा वापस गई, और उस के बेटा पैदा हुआ।
अब्राम ने उस का नाम इस्माईल रखा। 16 उस वक़्त
अब्राम 86 साल का था।

अह्द का निशान : ख़तना

17 1 जब अब्राम 99 साल का था तो रब्ब
उस पर ज़ाहिर हुआ। उस ने कहा, "मैं
अल्लाह क़ादिर-ए-मुतलक़ हूँ। मेरे हुज़ूर चलता रह
और बेइल्ज़ाम हो। 2 मैं तेरे साथ अपना अह्द बाँधूँगा
और तेरी औलाद बहुत ही ज़ियादा बढ़ा दूँगा।"

3 अब्राम मुँह के बल गिर गया, और अल्लाह ने उस
से कहा, 4 "मेरा तेरे साथ अह्द है कि तू बहुत क़ौमों
का बाप होगा। 5 अब से तू अब्राम यानी 'अज़ीम बाप'
नहीं कहलाएगा बल्कि तेरा नाम इब्राहीम यानी 'बहुत
क़ौमों का बाप' होगा। क्यूँकि मैं ने तुझे बहुत क़ौमों
का बाप बना दिया है। 6 मैं तुझे बहुत ही ज़ियादा
औलाद बख़्श दूँगा, इतनी कि क़ौमें बनेंगी। तुझ से
बादशाह भी निकलेंगे। 7 मैं अपना अह्द तेरे और
तेरी औलाद के साथ नसल-दर-नसल क़ाइम करूँगा,
एक अबदी अह्द जिस के मुताबिक़ मैं तेरा और
तेरी औलाद का ख़ुदा हूँगा। 8 तू इस वक़्त मुल्क-ए-
कनआन में परदेसी है, लेकिन मैं इस पूरे मुल्क को
तुझे और तेरी औलाद को देता हूँ। यह हमेशा तक
उन का ही रहेगा, और मैं उन का ख़ुदा हूँगा।"

9 अल्लाह ने इब्राहीम से यह भी कहा, "तुझे और तेरी
औलाद को नसल-दर-नसल मेरे अह्द की शराइत
पूरी करनी हैं। 10 इस की एक शर्त यह है कि हर एक
मर्द का ख़तना किया जाए 11 अपना ख़तना कराओ।
यह हमारे आपस के अह्द का ज़ाहिरी निशान होगा।
12 लाज़िम है कि तू और तेरी औलाद नसल-दर-नसल
अपने हर एक बेटे का आठवें दिन ख़तना करवाएँ।
यह उसूल उस पर भी लागू है जो तेरे घर में रहता
है लेकिन तुझ से रिश्ता नहीं रखता, चाहे वह घर में
पैदा हुआ हो या किसी अजनबी से ख़रीदा गया हो।
13 घर के हर एक मर्द का ख़तना करना लाज़िम है,
ख़्वाह वह घर में पैदा हुआ हो या किसी अजनबी से
ख़रीदा गया हो। यह इस बात का निशान होगा कि
मेरा तेरे साथ अह्द हमेशा तक क़ाइम रहेगा। 14 जिस
मर्द का ख़तना न किया गया उसे उस की क़ौम में से
मिटाया जाएगा, क्यूँकि उस ने मेरे अह्द की शराइत
पूरी न कीं।"

15 अल्लाह ने इब्राहीम से यह भी कहा, "अपनी बीवी
सारय का नाम भी बदल देना। अब से उस का नाम
सारय नहीं बल्कि सारा यानी शहज़ादी होगा। 16 मैं
उसे बर्कत बख़्शूँगा और तुझे उस की मारिफ़त बेटा
दूँगा। मैं उसे यहाँ तक बर्कत दूँगा कि उस से क़ौमें
बल्कि क़ौमों के बादशाह निकलेंगे।"

17 इब्राहीम मुँह के बल गिर गया। लेकिन दिल ही
दिल में वह हंस पड़ा और सोचा, "यह किस तरह हो
सकता है? मैं तो 100 साल का हूँ। ऐसे आदमी के हाँ
बच्चा किस तरह पैदा हो सकता है? और सारा जैसी
उम्ररसीदा औरत के बच्चा किस तरह पैदा हो सकता
है? उस की उम्र तो 90 साल है।" 18 उस ने अल्लाह से
कहा, "हाँ, इस्माईल ही तेरे सामने जीता रहे।"

19 अल्लाह ने कहा, "नहीं, तेरी बीवी सारा के हाँ बेटा
पैदा होगा। तू उस का नाम इस्हाक़ यानी 'वह हँसता
है' रखना। मैं उस के और उस की औलाद के साथ
अबदी अह्द बाँधूँगा। 20 मैं इस्माईल के सिलसिले में

भी तेरी दरख़्वास्त पूरी करूँगा। मैं उसे भी बर्कत दे
कर फलने फूलने दूँगा और उस की औलाद बहुत ही
ज़ियादा बढ़ा दूँगा। वह बारह रईसों का बाप होगा,
और मैं उस की मारिफ़त एक बड़ी क़ौम बनाऊँगा।
[21] लेकिन मेरा अह्द इस्हाक़ के साथ होगा, जो ऐन
एक साल के बाद सारा के हाँ पैदा होगा।"

[22] अल्लाह की इब्राहीम के साथ बात ख़त्म हुई, और
वह उस के पास से आस्मान पर चला गया।

[23] उसी दिन इब्राहीम ने अल्लाह का हुक्म पूरा किया।
उस ने घर के हर एक मर्द का ख़तना करवाया, अपने
बेटे इस्माईल का भी और उन का भी जो उस के घर
में रहते लेकिन उस से रिश्ता नहीं रखते थे, चाहे वह
उस के घर में पैदा हुए थे या ख़रीदे गए थे। [24] इब्राहीम
99 साल का था जब उस का ख़तना हुआ, [25] जबकि
उस का बेटा इस्माईल 13 साल का था। [26] दोनों का
ख़तना उसी दिन हुआ। [27] साथ साथ घराने के तमाम
बाक़ी मर्दों का ख़तना भी हुआ, बशमूल उन के जिन
का इब्राहीम के साथ रिश्ता नहीं था, चाहे वह घर में
पैदा हुए या किसी अजनबी से ख़रीदे गए थे।

मम्रे में इब्राहीम के तीन मेहमान

18 [1] एक दिन रब्ब मम्रे के दरख़्तों के पास
इब्राहीम पर ज़ाहिर हुआ। इब्राहीम अपने
ख़ैमे के दरवाज़े पर बैठा था। दिन की गर्मी उरूज पर
थी। [2] अचानक उस ने देखा कि तीन मर्द मेरे सामने
खड़े हैं। उन्हें देखते ही वह ख़ैमे से उन से मिलने के
लिए दौड़ा और मुँह के बल गिर कर सिज्दा किया।
[3] उस ने कहा, "मेरे आक़ा, अगर मुझ पर आप के
करम की नज़र है तो आगे न बढ़ें बल्कि कुछ देर
अपने बन्दे के घर ठहरें। [4] अगर इजाज़त हो तो मैं
कुछ पानी ले आऊँ ताकि आप अपने पाँओ धो कर
दरख़्त के साय में आराम कर सकें। [5] साथ साथ मैं
आप के लिए थोड़ा बहुत खाना भी ले आऊँ ताकि
आप तक़वियत पा कर आगे बढ़ सकें। मुझे यह करने
दें, क्यूँकि आप अपने ख़ादिम के घर आ गए हैं।"
उन्हों ने कहा, "ठीक है। जो कुछ तू ने कहा है वह
कर।"

[6] इब्राहीम ख़ैमे की तरफ़ दौड़ कर सारा के पास
आया और कहा, "जल्दी करो! 16 किलोग्राम
बेहतरीन मैदा ले और उसे गूँध कर रोटियाँ बना।"
[7] फिर वह भाग कर बैलों के पास पहुँचा। उन में से
उस ने एक मोटा-ताज़ा बछड़ा चुन लिया जिस का
गोश्त नर्म था और उसे अपने नौकर को दिया जिस
ने जल्दी से उसे तय्यार किया। [8] जब खाना तय्यार
था तो इब्राहीम ने उसे ले कर लस्सी और दूध के
साथ अपने मेहमानों के आगे रख दिया। वह खाने
लगे और इब्राहीम उन के सामने दरख़्त के साय में
खड़ा रहा।

[9] उन्हों ने पूछा, "तेरी बीवी सारा कहाँ है?" उस ने
जवाब दिया, "ख़ैमे में।" [10] रब्ब ने कहा, "ऐन एक
साल के बाद मैं वापस आऊँगा तो तेरी बीवी सारा
के बेटा होगा।"

सारा यह बातें सुन रही थी, क्यूँकि वह उस के पीछे
ख़ैमे के दरवाज़े के पास थी। [11] दोनों मियाँ-बीवी बूढ़े
हो चुके थे और सारा उस उम्र से गुज़र चुकी थी जिस
में औरतों के बच्चे पैदा होते हैं। [12] इस लिए सारा
अन्दर ही अन्दर हंस पड़ी और सोचा, "यह कैसे
हो सकता है? क्या जब मैं बुढ़ापे के बाइस घिसे फटे
लिबास की मानिन्द हूँ तो जवानी के जोबन का लुत्फ़
उठाऊँ? और मेरा शौहर भी बूढ़ा है।"

[13] रब्ब ने इब्राहीम से पूछा, "सारा क्यूँ हंस रही है?
वह क्यूँ कह रही है, 'क्या वाक़ई मेरे हाँ बच्चा पैदा
होगा जबकि मैं इतनी उम्ररसीदा हूँ?' [14] क्या रब्ब
के लिए कोई काम नामुम्किन है? एक साल के बाद
मुक़र्ररा वक़्त पर मैं वापस आऊँगा तो सारा के बेटा
होगा।" [15] सारा डर गई। उस ने झूट बोल कर इन्कार
किया, "मैं नहीं हंस रही थी।"

रब्ब ने कहा, "नहीं, तू ज़रूर हंस रही थी।"

इब्राहीम सदूम के लिए मिन्नत करता है

16 फिर मेहमान उठ कर रवाना हुए और नीचे वादी में सदूम की तरफ़ देखने लगे। इब्राहीम उन्हें रुख़्सत करने के लिए साथ साथ चल रहा था। 17 रब्ब ने दिल में कहा, "मैं इब्राहीम से वह काम क्यूँ छुपाए रखूँ जो मैं करने के लिए जा रहा हूँ? 18 इसी से तो एक बड़ी और ताक़तवर क़ौम निकलेगी और इसी से मैं दुनिया की तमाम क़ौमों को बर्कत दूँगा। 19 उसी को मैं ने चुन लिया है ताकि वह अपनी औलाद और अपने बाद के घराने को हुक्म दे कि वह रब्ब की राह पर चल कर रास्त और मुन्सिफ़ाना काम करें। क्यूँकि अगर वह ऐसा करें तो रब्ब इब्राहीम के साथ अपना वादा पूरा करेगा।"

20 फिर रब्ब ने कहा, "सदूम और अमूरा की बदी के बाइस लोगों की आहें बुलन्द हो रही हैं, क्यूँकि उन से बहुत संगीन गुनाह सरज़द हो रहे हैं। 21 मैं उतर कर उन के पास जा रहा हूँ ताकि देखूँ कि यह इल्ज़ाम वाक़ई सच्च हैं जो मुझ तक पहुँचे हैं। अगर ऐसा नहीं है तो मैं यह जानना चाहता हूँ।"

22 दूसरे दो आदमी सदूम की तरफ़ आगे निकले जबकि रब्ब कुछ देर के लिए वहाँ ठहरा रहा और इब्राहीम उस के सामने खड़ा रहा। 23 फिर उस ने क़रीब आ कर उस से बात की, "क्या तू रास्तबाज़ों को भी शरीरों के साथ तबाह कर देगा? 24 हो सकता है कि शहर में 50 रास्तबाज़ हों। क्या तू फिर भी शहर को बर्बाद कर देगा और उसे उन 50 के सबब से मुआफ़ नहीं करेगा? 25 यह कैसे हो सकता है कि तू बेक़ुसूरों को शरीरों के साथ हलाक कर दे? यह तो नामुम्किन है कि तू नेक और शरीर लोगों से एक जैसा सुलूक करे। क्या लाज़िम नहीं कि पूरी दुनिया का मुन्सिफ़ इन्साफ़ करे?"

26 रब्ब ने जवाब दिया, "अगर मुझे शहर में 50 रास्तबाज़ मिल जाएँ तो उन के सबब से तमाम को मुआफ़ कर दूँगा।"

27 इब्राहीम ने कहा, "मैं मुआफ़ी चाहता हूँ कि मैं ने रब्ब से बात करने की जुरअत की है अगरचि मैं ख़ाक और राख ही हूँ। 28 लेकिन हो सकता है कि सिर्फ़ 45 रास्तबाज़ उस में हों। क्या तू फिर भी उन पाँच लोगों की कमी के सबब से पूरे शहर को तबाह करेगा?" उस ने कहा, "अगर मुझे 45 भी मिल जाएँ तो उसे बर्बाद नहीं करूँगा।"

29 इब्राहीम ने अपनी बात जारी रखी, "और अगर सिर्फ़ 40 नेक लोग हों तो?" रब्ब ने कहा, "मैं उन 40 के सबब से उन्हें छोड़ दूँगा।"

30 इब्राहीम ने कहा, "रब्ब ग़ुस्सा न करे कि मैं एक दफ़ा और बात करूँ। शायद वहाँ सिर्फ़ 30 हों।" उस ने जवाब दिया, "फिर भी उन्हें छोड़ दूँगा।"

31 इब्राहीम ने कहा, "मैं मुआफ़ी चाहता हूँ कि मैं ने रब्ब से बात करने की जुरअत की है। अगर सिर्फ़ 20 पाए जाएँ?" रब्ब ने कहा, "मैं 20 के सबब से शहर को बर्बाद करने से बाज़ रहूँगा।"

32 इब्राहीम ने एक आख़िरी दफ़ा बात की, "रब्ब ग़ुस्सा न करे अगर मैं एक और बार बात करूँ। शायद उस में सिर्फ़ 10 पाए जाएँ।" रब्ब ने कहा, "मैं उसे उन 10 लोगों के सबब से भी बर्बाद नहीं करूँगा।"

33 इन बातों के बाद रब्ब चला गया और इब्राहीम अपने घर को लौट आया।

सदूम और अमूरा की तबाही

19 1 शाम के वक़्त यह दो फ़रिश्ते सदूम पहुँचे। लूत शहर के दरवाज़े पर बैठा था। जब उस ने उन्हें देखा तो खड़े हो कर उन से मिलने गया और मुँह के बल गिर कर सिज्दा किया। 2 उस ने कहा, "साहिबो, अपने बन्दे के घर तश्रीफ़ लाएँ ताकि अपने पाँओ धो कर रात को ठहरें और फिर कल सुब्ह-सवेरे उठ कर अपना सफ़र जारी रखें।" उन्हों ने कहा, "कोई बात नहीं, हम चौक में रात गुज़ारेंगे।" 3 लेकिन लूत ने उन्हें बहुत मज्बूर किया, और आख़िरकार वह उस के साथ उस के घर आए। उस ने उन के लिए

ख़ाना पकाया और बेख़मीरी रोटी बनाई। फिर उन्हों
ने ख़ाना ख़ाया।

4 वह अभी सोने के लिए लेटे नहीं थे कि शहर के
जवानों से ले कर बूढ़ों तक तमाम मर्दों ने लूत के
घर को घेर लिया। 5 उन्हों ने आवाज़ दे कर लूत से
कहा, “वह आदमी कहाँ हैं जो रात के वक़्त तेरे पास
आए? उन को बाहर ले आ ताकि हम उन के साथ
हरामकारी करें।”

6 लूत उन से मिलने बाहर गया। उस ने अपने पीछे
दरवाज़ा बन्द कर लिया 7 और कहा, “मेरे भाइयो,
ऐसा मत करो, ऐसी बदकारी न करो। 8 देखो, मेरी
दो कुंवारी बेटियाँ हैं। उन्हें मैं तुम्हारे पास बाहर ले
आता हूँ। फिर जो जी चाहे उन के साथ करो। लेकिन
इन आदमियों को छोड़ दो, क्यूँकि वह मेरे मेहमान
हैं।”

9 उन्हों ने कहा, “रास्ते से हट जा! देखो, यह शख़्स
जब हमारे पास आया था तो अजनबी था, और अब
यह हम पर हाकिम बनना चाहता है। अब तेरे साथ
उन से ज़ियादा बुरा सुलूक करेंगे।” वह उसे मज्बूर
करते करते दरवाज़े को तोड़ने के लिए आगे बढ़े।
10 लेकिन ऐन वक़्त पर अन्दर के आदमी लूत को
पकड़ कर अन्दर ले आए, फिर दरवाज़ा दुबारा बन्द
कर दिया। 11 उन्हों ने छोटों से ले कर बड़ों तक बाहर
के तमाम आदमियों को अंधा कर दिया, और वह
दरवाज़े को ढूँडते ढूँडते थक गए।

12 दोनों आदमियों ने लूत से कहा, “क्या तेरा कोई
और रिश्तेदार इस शहर में रहता है, मसलन कोई
दामाद या बेटा-बेटी? सब को साथ ले कर यहाँ से
चला जा, 13 क्यूँकि हम यह मक़ाम तबाह करने को
हैं। इस के बाशिन्दों की बदी के बाइस लोगों की
आहें बुलन्द हो कर रब्ब के हुज़ूर पहुँच गई हैं, इस
लिए उस ने हमें इस को तबाह करने के लिए भेजा
है।”

14 लूत घर से निकला और अपने दामादों से बात
की जिन का उस की बेटियों के साथ रिश्ता हो
चुका था। उस ने कहा, “जल्दी करो, इस जगह से
निकलो, क्यूँकि रब्ब इस शहर को तबाह करने को
है।” लेकिन उस के दामादों ने इसे मज़ाक़ ही समझा।

15 जब पौ फटने लगी तो दोनों आदमियों ने लूत
को बहुत समझाया और कहा, “जल्दी कर! अपनी
बीवी और दोनों बेटियों को साथ ले कर चला जा,
वर्ना जब शहर को सज़ा दी जाएगी तो तू भी हलाक हो
जाएगा।” 16 तो भी वह झिजकता रहा। आख़िरकार
दोनों ने लूत, उस की बीवी और बेटियों के हाथ
पकड़ कर उन्हें शहर के बाहर तक पहुँचा दिया,
क्यूँकि रब्ब को लूत पर तरस आता था।

17 जूँ ही वह उन्हें बाहर ले आए उन में से एक ने
कहा, “अपनी जान बचा कर चला जा। पीछे मुड़ कर
न देखना। मैदान में कहीं न ठहरना बल्कि पहाड़ों में
पनाह लेना, वर्ना तू हलाक हो जाएगा।”

18 लेकिन लूत ने उन से कहा, “नहीं मेरे आक़ा, ऐसा
न हो। 19 तेरे बन्दे को तेरी नज़र-ए-करम हासिल हुई
है और तू ने मेरी जान बचाने में बहुत मेहरबानी कर
दिखाई है। लेकिन मैं पहाड़ों में पनाह नहीं ले सकता।
वहाँ पहुँचने से पहले यह मुसीबत मुझ पर आन पड़ेगी
और मैं हलाक हो जाऊँगा। 20 देख, क़रीब ही एक
छोटा क़स्बा है। वह इतना नज़्दीक है कि मैं उस
तरफ़ हिज्रत कर सकता हूँ। मुझे वहाँ पनाह लेने दे।
वह छोटा ही है, ना? फिर मेरी जान बचेगी।”

21 उस ने कहा, “चलो, ठीक है। तेरी यह दरख़्वास्त
भी मन्ज़ूर है। मैं यह क़स्बा तबाह नहीं करूँगा।
22 लेकिन भाग कर वहाँ पनाह ले, क्यूँकि जब तक
तू वहाँ पहुँच न जाए मैं कुछ नहीं कर सकता।” इस
लिए क़स्बे का नाम ज़ुग़र यानी छोटा है।

23 जब लूत ज़ुग़र पहुँचा तो सूरज निकला हुआ था।
24 तब रब्ब ने आस्मान से सदूम और अमूरा पर गंधक
और आग बरसाई। 25 यूँ उस ने उस पूरे मैदान को उस
के शहरों, बाशिन्दों और तमाम हरियाली समेत तबाह
कर दिया। 26 लेकिन फ़रार होते वक़्त लूत की बीवी
ने पीछे मुड़ कर देखा तो वह फ़ौरन नमक का सतून
बन गई।

27 इब्राहीम सुब्ह-सवेरे उठ कर उस जगह वापस आया जहाँ वह कल रब्ब के सामने खड़ा हुआ था। 28 जब उस ने नीचे सदूम, अमूरा और पूरी वादी की तरफ़ नज़र की तो वहाँ से भट्टे का सा धुआँ उठ रहा था।

29 यूँ अल्लाह ने इब्राहीम को याद किया जब उस ने उस मैदान के शहर तबाह किए। क्यूँकि उस ने उन्हें तबाह करने से पहले लूत को जो उन में आबाद था वहाँ से निकाल लाया।

लूत और उस की बेटियाँ

30 लूत और उस की बेटियाँ ज़ियादा देर तक ज़ुग़र में न ठहरे। वह रवाना हो कर पहाड़ों में आबाद हुए, क्यूँकि लूत ज़ुग़र में रहने से डरता था। वहाँ उन्हों ने एक ग़ार को अपना घर बना लिया।

31 एक दिन बड़ी बेटी ने छोटी से कहा, "अब्बू बूढ़ा है और यहाँ कोई मर्द है नहीं जिस के ज़रीए हमारे बच्चे पैदा हो सकें। 32 आओ, हम अब्बू को मै पिलाएँ। जब वह नशे में धुत हो तो हम उस के साथ हमबिसतर हो कर अपने लिए औलाद पैदा करें ताकि हमारी नसल क़ाइम रहे।"

33 उस रात उन्हों ने अपने बाप को मै पिलाई। जब वह नशे में था तो बड़ी बेटी अन्दर जा कर उस के साथ हमबिसतर हुई। चूँकि लूत होश में नहीं था इस लिए उसे कुछ भी मालूम न हुआ। 34 अगले दिन बड़ी बहन ने छोटी बहन से कहा, "पिछली रात मैं अब्बू से हमबिसतर हुई। आओ, आज रात को हम उसे दुबारा मै पिलाएँ। जब वह नशे में धुत हो तो तुम उस के साथ हमबिसतर हो कर अपने लिए औलाद पैदा करना ताकि हमारी नसल क़ाइम रहे।" 35 चुनाँचे उन्हों ने उस रात भी अपने बाप को मै पिलाई। जब वह नशे में था तो छोटी बेटी उठ कर उस के साथ हमबिसतर हुई। इस बार भी वह होश में नहीं था, इस लिए उसे कुछ भी मालूम न हुआ।

36 यूँ लूत की बेटियाँ अपने बाप से उम्मीद से हुईं। 37 बड़ी बेटी के हाँ बेटा पैदा हुआ। उस ने उस का नाम मोआब रखा। उस से मोआबी निकले हैं। 38 छोटी बेटी के हाँ भी बेटा पैदा हुआ। उस ने उस का नाम बिन-अम्मी रखा। उस से अम्मोनी निकले हैं।

इब्राहीम और अबीमलिक

20 1 इब्राहीम वहाँ से जुनूब की तरफ़ दश्त-ए-नजब में चला गया और क़ादिस और शूर के दर्मियान जा बसा। कुछ देर के लिए वह जिरार में ठहरा, लेकिन अजनबी की हैसियत से। 2 वहाँ उस ने लोगों को बताया, "सारा मेरी बहन है।" इस लिए जिरार के बादशाह अबीमलिक ने किसी को भिजवा दिया कि उसे महल में ले आए।

3 लेकिन रात के वक़्त अल्लाह ख़्वाब में अबीमलिक पर ज़ाहिर हुआ और कहा, "मौत तेरे सर पर खड़ी है, क्यूँकि जो औरत तू अपने घर ले आया है वह शादीशुदा है।"

4 असल में अबीमलिक अभी तक सारा के क़रीब नहीं गया था। उस ने कहा, "मेरे आक़ा, क्या तू एक बेक़ुसूर क़ौम को भी हलाक करेगा? 5 क्या इब्राहीम ने मुझ से नहीं कहा था कि सारा मेरी बहन है? और सारा ने उस की हाँ में हाँ मिलाई। मेरी नीयत अच्छी थी और मैं ने ग़लत काम नहीं किया।" 6 अल्लाह ने कहा, "हाँ, मैं जानता हूँ कि इस में तेरी नीयत अच्छी थी। इस लिए मैं ने तुझे मेरा गुनाह करने और उसे छूने से रोक दिया। 7 अब उस औरत को उस के शौहर को वापस कर दे, क्यूँकि वह नबी है और तेरे लिए दुआ करेगा। फिर तू नहीं मरेगा। लेकिन अगर तू उसे वापस नहीं करेगा तो जान ले कि तेरी और तेरे लोगों की मौत यक़ीनी है।"

8 अबीमलिक ने सुब्ह-सवेरे उठ कर अपने तमाम कारिन्दों को यह सब कुछ बताया। यह सुन कर उन पर दह्शत छा गई। 9 फिर अबीमलिक ने इब्राहीम को बुला कर कहा, "आप ने हमारे साथ क्या किया है? मैं ने आप के साथ क्या ग़लत काम किया कि आप ने मुझे और मेरी सल्तनत को इतने संगीन जुर्म में फंसा दिया है? जो सुलूक आप ने हमारे साथ कर

दिखाया है वह किसी भी शख़्स के साथ नहीं करना चाहिए। 10 आप ने यह क्यूँ किया?”

11 इब्राहीम ने जवाब दिया, “मैं ने अपने दिल में कहा कि यहाँ के लोग अल्लाह का ख़ौफ़ नहीं रखते होंगे, इस लिए वह मेरी बीवी को हासिल करने के लिए मुझे क़त्ल कर देंगे। 12 हक़ीक़त में वह मेरी बहन भी है। वह मेरे बाप की बेटी है अगरचि उस की और मेरी माँ फ़र्क़ हैं। यूँ मैं उस से शादी कर सका। 13 फिर जब अल्लाह ने होने दिया कि मैं अपने बाप के घराने से निकल कर इधर उधर फिरूँ तो मैं ने अपनी बीवी से कहा, ‘मुझ पर यह मेहरबानी कर कि जहाँ भी हम जाएँ मेरे बारे में कह देना कि वह मेरा भाई है’।”

14 फिर अबीमलिक ने इब्राहीम को भेड़-बक्रियाँ, गाय-बैल, ग़ुलाम और लौंडियाँ दे कर उस की बीवी सारा को उसे वापस कर दिया। 15 उस ने कहा, “मेरा मुल्क आप के लिए खुला है। जहाँ जी चाहे उस में जा बसें।” 16 सारा से उस ने कहा, “मैं आप के भाई को चाँदी के हज़ार सिक्के देता हूँ। इस से आप और आप के लोगों के सामने आप के साथ किए गए नारवा सुलूक का इज़ाला हो और आप को बेक़ुसूर क़रार दिया जाए।”

17–18 तब इब्राहीम ने अल्लाह से दुआ की और अल्लाह ने अबीमलिक, उस की बीवी और उस की लौंडियों को शिफ़ा दी, क्यूँकि रब्ब ने अबीमलिक के घराने की तमाम औरतों को सारा के सबब से बाँझ बना दिया था। लेकिन अब उन के हाँ दुबारा बच्चे पैदा होने लगे।

इस्हाक़ की पैदाइश

21 1 तब रब्ब ने सारा के साथ वैसा ही किया जैसा उस ने फ़रमाया था। जो वादा उस ने सारा के बारे में किया था उसे उस ने पूरा किया। 2 वह हामिला हुई और बेटा पैदा हुआ। ऐन उस वक़्त बूढ़े इब्राहीम के हाँ बेटा पैदा हुआ जो अल्लाह ने मुक़र्रर करके उसे बताया था।

3 इब्राहीम ने अपने इस बेटे का नाम इस्हाक़ यानी ‘वह हँसता है’ रखा। 4 जब इस्हाक़ आठ दिन का था तो इब्राहीम ने उस का ख़तना कराया, जिस तरह अल्लाह ने उसे हुक्म दिया था। 5 जब इस्हाक़ पैदा हुआ उस वक़्त इब्राहीम 100 साल का था। 6 सारा ने कहा, “अल्लाह ने मुझे हंसाया, और हर कोई जो मेरे बारे में यह सुनेगा हंसेगा। 7 इस से पहले कौन इब्राहीम से यह कहने की जुरअत कर सकता था कि सारा अपने बच्चों को दूध पिलाएगी? और अब मेरे हाँ बेटा पैदा हुआ है, अगरचि इब्राहीम बूढ़ा हो गया है।”

8 इस्हाक़ बड़ा होता गया। जब उस का दूध छुड़ाया गया तो इब्राहीम ने उस के लिए बड़ी ज़ियाफ़त की।

इब्राहीम हाजिरा और इस्माईल को निकाल देता है

9 एक दिन सारा ने देखा कि मिस्री लौंडी हाजिरा का बेटा इस्माईल इस्हाक़ का मज़ाक़ उड़ा रहा है। 10 उस ने इब्राहीम से कहा, “इस लौंडी और उस के बेटे को घर से निकाल दें, क्यूँकि वह मेरे बेटे इस्हाक़ के साथ मीरास नहीं पाएगा।”

11 इब्राहीम को यह बात बहुत बुरी लगी। आख़िर इस्माईल भी उस का बेटा था। 12 लेकिन अल्लाह ने उस से कहा, “जो बात सारा ने अपनी लौंडी और उस के बेटे के बारे में कही है वह तुझे बुरी न लगे। सारा की बात मान ले, क्यूँकि तेरी नसल इस्हाक़ ही से क़ाइम रहेगी। 13 लेकिन मैं इस्माईल से भी एक क़ौम बनाऊँगा, क्यूँकि वह तेरा बेटा है।”

14 इब्राहीम सुब्ह-सवेरे उठा। उस ने रोटी और पानी की मश्क हाजिरा के कंधों पर रख कर उसे लड़के के साथ घर से निकाल दिया। हाजिरा चलते चलते बैर-सबा के रेगिस्तान में इधर उधर फिरने लगी। 15 फिर पानी ख़त्म हो गया। हाजिरा लड़के को किसी झाड़ी के नीचे छोड़ कर 16 कोई 300 फ़ुट दूर बैठ गई। क्यूँकि उस ने दिल में कहा, “मैं उसे मरते नहीं देख सकती।” वह वहाँ बैठ कर रोने लगी।

17 लेकिन अल्लाह ने बेटे की रोती हुई आवाज़ सुन
ली। अल्लाह के फ़रिश्ते ने आस्मान पर से पुकार कर
हाजिरा से बात की, “हाजिरा, क्या बात है? मत डर,
क्यूँकि अल्लाह ने लड़के का जो वहाँ पड़ा है रोना सुन
लिया है। 18 उठ, लड़के को उठा कर उस का हाथ
थाम ले, क्यूँकि मैं उस से एक बड़ी क़ौम बनाऊँगा।”
19 फिर अल्लाह ने हाजिरा की आँखें खोल दीं, और
उस की नज़र एक कुएँ पर पड़ी। वह वहाँ गई और
मश्क को पानी से भर कर लड़के को पिलाया।
20 अल्लाह लड़के के साथ था। वह जवान हुआ और
तीरअन्दाज़ बन कर बियाबान में रहने लगा। 21 जब
वह फ़ारान के रेगिस्तान में रहता था तो उस की माँ
ने उसे एक मिस्री औरत से ब्याह दिया।

अबीमलिक के साथ अहद

22 उन दिनों में अबीमलिक और उस के
सिपाहसालार फ़ीकुल ने इब्राहीम से कहा, “जो कुछ
भी आप करते हैं अल्लाह आप के साथ है। 23 अब मुझ
से अल्लाह की क़सम खाएँ कि आप मुझे और मेरी
आल-ओ-औलाद को धोका नहीं देंगे। मुझ पर और
इस मुल्क पर जिस में आप परदेसी हैं वही मेहरबानी
करें जो मैं ने आप पर की है।”
24 इब्राहीम ने जवाब दिया, “मैं क़सम खाता हूँ।”
25 फिर उस ने अबीमलिक से शिकायत करते हुए
कहा, “आप के बन्दों ने हमारे एक कुएँ पर क़ब्ज़ा
कर लिया है।” 26 अबीमलिक ने कहा, “मुझे नहीं
मालूम कि किस ने ऐसा किया है। आप ने भी मुझे
नहीं बताया। आज मैं पहली दफ़ा यह बात सुन रहा
हूँ।”
27 तब इब्राहीम ने अबीमलिक को भेड़-बक्रियाँ
और गाय-बैल दिए, और दोनों ने एक दूसरे के साथ
अहद बाँधा। 28 फिर इब्राहीम ने भेड़ के सात मादा
बच्चों को अलग कर लिया। 29 अबीमलिक ने पूछा,
“आप ने यह क्यूँ किया?” 30 इब्राहीम ने जवाब दिया,
“भेड़ के इन सात बच्चों को मुझ से ले लें। यह इस के
गवाह हों कि मैं ने इस कुएँ को खोदा है।” 31 इस लिए
उस जगह का नाम बैर-सबा यानी ‘क़सम का कुआँ’
रखा गया, क्यूँकि वहाँ उन दोनों मर्दों ने क़सम खाई।
32 यूँ उन्हों ने बैर-सबा में एक दूसरे से अहद बाँधा।
फिर अबीमलिक और फ़ीकुल फ़िलिस्तियों के मुल्क
वापस चले गए। 33 इस के बाद इब्राहीम ने बैर-सबा
में झाओ का दरख़्त लगाया। वहाँ उस ने रब्ब का
नाम ले कर उस की इबादत की जो अबदी ख़ुदा है।
34 इब्राहीम बहुत अर्से तक फ़िलिस्तियों के मुल्क में
आबाद रहा, लेकिन अजनबी की हैसियत से।

इब्राहीम की आज़माइश

22 1 कुछ अर्से के बाद अल्लाह ने इब्राहीम को
आज़माया। उस ने उस से कहा, “इब्राहीम!”
उस ने जवाब दिया, “जी, मैं हाज़िर हूँ।” 2 अल्लाह ने
कहा, “अपने इक्लौते बेटे इस्हाक़ को जिसे तू पियार
करता है साथ ले कर मोरियाह के इलाक़े में चला जा।
वहाँ मैं तुझे एक पहाड़ दिखाऊँगा। उस पर अपने बेटे
को क़ुर्बान कर दे। उसे ज़बह करके क़ुर्बानगाह पर
जला देना।”
3 सुब्ह-सवेरे इब्राहीम उठा और अपने गधे पर ज़ीन
कसा। उस ने अपने साथ दो नौकरों और अपने बेटे
इस्हाक़ को लिया। फिर वह क़ुर्बानी को जलाने के
लिए लकड़ी काट कर उस जगह की तरफ़ रवाना
हुआ जो अल्लाह ने उसे बताई थी। 4 सफ़र करते
करते तीसरे दिन क़ुर्बानी की जगह इब्राहीम को दूर
से नज़र आई। 5 उस ने नौकरों से कहा, “यहाँ गधे के
पास ठहरो। मैं लड़के के साथ वहाँ जा कर परस्तिश
करूँगा। फिर हम तुम्हारे पास वापस आ जाएँगे।”
6 इब्राहीम ने क़ुर्बानी को जलाने के लिए लकड़ियाँ
इस्हाक़ के कंधों पर रख दीं और ख़ुद छुरी और आग
जलाने के लिए अंगारों का बर्तन उठाया। दोनों चल
दिए। 7 इस्हाक़ बोला, “अब्बू!” इब्राहीम ने कहा,
“जी बेटा।” “अब्बू, आग और लकड़ियाँ तो हमारे
पास हैं, लेकिन क़ुर्बानी के लिए भेड़ या बक्री कहाँ
है?” 8 इब्राहीम ने जवाब दिया, “अल्लाह ख़ुद क़ुर्बानी

के लिए जानवर मुहय्या करेगा, बेटा।” वह आगे बढ़ गए।

9 चलते चलते वह उस मक़ाम पर पहुँचे जो अल्लाह ने उस पर ज़ाहिर किया था। इब्राहीम ने वहाँ क़ुर्बानगाह बनाई और उस पर लकड़ियाँ तर्तीब से रख दीं। फिर उस ने इस्हाक़ को बाँध कर लकड़ियों पर रख दिया 10 और छुरी पकड़ ली ताकि अपने बेटे को ज़बह करे। 11 ऐन उसी वक़्त रब्ब के फ़रिश्ते ने आस्मान पर से उसे आवाज़ दी, “इब्राहीम, इब्राहीम!” इब्राहीम ने कहा, “जी, मैं हाज़िर हूँ।” 12 फ़रिश्ते ने कहा, “अपने बेटे पर हाथ न चला, न उस के साथ कुछ कर। अब मैं ने जान लिया है कि तू अल्लाह का ख़ौफ़ रखता है, क्यूँकि तू अपने इक्लौते बेटे को भी मुझे देने के लिए तय्यार है।”

13 अचानक इब्राहीम को एक मेंढा नज़र आया जिस के सींग गुंजान झाड़ियों में फंसे हुए थे। इब्राहीम ने उसे ज़बह करके अपने बेटे की जगह क़ुर्बानी के तौर पर जला दिया। 14 उस ने उस मक़ाम का नाम “रब्ब मुहय्या करता है” रखा। इस लिए आज तक कहा जाता है, “रब्ब के पहाड़ पर मुहय्या किया जाता है।”

15 रब्ब के फ़रिश्ते ने एक बार फिर आस्मान पर से पुकार कर उस से बात की। 16 “रब्ब का फ़रमान है, मेरी ज़ात की क़सम, चूँकि तू ने यह किया और अपने इक्लौते बेटे को मुझे पेश करने के लिए तय्यार था 17 इस लिए मैं तुझे बर्कत दूँगा और तेरी औलाद को आस्मान के सितारों और साहिल की रेत की तरह बेशुमार होने दूँगा। तेरी औलाद अपने दुश्मनों के शहरों के दरवाज़ों पर क़ब्ज़ा करेगी। 18 चूँकि तू ने मेरी सुनी इस लिए तेरी औलाद से दुनिया की तमाम क़ौमें बर्कत पाएँगी।”

19 इस के बाद इब्राहीम अपने नौकरों के पास वापस आया, और वह मिल कर बैर-सबा लौटे। वहाँ इब्राहीम आबाद रहा।

20 इन वाक़िआत के बाद इब्राहीम को इत्तिला मिली, “आप के भाई नहूर की बीवी मिल्काह के हाँ भी बेटे पैदा हुए हैं। 21 उस के पहलौठे ऊज़ के बाद बूज़, क़मूएल (अराम का बाप), 22 कसद, हज़ू, फ़िल्दास, इद्लाफ़ और बतूएल पैदा हुए हैं।” 23 मिल्काह और नहूर के हाँ यह आठ बेटे पैदा हुए। (बतूएल रिब्क़ा का बाप था)। 24 नहूर की हरम का नाम रूमा था। उस के हाँ भी बेटे पैदा हुए जिन के नाम तिबख़, जाहम, तख़स और माका हैं।

सारा की वफ़ात

23 1 सारा 127 साल की उम्र में हब्रून में इन्तिक़ाल कर गई। 2 उस ज़माने में हब्रून का नाम क़िर्यत-अर्बा था, और वह मुल्क-ए-कनआन में था। इब्राहीम ने उस के पास आ कर मातम किया। 3 फिर वह जनाज़े के पास से उठा और हित्तियों से बात की। उस ने कहा, 4 “मैं आप के दर्मियान परदेसी और ग़ैरशहरी की हैसियत से रहता हूँ। मुझे क़ब्र के लिए ज़मीन बेचें ताकि अपनी बीवी को अपने घर से ले जा कर दफ़न कर सकूँ।” 5–6 हित्तियों ने जवाब दिया, “हमारे आक़ा, हमारी बात सुनें! आप हमारे दर्मियान अल्लाह के रईस हैं। अपनी बीवी को हमारी बेहतरीन क़ब्र में दफ़न करें। हम में से कोई नहीं जो आप से अपनी क़ब्र का इन्कार करेगा।”

7 इब्राहीम उठा और मुल्क के बाशिन्दों यानी हित्तियों के सामने ताज़ीमन झुक गया। 8 उस ने कहा, “अगर आप इस के लिए तय्यार हैं कि मैं अपनी बीवी को अपने घर से ले जा कर दफ़न करूँ तो सुहर के बेटे इफ़्रोन से मेरी सिफ़ारिश करें 9 कि वह मुझे मक्फ़ीला का ग़ार बेच दे। वह उस का है और उस के खेत के किनारे पर है। मैं उस की पूरी क़ीमत देने के लिए तय्यार हूँ ताकि आप के दर्मियान रहते हुए मेरे पास क़ब्र भी हो।”

10 इफ़्रोन हित्तियों की जमाअत में मौजूद था। इब्राहीम की दरख़्वास्त पर उस ने उन तमाम हित्तियों के सामने जो शहर के दरवाज़े पर जमा थे जवाब दिया, 11 “नहीं, मेरे आक़ा! मेरी बात सुनें। मैं आप को यह खेत और उस में मौजूद ग़ार दे देता हूँ। सब

जो हाज़िर हैं मेरे गवाह हैं, मैं यह आप को देता हूँ। अपनी बीवी को वहाँ दफ़न कर दें।”

[12]इब्राहीम दुबारा मुल्क के बाशिन्दों के सामने अदबन झुक गया। [13]उस ने सब के सामने इफ़्रोन से कहा, “मेहरबानी करके मेरी बात पर ग़ौर करें। मैं खेत की पूरी क़ीमत अदा करूँगा। उसे क़बूल करें ताकि वहाँ अपनी बीवी को दफ़न कर सकूँ।” [14–15]इफ़्रोन ने जवाब दिया, “मेरे आक़ा, सुनें। इस ज़मीन की क़ीमत सिर्फ़ 400 चाँदी के सिक्के है।[d]आप के और मेरे दर्मियान यह क्या है? अपनी बीवी को दफ़न कर दें।”

[16]इब्राहीम ने इफ़्रोन की मतलूबा क़ीमत मान ली और सब के सामने चाँदी के 400 सिक्के तोल कर इफ़्रोन को दे दिए। इस के लिए उस ने उस वक़्त के राइज बाट इस्तेमाल किए। [17]चुनाँचे मक्फ़ीला में इफ़्रोन की ज़मीन इब्राहीम की मिल्कियत हो गई। यह ज़मीन मम्रे के मशरिक़ में थी। उस में खेत, खेत का ग़ार और खेत की हुदूद में मौजूद तमाम दरख़्त शामिल थे। [18]हित्तियों की पूरी जमाअत ने जो शहर के दरवाज़े पर जमा थी ज़मीन के इन्तिक़ाल की तस्दीक़ की। [19]फिर इब्राहीम ने अपनी बीवी सारा को मुल्क-ए-कनआन के उस ग़ार में दफ़न किया जो मम्रे यानी हब्रून के मशरिक़ में वाक़े मक्फ़ीला के खेत में था। [20]इस तरीक़े से यह खेत और उस का ग़ार हित्तियों से इब्राहीम के नाम पर मुन्तक़िल कर दिया गया ताकि उस के पास क़ब्र हो।

इस्हाक़ और रिब्क़ा

24 [1]इब्राहीम अब बहुत बूढ़ा हो गया था। रब्ब ने उसे हर लिहाज़ से बर्कत दी थी। [2]एक दिन उस ने अपने घर के सब से बुज़ुर्ग नौकर से जो उस की जायदाद का पूरा इन्तिज़ाम चलाता था बात की। “क़सम के लिए अपना हाथ मेरी रान के नीचे रखो। [3]रब्ब की क़सम खाओ जो आस्मान-ओ-ज़मीन का ख़ुदा है कि तुम इन कनआनियों में से जिन के दर्मियान मैं रहता हूँ मेरे बेटे के लिए बीवी नहीं लाओगे [4]बल्कि मेरे वतन में मेरे रिश्तेदारों के पास जाओगे और उन ही में से मेरे बेटे के लिए बीवी लाओगे।” [5]उस के नौकर ने कहा, “शायद वह औरत मेरे साथ यहाँ आना न चाहे। क्या मैं इस सूरत में आप के बेटे को उस वतन में वापस ले जाऊँ जिस से आप निकले हैं?” [6]इब्राहीम ने कहा, “ख़बरदार! उसे हरगिज़ वापस न ले जाना। [7]रब्ब जो आस्मान का ख़ुदा है अपना फ़रिश्ता तुम्हारे आगे भेजेगा, इस लिए तुम वहाँ मेरे बेटे के लिए बीवी चुनने में ज़रूर काम्याब होगे। क्यूँकि वही मुझे मेरे बाप के घर और मेरे वतन से यहाँ ले आया है, और उसी ने क़सम खा कर मुझ से वादा किया है कि मैं कनआन का यह मुल्क तेरी औलाद को दूँगा। [8]अगर वहाँ की औरत यहाँ आना न चाहे तो फिर तुम अपनी क़सम से आज़ाद होगे। लेकिन किसी सूरत में भी मेरे बेटे को वहाँ वापस न ले जाना।”

[9]इब्राहीम के नौकर ने अपना हाथ उस की रान के नीचे रख कर क़सम खाई कि मैं सब कुछ ऐसा ही करूँगा। [10]फिर वह अपने आक़ा के दस ऊँटों पर क़ीमती तुह्फ़े लाद कर मसोपुतामिया की तरफ़ रवाना हुआ। चलते चलते वह नहूर के शहर पहुँच गया।

[11]उस ने ऊँटों को शहर के बाहर कुएँ के पास बिठाया। शाम का वक़्त था जब औरतें कुएँ के पास आ कर पानी भर्ती थीं। [12]फिर उस ने दुआ की, “ऐ रब्ब मेरे आक़ा इब्राहीम के ख़ुदा, मुझे आज काम्याबी बख़्श और मेरे आक़ा इब्राहीम पर मेहरबानी कर। [13]अब मैं इस चश्मे पर खड़ा हूँ, और शहर की बेटियाँ पानी भरने के लिए आ रही हैं। [14]मैं उन में से किसी से कहूँगा, ‘ज़रा अपना घड़ा नीचे करके मुझे पानी पिलाएँ।’ अगर वह जवाब दे, ‘पी लें, मैं आप के ऊँटों को भी पानी पिला देती हूँ,’ तो वह वही होगी

[d]तक़्रीबन साढे चार किलोग्राम चाँदी।

जिसे तू ने अपने ख़ादिम इस्हाक़ के लिए चुन रखा है।
अगर ऐसा हुआ तो मैं जान लूँगा कि तू ने मेरे आक़ा
पर मेहरबानी की है।”

15 वह अभी दुआ कर ही रहा था कि रिब्क़ा शहर से
निकल आई। उस के कंधे पर घड़ा था। वह बतूएल
की बेटी थी (बतूएल इब्राहीम के भाई नहूर की बीवी
मिल्काह का बेटा था)। 16 रिब्क़ा निहायत ख़ूबसूरत
जवान लड़की थी, और वह कुंवारी भी थी। वह चश्मे
तक उतरी, अपना घड़ा भरा और फिर वापस ऊपर
आई।

17 इब्राहीम का नौकर दौड़ कर उस से मिला। उस
ने कहा, “ज़रा मुझे अपने घड़े से थोड़ा सा पानी
पिलाएँ।” 18 रिब्क़ा ने कहा, “जनाब, पी लें।” जल्दी
से उस ने अपने घड़े को कंधे पर से उतार कर हाथ में
पकड़ा ताकि वह पी सके। 19 जब वह पीने से फ़ारिग़
हुआ तो रिब्क़ा ने कहा, “मैं आप के ऊँटों के लिए भी
पानी ले आती हूँ। वह भी पूरे तौर पर अपनी पियास
बुझाएँ।” 20 जल्दी से उस ने अपने घड़े का पानी हौज़
में उंडेल दिया और फिर भाग कर कुएँ से इतना पानी
लाती रही कि तमाम ऊँटों की पियास बुझ गई।

21 इतने में इब्राहीम का आदमी ख़ामोशी से उसे
देखता रहा, क्यूँकि वह जानना चाहता था कि क्या
रब्ब मुझे सफ़र की काम्याबी बख़्शेगा या नहीं।
22 ऊँट पानी पीने से फ़ारिग़ हुए तो उस ने रिब्क़ा को
सोने की एक नथ और दो कंगन दिए। नथ का वज़न
तक़्रीबन 6 ग्राम था और कंगनों का 120 ग्राम।

23 उस ने पूछा, “आप किस की बेटी हैं? क्या उस
के हाँ इतनी जगह है कि हम वहाँ रात गुज़ार सकें?”

24 रिब्क़ा ने जवाब दिया, “मेरा बाप बतूएल है। वह
नहूर और मिल्काह का बेटा है। 25 हमारे पास भूसा
और चारा है। रात गुज़ारने के लिए भी काफ़ी जगह
है।” 26 यह सुन कर इब्राहीम के नौकर ने रब्ब को
सिज्दा किया। 27 उस ने कहा, “मेरे आक़ा इब्राहीम
के ख़ुदा की तम्जीद हो जिस के करम और वफ़ादारी
ने मेरे आक़ा को नहीं छोड़ा। रब्ब ने मुझे सीधा मेरे
मालिक के रिश्तेदारों तक पहुँचाया है।”

28 लड़की भाग कर अपनी माँ के घर चली गई।
वहाँ उस ने सब कुछ बता दिया जो हुआ था।
29–30 जब रिब्क़ा के भाई लाबन ने नथ और बहन
की कलाइयों में कंगनों को देखा और वह सब कुछ
सुना जो इब्राहीम के नौकर ने रिब्क़ा को बताया था
तो वह फ़ौरन कुएँ की तरफ़ दौड़ा।

इब्राहीम का नौकर अब तक ऊँटों समेत वहाँ खड़ा
था। 31 लाबन ने कहा, “रब्ब के मुबारक बन्दे, मेरे
साथ आएँ। आप यहाँ शहर के बाहर क्यूँ खड़े हैं? मैं
ने अपने घर में आप के लिए सब कुछ तय्यार किया
है। आप के ऊँटों के लिए भी काफ़ी जगह है।” 32 वह
नौकर को ले कर घर पहुँचा। ऊँटों से सामान उतारा
गया, और उन को भूसा और चारा दिया गया। पानी
भी लाया गया ताकि इब्राहीम का नौकर और उस के
आदमी अपने पाँओ धोएँ।

33 लेकिन जब खाना आ गया तो इब्राहीम के नौकर
ने कहा, “इस से पहले कि मैं खाना खाऊँ लाज़िम
है कि अपना मुआमला पेश करूँ।” लाबन ने कहा,
“बताएँ अपनी बात।” 34 उस ने कहा, “मैं इब्राहीम
का नौकर हूँ। 35 रब्ब ने मेरे आक़ा को बहुत बर्कत दी
है। वह बहुत अमीर बन गया है। रब्ब ने उसे कस्रत
से भेड़-बक्रियाँ, गाय-बैल, सोना-चाँदी, ग़ुलाम और
लौंडियाँ, ऊँट और गधे दिए हैं। 36 जब मेरे मालिक
की बीवी बूढ़ी हो गई थी तो उस के बेटा पैदा हुआ
था। इब्राहीम ने उसे अपनी पूरी मिल्कियत दे दी है।
37 लेकिन मेरे आक़ा ने मुझ से कहा, ‘क़सम खाओ
कि तुम इन कनआनियों में से जिन के दर्मियान मैं
रहता हूँ मेरे बेटे के लिए बीवी नहीं लाओगे 38 बल्कि
मेरे बाप के घराने और मेरे रिश्तेदारों के पास जा कर
उस के लिए बीवी लाओगे।’ 39 मैं ने अपने मालिक
से कहा, ‘शायद वह औरत मेरे साथ आना न चाहे।’
40 उस ने कहा, ‘रब्ब जिस के सामने मैं चलता रहा
हूँ अपने फ़रिश्ते को तुम्हारे साथ भेजेगा और तुम्हें
काम्याबी बख़्शेगा। तुम्हें ज़रूर मेरे रिश्तेदारों और
मेरे बाप के घराने से मेरे बेटे के लिए बीवी मिलेगी।
41 लेकिन अगर तुम मेरे रिश्तेदारों के पास जाओ और

वह इन्कार करें तो फिर तुम अपनी क़सम से आज़ाद
होगे।’ 42 आज जब मैं कुएँ के पास आया तो मैं ने
दुआ की, ‘ऐ रब्ब, मेरे आक़ा के ख़ुदा, अगर तेरी
मर्ज़ी हो तो मुझे इस मिशन में काम्याबी बख़्श जिस
के लिए मैं यहाँ आया हूँ। 43 अब मैं इस कुएँ के पास
खड़ा हूँ। जब कोई जवान औरत शहर से निकल कर
यहाँ आए तो मैं उस से कहूँगा, “ज़रा मुझे अपने घड़े
से थोड़ा सा पानी पिलाएँ।” 44 अगर वह कहे, “पी
लें, मैं आप के ऊँटों के लिए भी पानी ले आऊँगी” तो
इस का मतलब यह हो कि तू ने उसे मेरे आक़ा के
बेटे के लिए चुन लिया है कि उस की बीवी बन जाए
’

45 मैं अभी दिल में यह दुआ कर रहा था कि रिब्क़ा
शहर से निकल आई। उस के कंधे पर घड़ा था। वह
चश्मे तक उतरी और अपना घड़ा भर लिया। मैं ने
उस से कहा, ‘ज़रा मुझे पानी पिलाएँ।’ 46 जवाब में
उस ने जल्दी से अपने घड़े को कंधे पर से उतार कर
कहा, ‘पी लें, मैं आप के ऊँटों को भी पानी पिलाती
हूँ।’ मैं ने पानी पिया, और उस ने ऊँटों को भी पानी
पिलाया। 47 फिर मैं ने उस से पूछा, ‘आप किस की
बेटी हैं?’ उस ने जवाब दिया, ‘मेरा बाप बतूएल है।
वह नहूर और मिल्काह का बेटा है।’ फिर मैं ने उस
की नाक में नथ और उस की कलाइयों में कंगन
पहना दिए। 48 तब मैं ने रब्ब को सिज्दा करके अपने
आक़ा इब्राहीम के ख़ुदा की तम्जीद की जिस ने मुझे
सीधा मेरे मालिक की भतीजी तक पहुँचाया ताकि
वह इस्हाक़ की बीवी बन जाए

49 अब मुझे बताएँ, क्या आप मेरे आक़ा पर अपनी
मेहरबानी और वफ़ादारी का इज़्हार करना चाहते हैं?
अगर ऐसा है तो रिब्क़ा की इस्हाक़ के साथ शादी
क़बूल करें। अगर आप मुत्तफ़िक़ नहीं हैं तो मुझे
बताएँ ताकि मैं कोई और क़दम उठा सकूँ।”

50 लाबन और बतूएल ने जवाब दिया, “यह बात
रब्ब की तरफ़ से है, इस लिए हम किसी तरह भी
इन्कार नहीं कर सकते। 51 रिब्क़ा आप के सामने
है। उसे ले जाएँ। वह आप के मालिक के बेटे की
बीवी बन जाए जिस तरह रब्ब ने फ़रमाया है।” 52 यह
सुन कर इब्राहीम के नौकर ने रब्ब को सिज्दा किया।
53 फिर उस ने सोने और चाँदी के ज़ेवरात और महंगे
मल्बूसात अपने सामान में से निकाल कर रिब्क़ा को
दिए। रिब्क़ा के भाई और माँ को भी क़ीमती तुह्फ़े
मिले।

54 इस के बाद उस ने अपने हमसफ़रों के साथ शाम
का खाना खाया। वह रात को वहीं ठहरे। अगले दिन
जब उठे तो नौकर ने कहा, “अब हमें इजाज़त दें
ताकि अपने आक़ा के पास लौट जाएँ।” 55 रिब्क़ा
के भाई और माँ ने कहा, “रिब्क़ा कुछ दिन और
हमारे हाँ ठहरे। फिर आप जाएँ।” 56 लेकिन उस ने
उन से कहा, “अब देर न करें, क्यूँकि रब्ब ने मुझे
मेरे मिशन में काम्याबी बख़्शी है। मुझे इजाज़त दें
ताकि अपने मालिक के पास वापस जाऊँ।” 57 उन्हों
ने कहा, “चलें, हम लड़की को बुला कर उसी से पूछ
लेते हैं।”

58 उन्हों ने रिब्क़ा को बुला कर उस से पूछा, “क्या
तू अभी इस आदमी के साथ जाना चाहती है?”
उस ने कहा, “जी, मैं जाना चाहती हूँ।” 59 चुनाँचे
उन्हों ने अपनी बहन रिब्क़ा, उस की दाया, इब्राहीम
के नौकर और उस के हमसफ़रों को रुख़्सत कर
दिया। 60 पहले उन्हों ने रिब्क़ा को बर्कत दे कर
कहा, “हमारी बहन, अल्लाह करे कि तू करोड़ों की
माँ बने। तेरी औलाद अपने दुश्मनों के शहरों के
दरवाज़ों पर क़ब्ज़ा करे।” 61 फिर रिब्क़ा और उस
की नौकरानियाँ उठ कर ऊँटों पर सवार हुईं और
इब्राहीम के नौकर के पीछे हो लीं। चुनाँचे नौकर उन्हें
साथ ले कर रवाना हो गया।

62 उस वक़्त इस्हाक़ मुल्क के जुनूबी हिस्से, दश्त-
ए-नजब में रहता था। वह बैर-लही-रोई से आया था।
63 एक शाम वह निकल कर खुले मैदान में अपनी
सोचों में मगन टहल रहा था कि अचानक ऊँट उस
की तरफ़ आते हुए नज़र आए। 64 जब रिब्क़ा ने
अपनी नज़र उठा कर इस्हाक़ को देखा तो उस ने
ऊँट से उतर कर 65 नौकर से पूछा, “वह आदमी कौन

है जो मैदान में हम से मिलने आ रहा है?” नौकर ने कहा, “मेरा मालिक है।” यह सुन कर रिब्क़ा ने चादर ले कर अपने चिहरे को ढाँप लिया।

66 नौकर ने इस्हाक़ को सब कुछ बता दिया जो
उस ने किया था। 67 फिर इस्हाक़ रिब्क़ा को अपनी
माँ सारा के डेरे में ले गया। उस ने उस से शादी की, और वह उस की बीवी बन गई। इस्हाक़ के दिल में उस के लिए बहुत मुहब्बत पैदा हुई। यूँ उसे अपनी माँ की मौत के बाद सुकून मिला।

इब्राहीम की मज़ीद औलाद

25 1 इब्राहीम ने एक और शादी की। नई बीवी
का नाम क़तूरा था। 2 क़तूरा के छः बेटे
पैदा हुए, ज़िम्रान, युक़्सान, मिदान, मिदियान, इस्बाक़
और सूख़। 3 युक़्सान के दो बेटे थे, सबा और ददान।
असूरी, लतूसी और लूमी ददान की औलाद हैं।
4 मिदियान के बेटे ऐफ़ा, इफ़र, हनूक, अबीदा और
इल्दआ थे। यह सब क़तूरा की औलाद थे।

5 इब्राहीम ने अपनी सारी मिल्कियत इस्हाक़ को
दे दी। 6 अपनी मौत से पहले उस ने अपनी दूसरी
बीवियों के बेटों को तुह्फ़े दे कर अपने बेटे से दूर मशरिक़ की तरफ़ भेज दिया।

इब्राहीम की वफ़ात

7–8 इब्राहीम 175 साल की उम्र में फ़ौत हुआ।
ग़रज़ वह बहुत उम्ररसीदा और ज़िन्दगी से आसूदा हो कर इन्तिक़ाल करके अपने बापदादा से जा
मिला। 9–10 उस के बेटों इस्हाक़ और इस्माईल ने उसे
मक्फ़ीला के ग़ार में दफ़न किया जो मम्रे के मशरिक़ में है। यह वही ग़ार था जिसे खेत समेत हित्ती आदमी इफ़्रोन बिन सुहर से ख़रीदा गया था। इब्राहीम और उस की बीवी सारा दोनों को उस में दफ़न किया गया।

11 इब्राहीम की वफ़ात के बाद अल्लाह ने इस्हाक़
को बर्कत दी। उस वक़्त इस्हाक़ बैर-लही-रोई के क़रीब आबाद था।

इस्माईल की औलाद

12 इब्राहीम का बेटा इस्माईल जो सारा की मिस्री
लौंडी हाजिरा के हाँ पैदा हुआ उस का नसबनामा
यह है। 13 इस्माईल के बेटे बड़े से ले कर छोटे
तक यह हैं : नबायोत, क़ीदार, अदबिएल, मिब्साम,
14 मिश्मा, दूमा, मस्सा, 15 हदद, तैमा, यतूर, नफ़ीस
और क़िदमा।

16 यह बेटे बारह क़बीलों के बानी बन गए, और
जहाँ जहाँ वह आबाद हुए उन जगहों का वही नाम
पड़ गया। 17 इस्माईल 137 साल का था जब वह
कूच करके अपने बापदादा से जा मिला। 18 उस की
औलाद उस इलाक़े में आबाद थी जो हवीला और शूर के दर्मियान है और जो मिस्र के मशरिक़ में असूर की तरफ़ है। यूँ इस्माईल अपने तमाम भाइयों के सामने ही आबाद हुआ।

एसौ और याक़ूब की पैदाइश

19 यह इब्राहीम के बेटे इस्हाक़ का बयान है।

20 इस्हाक़ 40 साल का था जब उस की रिब्क़ा
से शादी हुई। रिब्क़ा लाबन की बहन और अरामी मर्द बतूएल की बेटी थी (बतूएल मसोपुतामिया का
था)। 21 रिब्क़ा के बच्चे पैदा न हुए। लेकिन इस्हाक़
ने अपनी बीवी के लिए दुआ की तो रब्ब ने उस
की सुनी, और रिब्क़ा उम्मीद से हुई। 22 उस के पेट
में बच्चे एक दूसरे से ज़ोरआज़माई करने लगे तो वह रब्ब से पूछने गई, “अगर यह मेरी हालत रहेगी तो
फिर मैं यहाँ तक क्यूँ पहुँच गई हूँ?” 23 रब्ब ने उस
से कहा, “तेरे अन्दर दो क़ौमें हैं। वह तुझ से निकल कर एक दूसरी से अलग अलग हो जाएँगी। उन में से एक ज़ियादा ताक़तवर होगी, और बड़ा छोटे की ख़िदमत करेगा।”

24 पैदाइश का वक़्त आ गया तो जुड़वाँ बेटे पैदा
हुए। 25 पहला बच्चा निकला तो सुर्ख़ सा था, और ऐसा
लग रहा था कि वह घने बालों का कोट ही पहने हुए है। इस लिए उस का नाम एसौ यानी ‘बालों वाला’

रखा गया। 26 इस के बाद दूसरा बच्चा पैदा हुआ। वह एसौ की एड़ी पकड़े हुए निकला, इस लिए उस का नाम याक़ूब यानी ‘एड़ी पकड़ने वाला’ रखा गया। उस वक़्त इस्हाक़ 60 साल का था।

27 लड़के जवान हुए। एसौ माहिर शिकारी बन गया और खुले मैदान में ख़ुश रहता था। उस के मुक़ाबले में याक़ूब शाइस्ता था और डेरे में रहना पसन्द करता था। 28 इस्हाक़ एसौ को पियार करता था, क्यूँकि वह शिकार का गोश्त पसन्द करता था। लेकिन रिब्क़ा याक़ूब को पियार करती थी।

29 एक दिन याक़ूब सालन पका रहा था कि एसौ थकाहारा जंगल से आया। 30 उस ने कहा, “मुझे जल्दी से लाल सालन, हाँ इसी लाल सालन से कुछ खाने को दो। मैं तो बेदम हो रहा हूँ।” (इसी लिए बाद में उस का नाम अदोम यानी सुर्ख़ पड़ गया।) 31 याक़ूब ने कहा, “पहले मुझे पहलौठे का हक़ बेच दो।” 32 एसौ ने कहा, “मैं तो भूक से मर रहा हूँ, पहलौठे का हक़ मेरे किस काम का?” 33 याक़ूब ने कहा, “पहले क़सम खा कर मुझे यह हक़ बेच दो।” एसौ ने क़सम खा कर उसे पहलौठे का हक़ मुन्तक़िल कर दिया।

34 तब याक़ूब ने उसे कुछ रोटी और दाल दे दी, और एसौ ने खाया और पिया। फिर वह उठ कर चला गया। यूँ उस ने पहलौठे के हक़ को हक़ीर जाना।

इस्हाक़ और रिब्क़ा जिरार में

26 1 उस मुल्क में दुबारा काल पड़ा, जिस तरह इब्राहीम के दिनों में भी पड़ गया था। इस्हाक़ जिरार शहर गया जिस पर फ़िलिस्तियों के बादशाह अबीमलिक की हुकूमत थी। 2 रब्ब ने इस्हाक़ पर ज़ाहिर हो कर कहा, “मिस्र न जा बल्कि उस मुल्क में बस जो मैं तुझे दिखाता हूँ। 3 उस मुल्क में अजनबी रह तो मैं तेरे साथ हूँगा और तुझे बर्कत दूँगा। क्यूँकि मैं तुझे और तेरी औलाद को यह तमाम इलाक़ा दूँगा और वह वादा पूरा करूँगा जो मैं ने क़सम खा कर तेरे बाप इब्राहीम से किया था। 4 मैं तुझे इतनी औलाद दूँगा जितने आस्मान पर सितारे हैं। और मैं यह तमाम मुल्क उन्हें दे दूँगा। तेरी औलाद से दुनिया की तमाम क़ौमें बर्कत पाएँगी। 5 मैं तुझे इस लिए बर्कत दूँगा कि इब्राहीम मेरे ताबे रहा और मेरी हिदायात और अह्काम पर चलता रहा।” 6 चुनाँचे इस्हाक़ जिरार में आबाद हो गया।

7 जब वहाँ के मर्दों ने रिब्क़ा के बारे में पूछा तो इस्हाक़ ने कहा, “यह मेरी बहन है।” वह उन्हें यह बताने से डरता था कि यह मेरी बीवी है, क्यूँकि उस ने सोचा, “रिब्क़ा निहायत ख़ूबसूरत है। अगर उन्हें मालूम हो जाए कि रिब्क़ा मेरी बीवी है तो वह उसे हासिल करने की ख़ातिर मुझे क़त्ल कर देंगे।”

8 काफ़ी वक़्त गुज़र गया। एक दिन फ़िलिस्तियों के बादशाह ने अपनी खिड़की में से झाँक कर देखा कि इस्हाक़ अपनी बीवी को पियार कर रहा है। 9 उस ने इस्हाक़ को बुला कर कहा, “वह तो आप की बीवी है! आप ने क्यूँ कहा कि मेरी बहन है?” इस्हाक़ ने जवाब दिया, “मैं ने सोचा कि अगर मैं बताऊँ कि यह मेरी बीवी है तो लोग मुझे क़त्ल कर देंगे।”

10 अबीमलिक ने कहा, “आप ने हमारे साथ कैसा सुलूक कर दिखाया! कितनी आसानी से मेरे आदमियों में से कोई आप की बीवी से हमबिसतर हो जाता। इस तरह हम आप के सबब से एक बड़े जुर्म के क़ुसूरवार ठहरते।” 11 फिर अबीमलिक ने तमाम लोगों को हुक्म दिया, “जो भी इस मर्द या उस की बीवी को छेड़े उसे सज़ा-ए-मौत दी जाएगी।”

इस्हाक़ का फ़िलिस्तियों के साथ झगड़ा

12 इस्हाक़ ने उस इलाक़े में काश्तकारी की, और उसी साल उसे सौ गुना फल मिला। यूँ रब्ब ने उसे बर्कत दी, 13 और वह अमीर हो गया। उस की दौलत बढ़ती गई, और वह निहायत दौलतमन्द हो गया। 14 उस के पास इतनी भेड़-बक्रियाँ, गाय-बैल और ग़ुलाम थे कि फ़िलिस्ती उस से हसद करने लगे। 15 अब ऐसा हुआ कि उन्हों ने उन तमाम कुओं को

मिट्टी से भर कर बन्द कर दिया जो उस के बाप के नौकरों ने खोदे थे।

16 आख़िरकार अबीमलिक ने इस्हाक़ से कहा, "कहीं और जा कर रहें, क्यूँकि आप हम से ज़ियादा ज़ोरावर हो गए हैं।"

17 चुनाँचे इस्हाक़ ने वहाँ से जा कर जिरार की वादी में अपने डेरे लगाए। 18 वहाँ फ़िलिस्तियों ने इब्राहीम की मौत के बाद तमाम कुओं को मिट्टी से भर दिया था। इस्हाक़ ने उन को दुबारा खुदवाया। उस ने उन के वही नाम रखे जो उस के बाप ने रखे थे।

19 इस्हाक़ के नौकरों को वादी में खोदते खोदते ताज़ा पानी मिल गया। 20 लेकिन जिरार के चरवाहे आ कर इस्हाक़ के चरवाहों से झगड़ने लगे। उन्हों ने कहा, "यह हमारा कुआँ है!" इस लिए उस ने उस कुएँ का नाम उसक यानी झगड़ा रखा। 21 इस्हाक़ के नौकरों ने एक और कुआँ खोद लिया। लेकिन उस पर भी झगड़ा हुआ, इस लिए उस ने उस का नाम सितना यानी मुख़ालफ़त रखा। 22 वहाँ से जा कर उस ने एक तीसरा कुआँ खुदवाया। इस दफ़ा कोई झगड़ा न हुआ, इस लिए उस ने उस का नाम रहोबोत यानी 'खुली जगह' रखा। क्यूँकि उस ने कहा, "रब्ब ने हमें खुली जगह दी है, और अब हम मुल्क में फलें फूलेंगे।"

23 वहाँ से वह बैर-सबा चला गया। 24 उसी रात रब्ब उस पर ज़ाहिर हुआ और कहा, "मैं तेरे बाप इब्राहीम का ख़ुदा हूँ। मत डर, क्यूँकि मैं तेरे साथ हूँ। मैं तुझे बर्कत दूँगा और तुझे अपने ख़ादिम इब्राहीम की ख़ातिर बहुत औलाद दूँगा।"

25 वहाँ इस्हाक़ ने क़ुर्बानगाह बनाई और रब्ब का नाम ले कर इबादत की। वहाँ उस ने अपने ख़ैमे लगाए और उस के नौकरों ने कुआँ खोद लिया।

अबीमलिक के साथ अह्द

26 एक दिन अबीमलिक, उस का साथी अख़ूज़त और उस का सिपहसालार फ़ीकुल जिरार से उस के पास आए। 27 इस्हाक़ ने पूछा, "आप क्यूँ मेरे पास आए हैं? आप तो मुझ से नफ़रत रखते हैं। क्या आप ने मुझे अपने दर्मियान से ख़ारिज नहीं किया था?" 28 उन्हों ने जवाब दिया, "हम ने जान लिया है कि रब्ब आप के साथ है। इस लिए हम ने कहा कि हमारा आप के साथ अह्द होना चाहिए। आइए हम क़सम खा कर एक दूसरे से अह्द बाँधें 29 कि आप हमें नुक़्सान नहीं पहुँचाएँगे, क्यूँकि हम ने भी आप को नहीं छेड़ा बल्कि आप से सिर्फ़ अच्छा सुलूक किया और आप को सलामती के साथ रुख़्सत किया है। और अब ज़ाहिर है कि रब्ब ने आप को बर्कत दी है।"

30 इस्हाक़ ने उन की ज़ियाफ़त की, और उन्हों ने खाया और पिया। 31 फिर सुब्ह-सवेरे उठ कर उन्हों ने एक दूसरे के सामने क़सम खाई। इस के बाद इस्हाक़ ने उन्हें रुख़्सत किया और वह सलामती से रवाना हुए।

32 उसी दिन इस्हाक़ के नौकर आए और उसे उस कुएँ के बारे में इत्तिला दी जो उन्हों ने खोदा था। उन्हों ने कहा, "हमें पानी मिल गया है।" 33 उस ने कुएँ का नाम सबा यानी 'क़सम' रखा। आज तक साथ वाले शहर का नाम बैर-सबा है।

एसौ की अजनबी बीवियाँ

34 जब एसौ 40 साल का था तो उस ने दो हित्ती औरतों से शादी की, बैरी की बेटी यहूदित से और ऐलोन की बेटी बासमत से। 35 यह औरतें इस्हाक़ और रिब्क़ा के लिए बड़े दुख का बाइस बनीं।

इस्हाक़ याक़ूब को बर्कत देता है

27 1 इस्हाक़ बूढ़ा हो गया तो उस की नज़र धुन्दला गई। उस ने अपने बड़े बेटे को बुला कर कहा, "बेटा।" एसौ ने जवाब दिया, "जी, मैं हाज़िर हूँ।" 2 इस्हाक़ ने कहा, "मैं बूढ़ा हो गया हूँ और ख़ुदा जाने कब मर जाऊँ। 3 इस लिए अपना तीर कमान ले कर जंगल में निकल जा और मेरे लिए किसी जानवर का शिकार कर। 4 उसे तय्यार करके

ऐसा लज़ीज़ खाना पका जो मुझे पसन्द है। फिर उसे मेरे पास ले आ। मरने से पहले मैं वह खाना खा कर तुझे बर्कत देना चाहता हूँ।”

5 रिब्क़ा ने इस्हाक़ की एसौ के साथ बातचीत सुन ली थी। जब एसौ शिकार करने के लिए चला गया तो उस ने याक़ूब से कहा, 6 “अभी अभी मैं ने तुम्हारे अब्बू को एसौ से यह बात करते हुए सुना कि 7 ‘मेरे लिए किसी जानवर का शिकार करके ले आ। उसे तय्यार करके मेरे लिए लज़ीज़ खाना पका। मरने से पहले मैं यह खाना खा कर तुझे रब्ब के सामने बर्कत देना चाहता हूँ।’ 8 अब सुनो, मेरे बेटे! जो कुछ मैं बताती हूँ वह करो। 9 जा कर रेवड़ में से बक्रियों के दो अच्छे अच्छे बच्चे चुन लो। फिर मैं वही लज़ीज़ खाना पकाऊँगी जो तुम्हारे अब्बू को पसन्द है। 10 तुम यह खाना उस के पास ले जाओगे तो वह उसे खा कर मरने से पहले तुम्हें बर्कत देगा।”

11 लेकिन याक़ूब ने एतिराज़ किया, “आप जानती हैं कि एसौ के जिस्म पर घने बाल हैं जबकि मेरे बाल कम हैं। 12 कहीं मुझे छूने से मेरे बाप को पता न चल जाए कि मैं उसे फ़रेब दे रहा हूँ। फिर मुझ पर बर्कत नहीं बल्कि लानत आएगी।” 13 उस की माँ ने कहा, “तुम पर आने वाली लानत मुझ पर आए, बेटा। बस मेरी बात मान लो। जाओ और बक्रियों के वह बच्चे ले आओ।”

14 चुनाँचे वह गया और उन्हें अपनी माँ के पास ले आया। रिब्क़ा ने ऐसा लज़ीज़ खाना पकाया जो याक़ूब के बाप को पसन्द था। 15 एसौ के ख़ास मौक़ों के लिए अच्छे लिबास रिब्क़ा के पास घर में थे। उस ने उन में से बेहतरीन लिबास चुन कर अपने छोटे बेटे को पहना दिया। 16 साथ साथ उस ने बक्रियों की खालें उस के हाथों और गर्दन पर जहाँ बाल न थे लपेट दीं। 17 फिर उस ने अपने बेटे याक़ूब को रोटी और वह लज़ीज़ खाना दिया जो उस ने पकाया था।

18 याक़ूब ने अपने बाप के पास जा कर कहा, “अब्बू जी।” इस्हाक़ ने कहा, “जी, बेटा। तू कौन है?” 19 उस ने कहा, “मैं आप का पहलौठा एसौ हूँ। मैं ने वह किया है जो आप ने मुझे कहा था। अब ज़रा उठें और बैठ कर मेरे शिकार का खाना खाएँ ताकि आप बाद में मुझे बर्कत दें।” 20 इस्हाक़ ने पूछा, “बेटा, तुझे यह शिकार इतनी जल्दी किस तरह मिल गया?” उस ने जवाब दिया, “रब्ब आप के ख़ुदा ने उसे मेरे सामने से गुज़रने दिया।”

21 इस्हाक़ ने कहा, “बेटा, मेरे क़रीब आ ताकि मैं तुझे छू लूँ कि तू वाक़ई मेरा बेटा एसौ है कि नहीं।” 22 याक़ूब अपने बाप के नज़्दीक आया। इस्हाक़ ने उसे छू कर कहा, “तेरी आवाज़ तो याक़ूब की है लेकिन तेरे हाथ एसौ के हैं।” 23 यूँ उस ने फ़रेब खाया। चूँकि याक़ूब के हाथ एसौ के हाथ की मानिन्द थे इस लिए उस ने उसे बर्कत दी। 24 तो भी उस ने दुबारा पूछा, “क्या तू वाक़ई मेरा बेटा एसौ है?” याक़ूब ने जवाब दिया, “जी, मैं वही हूँ।” 25 आख़िरकार इस्हाक़ ने कहा, “शिकार का खाना मेरे पास ले आ, बेटा। उसे खाने के बाद मैं तुझे बर्कत दूँगा।” याक़ूब खाना और मै ले आया। इस्हाक़ ने खाया और पिया, 26 फिर कहा, “बेटा, मेरे पास आ और मुझे बोसा दे।” 27 याक़ूब ने पास आ कर उसे बोसा दिया। इस्हाक़ ने उस के लिबास को सूँघ कर उसे बर्कत दी। उस ने कहा,

“मेरे बेटे की ख़ुश्बू उस खुले मैदान की ख़ुश्बू की मानिन्द है जिसे रब्ब ने बर्कत दी है। 28 अल्लाह तुझे आस्मान की ओस और ज़मीन की ज़रख़ेज़ी दे। वह तुझे कस्रत का अनाज और अंगूर का रस दे। 29 क़ौमें तेरी ख़िदमत करें, और उम्मतें तेरे सामने झुक जाएँ। अपने भाइयों का हुक्मरान बन, और तेरी माँ की औलाद तेरे सामने घुटने टेके। जो तुझ पर लानत करे वह ख़ुद लानती हो और जो तुझे बर्कत दे वह ख़ुद बर्कत पाए।”

एसौ भी बर्कत माँगता है

30 इस्हाक़ की बर्कत के बाद याक़ूब अभी रुख़्सत ही हुआ था कि उस का भाई एसौ शिकार करके वापस आया। 31 वह भी लज़ीज़ खाना पका कर उसे

अपने बाप के पास ले आया। उस ने कहा, “अब्बू
जी, उठें और मेरे शिकार का खाना खाएँ ताकि आप
मुझे बर्कत दें।” 32इस्हाक़ ने पूछा, “तू कौन है?”
उस ने जवाब दिया, “मैं आप का बड़ा बेटा एसौ
हूँ।”

33इस्हाक़ घबरा कर शिद्दत से काँपने लगा। उस
ने पूछा, “फिर वह कौन था जो किसी जानवर का
शिकार करके मेरे पास ले आया? तेरे आने से ज़रा
पहले मैं ने उस शिकार का खाना खा कर उस शख़्स
को बर्कत दी। अब वह बर्कत उसी पर रहेगी।”

34यह सुन कर एसौ ज़ोरदार और तल्ख़ चीख़ें मारने
लगा। “अब्बू, मुझे भी बर्कत दें,” उस ने कहा।
35लेकिन इस्हाक़ ने जवाब दिया, “तेरे भाई ने आ
कर मुझे फ़रेब दिया। उस ने तेरी बर्कत तुझ से छीन
ली है।” 36एसौ ने कहा, “उस का नाम याक़ूब ठीक
ही रखा गया है, क्यूँकि अब उस ने मुझे दूसरी बार
धोका दिया है। पहले उस ने पहलौठे का हक़ मुझ
से छीन लिया और अब मेरी बर्कत भी ज़बरदस्ती
ले ली। क्या आप ने मेरे लिए कोई बर्कत महफ़ूज़
नहीं रखी?” 37लेकिन इस्हाक़ ने कहा, “मैं ने उसे
तेरा हुक्मरान और उस के तमाम भाइयों को उस के
ख़ादिम बना दिया है। मैं ने उसे अनाज और अंगूर का
रस मुहय्या किया है। अब मुझे बता बेटा, क्या कुछ
रह गया है जो मैं तुझे दूँ?” 38लेकिन एसौ ख़ामोश न
हुआ बल्कि कहा, “अब्बू, क्या आप के पास वाक़ई
सिर्फ़ यही बर्कत थी? अब्बू, मुझे भी बर्कत दें।” वह
ज़ार-ओ-क़तार रोने लगा।

39फिर इस्हाक़ ने कहा, “तू ज़मीन की ज़रख़ेज़ी
और आस्मान की ओस से महरूम रहेगा। 40तू सिर्फ़
अपनी तल्वार के सहारे ज़िन्दा रहेगा और अपने भाई
की ख़िदमत करेगा। लेकिन एक दिन तू बेचैन हो कर
उस का जूआ अपनी गर्दन पर से उतार फैंकेगा।”

याक़ूब की हिज्रत

41बाप की बर्कत के सबब से एसौ याक़ूब का
दुश्मन बन गया। उस ने दिल में कहा, “वह दिन
क़रीब आ गए हैं कि अब्बू इन्तिक़ाल कर जाएँगे
और हम उन का मातम करेंगे। फिर मैं अपने भाई को
मार डालूँगा।”

42रिब्क़ा को अपने बड़े बेटे एसौ का यह इरादा
मालूम हुआ। उस ने याक़ूब को बुला कर कहा,
“तुम्हारा भाई बदला लेना चाहता है। वह तुम्हें क़त्ल
करने का इरादा रखता है। 43बेटा, अब मेरी सुनो,
यहाँ से हिज्रत कर जाओ। हारान शहर में मेरे भाई
लाबन के पास चले जाओ। 44वहाँ कुछ दिन ठहरे
रहना जब तक तुम्हारे भाई का ग़ुस्सा ठंडा न हो जाए
45जब उस का ग़ुस्सा ठंडा हो जाएगा और वह तुम्हारे
उस के साथ किए गए सुलूक को भूल जाएगा, तब मैं
इत्तिला दूँगी कि तुम वहाँ से वापस आ सकते हो। मैं
क्यूँ एक ही दिन में तुम दोनों से महरूम हो जाऊँ?”

46फिर रिब्क़ा ने इस्हाक़ से बात की, “मैं एसौ की
बीवियों के सबब से अपनी ज़िन्दगी से तंग हूँ। अगर
याक़ूब भी इस मुल्क की औरतों में से किसी से शादी
करे तो बेहतर है कि मैं पहले ही मर जाऊँ।”

28 1इस्हाक़ ने याक़ूब को बुला कर उसे
बर्कत दी और कहा, “लाज़िम है कि तू
किसी कनआनी औरत से शादी न करे। 2अब सीधे
मसोपुतामिया में अपने नाना बतूएल के घर जा और
वहाँ अपने मामूँ लाबन की लड़कियों में से किसी एक
से शादी कर। 3अल्लाह क़ादिर-ए-मुतलक़ तुझे बर्कत
दे कर फलने फूलने दे और तुझे इतनी औलाद दे कि
तू बहुत सारी क़ौमों का बाप बने। 4वह तुझे और
तेरी औलाद को इब्राहीम की बर्कत दे जिसे उस ने
यह मुल्क दिया जिस में तू मेहमान के तौर पर रहता
है। यह मुल्क तुम्हारे क़ब्ज़े में आए।” 5यूँ इस्हाक़
ने याक़ूब को मसोपुतामिया में लाबन के घर भेजा।
लाबन अरामी मर्द बतूएल का बेटा और रिब्क़ा का
भाई था।

एसौ एक और शादी करता है

6एसौ को पता चला कि इस्हाक़ ने याक़ूब को
बर्कत दे कर मसोपुतामिया भेज दिया है ताकि वहाँ

शादी करे। उसे यह भी मालूम हुआ कि इस्हाक़ ने उसे
कनआनी औरत से शादी करने से मना किया है 7 और
कि याक़ूब अपने माँ-बाप की सुन कर मसोपुतामिया
चला गया है। 8 एसौ समझ गया कि कनआनी औरतें
मेरे बाप को मन्ज़ूर नहीं हैं। 9 इस लिए वह इब्राहीम के
बेटे इस्माईल के पास गया और उस की बेटी महलत
से शादी की। वह नबायोत की बहन थी। यूँ उस की
बीवियों में इज़ाफ़ा हुआ।

बैत-एल में याक़ूब का ख़्वाब

10 याक़ूब बैर-सबा से हारान की तरफ़ रवाना हुआ।
11 जब सूरज ग़ुरूब हुआ तो वह रात गुज़ारने के लिए
रुक गया और वहाँ के पत्थरों में से एक को ले कर
उसे अपने सिरहाने रखा और सो गया।

12 जब वह सो रहा था तो ख़्वाब में एक सीढ़ी देखी
जो ज़मीन से आस्मान तक पहुँचती थी। फ़रिश्ते उस
पर चढ़ते और उतरते नज़र आते थे। 13 रब्ब उस के
ऊपर खड़ा था। उस ने कहा, "मैं रब्ब इब्राहीम और
इस्हाक़ का ख़ुदा हूँ। मैं तुझे और तेरी औलाद को
यह ज़मीन दूँगा जिस पर तू लेटा है। 14 तेरी औलाद
ज़मीन पर ख़ाक की तरह बेशुमार होगी, और तू चारों
तरफ़ फैल जाएगा। दुनिया की तमाम क़ौमें तेरे और
तेरी औलाद के वसीले से बर्कत पाएँगी। 15 मैं तेरे
साथ हूँगा, तुझे महफ़ूज़ रखूँगा और आख़िरकार तुझे
इस मुल्क में वापस लाऊँगा। मुम्किन ही नहीं कि मैं
तेरे साथ अपना वादा पूरा करने से पहले तुझे छोड़
दूँ।"

16 तब याक़ूब जाग उठा। उस ने कहा, "यक़ीनन
रब्ब यहाँ हाज़िर है, और मुझे मालूम नहीं था।"
17 वह डर गया और कहा, "यह कितना ख़ौफ़नाक
मक़ाम है। यह तो अल्लाह ही का घर और आस्मान
का दरवाज़ा है।"

18 याक़ूब सुब्ह-सवेरे उठा। उस ने वह पत्थर लिया
जो उस ने अपने सिरहाने रखा था और उसे सतून
की तरह खड़ा किया। फिर उस ने उस पर ज़ैतून का
तेल उंडेल दिया। 19 उस ने मक़ाम का नाम बैत-एल
यानी 'अल्लाह का घर' रखा (पहले साथ वाले शहर
का नाम लूज़ था)। 20 उस ने क़सम खा कर कहा,
"अगर रब्ब मेरे साथ हो, सफ़र पर मेरी हिफ़ाज़त
करे, मुझे खाना और कपड़ा मुहय्या करे 21 और मैं
सलामती से अपने बाप के घर वापस पहुँचूँ तो फिर
वह मेरा ख़ुदा होगा। 22 जहाँ यह पत्थर सतून के तौर
पर खड़ा है वहाँ अल्लाह का घर होगा, और जो भी तू
मुझे देगा उस का दसवाँ हिस्सा तुझे दिया करूँगा।"

याक़ूब लाबन के घर पहुँचता है

29 1 याक़ूब ने अपना सफ़र जारी रखा और
चलते चलते मशरिक़ी क़ौमों के मुल्क में
पहुँच गया। 2 वहाँ उस ने खेत में कुआँ देखा जिस
के इर्दगिर्द भेड़-बक्रियों के तीन रेवड़ जमा थे। रेवड़ों
को कुएँ का पानी पिलाया जाना था, लेकिन उस के
मुँह पर बड़ा पत्थर पड़ा था। 3 वहाँ पानी पिलाने का
यह तरीक़ा था कि पहले चरवाहे तमाम रेवड़ों का
इन्तिज़ार करते और फिर पत्थर को लुढ़का कर मुँह
से हटा देते थे। पानी पिलाने के बाद वह पत्थर को
दुबारा मुँह पर रख देते थे।

4 याक़ूब ने चरवाहों से पूछा, "मेरे भाइयो, आप
कहाँ के हैं?" उन्हों ने जवाब दिया, "हारान के।"
5 उस ने पूछा, "क्या आप नहूर के पोते लाबन को
जानते हैं?" उन्हों ने कहा, "जी हाँ।" 6 उस ने पूछा,
"क्या वह ख़ैरियत से है?" उन्हों ने कहा, "जी, वह
ख़ैरियत से है। देखो, उधर उस की बेटी राख़िल
रेवड़ ले कर आ रही है।" 7 याक़ूब ने कहा, "अभी
तो शाम तक बहुत वक़्त बाक़ी है। रेवड़ों को जमा
करने का वक़्त तो नहीं है। आप क्यूँ उन्हें पानी पिला
कर दुबारा चरने नहीं देते?" 8 उन्हों ने जवाब दिया,
"पहले ज़रूरी है कि तमाम रेवड़ यहाँ पहुँचें। तब ही
पत्थर को लुढ़का कर एक तरफ़ हटाया जाएगा और
हम रेवड़ों को पानी पिलाएँगे।"

9 याक़ूब अभी उन से बात कर ही रहा था कि
राख़िल अपने बाप का रेवड़ ले कर आ पहुँची,
क्यूँकि भेड़-बक्रियों को चराना उस का काम था।

10जब याक़ूब ने राख़िल को मामूँ लाबन के रेवड़
के साथ आते देखा तो उस ने कुएँ के पास जा कर
पत्थर को लुढ़का कर मुँह से हटा दिया और भेड़-
बक्रियों को पानी पिलाया। 11फिर उस ने उसे बोसा
दिया और ख़ूब रोने लगा। 12उस ने कहा, "मैं आप
के अब्बू की बहन रिब्क़ा का बेटा हूँ।" यह सुन कर
राख़िल ने भाग कर अपने अब्बू को इत्तिला दी।

13जब लाबन ने सुना कि मेरा भानजा याक़ूब आया
है तो वह दौड़ कर उस से मिलने गया और उसे गले
लगा कर अपने घर ले आया। याक़ूब ने उसे सब कुछ
बता दिया जो हुआ था। 14लाबन ने कहा, "आप
वाक़ई मेरे रिश्तेदार हैं।" याक़ूब ने वहाँ एक पूरा
महीना गुज़ारा।

अपनी बीवियों के लिए याक़ूब की मेहनत-मशक़्क़त

15फिर लाबन याक़ूब से कहने लगा, "बेशक आप
मेरे रिश्तेदार हैं, लेकिन आप को मेरे लिए काम करने
के बदले में कुछ मिलना चाहिए। मैं आप को कितने
पैसे दूँ?" 16लाबन की दो बेटियाँ थीं। बड़ी का नाम
लियाह था और छोटी का राख़िल। 17लियाह की
आँखें चुनधी थीं जबकि राख़िल हर तरह से ख़ूबसूरत
थी। 18याक़ूब को राख़िल से मुहब्बत थी, इस लिए
उस ने कहा, "अगर मुझे आप की छोटी बेटी राख़िल
मिल जाए तो आप के लिए सात साल काम करूँगा।"
19लाबन ने कहा, "किसी और आदमी की निस्बत
मुझे यह ज़ियादा पसन्द है कि आप ही से उस की
शादी कराऊँ।"

20पस याक़ूब ने राख़िल को पाने के लिए सात साल
तक काम किया। लेकिन उसे ऐसा लगा जैसा दो एक
दिन ही गुज़रे हों क्यूँकि वह राख़िल को शिद्दत से
पियार करता था। 21इस के बाद उस ने लाबन से
कहा, "मुद्दत पूरी हो गई है। अब मुझे अपनी बेटी से
शादी करने दें।" 22लाबन ने उस मक़ाम के तमाम
लोगों को दावत दे कर शादी की ज़ियाफ़त की।
23लेकिन उस रात वह राख़िल की बजाय लियाह
को याक़ूब के पास ले आया, और याक़ूब उसी से
हमबिसतर हुआ। 24(लाबन ने लियाह को अपनी
लौंडी ज़िल्फ़ा दे दी थी ताकि वह उस की ख़िदमत
करे।)

25जब सुब्ह हुई तो याक़ूब ने देखा कि लियाह ही
मेरे पास है। उस ने लाबन के पास जा कर कहा, "यह
आप ने मेरे साथ क्या किया है? क्या मैं ने राख़िल
के लिए काम नहीं किया? आप ने मुझे धोका क्यूँ
दिया?" 26लाबन ने जवाब दिया, "यहाँ दस्तूर नहीं
है कि छोटी बेटी की शादी बड़ी से पहले कर दी
जाए 27एक हफ़्ते के बाद शादी की रुसूमात पूरी हो
जाएँगी। उस वक़्त तक सब्र करें। फिर मैं आप को
राख़िल भी दे दूँगा। शर्त यह है कि आप मज़ीद सात
साल मेरे लिए काम करें।"

28याक़ूब मान गया। चुनाँचे जब एक हफ़्ते के बाद
शादी की रुसूमात पूरी हुईं तो लाबन ने अपनी बेटी
राख़िल की शादी भी उस के साथ कर दी। 29(लाबन
ने राख़िल को अपनी लौंडी बिल्हाह दे दी ताकि
वह उस की ख़िदमत करे।) 30याक़ूब राख़िल से
भी हमबिसतर हुआ। वह लियाह की निस्बत उसे
ज़ियादा पियार करता था। फिर उस ने राख़िल के
इवज़ सात साल और लाबन की ख़िदमत की।

याक़ूब के बच्चे

31जब रब्ब ने देखा कि लियाह से नफ़रत की जाती
है तो उस ने उसे औलाद दी जबकि राख़िल के हाँ
बच्चे पैदा न हुए।

32लियाह हामिला हुई और उस के बेटा पैदा हुआ।
उस ने कहा, "रब्ब ने मेरी मुसीबत देखी है और अब
मेरा शौहर मुझे पियार करेगा।" उस ने उस का नाम
रूबिन यानी 'देखो एक बेटा' रखा।

33वह दुबारा हामिला हुई। एक और बेटा पैदा
हुआ। उस ने कहा, "रब्ब ने सुना कि मुझ से नफ़रत
की जाती है, इस लिए उस ने मुझे यह भी दिया है।"
उस ने उस का नाम शमाऊन यानी 'रब्ब ने सुना है'
रखा।

34 वह एक और दफ़ा हामिला हुई। तीसरा बेटा पैदा
हुआ। उस ने कहा, “अब आख़िरकार शौहर के साथ
मेरा बंधन मज़बूत हो जाएगा, क्यूँकि मैं ने उस के
लिए तीन बेटों को जन्म दिया है।” उस ने उस का
नाम लावी यानी बंधन रखा।

35 वह एक बार फिर हामिला हुई। चौथा बेटा पैदा
हुआ। उस ने कहा, “इस दफ़ा मैं रब्ब की तम्जीद
करूँगी।” उस ने उस का नाम यहूदाह यानी तम्जीद
रखा। इस के बाद उस से और बच्चे पैदा न हुए।

30 1 लेकिन राख़िल बेऔलाद ही रही, इस
लिए वह अपनी बहन से हसद करने लगी।
उस ने याक़ूब से कहा, “मुझे भी औलाद दें वर्ना
मैं मर जाऊँगी।” 2 याक़ूब को ग़ुस्सा आया। उस ने
कहा, “क्या मैं अल्लाह हूँ जिस ने तुझे औलाद से
महरूम रखा है?” 3 राख़िल ने कहा, “यहाँ मेरी लौंडी
बिल्हाह है। उस के साथ हमबिसतर हों ताकि वह मेरे
लिए बच्चे को जन्म दे और मैं उस की मारिफ़त माँ बन
जाऊँ।”

4 यूँ उस ने अपने शौहर को बिल्हाह दी, और वह
उस से हमबिसतर हुआ। 5 बिल्हाह हामिला हुई और
बेटा पैदा हुआ। 6 राख़िल ने कहा, “अल्लाह ने मेरे हक़
में फ़ैसला दिया है। उस ने मेरी दुआ सुन कर मुझे बेटा
दे दिया है।” उस ने उस का नाम दान यानी ‘किसी
के हक़ में फ़ैसला करने वाला’ रखा।

7 बिल्हाह दुबारा हामिला हुई और एक और बेटा
पैदा हुआ। 8 राख़िल ने कहा, “मैं ने अपनी बहन से
सख़्त कुश्ती लड़ी है, लेकिन जीत गई हूँ।” उस ने
उस का नाम नफ़ताली यानी ‘कुश्ती में मुझ से जीता
गया’ रखा।

9 जब लियाह ने देखा कि मेरे और बच्चे पैदा नहीं
हो रहे तो उस ने याक़ूब को अपनी लौंडी ज़िल्फ़ा दे
दी ताकि वह भी उस की बीवी हो। 10 ज़िल्फ़ा के भी
एक बेटा पैदा हुआ। 11 लियाह ने कहा, “मैं कितनी
ख़ुशक़िसमत हूँ!” चुनाँचे उस ने उस का नाम जद
यानी ख़ुशक़िसमती रखा।

12 फिर ज़िल्फ़ा के दूसरा बेटा पैदा हुआ। 13 लियाह
ने कहा, “मैं कितनी मुबारक हूँ। अब ख़वातीन मुझे
मुबारक कहेंगी।” उस ने उस का नाम आशर यानी
मुबारक रखा।

14 एक दिन अनाज की फ़सल की कटाई हो रही
थी कि रूबिन बाहर निकल कर खेतों में चला गया।
वहाँ उसे मर्दुमगयाह[d] मिल गए। वह उन्हें अपनी माँ
लियाह के पास ले आया। यह देख कर राख़िल ने
लियाह से कहा, “मुझे ज़रा अपने बेटे के मर्दुमगयाह
में से कुछ दे दो।” 15 लियाह ने जवाब दिया, “क्या
यही काफ़ी नहीं कि तुम ने मेरे शौहर को मुझ से छीन
लिया है? अब मेरे बेटे के मर्दुमगयाह को भी छीनना
चाहती हो।” राख़िल ने कहा, “अगर तुम मुझे अपने
बेटे के मर्दुमगयाह में से दो तो आज रात याक़ूब के
साथ सो सकती हो।”

16 शाम को याक़ूब खेतों से वापस आ रहा था कि
लियाह आगे से उस से मिलने को गई और कहा,
“आज रात आप को मेरे साथ सोना है, क्यूँकि मैं ने
अपने बेटे के मर्दुमगयाह के इवज़ आप को उजरत
पर लिया है।” चुनाँचे याक़ूब ने लियाह के पास रात
गुज़ारी।

17 उस वक़्त अल्लाह ने लियाह की दुआ सुनी और
वह हामिला हुई। उस के पाँचवाँ बेटा पैदा हुआ।
18 लियाह ने कहा, “अल्लाह ने मुझे इस का अज्र दिया
है कि मैं ने अपने शौहर को अपनी लौंडी दी।” उस
ने उस का नाम इश्कार यानी अज्र रखा।

19 इस के बाद वह एक और दफ़ा हामिला हुई।
उस के छटा बेटा पैदा हुआ। 20 उस ने कहा, “अल्लाह
ने मुझे एक अच्छा-ख़ासा तुह्फ़ा दिया है। अब मेरा
ख़ावन्द मेरे साथ रहेगा, क्यूँकि मुझ से उस के छः
बेटे पैदा हुए हैं।” उस ने उस का नाम ज़बूलून यानी
रिहाइश रखा।

---

[d]एक पौदा जिस के बारे में ख़याल किया जाता था कि उसे खा कर बाँझ औरत भी बच्चे को जन्म देगी।

21 इस के बाद बेटी पैदा हुई। उस ने उस का नाम
दीना रखा।

22 फिर अल्लाह ने राख़िल को भी याद किया। उस
ने उस की दुआ सुन कर उसे औलाद बख़्शी। 23 वह
हामिला हुई और एक बेटा पैदा हुआ। उस ने कहा,
“मुझे बेटा अता करने से अल्लाह ने मेरी इज़्ज़त बहाल
कर दी है। 24 रब्ब मुझे एक और बेटा दे।” उस ने उस
का नाम यूसुफ़ यानी ‘वह और दे’ रखा।

याक़ूब का लाबन के साथ सौदा

25 यूसुफ़ की पैदाइश के बाद याक़ूब ने लाबन से
कहा, “अब मुझे इजाज़त दें कि मैं अपने वतन और
घर को वापस जाऊँ। 26 मुझे मेरे बाल-बच्चे दें जिन के
इवज़ मैं ने आप की ख़िदमत की है। फिर मैं चला
जाऊँगा। आप तो ख़ुद जानते हैं कि मैं ने कितनी
मेहनत के साथ आप के लिए काम किया है।”

27 लेकिन लाबन ने कहा, “मुझ पर मेहरबानी करें
और यहीं रहें। मुझे ग़ैबदानी से पता चला है कि रब्ब
ने मुझे आप के सबब से बर्कत दी है। 28 अपनी उजरत
ख़ुद मुक़र्रर करें तो मैं वही दिया करूँगा।”

29 याक़ूब ने कहा, “आप जानते हैं कि मैं ने किस
तरह आप के लिए काम किया, कि मेरे वसीले से
आप के मवेशी कितने बढ़ गए हैं। 30 जो थोड़ा बहुत
मेरे आने से पहले आप के पास था वह अब बहुत
ज़ियादा बढ़ गया है। रब्ब ने मेरे काम से आप को
बहुत बर्कत दी है। अब वह वक़्त आ गया है कि मैं
अपने घर के लिए कुछ करूँ।”

31 लाबन ने कहा, “मैं आप को क्या दूँ?” याक़ूब
ने कहा, “मुझे कुछ न दें। मैं इस शर्त पर आप की
भेड़-बक्रियों की देख-भाल जारी रखूँगा कि 32 आज
मैं आप के रेवड़ में से गुज़र कर उन तमाम भेड़ों को
अलग कर लूँगा जिन के जिस्म पर छोटे या बड़े धब्बे
हों या जो सफ़ेद न हों। इसी तरह मैं उन तमाम बक्रियों
को भी अलग कर लूँगा जिन के जिस्म पर छोटे या
बड़े धब्बे हों। यही मेरी उजरत होगी। 33 आइन्दा जिन
बक्रियों के जिस्म पर छोटे या बड़े धब्बे होंगे या जिन
भेड़ों का रंग सफ़ेद नहीं होगा वह मेरा अज्र होंगी। जब
कभी आप उन का मुआइना करेंगे तो आप मालूम कर
सकेंगे कि मैं दियानतदार रहा हूँ। क्यूँकि मेरे जानवरों
के रंग से ही ज़ाहिर होगा कि मैं ने आप का कुछ
चुराया नहीं है।” 34 लाबन ने कहा, “ठीक है। ऐसा
ही हो जैसा आप ने कहा है।”

35 उसी दिन लाबन ने उन बक्रों को अलग कर
लिया जिन के जिस्म पर धारियाँ या धब्बे थे और
उन तमाम बक्रियों को जिन के जिस्म पर छोटे या
बड़े धब्बे थे। जिस के भी जिस्म पर सफ़ेद निशान
था उसे उस ने अलग कर लिया। इसी तरह उस ने
उन तमाम भेड़ों को भी अलग कर लिया जो पूरे तौर
पर सफ़ेद न थे। फिर लाबन ने उन्हें अपने बेटों के
सपुर्द कर दिया 36 जो उन के साथ याक़ूब से इतना दूर
चले गए कि उन के दर्मियान तीन दिन का फ़ासिला
था। तब याक़ूब लाबन की बाक़ी भेड़-बक्रियों की
देख-भाल करता गया।

37 याक़ूब ने सफ़ेदा, बादाम और चनार की हरी हरी
शाख़ें ले कर उन से कुछ छिलका यूँ उतार दिया कि
उस पर सफ़ेद धारियाँ नज़र आईं। 38 उस ने उन्हें
भेड़-बक्रियों के सामने उन हौज़ों में गाड़ दिया जहाँ
वह पानी पीते थे, क्यूँकि वहाँ यह जानवर मस्त हो
कर मिलाप करते थे। 39 जब वह इन शाख़ों के सामने
मिलाप करते तो जो बच्चे पैदा होते उन के जिस्म पर
छोटे और बड़े धब्बे और धारियाँ होती थीं। 40 फिर
याक़ूब ने भेड़ के बच्चों को अलग करके अपने रेवड़ों
को लाबन के उन जानवरों के सामने चरने दिया जिन
के जिस्म पर धारियाँ थीं और जो सफ़ेद न थे। यूँ उस
ने अपने ज़ाती रेवड़ों को अलग कर लिया और उन्हें
लाबन के रेवड़ के साथ चरने न दिया।

41 लेकिन उस ने यह शाख़ें सिर्फ़ उस वक़्त हौज़ों में
खड़ी कीं जब ताक़तवर जानवर मस्त हो कर मिलाप
करते थे। 42 कमज़ोर जानवरों के साथ उस ने ऐसा
न किया। इसी तरह लाबन को कमज़ोर जानवर और
याक़ूब को ताक़तवर जानवर मिल गए। 43 यूँ याक़ूब

बहुत अमीर बन गया। उस के पास बहुत से रेवड़, ग़ुलाम और लौंडियाँ, ऊँट और गधे थे।

याक़ूब की हिज्रत

31 1 एक दिन याक़ूब को पता चला कि लाबन के बेटे मेरे बारे में कह रहे हैं, "याक़ूब ने हमारे अब्बू से सब कुछ छीन लिया है। उस ने यह तमाम दौलत हमारे बाप की मिल्कियत से हासिल की है।" 2 याक़ूब ने यह भी देखा कि लाबन का मेरे साथ रवय्या पहले की निस्बत बिगड़ गया है। 3 फिर रब्ब ने उस से कहा, "अपने बाप के मुल्क और अपने रिश्तेदारों के पास वापस चला जा। मैं तेरे साथ हूँगा।"

4 उस वक़्त याक़ूब खुले मैदान में अपने रेवड़ों के पास था। उस ने वहाँ से राख़िल और लियाह को बुला कर 5 उन से कहा, "मैं ने देख लिया है कि आप के बाप का मेरे साथ रवय्या पहले की निस्बत बिगड़ गया है। लेकिन मेरे बाप का ख़ुदा मेरे साथ रहा है। 6 आप दोनों जानती हैं कि मैं ने आप के अब्बू के लिए कितनी जाँफ़िशानी से काम किया है। 7 लेकिन वह मुझे फ़रेब देता रहा और मेरी उजरत दस बार बदली। ताहम अल्लाह ने उसे मुझे नुक़सान पहुँचाने न दिया। 8 जब मामूँ लाबन कहते थे, 'जिन जानवरों के जिस्म पर धब्बे हों वही आप को उजरत के तौर पर मिलेंगे' तो तमाम भेड़-बक्रियों के ऐसे बच्चे पैदा हुए जिन के जिस्मों पर धब्बे ही थे। जब उन्हों ने कहा, 'जिन जानवरों के जिस्म पर धारियाँ होंगी वही आप को उजरत के तौर पर मिलेंगे' तो तमाम भेड़-बक्रियों के ऐसे बच्चे पैदा हुए जिन के जिस्मों पर धारियाँ ही थीं। 9 यूँ अल्लाह ने आप के अब्बू के मवेशी छीन कर मुझे दे दिए हैं। 10 अब ऐसा हुआ कि हैवानों की मस्ती के मौसम में मैं ने एक ख़्वाब देखा। उस में जो मेंढे और बक्रे भेड़-बक्रियों से मिलाप कर रहे थे उन के जिस्म पर बड़े और छोटे धब्बे और धारियाँ थीं। 11 उस ख़्वाब में अल्लाह के फ़रिश्ते ने मुझ से बात की, 'याक़ूब!' मैं ने कहा, 'जी, मैं हाज़िर हूँ।' 12 फ़रिश्ते ने कहा, 'अपनी नज़र उठा कर उस पर ग़ौर कर जो हो रहा है। वह तमाम मेंढे और बक्रे जो भेड़-बक्रियों से मिलाप कर रहे हैं उन के जिस्म पर बड़े और छोटे धब्बे और धारियाँ हैं। मैं यह ख़ुद करवा रहा हूँ, क्यूँकि मैं ने वह सब कुछ देख लिया है जो लाबन ने तेरे साथ किया है। 13 मैं वह ख़ुदा हूँ जो बैत-एल में तुझ पर ज़ाहिर हुआ था, उस जगह जहाँ तू ने सतून पर तेल उंडेल कर उसे मेरे लिए मख़्सूस किया और मेरे हुज़ूर क़सम खाई थी। अब उठ और रवाना हो कर अपने वतन वापस चला जा'।"

14 राख़िल और लियाह ने जवाब में याक़ूब से कहा, "अब हमें अपने बाप की मीरास से कुछ मिलने की उम्मीद नहीं रही। 15 उस का हमारे साथ अजनबी का सा सुलूक है। पहले उस ने हमें बेच दिया, और अब उस ने वह सारे पैसे खा भी लिए हैं। 16 चुनाँचे जो भी दौलत अल्लाह ने हमारे बाप से छीन ली है वह हमारी और हमारे बच्चों की ही है। अब जो कुछ भी अल्लाह ने आप को बताया है वह करें।"

17 तब याक़ूब ने उठ कर अपने बाल-बच्चों को ऊँटों पर बिठाया 18 और अपने तमाम मवेशी और मसोपुतामिया से हासिल किया हुआ तमाम सामान ले कर मुल्क-ए-कनआन में अपने बाप के हाँ जाने के लिए रवाना हुआ। 19 उस वक़्त लाबन अपनी भेड़-बक्रियों की पश्म कतरने को गया हुआ था। उस की ग़ैरमौजूदगी में राख़िल ने अपने बाप के बुत चुरा लिए।

20 याक़ूब ने लाबन को फ़रेब दे कर उसे इत्तिला न दी कि मैं जा रहा हूँ 21 बल्कि अपनी सारी मिल्कियत समेट कर फ़रार हुआ। दरया-ए-फ़ुरात को पार करके वह जिलिआद के पहाड़ी इलाक़े की तरफ़ सफ़र करने लगा।

लाबन याक़ूब का ताक़्क़ुब करता है

22 तीन दिन गुज़र गए। फिर लाबन को बताया गया कि याक़ूब भाग गया है। 23 अपने रिश्तेदारों को साथ ले कर उस ने उस का ताक़्क़ुब किया। सात

दिन चलते चलते उस ने याक़ूब को आ लिया जब
वह जिलिआद के पहाड़ी इलाक़े में पहुँच गया था।
24 लेकिन उस रात अल्लाह ने ख़्वाब में लाबन के पास
आ कर उस से कहा, “ख़बरदार! याक़ूब को बुरा-
भला न कहना।”

25 जब लाबन उस के पास पहुँचा तो याक़ूब ने
जिलिआद के पहाड़ी इलाक़े में अपने ख़ैमे लगाए
हुए थे। लाबन ने भी अपने रिश्तेदारों के साथ वहीं
अपने ख़ैमे लगाए। 26 उस ने याक़ूब से कहा, “यह
आप ने क्या किया है? आप मुझे धोका दे कर मेरी
बेटियों को क्यूँ जंगी क़ैदियों की तरह हाँक लाए हैं?
27 आप क्यूँ मुझे फ़रेब दे कर ख़ामोशी से भाग आए
हैं? अगर आप मुझे इत्तिला देते तो मैं आप को ख़ुशी
ख़ुशी दफ़ और सरोद के साथ गाते बजाते रुख़सत
करता। 28 आप ने मुझे अपने नवासे-नवासियों और
बेटियों को बोसा देने का मौक़ा भी न दिया। आप की
यह हर्कत बड़ी अहमक़ाना थी। 29 मैं आप को बहुत
नुक़्सान पहुँचा सकता हूँ। लेकिन पिछली रात आप
के अब्बू के ख़ुदा ने मुझ से कहा, ‘ख़बरदार! याक़ूब
को बुरा-भला न कहना।’ 30 ठीक है, आप इस लिए
चले गए कि अपने बाप के घर वापस जाने के बड़े
आर्ज़ूमन्द थे। लेकिन यह आप ने क्या किया है कि
मेरे बुत चुरा लाए हैं?”

31 याक़ूब ने जवाब दिया, “मुझे डर था कि आप
अपनी बेटियों को मुझ से छीन लेंगे। 32 लेकिन अगर
आप को यहाँ किसी के पास अपने बुत मिल जाएँ
तो उसे सज़ा-ए-मौत दी जाए हमारे रिश्तेदारों की
मौजूदगी में मालूम करें कि मेरे पास आप की कोई
चीज़ है कि नहीं। अगर है तो उसे ले लें।” याक़ूब को
मालूम नहीं था कि राख़िल ने बुतों को चुराया है।

33 लाबन याक़ूब के ख़ैमे में दाख़िल हुआ और ढूँडने
लगा। वहाँ से निकल कर वह लियाह के ख़ैमे में और
दोनों लौंडियों के ख़ैमे में गया। लेकिन उस के बुत
कहीं नज़र न आए। आख़िर में वह राख़िल के ख़ैमे
में दाख़िल हुआ। 34 राख़िल बुतों को ऊँटों की एक
काठी के नीचे छुपा कर उस पर बैठ गई थी। लाबन
टटोल टटोल कर पूरे ख़ैमे में से गुज़रा लेकिन बुत न
मिले। 35 राख़िल ने अपने बाप से कहा, “अब्बू, मुझ
से नाराज़ न होना कि मैं आप के सामने खड़ी नहीं हो
सकती। मैं अय्याम-ए-माहवारी के सबब से उठ नहीं
सकती।” लाबन उसे छोड़ कर ढूँडता रहा, लेकिन
कुछ न मिला।

36 फिर याक़ूब को ग़ुस्सा आया और वह लाबन से
झगड़ने लगा। उस ने पूछा, “मुझ से क्या जुर्म सरज़द
हुआ है? मैं ने क्या गुनाह किया है कि आप इतनी
तुनदी से मेरे ताक़्क़ुब के लिए निकले हैं? 37 आप ने
टटोल टटोल कर मेरे सारे सामान की तलाशी ली है।
तो आप का क्या निकला है? उसे यहाँ अपने और मेरे
रिश्तेदारों के सामने रखें। फिर वह फ़ैसला करें कि
हम में से कौन हक़ पर है। 38 मैं बीस साल तक आप
के साथ रहा हूँ। उस दौरान आप की भेड़-बक्रियाँ
बच्चों से महरूम नहीं रहीं बल्कि मैं ने आप का एक
मेंढा भी नहीं खाया। 39 जब भी कोई भेड़ या बक्री
किसी जंगली जानवर ने फाड़ डाली तो मैं उसे आप
के पास न लाया बल्कि मुझे ख़ुद उस का नुक़्सान
भरना पड़ा। आप का तक़ाज़ा था कि मैं ख़ुद चोरी
हुए माल का इवज़ाना दूँ, ख़्वाह वह दिन के वक़्त
चोरी हुआ या रात को। 40 मैं दिन की शदीद गर्मी के
बाइस पिघल गया और रात की शदीद सर्दी के बाइस
जम गया। काम इतना सख़्त था कि मैं नींद से महरूम
रहा। 41 पूरे बीस साल इसी हालत में गुज़र गए। चौदह
साल मैं ने आप की बेटियों के इवज़ काम किया और
छः साल आप की भेड़-बक्रियों के लिए। उस दौरान
आप ने दस बार मेरी तनख़्वाह बदल दी। 42 अगर
मेरे बाप इस्हाक़ का ख़ुदा और मेरे दादा इब्राहीम का
माबूद [f]मेरे साथ न होता तो आप मुझे ज़रूर ख़ाली
हाथ रुख़सत करते। लेकिन अल्लाह ने मेरी मुसीबत

[f]लफ़्ज़ी तर्जुमा : दहशत यानी इस्हाक़ का वह ख़ुदा जिस से इन्सान दहशत खाता है।

और मेरी सख़्त मेहनत-मशक़्क़त देखी है, इस लिए उस ने कल रात को मेरे हक़ में फ़ैसला दिया।”

याक़ूब और लाबन के दर्मियान अह्द

43 तब लाबन ने याक़ूब से कहा, “यह बेटियाँ तो मेरी बेटियाँ हैं, और इन के बच्चे मेरे बच्चे हैं। यह भेड़-बक्रियाँ भी मेरी ही हैं। लेकिन अब मैं अपनी बेटियों और उन के बच्चों के लिए कुछ नहीं कर सकता।
44 इस लिए आओ, हम एक दूसरे के साथ अह्द बाँधें। इस के लिए हम यहाँ पत्थरों का ढेर लगाएँ जो अह्द की गवाही देता रहे।”

45 चुनाँचे याक़ूब ने एक पत्थर ले कर उसे सतून
के तौर पर खड़ा किया। 46 उस ने अपने रिश्तेदारों से
कहा, “कुछ पत्थर जमा करें।” उन्हों ने पत्थर जमा करके ढेर लगा दिया। फिर उन्हों ने उस ढेर के पास
बैठ कर खाना खाया। 47 लाबन ने उस का नाम यज्र-
शाहदूथा रखा जबकि याक़ूब ने जल-एद रखा। दोनों नामों का मतलब ‘गवाही का ढेर’ है यानी वह ढेर जो
गवाही देता है। 48 लाबन ने कहा, “आज हम दोनों के दर्मियान यह ढेर अह्द की गवाही देता है।” इस लिए
उस का नाम जल-एद रखा गया। 49 उस का एक और
नाम मिस्फ़ाह यानी ‘पहरेदारों का मीनार’ भी रखा गया। क्यूँकि लाबन ने कहा, “रब्ब हम पर पहरा दे
जब हम एक दूसरे से अलग हो जाएँगे। 50 मेरी बेटियों
से बुरा सुलूक न करना, न उन के इलावा किसी और से शादी करना। अगर मुझे पता भी न चले लेकिन ज़रूर याद रखें कि अल्लाह मेरे और आप के सामने
गवाह है। 51 यहाँ यह ढेर है जो मैं ने लगा दिया है
और यहाँ यह सतून भी है। 52 यह ढेर और सतून दोनों
इस के गवाह हैं कि न मैं यहाँ से गुज़र कर आप को नुक़्सान पहुँचाऊँगा और न आप यहाँ से गुज़र कर
मुझे नुक़्सान पहुँचाएँगे। 53 इब्राहीम, नहूर और उन
के बाप का ख़ुदा हम दोनों के दर्मियान फ़ैसला करे अगर ऐसा कोई मुआमला हो।” जवाब में याक़ूब ने इस्हाक़ के माबूद की क़सम खाई कि मैं यह अह्द
कभी नहीं तोड़ूँगा। 54 उस ने पहाड़ पर एक जानवर
क़ुर्बानी के तौर पर चढ़ाया और अपने रिश्तेदारों को खाना खाने की दावत दी। उन्हों ने खाना खा कर वहीं पहाड़ पर रात गुज़ारी।

55 अगले दिन सुब्ह-सवेरे लाबन ने अपने नवासे-नवासियों और बेटियों को बोसा दे कर उन्हें बर्कत दी। फिर वह अपने घर वापस चला गया।

याक़ूब एसौ से मिलने के लिए तय्यार हो जाता है

32 1 याक़ूब ने भी अपना सफ़र जारी रखा।
रास्ते में अल्लाह के फ़रिश्ते उस से मिले।
2 उन्हें देख कर उस ने कहा, “यह अल्लाह की लश्करगाह है।” उस ने उस मक़ाम का नाम महनाइम यानी ‘दो लश्करगाहें’ रखा।

3 याक़ूब ने अपने भाई एसौ के पास अपने आगे आगे क़ासिद भेजे। एसौ सईर यानी अदोम के मुल्क
में आबाद था। 4 उन्हें एसौ को बताना था, “आप
का ख़ादिम याक़ूब आप को इत्तिला देता है कि मैं परदेस में जा कर अब तक लाबन का मेहमान रहा
हूँ। 5 वहाँ मुझे बैल, गधे, भेड़-बक्रियाँ, ग़ुलाम और
लौंडियाँ हासिल हुए हैं। अब मैं अपने मालिक को इत्तिला दे रहा हूँ कि वापस आ गया हूँ और आप की नज़र-ए-करम का ख़्वाहिशमन्द हूँ।”

6 जब क़ासिद वापस आए तो उन्हों ने कहा, “हम आप के भाई एसौ के पास गए, और वह 400 आदमी साथ ले कर आप से मिलने आ रहा है।”

7 याक़ूब घबरा कर बहुत परेशान हुआ। उस ने अपने साथ के तमाम लोगों, भेड़-बक्रियों, गाय-बैलों
और ऊँटों को दो गुरोहों में तक़्सीम किया। 8 ख़याल
यह था कि अगर एसौ आ कर एक गुरोह पर हम्ला
करे तो बाक़ी गुरोह शायद बच जाए 9 फिर याक़ूब
ने दुआ की, “ऐ मेरे दादा इब्राहीम और मेरे बाप इस्हाक़ के ख़ुदा, मेरी दुआ सुन! ऐ रब्ब, तू ने ख़ुद मुझे बताया, ‘अपने मुल्क और रिश्तेदारों के पास
वापस जा, और मैं तुझे काम्याबी दूँगा।’ 10 मैं उस
तमाम मेहरबानी और वफ़ादारी के लाइक़ नहीं जो तू ने अपने ख़ादिम को दिखाई है। जब मैं ने लाबन के

पास जाते वक़्त दरया-ए-यर्दन को पार किया तो मेरे
पास सिर्फ़ यह लाठी थी, और अब मेरे पास यह दो
गुरोह हैं। 11 मुझे अपने भाई एसौ से बचा, क्यूँकि मुझे
डर है कि वह मुझ पर हम्ला करके बाल-बच्चों समेत
सब कुछ तबाह कर देगा। 12 तू ने ख़ुद कहा था, 'मैं
तुझे काम्याबी दूँगा और तेरी औलाद इतनी बढ़ाऊँगा
कि वह समुन्दर की रेत की मानिन्द बेशुमार होगी'।"

13 याक़ूब ने वहाँ रात गुज़ारी। फिर उस ने अपने
माल में से एसौ के लिए तुह्फ़े चुन लिए : 14 200
बक्रियाँ, 20 बक्रे, 200 भेड़ें, 20 मेंढे, 15 30 दूध
देने वाली ऊँटनियाँ बच्चों समेत, 40 गाएँ, 10 बैल,
20 गधियाँ और 10 गधे। 16 उस ने उन्हें मुख़्तलिफ़
रेवड़ों में तक़्सीम करके अपने मुख़्तलिफ़ नौकरों के
सपुर्द किया और उन से कहा, "मेरे आगे आगे चलो
लेकिन हर रेवड़ के दर्मियान फ़ासिला रखो।"

17 जो नौकर पहले रेवड़ ले कर आगे निकला उस
से याक़ूब ने कहा, "मेरा भाई एसौ तुम से मिलेगा और
पूछेगा, 'तुम्हारा मालिक कौन है? तुम कहाँ जा रहे
हो? तुम्हारे सामने के जानवर किस के हैं?' 18 जवाब
में तुम्हें कहना है, 'यह आप के ख़ादिम याक़ूब के हैं।
यह तुह्फ़ा हैं जो वह अपने मालिक एसौ को भेज रहे
हैं। याक़ूब हमारे पीछे पीछे आ रहे हैं'।"

19 याक़ूब ने यही हुक्म हर एक नौकर को दिया
जिसे रेवड़ ले कर उस के आगे आगे जाना था। उस
ने कहा, "जब तुम एसौ से मिलोगे तो उस से यही
कहना है। 20 तुम्हें यह भी ज़रूर कहना है, आप के
ख़ादिम याक़ूब हमारे पीछे आ रहे हैं।" क्यूँकि याक़ूब
ने सोचा, मैं इन तुह्फ़ों से उस के साथ सुलह करूँगा।
फिर जब उस से मुलाक़ात होगी तो शायद वह मुझे
क़बूल कर ले। 21 यूँ उस ने यह तुह्फ़े अपने आगे
आगे भेज दिए। लेकिन उस ने ख़ुद ख़ैमागाह में रात
गुज़ारी।

याक़ूब की कुश्ती

22 उस रात वह उठा और अपनी दो बीवियों, दो
लौंडियों और ग्यारह बेटों को ले कर दरया-ए-यब्बोक़
को वहाँ से पार किया जहाँ कम गहराई थी। 23 फिर
उस ने अपना सारा सामान भी वहाँ भेज दिया।
24 लेकिन वह ख़ुद अकेला ही पीछे रह गया।

उस वक़्त एक आदमी आया और पौ फटने तक
उस से कुश्ती लड़ता रहा। 25 जब उस ने देखा कि
मैं याक़ूब पर ग़ालिब नहीं आ रहा तो उस ने उस
के कूल्हे को छुआ, और उस का जोड़ निकल गया।
26 आदमी ने कहा, "मुझे जाने दे, क्यूँकि पौ फटने
वाली है।"

याक़ूब ने कहा, "पहले मुझे बर्कत दें, फिर ही आप
को जाने दूँगा।" 27 आदमी ने पूछा, "तेरा क्या नाम
है?" उस ने जवाब दिया, "याक़ूब।" 28 आदमी ने
कहा, "अब से तेरा नाम याक़ूब नहीं बल्कि इस्राईल
यानी 'वह अल्लाह से लड़ता है' होगा। क्यूँकि तू
अल्लाह और आदमियों के साथ लड़ कर ग़ालिब
आया है।"

29 याक़ूब ने कहा, "मुझे अपना नाम बताएँ।" उस
ने कहा, "तू क्यूँ मेरा नाम जानना चाहता है?" फिर
उस ने याक़ूब को बर्कत दी।

30 याक़ूब ने कहा, "मैं ने अल्लाह को रू-ब-रू देखा
तो भी बच गया हूँ।" इस लिए उस ने उस मक़ाम का
नाम फ़नीएल रखा। 31 याक़ूब वहाँ से चला तो सूरज
तुलू हो रहा था। वह कूल्हे के सबब से लंगड़ाता रहा।
32 यही वजह है कि आज भी इस्राईल की औलाद
कूल्हे के जोड़ पर की नस को नहीं खाते, क्यूँकि
याक़ूब की इसी नस को छुआ गया था।

याक़ूब एसौ से मिलता है

33 1 फिर एसौ उन की तरफ़ आता हुआ नज़र
आया। उस के साथ 400 आदमी थे। उन्हें
देख कर याक़ूब ने बच्चों को बाँट कर लियाह, राख़िल
और दोनों लौंडियों के हवाले कर दिया। 2 उस ने
दोनों लौंडियों को उन के बच्चों समेत आगे चलने
दिया। फिर लियाह उस के बच्चों समेत और आख़िर
में राख़िल और यूसुफ़ आए। 3 याक़ूब ख़ुद सब से
आगे एसौ से मिलने गया। चलते चलते वह सात दफ़ा

ज़मीन तक झुका। 4लेकिन एसौ दौड़ कर उस से मिलने आया और उसे गले लगा कर बोसा दिया। दोनों रो पड़े।

5फिर एसौ ने औरतों और बच्चों को देखा। उस ने पूछा, “तुम्हारे साथ यह लोग कौन हैं?” याक़ूब ने कहा, “यह आप के ख़ादिम के बच्चे हैं जो अल्लाह ने अपने करम से नवाज़े हैं।”

6दोनों लौंडियाँ अपने बच्चों समेत आ कर उस के सामने झुक गईं। 7फिर लियाह अपने बच्चों के साथ आई और आख़िर में यूसुफ़ और राख़िल आ कर झुक गए।

8एसौ ने पूछा, “जिस जानवरों के बड़े ग़ोल से मेरी मुलाक़ात हुई उस से क्या मुराद है?” याक़ूब ने जवाब दिया, “यह तुहफ़ा है ताकि आप का ख़ादिम आप की नज़र में मक़्बूल हो।” 9लेकिन एसौ ने कहा, “मेरे भाई, मेरे पास बहुत कुछ है। यह अपने पास ही रखो।” 10याक़ूब ने कहा, “नहीं जी, अगर मुझ पर आप के करम की नज़र है तो मेरे इस तुहफ़े को ज़रूर क़बूल फ़रमाएँ। क्यूँकि जब मैं ने आप का चिहरा देखा तो वह मेरे लिए अल्लाह के चिहरे की मानिन्द था, आप ने मेरे साथ इस क़दर अच्छा सुलूक किया है। 11मेहरबानी करके यह तुहफ़ा क़बूल करें जो मैं आप के लिए लाया हूँ। क्यूँकि अल्लाह ने मुझ पर अपने करम का इज़्हार किया है, और मेरे पास बहुत कुछ है।”

याक़ूब इस्रार करता रहा तो आख़िरकार एसौ ने उसे क़बूल कर लिया। फिर एसौ कहने लगा, 12“आओ, हम रवाना हो जाएँ। मैं तुम्हारे आगे आगे चलूँगा।” 13याक़ूब ने जवाब दिया, “मेरे मालिक, आप जानते हैं कि मेरे बच्चे नाज़ुक हैं। मेरे पास भेड़-बक्रियाँ, गाय-बैल और उन के दूध पीने वाले बच्चे भी हैं। अगर मैं उन्हें एक दिन के लिए भी हद्द से ज़ियादा हाँकों तो वह मर जाएँगे। 14मेरे मालिक, मेहरबानी करके मेरे आगे आगे जाएँ। मैं आराम से उसी रफ़्तार से आप के पीछे पीछे चलता रहूँगा जिस रफ़्तार से मेरे मवेशी और मेरे बच्चे चल सकेंगे। यूँ हम आहिस्ता चलते हुए आप के पास सईर पहुँचेंगे।” 15एसौ ने कहा, “क्या मैं अपने आदमियों में से कुछ आप के पास छोड़ दूँ?” लेकिन याक़ूब ने कहा, “क्या ज़रूरत है? सब से अहम बात यह है कि आप ने मुझे क़बूल कर लिया है।”

16उस दिन एसौ सईर के लिए और 17याक़ूब सुक्कात के लिए रवाना हुआ। वहाँ उस ने अपने लिए मकान बना लिया और अपने मवेशियों के लिए झोंपड़ियाँ। इस लिए उस मक़ाम का नाम सुक्कात यानी झोंपड़ियाँ पड़ गया।

18फिर याक़ूब चलते चलते सलामती से सिकम शहर पहुँचा। यूँ उस का मसोपुतामिया से मुल्क-ए-कनआन तक का सफ़र इख़्तिताम तक पहुँच गया। उस ने अपने ख़ैमे शहर के सामने लगाए। 19उस के ख़ैमे हमोर की औलाद की ज़मीन पर लगे थे। उस ने यह ज़मीन चाँदी के 100 सिक्कों के बदले ख़रीद ली। 20वहाँ उस ने क़ुर्बानगाह बनाई जिस का नाम उस ने ‘एल ख़ुदा-ए- इस्राईल’ रखा।

दीना की इस्मतदरी

34 1एक दिन याक़ूब और लियाह की बेटी दीना कनआनी औरतों से मिलने के लिए घर से निकली। 2शहर में एक आदमी बनाम सिकम रहता था। उस का वालिद हमोर उस इलाक़े का हुक्मरान था और हिव्वी क़ौम से ताल्लुक़ रखता था। जब सिकम ने दीना को देखा तो उस ने उसे पकड़ कर उस की इस्मतदरी की। 3लेकिन उस का दिल दीना से लग गया। वह उस से मुहब्बत करने लगा और पियार से उस से बातें करता रहा। 4उस ने अपने बाप से कहा, “इस लड़की के साथ मेरी शादी करा दें।”

5जब याक़ूब ने अपनी बेटी की इस्मतदरी की ख़बर सुनी तो उस के बेटे मवेशियों के साथ खुले मैदान में थे। इस लिए वह उन के वापस आने तक ख़ामोश रहा।

6 सिकम का बाप हमोर शहर से निकल कर याक़ूब
से बात करने के लिए आया। 7 जब याक़ूब के बेटों
को दीना की इस्मतदरी की ख़बर मिली तो उन के
दिल रंजिश और ग़ुस्से से भर गए कि सिकम ने
याक़ूब की बेटी की इस्मतदरी से इस्राईल की इतनी
बेइज़्ज़ती की है। वह सीधे खुले मैदान से वापस
आए। 8 हमोर ने याक़ूब से कहा, "मेरे बेटे का दिल
आप की बेटी से लग गया है। मेहरबानी करके उस
की शादी मेरे बेटे के साथ कर दें। 9 हमारे साथ रिश्ता
बाँधें, हमारे बेटे-बेटियों के साथ शादियाँ कराएँ।
10 फिर आप हमारे साथ इस मुल्क में रह सकेंगे और
पूरा मुल्क आप के लिए खुला होगा। आप जहाँ भी
चाहें आबाद हो सकेंगे, तिजारत कर सकेंगे और
ज़मीन ख़रीद सकेंगे।" 11 सिकम ने ख़ुद भी दीना
के बाप और भाइयों से मिन्नत की, "अगर मेरी यह
दरख़्वास्त मन्ज़ूर हो तो मैं जो कुछ आप कहेंगे अदा
कर दूँगा। 12 जितना भी महर और तुह्फ़े आप मुक़र्रर
करें मैं दे दूँगा। सिर्फ़ मेरी यह ख़्वाहिश पूरी करें कि
यह लड़की मेरे अक़्द में आ जाए।"

13 लेकिन दीना की इस्मतदरी के सबब से याक़ूब
के बेटों ने सिकम और उस के बाप हमोर से चालाकी
करके 14 कहा, "हम ऐसा नहीं कर सकते। हम अपनी
बहन की शादी किसी ऐसे आदमी से नहीं करा सकते
जिस का ख़तना नहीं हुआ। इस से हमारी बेइज़्ज़ती
होती है। 15 हम सिर्फ़ इस शर्त पर राज़ी होंगे कि आप
अपने तमाम लड़कों और मर्दों का ख़तना करवाने से
हमारी मानिन्द हो जाएँ। 16 फिर आप के बेटे-बेटियों
के साथ हमारी शादियाँ हो सकेंगी और हम आप
के साथ एक क़ौम बन जाएँगे। 17 लेकिन अगर आप
ख़तना कराने के लिए तय्यार नहीं हैं तो हम अपनी
बहन को ले कर चले जाएँगे।"

18 यह बातें हमोर और उस के बेटे सिकम को
अच्छी लगीं। 19 नौजवान सिकम ने फ़ौरन उन पर
अमल किया, क्यूँकि वह दीना को बहुत पसन्द
करता था। सिकम अपने ख़ान्दान में सब से मुअज़्ज़ज़
था। 20 हमोर अपने बेटे सिकम के साथ शहर के
दरवाज़े पर गया जहाँ शहर के फ़ैसले किए जाते थे।
वहाँ उन्हों ने बाक़ी शहरियों से बात की। 21 "यह
आदमी हम से झगड़ने वाले नहीं हैं, इस लिए क्यूँ न
वह इस मुल्क में हमारे साथ रहें और हमारे दर्मियान
तिजारत करें? हमारे मुल्क में उन के लिए भी काफ़ी
जगह है। आओ, हम उन की बेटियों और बेटों से
शादियाँ करें। 22 लेकिन यह आदमी सिर्फ़ इस शर्त पर
हमारे दर्मियान रहने और एक ही क़ौम बनने के लिए
तय्यार हैं कि हम उन की तरह अपने तमाम लड़कों
और मर्दों का ख़तना कराएँ। 23 अगर हम ऐसा करें
तो उन के तमाम मवेशी और सारा माल हमारा ही
होगा। चुनाँचे आओ, हम मुत्तफ़िक़ हो कर फ़ैसला
कर लें ताकि वह हमारे दर्मियान रहें।"

24 सिकम के शहरी हमोर और सिकम के मश्वरे पर
राज़ी हुए। तमाम लड़कों और मर्दों का ख़तना कराया
गया। 25 तीन दिन के बाद जब ख़तने के सबब से
लोगों की हालत बुरी थी तो दीना के दो भाई शमाऊन
और लावी अपनी तल्वारें ले कर शहर में दाख़िल
हुए। किसी को शक तक नहीं था कि क्या कुछ होगा।
अन्दर जा कर उन्हों ने बच्चों से ले कर बूढ़ों तक
तमाम मर्दों को क़त्ल कर दिया 26 जिन में हमोर और
उस का बेटा सिकम भी शामिल थे। फिर वह दीना
को सिकम के घर से ले कर चले गए।

27 इस क़त्ल-ए-आम के बाद याक़ूब के बाक़ी बेटे
शहर पर टूट पड़े और उसे लूट लिया। यूँ उन्हों ने
अपनी बहन की इस्मतदरी का बदला लिया। 28 वह
भेड़-बक्रियाँ, गाय-बैल, गधे और शहर के अन्दर
और बाहर का सब कुछ ले कर चलते बने। 29 उन्हों
ने सारे माल पर क़ब्ज़ा किया, औरतों और बच्चों को
क़ैदी बना लिया और तमाम घरों का सामान भी ले
गए।

30 फिर याक़ूब ने शमाऊन और लावी से कहा, "तुम
ने मुझे मुसीबत में डाल दिया है। अब कनआनी,
फ़रिज़्ज़ी और मुल्क के बाक़ी बाशिन्दों में मेरी
बदनामी हुई है। मेरे साथ कम आदमी हैं। अगर दूसरे
मिल कर हम पर हम्ला करें तो हमारे पूरे ख़ान्दान

का सत्यानास हो जाएगा।” 31 लेकिन उन्हों ने कहा, “क्या यह ठीक था कि उस ने हमारी बहन के साथ कस्बी का सा सुलूक किया?”

बैत-एल में याक़ूब पर अल्लाह की बर्कत

35 1 अल्लाह ने याक़ूब से कहा, “उठ, बैत-एल जा कर वहाँ आबाद हो। वहीं अल्लाह के लिए जो तुझ पर ज़ाहिर हुआ जब तू अपने भाई एसौ से भाग रहा था क़ुर्बानगाह बना।” 2 चुनाँचे याक़ूब ने अपने घर वालों और बाक़ी सारे साथियों से कहा, “जो भी अजनबी बुत आप के पास हैं उन्हें फैंक दें। अपने आप को पाक-साफ़ करके अपने कपड़े बदलें, 3 क्यूँकि हमें यह जगह छोड़ कर बैत-एल जाना है। वहाँ मैं उस ख़ुदा के लिए क़ुर्बानगाह बनाऊँगा जिस ने मुसीबत के वक़्त मेरी दुआ सुनी। जहाँ भी मैं गया वहाँ वह मेरे साथ रहा है।” 4 यह सुन कर उन्हों ने याक़ूब को तमाम बुत दे दिए जो उन के पास थे और तमाम बालियाँ जो उन्हों ने तावीज़ के तौर पर कानों में पहन रखी थीं। उस ने सब कुछ सिकम के क़रीब बलूत के दरख़्त के नीचे ज़मीन में दबा दिया। 5 फिर वह रवाना हुए। इर्दगिर्द के शहरों पर अल्लाह की तरफ़ से इतना शदीद ख़ौफ़ छा गया कि उन्हों ने याक़ूब और उस के बेटों का ताक़्क़ुब न किया।

6 चलते चलते याक़ूब अपने लोगों समेत लूज़ पहुँच गया जो मुल्क-ए-कनआन में था। आज लूज़ का नाम बैत-एल है। 7 याक़ूब ने वहाँ क़ुर्बानगाह बना कर मक़ाम का नाम बैत-एल यानी ‘अल्लाह का घर’ रखा। क्यूँकि वहाँ अल्लाह ने अपने आप को उस पर ज़ाहिर किया था जब वह अपने भाई से फ़रार हो रहा था।

8 वहाँ रिब्क़ा की दाया दबोरा मर गई। वह बैत-एल के जुनूब में बलूत के दरख़्त के नीचे दफ़न हुई, इस लिए उस का नाम अल्लोन-बकूत यानी ‘रोने का बलूत का दरख़्त’ रखा गया।

9 अल्लाह याक़ूब पर एक दफ़ा और ज़ाहिर हुआ और उसे बर्कत दी। यह मसोपुतामिया से वापस आने पर दूसरी बार हुआ। 10 अल्लाह ने उस से कहा, “अब से तेरा नाम याक़ूब नहीं बल्कि इस्राईल होगा।” यूँ उस ने उस का नया नाम इस्राईल रखा। 11 अल्लाह ने यह भी उस से कहा, “मैं अल्लाह क़ादिर-ए-मुतलक़ हूँ। फल फूल और तादाद में बढ़ता जा। एक क़ौम नहीं बल्कि बहुत सी क़ौमें तुझ से निकलेंगी। तेरी औलाद में बादशाह भी शामिल होंगे। 12 मैं तुझे वही मुल्क दूँगा जो इब्राहीम और इस्हाक़ को दिया है। और तेरे बाद उसे तेरी औलाद को दूँगा।”

13 फिर अल्लाह वहाँ से आस्मान पर चला गया। 14 जहाँ अल्लाह याक़ूब से हमकलाम हुआ था वहाँ उस ने पत्थर का सतून खड़ा किया और उस पर मै और तेल उंडेल कर उसे मख़्सूस किया। 15 उस ने जगह का नाम बैत-एल रखा।

राख़िल की मौत

16 फिर याक़ूब अपने घर वालों के साथ बैत-एल को छोड़ कर इफ़्राता की तरफ़ चल पड़ा। राख़िल उम्मीद से थी, और रास्ते में बच्चे की पैदाइश का वक़्त आ गया। बच्चा बड़ी मुश्किल से पैदा हुआ। 17 जब दर्द-ए-ज़ह उरूज को पहुँच गया तो दाई ने उस से कहा, “मत डरो, क्यूँकि एक और बेटा है।” 18 लेकिन वह दम तोड़ने वाली थी, और मरते मरते उस ने उस का नाम बिन-ऊनी यानी ‘मेरी मुसीबत का बेटा’ रखा। लेकिन उस के बाप ने उस का नाम बिन्यमीन यानी ‘दहने हाथ या ख़ुशक़िसमती का बेटा’ रखा। 19 राख़िल फ़ौत हुई, और वह इफ़्राता के रास्ते में दफ़न हुई। आजकल इफ़्राता को बैत-लहम कहा जाता है। 20 याक़ूब ने उस की क़ब्र पर पत्थर का सतून खड़ा किया। वह आज तक राख़िल की क़ब्र की निशानदिही करता है।

21 वहाँ से याक़ूब ने अपना सफ़र जारी रखा और मिज्दल-इदर की परली तरफ़ अपने ख़ैमे लगाए। 22 जब वह वहाँ ठहरे थे तो रूबिन याक़ूब की हरम बिल्हाह से हमबिसतर हुआ। याक़ूब को मालूम हो गया।

याक़ूब के बेटे

याक़ूब के बारह बेटे थे। 23 लियाह के बेटे यह थे : उस का सब से बड़ा बेटा रूबिन, फिर शमाऊन, लावी, यहूदाह, इश्कार और ज़बूलून। 24 राख़िल के दो बेटे थे, यूसुफ़ और बिन्यमीन। 25 राख़िल की लौंडी बिल्हाह के दो बेटे थे, दान और नफ़ताली। 26 लियाह की लौंडी ज़िल्फ़ा के दो बेटे थे, जद और आशर। याक़ूब के यह बेटे मसोपुतामिया में पैदा हुए।

इस्हाक़ की मौत

27 फिर याक़ूब अपने बाप इस्हाक़ के पास पहुँच गया जो हब्रून के क़रीब मम्रे में अजनबी की हैसियत से रहता था (उस वक़्त हब्रून का नाम क़िर्यत-अर्बा था)। वहाँ इस्हाक़ और उस से पहले इब्राहीम रहा करते थे। 28–29 इस्हाक़ 180 साल का था जब वह उम्ररसीदा और ज़िन्दगी से आसूदा हो कर अपने बापदादा से जा मिला। उस के बेटे एसौ और याक़ूब ने उसे दफ़न किया।

एसौ की औलाद

36 1 यह एसौ की औलाद का नसबनामा है (एसौ को अदोम भी कहा जाता है) :

2 एसौ ने तीन कनआनी औरतों से शादी की : हित्ती आदमी ऐलोन की बेटी अदा से, अना की बेटी उहलीबामा से जो हिव्वी आदमी सिबओन की नवासी थी 3 और इस्माईल की बेटी बासमत से जो नबायोत की बहन थी। 4 अदा का एक बेटा इलीफ़ज़ और बासमत का एक बेटा रऊएल पैदा हुआ। 5 उहलीबामा के तीन बेटे पैदा हुए, यऊस, यालाम और क़ोरह। एसौ के यह तमाम बेटे मुल्क-ए-कनआन में पैदा हुए।

6 बाद में एसौ दूसरे मुल्क में चला गया। उस ने अपनी बीवियों, बेटे-बेटियों और घर के रहने वालों को अपने तमाम मवेशियों और मुल्क-ए-कनआन में हासिल किए हुए माल समेत अपने साथ लिया। 7 वह इस वजह से चला गया कि दोनों भाइयों के पास इतने रेवड़ थे कि चराने की जगह कम पड़ गई। 8 चुनाँचे एसौ पहाड़ी इलाक़े सईर में आबाद हुआ। एसौ का दूसरा नाम अदोम है।

9 यह एसौ यानी सईर के पहाड़ी इलाक़े में आबाद अदोमियों का नसबनामा है : 10 एसौ की बीवी अदा का एक बेटा इलीफ़ज़ था जबकि उस की बीवी बासमत का एक बेटा रऊएल था। 11 इलीफ़ज़ के बेटे तेमान, ओमर, स़फ़ो, जाताम, क़नज़ 12 और अमालीक़ थे। अमालीक़ इलीफ़ज़ की हरम तिमना का बेटा था। यह सब एसौ की बीवी अदा की औलाद में शामिल थे। 13 रऊएल के बेटे नहत, ज़ारह, सम्मा और मिज़्ज़ा थे। यह सब एसौ की बीवी बासमत की औलाद में शामिल थे। 14 एसौ की बीवी उहलीबामा जो अना की बेटी और सिबओन की नवासी थी के तीन बेटे यऊस, यालाम और क़ोरह थे।

15 एसौ से मुख़्तलिफ़ क़बीलों के सरदार निकले। उस के पहलौठे इलीफ़ज़ से यह क़बाइली सरदार निकले : तेमान, ओमर, स़फ़ो, क़नज़, 16 क़ोरह, जाताम और अमालीक़। यह सब एसौ की बीवी अदा की औलाद थे। 17 एसौ के बेटे रऊएल से यह क़बाइली सरदार निकले : नहत, ज़ारह, सम्मा और मिज़्ज़ा। यह सब एसौ की बीवी बासमत की औलाद थे। 18 एसौ की बीवी उहलीबामा यानी अना की बेटी से यह क़बाइली सरदार निकले : यऊस, यालाम और क़ोरह। 19 यह तमाम सरदार एसौ की औलाद हैं।

सईर की औलाद

20 मुल्क-ए-अदोम के कुछ बाशिन्दे होरी आदमी सईर की औलाद थे। उन के नाम लोतान, सोबल, सिबओन, अना, 21 दीसोन, एसर और दीसान थे। सईर के यह बेटे मुल्क-ए-अदोम में होरी क़बीलों के सरदार थे।

22 लोतान होरी और हेमाम का बाप था। (तिमना लोतान की बहन थी।) 23 सोबल के बेटे अल्वान, मानहत, ऐबाल, सफ़ो और ओनाम थे। 24 सिबओन

के बेटे अय्याह और अना थे। इसी अना को गर्म चश्मे मिले जब वह बियाबान में अपने बाप के गधे चरा रहा था। 25 अना का एक बेटा दीसोन और एक बेटी उहलीबामा थी। 26 दीसोन के चार बेटे हम्दान, इश्बान, यित्रान और किरान थे। 27 एसर के तीन बेटे बिल्हान, ज़ावान और अक़ान थे। 28 दीसान के दो बेटे ऊज़ और अरान थे।

29–30 यही यानी लोतान, सोबल, सिबओन, अना, दीसोन, एसर और दीसान सईर के मुल्क में होरी क़बाइल के सरदार थे।

अदोम के बादशाह

31 इस से पहले कि इस्राईलियों का कोई बादशाह था ज़ैल के बादशाह यके बाद दीगरे मुल्क-ए-अदोम में हुकूमत करते थे :

32 बाला बिन बओर जो दिन्हाबा शहर का था मुल्क-ए-अदोम का पहला बादशाह था।

33 उस की मौत पर यूबाब बिन ज़ारह जो बुस्रा शहर का था।

34 उस की मौत पर हुशाम जो तेमानियों के मुल्क का था।

35 उस की मौत पर हदद बिन बिदद जिस ने मुल्क-ए-मोआब में मिदियानियों को शिकस्त दी। वह अवीत का था।

36 उस की मौत पर सम्ला जो मस्रिक़ा का था।

37 उस की मौत पर साऊल जो दरया-ए-फ़ुरात पर रहोबोत शहर का था।

38 उस की मौत पर बाल-हनान बिन अक्बोर।

39 उस की मौत पर हदद जो फ़ाऊ शहर का था (बीवी का नाम महेतब-एल बिन्त मत्रिद बिन्त मेज़ाहाब था)।

40–43 एसौ से अदोमी क़बीलों के यह सरदार निकले : तिमना, अल्वह, यतेत, उहलीबामा, ऐला, फ़ीनोन, क़नज़, तेमान, मिब्सार, मजदीएल और इराम। अदोम के सरदारों की यह फ़हरिस्त उन की मौरूसी ज़मीन की आबादियों और क़बीलों के मुताबिक़ ही बयान की गई है। एसौ उन का बाप है।

यूसुफ़ के ख़्वाब

37 1 याक़ूब मुल्क-ए-कनआन में रहता था जहाँ पहले उस का बाप भी परदेसी था। 2 यह याक़ूब के ख़ान्दान का बयान है।

उस वक़्त याक़ूब का बेटा यूसुफ़ 17 साल का था। वह अपने भाइयों यानी बिल्हाह और ज़िल्फ़ा के बेटों के साथ भेड़-बक्रियों की देख-भाल करता था। यूसुफ़ अपने बाप को अपने भाइयों की बुरी हर्कतों की इत्तिला दिया करता था।

3 याक़ूब यूसुफ़ को अपने तमाम बेटों की निस्बत ज़ियादा पियार करता था। वजह यह थी कि वह तब पैदा हुआ जब बाप बूढ़ा था। इस लिए याक़ूब ने उस के लिए एक ख़ास रंगदार लिबास बनवाया। 4 जब उस के भाइयों ने देखा कि हमारा बाप यूसुफ़ को हम से ज़ियादा पियार करता है तो वह उस से नफ़रत करने लगे और अदब से उस से बात नहीं करते थे।

5 एक रात यूसुफ़ ने ख़्वाब देखा। जब उस ने अपने भाइयों को ख़्वाब सुनाया तो वह उस से और भी नफ़रत करने लगे। 6 उस ने कहा, "सुनो, मैं ने ख़्वाब देखा। 7 हम सब खेत में पूले बाँध रहे थे कि मेरा पूला खड़ा हो गया। आप के पूले मेरे पूले के इर्दगिर्द जमा हो कर उस के सामने झुक गए।" 8 उस के भाइयों ने कहा, "अच्छा, तू बादशाह बन कर हम पर हुकूमत करेगा?" उस के ख़्वाबों और उस की बातों के सबब से उन की उस से नफ़रत मज़ीद बढ़ गई।

9 कुछ देर के बाद यूसुफ़ ने एक और ख़्वाब देखा। उस ने अपने भाइयों से कहा, "मैं ने एक और ख़्वाब देखा है। उस में सूरज, चाँद और ग्यारह सितारे मेरे सामने झुक गए।" 10 उस ने यह ख़्वाब अपने बाप को भी सुनाया तो उस ने उसे डाँटा। उस ने कहा, "यह कैसा ख़्वाब है जो तू ने देखा! यह कैसी बात है कि मैं, तेरी माँ और तेरे भाई आ कर तेरे सामने ज़मीन तक झुक जाएँ?" 11 नतीजे में उस के भाई उस से

बहुत हसद करने लगे। लेकिन उस के बाप ने दिल
में यह बात महफ़ूज़ रखी।

यूसुफ़ को बेचा जाता है

12 एक दिन जब यूसुफ़ के भाई अपने बाप के रेवड़
चराने के लिए सिकम तक पहुँच गए थे 13 तो याक़ूब
ने यूसुफ़ से कहा, "तेरे भाई सिकम में रेवड़ों को चरा
रहे हैं। आ, मैं तुझे उन के पास भेज देता हूँ।" यूसुफ़ ने
जवाब दिया, "ठीक है।" 14 याक़ूब ने कहा, "जा कर
मालूम कर कि तेरे भाई और उन के साथ के रेवड़
ख़ैरियत से हैं कि नहीं। फिर वापस आ कर मुझे बता
देना।" चुनाँचे उस के बाप ने उसे वादी-ए-हब्रून से
भेज दिया, और यूसुफ़ सिकम पहुँच गया।

15 वहाँ वह इधर उधर फिरता रहा। आख़िरकार
एक आदमी उस से मिला और पूछा, "आप क्या ढूँड
रहे हैं?" 16 यूसुफ़ ने जवाब दिया, "मैं अपने भाइयों
को तलाश कर रहा हूँ। मुझे बताएँ कि वह अपने
जानवरों को कहाँ चरा रहे हैं।" 17 आदमी ने कहा,
"वह यहाँ से चले गए हैं। मैं ने उन्हें यह कहते सुना
कि आओ, हम दूतैन जाएँ।" यह सुन कर यूसुफ़ अपने
भाइयों के पीछे दूतैन चला गया। वहाँ उसे वह मिल
गए।

18 जब यूसुफ़ अभी दूर से नज़र आया तो उस के
भाइयों ने उस के पहुँचने से पहले उसे क़त्ल करने
का मन्सूबा बनाया। 19 उन्हों ने कहा, "देखो, ख़्वाब
देखने वाला आ रहा है। 20 आओ, हम उसे मार डालें
और उस की लाश किसी गढ़े में फेंक दें। हम कहेंगे
कि किसी वहशी जानवर ने उसे फाड़ खाया है। फिर
पता चलेगा कि उस के ख़्वाबों की क्या हक़ीक़त
है।"

21 जब रूबिन ने उन की बातें सुनीं तो उस ने यूसुफ़
को बचाने की कोशिश की। उस ने कहा, "नहीं, हम
उसे क़त्ल न करें। 22 उस का ख़ून न करना। बेशक
उसे इस गढ़े में फेंक दें जो रेगिस्तान में है, लेकिन उसे
हाथ न लगाएँ।" उस ने यह इस लिए कहा कि वह
उसे बचा कर बाप के पास वापस पहुँचाना चाहता
था।

23 जूँ ही यूसुफ़ अपने भाइयों के पास पहुँचा उन्हों
ने उस का रंगदार लिबास उतार कर 24 यूसुफ़ को गढ़े
में फेंक दिया। गढ़ा ख़ाली था, उस में पानी नहीं था।
25 फिर वह रोटी खाने के लिए बैठ गए। अचानक
इस्माईलियों का एक क़ाफ़िला नज़र आया। वह
जिलिआद से मिस्र जा रहे थे, और उन के ऊँट क़ीमती
मसालों यानी लादन, बल्सान और मुर से लदे हुए थे।
26 तब यहूदाह ने अपने भाइयों से कहा, "हमें क्या
फ़ाइदा है अगर अपने भाई को क़त्ल करके उस के
ख़ून को छुपा दें? 27 आओ, हम उसे इन इस्माईलियों
के हाथ फ़रोख़्त कर दें। फिर कोई ज़रूरत नहीं होगी
कि हम उसे हाथ लगाएँ। आख़िर वह हमारा भाई
है।"

उस के भाई राज़ी हुए। 28 चुनाँचे जब मिदियानी
ताजिर वहाँ से गुज़रे तो भाइयों ने यूसुफ़ को खैंच कर
गढ़े से निकाला और चाँदी के 20 सिक्कों के इवज़ बेच
डाला। इस्माईली उसे ले कर मिस्र चले गए।

29 उस वक़्त रूबिन मौजूद नहीं था। जब वह गढ़े
के पास वापस आया तो यूसुफ़ उस में नहीं था। यह
देख कर उस ने परेशानी में अपने कपड़े फाड़ डाले।
30 वह अपने भाइयों के पास वापस गया और कहा,
"लड़का नहीं है। अब मैं किस तरह अब्बू के पास
जाऊँ?" 31 तब उन्हों ने बक्रा ज़बह करके यूसुफ़
का लिबास उस के ख़ून में डुबोया, 32 फिर रंगदार
लिबास इस ख़बर के साथ अपने बाप को भिजवा
दिया कि "हमें यह मिला है। इसे ग़ौर से देखें। यह
आप के बेटे का लिबास तो नहीं?"

33 याक़ूब ने उसे पहचान लिया और कहा, "बेशक
उसी का है। किसी वहशी जानवर ने उसे फाड़ खाया
है। यक़ीनन यूसुफ़ को फाड़ दिया गया है।" 34 याक़ूब
ने ग़म के मारे अपने कपड़े फाड़े और अपनी कमर से
टाट ओढ़ कर बड़ी देर तक अपने बेटे के लिए मातम
करता रहा। 35 उस के तमाम बेटे-बेटियाँ उसे तसल्ली
देने आए, लेकिन उस ने तसल्ली पाने से इन्कार किया

और कहा, “मैं पाताल में उतरते हुए भी अपने बेटे के लिए मातम करूँगा।” इस हालत में वह अपने बेटे के लिए रोता रहा।

36 इतने में मिदियानी मिस्र पहुँच कर यूसुफ़ को बेच चुके थे। मिस्र के बादशाह फ़िरऔन के एक आला अफ़्सर फ़ूतीफ़ार ने उसे ख़रीद लिया। फ़ूतीफ़ार बादशाह के मुहाफ़िज़ों पर मुक़र्रर था।

यहूदाह और तमर

38 1 उन दिनों में यहूदाह अपने भाइयों को छोड़ कर एक आदमी के पास रहने लगा जिस का नाम हीरा था और जो अदुल्लाम शहर से था। 2 वहाँ यहूदाह की मुलाक़ात एक कनआनी औरत से हुई जिस के बाप का नाम सूअ था। उस ने उस से शादी की। 3 बेटा पैदा हुआ जिस का नाम यहूदाह ने एर रखा। 4 एक और बेटा पैदा हुआ जिस का नाम बीवी ने ओनान रखा। 5 उस के तीसरा बेटा भी पैदा हुआ। उस ने उस का नाम सेला रखा। यहूदाह क़ज़ीब में था जब वह पैदा हुआ।

6 यहूदाह ने अपने बड़े बेटे एर की शादी एक लड़की से कराई जिस का नाम तमर था। 7 रब्ब के नज़्दीक एर शरीर था, इस लिए उस ने उसे हलाक कर दिया। 8 इस पर यहूदाह ने एर के छोटे भाई ओनान से कहा, “अपने बड़े भाई की बेवा के पास जाओ और उस से शादी करो ताकि तुम्हारे भाई की नसल क़ाइम रहे।” 9 ओनान ने ऐसा किया, लेकिन वह जानता था कि जो भी बच्चे पैदा होंगे वह क़ानून के मुताबिक़ मेरे बड़े भाई के होंगे। इस लिए जब भी वह तमर से हमबिसतर होता तो नुत्फ़ा को ज़मीन पर गिरा देता, क्यूँकि वह नहीं चाहता था कि मेरी मारिफ़त मेरे भाई के बच्चे पैदा हों। 10 यह बात रब्ब को बुरी लगी, और उस ने उसे भी सज़ा-ए-मौत दी। 11 तब यहूदाह ने अपनी बहू तमर से कहा, “अपने बाप के घर वापस चली जाओ और उस वक़्त तक बेवा रहो जब तक मेरा बेटा सेला बड़ा न हो जाए।” उस ने यह इस लिए कहा कि उसे डर था कि कहीं सेला भी अपने भाइयों की तरह मर न जाए चुनाँचे तमर अपने मैके चली गई।

12 काफ़ी दिनों के बाद यहूदाह की बीवी जो सूअ की बेटी थी मर गई। मातम का वक़्त गुज़र गया तो यहूदाह अपने अदुल्लामी दोस्त हीरा के साथ तिम्नत गया जहाँ यहूदाह की भेड़ों की पश्म कतरी जा रही थी। 13 तमर को बताया गया, “आप का सुसर अपनी भेड़ों की पश्म कतरने के लिए तिम्नत जा रहा है।” 14 यह सुन कर तमर ने बेवा के कपड़े उतार कर आम कपड़े पहन लिए। फिर वह अपना मुँह चादर से लपेट कर ऐनीम शहर के दरवाज़े पर बैठ गई जो तिम्नत के रास्ते में था। तमर ने यह हर्कत इस लिए की कि यहूदाह का बेटा सेला अब बालिग़ हो चुका था तो भी उस की उस के साथ शादी नहीं की गई थी।

15 जब यहूदाह वहाँ से गुज़रा तो उस ने उसे देख कर सोचा कि यह कस्बी है, क्यूँकि उस ने अपना मुँह छुपाया हुआ था। 16 वह रास्ते से हट कर उस के पास गया और कहा, “ज़रा मुझे अपने हाँ आने दें।” (उस ने नहीं पहचाना कि यह मेरी बहू है)। तमर ने कहा, “आप मुझे क्या देंगे?” 17 उस ने जवाब दिया, “मैं आप को बक्री का बच्चा भेज दूँगा।” तमर ने कहा, “ठीक है, लेकिन उसे भेजने तक मुझे ज़मानत दें।” 18 उस ने पूछा, “मैं आप को क्या दूँ?” तमर ने कहा, “अपनी मुहर और उसे गले में लटकाने की डोरी। वह लाठी भी दें जो आप पकड़े हुए हैं।” चुनाँचे यहूदाह उसे यह चीज़ें दे कर उस के साथ हमबिसतर हुआ। नतीजे में तमर उम्मीद से हुई। 19 फिर तमर उठ कर अपने घर वापस चली गई। उस ने अपनी चादर उतार कर दुबारा बेवा के कपड़े पहन लिए।

20 यहूदाह ने अपने दोस्त हीरा अदुल्लामी के हाथ बक्री का बच्चा भेज दिया ताकि वह चीज़ें वापस मिल जाएँ जो उस ने ज़मानत के तौर पर दी थीं। लेकिन हीरा को पता न चला कि औरत कहाँ है। 21 उस ने ऐनीम के बाशिन्दों से पूछा, “वह कस्बी कहाँ है जो यहाँ सड़क पर बैठी थी?” उन्हों ने जवाब दिया, “यहाँ ऐसी कोई कस्बी नहीं थी।”

22 उस ने यहूदाह के पास वापस जा कर कहा, “वह मुझे नहीं मिली बल्कि वहाँ के रहने वालों ने कहा कि यहाँ कोई ऐसी कस्बी थी नहीं।” 23 यहूदाह ने कहा, “फिर वह ज़मानत की चीज़ें अपने पास ही रखे। उसे छोड़ दो वर्ना लोग हमारा मज़ाक़ उड़ाएँगे। हम ने तो पूरी कोशिश की कि उसे बक्री का बच्चा मिल जाए, लेकिन आप को खोज लगाने के बावुजूद पता न चला कि वह कहाँ है।”

24 तीन माह के बाद यहूदाह को इत्तिला दी गई, “आप की बहू तमर ने ज़िना किया है, और अब वह हामिला है।” यहूदाह ने हुक्म दिया, “उसे बाहर ला कर जला दो।” 25 तमर को जलाने के लिए बाहर लाया गया तो उस ने अपने सुसर को ख़बर भेज दी, “यह चीज़ें देखें। यह उस आदमी की हैं जिस की मारिफ़त मैं उम्मीद से हूँ। पता करें कि यह मुहर, उस की डोरी और यह लाठी किस की हैं।” 26 यहूदाह ने उन्हें पहचान लिया। उस ने कहा, “मैं नहीं बल्कि यह औरत हक़ पर है, क्यूँकि मैं ने उस की अपने बेटे सेला से शादी नहीं कराई।” लेकिन बाद में यहूदाह कभी भी तमर से हमबिसतर न हुआ।

27 जब जन्म देने का वक़्त आया तो मालूम हुआ कि जुड़वाँ बच्चे हैं। 28 एक बच्चे का हाथ निकला तो दाई ने उसे पकड़ कर उस में सुर्ख़ धागा बाँध दिया और कहा, “यह पहले पैदा हुआ।” 29 लेकिन उस ने अपना हाथ वापस खैंच लिया, और उस का भाई पहले पैदा हुआ। यह देख कर दाई बोल उठी, “तू किस तरह फूट निकला है!” उस ने उस का नाम फ़ारस यानी फूट रखा। 30 फिर उस का भाई पैदा हुआ जिस के हाथ में सुर्ख़ धागा बंधा हुआ था। उस का नाम ज़ारह यानी चमक रखा गया।

यूसुफ़ और फ़ूतीफ़ार की बीवी

39 1 इस्माईलियों ने यूसुफ़ को मिस्र ले जा कर बेच दिया था। मिस्र के बादशाह के एक आला अफ़सर बनाम फ़ूतीफ़ार ने उसे ख़रीद लिया। वह शाही मुहाफ़िज़ों का कप्तान था। 2 रब्ब यूसुफ़ के साथ था। जो भी काम वह करता उस में काम्याब रहता। वह अपने मिस्री मालिक के घर में रहता था 3 जिस ने देखा कि रब्ब यूसुफ़ के साथ है और उसे हर काम में काम्याबी देता है। 4 चुनाँचे यूसुफ़ को मालिक की ख़ास मेहरबानी हासिल हुई, और फ़ूतीफ़ार ने उसे अपना ज़ाती नौकर बना लिया। उस ने उसे अपने घराने के इन्तिज़ाम पर मुक़र्रर किया और अपनी पूरी मिल्कियत उस के सपुर्द कर दी। 5 जिस वक़्त से फ़ूतीफ़ार ने अपने घराने का इन्तिज़ाम और पूरी मिल्कियत यूसुफ़ के सपुर्द की उस वक़्त से रब्ब ने फ़ूतीफ़ार को यूसुफ़ के सबब से बर्कत दी। उस की बर्कत फ़ूतीफ़ार की हर चीज़ पर थी, ख़्वाह घर में थी या खेत में। 6 फ़ूतीफ़ार ने अपनी हर चीज़ यूसुफ़ के हाथ में छोड़ दी। और चूँकि यूसुफ़ सब कुछ अच्छी तरह चलाता था इस लिए फ़ूतीफ़ार को खाना खाने के सिवा किसी भी मुआमले की फ़िक्र नहीं थी।

यूसुफ़ निहायत ख़ूबसूरत आदमी था। 7 कुछ देर के बाद उस के मालिक की बीवी की आँख उस पर लगी। उस ने उस से कहा, “मेरे साथ हमबिसतर हो!” 8 यूसुफ़ इन्कार करके कहने लगा, “मेरे मालिक को मेरे सबब से किसी मुआमले की फ़िक्र नहीं है। उन्हों ने सब कुछ मेरे सपुर्द कर दिया है। 9 घर के इन्तिज़ाम पर उन का इख़तियार मेरे इख़तियार से ज़ियादा नहीं है। आप के सिवा उन्हों ने कोई भी चीज़ मुझ से बाज़ नहीं रखी। तो फिर मैं किस तरह इतना ग़लत काम करूँ? मैं किस तरह अल्लाह का गुनाह करूँ?”

10 मालिक की बीवी रोज़-ब-रोज़ यूसुफ़ के पीछे पड़ी रही कि मेरे साथ हमबिसतर हो। लेकिन वह हमेशा इन्कार करता रहा।

11 एक दिन वह काम करने के लिए घर में गया। घर में और कोई नौकर नहीं था। 12 फ़ूतीफ़ार की बीवी ने यूसुफ़ का लिबास पकड़ कर कहा, “मेरे साथ हमबिसतर हो!” यूसुफ़ भाग कर बाहर चला गया लेकिन उस का लिबास पीछे औरत के हाथ में ही रह गया। 13 जब मालिक की बीवी ने देखा कि वह अपना लिबास छोड़ कर भाग गया है 14 तो उस ने घर के

नौकरों को बुला कर कहा, “यह देखो! मेरे मालिक
इस इब्रानी को हमारे पास ले आए हैं ताकि वह हमें
ज़लील करे। वह मेरी इस्मतदरी करने के लिए मेरे
कमरे में आ गया, लेकिन मैं ऊँची आवाज़ से चीख़ने
लगी। 15 जब मैं मदद के लिए ऊँची आवाज़ से चीख़ने
लगी तो वह अपना लिबास छोड़ कर भाग गया।”
16 उस ने मालिक के आने तक यूसुफ़ का लिबास
अपने पास रखा। 17 जब वह घर वापस आया तो
उस ने उसे यही कहानी सुनाई, “यह इब्रानी ग़ुलाम
जो आप ले आए हैं मेरी तज़लील के लिए मेरे पास
आया। 18 लेकिन जब मैं मदद के लिए चीख़ने लगी
तो वह अपना लिबास छोड़ कर भाग गया।”

यूसुफ़ क़ैदख़ाने में

19 यह सुन कर फ़ूतीफ़ार बड़े ग़ुस्से में आ गया।
20 उस ने यूसुफ़ को गिरिफ़्तार करके उस जेल में डाल
दिया जहाँ बादशाह के क़ैदी रखे जाते थे। वहीं वह
रहा। 21 लेकिन रब्ब यूसुफ़ के साथ था। उस ने उस
पर मेहरबानी की और उसे क़ैदख़ाने के दारोग़े की
नज़र में मक़्बूल किया। 22 यूसुफ़ यहाँ तक मक़्बूल
हुआ कि दारोग़े ने तमाम क़ैदियों को उस के सपुर्द
करके उसे पूरा इन्तिज़ाम चलाने की ज़िम्मादारी दी।
23 दारोग़े को किसी भी मुआमले की जिसे उस ने
यूसुफ़ के सपुर्द किया था फ़िक्र न रही, क्यूँकि रब्ब
यूसुफ़ के साथ था और उसे हर काम में काम्याबी
बख़्शी।

क़ैदियों के ख़्वाब

40 1 कुछ देर के बाद यूँ हुआ कि मिस्र के
बादशाह के सरदार साक़ी और बेकरी के
इंचार्ज ने अपने मालिक का गुनाह किया। 2 फ़िरऔन
को दोनों अफ़्सरों पर ग़ुस्सा आ गया। 3 उस ने उन्हें
उस क़ैदख़ाने में डाल दिया जो शाही मुहाफ़िज़ों
के कप्तान के सपुर्द था और जिस में यूसुफ़ था।
4 मुहाफ़िज़ों के कप्तान ने उन्हें यूसुफ़ के हवाले किया
ताकि वह उन की ख़िदमत करे। वहाँ वह काफ़ी देर
तक रहे।

5 एक रात बादशाह के सरदार साक़ी और बेकरी
के इंचार्ज ने ख़्वाब देखा। दोनों का ख़्वाब फ़र्क़ फ़र्क़
था, और उन का मतलब भी फ़र्क़ फ़र्क़ था। 6 जब
यूसुफ़ सुब्ह के वक़्त उन के पास आया तो वह दबे
हुए नज़र आए। 7 उस ने उन से पूछा, “आज आप
क्यूँ इतने परेशान हैं?” 8 उन्हों ने जवाब दिया, “हम
दोनों ने ख़्वाब देखा है, और कोई नहीं जो हमें उन का
मतलब बताए।” यूसुफ़ ने कहा, “ख़्वाबों की ताबीर
तो अल्लाह का काम है। ज़रा मुझे अपने ख़्वाब तो
सुनाएँ।”

9 सरदार साक़ी ने शुरू किया, “मैं ने ख़्वाब में अपने
सामने अंगूर की बेल देखी। 10 उस की तीन शाख़ें थीं।
उस के पत्ते लगे, कोंपलें फूट निकलीं और अंगूर पक
गए। 11 मेरे हाथ में बादशाह का पियाला था, और मैं
ने अंगूरों को तोड़ कर यूँ भींच दिया कि उन का रस
बादशाह के पियाले में आ गया। फिर मैं ने पियाला
बादशाह को पेश किया।”

12 यूसुफ़ ने कहा, “तीन शाख़ों से मुराद तीन दिन
हैं। 13 तीन दिन के बाद फ़िरऔन आप को बहाल
कर लेगा। आप को पहली ज़िम्मादारी वापस मिल
जाएगी। आप पहले की तरह सरदार साक़ी की
हैसियत से बादशाह का पियाला सँभालेंगे। 14 लेकिन
जब आप बहाल हो जाएँ तो मेरा ख़याल करें।
मेहरबानी करके बादशाह के सामने मेरा ज़िक्र करें
ताकि मैं यहाँ से रिहा हो जाऊँ। 15 क्यूँकि मुझे
इब्रानियों के मुल्क से अग़वा करके यहाँ लाया गया
है, और यहाँ भी मुझ से कोई ऐसी ग़लती नहीं हुई
कि मुझे इस गढ़े में फैंका जाता।”

16 जब शाही बेकरी के इंचार्ज ने देखा कि सरदार
साक़ी के ख़्वाब का अच्छा मतलब निकला तो उस
ने यूसुफ़ से कहा, “मेरा ख़्वाब भी सुनें। मैं ने सर पर
तीन टोकरियाँ उठा रखी थीं जो बेकरी की चीज़ों से
भरी हुई थीं। 17 सब से ऊपर वाली टोकरी में वह

तमाम चीज़ें थीं जो बादशाह की मेज़ के लिए बनाई जाती हैं। लेकिन परिन्दे आ कर उन्हें खा रहे थे।”

18 यूसुफ़ ने कहा, “तीन टोकरियों से मुराद तीन दिन हैं। 19 तीन दिन के बाद ही फ़िरऔन आप को क़ैदख़ाने से निकाल कर दरख़्त से लटका देगा। परिन्दे आप की लाश को खा जाएँगे।”

20 तीन दिन के बाद बादशाह की सालगिरह थी। उस ने अपने तमाम अफ़्सरों की ज़ियाफ़त की। इस मौक़े पर उस ने सरदार साक़ी और बेकरी के इंचार्ज को जेल से निकाल कर अपने हुज़ूर लाने का हुक्म दिया। 21 सरदार साक़ी को पहले वाली ज़िम्मादारी सौंप दी गई, 22 लेकिन बेकरी के इंचार्ज को सज़ा-ए-मौत दे कर दरख़्त से लटका दिया गया। सब कुछ वैसा ही हुआ जैसा यूसुफ़ ने कहा था।

23 लेकिन सरदार साक़ी ने यूसुफ़ का ख़याल न किया बल्कि उसे भूल ही गया।

बादशाह के ख़्वाब

41 1 दो साल गुज़र गए कि एक रात बादशाह ने ख़्वाब देखा। वह दरया-ए-नील के किनारे खड़ा था। 2 अचानक दरया में से सात ख़ूबसूरत और मोटी गाएँ निकल कर सरकंडों में चरने लगीं। 3 उन के बाद सात और गाएँ निकल आईं। लेकिन वह बदसूरत और दुबली-पतली थीं। वह दरया के किनारे दूसरी गाइयों के पास खड़ी हो कर 4 पहली सात ख़ूबसूरत और मोटी मोटी गाइयों को खा गईं। इस के बाद मिस्र का बादशाह जाग उठा। 5 फिर वह दुबारा सो गया। इस दफ़ा उस ने एक और ख़्वाब देखा। अनाज के एक पौदे पर सात मोटी मोटी और अच्छी अच्छी बालें लगी थीं। 6 फिर सात और बालें फूट निकलीं जो दुबली-पतली और मशरिक़ी हवा से झुलसी हुई थीं। 7 अनाज की सात दुबली-पतली बालों ने सात मोटी और ख़ूबसूरत बालों को निगल लिया। फिर फ़िरऔन जाग उठा तो मालूम हुआ कि मैं ने ख़्वाब ही देखा है।

8 सुब्ह हुई तो वह परेशान था, इस लिए उस ने मिस्र के तमाम जादूगरों और आलिमों को बुलाया। उस ने उन्हें अपने ख़्वाब सुनाए, लेकिन कोई भी उन की ताबीर न कर सका।

9 फिर सरदार साक़ी ने फ़िरऔन से कहा, “आज मुझे अपनी ख़ताएँ याद आती हैं। 10 एक दिन फ़िरऔन अपने ख़ादिमों से नाराज़ हुए। हुज़ूर ने मुझे और बेकरी के इंचार्ज को क़ैदख़ाने में डलवा दिया जिस पर शाही मुहाफ़िज़ों का कप्तान मुक़र्रर था। 11 एक ही रात में हम दोनों ने मुख़्तलिफ़ ख़्वाब देखे जिन का मतलब फ़र्क़ फ़र्क़ था। 12 वहाँ जेल में एक इब्रानी नौजवान था। वह मुहाफ़िज़ों के कप्तान का ग़ुलाम था। हम ने उसे अपने ख़्वाब सुनाए तो उस ने हमें उन का मतलब बता दिया। 13 और जो कुछ भी उस ने बताया सब कुछ वैसा ही हुआ। मुझे अपनी ज़िम्मादारी वापस मिल गई जबकि बेकरी के इंचार्ज को सज़ा-ए-मौत दे कर दरख़्त से लटका दिया गया।”

14 यह सुन कर फ़िरऔन ने यूसुफ़ को बुलाया, और उसे जल्दी से क़ैदख़ाने से लाया गया। उस ने शेव करवा कर अपने कपड़े बदले और सीधे बादशाह के हुज़ूर पहुँचा।

15 बादशाह ने कहा, “मैं ने ख़्वाब देखा है, और यहाँ कोई नहीं जो उस की ताबीर कर सके। लेकिन सुना है कि तू ख़्वाब को सुन कर उस का मतलब बता सकता है।” 16 यूसुफ़ ने जवाब दिया, “यह मेरे इख़तियार में नहीं है। लेकिन अल्लाह ही बादशाह को सलामती का पैग़ाम देगा।”

17 फ़िरऔन ने यूसुफ़ को अपने ख़्वाब सुनाए, “मैं ख़्वाब में दरया-ए-नील के किनारे खड़ा था। 18 अचानक दरया में से सात मोटी मोटी और ख़ूबसूरत गाएँ निकल कर सरकंडों में चरने लगीं। 19 इस के बाद सात और गाएँ निकलीं। वह निहायत बदसूरत और दुबली-पतली थीं। मैं ने इतनी बदसूरत गाएँ मिस्र में कहीं भी नहीं देखीं। 20 दुबली और बदसूरत गाएँ पहली मोटी गाइयों को खा गईं। 21 और निगलने के बाद भी मालूम नहीं होता था कि उन्हों

ने मोटी गाइयों को खाया है। वह पहले की तरह बदसूरत ही थीं। इस के बाद मैं जाग उठा। 22 फिर मैं ने एक और ख़्वाब देखा। सात मोटी और अच्छी बालें एक ही पौदे पर लगी थीं। 23 इस के बाद सात और बालें निकलीं जो ख़राब, दुबली-पतली और मशरिक़ी हवा से झुलसी हुई थीं। 24 सात दुबली-पतली बालें सात अच्छी बालों को निगल गईं। मैं ने यह सब कुछ अपने जादूगरों को बताया, लेकिन वह इस की ताबीर न कर सके।”

25 यूसुफ़ ने बादशाह से कहा, “दोनों ख़्वाबों का एक ही मतलब है। इन से अल्लाह ने हुज़ूर पर ज़ाहिर किया है कि वह क्या कुछ करने को है। 26 सात अच्छी गाइयों से मुराद सात साल हैं। इसी तरह सात अच्छी बालों से मुराद भी सात साल हैं। दोनों ख़्वाब एक ही बात बयान करते हैं। 27 जो सात दुबली और बदसूरत गाएँ बाद में निकलें उन से मुराद सात और साल हैं। यही सात दुबली-पतली और मशरिक़ी हवा से झुलसी हुई बालों का मतलब भी है। वह एक ही बात बयान करती हैं कि सात साल तक काल पड़ेगा। 28 यह वही बात है जो मैं ने हुज़ूर से कही कि अल्लाह ने हुज़ूर पर ज़ाहिर किया है कि वह क्या करेगा। 29 सात साल आएँगे जिन के दौरान मिस्र के पूरे मुल्क में कस्रत से पैदावार होगी। 30 उस के बाद सात साल काल पड़ेगा। काल इतना शदीद होगा कि लोग भूल जाएँगे कि पहले इतनी कस्रत थी। क्यूँकि काल मुल्क को तबाह कर देगा। 31 काल की शिद्दत के बाइस अच्छे सालों की कस्रत याद ही नहीं रहेगी। 32 हुज़ूर को इस लिए एक ही पैग़ाम दो मुख़्तलिफ़ ख़्वाबों की सूरत में मिला कि अल्लाह इस का पक्का इरादा रखता है, और वह जल्द ही इस पर अमल करेगा। 33 अब बादशाह किसी समझदार और दानिशमन्द आदमी को मुल्क-ए-मिस्र का इन्तिज़ाम सौंपें। 34 इस के इलावा वह ऐसे आदमी मुक़र्रर करें जो सात अच्छे सालों के दौरान हर फ़सल का पाँचवाँ हिस्सा लें। 35 वह उन अच्छे सालों के दौरान ख़ुराक जमा करें। बादशाह उन्हें इख़तियार दें कि वह शहरों में गोदाम बना कर अनाज को महफ़ूज़ कर लें। 36 यह ख़ुराक काल के उन सात सालों के लिए मख़्सूस की जाए जो मिस्र में आने वाले हैं। यूँ मुल्क तबाह नहीं होगा।”

यूसुफ़ को मिस्र पर हाकिम मुक़र्रर किया जाता है

37 यह मन्सूबा बादशाह और उस के अफ़्सरान को अच्छा लगा। 38 उस ने उन से कहा, “हमें इस काम के लिए यूसुफ़ से ज़ियादा लाइक़ आदमी नहीं मिलेगा। उस में अल्लाह की रूह है।” 39 बादशाह ने यूसुफ़ से कहा, “अल्लाह ने यह सब कुछ तुझ पर ज़ाहिर किया है, इस लिए कोई भी तुझ से ज़ियादा समझदार और दानिशमन्द नहीं है। 40 मैं तुझे अपने महल पर मुक़र्रर करता हूँ। मेरी तमाम रआया तेरे ताबे रहेगी। तेरा इख़तियार सिर्फ़ मेरे इख़तियार से कम होगा। 41 अब मैं तुझे पूरे मुल्क-ए-मिस्र पर हाकिम मुक़र्रर करता हूँ।”

42 बादशाह ने अपनी उंगली से वह अंगूठी उतारी जिस से मुहर लगाता था और उसे यूसुफ़ की उंगली में पहना दिया। उस ने उसे कतान का बारीक लिबास पहनाया और उस के गले में सोने का गलूबन्द पहना दिया। 43 फिर उस ने उसे अपने दूसरे रथ में सवार किया और लोग उस के आगे आगे पुकारते रहे, “घुटने टेको! घुटने टेको!”

यूँ यूसुफ़ पूरे मिस्र का हाकिम बना। 44 फ़िरऔन ने उस से कहा, “मैं तो बादशाह हूँ, लेकिन तेरी इजाज़त के बग़ैर पूरे मुल्क में कोई भी अपना हाथ या पाँओ नहीं हिलाएगा।” 45–46 उस ने यूसुफ़ का मिस्री नाम साफ़नत-फ़ानेह रखा और ओन के पुजारी फ़ोतीफ़िरा की बेटी आसनत के साथ उस की शादी कराई।

यूसुफ़ 30 साल का था जब वह मिस्र के बादशाह फ़िरऔन की ख़िदमत करने लगा। उस ने फ़िरऔन के हुज़ूर से निकल कर मिस्र का दौरा किया।

47 सात अच्छे सालों के दौरान मुल्क में निहायत अच्छी फ़सलें उगीं। 48 यूसुफ़ ने तमाम ख़ुराक जमा करके शहरों में महफ़ूज़ कर ली। हर शहर में उस ने इर्दगिर्द के खेतों की पैदावार महफ़ूज़

रखी। 49 जमाशुदा अनाज समुन्दर की रेत की मानिन्द बकस्रत था। इतना अनाज था कि यूसुफ़ ने आख़िरकार उस की पैमाइश करना छोड़ दिया।

50 काल से पहले यूसुफ़ और आसनत के दो बेटे पैदा हुए। 51 उस ने पहले का नाम मनस्सी यानी 'जो भुला देता है' रखा। क्यूँकि उस ने कहा, "अल्लाह ने मेरी मुसीबत और मेरे बाप का घराना मेरी याददाश्त से निकाल दिया है।" 52 दूसरे का नाम उस ने इफ़्राईम यानी 'दुगना फलदार' रखा। क्यूँकि उस ने कहा, "अल्लाह ने मुझे मेरी मुसीबत के मुल्क में फलने फूलने दिया है।"

53 सात अच्छे साल जिन में कस्रत की फ़सलें उगीं गुज़र गए। 54 फिर काल के सात साल शुरू हुए जिस तरह यूसुफ़ ने कहा था। तमाम दीगर ममालिक में भी काल पड़ गया, लेकिन मिस्र में वाफ़िर ख़ुराक पाई जाती थी। 55 जब काल ने तमाम मिस्र में ज़ोर पकड़ा तो लोग चीख़ कर खाने के लिए बादशाह से मिन्नत करने लगे। तब फ़िरऔन ने उन से कहा, "यूसुफ़ के पास जाओ। जो कुछ वह तुम्हें बताएगा वही करो।" 56 जब काल पूरी दुनिया में फैल गया तो यूसुफ़ ने अनाज के गोदाम खोल कर मिस्रियों को अनाज बेच दिया। क्यूँकि काल के बाइस मुल्क के हालात बहुत ख़राब हो गए थे। 57 तमाम ममालिक से भी लोग अनाज ख़रीदने के लिए यूसुफ़ के पास आए, क्यूँकि पूरी दुनिया सख़्त काल की गिरिफ़्त में थी।

यूसुफ़ के भाई मिस्र में

42 1 जब याक़ूब को मालूम हुआ कि मिस्र में अनाज है तो उस ने अपने बेटों से कहा, "तुम क्यूँ एक दूसरे का मुँह तकते हो? 2 सुना है कि मिस्र में अनाज है। वहाँ जा कर हमारे लिए कुछ ख़रीद लाओ ताकि हम भूके न मरें।"

3 तब यूसुफ़ के दस भाई अनाज ख़रीदने के लिए मिस्र गए। 4 लेकिन याक़ूब ने यूसुफ़ के सगे भाई बिन्यमीन को साथ न भेजा, क्यूँकि उस ने कहा, "ऐसा न हो कि उसे जानी नुक़्सान पहुँचे।" 5 यूँ याक़ूब के बेटे बहुत सारे और लोगों के साथ मिस्र गए, क्यूँकि मुल्क-ए-कनआन भी काल की गिरिफ़्त में था।

6 यूसुफ़ मिस्र के हाकिम की हैसियत से लोगों को अनाज बेचता था, इस लिए उस के भाई आ कर उस के सामने मुँह के बल झुक गए। 7 जब यूसुफ़ ने अपने भाइयों को देखा तो उस ने उन्हें पहचान लिया लेकिन ऐसा किया जैसा उन से नावाक़िफ़ हो और सख़्ती से उन से बात की, "तुम कहाँ से आए हो?" उन्हों ने जवाब दिया, "हम मुल्क-ए-कनआन से अनाज ख़रीदने के लिए आए हैं।" 8 गो यूसुफ़ ने अपने भाइयों को पहचान लिया, लेकिन उन्हों ने उसे न पहचाना। 9 उसे वह ख़्वाब याद आए जो उस ने उन के बारे में देखे थे। उस ने कहा, "तुम जासूस हो। तुम यह देखने आए हो कि हमारा मुल्क किन किन जगहों पर ग़ैरमहफ़ूज़ है।"

10 उन्हों ने कहा, "जनाब, हरगिज़ नहीं। आप के ग़ुलाम ग़ल्ला ख़रीदने आए हैं। 11 हम सब एक ही मर्द के बेटे हैं। आप के ख़ादिम शरीफ़ लोग हैं, जासूस नहीं हैं।" 12 लेकिन यूसुफ़ ने इस्रार किया, "नहीं, तुम देखने आए हो कि हमारा मुल्क किन किन जगहों पर ग़ैरमहफ़ूज़ है।"

13 उन्हों ने अर्ज़ की, "आप के ख़ादिम कुल बारह भाई हैं। हम एक ही आदमी के बेटे हैं जो कनआन में रहता है। सब से छोटा भाई इस वक़्त हमारे बाप के पास है जबकि एक मर गया है।" 14 लेकिन यूसुफ़ ने अपना इल्ज़ाम दुहराया, "ऐसा ही है जैसा मैं ने कहा है कि तुम जासूस हो। 15 मैं तुम्हारी बातें जाँच लूँगा। फ़िरऔन की हयात की क़सम, पहले तुम्हारा सब से छोटा भाई आए, वर्ना तुम इस जगह से कभी नहीं जा सकोगे। 16 एक भाई को उसे लाने के लिए भेज दो। बाक़ी सब यहाँ गिरिफ़्तार रहेंगे। फिर पता चलेगा कि तुम्हारी बातें सच्च हैं कि नहीं। अगर नहीं तो फ़िरऔन की हयात की क़सम, इस का मतलब यह होगा कि तुम जासूस हो।"

17 यह कह कर यूसुफ़ ने उन्हें तीन दिन के लिए क़ैदख़ाने में डाल दिया। 18 तीसरे दिन उस ने उन से कहा, "मैं अल्लाह का ख़ौफ़ मानता हूँ, इस लिए तुम को एक शर्त पर जीता छोड़ूँगा। 19 अगर तुम वाक़ई शरीफ़ लोग हो तो ऐसा करो कि तुम में से एक यहाँ क़ैदख़ाने में रहे जबकि बाक़ी सब अनाज ले कर अपने भूके घर वालों के पास वापस जाएँ। 20 लेकिन लाज़िम है कि तुम अपने सब से छोटे भाई को मेरे पास ले आओ। सिर्फ़ इस से तुम्हारी बातें सच्चा साबित होंगी और तुम मौत से बच जाओगे।"

यूसुफ़ के भाई राज़ी हो गए। 21 वह आपस में कहने लगे, "बेशक यह हमारे अपने भाई पर ज़ुल्म की सज़ा है। जब वह इल्तिजा कर रहा था कि मुझ पर रहम करें तो हम ने उस की बड़ी मुसीबत देख कर भी उस की न सुनी। इस लिए यह मुसीबत हम पर आ गई है।" 22 और रूबिन ने कहा, "क्या मैं ने नहीं कहा था कि लड़के पर ज़ुल्म मत करो, लेकिन तुम ने मेरी एक न मानी। अब उस की मौत का हिसाब-किताब किया जा रहा है।"

23 उन्हें मालूम नहीं था कि यूसुफ़ हमारी बातें समझ सकता है, क्यूँकि वह मुतर्जिम की मारिफ़त उन से बात करता था। 24 यह बातें सुन कर वह उन्हें छोड़ कर रोने लगा। फिर वह सँभल कर वापस आया। उस ने शमाऊन को चुन कर उसे उन के सामने ही बाँध लिया।

यूसुफ़ के भाई कनआन वापस जाते हैं

25 यूसुफ़ ने हुक्म दिया कि मुलाज़िम उन की बोरियाँ अनाज से भर कर हर एक भाई के पैसे उस की बोरी में वापस रख दें और उन्हें सफ़र के लिए खाना भी दें। उन्हों ने ऐसा ही किया। 26 फिर यूसुफ़ के भाई अपने गधों पर अनाज लाद कर रवाना हो गए।

27 जब वह रात के लिए किसी जगह पर ठहरे तो एक भाई ने अपने गधे के लिए चारा निकालने की ग़रज़ से अपनी बोरी खोली तो देखा कि बोरी के मुँह में उस के पैसे पड़े हैं। 28 उस ने अपने भाइयों से कहा, "मेरे पैसे वापस कर दिए गए हैं! वह मेरी बोरी में हैं।" यह देख कर उन के होश उड़ गए। काँपते हुए वह एक दूसरे को देखने और कहने लगे, "यह क्या है जो अल्लाह ने हमारे साथ किया है?"

29 मुल्क-ए-कनआन में अपने बाप के पास पहुँच कर उन्हों ने उसे सब कुछ सुनाया जो उन के साथ हुआ था। उन्हों ने कहा, 30 "उस मुल्क के मालिक ने बड़ी सख़्ती से हमारे साथ बात की। उस ने हमें जासूस क़रार दिया। 31 लेकिन हम ने उस से कहा, 'हम जासूस नहीं बल्कि शरीफ़ लोग हैं। 32 हम बारह भाई हैं, एक ही बाप के बेटे। एक तो मर गया जबकि सब से छोटा भाई इस वक़्त कनआन में बाप के पास है।' 33 फिर उस मुल्क के मालिक ने हम से कहा, 'इस से मुझे पता चलेगा कि तुम शरीफ़ लोग हो कि एक भाई को मेरे पास छोड़ दो और अपने भूके घर वालों के लिए ख़ुराक ले कर चले जाओ। 34 लेकिन अपने सब से छोटे भाई को मेरे पास ले आओ ताकि मुझे मालूम हो जाए कि तुम जासूस नहीं बल्कि शरीफ़ लोग हो। फिर मैं तुम को तुम्हारा भाई वापस कर दूँगा और तुम इस मुल्क में आज़ादी से तिजारत कर सकोगे'।"

35 उन्हों ने अपनी बोरियों से अनाज निकाल दिया तो देखा कि हर एक की बोरी में उस के पैसों की थैली रखी हुई है। यह पैसे देख कर वह ख़ुद और उन का बाप डर गए। 36 उन के बाप ने उन से कहा, "तुम ने मुझे अपने बच्चों से महरूम कर दिया है। यूसुफ़ नहीं रहा, शमाऊन भी नहीं रहा और अब तुम बिन्यमीन को भी मुझ से छीनना चाहते हो। सब कुछ मेरे ख़िलाफ़ है।" 37 फिर रूबिन बोल उठा, "अगर मैं उसे सलामती से आप के पास वापस न पहुँचाऊँ तो आप मेरे दो बेटों को सज़ा-ए-मौत दे सकते हैं। उसे मेरे सपुर्द करें तो मैं उसे वापस ले आऊँगा।" 38 लेकिन याक़ूब ने कहा, "मेरा बेटा तुम्हारे साथ जाने का नहीं। क्यूँकि उस का भाई मर गया है और वह अकेला ही रह गया है। अगर उस को रास्ते में

जानी नुक़्सान पहुँचे तो तुम मुझ बूढ़े को ग़म के मारे
पाताल में पहुँचाओगे।”

बिन्यमीन के हमराह दूसरा सफ़र

43 1 काल ने ज़ोर पकड़ा। 2 जब मिस्र से लाया
गया अनाज ख़त्म हो गया तो याक़ूब ने
कहा, “अब वापस जा कर हमारे लिए कुछ और ग़ल्ला
ख़रीद लाओ।” 3 लेकिन यहूदाह ने कहा, “उस मर्द
ने सख़्ती से कहा था, ‘तुम सिर्फ़ इस सूरत में मेरे पास
आ सकते हो कि तुम्हारा भाई साथ हो।’ 4 अगर आप
हमारे भाई को साथ भेजें तो फिर हम जा कर आप के
लिए ग़ल्ला ख़रीदेंगे 5 वर्ना नहीं। क्यूँकि उस आदमी ने
कहा था कि हम सिर्फ़ इस सूरत में उस के पास आ
सकते हैं कि हमारा भाई साथ हो।” 6 याक़ूब ने कहा,
“तुम ने उसे क्यूँ बताया कि हमारा एक और भाई भी
है? इस से तुम ने मुझे बड़ी मुसीबत में डाल दिया
है।” 7 उन्हों ने जवाब दिया, “वह आदमी हमारे और
हमारे ख़ान्दान के बारे में पूछता रहा, ‘क्या तुम्हारा
बाप अब तक ज़िन्दा है? क्या तुम्हारा कोई और भाई
है?’ फिर हमें जवाब देना पड़ा। हमें क्या पता था
कि वह हमें अपने भाई को साथ लाने को कहेगा।”
8 फिर यहूदाह ने बाप से कहा, “लड़के को मेरे साथ
भेज दें तो हम अभी रवाना हो जाएँगे। वर्ना आप,
हमारे बच्चे बल्कि हम सब भूकों मर जाएँगे। 9 मैं ख़ुद
उस का ज़ामिन हूँगा। आप मुझे उस की जान का
ज़िम्मादार ठहरा सकते हैं। अगर मैं उसे सलामती से
वापस न पहुँचाऊँ तो फिर मैं ज़िन्दगी के आख़िर तक
क़ुसूरवार ठहरूँगा। 10 जितनी देर तक हम झिजकते
रहे हैं उतनी देर में तो हम दो दफ़ा मिस्र जा कर वापस
आ सकते थे।”

11 तब उन के बाप इस्राईल ने कहा, “अगर और
कोई सूरत नहीं तो इस मुल्क की बेहतरीन पैदावार
में से कुछ तुह्फ़े के तौर पर ले कर उस आदमी को दे
दो यानी कुछ बल्सान, शहद, लादन, मुर, पिस्ता और
बादाम। 12 अपने साथ दुगनी रक़म ले कर जाओ,
क्यूँकि तुम्हें वह पैसे वापस करने हैं जो तुम्हारी
बोरियों में रखे गए थे। शायद किसी से ग़लती हुई
हो। 13 अपने भाई को ले कर सीधे वापस पहुँचना।
14 अल्लाह क़ादिर-ए-मुतलक़ करे कि यह आदमी तुम
पर रहम करके बिन्यमीन और तुम्हारे दूसरे भाई को
वापस भेजे। जहाँ तक मेरा ताल्लुक़ है, अगर मुझे
अपने बच्चों से महरूम होना है तो ऐसा ही हो।”

15 चुनाँचे वह तुह्फ़े, दुगनी रक़म और बिन्यमीन को
साथ ले कर चल पड़े। मिस्र पहुँच कर वह यूसुफ़ के
सामने हाज़िर हुए। 16 जब यूसुफ़ ने बिन्यमीन को उन
के साथ देखा तो उस ने अपने घर पर मुक़र्रर मुलाज़िम
से कहा, “इन आदमियों को मेरे घर ले जाओ ताकि
वह दोपहर का खाना मेरे साथ खाएँ। जानवर को
ज़बह करके खाना तय्यार करो।”

17 मुलाज़िम ने ऐसा ही किया और भाइयों को यूसुफ़
के घर ले गया। 18 जब उन्हें उस के घर पहुँचाया जा
रहा था तो वह डर कर सोचने लगे, “हमें उन पैसों के
सबब से यहाँ लाया जा रहा है जो पहली दफ़ा हमारी
बोरियों में वापस किए गए थे। वह हम पर अचानक
हम्ला करके हमारे गधे छीन लेंगे और हमें ग़ुलाम बना
लेंगे।”

19 इस लिए घर के दरवाज़े पर पहुँच कर उन्हों ने घर
पर मुक़र्रर मुलाज़िम से कहा, 20 “जनाब-ए-आली,
हमारी बात सुन लीजिए। इस से पहले हम अनाज
ख़रीदने के लिए यहाँ आए थे। 21 लेकिन जब हम
यहाँ से रवाना हो कर रास्ते में रात के लिए ठहरे तो
हम ने अपनी बोरियाँ खोल कर देखा कि हर बोरी के
मुँह में हमारे पैसों की पूरी रक़म पड़ी है। हम यह पैसे
वापस ले आए हैं। 22 नीज़, हम मज़ीद ख़ुराक ख़रीदने
के लिए और पैसे ले आए हैं। ख़ुदा जाने किस ने हमारे
यह पैसे हमारी बोरियों में रख दिए।”

23 मुलाज़िम ने कहा, “फ़िक्र न करें। मत डरें। आप
के और आप के बाप के ख़ुदा ने आप के लिए आप
की बोरियों में यह ख़ज़ाना रखा होगा। ब-हर-हाल
मुझे आप के पैसे मिल गए हैं।”

मुलाज़िम शमाऊन को उन के पास बाहर ले आया।
24 फिर उस ने भाइयों को यूसुफ़ के घर में ले जा कर

उन्हें पाँओ धोने के लिए पानी और गधों को चारा
दिया। 25 उन्हों ने अपने तुह्फ़े तय्यार रखे, क्यूँकि
उन्हें बताया गया, “यूसुफ़ दोपहर का खाना आप के
साथ ही खाएगा।”

26 जब यूसुफ़ घर पहुँचा तो वह अपने तुह्फ़े ले कर
उस के सामने आए और मुँह के बल झुक गए। 27 उस
ने उन से ख़ैरियत दरयाफ़्त की और फिर कहा, “तुम
ने अपने बूढ़े बाप का ज़िक्र किया। क्या वह ठीक
हैं? क्या वह अब तक ज़िन्दा हैं?” 28 उन्हों ने जवाब
दिया, “जी, आप के ख़ादिम हमारे बाप अब तक
ज़िन्दा हैं।” वह दुबारा मुँह के बल झुक गए।

29 जब यूसुफ़ ने अपने सगे भाई बिन्यमीन को देखा
तो उस ने कहा, “क्या यह तुम्हारा सब से छोटा भाई
है जिस का तुम ने ज़िक्र किया था? बेटा, अल्लाह की
नज़र-ए-करम तुम पर हो।” 30 यूसुफ़ अपने भाई को
देख कर इतना मुतअस्सिर हुआ कि वह रोने को था,
इस लिए वह जल्दी से वहाँ से निकल कर अपने सोने
के कमरे में गया और रो पड़ा। 31 फिर वह अपना मुँह
धो कर वापस आया। अपने आप पर क़ाबू पा कर
उस ने हुक्म दिया कि नौकर खाना ले आएँ।

32 नौकरों ने यूसुफ़ के लिए खाने का अलग
इन्तिज़ाम किया और भाइयों के लिए अलग। मिस्रियों
के लिए भी खाने का अलग इन्तिज़ाम था, क्यूँकि
इब्रानियों के साथ खाना खाना उन की नज़र में
क़ाबिल-ए-नफ़रत था। 33 भाइयों को उन की उम्र की
तर्तीब के मुताबिक़ यूसुफ़ के सामने बिठाया गया।
यह देख कर भाई निहायत हैरान हुए। 34 नौकरों ने
उन्हें यूसुफ़ की मेज़ पर से खाना ले कर खिलाया।
लेकिन बिन्यमीन को दूसरों की निस्बत पाँच गुना
ज़ियादा मिला। यूँ उन्हों ने यूसुफ़ के साथ जी भर कर
खाया और पिया।

गुमशुदा पियाला

44 1 यूसुफ़ ने घर पर मुक़र्रर मुलाज़िम को
हुक्म दिया, “उन मर्दों की बोरियाँ ख़ुराक
से इतनी भर देना जितनी वह उठा कर ले जा सकें। हर
एक के पैसे उस की अपनी बोरी के मुँह में रख देना।
2 सब से छोटे भाई की बोरी में न सिर्फ़ पैसे बल्कि
मेरे चाँदी के पियाले को भी रख देना।” मुलाज़िम ने
ऐसा ही किया।

3 अगली सुब्ह जब पौ फटने लगी तो भाइयों को
उन के गधों समेत रुख़्सत कर दिया गया। 4 वह अभी
शहर से निकल कर दूर नहीं गए थे कि यूसुफ़ ने अपने
घर पर मुक़र्रर मुलाज़िम से कहा, “जल्दी करो। उन
आदमियों का ताक़्क़ुब करो। उन के पास पहुँच कर
यह पूछना, ‘आप ने हमारी भलाई के जवाब में ग़लत
काम क्यूँ किया है? 5 आप ने मेरे मालिक का चाँदी
का पियाला क्यूँ चुराया है? उस से वह न सिर्फ़ पीते
हैं बल्कि उसे ग़ैबदानी के लिए भी इस्तेमाल करते हैं।
आप एक निहायत संगीन जुर्म के मुर्तकिब हुए हैं’।”

6 जब मुलाज़िम भाइयों के पास पहुँचा तो उस ने उन
से यही बातें कीं। 7 जवाब में उन्हों ने कहा, “हमारे
मालिक ऐसी बातें क्यूँ करते हैं? कभी नहीं हो सकता
कि आप के ख़ादिम ऐसा करें। 8 आप तो जानते हैं
कि हम मुल्क-ए-कनआन से वह पैसे वापस ले आए
जो हमारी बोरियों में थे। तो फिर हम क्यूँ आप के
मालिक के घर से चाँदी या सोना चुराएँगे? 9 अगर वह
आप के ख़ादिमों में से किसी के पास मिल जाए तो
उसे मार डाला जाए और बाक़ी सब आप के ग़ुलाम
बनें।”

10 मुलाज़िम ने कहा, “ठीक है ऐसा ही होगा।
लेकिन सिर्फ़ वही मेरा ग़ुलाम बनेगा जिस ने पियाला
चुराया है। बाक़ी सब आज़ाद हैं।” 11 उन्हों ने जल्दी
से अपनी बोरियाँ उतार कर ज़मीन पर रख दीं। हर
एक ने अपनी बोरी खोल दी। 12 मुलाज़िम बोरियों
की तलाशी लेने लगा। वह बड़े भाई से शुरू करके
आख़िरकार सब से छोटे भाई तक पहुँच गया। और
वहाँ बिन्यमीन की बोरी में से पियाला निकला।
13 भाइयों ने यह देख कर परेशानी में अपने लिबास
फाड़ लिए। वह अपने गधों को दुबारा लाद कर शहर
वापस आ गए।

14 जब यहूदाह और उस के भाई यूसुफ़ के घर पहुँचे तो वह अभी वहीं था। वह उस के सामने मुँह के बल गिर गए। 15 यूसुफ़ ने कहा, “यह तुम ने क्या किया है? क्या तुम नहीं जानते कि मुझ जैसा आदमी ग़ैब का इल्म रखता है?” 16 यहूदाह ने कहा, “जनाब-ए-आली, हम क्या कहें? अब हम अपने दिफ़ा में क्या कहें? अल्लाह ही ने हमें क़ुसूरवार ठहराया है। अब हम सब आप के ग़ुलाम हैं, न सिर्फ़ वह जिस के पास से पियाला मिल गया।” 17 यूसुफ़ ने कहा, “अल्लाह न करे कि मैं ऐसा करूँ, बल्कि सिर्फ़ वही मेरा ग़ुलाम होगा जिस के पास पियाला था। बाक़ी सब सलामती से अपने बाप के पास वापस चले जाएँ।”

यहूदाह बिन्यमीन की सिफ़ारिश करता है

18 लेकिन यहूदाह ने यूसुफ़ के क़रीब आ कर कहा, “मेरे मालिक, मेहरबानी करके अपने बन्दे को एक बात करने की इजाज़त दें। मुझ पर ग़ुस्सा न करें अगरचि आप मिस्र के बादशाह जैसे हैं। 19 जनाब-ए-आली, आप ने हम से पूछा, ‘क्या तुम्हारा बाप या कोई और भाई है?’ 20 हम ने जवाब दिया, ‘हमारा बाप है। वह बूढ़ा है। हमारा एक छोटा भाई भी है जो उस वक़्त पैदा हुआ जब हमारा बाप उम्ररसीदा था। उस लड़के का भाई मर चुका है। उस की माँ के सिर्फ़ यह दो बेटे पैदा हुए। अब वह अकेला ही रह गया है। उस का बाप उसे शिद्दत से पियार करता है।’ 21 जनाब-ए-आली, आप ने हमें बताया, ‘उसे यहाँ ले आओ ताकि मैं ख़ुद उसे देख सकूँ।’ 22 हम ने जवाब दिया, ‘यह लड़का अपने बाप को छोड़ नहीं सकता, वर्ना उस का बाप मर जाएगा।’ 23 फिर आप ने कहा, ‘तुम सिर्फ़ इस सूरत में मेरे पास आ सकोगे कि तुम्हारा सब से छोटा भाई तुम्हारे साथ हो।’ 24 जब हम अपने बाप के पास वापस पहुँचे तो हम ने उन्हें सब कुछ बताया जो आप ने कहा था। 25 फिर उन्हों ने हम से कहा, ‘मिस्र लौट कर कुछ ग़ल्ला ख़रीद लाओ।’ 26 हम ने जवाब दिया, ‘हम जा नहीं सकते। हम सिर्फ़ इस सूरत में उस मर्द के पास जा सकते हैं कि हमारा सब से छोटा भाई साथ हो। हम तब ही जा सकते हैं जब वह भी हमारे साथ चले।’ 27 हमारे बाप ने हम से कहा, ‘तुम जानते हो कि मेरी बीवी राख़िल से मेरे दो बेटे पैदा हुए। 28 पहला मुझे छोड़ चुका है। किसी जंगली जानवर ने उसे फाड़ खाया होगा, क्यूँकि उसी वक़्त से मैं ने उसे नहीं देखा। 29 अगर इस को भी मुझ से ले जाने की वजह से जानी नुक़्सान पहुँचे तो तुम मुझ बूढ़े को ग़म के मारे पाताल में पहुँचाओगे’।”

30–31 यहूदाह ने अपनी बात जारी रखी, “जनाब-ए-आली, अब अगर मैं अपने बाप के पास जाऊँ और वह देखें कि लड़का मेरे साथ नहीं है तो वह दम तोड़ देंगे। उन की ज़िन्दगी इस क़दर लड़के की ज़िन्दगी पर मुन्हसिर है और वह इतने बूढ़े हैं कि हम ऐसी हर्कत से उन्हें क़ब्र तक पहुँचा देंगे। 32 न सिर्फ़ यह बल्कि मैं ने बाप से कहा, ‘मैं ख़ुद इस का ज़ामिन हूँगा। अगर मैं इसे सलामती से वापस न पहुँचाऊँ तो फिर मैं ज़िन्दगी के आख़िर तक क़ुसूरवार ठहरूँगा।’ 33 अब अपने ख़ादिम की गुज़ारिश सुनें। मैं यहाँ रह कर इस लड़के की जगह ग़ुलाम बन जाता हूँ, और वह दूसरे भाइयों के साथ वापस चला जाए 34 अगर लड़का मेरे साथ न हुआ तो मैं किस तरह अपने बाप को मुँह दिखा सकता हूँ? मैं बर्दाश्त नहीं कर सकूँगा कि वह इस मुसीबत में मुब्तला हो जाएँ।”

यूसुफ़ अपने आप को ज़ाहिर करता है

45 1 यह सुन कर यूसुफ़ अपने आप पर क़ाबू न रख सका। उस ने ऊँची आवाज़ से हुक्म दिया कि तमाम मुलाज़िम कमरे से निकल जाएँ। कोई और शख़्स कमरे में नहीं था जब यूसुफ़ ने अपने भाइयों को बताया कि वह कौन है। 2 वह इतने ज़ोर से रो पड़ा कि मिस्रियों ने उस की आवाज़ सुनी और फ़िरऔन के घराने को पता चल गया। 3 यूसुफ़ ने अपने भाइयों से कहा, “मैं यूसुफ़ हूँ। क्या मेरा बाप अब तक ज़िन्दा है?”

लेकिन उस के भाई यह सुन कर इतने घबरा गए
कि वह जवाब न दे सके।

4 फिर यूसुफ़ ने कहा, “मेरे क़रीब आओ।” वह
क़रीब आए तो उस ने कहा, “मैं तुम्हारा भाई यूसुफ़
हूँ जिसे तुम ने बेच कर मिस्र भिजवाया। 5 अब मेरी
बात सुनो। न घबराओ और न अपने आप को इल्ज़ाम
दो कि हम ने यूसुफ़ को बेच दिया। असल में अल्लाह
ने ख़ुद मुझे तुम्हारे आगे यहाँ भेज दिया ताकि हम
सब बचे रहें। 6 यह काल का दूसरा साल है। पाँच
और साल के दौरान न हल चलेगा, न फ़सल कटेगी।
7 अल्लाह ने मुझे तुम्हारे आगे भेजा ताकि दुनिया में
तुम्हारा एक बचा खचा हिस्सा महफ़ूज़ रहे और
तुम्हारी जान एक बड़ी मख़्लसी की मारिफ़त छूट जाए
8 चुनाँचे तुम ने मुझे यहाँ नहीं भेजा बल्कि अल्लाह ने।
उस ने मुझे फ़िरऔन का बाप, उस के पूरे घराने का
मालिक और मिस्र का हाकिम बना दिया है। 9 अब
जल्दी से मेरे बाप के पास वापस जा कर उन से कहो,
‘आप का बेटा यूसुफ़ आप को इत्तिला देता है कि
अल्लाह ने मुझे मिस्र का मालिक बना दिया है। मेरे
पास आ जाएँ, देर न करें। 10 आप जुशन के इलाक़े
में रह सकते हैं। वहाँ आप मेरे क़रीब होंगे, आप,
आप की आल-ओ-औलाद, गाय-बैल, भेड़-बक्रियाँ
और जो कुछ भी आप का है। 11 वहाँ मैं आप की
ज़रूरियात पूरी करूँगा, क्यूँकि काल को अभी पाँच
साल और लगेंगे। वर्ना आप, आप के घर वाले और
जो भी आप के हैं बदहाल हो जाएँगे।’ 12 तुम ख़ुद
और मेरा भाई बिन्यमीन देख सकते हो कि मैं यूसुफ़
ही हूँ जो तुम्हारे साथ बात कर रहा हूँ। 13 मेरे बाप
को मिस्र में मेरे असर-ओ-रसूख़ के बारे में इत्तिला
दो। उन्हें सब कुछ बताओ जो तुम ने देखा है। फिर
जल्द ही मेरे बाप को यहाँ ले आओ।”

14 यह कह कर वह अपने भाई बिन्यमीन को गले
लगा कर रो पड़ा। बिन्यमीन भी उस के गले लग कर
रोने लगा। 15 फिर यूसुफ़ ने रोते हुए अपने हर एक
भाई को बोसा दिया। इस के बाद उस के भाई उस
के साथ बातें करने लगे।

16 जब यह ख़बर बादशाह के महल तक पहुँची कि
यूसुफ़ के भाई आए हैं तो फ़िरऔन और उस के तमाम
अफ़सरान ख़ुश हुए। 17 उस ने यूसुफ़ से कहा, “अपने
भाइयों को बता कि अपने जानवरों पर ग़ल्ला लाद कर
मुल्क-ए-कनआन वापस चले जाओ। 18 वहाँ अपने
बाप और ख़ान्दानों को ले कर मेरे पास आ जाओ।
मैं तुम को मिस्र की सब से अच्छी ज़मीन दे दूँगा,
और तुम इस मुल्क की बेहतरीन पैदावार खा सकोगे।
19 उन्हें यह हिदायत भी दे कि अपने बाल-बच्चों के
लिए मिस्र से गाड़ियाँ ले जाओ और अपने बाप को भी
बिठा कर यहाँ ले आओ। 20 अपने माल की ज़ियादा
फ़िक्र न करो, क्यूँकि तुम्हें मुल्क-ए-मिस्र का बेहतरीन
माल मिलेगा।”

21 यूसुफ़ के भाइयों ने ऐसा ही किया। यूसुफ़ ने उन्हें
बादशाह के हुक्म के मुताबिक़ गाड़ियाँ और सफ़र के
लिए ख़ुराक दी। 22 उस ने हर एक भाई को कपड़ों
का एक जोड़ा भी दिया। लेकिन बिन्यमीन को उस
ने चाँदी के 300 सिक्के और पाँच जोड़े दिए। 23 उस
ने अपने बाप को दस गधे भिजवा दिए जो मिस्र के
बेहतरीन माल से लदे हुए थे और दस गधियाँ जो
अनाज, रोटी और बाप के सफ़र के लिए खाने से
लदी हुई थीं। 24 यूँ उस ने अपने भाइयों को रुख़सत
करके कहा, “रास्ते में झगड़ा न करना।”

25 वह मिस्र से रवाना हो कर मुल्क-ए-कनआन में
अपने बाप के पास पहुँचे। 26 उन्हों ने उस से कहा,
“यूसुफ़ ज़िन्दा है! वह पूरे मिस्र का हाकिम है।”
लेकिन याक़ूब हक्का-बक्का रह गया, क्यूँकि उसे यक़ीन
न आया। 27 ताहम उन्हों ने उसे सब कुछ बताया जो
यूसुफ़ ने उन से कहा था, और उस ने ख़ुद वह गाड़ियाँ
देखीं जो यूसुफ़ ने उसे मिस्र ले जाने के लिए भिजवा
दी थीं। फिर याक़ूब की जान में जान आ गई, 28 और
उस ने कहा, “मेरा बेटा यूसुफ़ ज़िन्दा है! यही काफ़ी
है। मरने से पहले मैं जा कर उस से मिलूँगा।”

याक़ूब मिस्र जाता है

46 [1] याक़ूब सब कुछ ले कर रवाना हुआ और बैर-सबा पहुँचा। वहाँ उस ने अपने बाप इस्हाक़ के ख़ुदा के हुज़ूर क़ुर्बानियाँ चढ़ाईं। [2] रात को अल्लाह रोया में उस से हमकलाम हुआ। उस ने कहा, "याक़ूब, याक़ूब!" याक़ूब ने जवाब दिया, "जी, मैं हाज़िर हूँ।" [3] अल्लाह ने कहा, "मैं अल्लाह हूँ, तेरे बाप इस्हाक़ का ख़ुदा। मिस्र जाने से मत डर, क्यूँकि वहाँ मैं तुझ से एक बड़ी क़ौम बनाऊँगा। [4] मैं तेरे साथ मिस्र जाऊँगा और तुझे इस मुल्क में वापस भी ले आऊँगा। जब तू मरेगा तो यूसुफ़ ख़ुद तेरी आँखें बन्द करेगा।"

[5] इस के बाद याक़ूब बैर-सबा से रवाना हुआ। उस के बेटों ने उसे और अपने बाल-बच्चों को उन गाड़ियों में बिठा दिया जो मिस्र के बादशाह ने भिजवाई थीं। [6] यूँ याक़ूब और उस की तमाम औलाद अपने मवेशी और कनआन में हासिल किया हुआ माल ले कर मिस्र चले गए। [7] याक़ूब के बेटे-बेटियाँ, पोते-पोतियाँ और बाक़ी औलाद सब साथ गए।

[8] इस्राईल की औलाद के नाम जो मिस्र चली गई यह हैं :

याक़ूब के पहलौठे रूबिन [9] के बेटे हनूक, फ़ल्लू, हस्रोन और कर्मी थे। [10] शमाऊन के बेटे यमूएल, यमीन, उहद, यकीन, सुहर और साऊल थे (साऊल कनआनी औरत का बच्चा था)। [11] लावी के बेटे जैर्सोन, क़िहात और मिरारी थे। [12] यहूदाह के बेटे एर, ओनान, सेला, फ़ारस और ज़ारह थे (एर और ओनान कनआन में मर चुके थे)। फ़ारस के दो बेटे हस्रोन और हमूल थे। [13] इश्कार के बेटे तोला, फ़ुव्वा, योब और सिम्रोन थे। [14] ज़बूलून के बेटे सरद, ऐलोन और यहलीएल थे। [15] इन बेटों की माँ लियाह थी, और वह मसोपुतामिया में पैदा हुए। इन के इलावा दीना उस की बेटी थी। कुल 33 मर्द लियाह की औलाद थे।

[16] जद के बेटे सिफ़्यान, हज्जी, सूनी, इस्बून, एरी, अरूदी और अरेली थे। [17] आशर के बेटे यिम्ना, इस्वाह, इस्वी और बरीआ थे। आशर की बेटी सिरह थी, और बरीआ के दो बेटे थे, हिबर और मल्कीएल। [18] कुल 16 अफ़राद ज़िल्फ़ा की औलाद थे जिसे लाबन ने अपनी बेटी लियाह को दिया था।

[19] राख़िल के बेटे यूसुफ़ और बिन्यमीन थे। [20] यूसुफ़ के दो बेटे मनस्सी और इफ़्राईम मिस्र में पैदा हुए। उन की माँ ओन के पुजारी फ़ोतीफ़िरा की बेटी आसनत थी। [21] बिन्यमीन के बेटे बाला, बकर, अश्बेल, जीरा, नामान, इख़ी, रोस, मुफ़्फ़ीम, हुफ़्फ़ीम और अर्द थे। [22] कुल 14 मर्द राख़िल की औलाद थे।

[23] दान का बेटा हुशीम था। [24] नफ़्ताली के बेटे यहसीएल, जूनी, यिसर और सिल्लीम थे। [25] कुल 7 मर्द बिल्हाह की औलाद थे जिसे लाबन ने अपनी बेटी राख़िल को दिया था।

[26] याक़ूब की औलाद के 66 अफ़राद उस के साथ मिस्र चले गए। इस तादाद में बेटों की बीवियाँ शामिल नहीं थीं। [27] जब हम याक़ूब, यूसुफ़ और उस के दो बेटे इन में शामिल करते हैं तो याक़ूब के घराने के 70 अफ़राद मिस्र गए।

याक़ूब और उस का ख़ान्दान मिस्र में

[28] याक़ूब ने यहूदाह को अपने आगे यूसुफ़ के पास भेजा ताकि वह जुशन में उन से मिले। जब वह वहाँ पहुँचे [29] तो यूसुफ़ अपने रथ पर सवार हो कर अपने बाप से मिलने के लिए जुशन गया। उसे देख कर वह उस के गले लग कर काफ़ी देर रोता रहा। [30] याक़ूब ने यूसुफ़ से कहा, "अब मैं मरने के लिए तय्यार हूँ, क्यूँकि मैं ने ख़ुद देखा है कि तू ज़िन्दा है।"

[31] फिर यूसुफ़ ने अपने भाइयों और अपने बाप के ख़ान्दान के बाक़ी अफ़राद से कहा, "ज़रूरी है कि मैं जा कर बादशाह को इत्तिला दूँ कि मेरे भाई और मेरे बाप का पूरा ख़ान्दान जो कनआन के रहने वाले हैं मेरे पास आ गए हैं। [32] मैं उस से कहूँगा, 'यह आदमी भेड़-बक्रियों के चरवाहे हैं। वह मवेशी पालते हैं, इस

लिए अपनी भेड़-बक्रियाँ, गाय-बैल और बाक़ी सारा
माल अपने साथ ले आए हैं।’ 33 बादशाह तुम्हें बुला
कर पूछेगा कि तुम क्या काम करते हो? 34 फिर तुम
को जवाब देना है, ‘आप के ख़ादिम बचपन से मवेशी
पालते आए हैं। यह हमारे बापदादा का पेशा था और
हमारा भी है।’ अगर तुम यह कहो तो तुम्हें जुशन
में रहने की इजाज़त मिलेगी। क्यूँकि भेड़-बक्रियों के
चरवाहे मिस्रियों की नज़र में क़ाबिल-ए-नफ़रत हैं।”

47 1 यूसुफ़ फ़िरऔन के पास गया और उसे
इत्तिला दे कर कहा, “मेरा बाप और भाई
अपनी भेड़-बक्रियों, गाय-बैलों और सारे माल समेत
मुल्क-ए-कनआन से आ कर जुशन में ठहरे हुए हैं।”
2 उस ने अपने भाइयों में से पाँच को चुन कर फ़िरऔन
के सामने पेश किया। 3 फ़िरऔन ने भाइयों से पूछा,
“तुम क्या काम करते हो?” उन्हों ने जवाब दिया,
“आप के ख़ादिम भेड़-बक्रियों के चरवाहे हैं। यह
हमारे बापदादा का पेशा था और हमारा भी है। 4 हम
यहाँ आए हैं ताकि कुछ देर अजनबी की हैसियत से
आप के पास ठहरें, क्यूँकि काल ने कनआन में बहुत
ज़ोर पकड़ा है। वहाँ आप के ख़ादिमों के जानवरों के
लिए चरागाहें ख़त्म हो गई हैं। इस लिए हमें जुशन में
रहने की इजाज़त दें।”

5 बादशाह ने यूसुफ़ से कहा, “तेरा बाप और भाई
तेरे पास आ गए हैं। 6 मुल्क-ए-मिस्र तेरे सामने खुला
है। उन्हें बेहतरीन जगह पर आबाद कर। वह जुशन
में रहें। और अगर उन में से कुछ हैं जो ख़ास
क़ाबिलियत रखते हैं तो उन्हें मेरे मवेशियों की
निगहदाशत पर रख।”

7 फिर यूसुफ़ अपने बाप याक़ूब को ले आया और
फ़िरऔन के सामने पेश किया। याक़ूब ने बादशाह को
बर्कत दी। 8 बादशाह ने उस से पूछा, “तुम्हारी उम्र
क्या है?” 9 याक़ूब ने जवाब दिया, “मैं 130 साल से
इस दुनिया का मेहमान हूँ। मेरी ज़िन्दगी मुख़्तसर और
तक्लीफ़दिह थी, और मेरे बापदादा मुझ से ज़ियादा
उम्ररसीदा हुए थे जब वह इस दुनिया के मेहमान थे।”
10 यह कह कर याक़ूब फ़िरऔन को दुबारा बर्कत दे
कर चला गया।

11 फिर यूसुफ़ ने अपने बाप और भाइयों को मिस्र
में आबाद किया। उस ने उन्हें रामसीस के इलाक़े में
बेहतरीन ज़मीन दी जिस तरह बादशाह ने हुक्म दिया
था। 12 यूसुफ़ अपने बाप के पूरे घराने को ख़ुराक
मुहय्या करता रहा। हर ख़ान्दान को उस के बच्चों की
तादाद के मुताबिक़ ख़ुराक मिलती रही।

काल का सख़्त असर

13 काल इतना सख़्त था कि कहीं भी रोटी नहीं
मिलती थी। मिस्र और कनआन में लोग निढाल हो
गए।

14 मिस्र और कनआन के तमाम पैसे अनाज ख़रीदने
के लिए सर्फ़ हो गए। यूसुफ़ उन्हें जमा करके
फ़िरऔन के महल में ले आया। 15 जब मिस्र और
कनआन के पैसे ख़त्म हो गए तो मिस्रियों ने यूसुफ़
के पास आ कर कहा, “हमें रोटी दें! हम आप के
सामने क्यूँ मरें? हमारे पैसे ख़त्म हो गए हैं।” 16 यूसुफ़
ने जवाब दिया, “अगर आप के पैसे ख़त्म हैं तो
मुझे अपने मवेशी दें। मैं उन के इवज़ रोटी देता
हूँ।” 17 चुनाँचे वह अपने घोड़े, भेड़-बक्रियाँ, गाय-
बैल और गधे यूसुफ़ के पास ले आए। इन के इवज़
उस ने उन्हें ख़ुराक दी। उस साल उस ने उन्हें उन के
तमाम मवेशियों के इवज़ ख़ुराक मुहय्या की।

18 अगले साल वह दुबारा उस के पास आए। उन्हों
ने कहा, “जनाब-ए-आली, हम यह बात आप से नहीं
छुपा सकते कि अब हम सिर्फ़ अपने आप और अपनी
ज़मीन को आप को दे सकते हैं। हमारे पैसे तो ख़त्म
हैं और आप हमारे मवेशी भी ले चुके हैं। 19 हम क्यूँ
आप की आँखों के सामने मर जाएँ? हमारी ज़मीन
क्यूँ तबाह हो जाए? हमें रोटी दें तो हम और हमारी
ज़मीन बादशाह की होगी। हम फ़िरऔन के ग़ुलाम
होंगे। हमें बीज दें ताकि हम जीते बचें और ज़मीन
तबाह न हो जाए।”

20 चुनाँचे यूसुफ़ ने फ़िरऔन के लिए मिस्र की पूरी
ज़मीन ख़रीद ली। काल की सख़्ती के सबब से तमाम
मिस्रियों ने अपने खेत बेच दिए। इस तरीक़े से पूरा
मुल्क फ़िरऔन की मिल्कियत में आ गया। 21 यूसुफ़
ने मिस्र के एक सिरे से दूसरे सिरे तक के लोगों को
शहरों में मुन्तक़िल कर दिया। 22 सिर्फ़ पुजारियों की
ज़मीन आज़ाद रही। उन्हें अपनी ज़मीन बेचने की
ज़रूरत ही नहीं थी, क्यूँकि उन्हें फ़िरऔन से इतना
वज़ीफ़ा मिलता था कि गुज़ारा हो जाता था।

23 यूसुफ़ ने लोगों से कहा, "ग़ौर से सुनें। आज मैं ने
आप को और आप की ज़मीन को बादशाह के लिए
ख़रीद लिया है। अब यह बीज ले कर अपने खेतों में
बोना। 24 आप को फ़िरऔन को फ़सल का पाँचवाँ
हिस्सा देना है। बाक़ी पैदावार आप की होगी। आप
इस से बीज बो सकते हैं, और यह आप के और
आप के घरानों और बच्चों के खाने के लिए होगा।"
25 उन्हों ने जवाब दिया, "आप ने हमें बचाया है।
हमारे मालिक हम पर मेहरबानी करें तो हम फ़िरऔन
के ग़ुलाम बनेंगे।"

26 इस तरह यूसुफ़ ने मिस्र में यह क़ानून नाफ़िज़
किया कि हर फ़सल का पाँचवाँ हिस्सा बादशाह का
है। यह क़ानून आज तक जारी है। सिर्फ़ पुजारियों की
ज़मीन बादशाह की मिल्कियत में न आई।

याक़ूब की आख़िरी गुज़ारिश

27 इस्राईली मिस्र में जुशन के इलाक़े में आबाद
हुए। वहाँ उन्हें ज़मीन मिली, और वह फले फूले और
तादाद में बहुत बढ़ गए।

28 याक़ूब 17 साल मिस्र में रहा। वह 147 साल
का था जब फ़ौत हुआ। 29 जब मरने का वक़्त
क़रीब आया तो उस ने यूसुफ़ को बुला कर कहा,
"मेहरबानी करके अपना हाथ मेरी रान के नीचे रख
कर क़सम खा कि तू मुझ पर शफ़क़त और वफ़ादारी
का इस तरह इज़्हार करेगा कि मुझे मिस्र में दफ़न
नहीं करेगा। 30 जब मैं मर कर अपने बापदादा से
जा मिलूँगा तो मुझे मिस्र से ले जा कर मेरे बापदादा
की क़ब्र में दफ़नाना।" यूसुफ़ ने जवाब दिया, "ठीक
है।" 31 याक़ूब ने कहा, "क़सम खा कि तू ऐसा ही
करेगा।" यूसुफ़ ने क़सम खाई। तब इस्राईल ने अपने
बिस्तर के सिरहाने पर अल्लाह को सिज्दा किया।

याक़ूब इफ़्राईम और मनस्सी को बर्कत देता है

48 1 कुछ देर के बाद यूसुफ़ को इत्तिला दी गई
कि आप का बाप बीमार है। वह अपने दो
बेटों मनस्सी और इफ़्राईम को साथ ले कर याक़ूब से
मिलने गया।

2 याक़ूब को बताया गया, "आप का बेटा आ
गया है" तो वह अपने आप को सँभाल कर अपने
बिस्तर पर बैठ गया। 3 उस ने यूसुफ़ से कहा, "जब
मैं कनआनी शहर लूज़ में था तो अल्लाह क़ादिर-ए-
मुतलक़ मुझ पर ज़ाहिर हुआ। उस ने मुझे बर्कत
दे कर 4 कहा, 'मैं तुझे फलने फूलने दूँगा और तेरी
औलाद बढ़ा दूँगा बल्कि तुझ से बहुत सी क़ौमें
निकलने दूँगा। और मैं तेरी औलाद को यह मुल्क
हमेशा के लिए दे दूँगा।' 5 अब मेरी बात सुन। मैं
चाहता हूँ कि तेरे बेटे जो मेरे आने से पहले मिस्र
में पैदा हुए मेरे बेटे हों। इफ़्राईम और मनस्सी रूबिन
और शमाऊन के बराबर ही मेरे बेटे हों। 6 अगर इन
के बाद तेरे हाँ और बेटे पैदा हो जाएँ तो वह मेरे बेटे
नहीं बल्कि तेरे ठहरेंगे। जो मीरास वह पाएँगे वह
उन्हें इफ़्राईम और मनस्सी की मीरास में से मिलेगी।
7 मैं यह तेरी माँ राख़िल के सबब से कर रहा हूँ जो
मसोपुतामिया से वापसी के वक़्त कनआन में इफ़्राता
के क़रीब मर गई। मैं ने उसे वहीं रास्ते में दफ़न
किया" (आज इफ़्राता को बैत-लहम कहा जाता है)।

8 फिर याक़ूब ने यूसुफ़ के बेटों पर नज़र डाल कर
पूछा, "यह कौन हैं?" 9 यूसुफ़ ने जवाब दिया, "यह
मेरे बेटे हैं जो अल्लाह ने मुझे यहाँ मिस्र में दिए।"
याक़ूब ने कहा, "उन्हें मेरे क़रीब ले आ ताकि मैं
उन्हें बर्कत दूँ।" 10 बूढ़ा होने के सबब से याक़ूब की
आँखें कमज़ोर थीं। वह अच्छी तरह देख नहीं सकता
था। यूसुफ़ अपने बेटों को याक़ूब के पास ले आया

तो उस ने उन्हें बोसा दे कर गले लगाया 11 और यूसुफ़
से कहा, “मुझे तवक़्क़ो ही नहीं थी कि मैं कभी तेरा
चिहरा देखूँगा, और अब अल्लाह ने मुझे तेरे बेटों को
देखने का मौक़ा भी दिया है।”

12 फिर यूसुफ़ उन्हें याक़ूब की गोद में से ले कर
ख़ुद उस के सामने मुँह के बल झुक गया। 13 यूसुफ़
ने इफ़्राईम को याक़ूब के बाएँ हाथ रखा और मनस्सी
को उस के दाएँ हाथ। 14 लेकिन याक़ूब ने अपना
दहना हाथ बाईं तरफ़ बढ़ा कर इफ़्राईम के सर पर
रखा अगरचि वह छोटा था। इस तरह उस ने अपना
बायाँ हाथ दाईं तरफ़ बढ़ा कर मनस्सी के सर पर
रखा जो बड़ा था। 15 फिर उस ने यूसुफ़ को उस के
बेटों की मारिफ़त बर्कत दी, “अल्लाह जिस के हुज़ूर
मेरे बापदादा इब्राहीम और इस्हाक़ चलते रहे और जो
शुरू से आज तक मेरा चरवाहा रहा है इन्हें बर्कत दे।
16 जिस फ़रिश्ते ने इवज़ाना दे कर मुझे हर नुक़्सान से
बचाया है वह इन्हें बर्कत दे। अल्लाह करे कि इन में
मेरा नाम और मेरे बापदादा इब्राहीम और इस्हाक़ के
नाम जीते रहें। दुनिया में इन की औलाद की तादाद
बहुत बढ़ जाए।”

17 जब यूसुफ़ ने देखा कि बाप ने अपना दहना हाथ
छोटे बेटे इफ़्राईम के सर पर रखा है तो यह उसे बुरा
लगा, इस लिए उस ने बाप का हाथ पकड़ा ताकि
उसे इफ़्राईम के सर पर से उठा कर मनस्सी के सर
पर रखे। 18 उस ने कहा, “अब्बू, ऐसे नहीं। दूसरा
लड़का बड़ा है। उसी पर अपना दहना हाथ रखें।”
19 लेकिन बाप ने इन्कार करके कहा, “मुझे पता है
बेटा, मुझे पता है। वह भी एक बड़ी क़ौम बनेगा।
फिर भी उस का छोटा भाई उस से बड़ा होगा और
उस से क़ौमों की बड़ी तादाद निकलेगी।”

20 उस दिन उस ने दोनों बेटों को बर्कत दे कर कहा,
“इस्राईली तुम्हारा नाम ले कर बर्कत दिया करेंगे।
जब वह बर्कत देंगे तो कहेंगे, ‘अल्लाह आप के साथ
वैसा करे जैसा उस ने इफ़्राईम और मनस्सी के साथ
किया है’।” इस तरह याक़ूब ने इफ़्राईम को मनस्सी
से बड़ा बना दिया। 21 यूसुफ़ से उस ने कहा, “मैं तो
मरने वाला हूँ, लेकिन अल्लाह तुम्हारे साथ होगा और
तुम्हें तुम्हारे बापदादा के मुल्क में वापस ले जाएगा।
22 एक बात में मैं तुझे तेरे भाइयों पर तर्जीह देता हूँ, मैं
तुझे कनआन में वह क़ितआ देता हूँ जो मैं ने अपनी
तल्वार और कमान से अमोरियों से छीना था।”

याक़ूब अपने बेटों को बर्कत देता है

49 1 याक़ूब ने अपने बेटों को बुला कर कहा,
“मेरे पास जमा हो जाओ ताकि मैं तुम्हें
बताऊँ कि मुस्तक़बिल में तुम्हारे साथ क्या क्या
होगा। 2 ऐ याक़ूब के बेटो, इकट्ठे हो कर सुनो, अपने
बाप इस्राईल की बातों पर ग़ौर करो।

3 रूबिन, तुम मेरे पहलौठे हो, मेरे ज़ोर और मेरी
ताक़त का पहला फल। तुम इज़्ज़त और क़ुव्वत
के लिहाज़ से बरतर हो। 4 लेकिन चूँकि तुम बेकाबू
सैलाब की मानिन्द हो इस लिए तुम्हारी अव्वल
हैसियत जाती रहे। क्यूँकि तुम ने मेरी हरम से
हमबिसतर हो कर अपने बाप की बेहुरमती की है।

5 शमाऊन और लावी दोनों भाइयों की तल्वारें
ज़ुल्म-ओ-तशद्दुद के हथियार रहे हैं। 6 मेरी जान न
उन की मजलिस में शामिल और न उन की जमाअत
में दाख़िल हो, क्यूँकि उन्हों ने ग़ुस्से में आ कर दूसरों
को क़त्ल किया है, उन्हों ने अपनी मर्ज़ी से बैलों की
कोंचें काटी हैं। 7 उन के ग़ुस्से पर लानत हो जो इतना
ज़बरदस्त है और उन के तैश पर जो इतना सख़्त है।
मैं उन्हें याक़ूब के मुल्क में तित्तर-बित्तर करूँगा, उन्हें
इस्राईल में मुन्तशिर कर दूँगा।

8 यहूदाह, तुम्हारे भाई तुम्हारी तारीफ़ करेंगे। तुम
अपने दुश्मनों की गर्दन पकड़े रहोगे, और तुम्हारे बाप
के बेटे तुम्हारे सामने झुक जाएँगे। 9 यहूदाह शेरबबर
का बच्चा है। मेरे बेटे, तुम अभी अभी शिकार मार
कर वापस आए हो। यहूदाह शेरबबर बल्कि शेरनी
की तरह दबक कर बैठ जाता है। कौन उसे छेड़ने
की जुरअत करेगा? 10 शाही असा यहूदाह से दूर नहीं
होगा बल्कि शाही इख़्तियार उस वक़्त तक उस की
औलाद के पास रहेगा जब तक वह हाकिम न आए

जिस के ताबे क़ौमें रहेंगी। 11 वह अपना जवान गधा
अंगूर की बेल से और अपनी गधी का बच्चा बेहतरीन
अंगूर की बेल से बाँधेगा। वह अपना लिबास मै में
और अपना कपड़ा अंगूर के ख़ून में धोएगा। 12 उस
की आँखें मै से ज़ियादा गदली और उस के दाँत दूध
से ज़ियादा सफ़ेद होंगे।

13 ज़बूलून साहिल पर आबाद होगा जहाँ बहरी
जहाज़ होंगे। उस की हद्द सैदा तक होगी।

14 इश्कार ताक़तवर गधा है जो अपने ज़ीन के दो
बोरों के दर्मियान बैठा है। 15 जब वह देखेगा कि उस
की आरामगाह अच्छी और उस का मुल्क ख़ुशनुमा
है तो वह बोझ उठाने के लिए तय्यार हो जाएगा और
उजरत के बग़ैर काम करने के लिए मज्बूर किया
जाएगा।

16 दान अपनी क़ौम का इन्साफ़ करेगा अगरचि वह
इस्राईल के क़बीलों में से एक ही है। 17 दान सड़क
के साँप और रास्ते के अफ़ई की मानिन्द होगा। वह
घोड़े की एड़ियों को काटेगा तो उस का सवार पीछे
गिर जाएगा।

18 ऐ रब्ब, मैं तेरी ही नजात के इन्तिज़ार में हूँ!

19 जद पर डाकुओं का जथा हम्ला करेगा, लेकिन
वह पलट कर उसी पर हम्ला कर देगा।

20 आशर को ग़िज़ाइयत वाली ख़ुराक हासिल
होगी। वह लज़ीज़ शाही खाना मुहय्या करेगा।

21 नफ़ताली आज़ाद छोड़ी हुई हिरनी है। वह
ख़ूबसूरत बातें करता है।[8]

22 यूसुफ़ फलदार बेल है। वह चश्मे पर लगी हुई
फलदार बेल है जिस की शाख़ें दीवार पर चढ़ गई
हैं। 23 तीरअन्दाज़ों ने उस पर तीर चला कर उसे
तंग किया और उस के पीछे पड़ गए, 24 लेकिन उस
की कमान मज़बूत रही, और उस के बाज़ू याक़ूब
के ज़ोरावर ख़ुदा के सबब से ताक़तवर रहे, उस
चरवाहे के सबब से जो इस्राईल का ज़बरदस्त सूर्मा
है। 25 क्यूँकि तेरे बाप का ख़ुदा तेरी मदद करता है,
अल्लाह क़ादिर-ए-मुतलक़ तुझे आस्मान की बर्कत,
ज़मीन की गहराइयों की बर्कत और औलाद की
बर्कत देता है। 26 तेरे बाप की बर्कत क़दीम पहाड़ों
और अबदी पहाड़ियों की मर्ग़ूब चीज़ों से ज़ियादा
अज़ीम है। यह तमाम बर्कत यूसुफ़ के सर पर हो,
उस शख़्स के चाँद पर जो अपने भाइयों पर शहज़ादा
है।

27 बिन्यमीन फाड़ने वाला भेड़िया है। सुब्ह वह
अपना शिकार खा जाता और रात को अपना लूटा
हुआ माल तक़्सीम कर देता है।”

28 यह इस्राईल के कुल बारह क़बीले हैं। और यह
वह कुछ है जो उन के बाप ने उन से बर्कत देते वक़्त
कहा। उस ने हर एक को उस की अपनी बर्कत दी।

याक़ूब का इन्तिक़ाल

29 फिर याक़ूब ने अपने बेटों को हुक्म दिया, “अब
मैं कूच करके अपने बापदादा से जा मिलूँगा। मुझे
मेरे बापदादा के साथ उस ग़ार में दफ़नाना जो हित्ती
आदमी इफ़्रोन के खेत में है। 30 यानी वह ग़ार जो
मुल्क-ए-कनआन में मम्रे के मशरिक़ में मक्फ़ीला के
खेत में है। इब्राहीम ने उसे खेत समेत अपने लोगों
को दफ़नाने के लिए इफ़्रोन हित्ती से ख़रीद लिया था।
31 वहाँ इब्राहीम और उस की बीवी सारा दफ़नाए
गए, वहाँ इस्हाक़ और उस की बीवी रिब्क़ा दफ़नाए
गए और वहाँ मैं ने लियाह को दफ़न किया। 32 वह
खेत और उस का ग़ार हित्तियों से ख़रीदा गया था।”

33 इन हिदायात के बाद याक़ूब ने अपने पाँओ
बिस्तर पर समेट लिए और दम छोड़ कर अपने
बापदादा से जा मिला।

याक़ूब को दफ़न किया जाता है

50 1 यूसुफ़ अपने बाप के चिहरे से लिपट
गया। उस ने रोते हुए उसे बोसा दिया। 2 उस
के मुलाज़िमों में से कुछ डाक्टर थे। उस ने उन्हें

[8] या ख़ूबसूरत बच्चे पैदा करती है।

हिदायत दी कि मेरे बाप इस्राईल की लाश को हनूत करें ताकि वह गल न जाए। उन्हों ने ऐसा ही किया। 3 इस में 40 दिन लग गए। आम तौर पर हनूत करने के लिए इतने ही दिन लगते हैं। मिस्रियों ने 70 दिन तक याक़ूब का मातम किया।

4 जब मातम का वक़्त ख़त्म हुआ तो यूसुफ़ ने बादशाह के दरबारियों से कहा, "मेहरबानी करके यह ख़बर बादशाह तक पहुँचा दें 5 कि मेरे बाप ने मुझे क़सम दिला कर कहा था, 'मैं मरने वाला हूँ। मुझे उस क़ब्र में दफ़न करना जो मैं ने मुल्क-ए-कनआन में अपने लिए बनवाई।' अब मुझे इजाज़त दें कि मैं वहाँ जाऊँ और अपने बाप को दफ़न करके वापस आऊँ।" 6 फ़िरऔन ने जवाब दिया, "जा, अपने बाप को दफ़न कर जिस तरह उस ने तुझे क़सम दिलाई थी।"

7 चुनाँचे यूसुफ़ अपने बाप को दफ़नाने के लिए कनआन रवाना हुआ। बादशाह के तमाम मुलाज़िम, महल के बुज़ुर्ग और पूरे मिस्र के बुज़ुर्ग उस के साथ थे। 8 यूसुफ़ के घराने के अफ़राद, उस के भाई और उस के बाप के घराने के लोग भी साथ गए। सिर्फ़ उन के बच्चे, उन की भेड़-बक्रियाँ और गाय-बैल जुशन में रहे। 9 रथ और घुड़सवार भी साथ गए। सब मिल कर बड़ा लश्कर बन गए।

10 जब वह यर्दन के क़रीब अतद के खलियान पर पहुँचे तो उन्हों ने निहायत दिलसोज़ नोहा किया। वहाँ यूसुफ़ ने सात दिन तक अपने बाप का मातम किया। 11 जब मक़ामी कनआनियों ने अतद के खलियान पर मातम का यह नज़ारा देखा तो उन्हों ने कहा, "यह तो मातम का बहुत बड़ा इन्तिज़ाम है जो मिस्री करवा रहे हैं।" इस लिए उस जगह का नाम अबील-मिस्रीम यानी 'मिस्रियों का मातम' पड़ गया। 12 यूँ याक़ूब के बेटों ने अपने बाप का हुक्म पूरा किया। 13 उन्हों ने उसे मुल्क-ए-कनआन में ले जा कर मक्फ़ीला के खेत के ग़ार में दफ़न किया जो मम्रे के मशरिक़ में है। यह वही खेत है जो इब्राहीम ने इफ़्रोन हित्ती से अपने लोगों को दफ़नाने के लिए ख़रीदा था।

14 इस के बाद यूसुफ़, उस के भाई और बाक़ी तमाम लोग जो जनाज़े के लिए साथ गए थे मिस्र को लौट आए।

यूसुफ़ अपने भाइयों को तसल्ली देता है

15 जब याक़ूब इन्तिक़ाल कर गया तो यूसुफ़ के भाई डर गए। उन्हों ने कहा, "ख़त्रा है कि अब यूसुफ़ हमारा ताक़्क़ुब करके उस ग़लत काम का बदला ले जो हम ने उस के साथ किया था। फिर क्या होगा?" 16 यह सोच कर उन्हों ने यूसुफ़ को ख़बर भेजी, "आप के बाप ने मरने से पेशतर हिदायत दी 17 कि यूसुफ़ को बताना, 'अपने भाइयों के उस ग़लत काम को मुआफ़ कर देना जो उन्हों ने तुम्हारे साथ किया।' अब हमें जो आप के बाप के ख़ुदा के पैरोकार हैं मुआफ़ कर दें।"

यह ख़बर सुन कर यूसुफ़ रो पड़ा। 18 फिर उस के भाई ख़ुद आए और उस के सामने गिर गए। उन्हों ने कहा, "हम आप के ख़ादिम हैं।" 19 लेकिन यूसुफ़ ने कहा, "मत डरो। क्या मैं अल्लाह की जगह हूँ? हरगिज़ नहीं! 20 तुम ने मुझे नुक़्सान पहुँचाने का इरादा किया था, लेकिन अल्लाह ने उस से भलाई पैदा की। और अब इस का मक़सद पूरा हो रहा है। बहुत से लोग मौत से बच रहे हैं। 21 चुनाँचे अब डरने की ज़रूरत नहीं है। मैं तुम्हें और तुम्हारे बच्चों को ख़ुराक मुहय्या करता रहूँगा।"

यूँ यूसुफ़ ने उन्हें तसल्ली दी और उन से नर्मी से बात की।

यूसुफ़ का इन्तिक़ाल

22 यूसुफ़ अपने बाप के ख़ान्दान समेत मिस्र में रहा। वह 110 साल ज़िन्दा रहा। 23 मौत से पहले उस ने न सिर्फ़ इफ़्राईम के बच्चों को बल्कि उस के पोतों को

भी देखा। मनस्सी के बेटे मकीर के बच्चे भी उस की मौजूदगी में पैदा हो कर उस की गोद में रखे गए।[h]

24 फिर एक वक़्त आया कि यूसुफ़ ने अपने भाइयों से कहा, "मैं मरने वाला हूँ। लेकिन अल्लाह ज़रूर आप की देख-भाल करके आप को इस मुल्क से उस मुल्क में ले जाएगा जिस का उस ने इब्राहीम, इस्हाक़ और याक़ूब से क़सम खा कर वादा किया है।" 25 फिर यूसुफ़ ने इस्राईलियों को क़सम दिला कर कहा, "अल्लाह यक़ीनन तुम्हारी देख-भाल करके वहाँ ले जाएगा। उस वक़्त मेरी हड्डियों को भी उठा कर साथ ले जाना।"

26 फिर यूसुफ़ फ़ौत हो गया। वह 110 साल का था। उसे हनूत करके मिस्र में एक ताबूत में रखा गया।

[h]ग़ालिबन इस का मतलब यह है कि उस ने उन्हें लेपालक बनाया।

ख़ुरूज

याक़ूब का ख़ान्दान मिस्र में

1 1ज़ैल में उन बेटों के नाम हैं जो अपने
बाप याक़ूब और अपने ख़ान्दानों समेत मिस्र
में आए थे : 2रूबिन, शमाऊन, लावी, यहूदाह,
3इश्कार, ज़बूलून, बिन्यमीन, 4दान, नफ़ताली, जद
और आशर। 5उस वक़्त याक़ूब की औलाद की
तादाद 70 थी। यूसुफ़ तो पहले ही मिस्र आ चुका
था।

6मिस्र में रहते हुए बहुत दिन गुज़र गए। इतने में
यूसुफ़, उस के तमाम भाई और उस नसल के तमाम
लोग मर गए। 7इस्राईली फले फूले और तादाद में
बहुत बढ़ गए। नतीजे में वह निहायत ही ताक़तवर
हो गए। पूरा मुल्क उन से भर गया।

इस्राईलियों को दबाया जाता है

8होते होते एक नया बादशाह तख़्तनशीन हुआ जो
यूसुफ़ से नावाक़िफ़ था। 9उस ने अपने लोगों से
कहा, “इस्राईलियों को देखो। वह तादाद और ताक़त
में हम से बढ़ गए हैं। 10आओ, हम हिक्मत से काम
लें, वर्ना वह मज़ीद बढ़ जाएँगे। ऐसा न हो कि वह
किसी जंग के मौक़े पर दुश्मन का साथ दे कर हम
से लड़ें और मुल्क को छोड़ जाएँ।”

11चुनाँचे मिस्रियों ने इस्राईलियों पर निगरान मुक़र्रर
किए ताकि बेगार में उन से काम करवा कर उन्हें
दबाते रहें। उस वक़्त उन्हों ने पितोम और रामसीस
के शहर तामीर किए। इन शहरों में फ़िरऔन बादशाह
के बड़े बड़े गोदाम थे। 12लेकिन जितना इस्राईलियों
को दबाया गया उतना ही वह तादाद में बढ़ते और
फैलते गए। आख़िरकार मिस्री उन से दहशत खाने
लगे, 13और वह बड़ी बेरहमी से उन से काम करवाते
रहे। 14इस्राईलियों का गुज़ारा निहायत मुश्किल हो
गया। उन्हें गारा तय्यार करके ईंटें बनाना और खेतों
में मुख़्तलिफ़ क़िस्म के काम करना पड़े। इस में मिस्री
उन से बड़ी बेरहमी से पेश आते रहे।

दाइयाँ अल्लाह की राह पर चलती हैं

15इस्राईलियों की दो दाइयाँ थीं जिन के नाम सिफ़्रा
और फ़ूआ थे। मिस्र के बादशाह ने उन से कहा,
16“जब इब्रानी औरतें तुम्हें मदद के लिए बुलाएँ तो
ख़बरदार रहो। अगर लड़का पैदा हो तो उसे जान से
मार दो, अगर लड़की हो तो उसे जीता छोड़ दो।”
17लेकिन दाइयाँ अल्लाह का ख़ौफ़ मानती थीं। उन्हों
ने मिस्र के बादशाह का हुक्म न माना बल्कि लड़कों
को भी जीने दिया।

18तब मिस्र के बादशाह ने उन्हें दुबारा बुला कर
पूछा, “तुम ने यह क्यूँ किया? तुम लड़कों को
क्यूँ जीता छोड़ देती हो?” 19उन्हों ने जवाब दिया,
“इब्रानी औरतें मिस्री औरतों से ज़ियादा मज़बूत हैं।
बच्चे हमारे पहुँचने से पहले ही पैदा हो जाते हैं।”

20चुनाँचे अल्लाह ने दाइयों को बर्कत दी, और
इस्राईली क़ौम तादाद में बढ़ कर बहुत ताक़तवर हो
गई। 21और चूँकि दाइयाँ अल्लाह का ख़ौफ़ मानती थीं
इस लिए उस ने उन्हें औलाद दे कर उन के ख़ान्दानों
को क़ाइम रखा।

22आख़िरकार बादशाह ने अपने तमाम हमवतनों
से बात की, “जब भी इब्रानियों के लड़के पैदा हों तो
उन्हें दरया-ए-नील में फैंक देना। सिर्फ़ लड़कियों को
ज़िन्दा रहने दो।”

मूसा की पैदाइश और बचाओ

2 1उन दिनों में लावी के एक आदमी ने अपने ही
क़बीले की एक औरत से शादी की। 2औरत
हामिला हुई और बच्चा पैदा हुआ। माँ ने देखा कि

लड़का ख़ूबसूरत है, इस लिए उस ने उसे तीन माह तक छुपाए रखा। 3 जब वह उसे और ज़ियादा न छुपा सकी तो उस ने आबी नर्सल से टोकरी बना कर उस पर तारकोल चढ़ाया। फिर उस ने बच्चे को टोकरी में रख कर टोकरी को दरया-ए-नील के किनारे पर उगे हुए सरकंडों में रख दिया। 4 बच्चे की बहन कुछ फ़ासिले पर खड़ी देखती रही कि उस का क्या बनेगा।

5 उस वक़्त फ़िरऔन की बेटी नहाने के लिए दरया पर आई। उस की नौकरानियाँ दरया के किनारे टहलने लगीं। तब उस ने सरकंडों में टोकरी देखी और अपनी लौंडी को उसे लाने भेजा। 6 उसे खोला तो छोटा लड़का दिखाई दिया जो रो रहा था। फ़िरऔन की बेटी को उस पर तरस आया। उस ने कहा, "यह कोई इब्रानी बच्चा है।"

7 अब बच्चे की बहन फ़िरऔन की बेटी के पास गई और पूछा, "क्या मैं बच्चे को दूध पिलाने के लिए कोई इब्रानी औरत ढूँड लाऊँ?" 8 फ़िरऔन की बेटी ने कहा, "हाँ, जाओ।" लड़की चली गई और बच्चे की सगी माँ को ले कर वापस आई। 9 फ़िरऔन की बेटी ने माँ से कहा, "बच्चे को ले जाओ और उसे मेरे लिए दूध पिलाया करो। मैं तुम्हें इस का मुआवज़ा दूँगी।" चुनाँचे बच्चे की माँ ने उसे दूध पिलाने के लिए ले लिया।

10 जब बच्चा बड़ा हुआ तो उस की माँ उसे फ़िरऔन की बेटी के पास लाई, और वह उस का बेटा बन गया। फ़िरऔन की बेटी ने उस का नाम मूसा यानी 'निकाला गया' रख कर कहा, "मैं उसे पानी से निकाल लाई हूँ।"

मूसा फ़रार होता है

11 जब मूसा जवान हुआ तो एक दिन वह घर से निकल कर अपने लोगों के पास गया जो जबरी काम में मसरूफ़ थे। मूसा ने देखा कि एक मिस्री मेरे एक इब्रानी भाई को मार रहा है। 12 मूसा ने चारों तरफ़ नज़र दौड़ाई। जब मालूम हुआ कि कोई नहीं देख रहा तो उस ने मिस्री को जान से मार दिया और उसे रेत में छुपा दिया।

13 अगले दिन भी मूसा घर से निकला। इस दफ़ा दो इब्रानी मर्द आपस में लड़ रहे थे। जो ग़लती पर था उस से मूसा ने पूछा, "तुम अपने भाई को क्यूँ मार रहे हो?" 14 आदमी ने जवाब दिया, "किस ने आप को हम पर हुक्मरान और क़ाज़ी मुक़र्रर किया है? क्या आप मुझे भी क़त्ल करना चाहते हैं जिस तरह मिस्री को मार डाला था?" तब मूसा डर गया। उस ने सोचा, "हाय, मेरा भेद खुल गया है!"

15 बादशाह को भी पता लगा तो उस ने मूसा को मरवाने की कोशिश की। लेकिन मूसा मिदियान के मुल्क को भाग गया। वहाँ वह एक कुएँ के पास बैठ गया। 16 मिदियान में एक इमाम था जिस की सात बेटियाँ थीं। यह लड़कियाँ अपनी भेड़-बक्रियों को पानी पिलाने के लिए कुएँ पर आईं और पानी निकाल कर हौज़ भरने लगीं। 17 लेकिन कुछ चरवाहों ने आ कर उन्हें भगा दिया। यह देख कर मूसा उठा और लड़कियों को चरवाहों से बचा कर उन के रेवड़ को पानी पिलाया।

18 जब लड़कियाँ अपने बाप रऊएल के पास वापस आईं तो बाप ने पूछा, "आज तुम इतनी जल्दी से क्यूँ वापस आ गई हो?" 19 लड़कियों ने जवाब दिया, "एक मिस्री आदमी ने हमें चरवाहों से बचाया। न सिर्फ़ यह बल्कि उस ने हमारे लिए पानी भी निकाल कर रेवड़ को पिला दिया।" 20 रऊएल ने कहा, "वह आदमी कहाँ है? तुम उसे क्यूँ छोड़ कर आई हो? उसे बुलाओ ताकि वह हमारे साथ खाना खाए।"

21 मूसा रऊएल के घर में ठहरने के लिए राज़ी हो गया। बाद में उस की शादी रऊएल की बेटी सफ़्फ़ूरा से हुई। 22 सफ़्फ़ूरा के बेटा पैदा हुआ तो मूसा ने कहा, "इस का नाम जैर्सोम यानी 'अजनबी मुल्क में परदेसी' हो, क्यूँकि मैं अजनबी मुल्क में परदेसी हूँ।"

23 काफ़ी अर्सा गुज़र गया। इतने में मिस्र का बादशाह इन्तिक़ाल कर गया। इस्राईली अपनी

ग़ुलामी तले कराहते और मदद के लिए पुकारते रहे,
और उन की चीख़ें अल्लाह तक पहुँच गईं। 24 अल्लाह
ने उन की आहें सुनीं और उस अह्द को याद किया
जो उस ने इब्राहीम, इस्हाक़ और याक़ूब से बाँधा
था। 25 अल्लाह इस्राईलियों की हालत देख कर उन
का ख़याल करने लगा।

जलती हुई झाड़ी

3 1 मूसा अपने सुसर यित्रो की भेड़-बक्रियों की
निगहबानी करता था (मिदियान का इमाम
रऊएल यित्रो भी कहलाता था)। एक दिन मूसा रेवड़
को रेगिस्तान की परली जानिब ले गया और चलते
चलते अल्लाह के पहाड़ होरिब यानी सीना तक पहुँच
गया। 2 वहाँ रब्ब का फ़रिश्ता आग के शोले में उस
पर ज़ाहिर हुआ। यह शोला एक झाड़ी में भड़क रहा
था। मूसा ने देखा कि झाड़ी जल रही है लेकिन भस्म
नहीं हो रही। 3 मूसा ने सोचा, “यह तो अजीब बात
है। क्या वजह है कि जलती हुई झाड़ी भस्म नहीं
हो रही? मैं ज़रा वहाँ जा कर यह हैरतअंगेज़ मन्ज़र
देखूँ।”

4 जब रब्ब ने देखा कि मूसा झाड़ी को देखने आ
रहा है तो उस ने उसे झाड़ी में से पुकारा, “मूसा,
मूसा!” मूसा ने कहा, “जी, मैं हाज़िर हूँ।” 5 रब्ब
ने कहा, “इस से ज़ियादा क़रीब न आना। अपनी
जूतियाँ उतार, क्यूँकि तू मुक़द्दस ज़मीन पर खड़ा है।
6 मैं तेरे बाप का ख़ुदा, इब्राहीम का ख़ुदा, इस्हाक़ का
ख़ुदा और याक़ूब का ख़ुदा हूँ।” यह सुन कर मूसा ने
अपना मुँह ढाँक लिया, क्यूँकि वह अल्लाह को देखने
से डरा।

7 रब्ब ने कहा, “मैं ने मिस्र में अपनी क़ौम की बुरी
हालत देखी और ग़ुलामी में उन की चीख़ें सुनी हैं,
और मैं उन के दुखों को ख़ूब जानता हूँ। 8 अब मैं
उन्हें मिस्रियों के क़ाबू से बचाने के लिए उतर आया
हूँ। मैं उन्हें मिस्र से निकाल कर एक अच्छे वसी
मुल्क में ले जाऊँगा, एक ऐसे मुल्क में जहाँ दूध और
शहद की कस्रत है, गो इस वक़्त कनआनी, हित्ती,
अमोरी, फ़रिज़्ज़ी, हिव्वी और यबूसी उस में रहते हैं।
9 इस्राईलियों की चीख़ें मुझ तक पहुँची हैं। मैं ने देखा
है कि मिस्री उन पर किस तरह का ज़ुल्म ढा रहे हैं।
10 चुनाँचे अब जा। मैं तुझे फ़िरऔन के पास भेजता
हूँ, क्यूँकि तुझे मेरी क़ौम इस्राईल को मिस्र से निकाल
कर लाना है।”

11 लेकिन मूसा ने अल्लाह से कहा, “मैं कौन हूँ कि
फ़िरऔन के पास जा कर इस्राईलियों को मिस्र से
निकाल लाऊँ?” 12 अल्लाह ने कहा, “मैं तो तेरे साथ
हूँगा। और इस का सबूत कि मैं तुझे भेज रहा हूँ यह
होगा कि लोगों के मिस्र से निकलने के बाद तुम यहाँ
आ कर इस पहाड़ पर मेरी इबादत करोगे।”

13 लेकिन मूसा ने एतिराज़ किया, “अगर मैं
इस्राईलियों के पास जा कर उन्हें बताऊँ कि तुम्हारे
बापदादा के ख़ुदा ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है तो वह
पूछेंगे, ‘उस का नाम क्या है?’ फिर मैं उन को क्या
जवाब दूँ?”

14 अल्लाह ने कहा, “मैं जो हूँ सो मैं हूँ। उन से कहना,
‘मैं हूँ ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है। 15 रब्ब जो तुम्हारे
बापदादा का ख़ुदा, इब्राहीम का ख़ुदा, इस्हाक़ का
ख़ुदा और याक़ूब का ख़ुदा है उसी ने मुझे तुम्हारे पास
भेजा है।’ यह अबद तक मेरा नाम रहेगा। लोग यही
नाम ले कर मुझे नसल-दर-नसल याद करेंगे।

16 अब जा और इस्राईल के बुज़ुर्गों को जमा करके
उन को बता दे कि रब्ब तुम्हारे बापदादा इब्राहीम,
इस्हाक़ और याक़ूब का ख़ुदा मुझ पर ज़ाहिर हुआ है।
वह फ़रमाता है, ‘मैं ने ख़ूब देख लिया है कि मिस्र में
तुम्हारे साथ क्या सुलूक हो रहा है। 17 इस लिए मैं ने
फ़ैसला किया है कि तुम्हें मिस्र की मुसीबत से निकाल
कर कनआनियों, हित्तियों, अमोरियों, फ़रिज़्ज़ियों,
हिव्वियों और यबूसियों के मुल्क में ले जाऊँ, ऐसे
मुल्क में जहाँ दूध और शहद की कस्रत है।’ 18 बुज़ुर्ग
तेरी सुनेंगे। फिर उन के साथ मिस्र के बादशाह के
पास जा कर उस से कहना, ‘रब्ब इब्रानियों का ख़ुदा
हम पर ज़ाहिर हुआ है। इस लिए हमें इजाज़त दें कि

हम तीन दिन का सफ़र करके रेगिस्तान में रब्ब अपने
ख़ुदा के लिए क़ुर्बानियाँ चढ़ाएँ।’
19 लेकिन मुझे मालूम है कि मिस्र का बादशाह सिर्फ़
इस सूरत में तुम्हें जाने देगा कि कोई ज़बरदस्ती तुम्हें
ले जाए। 20 इस लिए मैं अपनी क़ुद्रत ज़ाहिर करके
अपने मोजिज़ों की मारिफ़त मिस्रियों को मारूँगा।
फिर वह तुम्हें जाने देगा। 21 उस वक़्त मैं मिस्रियों
के दिलों को तुम्हारे लिए नर्म कर दूँगा। तुम्हें ख़ाली
हाथ नहीं जाना पड़ेगा। 22 तमाम इब्रानी औरतें अपनी
मिस्री पड़ोसनों और अपने घर में रहने वाली मिस्री
औरतों से चाँदी और सोने के ज़ेवरात और नफ़ीस
कपड़े माँग कर अपने बच्चों को पहनाएँगी। यूँ मिस्रियों
को लूट लिया जाएगा।”

4 1 मूसा ने एतिराज़ किया, “लेकिन इस्राईली न
मेरी बात का यक़ीन करेंगे, न मेरी सुनेंगे। वह
तो कहेंगे, ‘रब्ब तुम पर ज़ाहिर नहीं हुआ’।” 2 जवाब
में रब्ब ने मूसा से कहा, “तू ने हाथ में क्या पकड़ा
हुआ है?” मूसा ने कहा, “लाठी।” 3 रब्ब ने कहा,
“उसे ज़मीन पर डाल दे।” मूसा ने ऐसा किया तो
लाठी साँप बन गई, और मूसा डर कर भागा। 4 रब्ब
ने कहा, “अब साँप की दुम को पकड़ ले।” मूसा ने
ऐसा किया तो साँप फिर लाठी बन गया।
5 रब्ब ने कहा, “यह देख कर लोगों को यक़ीन
आएगा कि रब्ब जो उन के बापदादा का ख़ुदा,
इब्राहीम का ख़ुदा, इस्हाक़ का ख़ुदा और याक़ूब का
ख़ुदा है तुझ पर ज़ाहिर हुआ है। 6 अब अपना हाथ
अपने लिबास में डाल दे।” मूसा ने ऐसा किया। जब
उस ने अपना हाथ निकाला तो वह बर्फ़ की मानिन्द
सफ़ेद हो गया था। कोढ़ जैसी बीमारी लग गई थी।
7 तब रब्ब ने कहा, “अब अपना हाथ दुबारा अपने
लिबास में डाल।” मूसा ने ऐसा किया। जब उस ने
अपना हाथ दुबारा निकाला तो वह फिर सेहतमन्द
था।
8 रब्ब ने कहा, “अगर लोगों को पहला मोजिज़ा
देख कर यक़ीन न आए और वह तेरी न सुनें तो शायद
उन्हें दूसरा मोजिज़ा देख कर यक़ीन आए। 9 अगर
उन्हें फिर भी यक़ीन न आए और वह तेरी न सुनें तो
दरया-ए-नील से कुछ पानी निकाल कर उसे ख़ुश्क
ज़मीन पर उंडेल दे। यह पानी ज़मीन पर गिरते ही ख़ून
बन जाएगा।”
10 लेकिन मूसा ने कहा, “मेरे आक़ा, मैं माज़रत
चाहता हूँ, मैं अच्छी तरह बात नहीं कर सकता
बल्कि मैं कभी भी यह लियाक़त नहीं रखता था।
इस वक़्त भी जब मैं तुझ से बात कर रहा हूँ मेरी यही
हालत है। मैं रुक रुक कर बोलता हूँ।” 11 रब्ब ने
कहा, “किस ने इन्सान का मुँह बनाया? कौन एक
को गूँगा और दूसरे को बहरा बना देता है? कौन एक
को देखने की क़ाबिलियत देता है और दूसरे को इस
से महरूम रखता है? क्या मैं जो रब्ब हूँ यह सब
कुछ नहीं करता? 12 अब जा! तेरे बोलते वक़्त मैं
ख़ुद तेरे साथ हूँगा और तुझे वह कुछ सिखाऊँगा जो
तुझे कहना है।”
13 लेकिन मूसा ने इल्तिजा की, “मेरे आक़ा,
मेहरबानी करके किसी और को भेज दे।”
14 तब रब्ब मूसा से सख़्त ख़फ़ा हुआ। उस ने कहा,
“क्या तेरा लावी भाई हारून ऐसे काम के लिए हाज़िर
नहीं है? मैं जानता हूँ कि वह अच्छी तरह बोल
सकता है। देख, वह तुझ से मिलने के लिए निकल
चुका है। तुझे देख कर वह निहायत ख़ुश होगा।
15 उसे वह कुछ बता जो उसे कहना है। तुम्हारे बोलते
वक़्त मैं तेरे और उस के साथ हूँगा और तुम्हें वह कुछ
सिखाऊँगा जो तुम्हें करना होगा। 16 हारून तेरी जगह
क़ौम से बात करेगा जबकि तू मेरी तरह उसे वह कुछ
बताएगा जो उसे कहना है। 17 लेकिन यह लाठी भी
साथ ले जाना, क्यूँकि इसी के ज़रीए तू यह मोजिज़े
करेगा।”

मूसा मिस्र को लौट जाता है

18 फिर मूसा अपने सुसर यित्रो के घर वापस चला
गया। उस ने कहा, “मुझे ज़रा अपने अज़ीज़ों के पास
वापस जाने दें जो मिस्र में हैं। मैं मालूम करना चाहता
हूँ कि वह अभी तक ज़िन्दा हैं कि नहीं।” यित्रो ने

जवाब दिया, “ठीक है, सलामती से जाएँ।” [19] मूसा अभी मिदियान में था कि रब्ब ने उस से कहा, “मिस्र को वापस चला जा, क्यूँकि जो आदमी तुझे क़त्ल करना चाहते थे वह मर गए हैं।” [20] चुनाँचे मूसा अपनी बीवी और बेटों को गधे पर सवार करके मिस्र को लौटने लगा। अल्लाह की लाठी उस के हाथ में थी।

[21] रब्ब ने उस से यह भी कहा, “मिस्र जा कर फ़िरऔन के सामने वह तमाम मोजिज़े दिखा जिन का मैं ने तुझे इख़्तियार दिया है। लेकिन मेरे कहने पर वह अड़ा रहेगा। वह इस्राईलियों को जाने की इजाज़त नहीं देगा। [22] उस वक़्त फ़िरऔन को बता देना, ‘रब्ब फ़रमाता है कि इस्राईल मेरा पहलौठा है। [23] मैं तुझे बता चुका हूँ कि मेरे बेटे को जाने दे ताकि वह मेरी इबादत करे। अगर तू मेरे बेटे को जाने से मना करे तो मैं तेरे पहलौठे को जान से मार दूँगा’।”

[24] एक दिन जब मूसा अपने ख़ान्दान के साथ रास्ते में किसी सराय में ठहरा हुआ था तो रब्ब ने उस पर हम्ला करके उसे मार देने की कोशिश की। [25] यह देख कर सफ़्फ़ूरा ने एक तेज़ पत्थर से अपने बेटे का ख़तना किया और काटे हुए हिस्से से मूसा के पैर छुए। उस ने कहा, “यक़ीनन तुम मेरे ख़ूनी दूल्हा हो।” [26] तब अल्लाह ने मूसा को छोड़ दिया। सफ़्फ़ूरा ने उसे ख़तने के बाइस ही ‘ख़ूनी दूल्हा’ कहा था।

[27] रब्ब ने हारून से भी बात की, “रेगिस्तान में मूसा से मिलने जा।” हारून चल पड़ा और अल्लाह के पहाड़ के पास मूसा से मिला। उस ने उसे बोसा दिया। [28] मूसा ने हारून को सब कुछ सुना दिया जो रब्ब ने उसे कहने के लिए भेजा था। उस ने उसे उन मोजिज़ों के बारे में भी बताया जो उसे दिखाने थे।

[29] फिर दोनों मिल कर मिस्र गए। वहाँ पहुँच कर उन्हों ने इस्राईल के तमाम बुज़ुर्गों को जमा किया। [30] हारून ने उन्हें वह तमाम बातें सुनाईं जो रब्ब ने मूसा को बताई थीं। उस ने मज़्कूरा मोजिज़े भी लोगों के सामने दिखाए। [31] फिर उन्हें यक़ीन आया। और जब उन्हों ने सुना कि रब्ब को तुम्हारा ख़याल है और वह तुम्हारी मुसीबत से आगाह है तो उन्हों ने रब्ब को सिज्दा किया।

मूसा और हारून फ़िरऔन के दरबार में

5 [1] फिर मूसा और हारून फ़िरऔन के पास गए। उन्हों ने कहा, “रब्ब इस्राईल का ख़ुदा फ़रमाता है, ‘मेरी क़ौम को रेगिस्तान में जाने दे ताकि वह मेरे लिए ईद मनाएँ’।” [2] फ़िरऔन ने जवाब दिया, “यह रब्ब कौन है? मैं क्यूँ उस का हुक्म मान कर इस्राईलियों को जाने दूँ? न मैं रब्ब को जानता हूँ, न इस्राईलियों को जाने दूँगा।”

[3] हारून और मूसा ने कहा, “इब्रानियों का ख़ुदा हम पर ज़ाहिर हुआ है। इस लिए मेहरबानी करके हमें इजाज़त दें कि रेगिस्तान में तीन दिन का सफ़र करके रब्ब अपने ख़ुदा के हुज़ूर क़ुर्बानियाँ पेश करें। कहीं वह हमें किसी बीमारी या तल्वार से न मारे।”

[4] लेकिन मिस्र के बादशाह ने इन्कार किया, “मूसा और हारून, तुम लोगों को काम से क्यूँ रोक रहे हो? जाओ, जो काम हम ने तुम को दिया है उस पर लग जाओ! [5] इस्राईली वैसे भी तादाद में बहुत बढ़ गए हैं, और तुम उन्हें काम करने से रोक रहे हो।”

जवाब में फ़िरऔन का सख़्त दबाओ

[6] उसी दिन फ़िरऔन ने मिस्री निगरानों और उन के तहत के इस्राईली निगरानों को हुक्म दिया, [7] “अब से इस्राईलियों को ईंटें बनाने के लिए भूसा मत देना, बल्कि वह ख़ुद जा कर भूसा जमा करें। [8] तो भी वह उतनी ही ईंटें बनाएँ जितनी पहले बनाते थे। वह सुस्त हो गए हैं और इसी लिए चीख़ रहे हैं कि हमें जाने दें ताकि अपने ख़ुदा को क़ुर्बानियाँ पेश करें। [9] उन से और ज़ियादा सख़्त काम कराओ, उन्हें काम में लगाए रखो। उन के पास इतना वक़्त ही न हो कि वह झूटी बातों पर ध्यान दें।”

[10] मिस्री निगरान और उन के तहत के इस्राईली निगरानों ने लोगों के पास जा कर उन से कहा, “फ़िरऔन का हुक्म है कि तुम्हें भूसा न दिया जाए।

[11] इस लिए ख़ुद जाओ और भूसा ढूँड कर जमा करो। लेकिन ख़बरदार! उतनी ही ईंटें बनाओ जितनी पहले बनाते थे।”

[12] यह सुन कर इस्राईली भूसा जमा करने के लिए पूरे मुल्क में फैल गए। [13] मिस्री निगरान यह कह कर उन पर दबाओ डालते रहे कि उतनी ईंटें बनाओ जितनी पहले बनाते थे। [14] जो इस्राईली निगरान उन्हों ने मुक़र्रर किए थे उन्हें वह पीटते और कहते रहे, “तुम ने कल और आज उतनी ईंटें क्यूँ नहीं बनवाईं जितनी पहले बनवाते थे?”

[15] फिर इस्राईली निगरान फ़िरऔन के पास गए। उन्हों ने शिकायत करके कहा, “आप अपने ख़ादिमों के साथ ऐसा सुलूक क्यूँ कर रहे हैं? [16] हमें भूसा नहीं दिया जा रहा और साथ साथ यह कहा गया है कि उतनी ईंटें बनाओ जितनी पहले बनाते थे। नतीजे में हमें मारा पीटा भी जा रहा है हालाँकि ऐसा करने में आप के अपने लोग ग़लती पर हैं।”

[17] फ़िरऔन ने जवाब दिया, “तुम लोग सुस्त हो, तुम काम करना नहीं चाहते। इस लिए तुम यह जगह छोड़ना और रब्ब को क़ुर्बानियाँ पेश करना चाहते हो। [18] अब जाओ, काम करो। तुम्हें भूसा नहीं दिया जाएगा, लेकिन ख़बरदार! उतनी ही ईंटें बनाओ जितनी पहले बनाते थे।”

[19] जब इस्राईली निगरानों को बताया गया कि ईंटों की मतलूबा तादाद कम न करो तो वह समझ गए कि हम फंस गए हैं। [20] फ़िरऔन के महल से निकल कर उन की मुलाक़ात मूसा और हारून से हुई जो उन के इन्तिज़ार में थे। [21] उन्हों ने मूसा और हारून से कहा, “रब्ब ख़ुद आप की अदालत करे। क्यूँकि आप के सबब से फ़िरऔन और उस के मुलाज़िमों को हम से घिन आती है। आप ने उन्हें हमें मार देने का मौक़ा दे दिया है।”

मूसा की शिकायत और रब्ब का जवाब

[22] यह सुन कर मूसा रब्ब के पास वापस आया और कहा, “ऐ आक़ा, तू ने इस क़ौम से ऐसा बुरा सुलूक क्यूँ किया? क्या तू ने इसी मक़्सद से मुझे यहाँ भेजा है? [23] जब से मैं ने फ़िरऔन के पास जा कर उसे तेरी मर्ज़ी बताई है वह इस्राईली क़ौम से बुरा सुलूक कर रहा है। और तू ने अब तक उन्हें बचाने का कोई क़दम नहीं उठाया।”

6 [1] रब्ब ने जवाब दिया, “अब तू देखेगा कि मैं फ़िरऔन के साथ क्या कुछ करता हूँ। मेरी अज़ीम क़ुद्रत का तजरिबा करके वह मेरे लोगों को जाने देगा बल्कि उन्हें जाने पर मज्बूर करेगा।”

[2] अल्लाह ने मूसा से यह भी कहा, “मैं रब्ब हूँ। [3] मैं इब्राहीम, इस्हाक़ और याक़ूब पर ज़ाहिर हुआ। वह मेरे नाम अल्लाह क़ादिर-ए-मुतलक़ [i]से वाक़िफ़ हुए, लेकिन मैं ने उन पर अपने नाम रब [j]का इन्किशाफ़ नहीं किया। [4] मैं ने उन से अह्द करके वादा किया कि उन्हें मुल्क-ए-कनआन दूँगा जिस में वह अजनबी के तौर पर रहते थे। [5] अब मैं ने सुना है कि इस्राईली किस तरह मिस्रियों की ग़ुलामी में कराह रहे हैं, और मैं ने अपना अह्द याद किया है। [6] चुनाँचे इस्राईलियों को बताना, ‘मैं रब्ब हूँ। मैं तुम्हें मिस्रियों के जूए से आज़ाद करूँगा और उन की ग़ुलामी से बचाऊँगा। मैं बड़ी क़ुद्रत के साथ तुम्हें छुड़ाऊँगा और उन की अदालत करूँगा। [7] मैं तुमहें अपनी क़ौम बनाऊँगा और तुम्हारा ख़ुदा हूँगा। तब तुम जान लोगे कि मैं रब्ब तुम्हारा ख़ुदा हूँ जिस ने तुम्हें मिस्रियों के जूए से आज़ाद कर दिया है। [8] मैं तुमहें उस मुल्क में ले जाऊँगा जिस का वादा मैं ने क़सम खा कर इब्राहीम, इस्हाक़ और याक़ूब से किया है। वह मुल्क तुम्हारी अपनी मिल्कियत होगा। मैं रब्ब हूँ’।”

[9] मूसा ने यह सब कुछ इस्राईलियों को बता दिया, लेकिन उन्हों ने उस की बात न मानी, क्यूँकि वह

---

[i] इब्रानी में एल-शदई।

[j] इब्रानी में यहवे।

सख़्त काम के बाइस हिम्मत हार गए थे। 10 तब रब्ब
ने मूसा से कहा, 11 “जा, मिस्र के बादशाह फ़िरऔन
को बता देना कि इस्राईलियों को अपने मुल्क से जाने
दे।” 12 लेकिन मूसा ने एतिराज़ किया, “इस्राईली मेरी
बात सुनना नहीं चाहते तो फ़िरऔन क्यूँ मेरी बात माने
जबकि मैं रुक रुक कर बोलता हूँ?”

13 लेकिन रब्ब ने मूसा और हारून को हुक्म दिया,
“इस्राईलियों और मिस्र के बादशाह फ़िरऔन से बात
करके इस्राईलियों को मिस्र से निकालो।”

मूसा और हारून के आबा-ओ-अज्दाद

14 इस्राईल के आबाई घरानों के सरबराह यह थे :
इस्राईल के पहलौठे रूबिन के चार बेटे हनूक, फ़ल्लू,
हस्रोन और कर्मी थे। इन से रूबिन की चार शाख़ें
निकलीं।

15 शमाऊन के पाँच बेटे यमूएल, यमीन, उहद,
यकीन, सुहर और साऊल थे। (साऊल कनआनी
औरत का बच्चा था)। इन से शमाऊन की पाँच शाख़ें
निकलीं।

16 लावी के तीन बेटे जैर्सोन, क़िहात और मिरारी
थे। (लावी 137 साल की उम्र में फ़ौत हुआ)।

17 जैर्सोन के दो बेटे लिब्नी और सिमई थे। इन से
जैर्सोन की दो शाख़ें निकलीं। 18 क़िहात के चार बेटे
अम्राम, इज़्हार , हब्रून और उज़्ज़ीएल थे। (क़िहात
133 साल की उम्र में फ़ौत हुआ)। 19 मिरारी के दो बेटे
महली और मूशी थे। इन सब से लावी की मुख़्तलिफ़
शाख़ें निकलीं।

20 अम्राम ने अपनी फूफी यूकबिद से शादी की। उन
के दो बेटे हारून और मूसा पैदा हुए। (अम्राम 137
साल की उम्र में फ़ौत हुआ)। 21 इज़्हार के तीन बेटे
क़ोरह, नफ़ज और ज़िक्री थे। 22 उज़्ज़ीएल के तीन
बेटे मीसाएल, इल्सफ़न और सित्री थे।

23 हारून ने इलीसिबा से शादी की। (इलीसिबा
अम्मीनदाब की बेटी और नहसोन की बहन थी)।
उन के चार बेटे नदब, अबीहू, इलीअज़र और इतमर
थे। 24 क़ोरह के तीन बेटे अस्सीर, इल्क़ाना और
अबियासफ़ थे। उन से क़ोरहियों की तीन शाख़ें
निकलीं। 25 हारून के बेटे इलीअज़र ने फ़ूतीएल की
एक बेटी से शादी की। उन का एक बेटा फ़ीन्हास
था।

यह सब लावी के आबाई घरानों के सरबराह थे।

26 रब्ब ने अम्राम के दो बेटों हारून और मूसा को
हुक्म दिया कि मेरी क़ौम को उस के ख़ान्दानों की
तर्तीब के मुताबिक़ मिस्र से निकालो। 27 इन ही दो
आदमियों ने मिस्र के बादशाह फ़िरऔन से बात की
कि इस्राईलियों को मिस्र से जाने दे।

रब्ब दुबारा मूसा से हमकलाम होता है

28 मिस्र में रब्ब ने मूसा से कहा, 29 “मैं रब्ब हूँ।
मिस्र के बादशाह को वह सब कुछ बता देना जो मैं
तुझे बताता हूँ।” 30 मूसा ने एतिराज़ किया, “मैं तो
रुक रुक कर बोलता हूँ। फ़िरऔन किस तरह मेरी
बात मानेगा।”

7 1 लेकिन रब्ब ने कहा, “देख, मेरे कहने पर तू
फ़िरऔन के लिए अल्लाह की हैसियत रखेगा
और तेरा भाई हारून तेरा पैग़म्बर होगा। 2 जो भी
हुक्म मैं तुझे दूँगा उसे तू हारून को बता दे। फिर वह
सब कुछ फ़िरऔन को बताए ताकि वह इस्राईलियों
को अपने मुल्क से जाने दे। 3 लेकिन मैं फ़िरऔन को
अड़ जाने दूँगा। अगरचि मैं मिस्र में बहुत से निशानों
और मोजिज़ों से अपनी क़ुद्रत का मुज़ाहरा करूँगा
4 तो भी फ़िरऔन तुम्हारी नहीं सुनेगा। तब मिस्रियों
पर मेरा हाथ भारी हो जाएगा, और मैं उन को सख़्त
सज़ा दे कर अपनी क़ौम इस्राईल को ख़ान्दानों की
तर्तीब के मुताबिक़ मिस्र से निकाल लाऊँगा। 5 जब
मैं मिस्र के ख़िलाफ़ अपनी क़ुद्रत का इज़्हार करके
इस्राईलियों को वहाँ से निकालूँगा तो मिस्री जान लेंगे
कि मैं रब्ब हूँ।”

6 मूसा और हारून ने सब कुछ वैसा ही किया जैसा
रब्ब ने उन्हें हुक्म दिया। 7 फ़िरऔन से बात करते
वक़्त मूसा 80 साल का और हारून 83 साल का
था।

मूसा की लाठी साँप बन जाती है

[8] रब्ब ने मूसा और हारून से कहा, [9] “जब फ़िरऔन
तुम्हें मोजिज़ा दिखाने को कहेगा तो मूसा हारून से
कहे कि अपनी लाठी ज़मीन पर डाल दे। इस पर वह
साँप बन जाएगी।”

[10] मूसा और हारून ने फ़िरऔन के पास जा कर
ऐसा ही किया। हारून ने अपनी लाठी फ़िरऔन और
उस के उहदेदारों के सामने डाल दी तो वह साँप बन
गई। [11] यह देख कर फ़िरऔन ने अपने आलिमों और
जादूगरों को बुलाया। जादूगरों ने भी अपने जादू से
ऐसा ही किया। [12] हर एक ने अपनी लाठी ज़मीन पर
फैंकी तो वह साँप बन गई। लेकिन हारून की लाठी
ने उन की लाठियों को निगल लिया।

[13] ताहम फ़िरऔन इस से मुतअस्सिर न हुआ। उस
ने मूसा और हारून की बात सुनने से इन्कार किया।
वैसा ही हुआ जैसा रब्ब ने कहा था।

पानी ख़ून में बदल जाता है

[14] फिर रब्ब ने मूसा से कहा, “फ़िरऔन अड़ गया
है। वह मेरी क़ौम को मिस्र छोड़ने से रोकता है।
[15] कल सुब्ह-सवेरे जब वह दरया-ए-नील पर आएगा
तो उस से मिलने के लिए दरया के किनारे पर खड़े
हो जाना। उस लाठी को थामे रखना जो साँप बन
गई थी। [16] जब वह वहाँ पहुँचे तो उस से कहना,
‘रब्ब इब्रानियों के ख़ुदा ने मुझे आप को यह बताने
के लिए भेजा है कि मेरी क़ौम को मेरी इबादत करने
के लिए रेगिस्तान में जाने दे। लेकिन आप ने अभी
तक उस की नहीं सुनी। [17] चुनाँचे अब आप जान लेंगे
कि वह रब्ब है। मैं इस लाठी को जो मेरे हाथ में है
ले कर दरया-ए-नील के पानी को मारूँगा। फिर वह
ख़ून में बदल जाएगा। [18] दरया-ए-नील की मछलियाँ
मर जाएँगी, दरया से बदबू उठेगी और मिस्री दरया
का पानी नहीं पी सकेंगे’।”

[19] रब्ब ने मूसा से कहा, “हारून को बता देना कि
वह अपनी लाठी ले कर अपना हाथ उन तमाम जगहों
की तरफ़ बढ़ाए जहाँ पानी जमा होता है। तब मिस्र
की तमाम नदियों, नहरों, जोहड़ों और तालाबों का
पानी ख़ून में बदल जाएगा। पूरे मुल्क में ख़ून ही ख़ून
होगा, यहाँ तक कि लकड़ी और पत्थर के बर्तनों का
पानी भी ख़ून में बदल जाएगा।”

[20] चुनाँचे मूसा और हारून ने फ़िरऔन और उस के
उहदेदारों के सामने अपनी लाठी उठा कर दरया-ए-
नील के पानी पर मारी। इस पर दरया का सारा पानी
ख़ून में बदल गया। [21] दरया की मछलियाँ मर गईं,
और उस से इतनी बदबू उठने लगी कि मिस्री उस
का पानी न पी सके। मिस्र में चारों तरफ़ ख़ून ही ख़ून
था।

[22] लेकिन जादूगरों ने भी अपने जादू के ज़रीए ऐसा
ही किया। इस लिए फ़िरऔन अड़ गया और मूसा
और हारून की बात न मानी। वैसा ही हुआ जैसा
रब्ब ने कहा था। [23] फ़िरऔन पलट कर अपने घर
वापस चला गया। उसे उस की पर्वा नहीं थी जो मूसा
और हारून ने किया था। [24] लेकिन मिस्री दरया से
पानी न पी सके, और उन्हों ने पीने का पानी हासिल
करने के लिए दरया के किनारे किनारे गढ़े खोदे।
[25] पानी के बदल जाने के बाद सात दिन गुज़र गए।

मेंढ़क

8 [1] फिर रब्ब ने मूसा से कहा, “फ़िरऔन के पास
जा कर उसे बता देना कि रब्ब फ़रमाता है, ‘मेरी
क़ौम को मेरी इबादत करने के लिए जाने दे, [2] वर्ना
मैं पूरे मिस्र को मेंढ़कों से सज़ा दूँगा। [3] दरया-ए-नील
मेंढ़कों से इतना भर जाएगा कि वह दरया से निकल
कर तेरे महल, तेरे सोने के कमरे और तेरे बिस्तर
में जा घुसेंगे। वह तेरे उहदेदारों और तेरी रआया के
घरों में आएँगे बल्कि तुम्हारे तनूरों और आटा गूँधने
के बर्तनों में भी फुदकते फिरेंगे। [4] मेंढ़क तुझ पर, तेरी
क़ौम पर और तेरे उहदेदारों पर चढ़ जाएँगे’।”

[5] रब्ब ने मूसा से कहा, “हारून को बता देना कि
वह अपनी लाठी को हाथ में ले कर उसे दरयाओं,
नहरों और जोहड़ों के ऊपर उठाए ताकि मेंढ़क बाहर

निकल कर मिस्र के मुल्क में फैल जाएँ।” 6 हारून ने
मुल्क-ए-मिस्र के पानी के ऊपर अपनी लाठी उठाई
तो मेंढ़कों के ग़ोल पानी से निकल कर पूरे मुल्क पर
छा गए। 7 लेकिन जादूगरों ने भी अपने जादू से ऐसा
ही किया। वह भी दरया से मेंढ़क निकाल लाए।

8 फ़िरऔन ने मूसा और हारून को बुला कर कहा,
“रब्ब से दुआ करो कि वह मुझ से और मेरी क़ौम
से मेंढ़कों को दूर करे। फिर मैं तुम्हारी क़ौम को जाने
दूँगा ताकि वह रब्ब को क़ुर्बानियाँ पेश करें।”

9 मूसा ने जवाब दिया, “वह वक़्त मुक़र्रर करें जब
मैं आप के उह्देदारों और आप की क़ौम के लिए
दुआ करूँ। फिर जो मेंढ़क आप के पास और आप
के घरों में हैं उसी वक़्त ख़त्म हो जाएँगे। मेंढ़क सिर्फ़
दरया में पाए जाएँगे।”

10 फ़िरऔन ने कहा, “ठीक है, कल उन्हें ख़त्म
करो।” मूसा ने कहा, “जैसा आप कहते हैं वैसा ही
होगा। इस तरह आप को मालूम होगा कि हमारे ख़ुदा
की मानिन्द कोई नहीं है। 11 मेंढ़क आप, आप के
घरों, आप के उह्देदारों और आप की क़ौम को छोड़
कर सिर्फ़ दरया में रह जाएँगे।”

12 मूसा और हारून फ़िरऔन के पास से चले गए,
और मूसा ने रब्ब से मिन्नत की कि वह मेंढ़कों के वह
ग़ोल दूर करे जो उस ने फ़िरऔन के ख़िलाफ़ भेजे थे।
13 रब्ब ने उस की दुआ सुनी। घरों, सहनों और खेतों
में मेंढ़क मर गए। 14 लोगों ने उन्हें जमा करके उन के
ढेर लगा दिए। उन की बदबू पूरे मुल्क में फैल गई।

15 लेकिन जब फ़िरऔन ने देखा कि मसला हल हो
गया है तो वह फिर अकड़ गया और उन की न सुनी।
यूँ रब्ब की बात दुरुस्त निकली।

जूएँ

16 फिर रब्ब ने मूसा से कहा, “हारून से कहना कि
वह अपनी लाठी से ज़मीन की गर्द को मारे। जब
वह ऐसा करेगा तो पूरे मिस्र की गर्द जूओं में बदल
जाएगी।”

17 उन्हों ने ऐसा ही किया। हारून ने अपनी लाठी से
ज़मीन की गर्द को मारा तो पूरे मुल्क की गर्द जूओं में
बदल गई। उन के ग़ोल जानवरों और आदमियों पर
छा गए। 18 जादूगरों ने भी अपने जादू से ऐसा करने
की कोशिश की, लेकिन वह गर्द से जूएँ न बना सके।
जूएँ आदमियों और जानवरों पर छा गईं। 19 जादूगरों
ने फ़िरऔन से कहा, “अल्लाह की क़ुद्रत ने यह किया
है।” लेकिन फ़िरऔन ने उन की न सुनी। यूँ रब्ब की
बात दुरुस्त निकली।

काटने वाली मक्खियाँ

20 फिर रब्ब ने मूसा से कहा, “जब फ़िरऔन सुब्ह-
सवेरे दरया पर जाए तो तू उस के रास्ते में खड़ा हो
जाना। उसे कहना कि रब्ब फ़रमाता है, ‘मेरी क़ौम
को जाने दे ताकि वह मेरी इबादत कर सकें। 21 वर्ना
मैं तेरे और तेरे उह्देदारों के पास, तेरी क़ौम के पास
और तेरे घरों में काटने वाली मक्खियाँ भेज दूँगा।
मिस्रियों के घर मक्खियों से भर जाएँगे बल्कि जिस
ज़मीन पर वह खड़े हैं वह भी मक्खियों से ढाँकी
जाएगी। 22 लेकिन उस वक़्त मैं अपनी क़ौम के साथ
जो जुशन में रहती है फ़र्क़ सुलूक करूँगा। वहाँ एक
भी काटने वाली मक्खी नहीं होगी। इस तरह तुझे पता
लगेगा कि इस मुल्क में मैं ही रब्ब हूँ। 23 मैं अपनी
क़ौम और तेरी क़ौम में इमतियाज़ करूँगा। कल ही
मेरी क़ुद्रत का इज़्हार होगा’।”

24 रब्ब ने ऐसा ही किया। काटने वाली मक्खियों
के ग़ोल फ़िरऔन के महल, उस के उह्देदारों के घरों
और पूरे मिस्र में फैल गए। मुल्क का सत्यानास हो
गया।

25 फिर फ़िरऔन ने मूसा और हारून को बुला कर
कहा, “चलो, इसी मुल्क में अपने ख़ुदा को क़ुर्बानियाँ
पेश करो।” 26 लेकिन मूसा ने कहा, “यह मुनासिब
नहीं है। जो क़ुर्बानियाँ हम रब्ब अपने ख़ुदा को पेश
करेंगे वह मिस्रियों की नज़र में घिनौनी हैं। अगर हम
यहाँ ऐसा करें तो क्या वह हमें संगसार नहीं करेंगे?
27 इस लिए लाज़िम है कि हम तीन दिन का सफ़र

करके रेगिस्तान में ही रब्ब अपने ख़ुदा को क़ुर्बानियाँ
पेश करें जिस तरह उस ने हमें हुक्म भी दिया है।”
28 फ़िरऔन ने जवाब दिया, “ठीक है, मैं तुमहें जाने
दूँगा ताकि तुम रेगिस्तान में रब्ब अपने ख़ुदा को
क़ुर्बानियाँ पेश करो। लेकिन तुम्हें ज़ियादा दूर नहीं
जाना है। और मेरे लिए भी दुआ करना।”
29 मूसा ने कहा, “ठीक, मैं जाते ही रब्ब से
दुआ करूँगा। कल ही मक्खियाँ फ़िरऔन, उस के
उह्देदारों और उस की क़ौम से दूर हो जाएँगी। लेकिन
हमें दुबारा फ़रेब न देना बल्कि हमें जाने देना ताकि
हम रब्ब को क़ुर्बानियाँ पेश कर सकें।”
30 फिर मूसा फ़िरऔन के पास से चला गया और
रब्ब से दुआ की। 31 रब्ब ने मूसा की दुआ सुनी।
काटने वाली मक्खियाँ फ़िरऔन, उस के उह्देदारों
और उस की क़ौम से दूर हो गईं। एक भी मक्खी न
रही। 32 लेकिन फ़िरऔन फिर अकड़ गया। उस ने
इस्राईलियों को जाने न दिया।

मवेशियों में वबा

9 1 फिर रब्ब ने मूसा से कहा, “फ़िरऔन के पास
जा कर उसे बता कि रब्ब इब्रानियों का ख़ुदा
फ़रमाता है, ‘मेरी क़ौम को जाने दे ताकि वह मेरी
इबादत कर सकें।’ 2 अगर आप इन्कार करें और
उन्हें रोकते रहें 3 तो रब्ब अपनी क़ुद्रत का इज़्हार
करके आप के मवेशियों में भयानक वबा फैला देगा
जो आप के घोड़ों, गधों, ऊँटों, गाय-बैलों, भेड़-
बक्रियों और मेंढों में फैल जाएगी। 4 लेकिन रब्ब
इस्राईल और मिस्र के मवेशियों में इमतियाज़ करेगा।
इस्राईलियों का एक भी जानवर नहीं मरेगा। 5 रब्ब ने
फ़ैसला कर लिया है कि वह कल ही ऐसा करेगा।”
6 अगले दिन रब्ब ने ऐसा ही किया। मिस्र के
तमाम मवेशी मर गए, लेकिन इस्राईलियों का एक भी
जानवर न मरा। 7 फ़िरऔन ने कुछ लोगों को उन के
पास भेज दिया तो पता चला कि एक भी जानवर नहीं
मरा। ताहम फ़िरऔन अड़ा रहा। उस ने इस्राईलियों
को जाने न दिया।

फोड़े-फुंसियाँ

8 फिर रब्ब ने मूसा और हारून से कहा, “अपनी
मुट्ठियाँ किसी भट्टी की राख से भर कर फ़िरऔन के
पास जाओ। फिर मूसा फ़िरऔन के सामने यह राख
हवा में उड़ा दे। 9 यह राख बारीक धूल का बादल बन
जाएगी जो पूरे मुल्क पर छा जाएगा। उस के असर
से लोगों और जानवरों के जिस्मों पर फोड़े-फुंसियाँ
फूट निकलेंगे।”
10 मूसा और हारून ने ऐसा ही किया। वह किसी
भट्टी से राख ले कर फ़िरऔन के सामने खड़े हो गए।
मूसा ने राख को हवा में उड़ा दिया तो इन्सानों और
जानवरों के जिस्मों पर फोड़े-फुंसियाँ निकल आए।
11 इस मर्तबा जादूगर मूसा के सामने खड़े भी न हो
सके क्यूँकि उन के जिस्मों पर भी फोड़े निकल आए
थे। तमाम मिस्रियों का यही हाल था। 12 लेकिन रब्ब
ने फ़िरऔन को ज़िद्दी बनाए रखा, इस लिए उस ने
मूसा और हारून की न सुनी। यूँ वैसा ही हुआ जैसा
रब्ब ने मूसा को बताया था।

ओले

13 इस के बाद रब्ब ने मूसा से कहा, “सुब्ह-सवेरे
उठ और फ़िरऔन के सामने खड़े हो कर उसे बता
कि रब्ब इब्रानियों का ख़ुदा फ़रमाता है, ‘मेरी क़ौम
को जाने दे ताकि वह मेरी इबादत कर सकें। 14 वर्ना
मैं अपनी तमाम आफ़तें तुझ पर, तेरे उह्देदारों पर
और तेरी क़ौम पर आने दूँगा। फिर तू जान लेगा कि
तमाम दुनिया में मुझ जैसा कोई नहीं है। 15 अगर मैं
चाहता तो अपनी क़ुद्रत से ऐसी वबा फैला सकता
कि तुझे और तेरी क़ौम को दुनिया से मिटा दिया
जाता। 16 लेकिन मैं ने तुझे इस लिए बरपा किया
है कि तुझ पर अपनी क़ुद्रत का इज़्हार करूँ और
यूँ तमाम दुनिया में मेरे नाम का परचार किया जाए।
17 तू अभी तक अपने आप को सरफ़राज़ करके मेरी
क़ौम के ख़िलाफ़ है और उन्हें जाने नहीं देता। 18 इस
लिए कल मैं इसी वक़्त भयानक क़िस्म के ओलों का

तूफ़ान भेज दूँगा। मिस्री क़ौम की इबतिदा से ले कर आज तक मिस्र में ओलों का ऐसा तूफ़ान कभी नहीं आया होगा। [19] अपने बन्दों को अभी भेजना ताकि वह तेरे मवेशियों को और खेतों में पड़े तेरे माल को ला कर महफ़ूज़ कर लें। क्यूँकि जो भी खुले मैदान में रहेगा वह ओलों से मर जाएगा, ख़्वाह इन्सान हो या हैवान'।"

[20] फ़िरऔन के कुछ उह्देदार रब्ब का पैग़ाम सुन कर डर गए और भाग कर अपने जानवरों और ग़ुलामों को घरों में ले आए। [21] लेकिन दूसरों ने रब्ब के पैग़ाम की पर्वा न की। उन के जानवर और ग़ुलाम बाहर खुले मैदान में रहे।

[22] रब्ब ने मूसा से कहा, "अपना हाथ आस्मान की तरफ़ बढ़ा दे। फिर मिस्र के तमाम इन्सानों, जानवरों और खेतों के पौदों पर ओले पड़ेंगे।" [23] मूसा ने अपनी लाठी आस्मान की तरफ़ उठाई तो रब्ब ने एक ज़बरदस्त तूफ़ान भेज दिया। ओले पड़े, बिजली गिरी और बादल गरजते रहे। [24] ओले पड़ते रहे और बिजली चमकती रही। मिस्री क़ौम की इबतिदा से ले कर अब तक ऐसे ख़तरनाक ओले कभी नहीं पड़े थे। [25] इन्सानों से ले कर हैवानों तक खेतों में सब कुछ बर्बाद हो गया। ओलों ने खेतों में तमाम पौदे और दरख़्त भी तोड़ दिए। [26] वह सिर्फ़ जुशन के इलाक़े में न पड़े जहाँ इस्राईली आबाद थे।

[27] तब फ़िरऔन ने मूसा और हारून को बुलाया। उस ने कहा, "इस मर्तबा मैं ने गुनाह किया है। रब्ब हक़ पर है। मुझ से और मेरी क़ौम से ग़लती हुई है। [28] ओले और अल्लाह की गरजती आवाज़ें हद्द से ज़ियादा हैं। रब्ब से दुआ करो ताकि ओले रुक जाएँ। अब मैं तुम्हें जाने दूँगा। अब से तुम्हें यहाँ रहना नहीं पड़ेगा।"

[29] मूसा ने फ़िरऔन से कहा, "मैं शहर से निकल कर दोनों हाथ रब्ब की तरफ़ उठा कर दुआ करूँगा। फिर गरज और ओले रुक जाएँगे और आप जान लेंगे कि पूरी दुनिया रब्ब की है। [30] लेकिन मैं जानता हूँ कि आप और आप के उह्देदार अभी तक रब्ब ख़ुदा का ख़ौफ़ नहीं मानते।"

[31] उस वक़्त सन के फूल निकल चुके थे और जौ की बालें लग गई थीं। इस लिए यह फ़सलें तबाह हो गईं। [32] लेकिन गेहूँ और एक और क़िस्म की गन्दुम जो बाद में पकती है बर्बाद न हुई।

[33] मूसा फ़िरऔन को छोड़ कर शहर से निकला। उस ने रब्ब की तरफ़ अपने हाथ उठाए तो गरज, ओले और बारिश का तूफ़ान रुक गया। [34] जब फ़िरऔन ने देखा कि तूफ़ान ख़त्म हो गया है तो वह और उस के उह्देदार दुबारा गुनाह करके अकड़ गए। [35] फ़िरऔन अड़ा रहा और इस्राईलियों को जाने न दिया। वैसा ही हुआ जैसा रब्ब ने मूसा से कहा था।

टिड्डियाँ

10 [1] फिर रब्ब ने मूसा से कहा, "फ़िरऔन के पास जा, क्यूँकि मैं ने उस का और उस के दरबारियों का दिल सख़्त कर दिया है ताकि उन के दर्मियान अपने मोजिज़ों और अपनी क़ुद्रत का इज़्हार कर सकूँ [2] और तुम अपने बेटे-बेटियों और पोते-पोतियों को सुना सको कि मैं ने मिस्रियों के साथ क्या सुलूक किया है और उन के दर्मियान किस तरह के मोजिज़े करके अपनी क़ुद्रत का इज़्हार किया है। यूँ तुम जान लोगे कि मैं रब्ब हूँ।"

[3] मूसा और हारून फ़िरऔन के पास गए। उन्हों ने उस से कहा, "रब्ब इब्रानियों के ख़ुदा का फ़रमान है, 'तू कब तक मेरे सामने हथियार डालने से इन्कार करेगा? मेरी क़ौम को मेरी इबादत करने के लिए जाने दे, [4] वर्ना मैं कल तेरे मुल्क में टिड्डियाँ लाऊँगा। [5] उन के ग़ोल ज़मीन पर यूँ छा जाएँगे कि ज़मीन नज़र ही नहीं आएगी। जो कुछ ओलों ने तबाह नहीं किया उसे वह चट कर जाएँगी। बचे हुए दरख़्तों के पत्ते भी ख़त्म हो जाएँगे। [6] तेरे महल, तेरे उह्देदारों और बाक़ी लोगों के घर उन से भर जाएँगे। जब से मिस्री इस मुल्क में आबाद हुए हैं तुम ने कभी टिड्डियों का

ऐसा सख़्त हम्ला नहीं देखा होगा'।" यह कह कर मूसा पलट कर वहाँ से चला गया।

7 इस पर दरबारियों ने फ़िरऔन से बात की, "हम
कब तक इस मर्द के जाल में फंसे रहें? इस्राईलियों को रब्ब अपने ख़ुदा की इबादत करने के लिए जाने दें। क्या आप को अभी तक मालूम नहीं कि मिस्र बर्बाद हो गया है?"

8 तब मूसा और हारून को फ़िरऔन के पास
बुलाया गया। उस ने उन से कहा, "जाओ, अपने ख़ुदा की इबादत करो। लेकिन यह बताओ कि कौन कौन
साथ जाएगा?" 9 मूसा ने जवाब दिया, "हमारे जवान
और बूढ़े साथ जाएँगे। हम अपने बेटे-बेटियों, भेड़-बकरियों और गाय-बैलों को भी साथ ले कर जाएँगे। हम सब के सब जाएँगे, क्यूँकि हमें रब्ब की ईद मनानी है।"

10 फ़िरऔन ने तन्ज़न कहा, "ठीक है, जाओ और
रब्ब तुम्हारे साथ हो। नहीं, मैं किस तरह तुम सब को बाल-बच्चों समेत जाने दे सकता हूँ? तुम ने कोई बुरा
मन्सूबा बनाया है। 11 नहीं, सिर्फ़ मर्द जा कर रब्ब की
इबादत कर सकते हैं। तुम ने तो यही दरख़्वास्त की थी।" तब मूसा और हारून को फ़िरऔन के सामने से निकाल दिया गया।

12 फिर रब्ब ने मूसा से कहा, "मिस्र पर अपना हाथ
उठा ताकि टिड्डियाँ आ कर मिस्र की सरज़मीन पर फैल जाएँ। जो कुछ भी खेतों में ओलों से बच गया है उसे वह खा जाएँगी।"

13 मूसा ने अपनी लाठी मिस्र पर उठाई तो रब्ब ने
मशरिक़ से आँधी चलाई जो सारा दिन और सारी रात चलती रही और अगली सुब्ह तक मिस्र में टिड्डियाँ
पहुँचाईं। 14 बेशुमार टिड्डियाँ पूरे मुल्क पर हम्ला करके
हर जगह बैठ गईं। इस से पहले या बाद में कभी भी
टिड्डियों का इतना सख़्त हम्ला न हुआ था। 15 उन्हों ने
ज़मीन को यूँ ढाँक लिया कि वह काली नज़र आने लगी। जो कुछ भी ओलों से बच गया था चाहे खेतों के पौदे या दरख़्तों के फल थे उन्हों ने खा लिया। मिस्र में एक भी दरख़्त या पौदा न रहा जिस के पत्ते बच गए हों।

16 तब फ़िरऔन ने मूसा और हारून को जल्दी से
बुलवाया। उस ने कहा, "मैं ने तुम्हारे ख़ुदा का और
तुम्हारा गुनाह किया है। 17 अब एक और मर्तबा मेरा
गुनाह मुआफ़ करो और रब्ब अपने ख़ुदा से दुआ करो ताकि मौत की यह हालत मुझ से दूर हो जाए।"

18 मूसा ने महल से निकल कर रब्ब से दुआ की।
19 जवाब में रब्ब ने हवा का रुख़ बदल दिया। उस ने
मग़रिब से तेज़ आँधी चलाई जिस ने टिड्डियों को उड़ा कर बहर-ए-क़ुल्ज़ुम में डाल दिया। मिस्र में एक भी
टिड्डी न रही। 20 लेकिन रब्ब ने होने दिया कि फ़िरऔन
फिर अड़ गया। उस ने इस्राईलियों को जाने न दिया।

अंधेरा

21 इस के बाद रब्ब ने मूसा से कहा, "अपना
हाथ आस्मान की तरफ़ उठा तो मिस्र पर अंधेरा छा जाएगा। इतना अंधेरा होगा कि बन्दा उसे छू
सकेगा।" 22 मूसा ने अपना हाथ आस्मान की तरफ़
उठाया तो तीन दिन तक मिस्र पर गहरा अंधेरा छाया
रहा। 23 तीन दिन तक लोग न एक दूसरे को देख
सके, न कहीं जा सके। लेकिन जहाँ इस्राईली रहते थे वहाँ रौशनी थी।

24 तब फ़िरऔन ने मूसा को फिर बुलवाया और
कहा, "जाओ, रब्ब की इबादत करो! तुम अपने साथ बाल-बच्चों को भी ले जा सकते हो। सिर्फ़ अपनी भेड़-
बकरियाँ और गाय-बैल पीछे छोड़ देना।" 25 मूसा ने
जवाब दिया, "क्या आप ही हमें क़ुर्बानियों के लिए जानवर देंगे ताकि उन्हें रब्ब अपने ख़ुदा को पेश
करें? 26 यक़ीनन नहीं। इस लिए लाज़िम है कि हम
अपने जानवरों को साथ ले कर जाएँ। एक खुर भी पीछे नहीं छोड़ा जाएगा, क्यूँकि अभी तक हमें मालूम नहीं कि रब्ब की इबादत के लिए किन किन जानवरों की ज़रूरत होगी। यह उस वक़्त ही पता चलेगा जब हम मन्ज़िल-ए-मक़सूद पर पहुँचेंगे। इस लिए ज़रूरी है कि हम सब को अपने साथ ले कर जाएँ।"

27 लेकिन रब्ब की मर्ज़ी के मुताबिक़ फ़िरऔन अड़
गया। उस ने उन्हें जाने न दिया। 28 उस ने मूसा से
कहा, "दफ़ा हो जा। ख़बरदार! फिर कभी अपनी
शक्ल न दिखाना, वर्ना तुझे मौत के हवाले कर दिया
जाएगा।" 29 मूसा ने कहा, "ठीक है, आप की मर्ज़ी।
मैं फिर कभी आप के सामने नहीं आऊँगा।"

आख़िरी सज़ा का एलान

11 1 तब रब्ब ने मूसा से कहा, "अब मैं
फ़िरऔन और मिस्र पर आख़िरी आफ़त
लाने को हों। इस के बाद वह तुम्हें जाने देगा बल्कि
तुम्हें ज़बरदस्ती निकाल देगा। 2 इस्राईलियों को बता
देना कि हर मर्द अपने पड़ोसी और हर औरत अपनी
पड़ोसन से सोने-चाँदी की चीज़ें माँग ले।" 3 (रब्ब
ने मिस्रियों के दिल इस्राईलियों की तरफ़ माइल कर
दिए थे। वह फ़िरऔन के उह्देदारों समेत ख़ासकर
मूसा की बड़ी इज़्ज़त करते थे)।

4 मूसा ने कहा, "रब्ब फ़रमाता है, 'आज आधी रात
के वक़्त मैं मिस्र में से गुज़रूँगा। 5 तब बादशाह के
पहलौठे से ले कर चक्की पीसने वाली नौकरानी के
पहलौठे तक मिस्रियों का हर पहलौठा मर जाएगा।
चौपाइयों के पहलौठे भी मर जाएँगे। 6 मिस्र की
सरज़मीन पर ऐसा रोना पीटना होगा कि न माज़ी में
कभी हुआ, न मुस्तक़बिल में कभी होगा। 7 लेकिन
इस्राईली और उन के जानवर बचे रहेंगे। कुत्ता भी
उन पर नहीं भौंकेगा। इस तरह तुम जान लोगे कि
रब्ब इस्राईलियों की निस्बत मिस्रियों से फ़र्क़ सुलूक
करता है'।" 8 मूसा ने यह कुछ फ़िरऔन को बताया
फिर कहा, "उस वक़्त आप के तमाम उह्देदार
आ कर मेरे सामने झुक जाएँगे और मिन्नत करेंगे,
'अपने पैरोकारों के साथ चले जाएँ।' तब मैं चला
ही जाऊँगा।" यह कह कर मूसा फ़िरऔन के पास से
चला गया। वह बड़े ग़ुस्से में था।

9 रब्ब ने मूसा से कहा था, "फ़िरऔन तुम्हारी नहीं
सुनेगा। क्यूँकि लाज़िम है कि मैं मिस्र में अपनी क़ुद्रत
का मज़ीद इज़्हार करूँ।" 10 गो मूसा और हारून ने
फ़िरऔन के सामने यह तमाम मोजिज़े दिखाए, लेकिन
रब्ब ने फ़िरऔन को ज़िद्दी बनाए रखा, इस लिए उस
ने इस्राईलियों को मुल्क छोड़ने न दिया।

फ़सह की ईद

12 1 फिर रब्ब ने मिस्र में मूसा और हारून से
कहा, 2 "अब से यह महीना तुम्हारे लिए
साल का पहला महीना हो।" 3 इस्राईल की पूरी
जमाअत को बताना कि इस महीने के दसवें दिन
हर ख़ान्दान का सरपरस्त अपने घराने के लिए लेला
यानी भेड़ या बक्री का बच्चा हासिल करे। 4 अगर
घराने के अफ़राद पूरा जानवर खाने के लिए कम हों
तो वह अपने सब से क़रीबी पड़ोसी के साथ मिल
कर लेला हासिल करें। इतने लोग उस में से खाएँ कि
सब के लिए काफ़ी हो और पूरा जानवर खाया जाए।
5 इस के लिए एक साल का नर बच्चा चुन लेना जिस
में नुक़्स न हो। वह भेड़ या बक्री का बच्चा हो सकता
है।

6 महीने के 14वें दिन तक उस की देख-भाल करो।
उस दिन तमाम इस्राईली सूरज के ग़ुरूब होते वक़्त
अपने लेले ज़बह करें। 7 हर ख़ान्दान अपने जानवर
का कुछ ख़ून जमा करके उसे उस घर के दरवाज़े
की चौखट पर लगाए जहाँ लेला खाया जाएगा।
यह ख़ून चौखट के ऊपर वाले हिस्से और दाएँ
बाएँ के बाज़ूओं पर लगाया जाए। 8 लाज़िम है कि
लोग जानवर को भून कर उसी रात खाएँ। साथ
ही वह कड़वा साग-पात और बेख़मीरी रोटियाँ भी
खाएँ। 9 लेले का गोश्त कच्चा न खाना, न उसे पानी
में उबालना बल्कि पूरे जानवर को सर, पैरों और
अन्दरूनी हिस्सों समेत आग पर भूनना। 10 लाज़िम
है कि पूरा गोश्त उसी रात खाया जाए। अगर कुछ
सुब्ह तक बच जाए तो उसे जलाना है। 11 खाना खाते
वक़्त ऐसा लिबास पहनना जैसे तुम सफ़र पर जा रहे
हो। अपने जूते पहने रखना और हाथ में सफ़र के लिए
लाठी लिए हुए तुम उसे जल्दी जल्दी खाना। रब्ब के
फ़सह की ईद यूँ मनाना।

12 मैं आज रात मिस्र में से गुज़रूँगा और हर पहलौठे को जान से मार दूँगा, ख़्वाह इन्सान का हो या हैवान का। यूँ मैं जो रब्ब हूँ मिस्र के तमाम देवताओं की अदालत करूँगा। 13 लेकिन तुम्हारे घरों पर लगा हुआ ख़ून तुम्हारा ख़ास निशान होगा। जिस जिस घर के दरवाज़े पर मैं वह ख़ून देखूँगा उसे छोड़ता जाऊँगा। जब मैं मिस्र पर हम्ला करूँगा तो मुहलक वबा तुम तक नहीं पहुँचेगी। 14 आज की रात को हमेशा याद रखना। इसे नसल-दर-नसल और हर साल रब्ब की ख़ास ईद के तौर पर मनाना।

बेख़मीरी रोटी की ईद

15 सात दिन तक बेख़मीरी रोटी खाना है। पहले दिन अपने घरों से तमाम ख़मीर निकाल देना। अगर कोई इन सात दिनों के दौरान ख़मीर खाए तो उसे क़ौम में से मिटाया जाए। 16 इस ईद के पहले और आख़िरी दिन मुक़द्दस इजतिमा मुनअक़िद करना। इन तमाम दिनों के दौरान काम न करना। सिर्फ़ एक काम की इजाज़त है और वह है अपना खाना तय्यार करना। 17 बेख़मीरी रोटी की ईद मनाना लाज़िम है, क्यूँकि उस दिन मैं तुम्हारे मुतअद्दिद ख़ान्दानों को मिस्र से निकाल लाया। इस लिए यह दिन नसल-दर-नसल हर साल याद रखना। 18 पहले महीने के 14वें दिन की शाम से ले कर 21वें दिन की शाम तक सिर्फ़ बेख़मीरी रोटी खाना। 19 सात दिन तक तुम्हारे घरों में ख़मीर न पाया जाए। जो भी इस दौरान ख़मीर खाए उसे इस्राईल की जमाअत में से मिटाया जाए, ख़्वाह वह इस्राईली शहरी हो या अजनबी। 20 ग़रज़, इस ईद के दौरान ख़मीर न खाना। जहाँ भी तुम रहते हो वहाँ बेख़मीरी रोटी ही खाना है।

पहलौठों की हलाकत

21 फिर मूसा ने तमाम इस्राईली बुज़ुर्गों को बुला कर उन से कहा, "जाओ, अपने ख़ान्दानों के लिए भेड़ या बक्री के बच्चे चुन कर उन्हें फ़सह की ईद के लिए ज़बह करो। 22 ज़ूफ़े का गुच्छा ले कर उसे ख़ून से भरे हुए बासन में डुबो देना। फिर उसे ले कर ख़ून को चौखट के ऊपर वाले हिस्से और दाएँ बाएँ के बाज़ूओं पर लगा देना। सुब्ह तक कोई अपने घर से न निकले। 23 जब रब्ब मिस्रियों को मार डालने के लिए मुल्क में से गुज़रेगा तो वह चौखट के ऊपर वाले हिस्से और दाएँ बाएँ के बाज़ूओं पर लगा हुआ ख़ून देख कर उन घरों को छोड़ देगा। वह हलाक करने वाले फ़रिश्ते को इजाज़त नहीं देगा कि वह तुम्हारे घरों में जा कर तुम्हें हलाक करे।

24 तुम अपनी औलाद समेत हमेशा इन हिदायात पर अमल करना। 25 यह रस्म उस वक़्त भी अदा करना जब तुम उस मुल्क में पहुँचोगे जो रब्ब तुम्हें देगा। 26 और जब तुम्हारे बच्चे तुम से पूछें कि हम यह ईद क्यूँ मनाते हैं 27 तो उन से कहो, 'यह फ़सह की क़ुर्बानी है जो हम रब्ब को पेश करते हैं। क्यूँकि जब रब्ब मिस्रियों को हलाक कर रहा था तो उस ने हमारे घरों को छोड़ दिया था'।"

यह सुन कर इस्राईलियों ने अल्लाह को सिज्दा किया। 28 फिर उन्हों ने सब कुछ वैसा ही किया जैसा रब्ब ने मूसा और हारून को बताया था।

29 आधी रात को रब्ब ने बादशाह के पहलौठे से ले कर जेल के क़ैदी के पहलौठे तक मिस्रियों के तमाम पहलौठों को जान से मार दिया। चौपाइयों के पहलौठे भी मर गए। 30 उस रात मिस्र के हर घर में कोई न कोई मर गया। फ़िरऔन, उस के उह्देदार और मिस्र के तमाम लोग जाग उठे और ज़ोर ज़ोर से रोने और चीख़ने लगे।

इस्राईलियों की हिज्रत

31 अभी रात थी कि फ़िरऔन ने मूसा और हारून को बुला कर कहा, "अब तुम और बाक़ी इस्राईली मेरी क़ौम में से निकल जाओ। अपनी दरख़्वास्त के मुताबिक़ रब्ब की इबादत करो। 32 जिस तरह तुम चाहते हो अपनी भेड़-बक्रियों को भी अपने साथ ले जाओ। और मुझे भी बर्कत देना।" 33 बाक़ी मिस्रियों

ने भी इस्राईलियों पर ज़ोर दे कर कहा, "जल्दी जल्दी मुल्क से निकल जाओ, वर्ना हम सब मर जाएँगे।"

[34] इस्राईलियों के गूँधे हुए आटे में ख़मीर नहीं था। उन्हों ने उसे गूँधने के बर्तनों में रख कर अपने कपड़ों में लपेट लिया और सफ़र करते वक़्त अपने कंधों पर रख लिया। [35] इस्राईली मूसा की हिदायत पर अमल करके अपने मिस्री पड़ोसियों के पास गए और उन से कपड़े और सोने-चाँदी की चीज़ें माँगीं। [36] रब्ब ने मिस्रियों के दिलों को इस्राईलियों की तरफ़ माइल कर दिया था, इस लिए उन्हों ने उन की हर दरख़्वास्त पूरी की। यूँ इस्राईलियों ने मिस्रियों को लूट लिया।

[37] इस्राईली रामसीस से रवाना हो कर सुक्कात पहुँच गए। औरतों और बच्चों को छोड़ कर उन के 6 लाख मर्द थे। [38] वह अपने भेड़-बक्रियों और गाय-बैलों के बड़े बड़े रेवड़ भी साथ ले गए। बहुत से ऐसे लोग भी उन के साथ निकले जो इस्राईली नहीं थे। [39] रास्ते में उन्हों ने उस बेख़मीरी आटे से रोटियाँ बनाईं जो वह साथ ले कर निकले थे। आटे में इस लिए ख़मीर नहीं था कि उन्हें इतनी जल्दी से मिस्र से निकाल दिया गया था कि खाना तय्यार करने का वक़्त ही न मिला था।

[40] इस्राईली 430 साल तक मिस्र में रहे थे। [41] 430 साल के ऐन बाद, उसी दिन रब्ब के यह तमाम ख़ान्दान मिस्र से निकले। [42] उस ख़ास रात रब्ब ने ख़ुद पहरा दिया ताकि इस्राईली मिस्र से निकल सकें। इस लिए तमाम इस्राईलियों के लिए लाज़िम है कि वह नसल-दर-नसल इस रात रब्ब की ताज़ीम में जागते रहें, वह भी और उन के बाद की औलाद भी।

फ़सह की ईद की हिदायात

[43] रब्ब ने मूसा और हारून से कहा, "फ़सह की ईद के यह उसूल हैं :

किसी भी परदेसी को फ़सह की ईद का खाना खाने की इजाज़त नहीं है। [44] अगर तुम ने किसी ग़ुलाम को ख़रीद कर उस का ख़तना किया है तो वह फ़सह का खाना खा सकता है। [45] लेकिन ग़ैरशहरी या मज़्दूर को फ़सह का खाना खाने की इजाज़त नहीं है। [46] यह खाना एक ही घर के अन्दर खाना है। न गोश्त घर से बाहर ले जाना, न लेले की किसी हड्डी को तोड़ना। [47] लाज़िम है कि इस्राईल की पूरी जमाअत यह ईद मनाए। [48] अगर कोई परदेसी तुम्हारे साथ रहता है जो फ़सह की ईद में शिर्कत करना चाहे तो लाज़िम है कि पहले उस के घराने के हर मर्द का ख़तना किया जाए। तब वह इस्राईली की तरह खाने में शरीक हो सकता है। लेकिन जिस का ख़तना न हुआ उसे फ़सह का खाना खाने की इजाज़त नहीं है। [49] यही उसूल हर एक पर लागू होगा, ख़्वाह वह इस्राईली हो या परदेसी।"

[50] तमाम इस्राईलियों ने वैसा ही किया जैसा रब्ब ने मूसा और हारून से कहा था। [51] उसी दिन रब्ब तमाम इस्राईलियों को ख़ान्दानों की तर्तीब के मुताबिक़ मिस्र से निकाल लाया।

यह ईद नजात की याद दिलाती

13 [1] रब्ब ने मूसा से कहा, [2] "इस्राईलियों के हर पहलौठे को मेरे लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस करना है। हर पहला नर बच्चा मेरा ही है, ख़्वाह इन्सान का हो या हैवान का।" [3] फिर मूसा ने लोगों से कहा, "इस दिन को याद रखो जब तुम रब्ब की अज़ीम क़ुद्रत के बाइस मिस्र की ग़ुलामी से निकले। इस दिन कोई चीज़ न खाना जिस में ख़मीर हो। [4] आज ही अबीब के महीने[k] में तुम मिस्र से रवाना हो रहे हो। [5] रब्ब ने तुम्हारे बापदादा से क़सम खा कर वादा किया है कि वह तुम को कनआनी, हित्ती, अमोरी, हिव्वी और यबूसी क़ौमों का मुल्क देगा, एक ऐसा मुल्क जिस में दूध और शहद की कस्रत है। जब रब्ब तुम्हें उस मुल्क में पहुँचा देगा तो लाज़िम है कि तुम इसी महीने में यह रस्म मनाओ। [6] सात दिन

[k] मार्च ता अप्रैल।

बेख़मीरी रोटी खाओ। सातवें दिन रब्ब की ताज़ीम
में ईद मनाओ। 7 सात दिन ख़मीरी रोटी न खाना।
कहीं भी ख़मीर न पाया जाए। पूरे मुल्क में ख़मीर का
नाम-ओ-निशान तक न हो।

8 उस दिन अपने बेटे से यह कहो, 'मैं यह ईद उस
काम की ख़ुशी में मनाता हूँ जो रब्ब ने मेरे लिए किया
जब मैं मिस्र से निकला।' 9 यह ईद तुम्हारे हाथ या
पेशानी पर निशान की मानिन्द हो जो तुम्हें याद दिलाए
कि रब्ब की शरीअत को तुम्हारे होंटों पर रहना है।
क्यूँकि रब्ब तुम्हें अपनी अज़ीम क़ुद्रत से मिस्र से
निकाल लाया। 10 इस दिन की याद हर साल ठीक
वक़्त पर मनाना।

पहलौठों की मख़्सूसियत

11 रब्ब तुम्हें कनआनियों के उस मुल्क में ले जाएगा
जिस का वादा उस ने क़सम खा कर तुम और तुम्हारे
बापदादा से किया है। 12 लाज़िम है कि वहाँ पहुँच
कर तुम अपने तमाम पहलौठों को रब्ब के लिए
मख़्सूस करो। तुम्हारे मवेशियों के तमाम पहलौठे भी
रब्ब की मिल्कियत हैं। 13 अगर तुम अपना पहलौठा
गधा ख़ुद रखना चाहो तो रब्ब को उस के बदले
भेड़ या बक्री का बच्चा पेश करो। लेकिन अगर तुम
उसे रखना नहीं चाहते तो उस की गर्दन तोड़ डालो।
लेकिन इन्सान के पहलौठों के लिए हर सूरत में
इवज़ी देना है।

14 आने वाले दिनों में जब तुम्हारा बेटा पूछे कि इस
का क्या मतलब है तो उसे जवाब देना, 'रब्ब अपनी
अज़ीम क़ुद्रत से हमें मिस्र की ग़ुलामी से निकाल
लाया। 15 जब फ़िरऔन ने अकड़ कर हमें जाने न
दिया तो रब्ब ने मिस्र के तमाम इन्सानों और हैवानों
के पहलौठों को मार डाला। इस वजह से मैं अपने
जानवरों का हर पहला बच्चा रब्ब को क़ुर्बान करता
और अपने हर पहलौठे के लिए इवज़ी देता हूँ'। 16 यह
दस्तूर तुम्हारे हाथ और पेशानी पर निशान की मानिन्द
हो जो तुम्हें याद दिलाए कि रब्ब हमें अपनी क़ुद्रत
से मिस्र से निकाल लाया।"

मिस्र से निकलने का रास्ता

17 जब फ़िरऔन ने इस्राईली क़ौम को जाने दिया तो
अल्लाह उन्हें फ़िलिस्तियों के इलाक़े में से गुज़रने वाले
रास्ते से ले कर न गया, अगरचि उस पर चलते हुए
वह जल्द ही मुल्क-ए-कनआन पहुँच जाते। बल्कि
रब्ब ने कहा, "अगर उस रास्ते पर चलेंगे तो उन्हें
दूसरों से लड़ना पड़ेगा। ऐसा न हो कि वह इस वजह
से अपना इरादा बदल कर मिस्र लौट जाएँ।" 18 इस
लिए अल्लाह उन्हें दूसरे रास्ते से ले कर गया, और
वह रेगिस्तान के रास्ते से बहर-ए-क़ुल्ज़ुम की तरफ़
बढ़े। मिस्र से निकलते वक़्त मर्द मुसल्लह थे। 19 मूसा
यूसुफ़ का ताबूत भी अपने साथ ले गया, क्यूँकि
यूसुफ़ ने इस्राईलियों को क़सम दिला कर कहा था,
"अल्लाह यक़ीनन तुम्हारी देख-भाल करके वहाँ ले
जाएगा। उस वक़्त मेरी हड्डियों को भी उठा कर साथ
ले जाना।"

20 इस्राईलियों ने सुक्कात को छोड़ कर एताम में
अपने ख़ैमे लगाए। एताम रेगिस्तान के किनारे पर
था। 21 रब्ब उन के आगे आगे चलता गया, दिन के
वक़्त बादल के सतून में ताकि उन्हें रास्ते का पता
लगे और रात के वक़्त आग के सतून में ताकि उन्हें
रौशनी मिले। यूँ वह दिन और रात सफ़र कर सकते
थे। 22 दिन के वक़्त बादल का सतून और रात के
वक़्त आग का सतून उन के सामने रहा। वह कभी
भी अपनी जगह से न हटा।

इस्राईल समुन्दर में से गुज़रता है

14 1 तब रब्ब ने मूसा से कहा, 2 "इस्राईलियों
को कह देना कि वह पीछे मुड़ कर मिज्दाल
और समुन्दर के बीच यानी फ़ी-हख़ीरोत के नज़्दीक
रुक जाएँ। वह बाल-सफ़ोन के मुक़ाबिल साहिल पर
अपने ख़ैमे लगाएँ। 3 यह देख कर फ़िरऔन समझेगा
कि इस्राईली रास्ता भूल कर आवारा फिर रहे हैं
और कि रेगिस्तान ने चारों तरफ़ उन्हें घेर रखा
है। 4 फिर मैं फ़िरऔन को दुबारा अड़ जाने दूँगा,

और वह इस्राईलियों का पीछा करेगा। लेकिन मैं
फ़िरऔन और उस की पूरी फ़ौज पर अपना जलाल
ज़ाहिर करूँगा। मिस्री जान लेंगे कि मैं ही रब्ब हूँ।”
इस्राईलियों ने ऐसा ही किया।

5 जब मिस्र के बादशाह को इत्तिला दी गई कि
इस्राईली हिज्रत कर गए हैं तो उस ने और उस के
दरबारियों ने अपना ख़याल बदल कर कहा, “हम ने
क्या किया है? हम ने उन्हें जाने दिया है, और अब
हम उन की ख़िदमत से महरूम हो गए हैं।” 6 चुनाँचे
बादशाह ने अपना जंगी रथ तय्यार करवाया और
अपनी फ़ौज को ले कर निकला। 7 वह 600 बेहतरीन
क़िस्म के रथ और मिस्र के बाक़ी तमाम रथों को साथ
ले गया। तमाम रथों पर अफ़सरान मुक़र्रर थे। 8 रब्ब
ने मिस्र के बादशाह फ़िरऔन को दुबारा अड़ जाने
दिया था, इस लिए जब इस्राईली बड़े इख़तियार के
साथ निकल रहे थे तो वह उन का ताक़्क़ुब करने
लगा। 9 इस्राईलियों का पीछा करते करते फ़िरऔन
के तमाम घोड़े, रथ, सवार और फ़ौजी उन के क़रीब
पहुँचे। इस्राईली बहर-ए-क़ुल्ज़ुम के साहिल पर बाल-
सफ़ोन के मुक़ाबिल फ़ी-हख़ीरोत के नज़्दीक ख़ैमे
लगा चुके थे।

10 जब इस्राईलियों ने फ़िरऔन और उस की फ़ौज
को अपनी तरफ़ बढ़ते देखा तो वह सख़्त घबरा गए
और मदद के लिए रब्ब के सामने चीख़ने-चिल्लाने
लगे। 11 उन्हों ने मूसा से कहा, “क्या मिस्र में क़ब्रों
की कमी थी कि आप हमें रेगिस्तान में ले आए हैं?
हमें मिस्र से निकाल कर आप ने हमारे साथ क्या
किया है? 12 क्या हम ने मिस्र में आप से दरख़्वास्त
नहीं की थी कि मेहरबानी करके हमें छोड़ दें, हमें
मिस्रियों की ख़िदमत करने दें? यहाँ आ कर रेगिस्तान
में मर जाने की निस्बत बेहतर होता कि हम मिस्रियों
के ग़ुलाम रहते।”

13 लेकिन मूसा ने जवाब दिया, “मत घबराओ।
आराम से खड़े रहो और देखो कि रब्ब तुम्हें आज
किस तरह बचाएगा। आज के बाद तुम इन मिस्रियों
को फिर कभी नहीं देखोगे। 14 रब्ब तुम्हारे लिए
लड़ेगा। तुम्हें बस, चुप रहना है।”

15 फिर रब्ब ने मूसा से कहा, “तू मेरे सामने क्यूँ
चीख़ रहा है? इस्राईलियों को आगे बढ़ने का हुक्म
दे। 16 अपनी लाठी को पकड़ कर उसे समुन्दर के
ऊपर उठा तो वह दो हिस्सों में बट जाएगा। इस्राईली
ख़ुश्क ज़मीन पर समुन्दर में से गुज़रेंगे। 17 मैं मिस्रियों
को अड़े रहने दूँगा ताकि वह इस्राईलियों का पीछा
करें। फिर मैं फ़िरऔन, उस की सारी फ़ौज, उस के
रथों और उस के सवारों पर अपना जलाल ज़ाहिर
करूँगा। 18 जब मैं फ़िरऔन, उस के रथों और उस
के सवारों पर अपना जलाल ज़ाहिर करूँगा तो मिस्री
जान लेंगे कि मैं ही रब्ब हूँ।”

19 अल्लाह का फ़रिश्ता इस्राईली लश्कर के आगे
आगे चल रहा था। अब वह वहाँ से हट कर उन के
पीछे खड़ा हो गया। बादल का सतून भी लोगों के
आगे से हट कर उन के पीछे जा खड़ा हुआ। 20 इस
तरह बादल मिस्रियों और इस्राईलियों के लश्करों के
दर्मियान आ गया। पूरी रात मिस्रियों की तरफ़ अंधेरा
ही अंधेरा था जबकि इस्राईलियों की तरफ़ रौशनी
थी। इस लिए मिस्री पूरी रात के दौरान इस्राईलियों
के क़रीब न आ सके।

21 मूसा ने अपना हाथ समुन्दर के ऊपर उठाया तो
रब्ब ने मशरिक़ से तेज़ आँधी चलाई। आँधी तमाम
रात चलती रही। उस ने समुन्दर को पीछे हटा कर
उस की तह ख़ुश्क कर दी। समुन्दर दो हिस्सों में बट
गया 22 तो इस्राईली समुन्दर में से ख़ुश्क ज़मीन पर
चलते हुए गुज़र गए। उन के दाईं और बाईं तरफ़ पानी
दीवार की तरह खड़ा रहा।

23 जब मिस्रियों को पता चला तो फ़िरऔन के
तमाम घोड़े, रथ और घुड़सवार भी उन के पीछे पीछे
समुन्दर में चले गए। 24 सुब्ह-सवेरे ही रब्ब ने बादल
और आग के सतून से मिस्र की फ़ौज पर निगाह की
और उस में अब्तरी पैदा कर दी। 25 उन के रथों के
पहिए निकल गए तो उन पर क़ाबू पाना मुश्किल हो
गया। मिस्रियों ने कहा, “आओ, हम इस्राईलियों से

भाग जाएँ, क्यूँकि रब्ब उन के साथ है। वही मिस्र का मुक़ाबला कर रहा है।”

26 तब रब्ब ने मूसा से कहा, “अपना हाथ समुन्दर के ऊपर उठा। फिर पानी वापस आ कर मिस्रियों, उन के रथों और घुड़सवारों को डुबो देगा।” 27 मूसा ने अपना हाथ समुन्दर के ऊपर उठाया तो दिन निकलते वक़्त पानी मामूल के मुताबिक़ बहने लगा, और जिस तरफ़ मिस्री भाग रहे थे वहाँ पानी ही पानी था। यूँ रब्ब ने उन्हें समुन्दर में बहा कर ग़र्क़ कर दिया। 28 पानी वापस आ गया। उस ने रथों और घुड़सवारों को ढाँक लिया। फ़िरऔन की पूरी फ़ौज जो इस्राईलियों का ताक़्क़ुब कर रही थी डूब कर तबाह हो गई। उन में से एक भी न बचा। 29 लेकिन इस्राईली ख़ुश्क ज़मीन पर समुन्दर में से गुज़रे। उन के दाईं और बाईं तरफ़ पानी दीवार की तरह खड़ा रहा।

30 उस दिन रब्ब ने इस्राईलियों को मिस्रियों से बचाया। मिस्रियों की लाशें उन्हें साहिल पर नज़र आईं। 31 जब इस्राईलियों ने रब्ब की यह अज़ीम क़ुद्रत देखी जो उस ने मिस्रियों पर ज़ाहिर की थी तो रब्ब का ख़ौफ़ उन पर छा गया। वह उस पर और उस के ख़ादिम मूसा पर एतिमाद करने लगे।

मूसा का गीत

15 1 तब मूसा और इस्राईलियों ने रब्ब के लिए यह गीत गाया,

“मैं रब्ब की तम्जीद में गीत गाऊँगा, क्यूँकि वह निहायत अज़ीम है। घोड़े और उस के सवार को उस ने समुन्दर में पटख़ दिया है।

2 रब्ब मेरी क़ुव्वत और मेरा गीत है, वह मेरी नजात बन गया है। वही मेरा ख़ुदा है, और मैं उस की तारीफ़ करूँगा। वही मेरे बाप का ख़ुदा है, और मैं उस की ताज़ीम करूँगा।

3 रब्ब सूर्मा है, रब्ब उस का नाम है।

4 फ़िरऔन के रथों और फ़ौज को उस ने समुन्दर में पटख़ दिया तो बादशाह के बेहतरीन अफ़सरान बहर-ए-क़ुल्ज़ुम में डूब गए।

5 गहरे पानी ने उन्हें ढाँक लिया, और वह पत्थर की तरह समुन्दर की तह तक उतर गए।

6 ऐ रब्ब, तेरे दहने हाथ का जलाल बड़ी क़ुद्रत से ज़ाहिर होता है। ऐ रब्ब, तेरा दहना हाथ दुश्मन को चिकना-चूर कर देता है।

7 जो तेरे ख़िलाफ़ उठ खड़े होते हैं उन्हें तू अपनी अज़्मत का इज़्हार करके ज़मीन पर पटख़ देता है। तेरा ग़ज़ब उन पर आन पड़ता है तो वह आग में भूसे की तरह जल जाते हैं।

8 तू ने ग़ुस्से में आ कर फूँक मारी तो पानी ढेर की सूरत में जमा हो गया। बहता पानी ठोस दीवार बन गया, समुन्दर गहराई तक जम गया।

9 दुश्मन ने डींग मार कर कहा, ‘मैं उन का पीछा करके उन्हें पकड़ लूँगा, मैं उन का लूटा हुआ माल तक़्सीम करूँगा। मेरी लालची जान उन से सेर हो जाएगी, मैं अपनी तल्वार खैंच कर उन्हें हलाक करूँगा।’

10 लेकिन तू ने उन पर फूँक मारी तो समुन्दर ने उन्हें ढाँक लिया, और वह सीसे की तरह ज़ोरदार मौजों में डूब गए।

11 ऐ रब्ब, कौन सा माबूद तेरी मानिन्द है? कौन तेरी तरह जलाली और क़ुद्दूस है? कौन तेरी तरह हैरतअंगेज़ काम करता और अज़ीम मोजिज़े दिखाता है? कोई भी नहीं।

12 तू ने अपना दहना हाथ उठाया तो ज़मीन हमारे दुश्मनों को निगल गई।

13 अपनी शफ़क़त से तू ने इवज़ाना दे कर अपनी क़ौम को छुटकारा दिया और उस की राहनुमाई की है, अपनी क़ुद्रत से तू ने उसे अपनी मुक़द्दस सुकूनतगाह तक पहुँचाया है।

14 यह सुन कर दीगर क़ौमें काँप उठें, फ़िलिस्ती डर
के मारे पेच-ओ-ताब खाने लगे।
15 अदोम के रईस सहम गए, मोआब के राहनुमा
पर कपकपी तारी हो गई, और कनआन के तमाम
बाशिन्दे हिम्मत हार गए।
16 दहशत और ख़ौफ़ उन पर छा गया। तेरी अज़ीम
क़ुद्रत के बाइस वह पत्थर की तरह जम गए। ऐ रब्ब,
वह न हिले जब तक तेरी क़ौम गुज़र न गई। वह
बेहिस्स-ओ-हर्कत रहे जब तक तेरी ख़रीदी हुई क़ौम
गुज़र न गई।
17 ऐ रब्ब, तू अपने लोगों को ले कर पौदों की तरह
अपने मौरूसी पहाड़ पर लगाएगा, उस जगह पर जो
तू ने अपनी सुकूनत के लिए चुन ली है, जहाँ तू ने
अपने हाथों से अपना मक़्दिस तय्यार किया है।
18 रब्ब अबद तक बादशाह है!”

19 जब फ़िरऔन के घोड़े, रथ और घुड़सवार
समुन्दर में चले गए तो रब्ब ने उन्हें समुन्दर के पानी
से ढाँक लिया। लेकिन इस्राईली ख़ुश्क ज़मीन पर
समुन्दर में से गुज़र गए। 20 तब हारून की बहन
मरियम जो नबिया थी ने दफ़ लिया, और बाक़ी तमाम
औरतें भी दफ़ ले कर उस के पीछे हो लीं। सब
गाने और नाचने लगीं। मरियम ने यह गा कर उन
की राहनुमाई की,
21 “रब्ब की तम्जीद में गीत गाओ, क्यूँकि वह
निहायत अज़ीम है। घोड़े और उस के सवार को उस
ने समुन्दर में पटख़ दिया है।”

मारा और एलीम के चश्मे

22 मूसा के कहने पर इस्राईली बहर-ए-क़ुल्ज़ुम से
रवाना हो कर दश्त-ए-शूर में चले गए। वहाँ वह
तीन दिन तक सफ़र करते रहे। इस दौरान उन्हें
पानी न मिला। 23 आख़िरकार वह मारा पहुँचे जहाँ
पानी दस्तयाब था। लेकिन वह कड़वा था, इस लिए
मक़ाम का नाम मारा यानी कड़वाहट पड़ गया।
24 यह देख कर लोग मूसा के ख़िलाफ़ बुड़बुड़ा कर
कहने लगे, “हम क्या पिएँ?” 25 मूसा ने मदद के लिए
रब्ब से इल्तिजा की तो उस ने उसे लकड़ी का एक
टुकड़ा दिखाया। जब मूसा ने यह लकड़ी पानी में
डाली तो पानी की कड़वाहट ख़त्म हो गई।
मारा में रब्ब ने अपनी क़ौम को क़वानीन दिए।
वहाँ उस ने उन्हें आज़्माया भी। 26 उस ने कहा, “ग़ौर
से रब्ब अपने ख़ुदा की आवाज़ सुनो! जो कुछ उस
की नज़र में दुरुस्त है वही करो। उस के अह्काम
पर ध्यान दो और उस की तमाम हिदायात पर अमल
करो। फिर मैं तुम पर वह बीमारियाँ नहीं लाऊँगा जो
मिस्रियों पर लाया था, क्यूँकि मैं रब्ब हूँ जो तुझे शिफ़ा
देता हूँ।” 27 फिर इस्राईली रवाना हो कर एलीम पहुँचे
जहाँ 12 चश्मे और खजूर के 70 दरख़्त थे। वहाँ
उन्हों ने पानी के क़रीब अपने ख़ैमे लगाए।

मन्न और बटेरें

16 1 इस के बाद इस्राईल की पूरी जमाअत
एलीम से सफ़र करके सीन के रेगिस्तान में
पहुँची जो एलीम और सीना के दर्मियान है। वह मिस्र
से निकलने के बाद दूसरे महीने के 15वें दिन पहुँचे।
2 रेगिस्तान में तमाम लोग फिर मूसा और हारून के
ख़िलाफ़ बुड़बुड़ाने लगे। 3 उन्हों ने कहा, “काश रब्ब
हमें मिस्र में ही मार डालता! वहाँ हम कम अज़ कम
जी भर कर गोश्त और रोटी तो खा सकते थे। आप
हमें सिर्फ़ इस लिए रेगिस्तान में ले आए हैं कि हम
सब भूकों मर जाएँ।”
4 तब रब्ब ने मूसा से कहा, “मैं आस्मान से तुम्हारे
लिए रोटी बरसाऊँगा। हर रोज़ लोग बाहर जा कर
उसी दिन की ज़रूरत के मुताबिक़ खाना जमा करें।
इस से मैं उन्हें आज़्मा कर देखूँगा कि आया वह मेरी
सुनते हैं कि नहीं। 5 हर रोज़ वह सिर्फ़ उतना खाना
जमा करें जितना कि एक दिन के लिए काफ़ी हो।
लेकिन छटे दिन जब वह खाना तय्यार करेंगे तो वह
अगले दिन के लिए भी काफ़ी होगा।”
6 मूसा और हारून ने इस्राईलियों से कहा, “आज
शाम को तुम जान लोगे कि रब्ब ही तुम्हें मिस्र से

निकाल लाया है। [7]और कल सुब्ह तुम रब्ब का जलाल देखोगे। उस ने तुम्हारी शिकायतें सुन ली हैं, क्यूँकि असल में तुम हमारे ख़िलाफ़ नहीं बल्कि रब्ब के ख़िलाफ़ बुड़बुड़ा रहे हो। [8]फिर भी रब्ब तुम को शाम के वक़्त गोश्त और सुब्ह के वक़्त वाफ़िर रोटी देगा, क्यूँकि उस ने तुम्हारी शिकायतें सुन ली हैं। तुम्हारी शिकायतें हमारे ख़िलाफ़ नहीं बल्कि रब्ब के ख़िलाफ़ हैं।”

[9]मूसा ने हारून से कहा, “इस्राईलियों को बताना, ‘रब्ब के सामने हाज़िर हो जाओ, क्यूँकि उस ने तुम्हारी शिकायतें सुन ली हैं’।” [10]जब हारून पूरी जमाअत के सामने बात करने लगा तो लोगों ने पलट कर रेगिस्तान की तरफ़ देखा। वहाँ रब्ब का जलाल बादल में ज़ाहिर हुआ। [11]रब्ब ने मूसा से कहा, [12]“मैं ने इस्राईलियों की शिकायत सुन ली है। उन्हें बता, ‘आज जब सूरज ग़ुरूब होने लगेगा तो तुम गोश्त खाओगे और कल सुब्ह पेट भर कर रोटी। फिर तुम जान लोगे कि मैं रब्ब तुम्हारा ख़ुदा हूँ’।”

[13]उसी शाम बटेरों के ग़ोल आए जो पूरी ख़ैमागाह पर छा गए। और अगली सुब्ह ख़ैमे के चारों तरफ़ ओस पड़ी थी। [14]जब ओस सूख गई तो बर्फ़ के गालों जैसे पतले दाने पाले की तरह ज़मीन पर पड़े थे। [15]जब इस्राईलियों ने उसे देखा तो एक दूसरे से पूछने लगे, “मन हू?” यानी “यह क्या है?” क्यूँकि वह नहीं जानते थे कि यह क्या चीज़ है। मूसा ने उन को समझाया, “यह वह रोटी है जो रब्ब ने तुम्हें खाने के लिए दी है। [16]रब्ब का हुक्म है कि हर एक उतना जमा करे जितना उस के ख़ान्दान को ज़रूरत हो। अपने ख़ान्दान के हर फ़र्द के लिए दो लिटर जमा करो।”

[17]इस्राईलियों ने ऐसा ही किया। बाज़ ने ज़ियादा और बाज़ ने कम जमा किया। [18]लेकिन जब उसे नापा गया तो हर एक आदमी के लिए काफ़ी था। जिस ने ज़ियादा जमा किया था उस के पास कुछ न बचा। लेकिन जिस ने कम जमा किया था उस के पास भी काफ़ी था। [19]मूसा ने हुक्म दिया, “अगले दिन के लिए खाना न बचाना।”

[20]लेकिन लोगों ने मूसा की बात न मानी बल्कि बाज़ ने खाना बचा लिया। लेकिन अगली सुब्ह मालूम हुआ कि बचे हुए खाने में कीड़े पड़ गए हैं और उस से बहुत बदबू आ रही है। यह सुन कर मूसा उन से नाराज़ हुआ।

[21]हर सुब्ह हर कोई उतना जमा कर लेता जितनी उसे ज़रूरत होती थी। जब धूप तेज़ होती तो जो कुछ ज़मीन पर रह जाता वह पिघल कर ख़त्म हो जाता था।

[22]छटे दिन जब लोग यह ख़ुराक जमा करते तो वह मिक़्दार में दुगनी होती थी यानी हर फ़र्द के लिए चार लिटर। जब जमाअत के बुज़ुर्गों ने मूसा के पास आ कर उसे इत्तिला दी [23]तो उस ने उन से कहा, “रब्ब का फ़रमान है कि कल आराम का दिन है, मुक़द्दस सबत का दिन जो अल्लाह की ताज़ीम में मनाना है। आज तुम जो तनूर में पकाना चाहते हो पका लो और जो उबालना चाहते हो उबाल लो। जो बच जाए उसे कल के लिए महफ़ूज़ रखो।”

[24]लोगों ने मूसा के हुक्म के मुताबिक़ अगले दिन के लिए खाना महफ़ूज़ कर लिया तो न खाने से बदबू आई, न उस में कीड़े पड़े। [25]मूसा ने कहा, “आज यही बचा हुआ खाना खाओ, क्यूँकि आज सबत का दिन है, रब्ब की ताज़ीम में आराम का दिन। आज तुम्हें रेगिस्तान में कुछ नहीं मिलेगा। [26]छः दिन यह ख़ुराक जमा करना है, लेकिन सातवाँ दिन आराम का दिन है। उस दिन ज़मीन पर खाने के लिए कुछ नहीं होगा।”

[27]तो भी कुछ लोग हफ़्ते को खाना जमा करने के लिए निकले, लेकिन उन्हें कुछ न मिला। [28]तब रब्ब ने मूसा से कहा, “तुम लोग कब तक मेरे अह्काम और हिदायात पर अमल करने से इन्कार करोगे? [29]देखो, रब्ब ने तुम्हारे लिए मुक़र्रर किया है कि सबत का दिन आराम का दिन है। इस लिए वह तुम्हें जुमए को दो दिन के लिए ख़ुराक देता है। हफ़्ते को

सब को अपने ख़ैमों में रहना है। कोई भी अपने घर
से बाहर न निकले।”
30 चुनाँचे लोग सबत के दिन आराम करते थे।
31 इस्राईलियों ने इस ख़ुराक का नाम ‘मन्न’ रखा।
उस के दाने धनिए की मानिन्द सफ़ेद थे, और उस
का ज़ाइक़ा शहद से बने केक की मानिन्द था।
32 मूसा ने कहा, “रब्ब फ़रमाता है, ‘दो लिटर मन्न
एक मर्तबान में रख कर उसे आने वाली नसलों के
लिए महफ़ूज़ रखना। फिर वह देख सकेंगे कि मैं तुम्हें
क्या खाना खिलाता रहा जब तुम्हें मिस्र से निकाल
लाया’।” 33 मूसा ने हारून से कहा, “एक मर्तबान
लो और उसे दो लिटर मन्न से भर कर रब्ब के सामने
रखो ताकि वह आने वाली नसलों के लिए महफ़ूज़
रहे।” 34 हारून ने ऐसा ही किया। उस ने मन्न के इस
मर्तबान को अह्द के सन्दूक़ के सामने रखा ताकि
वह महफ़ूज़ रहे।
35 इस्राईलियों को 40 साल तक मन्न मिलता रहा।
वह उस वक़्त तक मन्न खाते रहे जब तक रेगिस्तान से
निकल कर कनआन की सरहद्द पर न पहुँचे। 36 (जो
पैमाना इस्राईली मन्न के लिए इस्तेमाल करते थे वह
दो लिटर का एक बर्तन था जिस का नाम ओमर था।)

चटान से पानी

17 1 फिर इस्राईल की पूरी जमाअत सीन के
रेगिस्तान से निकली। रब्ब जिस तरह हुक्म
देता रहा वह एक जगह से दूसरी जगह सफ़र करते
रहे। रफ़ीदीम में उन्हों ने ख़ैमे लगाए। वहाँ पीने के
लिए पानी न मिला। 2 इस लिए वह मूसा के साथ यह
कह कर झगड़ने लगे, “हमें पीने के लिए पानी दो।”
मूसा ने जवाब दिया, “तुम मुझ से क्यूँ झगड़ रहे हो?
रब्ब को क्यूँ आज़्मा रहे हो?” 3 लेकिन लोग बहुत
पियासे थे। वह मूसा के ख़िलाफ़ बुड़बुड़ाने से बाज़
न आए बल्कि कहा, “आप हमें मिस्र से क्यूँ लाए हैं?
क्या इस लिए कि हम अपने बच्चों और रेवड़ों समेत
पियासे मर जाएँ?”
4 तब मूसा ने रब्ब के हुज़ूर फ़र्याद की, “मैं इन
लोगों के साथ क्या करूँ? हालात ज़रा भी और बिगड़
जाएँ तो वह मुझे संगसार कर देंगे।” 5 रब्ब ने मूसा से
कहा, “कुछ बुज़ुर्ग साथ ले कर लोगों के आगे आगे
चल। वह लाठी भी साथ ले जा जिस से तू ने दरया-ए-
नील को मारा था। 6 मैं होरिब यानी सीना पहाड़ की
एक चटान पर तेरे सामने खड़ा हूँगा। लाठी से चटान
को मारना तो उस से पानी निकलेगा और लोग पी
सकेंगे।”
मूसा ने इस्राईल के बुज़ुर्गों के सामने ऐसा ही किया।
7 उस ने उस जगह का नाम मस्सा और मरीबा यानी
‘आज़्माना और झगड़ना’ रखा, क्यूँकि वहाँ इस्राईली
बुड़बुड़ाए और यह पूछ कर रब्ब को आज़्माया कि
क्या रब्ब हमारे दर्मियान है कि नहीं?

अमालीक़ियों की शिकस्त

8 रफ़ीदीम वह जगह भी थी जहाँ अमालीक़ी
इस्राईलियों से लड़ने आए। 9 मूसा ने यशूअ से कहा,
“लड़ने के क़ाबिल आदमियों को चुन लो और निकल
कर अमालीक़ियों का मुक़ाबला करो। कल मैं अल्लाह
की लाठी पकड़े हुए पहाड़ की चोटी पर खड़ा हो
जाऊँगा।”
10 यशूअ मूसा की हिदायत के मुताबिक़
अमालीक़ियों से लड़ने गया जबकि मूसा, हारून
और हूर पहाड़ की चोटी पर चढ़ गए। 11 और यूँ
हुआ कि जब मूसा के हाथ उठाए हुए थे तो इस्राईली
जीतते रहे, और जब वह नीचे थे तो अमालीक़ी
जीतते रहे। 12 कुछ देर के बाद मूसा के बाज़ू थक
गए। इस लिए हारून और हूर एक चटान ले आए
ताकि वह उस पर बैठ जाए। फिर उन्हों ने उस के
दाईं और बाईं तरफ़ खड़े हो कर उस के बाज़ूओं
को ऊपर उठाए रखा। सूरज के ग़ुरूब होने तक
उन्हों ने यूँ मूसा की मदद की। 13 इस तरह यशूअ ने
अमालीक़ियों से लड़ते लड़ते उन्हें शिकस्त दी।
14 तब रब्ब ने मूसा से कहा, “यह वाक़िआ
यादगारी के लिए किताब में लिख ले। लाज़िम है कि

यह सब कुछ यशूअ की याद में रहे, क्यूँकि मैं दुनिया से अमालीक़ियों का नाम-ओ-निशान मिटा दूँगा।” [15]उस वक़्त मूसा ने क़ुर्बानगाह बना कर उस का नाम ‘रब्ब मेरा झंडा है’ रखा। [16]उस ने कहा, “रब्ब के तख़्त के ख़िलाफ़ हाथ उठाया गया है, इस लिए रब्ब की अमालीक़ियों से हमेशा तक जंग रहेगी।”

यित्रो से मुलाक़ात

18 [1]मूसा का सुसर यित्रो अब तक मिदियान में इमाम था। जब उस ने सब कुछ सुना जो अल्लाह ने मूसा और अपनी क़ौम के लिए किया है, कि वह उन्हें मिस्र से निकाल लाया है [2]तो वह मूसा के पास आया। वह उस की बीवी सफ़्फ़ूरा को अपने साथ लाया, क्यूँकि मूसा ने उसे अपने बेटों समेत मैके भेज दिया था। [3]यित्रो मूसा के दोनों बेटों को भी साथ लाया। पहले बेटे का नाम जैर्सोम यानी ‘अजनबी मुल्क में परदेसी’ था, क्यूँकि जब वह पैदा हुआ तो मूसा ने कहा था, “मैं अजनबी मुल्क में परदेसी हूँ।” [4]दूसरे बेटे का नाम इलीअज़र यानी ‘मेरा ख़ुदा मददगार है’ था, क्यूँकि जब वह पैदा हुआ तो मूसा ने कहा था, “मेरे बाप के ख़ुदा ने मेरी मदद करके मुझे फ़िरऔन की तल्वार से बचाया है।”

[5]यित्रो मूसा की बीवी और बेटे साथ ले कर उस वक़्त मूसा के पास पहुँचा जब उस ने रेगिस्तान में अल्लाह के पहाड़ यानी सीना के क़रीब ख़ैमा लगाया हुआ था। [6]उस ने मूसा को पैग़ाम भेजा था, “मैं, आप का सुसर यित्रो आप की बीवी और दो बेटों को साथ ले कर आप के पास आ रहा हूँ।”

[7]मूसा अपने सुसर के इस्तिक़्बाल के लिए बाहर निकला, उस के सामने झुका और उसे बोसा दिया। दोनों ने एक दूसरे का हाल पूछा, फिर ख़ैमे में चले गए। [8]मूसा ने यित्रो को तफ़्सील से बताया कि रब्ब ने इस्राईलियों की ख़ातिर फ़िरऔन और मिस्रियों के साथ क्या कुछ किया है। उस ने रास्ते में पेश आई तमाम मुश्किलात का ज़िक्र भी किया कि रब्ब ने हमें किस तरह उन से बचाया है।

[9]यित्रो उन सारे अच्छे कामों के बारे में सुन कर ख़ुश हुआ जो रब्ब ने इस्राईलियों के लिए किए थे जब उस ने उन्हें मिस्रियों के हाथ से बचाया था। [10]उस ने कहा, “रब्ब की तम्जीद हो जिस ने आप को मिस्रियों और फ़िरऔन के क़ब्ज़े से नजात दिलाई है। उसी ने क़ौम को ग़ुलामी से छुड़ाया है! [11]अब मैं ने जान लिया है कि रब्ब तमाम माबूदों से अज़ीम है, क्यूँकि उस ने यह सब कुछ उन लोगों के साथ किया जिन्हों ने अपने ग़रूर में इस्राईलियों के साथ बुरा सुलूक किया था।” [12]फिर यित्रो ने अल्लाह को भस्म होने वाली क़ुर्बानी और दीगर कई क़ुर्बानियाँ पेश कीं। तब हारून और तमाम बुज़ुर्ग मूसा के सुसर यित्रो के साथ अल्लाह के हुज़ूर खाना खाने बैठे।

70 बुज़ुर्गों को मुक़र्रर किया जाता है

[13]अगले दिन मूसा लोगों का इन्साफ़ करने के लिए बैठ गया। उन की तादाद इतनी ज़ियादा थी कि वह सुब्ह से ले कर शाम तक मूसा के सामने खड़े रहे। [14]जब यित्रो ने यह सब कुछ देखा तो उस ने पूछा, “यह क्या है जो आप लोगों के साथ कर रहे हैं? सारा दिन वह आप को घेरे रहते और आप उन की अदालत करते रहते हैं। आप यह सब कुछ अकेले ही क्यूँ कर रहे हैं?”

[15]मूसा ने जवाब दिया, “लोग मेरे पास आ कर अल्लाह की मर्ज़ी मालूम करते हैं। [16]जब कभी कोई तनाज़ो या झगड़ा होता है तो दोनों पार्टियाँ मेरे पास आती हैं। मैं फ़ैसला करके उन्हें अल्लाह के अह्काम और हिदायात बताता हूँ।”

[17]मूसा के सुसर ने उस से कहा, “आप का तरीक़ा अच्छा नहीं है। [18]काम इतना वसी है कि आप उसे अकेले नहीं सँभाल सकते। इस से आप और वह लोग जो आप के पास आते हैं बुरी तरह थक जाते हैं। [19]मेरी बात सुनें! मैं आप को एक मश्वरा देता हूँ। अल्लाह उस में आप की मदद करे। लाज़िम है कि आप अल्लाह के सामने क़ौम के नुमाइन्दा रहें और उन के मुआमलात उस के सामने पेश करें। [20]यह

भी ज़रूरी है कि आप उन्हें अल्लाह के अह्काम और
हिदायात सिखाएँ, कि वह किस तरह ज़िन्दगी गुज़ारें
और क्या क्या करें। 21 लेकिन साथ साथ क़ौम में से
क़ाबिल-ए-एतिमाद आदमी चुनें। वह ऐसे लोग हों जो
अल्लाह का ख़ौफ़ मानते हों, रास्तदिल हों और रिश्वत
से नफ़रत करते हों। उन्हें हज़ार हज़ार, सौ सौ, पचास
पचास और दस दस आदमियों पर मुक़र्रर करें। 22 उन
आदमियों की ज़िम्मादारी यह होगी कि वह हर वक़्त
लोगों का इन्साफ़ करें। अगर कोई बहुत ही पेचीदा
मुआमला हो तो वह फ़ैसले के लिए आप के पास
आएँ, लेकिन दीगर मुआमलों का फ़ैसला वह ख़ुद
करें। यूँ वह काम में आप का हाथ बटाएँगे और आप
का बोझ हल्का हो जाएगा।

23 अगर मेरा यह मश्वरा अल्लाह की मर्ज़ी के
मुताबिक़ हो और आप ऐसा करें तो आप अपनी
ज़िम्मादारी निभा सकेंगे और यह तमाम लोग इन्साफ़
के मिलने पर सलामती के साथ अपने अपने घर जा
सकेंगे।”

24 मूसा ने अपने सुसर का मश्वरा मान लिया और
ऐसा ही किया। 25 उस ने इस्राईलियों में से क़ाबिल-
ए-एतिमाद आदमी चुने और उन्हें हज़ार हज़ार, सौ
सौ, पचास पचास और दस दस आदमियों पर मुक़र्रर
किया। 26 यह मर्द क़ाज़ी बन कर मुस्तक़िल तौर पर
लोगों का इन्साफ़ करने लगे। आसान मसलों का
फ़ैसला वह ख़ुद करते और मुश्किल मुआमलों को
मूसा के पास ले आते थे।

27 कुछ अर्से बाद मूसा ने अपने सुसर को रुख़्सत
किया तो यित्रो अपने वतन वापस चला गया।

कोह-ए-सीना

19 1 इस्राईलियों को मिस्र से सफ़र करते हुए
दो महीने हो गए थे। तीसरे महीने के पहले
ही दिन वह सीना के रेगिस्तान में पहुँचे। 2 उस दिन
वह रफ़ीदीम को छोड़ कर दश्त-ए-सीना में आ पहुँचे।
वहाँ उन्हों ने रेगिस्तान में पहाड़ के क़रीब डेरे डाले।
3 तब मूसा पहाड़ पर चढ़ कर अल्लाह के पास गया।
अल्लाह ने पहाड़ पर से मूसा को पुकार कर कहा,
“याक़ूब के घराने बनी इस्राईल को बता, 4 ‘तुम ने
देखा है कि मैं ने मिस्रियों के साथ क्या कुछ किया,
और कि मैं तुम को उक़ाब के परों पर उठा कर
यहाँ अपने पास लाया हूँ। 5 चुनाँचे अगर तुम मेरी
सुनो और मेरे अह्द के मुताबिक़ चलो तो फिर तमाम
क़ौमों में से मेरी ख़ास मिल्कियत होगे। गो पूरी दुनिया
मेरी ही है, 6 लेकिन तुम मेरे लिए मख़्सूस इमामों की
बादशाही और मुक़द्दस क़ौम होगे।’ अब जा कर यह
सारी बातें इस्राईलियों को बता।”

7 मूसा ने पहाड़ से उतर कर और क़ौम के बुज़ुर्गों
को बुला कर उन्हें वह तमाम बातें बताईं जो कहने के
लिए रब्ब ने उसे हुक्म दिया था। 8 जवाब में पूरी क़ौम
ने मिल कर कहा, “हम रब्ब की हर बात पूरी करेंगे
जो उस ने फ़रमाई है।” मूसा ने पहाड़ पर लौट कर
रब्ब को क़ौम का जवाब बताया। 9 जब वह पहुँचा
तो रब्ब ने मूसा से कहा, “मैं घने बादल में तेरे पास
आऊँगा ताकि लोग मुझे तुझ से हमकलाम होते हुए
सुनें। फिर वह हमेशा तुझ पर भरोसा रखेंगे।” तब
मूसा ने रब्ब को वह तमाम बातें बताईं जो लोगों ने
की थीं।

10 रब्ब ने मूसा से कहा, “अब लोगों के पास
लौट कर आज और कल उन्हें मेरे लिए मख़्सूस-ओ-
मुक़द्दस कर। वह अपने लिबास धो कर 11 तीसरे दिन
के लिए तय्यार हो जाएँ, क्यूँकि उस दिन रब्ब लोगों
के देखते देखते कोह-ए-सीना पर उतरेगा। 12 लोगों
की हिफ़ाज़त के लिए चारों तरफ़ पहाड़ की हद्दें
मुक़र्रर कर। उन्हें ख़बरदार कर कि हुदूद को पार न
करो। न पहाड़ पर चढ़ो, न उस के दामन को छुओ।
जो भी उसे छुए वह ज़रूर मारा जाए। 13 और उसे
हाथ से छू कर नहीं मारना है बल्कि पत्थरों या तीरों
से। ख़्वाह इन्सान हो या हैवान, वह ज़िन्दा नहीं रह
सकता। जब तक नरसिंगा देर तक फूँका न जाए उस
वक़्त तक लोगों को पहाड़ पर चढ़ने की इजाज़त
नहीं है।”

14मूसा ने पहाड़ से उतर कर लोगों को अल्लाह
के लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस किया। उन्हों ने अपने
लिबास भी धोए। 15उस ने उन से कहा, “तीसरे दिन
के लिए तय्यार हो जाओ। मर्द औरतों से हमबिसतर
न हों।”

16तीसरे दिन सुब्ह पहाड़ पर घना बादल छा
गया। बिजली चमकने लगी, बादल गरजने लगा
और नरसिंगे की निहायत ज़ोरदार आवाज़ सुनाई दी।
ख़ैमागाह में लोग लरज़ उठे। 17तब मूसा लोगों को
अल्लाह से मिलने के लिए ख़ैमागाह से बाहर पहाड़ की
तरफ़ ले गया, और वह पहाड़ के दामन में खड़े हुए।
18सीना पहाड़ धुएँ से ढका हुआ था, क्यूँकि रब्ब
आग में उस पर उतर आया। पहाड़ से धुआँ इस तरह
उठ रहा था जैसे किसी भट्टे से उठता है। पूरा पहाड़
शिद्दत से लरज़ने लगा। 19नरसिंगे की आवाज़ तेज़
से तेज़तर होती गई। मूसा बोलने लगा और अल्लाह
उसे ऊँची आवाज़ में जवाब देता रहा।

20रब्ब सीना पहाड़ की चोटी पर उतरा और मूसा
को ऊपर आने के लिए कहा। मूसा ऊपर चढ़ा।
21रब्ब ने मूसा से कहा, “फ़ौरन नीचे उतर कर लोगों
को ख़बरदार कर कि वह मुझे देखने के लिए पहाड़
की हुदूद में ज़बरदस्ती दाख़िल न हों। अगर वह ऐसा
करें तो बहुत से हलाक हो जाएँगे। 22इमाम भी जो
रब्ब के हुज़ूर आते हैं अपने आप को मख़्सूस-ओ-
मुक़द्दस करें, वर्ना मेरा ग़ज़ब उन पर टूट पड़ेगा।”

23लेकिन मूसा ने रब्ब से कहा, “लोग पहाड़ पर
नहीं आ सकते, क्यूँकि तू ने ख़ुद ही हमें ख़बरदार
किया कि हम पहाड़ की हद्दें मुक़र्रर करके उसे
मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस करें।”

24रब्ब ने जवाब दिया, “तो भी उतर जा और हारून
को साथ ले कर वापस आ। लेकिन इमामों और
लोगों को मत आने दे। अगर वह ज़बरदस्ती मेरे पास
आएँ तो मेरा ग़ज़ब उन पर टूट पड़ेगा।”

25मूसा ने लोगों के पास उतर कर उन्हें यह बातें
बता दीं।

दस अह्काम

20 1तब अल्लाह ने यह तमाम बातें फ़रमाईं,
2“मैं रब्ब तेरा ख़ुदा हूँ जो तुझे मुल्क-ए-
मिस्र की ग़ुलामी से निकाल लाया। 3मेरे सिवा किसी
और माबूद की परस्तिश न करना। 4अपने लिए बुत
न बनाना। किसी भी चीज़ की मूरत न बनाना, चाहे
वह आस्मान में, ज़मीन पर या समुन्दर में हो। 5न
बुतों की परस्तिश, न उन की ख़िदमत करना, क्यूँकि
मैं तेरा रब्ब ग़यूर ख़ुदा हूँ। जो मुझ से नफ़रत करते
हैं उन्हें मैं तीसरी और चौथी पुश्त तक सज़ा दूँगा।
6लेकिन जो मुझ से मुहब्बत रखते और मेरे अह्काम
पूरे करते हैं उन पर मैं हज़ार पुश्तों तक मेहरबानी
करूँगा।

7रब्ब अपने ख़ुदा का नाम बेमक़्सद या ग़लत
मक़्सद के लिए इस्तेमाल न करना। जो भी ऐसा करता
है उसे रब्ब सज़ा दिए बग़ैर नहीं छोड़ेगा।

8सबत के दिन का ख़याल रखना। उसे इस तरह
मनाना कि वह मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस हो। 9हफ़्ते के
पहले छः दिन अपना काम-काज कर, 10लेकिन
सातवाँ दिन रब्ब तेरे ख़ुदा का आराम का दिन है।
उस दिन किसी तरह का काम न करना। न तू, न तेरा
बेटा, न तेरी बेटी, न तेरा नौकर, न तेरी नौकरानी और
न तेरे मवेशी। जो परदेसी तेरे दर्मियान रहता है वह
भी काम न करे। 11क्यूँकि रब्ब ने पहले छः दिन में
आस्मान-ओ-ज़मीन, समुन्दर और जो कुछ उन में है
बनाया लेकिन सातवें दिन आराम किया। इस लिए
रब्ब ने सबत के दिन को बर्कत दे कर मुक़र्रर किया
कि वह मख़्सूस और मुक़द्दस हो।

12अपने बाप और अपनी माँ की इज़्ज़त करना।
फिर तू उस मुल्क में जो रब्ब तेरा ख़ुदा तुझे देने वाला
है देर तक जीता रहेगा।

13क़त्ल न करना।

14ज़िना न करना।

15चोरी न करना।

16अपने पड़ोसी के बारे में झूटी गवाही न देना।

17 अपने पड़ोसी के घर का लालच न करना। न उस की बीवी का, न उस के नौकर का, न उस की नौकरानी का, न उस के बैल और न उस के गधे का बल्कि उस की किसी भी चीज़ का लालच न करना।”

लोग घबरा जाते हैं

18 जब बाक़ी तमाम लोगों ने बादल की गरज और नरसिंगे की आवाज़ सुनी और बिजली की चमक और पहाड़ से उठते हुए धुएँ को देखा तो वह ख़ौफ़ के मारे काँपने लगे और पहाड़ से दूर खड़े हो गए। 19 उन्हों ने मूसा से कहा, “आप ही हम से बात करें तो हम सुनेंगे। लेकिन अल्लाह को हम से बात न करने दें वर्ना हम मर जाएँगे।”

20 लेकिन मूसा ने उन से कहा, “मत डरो, क्यूँकि रब्ब तुम्हें जाँचने के लिए आया है, ताकि उस का ख़ौफ़ तुम्हारी आँखों के सामने रहे और तुम गुनाह न करो।” 21 लोग दूर ही रहे जबकि मूसा उस गहरी तारीकी के क़रीब गया जहाँ अल्लाह था।

22 तब रब्ब ने मूसा से कहा, “इस्राईलियों को बता, ‘तुम ने ख़ुद देखा कि मैं ने आस्मान पर से तुम्हारे साथ बातें की हैं। 23 चुनाँचे मेरी परस्तिश के साथ साथ अपने लिए सोने या चाँदी के बुत न बनाओ। 24 मेरे लिए मिट्टी की क़ुर्बानगाह बना कर उस पर अपनी भेड़-बक्रियों और गाय-बैलों की भस्म होने वाली और सलामती की क़ुर्बानियाँ चढ़ाना। मैं तुझे वह जगहें दिखाऊँगा जहाँ मेरे नाम की ताज़ीम में क़ुर्बानियाँ पेश करनी हैं। ऐसी तमाम जगहों पर मैं तेरे पास आ कर तुझे बर्कत दूँगा।

25 अगर तू मेरे लिए क़ुर्बानगाह बनाने की ख़ातिर पत्थर इस्तेमाल करना चाहे तो तराशे हुए पत्थर इस्तेमाल न करना। क्यूँकि तू तराशने के लिए इस्तेमाल होने वाले औज़ार से उस की बेहुरमती करेगा। 26 क़ुर्बानगाह को सीढ़ियों के बग़ैर बनाना है ताकि उस पर चढ़ने से तेरे लिबास के नीचे से तेरा नंगापन नज़र न आए।’

21

1 इस्राईलियों को यह अह्काम बता,

इब्रानी ग़ुलाम के हुक़ूक़

2 ‘अगर तू इब्रानी ग़ुलाम ख़रीदे तो वह छः साल तेरा ग़ुलाम रहे। इस के बाद लाज़िम है कि उसे आज़ाद कर दिया जाए। आज़ाद होने के लिए उसे पैसे देने की ज़रूरत नहीं होगी।

3 अगर ग़ुलाम ग़ैरशादीशुदा हालत में मालिक के घर आया हो तो वह आज़ाद हो कर अकेला ही चला जाए। अगर वह शादीशुदा हालत में आया हो तो लाज़िम है कि वह अपनी बीवी समेत आज़ाद हो कर जाए। 4 अगर मालिक ने ग़ुलाम की शादी कराई और बच्चे पैदा हुए हैं तो उस की बीवी और बच्चे मालिक की मिल्कियत होंगे। छः साल के बाद जब ग़ुलाम आज़ाद हो कर जाए तो उस की बीवी और बच्चे मालिक ही के पास रहें।

5 अगर ग़ुलाम कहे, “मैं अपने मालिक और अपने बीवी बच्चों से मुहब्बत रखता हूँ, मैं आज़ाद नहीं होना चाहता” 6 तो ग़ुलाम का मालिक उसे अल्लाह के सामने लाए। वह उसे दरवाज़े या उस की चौखट के पास ले जाए और सुताली यानी तेज़ औज़ार से उस के कान की लौ छेद दे। तब वह ज़िन्दगी भर उस का ग़ुलाम बना रहेगा।

7 अगर कोई अपनी बेटी को ग़ुलामी में बेच डाले तो उस के लिए आज़ादी मिलने की शराइत मर्द से फ़र्क़ हैं। 8 अगर उस के मालिक ने उसे मुन्तख़ब किया कि वह उस की बीवी बन जाए, लेकिन बाद में वह उसे पसन्द न आए तो लाज़िम है कि वह मुनासिब मुआवज़ा ले कर उसे उस के रिश्तेदारों को वापस कर दे। उसे औरत को ग़ैरमुल्कियों के हाथ बेचने का इख़तियार नहीं है, क्यूँकि उस ने उस के साथ बेवफ़ा सुलूक किया है।

9 अगर लौंडी का मालिक उस की अपने बेटे के साथ शादी कराए तो औरत को बेटी के हुक़ूक़ हासिल होंगे।

10 अगर मालिक ने उस से शादी करके बाद में दूसरी औरत से भी शादी की तो लाज़िम है कि वह पहली को भी खाना और कपड़े देता रहे। इस के इलावा उस के साथ हमबिसतर होने का फ़र्ज़ भी अदा करना है। 11 अगर वह यह तीन फ़राइज़ अदा न करे तो उसे औरत को आज़ाद करना पड़ेगा। इस सूरत में उसे मुफ़्त आज़ाद करना होगा।

ज़ख़्मी करने की सज़ा

12 जो किसी को जान-बूझ कर इतना सख़्त मारता हो कि वह मर जाए तो उसे ज़रूर सज़ा-ए-मौत देना है। 13 लेकिन अगर उस ने उसे जान-बूझ कर न मारा बल्कि यह इत्तिफ़ाक़ से हुआ और अल्लाह ने यह होने दिया, तो मारने वाला एक ऐसी जगह पनाह ले सकता है जो मैं मुक़र्रर करूँगा। वहाँ उसे क़त्ल किए जाने की इजाज़त नहीं होगी। 14 लेकिन जो दीदा-दानिस्ता और चालाकी से किसी को मार डालता है उसे मेरी क़ुर्बानगाह से भी छीन कर सज़ा-ए-मौत देना है।

15 जो अपने बाप या अपनी माँ को मारता पीटता है उसे सज़ा-ए-मौत दी जाए।

16 जिस ने किसी को अग़वा कर लिया है उसे सज़ा-ए-मौत दी जाए, चाहे वह उसे ग़ुलाम बना कर बेच चुका हो या उसे अब तक अपने पास रखा हुआ हो।

17 जो अपने बाप या माँ पर लानत करे उसे सज़ा-ए-मौत दी जाए।

18 हो सकता है कि आदमी झगड़ें और एक शख़्स दूसरे को पत्थर या मुक्के से इतना ज़ख़्मी कर दे कि गो वह बच जाए वह बिस्तर से उठ न सकता हो।
19 अगर बाद में मरीज़ यहाँ तक शिफ़ा पाए कि दुबारा उठ कर लाठी के सहारे चल फिर सके तो चोट पहुँचाने वाले को सज़ा नहीं मिलेगी। उसे सिर्फ़ उस वक़्त के लिए मुआवज़ा देना पड़ेगा जब तक मरीज़ पैसे न कमा सके। साथ ही उसे उस का पूरा इलाज करवाना है।

20 जो अपने ग़ुलाम या लौंडी को लाठी से यूँ मारे कि वह मर जाए उसे सज़ा दी जाए। 21 लेकिन अगर ग़ुलाम या लौंडी पिटाई के बाद एक या दो दिन ज़िन्दा रहे तो मालिक को सज़ा न दी जाए। क्यूँकि जो रक़म उस ने उस के लिए दी थी उस का नुक़्सान उसे ख़ुद उठाना पड़ेगा।

22 हो सकता है कि लोग आपस में लड़ रहे हों और लड़ते लड़ते किसी हामिला औरत से यूँ टकरा जाएँ कि उस का बच्चा ज़ाए हो जाए। अगर कोई और नुक़्सान न हुआ हो तो ज़र्ब पहुँचाने वाले को जुर्माना देना पड़ेगा। औरत का शौहर यह जुर्माना मुक़र्रर करे, और अदालत में इस की तस्दीक़ हो।

23 लेकिन अगर उस औरत को और नुक़्सान भी पहुँचा हो तो फिर ज़र्ब पहुँचाने वाले को इस उसूल के मुताबिक़ सज़ा दी जाए कि जान के बदले जान,
24 आँख के बदले आँख, दाँत के बदले दाँत, हाथ के बदले हाथ, पाँओ के बदले पाँओ, 25 जलने के ज़ख़्म के बदले जलने का ज़ख़्म, मार के बदले मार, काट के बदले काट।

26 अगर कोई मालिक अपने ग़ुलाम की आँख पर यूँ मारे कि वह ज़ाए हो जाए तो उसे ग़ुलाम को आँख के बदले आज़ाद करना पड़ेगा, चाहे ग़ुलाम मर्द हो या औरत। 27 अगर मालिक के पीटने से ग़ुलाम का दाँत टूट जाए तो उसे ग़ुलाम को दाँत के बदले आज़ाद करना पड़ेगा, चाहे ग़ुलाम मर्द हो या औरत।

नुक़्सान का मुआवज़ा

28 अगर कोई बैल किसी मर्द या औरत को ऐसा मारे कि वह मर जाए तो उस बैल को संगसार किया जाए। उस का गोश्त खाने की इजाज़त नहीं है। इस सूरत में बैल के मालिक को सज़ा न दी जाए। 29 लेकिन हो सकता है कि मालिक को पहले आगाह किया गया था कि बैल लोगों को मारता है, तो भी उस ने बैल को खुला छोड़ा था जिस के नतीजे में उस ने किसी को मार डाला। ऐसी सूरत में न सिर्फ़ बैल को बल्कि उस के मालिक को भी संगसार करना है। 30 लेकिन अगर फ़ैसला किया जाए कि वह अपनी जान का फ़िद्या दे

तो जितना मुआवज़ा भी मुक़र्रर किया जाए उसे देना
पड़ेगा।
31 सज़ा में कोई फ़र्क़ नहीं है, चाहे बेटे को मारा
जाए या बेटी को। 32 लेकिन अगर बैल किसी ग़ुलाम
या लौंडी को मार दे तो उस का मालिक ग़ुलाम
के मालिक को चाँदी के 30 सिक्के दे और बैल को
संगसार किया जाए।
33 हो सकता है कि किसी ने अपने हौज़ को खुला
रहने दिया या हौज़ बनाने के लिए गढ़ा खोद कर उसे
खुला रहने दिया और कोई बैल या गधा उस में गिर
कर मर गया। 34 ऐसी सूरत में हौज़ का मालिक मुर्दा
जानवर के लिए पैसे दे। वह जानवर के मालिक को
उस की पूरी क़ीमत अदा करे और मुर्दा जानवर ख़ुद
ले ले।
35 अगर किसी का बैल किसी दूसरे के बैल को
ऐसे मारे कि वह मर जाए तो दोनों मालिक ज़िन्दा
बैल को बेच कर उस के पैसे आपस में बराबर बाँट
लें। इसी तरह वह मुर्दा बैल को भी बराबर तक़्सीम
करें। 36 लेकिन हो सकता है कि मालिक को मालूम
था कि मेरा बैल दूसरे जानवरों पर हम्ला करता है, इस
के बावुजूद उस ने उसे आज़ाद छोड़ दिया था। ऐसी
सूरत में उसे मुर्दा बैल के इवज़ उस के मालिक को
नया बैल देना पड़ेगा, और वह मुर्दा बैल ख़ुद ले ले।

मिल्कियत की हिफ़ाज़त

22 1 जिस ने कोई बैल या भेड़ चोरी करके उसे
ज़बह किया या बेच डाला है उसे हर चोरी
के बैल के इवज़ पाँच बैल और हर चोरी की भेड़ के
इवज़ चार भेड़ें वापस करना है।
2 हो सकता है कि कोई चोर नक़ब लगा रहा हो
और लोग उसे पकड़ कर यहाँ तक मारते पीटते रहें
कि वह मर जाए। अगर रात के वक़्त ऐसा हुआ हो
तो वह उस के ख़ून के ज़िम्मादार नहीं ठहर सकते।
3 लेकिन अगर सूरज के तुलू होने के बाद ऐसा हुआ
हो तो जिस ने उसे मारा वह क़ातिल ठहरेगा।
चोर को हर चुराई हुई चीज़ का इवज़ाना देना है।
अगर उस के पास देने के लिए कुछ न हो तो उसे
ग़ुलाम बना कर बेचना है। जो पैसे उसे बेचने के इवज़
मिलें वह चुराई हुई चीज़ों के बदले में दिए जाएँ।
4 अगर चोरी का जानवर चोर के पास ज़िन्दा पाया
जाए तो उसे हर जानवर के इवज़ दो देने पड़ेंगे, चाहे
वह बैल, भेड़, बक्री या गधा हो।
5 हो सकता है कि कोई अपने मवेशी को अपने खेत
या अंगूर के बाग़ में छोड़ कर चरने दे और होते होते
वह किसी दूसरे के खेत या अंगूर के बाग़ में जा कर
चरने लगे। ऐसी सूरत में लाज़िम है कि मवेशी का
मालिक नुक़्सान के इवज़ अपने अंगूर के बाग़ और
खेत की बेहतरीन पैदावार में से दे।
6 हो सकता है कि किसी ने आग जलाई हो और
वह काँटेदार झाड़ियों के ज़रीए पड़ोसी के खेत तक
फैल कर उस के अनाज के पूलों को, उस की पकी
हुई फ़सल को या खेत की किसी और पैदावार को
बर्बाद कर दे। ऐसी सूरत में जिस ने आग जलाई हो
उसे उस की पूरी क़ीमत अदा करनी है।
7 हो सकता है कि किसी ने कुछ पैसे या कोई और
माल अपने किसी वाक़िफ़कार के सपुर्द कर दिया हो
ताकि वह उसे महफ़ूज़ रखे। अगर यह चीज़ें उस के
घर से चोरी हो जाएँ और बाद में चोर को पकड़ा जाए
तो चोर को उस की दुगनी क़ीमत अदा करनी पड़ेगी।
8 लेकिन अगर चोर पकड़ा न जाए तो लाज़िम है कि
उस घर का मालिक जिस के सपुर्द यह चीज़ें की गई
थीं अल्लाह के हुज़ूर खड़ा हो ताकि मालूम किया जाए
कि उस ने ख़ुद यह माल चोरी किया है या नहीं।
9 हो सकता है कि दो लोगों का आपस में झगड़ा हो,
और दोनों किसी चीज़ के बारे में दावा करते हों कि
यह मेरी है। अगर कोई क़ीमती चीज़ हो मसलन बैल,
गधा, भेड़, बक्री, कपड़े या कोई खोई हुई चीज़ तो
मुआमला अल्लाह के हुज़ूर लाया जाए। जिसे अल्लाह
क़ुसूरवार क़रार दे उसे दूसरे को ज़ेर-ए-बहस चीज़
की दुगनी क़ीमत अदा करनी है।

10 हो सकता है कि किसी ने अपना कोई गधा, बैल,
भेड़, बक्री या कोई और जानवर किसी वाक़िफ़कार
के सपुर्द कर दिया ताकि वह उसे महफ़ूज़ रखे। वहाँ
जानवर मर जाए या ज़ख़्मी हो जाए, या कोई उस पर
क़ब्ज़ा करके उसे उस वक़्त ले जाए जब कोई न देख
रहा हो। 11 यह मुआमला यूँ हल किया जाए कि जिस
के सपुर्द जानवर किया गया था वह रब्ब के हुज़ूर
क़सम खा कर कहे कि मैं ने अपने वाक़िफ़कार के
जानवर के लालच में यह काम नहीं किया। जानवर
के मालिक को यह क़बूल करना पड़ेगा, और दूसरे
को इस के बदले कुछ नहीं देना होगा। 12 लेकिन
अगर वाक़ई जानवर को चोरी किया गया है तो जिस
के सपुर्द जानवर किया गया था उसे उस की क़ीमत
अदा करनी पड़ेगी। 13 अगर किसी जंगली जानवर ने
उसे फाड़ डाला हो तो वह सबूत के तौर पर फाड़ी
हुई लाश को ले आए। फिर उसे उस की क़ीमत अदा
नहीं करनी पड़ेगी।

14 हो सकता है कि कोई अपने वाक़िफ़कार से
इजाज़त ले कर उस का जानवर इस्तेमाल करे। अगर
जानवर को मालिक की ग़ैरमौजूदगी में चोट लगे
या वह मर जाए तो उस शख़्स को जिस के पास
जानवर उस वक़्त था उस का मुआवज़ा देना पड़ेगा।
15 लेकिन अगर जानवर का मालिक उस वक़्त साथ
था तो दूसरे को मुआवज़ा देने की ज़रूरत नहीं होगी।
अगर उस ने जानवर को किराए पर लिया हो तो उस
का नुक़्सान किराए से पूरा हो जाएगा।

लड़की को वरग़लाने का जुर्म

16 अगर किसी कुंवारी की मंगनी नहीं हुई और कोई
मर्द उसे वरग़ला कर उस से हमबिसतर हो जाए तो
वह महर दे कर उस से शादी करे। 17 लेकिन अगर
लड़की का बाप उस की उस मर्द के साथ शादी करने
से इन्कार करे, इस सूरत में भी मर्द को कुंवारी के
लिए मुक़र्ररा रक़म देनी पड़ेगी।

सज़ा-ए-मौत के लाइक़ जराइम

18 जादूगरनी को जीने न देना।

19 जो शख़्स किसी जानवर के साथ जिन्सी
ताल्लुक़ात रखता हो उसे सज़ा-ए-मौत दी जाए।

20 जो न सिर्फ़ रब्ब को क़ुर्बानियाँ पेश करे बल्कि
दीगर माबूदों को भी उसे क़ौम से निकाल कर हलाक
किया जाए।

कमज़ोरों की हिफ़ाज़त के लिए अहकाम

21 जो परदेसी तेरे मुल्क में मेहमान है उसे न दबाना
और न उस से बुरा सुलूक करना, क्यूँकि तुम भी मिस्र
में परदेसी थे।

22 किसी बेवा या यतीम से बुरा सुलूक न करना।
23 अगर तू ऐसा करे और वह चिल्ला कर मुझ से फ़र्याद
करें तो मैं ज़रूर उन की सुनूँगा। 24 मैं बड़े ग़ुस्से में
आ कर तुम्हें तल्वार से मार डालूँगा। फिर तुम्हारी
बीवियाँ ख़ुद बेवाएँ और तुम्हारे बच्चे ख़ुद यतीम बन
जाएँगे।

25 अगर तू ने मेरी क़ौम के किसी ग़रीब को क़र्ज़
दिया है तो उस से सूद न लेना।

26 अगर तुझे किसी से उस की चादर गिरवी के
तौर पर मिली हो तो उसे सूरज डूबने से पहले ही
वापस कर देना है, 27 क्यूँकि इसी को वह सोने के
लिए इस्तेमाल करता है। वर्ना वह क्या चीज़ ओढ़
कर सोएगा? अगर तू चादर वापस न करे और वह
शख़्स चिल्ला कर मुझ से फ़र्याद करे तो मैं उस की
सुनूँगा, क्यूँकि मैं मेहरबान हूँ।

अल्लाह से मुताल्लिक़ फ़राइज़

28 अल्लाह को न कोसना, न अपनी क़ौम के किसी
सरदार पर लानत करना।

29 मुझे वक़्त पर अपने खेत और कोल्हूओं की
पैदावार में से नज़राने पेश करना। अपने पहलौठे मुझे
देना। 30 अपने बैलों, भेड़ों और बक्रियों के पहलौठों
को भी मुझे देना। जानवर का पहलौठा पहले सात

दिन अपनी माँ के साथ रहे। आठवें दिन वह मुझे दिया जाए।

[31] अपने आप को मेरे लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस रखना। इस लिए ऐसे जानवर का गोश्त मत खाना जिसे किसी जंगली जानवर ने फाड़ डाला है। ऐसे गोश्त को कुत्तों को खाने देना।

अदालत में इन्साफ़ और दूसरों से मुहब्बत

23 [1] ग़लत अफ़्वाहें न फैलाना। किसी शरीर आदमी का साथ दे कर झूटी गवाही देना मना है। [2] अगर अक्सरियत ग़लत काम कर रही हो तो उस के पीछे न हो लेना। अदालत में गवाही देते वक़्त अक्सरियत के साथ मिल कर ऐसी बात न करना जिस से ग़लत फ़ैसला किया जाए। [3] लेकिन अदालत में किसी ग़रीब की तरफ़दारी भी न करना।

[4] अगर तुझे तेरे दुश्मन का बैल या गधा आवारा फिरता हुआ नज़र आए तो उसे हर सूरत में वापस कर देना। [5] अगर तुझ से नफ़रत करने वाले का गधा बोझ तले गिर गया हो और तुझे पता लगे तो उसे न छोड़ना बल्कि ज़रूर उस की मदद करना।

[6] अदालत में ग़रीब के हुक़ूक़ न मारना। [7] ऐसे मुआमले से दूर रहना जिस में लोग झूट बोलते हैं। जो बेगुनाह और हक़ पर है उसे सज़ा-ए-मौत न देना, क्यूँकि मैं क़ुसूरवार को हक़-ब-जानिब नहीं ठहराऊँगा। [8] रिश्वत न लेना, क्यूँकि रिश्वत देखने वाले को अंधा कर देती है और उस की बात बनने नहीं देती जो हक़ पर है।

[9] जो परदेसी तेरे मुल्क में मेहमान है उस पर दबाओ न डालना। तुम ऐसे लोगों की हालत से ख़ूब वाक़िफ़ हो, क्यूँकि तुम ख़ुद मिस्र में परदेसी रहे हो।

सबत का साल और सबत

[10] छः साल तक अपनी ज़मीन में बीज बो कर उस की पैदावार जमा करना। [11] लेकिन सातवें साल ज़मीन को इस्तेमाल न करना बल्कि उसे पड़े रहने देना। जो कुछ भी उगे वह क़ौम के ग़रीब लोग खाएँ। जो उन से बच जाए उसे जंगली जानवर खाएँ। अपने अंगूर और ज़ैतून के बाग़ों के साथ भी ऐसा ही करना है।

[12] छः दिन अपना काम-काज करना, लेकिन सातवें दिन आराम करना। फिर तेरा बैल और तेरा गधा भी आराम कर सकेंगे, तेरी लौंडी का बेटा और तेरे साथ रहने वाला परदेसी भी ताज़ादम हो जाएँगे।

[13] जो भी हिदायत मैं ने दी है उस पर अमल कर। दीगर माबूदों की परस्तिश न करना। मैं तेरे मुँह से उन के नामों तक का ज़िक्र न सुनूँ।

तीन ख़ास ईदें

[14] साल में तीन दफ़ा मेरी ताज़ीम में ईद मनाना। [15] पहले, बेख़मीरी रोटी की ईद मनाना। अबीब के महीने [l] में सात दिन तक तेरी रोटी में ख़मीर न हो जिस तरह मैं ने हुक्म दिया है, क्यूँकि इस महीने में तू मिस्र से निकला। इन दिनों में कोई मेरे हुज़ूर ख़ाली हाथ न आए। [16] दूसरे, फ़सलकटाई की ईद उस वक़्त मनाना जब तू अपने खेत में बोई हुई पहली फ़सल काटेगा। तीसरे, जमा करने की ईद फ़सल की कटाई के इख़्तिताम [m] पर मनाना है जब तू ने अंगूर और बाक़ी बाग़ों के फल जमा किए होंगे। [17] यूँ तेरे तमाम मर्द तीन मर्तबा रब्ब क़ादिर-ए-मुतलक़ के हुज़ूर हाज़िर हुआ करें।

[18] जब तू किसी जानवर को ज़बह करके क़ुर्बानी के तौर पर पेश करे तो उस के ख़ून के साथ ऐसी रोटी पेश न करना जिस में ख़मीर हो। और जो जानवर तू मेरी ईदों पर चढ़ाए उन की चर्बी अगली सुब्ह तक बाक़ी न रहे।

[19] अपनी ज़मीन की पहली पैदावार का बेहतरीन हिस्सा रब्ब अपने ख़ुदा के घर में लाना।

---

[l] मार्च ता अप्रैल।

[m] सितम्बर ता अक्तूबर।

भेड़ या बक्री के बच्चे को उस की माँ के दूध में न
पकाना।

रब्ब का फ़रिश्ता राहनुमाई करेगा

20 मैं तेरे आगे आगे फ़रिश्ता भेजता हूँ जो रास्ते
में तेरी हिफ़ाज़त करेगा और तुझे उस जगह तक ले
जाएगा जो मैं ने तेरे लिए तय्यार की है। 21 उस की
मौजूदगी में एहतियात बरतना। उस की सुनना, और
उस की ख़िलाफ़वरज़ी न करना। अगर तू सरकश
हो जाए तो वह तुझे मुआफ़ नहीं करेगा, क्यूँकि मेरा
नाम उस में हाज़िर होगा। 22 लेकिन अगर तू उस की
सुने और सब कुछ करे जो मैं तुझे बताता हूँ तो मैं तेरे
दुश्मनों का दुश्मन और तेरे मुख़ालिफ़ों का मुख़ालिफ़
हूँगा।

23 क्यूँकि मेरा फ़रिश्ता तेरे आगे आगे चलेगा
और तुझे मुल्क-ए-कनआन तक पहुँचा देगा जहाँ
अमोरी, हित्ती, फ़रिज़्ज़ी, कनआनी, हिव्वी और
यबूसी आबाद हैं। तब मैं उन्हें रू-ए-ज़मीन पर से
मिटा दूँगा। 24 उन के माबूदों को सिज्दा न करना, न
उन की ख़िदमत करना। उन के रस्म-ओ-रिवाज भी
न अपनाना बल्कि उन के बुतों को तबाह कर देना।
जिन सतूनों के सामने वह इबादत करते हैं उन को
भी टुकड़े टुकड़े कर डालना। 25 रब्ब अपने ख़ुदा की
ख़िदमत करना। फिर मैं तेरी ख़ुराक और पानी को
बर्कत दे कर तमाम बीमारियाँ तुझ से दूर करूँगा।
26 फिर तेरे मुल्क में न किसी का बच्चा ज़ाए होगा,
न कोई बाँझ होगी। साथ ही मैं तुझे तवील ज़िन्दगी
अता करूँगा।

27 मैं तेरे आगे आगे दहशत फैलाऊँगा। जहाँ भी
तू जाएगा वहाँ मैं तमाम क़ौमों में अब्तरी पैदा
करूँगा। मेरे सबब से तेरे सारे दुश्मन पलट कर भाग
जाएँगे। 28 मैं तेरे आगे ज़म्बूर भेज दूँगा जो हिव्वी,
कनआनी और हित्ती को मुल्क छोड़ने पर मज्बूर
करेंगे। 29 लेकिन जब तू वहाँ पहुँचेगा तो मैं उन्हें एक
ही साल में मुल्क से नहीं निकालूँगा। वर्ना पूरा मुल्क
वीरान हो जाएगा और जंगली जानवर फैल कर तेरे
लिए नुक़्सान का बाइस बन जाएँगे। 30 इस लिए मैं
तेरे पहुँचने पर मुल्क के बाशिन्दों को थोड़ा थोड़ा
करके निकालता जाऊँगा। इतने में तेरी तादाद बढ़ेगी
और तू रफ़्ता रफ़्ता मुल्क पर क़ब्ज़ा कर सकेगा।

31 मैं तेरी सरहद्दें मुक़र्रर करूँगा। बहर-ए-क़ुल्ज़ुम
एक हद्द होगी और फ़िलिस्तियों का समुन्दर दूसरी,
जुनूब का रेगिस्तान एक होगी और दरया-ए-फ़ुरात
दूसरी। मैं मुल्क के बाशिन्दों को तेरे क़ब्ज़े में कर
दूँगा, और तू उन्हें अपने आगे आगे मुल्क से दूर
करता जाएगा। 32 लाज़िम है कि तू उन के साथ या
उन के माबूदों के साथ अह्द न बाँधे। 33 उन का तेरे
मुल्क में रहना मना है, वर्ना तू उन के सबब से मेरा
गुनाह करेगा। अगर तू उन के माबूदों की इबादत
करेगा तो यह तेरे लिए फंदा बन जाएगा'।"

रब्ब इस्राईल से अह्द बाँधता है

24 1 रब्ब ने मूसा से कहा, "तू, हारून, नदब,
अबीहू और इस्राईल के 70 बुज़ुर्ग मेरे पास
ऊपर आएँ। कुछ फ़ासिले पर खड़े हो कर मुझे सिज्दा
करो। 2 सिर्फ़ तू अकेला ही मेरे क़रीब आ, दूसरे दूर
रहें। और क़ौम के बाक़ी लोग तेरे साथ पहाड़ पर न
चढ़ें।"

3 तब मूसा ने क़ौम के पास जा कर रब्ब की तमाम
बातें और अह्काम पेश किए। जवाब में सब ने मिल
कर कहा, "हम रब्ब की इन तमाम बातों पर अमल
करेंगे।"

4 तब मूसा ने रब्ब की तमाम बातें लिख लीं। अगले
दिन वह सुब्ह-सवेरे उठा और पहाड़ के पास गया।
उस के दामन में उस ने क़ुर्बानगाह बनाई। साथ ही
उस ने इस्राईल के हर एक क़बीले के लिए एक एक
पत्थर का सतून खड़ा किया। 5 फिर उस ने कुछ
इस्राईली नौजवानों को क़ुर्बानी पेश करने के लिए
बुलाया ताकि वह रब्ब की ताज़ीम में भस्म होने वाली
क़ुर्बानियाँ चढ़ाएँ और जवान बैलों को सलामती की
क़ुर्बानी के तौर पर पेश करें। 6 मूसा ने क़ुर्बानियों
का ख़ून जमा किया। उस का आधा हिस्सा उस ने

बासनों में डाल दिया और आधा हिस्सा क़ुर्बानगाह पर छिड़क दिया।

[7] फिर उस ने वह किताब ली जिस में रब्ब के साथ अह्द की तमाम शराइत दर्ज थीं और उसे क़ौम को पढ़ कर सुनाया। जवाब में उन्हों ने कहा, "हम रब्ब की इन तमाम बातों पर अमल करेंगे। हम उस की सुनेंगे।" [8] इस पर मूसा ने बासनों में से ख़ून ले कर उसे लोगों पर छिड़का और कहा, "यह ख़ून उस अह्द की तस्दीक़ करता है जो रब्ब ने तुम्हारे साथ किया है और जो उस की तमाम बातों पर मब्नी है।"

[9] इस के बाद मूसा, हारून, नदब, अबीहू और इस्राईल के 70 बुज़ुर्ग सीना पहाड़ पर चढ़े। [10] वहाँ उन्हों ने इस्राईल के ख़ुदा को देखा। लगता था कि उस के पाँओ के नीचे संग-ए-लाजवर्द का सा तख़्ता था। वह आस्मान की मानिन्द साफ़-ओ-शफ़्फ़ाफ़ था। [11] अगरचि इस्राईल के राहनुमाओं ने यह सब कुछ देखा तो भी रब्ब ने उन्हें हलाक न किया, बल्कि वह अल्लाह को देखते रहे और उस के हुज़ूर अह्द का खाना खाते और पीते रहे।

पत्थर की तख़्तियाँ

[12] पहाड़ से उतरने के बाद रब्ब ने मूसा से कहा, "मेरे पास पहाड़ पर आ कर कुछ देर के लिए ठहरे रहना। मैं तुझे पत्थर की तख़्तियाँ दूँगा जिन पर मैं ने अपनी शरीअत और अह्काम लिखे हैं और जो इस्राईल की तालीम-ओ-तर्बियत के लिए ज़रूरी हैं।"

[13] मूसा अपने मददगार यशूअ के साथ चल पड़ा और अल्लाह के पहाड़ पर चढ़ गया। [14] पहले उस ने बुज़ुर्गों से कहा, "हमारी वापसी के इन्तिज़ार में यहाँ ठहरे रहो। हारून और हूर तुम्हारे पास रहेंगे। कोई भी मुआमला हो तो लोग उन ही के पास जाएँ।"

मूसा रब्ब से मिलता है

[15] जब मूसा चढ़ने लगा तो पहाड़ पर बादल छा गया। [16] रब्ब का जलाल कोह-ए-सीना पर उतर आया। छः दिन तक बादल उस पर छाया रहा। सातवें दिन रब्ब ने बादल में से मूसा को बुलाया। [17] रब्ब का जलाल इस्राईलियों को भी नज़र आता था। उन्हें यूँ लगा जैसा कि पहाड़ की चोटी पर तेज़ आग भड़क रही हो। [18] चढ़ते चढ़ते मूसा बादल में दाख़िल हुआ। वहाँ वह चालीस दिन और चालीस रात रहा।

मुलाक़ात का ख़ैमा बनाने के लिए हदिए

25 [1] रब्ब ने मूसा से कहा, [2] "इस्राईलियों को बता कि वह हदिए ला कर मुझे उठाने वाली क़ुर्बानी के तौर पर पेश करें। लेकिन सिर्फ़ उन से हदिए क़बूल करो जो दिली ख़ुशी से दें। [3] उन से यह चीज़ें हदिए के तौर पर क़बूल करो : सोना, चाँदी, पीतल; [4] नीले, अर्ग़वानी और क़िर्मिज़ी रंग का धागा, बारीक कतान, बक्री के बाल, [5] मेंढों की सुर्ख़ रंगी हुई खालें, तख़स [n] की खालें, कीकर की लकड़ी, [6] शमादान के लिए ज़ैतून का तेल, मसह करने के लिए तेल और ख़ुश्बूदार बख़ूर के लिए मसाले, [7] अक़ीक़-ए-अह्मर और दीगर जवाहिर जो इमाम-ए-आज़म के बालापोश और सीने के कीसे में जड़े जाएँगे। [8] इन चीज़ों से लोग मेरे लिए मक़्दिस बनाएँ ताकि मैं उन के दर्मियान रहूँ। [9] मैं तुझे मक़्दिस और उस के तमाम सामान का नमूना दिखाऊँगा, क्यूँकि तुम्हें सब कुछ ऐन उसी के मुताबिक़ बनाना है।

अह्द का सन्दूक़

[10–12] लोग कीकर की लकड़ी का सन्दूक़ बनाएँ। उस की लम्बाई पौने चार फ़ुट हो जबकि उस की चौड़ाई और ऊँचाई सवा दो दो फ़ुट हो। पूरे सन्दूक़ पर अन्दर और बाहर से ख़ालिस सोना चढ़ाना। ऊपर

---

[n] ग़ालिबन इस मतरूक इब्रानी लफ़्ज़ से मुराद कोई समुन्दरी जानवर है।

की सतह के इर्दगिर्द सोने की झालर लगाना। सन्दूक़ को उठाने के लिए सोने के चार कड़े ढाल कर उन्हें सन्दूक़ के चारपाइयों पर लगाना। दोनों तरफ़ दो दो कड़े हों। 13 फिर कीकर की दो लकड़ियाँ सन्दूक़ को उठाने के लिए तय्यार करना। उन पर सोना चढ़ा कर
14 उन को दोनों तरफ़ के कड़ों में डालना ताकि उन से सन्दूक़ को उठाया जाए। 15 यह लकड़ियाँ सन्दूक़ के इन कड़ों में पड़ी रहें। उन्हें कभी भी दूर न किया जाए।
16 सन्दूक़ में शरीअत की वह दो तख़्तियाँ रखना जो मैं तुझे दूँगा।

17 सन्दूक़ का ढकना ख़ालिस सोने का बनाना। उस की लम्बाई पौने चार फ़ुट और चौड़ाई सवा दो फ़ुट हो। उस का नाम कफ़्फ़ारे का ढकना है। 18–19 सोने से घड़ कर दो करूबी फ़रिश्ते बनाए जाएँ जो ढकने के दोनों सिरों पर खड़े हों। यह दो फ़रिश्ते और ढकना एक ही टुकड़े से बनाने हैं। 20 फ़रिश्तों के पर यूँ ऊपर की तरफ़ फैले हुए हों कि वह ढकने को पनाह दें। उन के मुँह एक दूसरे की तरफ़ किए हुए हों, और वह ढकने की तरफ़ देखें।

21 ढकने को सन्दूक़ पर लगा, और सन्दूक़ में शरीअत की वह दो तख़्तियाँ रख जो मैं तुझे दूँगा।
22 वहाँ ढकने के ऊपर दोनों फ़रिश्तों के दर्मियान से मैं अपने आप को तुझ पर ज़ाहिर करके तुझ से हमकलाम हूँगा और तुझे इस्राईलियों के लिए तमाम अह्काम दूँगा।

मख़्सूस रोटियों की मेज़

23 कीकर की लकड़ी की मेज़ बनाना। उस की लम्बाई तीन फ़ुट, चौड़ाई डेढ़ फ़ुट और ऊँचाई सवा दो फ़ुट हो। 24 उस पर ख़ालिस सोना चढ़ाना, और उस के इर्दगिर्द सोने की झालर लगाना। 25 मेज़ की ऊपर की सतह पर चौखटा लगाना जिस की ऊँचाई तीन इंच हो और जिस पर सोने की झालर लगी हो।
26 सोने के चार कड़े ढाल कर उन्हें चारों कोनों पर लगाना जहाँ मेज़ के पाए लगे हैं। 27 यह कड़े मेज़ की सतह पर लगे चौखटे के नीचे लगाए जाएँ। उन में वह लकड़ियाँ डालनी हैं जिन से मेज़ को उठाया जाएगा। 28 यह लकड़ियाँ भी कीकर की हों और उन पर सोना चढ़ाया जाए। उन से मेज़ को उठाना है।

29 उस के थाल, पियाले, मर्तबान और मै की नज़रें पेश करने के बर्तन ख़ालिस सोने से बनाना है। 30 मेज़ पर वह रोटियाँ हर वक़्त मेरे हुज़ूर पड़ी रहें जो मेरे लिए मख़्सूस हैं।

शमादान

31 ख़ालिस सोने का शमादान भी बनाना। उस का पाया और डंडी घड़ कर बनाना है। उस की पियालियाँ जो फूलों और कलियों की शक्ल की होंगी पाए और डंडी के साथ एक ही टुकड़ा हों। 32 डंडी से दाईं और बाईं तरफ़ तीन तीन शाख़ें निकलें। 33 हर शाख़ पर तीन पियालियाँ लगी हों जो बादाम की कलियों और फूलों की शक्ल की हों। 34 शमादान की डंडी पर भी इस क़िस्म की पियालियाँ लगी हों, लेकिन तादाद में चार। 35 इन में से तीन पियालियाँ दाएँ बाएँ की छः शाख़ों के नीचे लगी हों। वह यूँ लगी हों कि हर पियाली से दो शाख़ें निकलें। 36 शाख़ें और पियालियाँ बल्कि पूरा शमादान ख़ालिस सोने के एक ही टुकड़े से घड़ कर बनाना है।

37 शमादान के लिए सात चराग़ बना कर उन्हें यूँ शाख़ों पर रखना कि वह सामने की जगह रौशन करें। 38 बत्ती कतरने की क़ैंचियाँ और जलते कोइले के लिए छोटे बर्तन भी ख़ालिस सोने से बनाए जाएँ। 39 शमादान और उस सारे सामान के लिए पूरे 34 किलोग्राम ख़ालिस सोना इस्तेमाल किया जाए।
40 ग़ौर कर कि सब कुछ ऐन उस नमूने के मुताबिक़ बनाया जाए जो मैं तुझे यहाँ पहाड़ पर दिखाता हूँ।

मुलाक़ात का ख़ैमा

26 1 मुक़द्दस ख़ैमे के लिए दस पर्दे बनाना। उन के लिए बारीक कतान और नीले, अर्ग़वानी और क़िर्मिज़ी रंग का धागा इस्तेमाल करना। पर्दों में किसी माहिर कारीगर के कड़ाई के काम से करूबी

फ़रिश्तों का डिज़ाइन बनवाना। 2 हर पर्दे की लम्बाई 42 फ़ुट और चौड़ाई 6 फ़ुट हो। 3 पाँच पर्दों के लम्बे हाशिए एक दूसरे के साथ जोड़े जाएँ और इसी तरह बाक़ी पाँच भी। यूँ दो बड़े टुकड़े बन जाएँगे। 4 दोनों टुकड़ों को एक दूसरे के साथ मिलाने के लिए नीले धागे के हल्क़े बनाना। यह हल्क़े हर टुकड़े के 42 फ़ुट वाले एक किनारे पर लगाए जाएँ, 5 एक टुकड़े के हाशिए पर 50 हल्क़े और दूसरे पर भी उतने ही हल्क़े। इन दो हाशियों के हल्क़े एक दूसरे के आमने-सामने हों। 6 फिर सोने की 50 हुकें बना कर उन से आमने-सामने के हल्क़े एक दूसरे के साथ मिलाना। यूँ दोनों टुकड़े जुड़ कर ख़ैमे का काम देंगे।

7 बक्री के बालों से भी 11 पर्दे बनाना जिन्हें कपड़े वाले ख़ैमे के ऊपर रखा जाए। 8 हर पर्दे की लम्बाई 45 फ़ुट और चौड़ाई 6 फ़ुट हो। 9 पाँच पर्दों के लम्बे हाशिए एक दूसरे के साथ जोड़े जाएँ और इसी तरह बाक़ी छः भी। इन छः पर्दों के छटे पर्दे को एक दफ़ा तह करना। यह सामने वाले हिस्से से लटके।

10 बक्री के बाल के इन दोनों टुकड़ों को भी मिलाना है। इस के लिए हर टुकड़े के 45 फ़ुट वाले एक किनारे पर पचास पचास हल्क़े लगाना। 11 फिर पीतल की 50 हुकें बना कर उन से दोनों हिस्से मिलाना। 12 जब बक्रियों के बालों का यह ख़ैमा कपड़े के ख़ैमे के ऊपर लगाया जाएगा तो आधा पर्दा बाक़ी रहेगा। वह ख़ैमे की पिछली तरफ़ लटका रहे। 13 ख़ैमे के दाईं और बाईं तरफ़ बक्री के बालों का ख़ैमा कपड़े के ख़ैमे की निस्बत डेढ़ डेढ़ फ़ुट लम्बा होगा। यूँ वह दोनों तरफ़ लटके हुए कपड़े के ख़ैमे को महफ़ूज़ रखेगा।

14 एक दूसरे के ऊपर के इन दोनों ख़ैमों की हिफ़ाज़त के लिए दो ग़िलाफ़ बनाने हैं। बक्री के बालों के ख़ैमे पर मेंढों की सुर्ख़ रंगी हुई खालें जोड़ कर रखी जाएँ और उन पर तख़स की खालें मिला कर रखी जाएँ।

15 कीकर की लकड़ी के तख़्ते बनाना जो खड़े किए जाएँ ताकि ख़ैमे की दीवारों का काम दें। 16 हर तख़्ते की ऊँचाई 15 फ़ुट हो और चौड़ाई सवा दो फ़ुट। 17 हर तख़्ते के नीचे दो दो चूलें हों। यह चूलें हर तख़्ते को उस के पाइयों के साथ जोड़ेंगी ताकि तख़्ता खड़ा रहे। 18 ख़ैमे की जुनूबी दीवार के लिए 20 तख़्तों की ज़रूरत है 19 और साथ ही चाँदी के 40 पाइयों की। उन पर तख़्ते खड़े किए जाएँगे। हर तख़्ते के नीचे दो पाए होंगे, और हर पाए में एक चूल लगेगी। 20 इसी तरह ख़ैमे की शिमाली दीवार के लिए भी 20 तख़्तों की ज़रूरत है 21 और साथ ही चाँदी के 40 पाइयों की। वह भी तख़्तों को खड़ा करने के लिए हैं। हर तख़्ते के नीचे दो पाए होंगे। 22 ख़ैमे की पिछली यानी मग़रिबी दीवार के लिए छः तख़्ते बनाना। 23 इस दीवार को शिमाली और जुनूबी दीवारों के साथ जोड़ने के लिए कोने वाले दो तख़्ते बनाना। 24 इन दो तख़्तों में नीचे से ले कर ऊपर तक कोना हो ताकि एक से शिमाली दीवार मग़रिबी दीवार के साथ जुड़ जाए और दूसरे से जुनूबी दीवार मग़रिबी दीवार के साथ। इन के ऊपर के सिरे कड़ों से मज़्बूत किए जाएँ। 25 यूँ पिछले यानी मग़रिबी तख़्तों की पूरी तादाद 8 होगी और इन के लिए चाँदी के पाइयों की तादाद 16, हर तख़्ते के नीचे दो दो पाए होंगे।

26–27 इस के इलावा कीकर की लकड़ी के शहतीर बनाना, तीनों दीवारों के लिए पाँच पाँच शहतीर। वह हर दीवार के तख़्तों पर यूँ लगाए जाएँ कि वह उन्हें एक दूसरे के साथ मिलाएँ। 28 दर्मियानी शहतीर दीवार की आधी ऊँचाई पर दीवार के एक सिरे से दूसरे सिरे तक लगाया जाए। 29 शहतीरों को तख़्तों के साथ लगाने के लिए सोने के कड़े बना कर तख़्तों में लगाना। तमाम तख़्तों और शहतीरों पर सोना चढ़ाना।

30 पूरे मुक़द्दस ख़ैमे को उसी नमूने के मुताबिक़ बनाना जो मैं तुझे पहाड़ पर दिखाता हूँ।

मुक़द्दस ख़ैमे के पर्दे

31 अब एक और पर्दा बनाना। इस के लिए भी बारीक कतान और नीले, अर्ग़वानी और क़िर्मिज़ी रंग का धागा इस्तेमाल करना। उस पर भी किसी माहिर कारीगर के कढ़ाई के काम से करूबी फ़रिश्तों का डिज़ाइन बनवाना। 32 इसे सोने की हुकों से कीकर की लकड़ी के चार सतूनों से लटकाना। इन सतूनों पर सोना चढ़ाया जाए और वह चाँदी के पाइयों पर खड़े हों। 33 यह पर्दा मुक़द्दस कमरे को मुक़द्दसतरीन कमरे से अलग करेगा जिस में अह्द का सन्दूक़ पड़ा रहेगा। पर्दे को लटकाने के बाद उस के पीछे मुक़द्दसतरीन कमरे में अह्द का सन्दूक़ रखना। 34 फिर अह्द के सन्दूक़ पर कफ़्फ़ारे का ढकना रखना।

35 जिस मेज़ पर मेरे लिए मख़्सूस की गई रोटियाँ पड़ी रहती हैं वह पर्दे के बाहर मुक़द्दस कमरे में शिमाल की तरफ़ रखी जाए। उस के मुक़ाबिल जुनूब की तरफ़ शमादान रखा जाए।

36 फिर ख़ैमे के दरवाज़े के लिए भी पर्दा बनाया जाए। इस के लिए भी बारीक कतान और नीले, अर्ग़वानी और क़िर्मिज़ी रंग का धागा इस्तेमाल किया जाए। इस पर कढ़ाई का काम किया जाए।

37 इस पर्दे को सोने की हुकों से कीकर की लकड़ी के पाँच सतूनों से लटकाना। इन सतूनों पर भी सोना चढ़ाया जाए, और वह पीतल के पाइयों पर खड़े हों।

जानवरों को चढ़ाने की क़ुर्बानगाह

27 1 कीकर की लकड़ी की क़ुर्बानगाह बनाना। उस की ऊँचाई साढे चार फ़ुट हो जबकि उस की लम्बाई और चौड़ाई साढे सात सात फ़ुट हो। 2 उस के ऊपर चारों कोनों में से एक एक सींग निकले। सींग और क़ुर्बानगाह एक ही टुकड़े के हों। सब पर पीतल चढ़ाना। 3 उस का तमाम साज़-ओ-सामान और बर्तन भी पीतल के हों यानी राख को उठा कर ले जाने की बालटियाँ, बेलचे, काँटे, जलते हुए कोइले के लिए बर्तन और छिड़काओ के कटोरे। 4 क़ुर्बानगाह को उठाने के लिए पीतल का जंगला बनाना जो ऊपर से खुला हो। जंगले के चारों कोनों पर कड़े लगाए जाएँ। 5 क़ुर्बानगाह की आधी ऊँचाई पर किनारा लगाना, और क़ुर्बानगाह को जंगले में इस किनारे तक रखा जाए। 6 उसे उठाने के लिए कीकर की दो लकड़ियाँ बनाना जिन पर पीतल चढ़ाना है। 7 उन को क़ुर्बानगाह के दोनों तरफ़ के कड़ों में डाल देना।

8 पूरी क़ुर्बानगाह लकड़ी की हो, लेकिन अन्दर से खोखली हो। उसे ऐन उस नमूने के मुताबिक़ बनाना जो मैं तुझे पहाड़ पर दिखाता हूँ।

ख़ैमे का सहन

9 मुक़द्दस ख़ैमे के लिए सहन बनाना। उस की चारदीवारी बारीक कतान के कपड़े से बनाई जाए। चारदीवारी की लम्बाई जुनूब की तरफ़ 150 फ़ुट हो। 10 कपड़े को चाँदी की हुकों और पट्टियों से लकड़ी के 20 खम्बों के साथ लगाया जाए। हर खम्बा पीतल के पाए पर खड़ा हो। 11 चारदीवारी शिमाल की तरफ़ भी इसी की मानिन्द हो। 12 ख़ैमे के पीछे मग़रिब की तरफ़ चारदीवारी की चौड़ाई 75 फ़ुट हो और कपड़ा लकड़ी के 10 खम्बों के साथ लगाया जाए। यह खम्बे भी पीतल के पाइयों पर खड़े हों।

13 सामने, मशरिक़ की तरफ़ जहाँ से सूरज तुलू होता है चारदीवारी की चौड़ाई भी 75 फ़ुट हो। 14–15 यहाँ चारदीवारी का दरवाज़ा हो। कपड़ा दरवाज़े के दाईं तरफ़ साढे 22 फ़ुट चौड़ा हो और उस के बाईं तरफ़ भी उतना ही चौड़ा। उसे दोनों तरफ़ तीन तीन लकड़ी के खम्बों के साथ लगाया जाए जो पीतल के पाइयों पर खड़े हों। 16 दरवाज़े का पर्दा 30 फ़ुट चौड़ा बनाना। वह नीले, अर्ग़वानी और क़िर्मिज़ी रंग के धागे और बारीक कतान से बनाया जाए, और उस पर कढ़ाई का काम हो। यह कपड़ा लकड़ी के

चार खम्बों के साथ लगाया जाए। वह भी पीतल के पाइयों पर खड़े हों।

17 तमाम खम्बे पीतल के पाइयों पर खड़े हों और कपड़ा चाँदी की हुकों और पट्टियों से हर खम्बे के साथ लगाया जाए। 18 चारदीवारी की लम्बाई 150 फ़ुट, चौड़ाई 75 फ़ुट और ऊँचाई साढे 7 फ़ुट हो। खम्बों के तमाम पाए पीतल के हों। 19 जो भी साज़-ओ-सामान मुक़द्दस ख़ैमे में इस्तेमाल किया जाता है वह सब पीतल का हो। ख़ैमे और चारदीवारी की मेख़ें भी पीतल की हों।

शमादान का तेल

20 इस्राईलियों को हुक्म देना कि वह तेरे पास कूटे हुए ज़ैतूनों का ख़ालिस तेल लाएँ ताकि मुक़द्दस कमरे के शमादान के चराग़ मुतवातिर जलते रहें। 21 हारून और उस के बेटे शमादान को मुलाक़ात के ख़ैमे के मुक़द्दस कमरे में रखें, उस पर्दे के सामने जिस के पीछे अह्द का सन्दूक़ है। उस में वह तेल डालते रहें ताकि वह रब्ब के सामने शाम से ले कर सुब्ह तक जलता रहे। इस्राईलियों का यह उसूल अबद तक क़ाइम रहे।

इमामों के लिबास

28 1 अपने भाई हारून और उस के बेटों नदब, अबीहू, इलीअज़र और इतमर को बुला। मैं ने उन्हें इस्राईलियों में से चुन लिया है ताकि वह इमामों की हैसियत से मेरी ख़िदमत करें। 2 अपने भाई हारून के लिए मुक़द्दस लिबास बनवाना जो पुरवक़ार और शानदार हों। 3 लिबास बनाने की ज़िम्मादारी उन तमाम लोगों को देना जो ऐसे कामों में माहिर हैं और जिन को मैं ने हिक्मत की रूह से भर दिया है। क्यूँकि जब हारून को मख़्सूस किया जाएगा और वह मुक़द्दस ख़ैमे की ख़िदमत सरअन्जाम देगा तो उसे इन कपड़ों की ज़रूरत होगी।

4 उस के लिए यह लिबास बनाने हैं : सीने का कीसा, बालापोश, चोग़ा, बुना हुआ ज़ेरजामा, पगड़ी और कमरबन्द। यह कपड़े अपने भाई हारून और उस के बेटों के लिए बनवाने हैं ताकि वह इमाम के तौर पर ख़िदमत कर सकें। 5 इन कपड़ों के लिए सोना और नीले, अर्ग़वानी और क़िर्मिज़ी रंग का धागा और बारीक कतान इस्तेमाल किया जाए।

हारून का बालापोश

6 बालापोश को भी सोने और नीले, अर्ग़वानी और क़िर्मिज़ी रंग के धागे और बारीक कतान से बनाना है। उस पर किसी माहिर कारीगर से कड़ाई का काम करवाया जाए। 7 उस की दो पट्टियाँ हों जो कंधों पर रख कर सामने और पीछे से बालापोश के साथ लगी हों। 8 इस के इलावा एक पटका बुनना है जिस से बालापोश को बाँधा जाए और जो बालापोश के साथ एक टुकड़ा हो। उस के लिए भी सोना, नीले, अर्ग़वानी और क़िर्मिज़ी रंग का धागा और बारीक कतान इस्तेमाल किया जाए।

9 फिर अक़ीक़-ए-अह्मर के दो पत्थर चुन कर उन पर इस्राईल के बारह बेटों के नाम कन्दा करना। 10 हर जौहर पर छः छः नाम उन की पैदाइश की तर्तीब के मुताबिक़ कन्दा किए जाएँ। 11 यह नाम उस तरह जौहरों पर कन्दा किए जाएँ जिस तरह मुहर कन्दा की जाती है। फिर दोनों जौहर सोने के ख़ानों में जड़ कर 12 बालापोश की दो पट्टियों पर ऐसे लगाना कि कंधों पर आ जाएँ। जब हारून मेरे हुज़ूर आएगा तो जौहरों पर के यह नाम उस के कंधों पर होंगे और मुझे इस्राईलियों की याद दिलाएँगे।

13 सोने के ख़ाने बनाना 14 और ख़ालिस सोने की दो ज़न्जीरें जो डोरी की तरह गुंधी हुई हों। फिर इन दो ज़न्जीरों को सोने के ख़ानों के साथ लगाना।

सीने का कीसा

15 सीने के लिए कीसा बनाना। उस में वह क़ुरए पड़े रहें जिन की मारिफ़त मेरी मर्ज़ी मालूम की जाएगी। माहिर कारीगर उसे उन ही चीज़ों से बनाए जिन से हारून का बालापोश बनाया गया है यानी सोने

और नीले, अर्ग़वानी और क़िर्मिज़ी रंग के धागे और बारीक कतान से। 16 जब कपड़े को एक दफ़ा तह किया गया हो तो कीसे की लम्बाई और चौड़ाई नौ नौ इंच हो।

17 उस पर चार क़तारों में जवाहिर जड़ना। हर क़तार में तीन तीन जौहर हों। पहली क़तार में लाल [o], ज़बर्जद [p] और ज़ुमुर्रद। 18 दूसरी में फ़ीरोज़ा, संग-ए-लाजवर्द [q] और हज्र-उल-क़मर [r]। 19 तीसरी में ज़रक़ोन [s], अक़ीक़ [t] और याक़ूत-ए-अर्ग़वानी [u]। 20 चौथी में पुखराज [v], अक़ीक़-ए-अह्मर [w] और यशब [x]। हर जौहर सोने के ख़ाने में जड़ा हुआ हो। 21 यह बारह जवाहिर इस्राईल के बारह क़बीलों की नुमाइन्दगी करते हैं। एक एक जौहर पर एक क़बीले का नाम कन्दा किया जाए। यह नाम उस तरह कन्दा किए जाएँ जिस तरह मुहर कन्दा की जाती है।

22 सीने के कीसे पर ख़ालिस सोने की दो ज़न्जीरें लगाना जो डोरी की तरह गुंधी हुई हों। 23 उन्हें लगाने के लिए दो कड़े बना कर कीसे के ऊपर के दो कोनों पर लगाना। 24 अब दोनों ज़न्जीरें उन दो कड़ों से लगाना। 25 उन के दूसरे सिरे बालापोश की कंधों वाली पट्टियों के दो ख़ानों के साथ जोड़ देना, फिर सामने की तरफ़ लगाना। 26 कीसे के निचले दो कोनों पर भी सोने के दो कड़े लगाना। वह अन्दर, बालापोश की तरफ़ लगे हों। 27 अब दो और कड़े बना कर बालापोश की कंधों वाली पट्टियों पर लगाना। यह भी सामने की तरफ़ लगे हों लेकिन नीचे, बालापोश के पटके के ऊपर ही। 28 सीने के कीसे के निचले कड़े नीली डोरी से बालापोश के इन निचले कड़ों के साथ बाँधे जाएँ। यूँ कीसा पटके के ऊपर अच्छी तरह सीने के साथ लगा रहेगा।

29 जब भी हारून मक़्दिस में दाख़िल हो कर रब्ब के हुज़ूर आएगा वह इस्राईली क़बीलों के नाम अपने दिल पर सीने के कीसे की सूरत में साथ ले जाएगा। यूँ वह क़ौम की याद दिलाता रहेगा।

30 सीने के कीसे में दोनों क़ुरए बनाम ऊरीम और तुम्मीम रखे जाएँ। वह भी मक़्दिस में रब्ब के सामने आते वक़्त हारून के दिल पर हों। यूँ जब हारून रब्ब के हुज़ूर होगा तो रब्ब की मर्ज़ी पूछने का वसीला हमेशा उस के दिल पर होगा।

हारून का चोग़ा

31 चोग़ा भी बुनना। वह पूरी तरह नीले धागे से बनाया जाए। चोग़े को बालापोश से पहले पहना जाए। 32 उस के गिरीबान को बुने हुए कालर से मज़्बूत किया जाए ताकि वह न फटे। 33 नीले, अर्ग़वानी और क़िर्मिज़ी रंग के धागे से अनार बना कर उन्हें चोग़े के दामन में लगा देना। उन के दर्मियान सोने की घंटियाँ लगाना। 34 दामन में अनार और घंटियाँ बारी बारी लगाना।

---

[o] या एक क़िस्म का सुर्ख़ अक़ीक़। याद रहे कि चूँकि क़दीम ज़माने के अक्सर जवाहिरात के नाम मतरूक हैं या उन का मतलब बदल गया है, इस लिए उन का मुख़्तलिफ़ तर्जुमा हो सकता है।

[p] peridot

[q] lapis lazuli

[r] moonstone

[s] hyacinth

[t] agate

[u] amethyst

[v] topas

[w] carnelian

[x] jasper

[35] हारून ख़िदमत करते वक़्त हमेशा चोग़ा पहने। जब वह मक़्दिस में रब्ब के हुज़ूर आएगा और वहाँ से निकलेगा तो घंटियाँ सुनाई देंगी। फिर वह नहीं मरेगा।

माथे पर छोटी तख़्ती, ज़ेरजामा और पगड़ी

[36] ख़ालिस सोने की तख़्ती बना कर उस पर यह अल्फ़ाज़ कन्दा करना, 'रब्ब के लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस।' यह अल्फ़ाज़ यूँ कन्दा किए जाएँ जिस तरह मुहर कन्दा की जाती है। [37] उसे नीली डोरी से पगड़ी के सामने वाले हिस्से से लगाया जाए [38] ताकि वह हारून के माथे पर पड़ी रहे। जब भी वह मक़्दिस में जाए तो यह तख़्ती साथ हो। जब इस्राईली अपने नज़राने ला कर रब्ब के लिए मख़्सूस करें लेकिन किसी ग़लती के बाइस क़ुसूरवार हों तो उन का यह क़ुसूर हारून पर मुन्तक़िल होगा। इस लिए यह तख़्ती हर वक़्त उस के माथे पर हो ताकि रब्ब इस्राईलियों को क़बूल कर ले।

[39] ज़ेरजामे को बारीक कतान से बुनना और इस तरह पगड़ी भी। फिर कमरबन्द बनाना। उस पर कढ़ाई का काम किया जाए।

बाक़ी लिबास

[40] हारून के बेटों के लिए भी ज़ेरजामे, कमरबन्द और पगड़ियाँ बनाना ताकि वह पुरवक़ार और शानदार नज़र आएँ। [41] यह सब अपने भाई हारून और उस के बेटों को पहनाना। उन के सरों पर तेल उंडेल कर उन्हें मसह करना। यूँ उन्हें उन के उह्दे पर मुक़र्रर करके मेरी ख़िदमत के लिए मख़्सूस करना। [42] उन के लिए कतान के पाजामे भी बनाना ताकि वह ज़ेरजामे के नीचे नंगे न हों। उन की लम्बाई कमर से रान तक हो। [43] जब भी हारून और उस के बेटे मुलाक़ात के ख़ैमे में दाख़िल हों तो उन्हें यह पाजामे पहनने हैं। इसी तरह जब उन्हें मुक़द्दस कमरे में ख़िदमत करने के लिए क़ुर्बानगाह के पास आना होता है तो वह यह पहनें, वर्ना वह क़ुसूरवार ठहर कर मर जाएँगे। यह हारून और उस की औलाद के लिए एक अबदी उसूल है।

इमामों की मख़्सूसियत

29 [1] इमामों को मक़्दिस में मेरी ख़िदमत के लिए मख़्सूस करने का यह तरीक़ा है :

एक जवान बैल और दो बेऐब मेंढे चुन लेना। [2] बेहतरीन मैदे से तीन क़िस्म की चीज़ें पकाना जिन में ख़मीर न हो। पहले, सादा रोटी। दूसरे, रोटी जिस में तेल डाला गया हो। तीसरे, रोटी जिस पर तेल लगाया गया हो। [3] यह चीज़ें टोकरी में रख कर जवान बैल और दो मेंढों के साथ रब्ब को पेश करना। [4] फिर हारून और उस के बेटों को मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर ला कर ग़ुसल कराना। [5] इस के बाद ज़ेरजामा, चोग़ा, बालापोश और सीने का कीसा ले कर हारून को पहनाना। बालापोश को उस के महारत से बुने हुए पटके के ज़रीए बाँधना। [6] उस के सर पर पगड़ी बाँध कर उस पर सोने की मुक़द्दस तख़्ती लगाना। [7] हारून के सर पर मसह का तेल उंडेल कर उसे मसह करना।

[8] फिर उस के बेटों को आगे ला कर ज़ेरजामा पहनाना। [9] उन के पगड़ियाँ और कमरबन्द बाँधना। यूँ तू हारून और उस के बेटों को उन के मन्सब पर मुक़र्रर करना। सिर्फ़ वह और उन की औलाद हमेशा तक मक़्दिस में मेरी ख़िदमत करते रहें।

[10] बैल को मुलाक़ात के ख़ैमे के सामने लाना। हारून और उस के बेटे उस के सर पर अपने हाथ रखें। [11] उसे ख़ैमे के दरवाज़े के सामने रब्ब के हुज़ूर ज़बह करना। [12] बैल के ख़ून में से कुछ ले कर अपनी उंगली से क़ुर्बानगाह के सींगों पर लगाना और बाक़ी ख़ून क़ुर्बानगाह के पाए पर उंडेल देना। [13] अंतड़ियों पर की तमाम चर्बी, जोड़कलेजी और दोनों गुर्दे उन की चर्बी समेत ले कर क़ुर्बानगाह पर जला देना। [14] लेकिन बैल के गोश्त, खाल और अंतड़ियों के गोबर को ख़ैमागाह के बाहर जला देना। यह गुनाह की क़ुर्बानी है।

15 इस के बाद पहले मेंढे को ले आना। हारून और
उस के बेटे अपने हाथ मेंढे के सर पर रखें। 16 उसे
ज़बह करके उस का ख़ून क़ुर्बानगाह के चार पहलूओं
पर छिड़कना। 17 मेंढे को टुकड़े टुकड़े करके उस की
अंतड़ियों और पिंडलियों को धोना। फिर उन्हें सर
और बाक़ी टुकड़ों के साथ मिला कर 18 पूरे मेंढे को
क़ुर्बानगाह पर जला देना। जलने वाली यह क़ुर्बानी
रब्ब के लिए भस्म होने वाली क़ुर्बानी है, और उस
की ख़ुश्बू रब्ब को पसन्द है।

19 अब दूसरे मेंढे को ले आना। हारून और उस
के बेटे अपने हाथ मेंढे के सर पर रखें। 20 उस को
ज़बह करना। उस के ख़ून में से कुछ ले कर हारून
और उस के बेटों के दहने कान की लौ पर लगाना।
इसी तरह ख़ून को उन के दहने हाथ और दहने पाँओ
के अंगूठों पर भी लगाना। बाक़ी ख़ून क़ुर्बानगाह के
चार पहलूओं पर छिड़कना। 21 जो ख़ून क़ुर्बानगाह
पर पड़ा है उस में से कुछ ले कर और मसह के तेल
के साथ मिला कर हारून और उस के कपड़ों पर
छिड़कना। इसी तरह उस के बेटों और उन के कपड़ों
पर भी छिड़कना। यूँ वह और उस के बेटे ख़िदमत
के लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस हो जाएँगे।

22 इस मेंढे का ख़ास मक़सद यह है कि हारून
और उस के बेटों को मक़्दिस में ख़िदमत करने का
इख़तियार और उह्दा दिया जाए। मेंढे की चर्बी, दुम,
अंतड़ियों पर की सारी चर्बी, जोड़कलेजी, दोनों गुर्दे
उन की चर्बी समेत और दहनी रान अलग करनी है।
23 उस टोकरी में से जो रब्ब के हुज़ूर यानी ख़ैमे के
दरवाज़े पर पड़ी है एक सादा रोटी, एक रोटी जिस
में तेल डाला गया हो और एक रोटी जिस पर तेल
लगाया गया हो निकालना। 24 मेंढे से अलग की गई
चीज़ें और बेख़मीरी रोटी की टोकरी की यह चीज़ें ले
कर हारून और उस के बेटों के हाथों में देना, और
वह उन्हें हिलाने वाली क़ुर्बानी के तौर पर रब्ब के
सामने हिलाएँ। 25 फिर यह चीज़ें उन से वापस ले कर
भस्म होने वाली क़ुर्बानी के साथ क़ुर्बानगाह पर जला
देना। यह रब्ब के लिए जलने वाली क़ुर्बानी है, और
उस की ख़ुश्बू रब्ब को पसन्द है।

26 अब उस मेंढे का सीना लेना जिस की मारिफ़त
हारून को इमाम-ए-आज़म का इख़तियार दिया जाता
है। सीने को भी हिलाने वाली क़ुर्बानी के तौर पर
रब्ब के सामने हिलाना। यह सीना क़ुर्बानी का तेरा
हिस्सा होगा। 27 यूँ तुझे हारून और उस के बेटों की
मख़्सूसियत के लिए मुस्तामल मेंढे के टुकड़े मख़्सूस-
ओ-मुक़द्दस करने हैं। उस के सीने को रब्ब के सामने
हिलाने वाली क़ुर्बानी के तौर पर हिलाया जाए और
उस की रान को उठाने वाली क़ुर्बानी के तौर पर
उठाया जाए। 28 हारून और उस की औलाद को
इस्राईलियों की तरफ़ से हमेशा तक यह मिलने का
हक़ है। जब भी इस्राईली रब्ब को अपनी सलामती
की क़ुर्बानियाँ पेश करें तो इमामों को यह दो टुकड़े
मिलेंगे।

29 जब हारून फ़ौत हो जाएगा तो उस के मुक़द्दस
लिबास उस की औलाद में से उस मर्द को देने हैं जिसे
मसह करके हारून की जगह मुक़र्रर किया जाएगा।
30 जो बेटा उस की जगह मुक़र्रर किया जाएगा और
मक़्दिस में ख़िदमत करने के लिए मुलाक़ात के ख़ैमे
में आएगा वह यह लिबास सात दिन तक पहने रहे।

31 जो मेंढा हारून और उस के बेटों की मख़्सूसियत
के लिए ज़बह किया गया है उसे मुक़द्दस जगह पर
उबालना है। 32 फिर हारून और उस के बेटे मुलाक़ात
के ख़ैमे के दरवाज़े पर मेंढे का गोश्त और टोकरी की
बेख़मीरी रोटियाँ खाएँ। 33 वह यह चीज़ें खाएँ जिन
से उन्हें गुनाहों का कफ़्फ़ारा और इमाम का उह्दा
मिला है। लेकिन कोई और यह न खाए, क्यूँकि यह
मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस हैं। 34 और अगर अगली सुब्ह
तक इस गोश्त या रोटी में से कुछ बच जाए तो उसे
जलाया जाए। उसे खाना मना है, क्यूँकि वह मुक़द्दस
है।

35 जब तू हारून और उस के बेटों को इमाम मुक़र्रर
करेगा तो ऐन मेरी हिदायत पर अमल करना। यह
तक़्रीब सात दिन तक मनाई जाए। 36 इस के दौरान

गुनाह की क़ुर्बानी के तौर पर रोज़ाना एक जवान बैल
ज़बह करना। इस से तू क़ुर्बानगाह का कफ़्फ़ारा दे
कर उसे हर तरह की नापाकी से पाक करेगा। इस के
इलावा उस पर मसह का तेल उंडेलना। इस से वह
मेरे लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस हो जाएगा। 37 सात दिन
तक क़ुर्बानगाह का कफ़्फ़ारा दे कर उसे पाक-साफ़
करना और उसे तेल से मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस करना।
फिर क़ुर्बानगाह निहायत मुक़द्दस होगी। जो भी उसे
छुएगा वह भी मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस हो जाएगा।

रोज़मर्रा की क़ुर्बानियाँ

38 रोज़ाना एक एक साल के दो भेड़ के नर बच्चे
क़ुर्बानगाह पर जला देना, 39 एक को सुब्ह के वक़्त,
दूसरे को सूरज के ग़ुरूब होने के ऐन बाद। 40 पहले
जानवर के साथ डेढ़ किलोग्राम बेहतरीन मैदा पेश
किया जाए जो कूटे हुए ज़ैतूनों के एक लिटर तेल के
साथ मिलाया गया हो। मै की नज़र के तौर पर एक
लिटर मै भी क़ुर्बानगाह पर उंडेलना। 41 दूसरे जानवर
के साथ भी ग़ल्ला और मै की यह दो नज़रें पेश की
जाएँ। ऐसी क़ुर्बानी की ख़ुश्बू रब्ब को पसन्द है।
42 लाज़िम है कि आने वाली तमाम नसलें भस्म होने
वाली यह क़ुर्बानी बाक़ाइदगी से मुक़द्दस ख़ैमे के
दरवाज़े पर रब्ब के हुज़ूर चढ़ाएँ। वहाँ मैं तुम से
मिला करूँगा और तुम से हमकलाम हूँगा। 43 वहाँ
मैं इस्राईलियों से भी मिला करूँगा, और वह जगह
मेरे जलाल से मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस हो जाएगी। 44 यूँ
मैं मुलाक़ात के ख़ैमे और क़ुर्बानगाह को मख़्सूस
करूँगा और हारून और उस के बेटों को मख़्सूस
करूँगा ताकि वह इमामों की हैसियत से मेरी ख़िदमत
करें।
45 तब मैं इस्राईलियों के दर्मियान रहूँगा और उन
का ख़ुदा हूँगा। 46 वह जान लेंगे कि मैं रब्ब उन का
ख़ुदा हूँ, कि मैं उन्हें मिस्र से निकाल लाया ताकि उन
के दर्मियान सुकूनत करूँ। मैं रब्ब उन का ख़ुदा हूँ।

बख़ूर जलाने की क़ुर्बानगाह

30 1 कीकर की लकड़ी की क़ुर्बानगाह बनाना
जिस पर बख़ूर जलाया जाए। 2 वह डेढ़ फ़ुट
लम्बी, इतनी ही चौड़ी और तीन फ़ुट ऊँची हो। उस
के चारों कोनों में से सींग निकलें जो क़ुर्बानगाह के
साथ एक ही टुकड़े से बनाए गए हों। 3 उस की ऊपर
की सतह, उस के चार पहलूओं और उस के सींगों
पर ख़ालिस सोना चढ़ाना। ऊपर की सतह के इर्दगिर्द
सोने की झालर हो। 4 सोने के दो कड़े बना कर उन्हें
उस झालर के नीचे एक दूसरे के मुक़ाबिल पहलूओं
पर लगाना। इन कड़ों में क़ुर्बानगाह को उठाने की
लकड़ियाँ डाली जाएँगी। 5 यह लकड़ियाँ कीकर की
हों, और उन पर भी सोना चढ़ाना।
6 इस क़ुर्बानगाह को ख़ैमे के मुक़द्दस कमरे में उस
पर्दे के सामने रखना जिस के पीछे अह्द का सन्दूक़
और उस का ढकना होंगे, वह ढकना जहाँ मैं तुझ
से मिला करूँगा। 7 जब हारून हर सुब्ह शमादान के
चराग़ तय्यार करे उस वक़्त वह उस पर ख़ुश्बूदार
बख़ूर जलाए। 8 सूरज के ग़ुरूब होने के बाद भी जब
वह दुबारा चराग़ों की देख-भाल करेगा तो वह साथ
साथ बख़ूर जलाए। यूँ रब्ब के सामने बख़ूर मुतवातिर
जलता रहे। लाज़िम है कि बाद की नसलें भी इस
उसूल पर क़ाइम रहें।
9 इस क़ुर्बानगाह पर सिर्फ़ जाइज़ बख़ूर इस्तेमाल
किया जाए। इस पर न तो जानवरों की क़ुर्बानियाँ
चढ़ाई जाएँ, न ग़ल्ला या मै की नज़रें पेश की जाएँ।
10 हारून साल में एक दफ़ा उस का कफ़्फ़ारा दे कर
उसे पाक करे। इस के लिए वह कफ़्फ़ारे के दिन उस
क़ुर्बानी का कुछ ख़ून सींगों पर लगाए। यह उसूल भी
अबद तक क़ाइम रहे। यह क़ुर्बानगाह रब्ब के लिए
निहायत मुक़द्दस है।”

मर्दुमशुमारी के पैसे

11 रब्ब ने मूसा से कहा, 12 “जब भी तू इस्राईलियों
की मर्दुमशुमारी करे तो लाज़िम है कि जिन का शुमार

किया गया हो वह रब्ब को अपनी जान का फ़िद्या दें
ताकि उन में वबा न फैले। [13] जिस जिस का शुमार
किया गया हो वह चाँदी के आधे सिक्के के बराबर
रक़म उठाने वाली क़ुर्बानी के तौर पर दे। सिक्के का
वज़न मक़्दिस के सिक्कों के बराबर हो। यानी चाँदी के
सिक्के का वज़न 11 ग्राम हो, इस लिए छः ग्राम चाँदी
देनी है। [14] जिस की भी उम्र 20 साल या इस से ज़ाइद
हो वह रब्ब को यह रक़म उठाने वाली क़ुर्बानी के तौर
पर दे। [15] अमीर और ग़रीब दोनों इतना ही दें, क्यूँकि
यही नज़राना रब्ब को पेश करने से तुम्हारी जान का
कफ़्फ़ारा दिया जाता है। [16] कफ़्फ़ारे की यह रक़म
मुलाक़ात के ख़ैमे की ख़िदमत के लिए इस्तेमाल
करना। फिर यह नज़राना रब्ब को याद दिलाता रहेगा
कि तुम्हारी जानों का कफ़्फ़ारा दिया गया है।”

धोने का हौज़

[17] रब्ब ने मूसा से कहा, [18] “पीतल का ढाँचा बनाना
जिस पर पीतल का हौज़ बना कर रखना है। यह हौज़
धोने के लिए है। उसे सहन में मुलाक़ात के ख़ैमे और
जानवरों को चढ़ाने की क़ुर्बानगाह के दर्मियान रख
कर पानी से भर देना। [19] हारून और उस के बेटे अपने
हाथ-पाँओ धोने के लिए उस का पानी इस्तेमाल करें।
[20] मुलाक़ात के ख़ैमे में दाख़िल होने से पहले ही वह
अपने आप को धोएँ वर्ना वह मर जाएँगे। इसी तरह
जब भी वह ख़ैमे के बाहर की क़ुर्बानगाह पर जानवरों
की क़ुर्बानियाँ चढ़ाएँ [21] तो लाज़िम है कि पहले हाथ-
पाँओ धो लें, वर्ना वह मर जाएँगे। यह उसूल हारून
और उस की औलाद के लिए हमेशा तक क़ाइम रहे।”

मसह का तेल

[22] रब्ब ने मूसा से कहा, [23] “मसह के तेल के
लिए उम्दा क़िस्म के मसाले इस्तेमाल करना।
6 किलोग्राम आब-ए-मुर, 3 किलोग्राम ख़ुश्बूदार
दारचीनी, 3 किलोग्राम ख़ुश्बूदार बेद [24] और 6
किलोग्राम तेजपात। यह चीज़ें मक़्दिस के बाटों के
हिसाब से तोल कर चार लिटर ज़ैतून के तेल में
डालना। [25] सब कुछ मिला कर ख़ुश्बूदार तेल तय्यार
करना। वह मुक़द्दस है और सिर्फ़ उस वक़्त इस्तेमाल
किया जाए जब कोई चीज़ या शख़्स मेरे लिए मख़्सूस-
ओ-मुक़द्दस किया जाए।

[26] यही तेल ले कर मुलाक़ात का ख़ैमा और उस
का सारा सामान मसह करना यानी ख़ैमा, अह्द
का सन्दूक़, [27] मेज़ और उस का सामान, शमादान
और उस का सामान, बख़ूर जलाने की क़ुर्बानगाह,
[28] जानवरों को चढ़ाने की क़ुर्बानगाह और उस का
सामान, धोने का हौज़ और उस का ढाँचा। [29] यूँ तू
यह तमाम चीज़ें मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस करेगा। इस से
वह निहायत मुक़द्दस हो जाएँगी। जो भी उन्हें छुएगा
वह मुक़द्दस हो जाएगा।

[30] हारून और उस के बेटों को भी इस तेल से मसह
करना ताकि वह मुक़द्दस हो कर मेरे लिए इमाम का
काम सरअन्जाम दे सकें। [31] इस्राईलियों को कह
दे कि यह तेल हमेशा तक मेरे लिए मख़्सूस-ओ-
मुक़द्दस है। [32] इस लिए इसे अपने लिए इस्तेमाल न
करना और न इस तरकीब से अपने लिए तेल बनाना।
यह तेल मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस है और तुम्हें भी इसे यूँ
ठहराना है। [33] जो इस तरकीब से आम इस्तेमाल के
लिए तेल बनाता है या किसी आम शख़्स पर लगाता
है उसे उस की क़ौम में से मिटा डालना है।”

बख़ूर की क़ुर्बानी

[34] रब्ब ने मूसा से कहा, “बख़ूर इस तरकीब
से बनाना है : मस्तकी, ओनिका [y], बिरीजा और
ख़ालिस लुबान बराबर के हिस्सों में [35] मिला कर
ख़ुश्बूदार बख़ूर बनाना। इत्रसाज़ का यह काम
नमकीन, ख़ालिस और मुक़द्दस हो। [36] इस में से कुछ
पीस कर पाउडर बनाना और मुलाक़ात के ख़ैमे में

---

[y] onycha (unguis odoratus)

अह्द के सन्दूक़ के सामने डालना जहाँ मैं तुझ से मिला करूँगा।

इस बख़ूर को मुक़द्दसतरीन ठहराना। [37] इसी तरकीब के मुताबिक़ अपने लिए बख़ूर न बनाना। इसे रब्ब के लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस ठहराना है। [38] जो भी अपने ज़ाती इस्तेमाल के लिए इस क़िस्म का बख़ूर बनाए उसे उस की क़ौम में से मिटा डालना है।"

बज़लीएल और उहलियाब

31 [1] फिर रब्ब ने मूसा से कहा, [2] "मैं ने यहूदाह के क़बीले के बज़लीएल बिन ऊरी बिन हूर को चुन लिया है ताकि वह मुक़द्दस ख़ैमे की तामीर में राहनुमाई करे। [3] मैं ने उसे इलाही रूह से मामूर करके हिक्मत, समझ और तामीर के हर काम के लिए दरकार इल्म दे दिया है। [4] वह नक़्शे बना कर उन के मुताबिक़ सोने, चाँदी और पीतल की चीज़ें बना सकता है। [5] वह जवाहिर को काट कर जड़ने की क़ाबिलियत रखता है। वह लकड़ी को तराश कर उस से मुख़्तलिफ़ चीज़ें बना सकता है। वह बहुत सारे और कामों में भी महारत रखता है।

[6] साथ ही मैं ने दान के क़बीले के उहलियाब बिन अख़ीसमक को मुक़र्रर किया है ताकि वह हर काम में उस की मदद करे। इस के इलावा मैं ने तमाम समझदार कारीगरों को महारत दी है ताकि वह सब कुछ उन हिदायात के मुताबिक़ बना सकें जो मैं ने तुझे दी हैं। [7] यानी मुलाक़ात का ख़ैमा, कफ़्फ़ारे के ढकने समेत अह्द का सन्दूक़ और ख़ैमे का सारा दूसरा सामान, [8] मेज़ और उस का सामान, ख़ालिस सोने का शमादान और उस का सामान, बख़ूर जलाने की क़ुर्बानगाह, [9] जानवरों को चढ़ाने की क़ुर्बानगाह और उस का सामान, धोने का हौज़ उस ढाँचे समेत जिस पर वह रखा जाता है, [10] वह लिबास जो हारून और उस के बेटे मक़्दिस में ख़िदमत करने के लिए पहनते हैं, [11] मसह का तेल और मक़्दिस के लिए ख़ुश्बूदार बख़ूर। यह सब कुछ वह वैसे ही बनाएँ जैसे मैं ने तुझे हुक्म दिया है।"

सबत यानी हफ़्ते का दिन

[12] रब्ब ने मूसा से कहा, [13] "इस्राईलियों को बता कि हर सबत का दिन ज़रूर मनाओ। क्यूँकि सबत का दिन एक नुमायाँ निशान है जिस से जान लिया जाएगा कि मैं रब्ब हूँ जो तुम्हें मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस करता हूँ। और यह निशान मेरे और तुम्हारे दर्मियान नसल-दर-नसल क़ाइम रहेगा। [14] सबत का दिन ज़रूर मनाना, क्यूँकि वह तुम्हारे लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस है। जो भी उस की बेहुरमती करे वह ज़रूर जान से मारा जाए। जो भी इस दिन काम करे उसे उस की क़ौम में से मिटाया जाए। [15] छः दिन काम करना, लेकिन सातवाँ दिन आराम का दिन है। वह रब्ब के लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस है।

[16] इस्राईलियों को हाल में और मुस्तक़बिल में सबत का दिन अबदी अह्द समझ कर मनाना है। [17] वह मेरे और इस्राईलियों के दर्मियान अबदी निशान होगा। क्यूँकि रब्ब ने छः दिन के दौरान आस्मान-ओ-ज़मीन को बनाया जबकि सातवें दिन उस ने आराम किया और ताज़ादम हो गया।"

रब्ब शरीअत की तख़्तियाँ देता है

[18] यह सब कुछ मूसा को बताने के बाद रब्ब ने उसे सीना पहाड़ पर शरीअत की दो तख़्तियाँ दीं। अल्लाह ने ख़ुद पत्थर की इन तख़्तियों पर तमाम बातें लिखी थीं।

सोने का बछड़ा

32 [1] पहाड़ के दामन में लोग मूसा के इन्तिज़ार में रहे, लेकिन बहुत देर हो गई। एक दिन वह हारून के गिर्द जमा हो कर कहने लगे, "आएँ, हमारे लिए देवता बना दें जो हमारे आगे आगे चलते हुए हमारी राहनुमाई करें। क्यूँकि क्या मालूम कि उस

बन्दे मूसा को क्या हुआ है जो हमें मिस्र से निकाल
लाया।”

[2] जवाब में हारून ने कहा, “आप की बीवियाँ, बेटे
और बेटियाँ अपनी सोने की बालियाँ उतार कर मेरे
पास ले आएँ।” [3] सब लोग अपनी बालियाँ उतार
उतार कर हारून के पास ले आए [4] तो उस ने यह
ज़ेवरात ले कर बछड़ा ढाल दिया। बछड़े को देख
कर लोग बोल उठे, “ऐ इस्राईल, यह तेरे देवता हैं
जो तुझे मिस्र से निकाल लाए।”

[5] जब हारून ने यह देखा तो उस ने बछड़े के
सामने क़ुर्बानगाह बना कर एलान किया, “कल हम
रब्ब की ताज़ीम में ईद मनाएँगे।” [6] अगले दिन लोग
सुब्ह-सवेरे उठे और भस्म होने वाली क़ुर्बानियाँ और
सलामती की क़ुर्बानियाँ चढ़ाईं। वह खाने-पीने के
लिए बैठ गए और फिर उठ कर रंगरलियों में अपने
दिल बहलाने लगे।

मूसा अपनी क़ौम की शफ़ाअत करता है

[7] उस वक़्त रब्ब ने मूसा से कहा, “पहाड़ से उतर
जा। तेरे लोग जिन्हें तू मिस्र से निकाल लाया बड़ी
शरारतें कर रहे हैं। [8] वह कितनी जल्दी से उस रास्ते
से हट गए हैं जिस पर चलने के लिए मैं ने उन्हें हुक्म
दिया था। उन्हों ने अपने लिए ढाला हुआ बछड़ा बना
कर उसे सिज्दा किया है। उन्हों ने उसे क़ुर्बानियाँ पेश
करके कहा है, ‘ऐ इस्राईल, यह तेरे देवता हैं। यही
तुझे मिस्र से निकाल लाए हैं’।” [9] अल्लाह ने मूसा से
कहा, “मैं ने देखा है कि यह क़ौम बड़ी हटधर्म है।
[10] अब मुझे रोकने की कोशिश न कर। मैं उन पर
अपना ग़ज़ब उंडेल कर उन को रू-ए-ज़मीन पर से
मिटा दूँगा। उन की जगह मैं तुझ से एक बड़ी क़ौम
बना दूँगा।”

[11] लेकिन मूसा ने कहा, “ऐ रब्ब, तू अपनी क़ौम
पर अपना ग़ुस्सा क्यूँ उतारना चाहता है? तू ख़ुद
अपनी अज़ीम क़ुद्रत से उसे मिस्र से निकाल लाया
है। [12] मिस्री क्यूँ कहें, ‘रब्ब इस्राईलियों को सिर्फ़ इस
बुरे मक़्सद से हमारे मुल्क से निकाल ले गया है कि
उन्हें पहाड़ी इलाक़े में मार डाले और यूँ उन्हें रू-ए-
ज़मीन पर से मिटाए’? अपना ग़ुस्सा ठंडा होने दे और
अपनी क़ौम के साथ बुरा सुलूक करने से बाज़ रह।
[13] याद रख कि तू ने अपने ख़ादिमों इब्राहीम, इस्हाक़
और याक़ूब से अपनी ही क़सम खा कर कहा था,
‘मैं तुम्हारी औलाद की तादाद यूँ बढ़ाऊँगा कि वह
आस्मान के सितारों के बराबर हो जाएगी। मैं उन्हें
वह मुल्क दूँगा जिस का वादा मैं ने किया है, और
वह उसे हमेशा के लिए मीरास में पाएँगे’।”

[14] मूसा के कहने पर रब्ब ने वह नहीं किया जिस
का एलान उस ने कर दिया था बल्कि वह अपनी
क़ौम से बुरा सुलूक करने से बाज़ रहा।

बुतपरस्ती के नताइज

[15] मूसा मुड़ कर पहाड़ से उतरा। उस के हाथों में
शरीअत की दोनों तख़्तियाँ थीं। उन पर आगे पीछे
लिखा गया था। [16] अल्लाह ने ख़ुद तख़्तियों को बना
कर उन पर अपने अहकाम कन्दा किए थे।

[17] उतरते उतरते यशूअ ने लोगों का शोर सुना और
मूसा से कहा, “ख़ैमागाह में जंग का शोर मच रहा
है!” [18] मूसा ने जवाब दिया, “न तो यह फ़त्हमन्दों
के नारे हैं, न शिकस्त खाए हुओं की चीख़-पुकार।
मुझे गाने वालों की आवाज़ सुनाई दे रही है।”

[19] जब वह ख़ैमागाह के नज़्दीक पहुँचा तो उस ने
लोगों को सोने के बछड़े के सामने नाचते हुए देखा।
बड़े ग़ुस्से में आ कर उस ने तख़्तियों को ज़मीन पर
पटख़ दिया, और वह टुकड़े टुकड़े हो कर पहाड़ के
दामन में गिर गईं। [20] मूसा ने इस्राईलियों के बनाए हुए
बछड़े को जला दिया। जो कुछ बच गया उसे उस ने
पीस पीस कर पाउडर बना डाला और पाउडर पानी
पर छिड़क कर इस्राईलियों को पिला दिया।

[21] उस ने हारून से पूछा, “इन लोगों ने तुम्हारे साथ
क्या किया कि तुम ने उन्हें ऐसे बड़े गुनाह में फंसा
दिया?” [22] हारून ने कहा, “मेरे आक़ा। ग़ुस्से न हों।
आप ख़ुद जानते हैं कि यह लोग बदी पर तुले रहते
हैं। [23] उन्हों ने मुझ से कहा, ‘हमारे लिए देवता बना

दें जो हमारे आगे आगे चलते हुए हमारी राहनुमाई करें। क्यूँकि क्या मालूम कि उस बन्दे मूसा को क्या हुआ है जो हमें मिस्र से निकाल लाया।’
24 इस लिए मैं ने उन को बताया, ‘जिस के पास सोने के ज़ेवरात हैं वह उन्हें उतार लाए।’ जो कुछ उन्हों ने मुझे दिया उसे मैं ने आग में फैंक दिया तो होते होते सोने का यह बछड़ा निकल आया।”

25 मूसा ने देखा कि लोग बेकाबू हो गए हैं। क्यूँकि हारून ने उन्हें बेलगाम छोड़ दिया था, और यूँ वह इस्राईल के दुश्मनों के लिए मज़ाक़ का निशाना बन गए थे।
26 मूसा ख़ैमागाह के दरवाज़े पर खड़े हो कर बोला, “जो भी रब्ब का बन्दा है वह मेरे पास आए।” जवाब में लावी के क़बीले के तमाम लोग उस के पास जमा हो गए।
27 फिर मूसा ने उन से कहा, “रब्ब इस्राईल का ख़ुदा फ़रमाता है, ‘हर एक अपनी तल्वार ले कर ख़ैमागाह में से गुज़रे। एक सिरे के दरवाज़े से शुरू करके दूसरे सिरे के दरवाज़े तक चलते चलते हर मिलने वाले को जान से मार दो, चाहे वह तुम्हारा भाई, दोस्त या रिश्तेदार ही क्यूँ न हो। फिर मुड़ कर मारते मारते पहले दरवाज़े पर वापस आ जाओ’।”

28 लावियों ने मूसा की हिदायत पर अमल किया तो उस दिन तक़्रीबन 3,000 मर्द हलाक हुए।
29 यह देख कर मूसा ने लावियों से कहा, “आज अपने आप को मक़्दिस में रब्ब की ख़िदमत करने के लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस करो, क्यूँकि तुम अपने बेटों और भाइयों के ख़िलाफ़ लड़ने के लिए तय्यार थे। इस लिए रब्ब तुम को आज बर्कत देगा।”

30 अगले दिन मूसा ने इस्राईलियों से बात की, “तुम ने निहायत संगीन गुनाह किया है। तो भी मैं अब रब्ब के पास पहाड़ पर जा रहा हूँ। शायद मैं तुम्हारे गुनाह का कफ़्फ़ारा दे सकूँ।”

31 चुनाँचे मूसा ने रब्ब के पास वापस जा कर कहा, “हाय, इस क़ौम ने निहायत संगीन गुनाह किया है। उन्हों ने अपने लिए सोने का देवता बना लिया।
32 मेहरबानी करके उन्हें मुआफ़ कर। लेकिन अगर तू उन्हें मुआफ़ न करे तो फिर मुझे भी अपनी उस किताब में से मिटा दे जिस में तू ने अपने लोगों के नाम दर्ज किए हैं।”
33 रब्ब ने जवाब दिया, “मैं सिर्फ़ उस को अपनी किताब में से मिटाता हूँ जो मेरा गुनाह करता है।
34 अब जा, लोगों को उस जगह ले चल जिस का ज़िक्र मैं ने किया है। मेरा फ़रिश्ता तेरे आगे आगे चलेगा। लेकिन जब सज़ा का मुक़र्ररा दिन आएगा तब मैं उन्हें सज़ा दूँगा।”

35 फिर रब्ब ने इस्राईलियों के दर्मियान वबा फैलने दी, इस लिए कि उन्हों ने उस बछड़े की पूजा की थी जो हारून ने बनाया था।

33 1 रब्ब ने मूसा से कहा, “इस जगह से रवाना हो जा। उन लोगों को ले कर जिन को तू मिस्र से निकाल लाया है उस मुल्क को जा जिस का वादा मैं ने इब्राहीम, इस्हाक़ और याक़ूब से किया है। उन ही से मैं ने क़सम खा कर कहा था, ‘मैं यह मुल्क तुम्हारी औलाद को दूँगा।’
2 मैं तेरे आगे आगे फ़रिश्ता भेज कर कनआनी, अमोरी, हित्ती, फ़रिज़्ज़ी, हिव्वी और यबूसी अक़्वाम को उस मुल्क से निकाल दूँगा।
3 उठ, उस मुल्क को जा जहाँ दूध और शहद की कस्रत है। लेकिन मैं साथ नहीं जाऊँगा। तुम इतने हटधर्म हो कि अगर मैं साथ जाऊँ तो ख़त्रा है कि तुम्हें वहाँ पहुँचने से पहले ही बर्बाद कर दूँ।”

4 जब इस्राईलियों ने यह सख़्त अल्फ़ाज़ सुने तो वह मातम करने लगे। किसी ने भी अपने ज़ेवर न पहने,
5 क्यूँकि रब्ब ने मूसा से कहा था, “इस्राईलियों को बता कि तुम हटधर्म हो। अगर मैं एक लम्हा भी तुम्हारे साथ चलूँ तो ख़त्रा है कि मैं तुम्हें तबाह कर दूँ। अब अपने ज़ेवरात उतार डालो। फिर मैं फ़ैसला करूँगा कि तुम्हारे साथ क्या किया जाए।”

6 इन अल्फ़ाज़ पर इस्राईलियों ने होरिब यानी सीना पहाड़ पर अपने ज़ेवर उतार दिए।

मुलाक़ात का ख़ैमा

7 उस वक़्त मूसा ने ख़ैमा ले कर उसे कुछ फ़ासिले पर ख़ैमागाह के बाहर लगा दिया। उस ने उस का नाम ‘मुलाक़ात का ख़ैमा’ रखा। जो भी रब्ब की मर्ज़ी

दरयाफ़्त करना चाहता वह ख़ैमागाह से निकल कर
वहाँ जाता। 8 जब भी मूसा ख़ैमागाह से निकल कर
वहाँ जाता तो तमाम लोग अपने ख़ैमों के दरवाज़ों
पर खड़े हो कर मूसा के पीछे देखने लगते। उस के
मुलाक़ात के ख़ैमे में ओझल होने तक वह उसे देखते
रहते।

9 मूसा के ख़ैमे में दाख़िल होने पर बादल का सतून
उतर कर ख़ैमे के दरवाज़े पर ठहर जाता। जितनी
देर तक रब्ब मूसा से बातें करता उतनी देर तक
वह वहाँ ठहरा रहता। 10 जब इस्राईली मुलाक़ात के
ख़ैमे के दरवाज़े पर बादल का सतून देखते तो वह
अपने अपने ख़ैमे के दरवाज़े पर खड़े हो कर सिज्दा
करते। 11 रब्ब मूसा से रू-ब-रू बातें करता था, ऐसे
शख़्स की तरह जो अपने दोस्त से बातें करता है। इस
के बाद मूसा निकल कर ख़ैमागाह को वापस चला
जाता। लेकिन उस का जवान मददगार यशूअ बिन
नून ख़ैमे को नहीं छोड़ता था।

मूसा रब्ब का जलाल देखता है

12 मूसा ने रब्ब से कहा, "देख, तू मुझ से कहता
आया है कि इस क़ौम को कनआन ले चल। लेकिन
तू मेरे साथ किस को भेजेगा? तू ने अब तक यह
बात मुझे नहीं बताई हालाँकि तू ने कहा है, 'मैं तुझे
बनाम जानता हूँ, तुझे मेरा करम हासिल हुआ है।'
13 अगर मुझे वाक़ई तेरा करम हासिल है तो मुझे
अपने रास्ते दिखा ताकि मैं तुझे जान लूँ और तेरा
करम मुझे हासिल होता रहे। इस बात का ख़याल
रख कि यह क़ौम तेरी ही उम्मत है।"

14 रब्ब ने जवाब दिया, "मैं ख़ुद तेरे साथ चलूँगा
और तुझे आराम दूँगा।" 15 मूसा ने कहा, "अगर तू
ख़ुद साथ नहीं चलेगा तो फिर हमें यहाँ से रवाना न
करना। 16 अगर तू हमारे साथ न जाए तो किस तरह
पता चलेगा कि मुझे और तेरी क़ौम को तेरा करम
हासिल हुआ है? हम सिर्फ़ इसी वजह से दुनिया की
दीगर क़ौमों से अलग और मुम्ताज़ हैं।"

17 रब्ब ने मूसा से कहा, "मैं तेरी यह दरख़्वास्त भी
पूरी करूँगा, क्यूँकि तुझे मेरा करम हासिल हुआ है
और मैं तुझे बनाम जानता हूँ।"

18 फिर मूसा बोला, "बराह-ए-करम मुझे अपना
जलाल दिखा।" 19 रब्ब ने जवाब दिया, "मैं अपनी
पूरी भलाई तेरे सामने से गुज़रने दूँगा और तेरे सामने
ही अपने नाम रब्ब का एलान करूँगा। मैं जिस
पर मेहरबान होना चाहूँ उस पर मेहरबान होता
हूँ, और जिस पर रहम करना चाहूँ उस पर रहम
करता हूँ। 20 लेकिन तू मेरा चिहरा नहीं देख सकता,
क्यूँकि जो भी मेरा चिहरा देखे वह ज़िन्दा नहीं रह
सकता।" 21 फिर रब्ब ने फ़रमाया, "देख, मेरे पास
एक जगह है। वहाँ की चटान पर खड़ा हो जा। 22 जब
मेरा जलाल वहाँ से गुज़रेगा तो मैं तुझे चटान के
एक शिगाफ़ में रखूँगा और अपना हाथ तेरे ऊपर
फैलाऊँगा ताकि तू मेरे गुज़रने के दौरान महफ़ूज़ रहे।
23 इस के बाद मैं अपना हाथ हटाऊँगा और तू मेरे
पीछे देख सकेगा। लेकिन मेरा चिहरा देखा नहीं जा
सकता।"

पत्थर की नई तख़्तियाँ

34 1 रब्ब ने मूसा से कहा, "अपने लिए पत्थर
की दो तख़्तियाँ तराश ले जो पहली दो की
मानिन्द हों। फिर मैं उन पर वह अल्फ़ाज़ लिखूँगा
जो पहली तख़्तियों पर लिखे थे जिन्हें तू ने पटख़
दिया था। 2 सुब्ह तक तय्यार हो कर सीना पहाड़
पर चढ़ना। चोटी पर मेरे सामने खड़ा हो जा। 3 तेरे
साथ कोई भी न आए बल्कि पूरे पहाड़ पर कोई और
शख़्स नज़र न आए, यहाँ तक कि भेड़-बक्रियाँ और
गाय-बैल भी पहाड़ के दामन में न चरें।"

4 चुनाँचे मूसा ने दो तख़्तियाँ तराश लीं जो पहली
की मानिन्द थीं। फिर वह सुब्ह-सवेरे उठ कर सीना
पहाड़ पर चढ़ गया जिस तरह रब्ब ने उसे हुक्म दिया
था। उस के हाथों में पत्थर की दोनों तख़्तियाँ थीं।
5 जब वह चोटी पर पहुँचा तो रब्ब बादल में उतर
आया और उस के पास खड़े हो कर अपने नाम

रब्ब का एलान किया। [6]मूसा के सामने से गुज़रते
हुए उस ने पुकारा, "रब्ब, रब्ब, रहीम और मेहरबान
ख़ुदा। तहम्मुल, शफ़क़त और वफ़ा से भरपूर। [7]वह
हज़ारों पर अपनी शफ़क़त क़ाइम रखता और लोगों
का क़ुसूर, नाफ़रमानी और गुनाह मुआफ़ करता है।
लेकिन वह हर एक को उस की मुनासिब सज़ा भी
देता है। जब वालिदैन गुनाह करें तो उन की औलाद
को भी तीसरी और चौथी पुश्त तक सज़ा के नताइज
भुगतने पड़ेंगे।"

[8]मूसा ने जल्दी से झुक कर सिज्दा किया। [9]उस ने
कहा, "ऐ रब्ब, अगर मुझ पर तेरा करम हो तो हमारे
साथ चल। बेशक यह क़ौम हटधर्म है, तो भी हमारा
क़ुसूर और गुनाह मुआफ़ कर और बख़्श दे कि हम
दुबारा तेरे ही बन जाएँ।"

[10]तब रब्ब ने कहा, "मैं तुम्हारे साथ अह्द बाँधूँगा।
तेरी क़ौम के सामने ही मैं ऐसे मोजिज़े करूँगा जो
अब तक दुनिया भर की किसी भी क़ौम में नहीं किए
गए। पूरी क़ौम जिस के दर्मियान तू रहता है रब्ब
का काम देखेगी और उस से डर जाएगी जो मैं तेरे
साथ करूँगा। [11]जो अह्काम मैं आज देता हूँ उन
पर अमल करता रह। मैं अमोरी, कनआनी, हित्ती,
फ़रिज़्ज़ी, हिव्वी और यबूसी अक़्वाम को तेरे आगे
आगे मुल्क से निकाल दूँगा। [12]ख़बरदार, जो उस
मुल्क में रहते हैं जहाँ तू जा रहा है उन से अह्द न
बाँधना। वर्ना वह तेरे दर्मियान रहते हुए तुझे गुनाहों
में फंसाते रहेंगे। [13]उन की क़ुर्बानगाहें ढा देना, उन
के बुतों के सतून टुकड़े टुकड़े कर देना और उन की
देवी यसीरत के खम्बे काट डालना।

[14]किसी और माबूद की परस्तिश न करना,
क्यूँकि रब्ब का नाम ग़यूर है, अल्लाह ग़ैरतमन्द है।
[15]ख़बरदार, उस मुल्क के बाशिन्दों से अह्द न
करना, क्यूँकि तेरे दर्मियान रहते हुए भी वह अपने
माबूदों की पैरवी करके ज़िना करेंगे और उन्हें
क़ुर्बानियाँ चढ़ाएँगे। आख़िरकार वह तुझे भी अपनी
क़ुर्बानियों में शिर्कत की दावत देंगे। [16]ख़त्रा है कि तू
उन की बेटियों का अपने बेटों के साथ रिश्ता बाँधे।
फिर जब यह अपने माबूदों की पैरवी करके ज़िना
करेंगी तो उन के सबब से तेरे बेटे भी उन की पैरवी
करने लगेंगे।

[17]अपने लिए देवता न ढालना।

सालाना ईदें

[18]बेख़मीरी रोटी की ईद मनाना। अबीब के महीने
[z]में सात दिन तक तेरी रोटी में ख़मीर न हो जिस तरह
मैं ने हुक्म दिया है। क्यूँकि इस महीने में तू मिस्र से
निकला।

[19]हर पहलौठा मेरा है। तेरे माल मवेशियों का हर
पहलौठा मेरा है, चाहे बछड़ा हो या लेला। [20]लेकिन
पहलौठे गधे के इवज़ भेड़ देना। अगर यह मुम्किन
न हो तो उस की गर्दन तोड़ डालना। अपने पहलौठे
बेटों के लिए भी इवज़ी देना। कोई मेरे पास ख़ाली
हाथ न आए।

[21]छः दिन काम-काज करना, लेकिन सातवें दिन
आराम करना। ख़्वाह हल चलाना हो या फ़सल
काटनी हो तो भी सातवें दिन आराम करना।

[22]गन्दुम की फ़सल की कटाई की ईद [a]उस वक़्त
मनाना जब तू गेहूँ की पहली फ़सल काटेगा। अंगूर
और फल जमा करने की ईद इस्राईली साल के
इख़तिताम पर मनानी है। [23]लाज़िम है कि तेरे तमाम
मर्द साल में तीन मर्तबा रब्ब क़ादिर-ए-मुतलक़ के
सामने जो इस्राईल का ख़ुदा है हाज़िर हों। [24]मैं तेरे
आगे आगे क़ौमों को मुल्क से निकाल दूँगा और तेरी
सरहद्दें बढ़ाता जाऊँगा। फिर जब तू साल में तीन
मर्तबा रब्ब अपने ख़ुदा के हुज़ूर आएगा तो कोई भी
तेरे मुल्क का लालच नहीं करेगा।

[25]जब तू किसी जानवर को ज़बह करके क़ुर्बानी
के तौर पर पेश करता है तो उस के ख़ून के साथ ऐसी

---

[z]मार्च या अप्रैल।

[a]सितम्बर या अक्तूबर।

रोटी पेश न करना जिस में ख़मीर हो। ईद-ए-फ़सह की क़ुर्बानी से अगली सुब्ह तक कुछ बाक़ी न रहे।

26 अपनी ज़मीन की पहली पैदावार में से बेहतरीन हिस्सा रब्ब अपने ख़ुदा के घर में ले आना।

बक्री या भेड़ के बच्चे को उस की माँ के दूध में न पकाना।”

मूसा के चिहरे पर चमक

27 रब्ब ने मूसा से कहा, “यह तमाम बातें लिख ले, क्यूँकि यह उस अह्द की बुन्याद हैं जो मैं ने तेरे और इस्राईल के साथ बाँधा है।”

28 मूसा चालीस दिन और चालीस रात वहीं रब्ब के हुज़ूर रहा। इस दौरान न उस ने कुछ खाया न पिया। उस ने पत्थर की तख़्तियों पर अह्द के दस अह्काम लिखे।

29 इस के बाद मूसा शरीअत की दोनों तख़्तियों को हाथ में लिए हुए सीना पहाड़ से उतरा। उस के चिहरे की जिल्द चमक रही थी, क्यूँकि उस ने रब्ब से बात की थी। लेकिन उसे ख़ुद इस का इल्म नहीं था। 30 जब हारून और तमाम इस्राईलियों ने देखा कि मूसा का चिहरा चमक रहा है तो वह उस के पास आने से डर गए। 31 लेकिन उस ने उन्हें बुलाया तो हारून और जमाअत के तमाम सरदार उस के पास आए, और उस ने उन से बात की। 32 बाद में बाक़ी इस्राईली भी आए, और मूसा ने उन्हें तमाम अह्काम सुनाए जो रब्ब ने उसे कोह-ए-सीना पर दिए थे।

33 यह सब कुछ कहने के बाद मूसा ने अपने चिहरे पर निक़ाब डाल लिया। 34 जब भी वह रब्ब से बात करने के लिए मुलाक़ात के ख़ैमे में जाता तो निक़ाब को ख़ैमे से निकलते वक़्त तक उतार लेता। और जब वह निकल कर इस्राईलियों को रब्ब से मिले हुए अह्काम सुनाता 35 तो वह देखते कि उस के चिहरे की जिल्द चमक रही है। इस के बाद मूसा दुबारा निक़ाब को अपने चिहरे पर डाल लेता, और वह उस वक़्त तक चिहरे पर रहता जब तक मूसा रब्ब से बात करने के लिए मुलाक़ात के ख़ैमे में न जाता था।

सबत का दिन

35 1 मूसा ने इस्राईल की पूरी जमाअत को इकट्ठा करके कहा, “रब्ब ने तुम को यह हुक्म दिए हैं : 2 छः दिन काम-काज किया जाए, लेकिन सातवाँ दिन मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस हो। वह रब्ब के लिए आराम का सबत है। जो भी इस दिन काम करे उसे सज़ा-ए-मौत दी जाए। 3 हफ़्ते के दिन अपने तमाम घरों में आग तक न जलाना।”

मुलाक़ात के ख़ैमे के लिए सामान

4 मूसा ने इस्राईल की पूरी जमाअत से कहा, “रब्ब ने हिदायत दी है 5 कि जो कुछ तुम्हारे पास है उस में से हदिए ला कर रब्ब को उठाने वाली क़ुर्बानी के तौर पर पेश करो। जो भी दिली ख़ुशी से देना चाहे वह इन चीज़ों में से कुछ दे : सोना, चाँदी, पीतल; 6 नीले, अर्ग़वानी और क़िर्मिज़ी रंग का धागा, बारीक कतान, बक्री के बाल, 7 मेंढों की सुर्ख़ रंगी हुई खालें, तख़स की खालें, कीकर की लकड़ी, 8 शमादान के लिए ज़ैतून का तेल, मसह करने के लिए तेल और ख़ुश्बूदार बख़ूर के लिए मसाले, 9 अक़ीक़-ए-अह्मर और दीगर जवाहिर जो इमाम-ए-आज़म के बालापोश और सीने के कीसे में जड़े जाएँगे।

10 तुम में से जितने माहिर कारीगर हैं वह आ कर वह कुछ बनाएँ जो रब्ब ने फ़रमाया 11 यानी ख़ैमा और वह ग़िलाफ़ जो उस के ऊपर लगाए जाएँगे, हुकें, दीवारों के तख़्ते, शहतीर, सतून और पाए, 12 अह्द का सन्दूक़, उसे उठाने की लकड़ियाँ, उस के कफ़्फ़ारे का ढकना, मुक़द्दसतरीन कमरे के दरवाज़े का पर्दा, 13 मख़्सूस रोटियों की मेज़, उसे उठाने की लकड़ियाँ, उस का सारा सामान और रोटियाँ, 14 शमादान और उस पर रखने के चराग़ उस के सामान समेत, शमादान के लिए तेल, 15 बख़ूर जलाने की क़ुर्बानगाह, उसे उठाने की लकड़ियाँ, मसह का तेल, ख़ुश्बूदार बख़ूर, मुक़द्दस ख़ैमे के दरवाज़े का पर्दा, 16 जानवरों को चढ़ाने की क़ुर्बानगाह, उस का

पीतल का जंगला, उसे उठाने की लकड़ियाँ और बाक़ी सारा सामान, धोने का हौज़ और वह ढाँचा जिस पर हौज़ रखा जाता है, [17]चारदीवारी के पर्दे उन के खम्बों और पाइयों समेत, सहन के दरवाज़े का पर्दा, [18]ख़ैमे और चारदीवारी की मेख़ें और रस्से, [19]और वह मुक़द्दस लिबास जो हारून और उस के बेटे मक़्दिस में ख़िदमत करने के लिए पहनते हैं।"

[20]यह सुन कर इस्राईल की पूरी जमाअत मूसा के पास से चली गई। [21]और जो जो दिली ख़ुशी से देना चाहता था वह मुलाक़ात के ख़ैमे, उस के सामान या इमामों के कपड़ों के लिए कोई हदिया ले कर वापस आया। [22]रब्ब के हदिए के लिए मर्द और ख़वातीन दिली ख़ुशी से अपने सोने के ज़ेवरात मसलन जड़ाओ पिनें, बालियाँ और छल्ले ले आए। [23]जिस जिस के पास दरकार चीज़ों में से कुछ था वह उसे मूसा के पास ले आया यानी नीले, क़िर्मिज़ी और अर्ग़वानी रंग का धागा, बारीक कतान, बक्री के बाल, मेंढों की सुर्ख़ रंगी हुई खालें और तख़स की खालें। [24]चाँदी, पीतल और कीकर की लकड़ी भी हदिए के तौर पर लाई गई। [25]और जितनी औरतें कातने में माहिर थीं वह अपनी काती हुई चीज़ें ले आईं यानी नीले, क़िर्मिज़ी और अर्ग़वानी रंग का धागा और बारीक कतान। [26]इसी तरह जो जो औरत बक्री के बाल कातने में माहिर थी और दिली ख़ुशी से मक़्दिस के लिए काम करना चाहती थी वह यह कात कर ले आई। [27]सरदार अक़ीक़-ए-अह्मर और दीगर जवाहिर ले आए जो इमाम-ए-आज़म के बालापोश और सीने के कीसे के लिए दरकार थे। [28]वह शमादान, मसह के तेल और ख़ुश्बूदार बख़ूर के लिए मसाले और ज़ैतून का तेल भी ले आए।

[29]यूँ इस्राईल के तमाम मर्द और ख़वातीन जो दिली ख़ुशी से रब्ब को कुछ देना चाहते थे उस सारे काम के लिए हदिए ले आए जो रब्ब ने मूसा की मारिफ़त करने को कहा था।

बज़लीएल और उहलियाब

[30]फिर मूसा ने इस्राईलियों से कहा, "रब्ब ने यहूदाह के क़बीले के बज़लीएल बिन ऊरी बिन हूर को चुन लिया है। [31]उस ने उसे इलाही रूह से मामूर करके हिक्मत, समझ और तामीर के हर काम के लिए दरकार इल्म दे दिया है। [32]वह नक़्शे बना कर उन के मुताबिक़ सोने, चाँदी और पीतल की चीज़ें बना सकता है। [33]वह जवाहिर को काट कर जड़ने की क़ाबिलियत रखता है। वह लकड़ी को तराश कर उस से मुख़्तलिफ़ चीज़ें बना सकता है। वह बहुत सारे और कामों में भी महारत रखता है। [34]साथ ही रब्ब ने उसे और दान के क़बीले के उहलियाब बिन अख़ीसमक को दूसरों को सिखाने की क़ाबिलियत भी दी है। [35]उस ने उन्हें वह महारत और हिक्मत दी है जो हर काम के लिए दरकार है यानी कारीगरी के हर काम के लिए, कड़ाई के काम के लिए, नीले, अर्ग़वानी और क़िर्मिज़ी रंग के धागे और बारीक कतान से कपड़ा बनाने के लिए और बुनाई के काम के लिए। वह माहिर कारीगर हैं और नक़्शे भी बना सकते हैं।

36 [1]लाज़िम है कि बज़लीएल, उहलियाब और बाक़ी कारीगर जिन को रब्ब ने मक़्दिस की तामीर के लिए हिक्मत और समझ दी है सब कुछ ऐन उन हिदायात के मुताबिक़ बनाएँ जो रब्ब ने दी हैं।"

इस्राईली दिली ख़ुशी से देते हैं

[2]मूसा ने बज़लीएल और उहलियाब को बुलाया। साथ ही उस ने हर उस कारीगर को भी बुलाया जिसे रब्ब ने मक़्दिस की तामीर के लिए हिक्मत और महारत दी थी और जो ख़ुशी से आना और यह काम करना चाहता था। [3]उन्हें मूसा से तमाम हदिए मिले जो इस्राईली मक़्दिस की तामीर के लिए लाए थे।

इस के बाद भी लोग रोज़-ब-रोज़ सुब्ह के वक़्त हदिए लाते रहे। [4]आख़िरकार तमाम कारीगर जो मक़्दिस बनाने के काम में लगे थे अपना काम छोड़

कर मूसा के पास आए। [5] उन्हों ने कहा, “लोग हद्द से ज़ियादा ला रहे हैं। जिस काम का हुक्म रब्ब ने दिया है उस के लिए इतने सामान की ज़रूरत नहीं है।” [6] तब मूसा ने पूरी ख़ैमागाह में एलान करवा दिया कि कोई मर्द या औरत मक़्दिस की तामीर के लिए अब कुछ न लाए।

यूँ उन्हें मज़ीद चीज़ें लाने से रोका गया, [7] क्यूँकि काम के लिए सामान ज़रूरत से ज़ियादा हो गया था।

मुलाक़ात का ख़ैमा

[8] जो कारीगर महारत रखते थे उन्हों ने ख़ैमे को बनाया। उन्हों ने बारीक कतान और नीले, अर्ग़वानी और क़िर्मिज़ी धागे से दस पर्दे बनाए। पर्दों पर किसी माहिर कारीगर के कड़ाई के काम से करूबी फ़रिश्तों का डिज़ाइन बनाया गया। [9] हर पर्दे की लम्बाई 42 फ़ुट और चौड़ाई 6 फ़ुट थी। [10] पाँच पर्दों के लम्बे हाशिए एक दूसरे के साथ जोड़े गए और इसी तरह बाक़ी पाँच भी। यूँ दो बड़े टुकड़े बन गए। [11] दोनों टुकड़ों को एक दूसरे के साथ मिलाने के लिए उन्हों ने नीले धागे के हल्क़े बनाए। यह हल्क़े हर टुकड़े के 42 फ़ुट वाले एक किनारे पर लगाए गए, [12] एक टुकड़े के हाशिए पर 50 हल्क़े और दूसरे पर भी उतने ही हल्क़े। इन दो हाशियों के हल्क़े एक दूसरे के आमने-सामने थे। [13] फिर बज़लीएल ने सोने की 50 हुकें बना कर उन से आमने-सामने के हल्क़ों को एक दूसरे के साथ मिलाया। यूँ दोनों टुकड़ों के जोड़ने से ख़ैमा बन गया।

[14] उस ने बक्री के बालों से भी 11 पर्दे बनाए जिन्हें कपड़े वाले ख़ैमे के ऊपर रखना था। [15] हर पर्दे की लम्बाई 45 फ़ुट और चौड़ाई 6 फ़ुट थी। [16] पाँच पर्दों के लम्बे हाशिए एक दूसरे के साथ जोड़े गए और इस तरह बाक़ी छः भी। [17] इन दोनों टुकड़ों को मिलाने के लिए उस ने हर टुकड़े के 45 फ़ुट वाले एक किनारे पर पचास पचास हल्क़े लगाए। [18] फिर पीतल की 50 हुकें बना कर उस ने दोनों हिस्से मिलाए।

[19] एक दूसरे के ऊपर के दोनों ख़ैमों की हिफ़ाज़त के लिए बज़लीएल ने दो और ग़िलाफ़ बनाए। बक्री के बालों के ख़ैमे पर रखने के लिए उस ने मेंढों की सुर्ख़ रंगी हुई खालें जोड़ दीं और उस के ऊपर रखने के लिए तख़स की खालें मिलाईं।

[20] इस के बाद उस ने कीकर की लकड़ी के तख़्ते बनाए जो ख़ैमे की दीवारों का काम देते थे। [21] हर तख़्ते की ऊँचाई 15 फ़ुट थी और चौड़ाई सवा दो फ़ुट। [22] हर तख़्ते के नीचे दो दो चूलें थीं। इन चूलों से हर तख़्ते को उस के पाइयों के साथ जोड़ा जाता था ताकि तख़्ता खड़ा रहे। [23] ख़ैमे की जुनूबी दीवार के लिए 20 तख़्ते बनाए गए [24] और साथ ही चाँदी के 40 पाए भी जिन पर तख़्ते खड़े किए जाते थे। हर तख़्ते के नीचे दो पाए थे, और हर पाए में एक चूल लगती थी। [25] इसी तरह ख़ैमे की शिमाली दीवार के लिए भी 20 तख़्ते बनाए गए [26] और साथ ही चाँदी के 40 पाए जो तख़्तों को खड़ा करने के लिए थे। हर तख़्ते के नीचे दो पाए थे। [27] ख़ैमे की पिछली यानी मग़रिबी दीवार के लिए छः तख़्ते बनाए गए। [28] इस दीवार को शिमाली और जुनूबी दीवारों के साथ जोड़ने के लिए कोने वाले दो तख़्ते बनाए गए। [29] इन दो तख़्तों में नीचे से ले कर ऊपर तक कोना था ताकि एक से शिमाली दीवार मग़रिबी दीवार के साथ जुड़ जाए और दूसरे से जुनूबी दीवार मग़रिबी दीवार के साथ। इन के ऊपर के सिरे कड़ों से मज़बूत किए गए। [30] यूँ पिछले यानी मग़रिबी तख़्तों की पूरी तादाद 8 थी और इन के लिए चाँदी के पाइयों की तादाद 16, हर तख़्ते के नीचे दो पाए।

[31–32] फिर बज़लीएल ने कीकर की लकड़ी के शहतीर बनाए, तीनों दीवारों के लिए पाँच पाँच शहतीर। वह हर दीवार के तख़्तों पर यूँ लगाने के लिए थे कि उन से तख़्ते एक दूसरे के साथ मिलाए जाएँ। [33] दर्मियानी शहतीर यूँ बनाया गया कि वह दीवार की आधी ऊँचाई पर दीवार के एक सिरे से दूसरे सिरे तक लग सकता था। [34] उस ने तमाम तख़्तों और शहतीरों पर सोना चढ़ाया। शहतीरों को तख़्तों

के साथ लगाने के लिए उस ने सोने के कड़े बनाए जो तख़्तों में लगाने थे।

मुक़द्दस ख़ैमे के पर्दे

[35] अब बज़लीएल ने एक और पर्दा बनाया। उस के लिए भी बारीक कतान और नीले, अर्ग़वानी और क़िर्मिज़ी रंग का धागा इस्तेमाल हुआ। उस पर भी किसी माहिर कारीगर के कड़ाई के काम से करूबी फ़रिश्तों का डिज़ाइन बनाया गया। [36] फिर उस ने पर्दे को लटकाने के लिए कीकर की लकड़ी के चार सतून, सोने की हुकें और चाँदी के चार पाए बनाए। सतूनों पर सोना चढ़ाया गया।

[37] बज़लीएल ने ख़ैमे के दरवाज़े के लिए भी पर्दा बनाया। वह भी बारीक कतान और नीले, अर्ग़वानी और क़िर्मिज़ी रंग के धागे से बनाया गया, और उस पर कड़ाई का काम किया गया। [38] इस पर्दे को लटकाने के लिए उस ने सोने की हुकें और कीकर की लकड़ी के पाँच सतून बनाए। सतूनों के ऊपर के सिरों और पट्टियों पर सोना चढ़ाया गया जबकि उन के पाए पीतल के थे।

अह्द का सन्दूक़

37 [1] बज़लीएल ने कीकर की लकड़ी का सन्दूक़ बनाया। उस की लम्बाई पौने चार फ़ुट थी जबकि उस की चौड़ाई और ऊँचाई सवा दो दो फ़ुट थी। [2] उस ने पूरे सन्दूक़ पर अन्दर और बाहर से ख़ालिस सोना चढ़ाया। ऊपर की सतह के इर्दगिर्द उस ने सोने की झालर लगाई। [3] सन्दूक़ को उठाने के लिए उस ने सोने के चार कड़े ढाल कर उन्हें सन्दूक़ के चारपाइयों पर लगाया। दोनों तरफ़ दो दो कड़े थे। [4] फिर उस ने कीकर की दो लकड़ियाँ सन्दूक़ को उठाने के लिए तय्यार कीं और उन पर सोना चढ़ाया। [5] उस ने इन लकड़ियों को दोनों तरफ़ के कड़ों में डाल दिया ताकि उन से सन्दूक़ को उठाया जा सके।

[6] बज़लीएल ने सन्दूक़ का ढकना ख़ालिस सोने का बनाया। उस की लम्बाई पौने चार फ़ुट और चौड़ाई सवा दो फ़ुट थी। [7–8] फिर उस ने दो करूबी फ़रिश्ते सोने से घड़ कर बनाए जो ढकने के दोनों सिरों पर खड़े थे। यह दो फ़रिश्ते और ढकना एक ही टुकड़े से बनाए गए।

मख़्सूस रोटियों की मेज़

[9] फ़रिश्तों के पर यूँ ऊपर की तरफ़ फैले हुए थे कि वह ढकने को पनाह देते थे। उन के मुँह एक दूसरे की तरफ़ किए हुए थे, और वह ढकने की तरफ़ देखते थे। [10] इस के बाद बज़लीएल ने कीकर की लकड़ी की मेज़ बनाई। उस की लम्बाई तीन फ़ुट, चौड़ाई डेढ़ फ़ुट और ऊँचाई सवा दो फ़ुट थी। [11] उस ने उस पर ख़ालिस सोना चढ़ा कर उस के इर्दगिर्द सोने की झालर लगाई। [12] मेज़ की ऊपर की सतह पर उस ने चौखटा भी लगाया जिस की ऊँचाई तीन इंच थी और जिस पर सोने की झालर लगी थी। [13] अब उस ने सोने के चार कड़े ढाल कर उन्हें चारों कोनों पर लगाया जहाँ मेज़ के पाए लगे थे। [14] यह कड़े मेज़ की सतह पर लगे चौखटे के नीचे लगाए गए। उन में वह लकड़ियाँ डालनी थीं जिन से मेज़ को उठाना था। [15] बज़लीएल ने यह लकड़ियाँ भी कीकर से बनाईं और उन पर सोना चढ़ाया।

[16] आख़िरकार उस ने ख़ालिस सोने के वह थाल, पियाले, मै की नज़्रें पेश करने के बर्तन और मर्तबान बनाए जो उस पर रखे जाते थे।

शमादान

[17] फिर बज़लीएल ने ख़ालिस सोने का शमादान बनाया। उस का पाया और डंडी घड़ कर बनाए गए। उस की पियालियाँ जो फूलों और कलियों की शक्ल की थीं पाए और डंडी के साथ एक ही टुकड़ा थीं। [18] डंडी से दाईं और बाईं तरफ़ तीन तीन शाख़ें निकलती थीं। [19] हर शाख़ पर तीन पियालियाँ लगी थीं जो बादाम की कलियों और फूलों की शक्ल

की थीं। [20] शमादान की डंडी पर भी इस क़िस्म की
पियालियाँ लगी थीं, लेकिन तादाद में चार। [21] इन में
से तीन पियालियाँ दाएँ बाएँ की छः शाख़ों के नीचे
लगी थीं। वह यूँ लगी थीं कि हर पियाली से दो शाख़ें
निकलती थीं। [22] शाख़ें और पियालियाँ बल्कि पूरा
शमादान ख़ालिस सोने के एक ही टुकड़े से घड़ कर
बनाया गया।

[23] बज़लीएल ने शमादान के लिए ख़ालिस सोने के
सात चराग़ बनाए। उस ने बत्ती कतरने की क़ैंचियाँ
और जलते कोइले के लिए छोटे बर्तन भी ख़ालिस
सोने से बनाए। [24] शमादान और उस के तमाम सामान
के लिए पूरे 34 किलोग्राम ख़ालिस सोना इस्तेमाल
हुआ।

बख़ूर जलाने की क़ुर्बानगाह

[25] बज़लीएल ने कीकर की लकड़ी की क़ुर्बानगाह
बनाई जो बख़ूर जलाने के लिए थी। वह डेढ़ फ़ुट
लम्बी, इतनी ही चौड़ी और तीन फ़ुट ऊँची थी। उस
के चार कोनों में से सींग निकलते थे जो क़ुर्बानगाह के
साथ एक ही टुकड़े से बनाए गए थे। [26] उस की ऊपर
की सतह, उस के चार पहलूओं और उस के सींगों
पर ख़ालिस सोना चढ़ाया गया। ऊपर की सतह के
इर्दगिर्द बज़लीएल ने सोने की झालर बनाई। [27] सोने
के दो कड़े बना कर उस ने उन्हें इस झालर के नीचे
एक दूसरे के मुक़ाबिल पहलूओं पर लगाया। इन
कड़ों में क़ुर्बानगाह को उठाने की लकड़ियाँ डाली
गईं। [28] यह लकड़ियाँ कीकर की थीं, और उन पर
भी सोना चढ़ाया गया।

[29] बज़लीएल ने मसह करने का मुक़द्दस तेल और
ख़ुश्बूदार ख़ालिस बख़ूर भी बनाया। यह इत्रसाज़ का
काम था।

जानवरों को पेश करने की क़ुर्बानगाह

38 [1] बज़लीएल ने कीकर की लकड़ी की एक
और क़ुर्बानगाह बनाई जो भस्म होने वाली
क़ुर्बानियों के लिए थी। उस की ऊँचाई साढे चार फ़ुट,
उस की लम्बाई और चौड़ाई साढे सात सात फ़ुट थी।
[2] उस के ऊपर चारों कोनों में से सींग निकलते थे।
सींग और क़ुर्बानगाह एक ही टुकड़े के थे, और उस
पर पीतल चढ़ाया गया। [3] उस का तमाम साज़-ओ-
सामान और बर्तन भी पीतल के थे यानी राख को उठा
कर ले जाने की बालटियाँ, बेलचे, काँटे, जलते हुए
कोइले के लिए बर्तन और छिड़काओ के कटोरे।

[4] क़ुर्बानगाह को उठाने के लिए उस ने पीतल का
जंगला बनाया। वह ऊपर से खुला था और यूँ बनाया
गया कि जब क़ुर्बानगाह उस में रखी जाए तो वह उस
किनारे तक पहुँचे जो क़ुर्बानगाह की आधी ऊँचाई पर
लगी थी। [5] उस ने क़ुर्बानगाह को उठाने के लिए चार
कड़े बना कर उन्हें जंगले के चार कोनों पर लगाया।
[6] फिर उस ने कीकर की दो लकड़ियाँ बना कर उन
पर पीतल चढ़ाया [7] और क़ुर्बानगाह के दोनों तरफ़
लगे इन कड़ों में डाल दीं। यूँ उसे उठाया जा सकता
था। क़ुर्बानगाह लकड़ी की थी लेकिन खोखली थी।

[8] बज़लीएल ने धोने का हौज़ और उस का ढाँचा
भी पीतल से बनाया। उस का पीतल उन औरतों के
आईनों से मिला था जो मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े
पर ख़िदमत करती थीं।

ख़ैमे का सहन

[9] फिर बज़लीएल ने सहन बनाया। उस की
चारदीवारी बारीक कतान के कपड़े से बनाई गई।
चारदीवारी की लम्बाई जुनूब की तरफ़ 150 फ़ुट
थी। [10] कपड़े को लगाने के लिए चाँदी की हुकें,
पट्टियाँ, लकड़ी के खम्बे और उन के पाए बनाए गए।
[11] चारदीवारी शिमाल की तरफ़ भी इसी तरह बनाई
गई। [12] ख़ैमे के पीछे मग़रिब की तरफ़ चारदीवारी की
चौड़ाई 75 फ़ुट थी। कपड़े के इलावा उस के लिए
10 खम्बे, 10 पाए और कपड़ा लगाने के लिए चाँदी
की हुकें और पट्टियाँ बनाई गईं। [13] सामने, मशरिक़
की तरफ़ जहाँ से सूरज तुलू होता है चारदीवारी की
चौड़ाई भी 75 फ़ुट थी। [14–15] कपड़ा दरवाज़े के दाईं
तरफ़ साढे 22 फ़ुट चौड़ा था और उस के बाईं तरफ़

भी उतना ही चौड़ा। उसे दोनों तरफ़ तीन तीन खम्बों के साथ लगाया गया जो पीतल के पाइयों पर खड़े थे। 16 चारदीवारी के तमाम पर्दों के लिए बारीक कतान इस्तेमाल हुआ। 17 खम्बे पीतल के पाइयों पर खड़े थे, और पर्दे चाँदी की हुकों और पट्टियों से खम्बों के साथ लगे थे। खम्बों के ऊपर के सिरों पर चाँदी चढ़ाई गई थी। सहन के तमाम खम्बों पर चाँदी की पट्टियाँ लगी थीं।

18 चारदीवारी के दरवाज़े का पर्दा नीले, अर्ग़वानी और क़िर्मिज़ी रंग के धागे और बारीक कतान से बनाया गया, और उस पर कड़ाई का काम किया गया। वह 30 फ़ुट चौड़ा और चारदीवारी के दूसरे पर्दों की तरह साढे सात फ़ुट ऊँचा था। 19 उस के चार खम्बे और पीतल के चार पाए थे। उस की हुकें और पट्टियाँ चाँदी की थीं, और खम्बों के ऊपर के सिरों पर चाँदी चढ़ाई गई थी। 20 ख़ैमे और चारदीवारी की तमाम मेख़ें पीतल की थीं।

ख़ैमे का तामीरी सामान

21 ज़ैल में उस सामान की फ़हरिस्त है जो मक़्दिस की तामीर के लिए इस्तेमाल हुआ। मूसा के हुक्म पर इमाम-ए-आज़म हारून के बेटे इतमर ने लावियों की मारिफ़त यह फ़हरिस्त तय्यार की। 22 (यहूदाह के क़बीले के बज़लीएल बिन ऊरी बिन हूर ने वह सब कुछ बनाया जो रब्ब ने मूसा को बताया था। 23 उस के साथ दान के क़बीले का उहलियाब बिन अख़ीसमक था जो कारीगरी के हर काम और कड़ाई के काम में माहिर था। वह नीले, अर्ग़वानी और क़िर्मिज़ी रंग के धागे और बारीक कतान से कपड़ा बनाने में भी माहिर था।)

24 उस सोने का वज़न जो लोगों के हदियों से जमा हुआ और मक़्दिस की तामीर के लिए इस्तेमाल हुआ तक़्रीबन 1,000 किलोग्राम था (उसे मक़्दिस के बाटों के हिसाब से तोला गया)।

25 तामीर के लिए चाँदी जो मर्दुमशुमारी के हिसाब से वसूल हुई, उस का वज़न तक़्रीबन 3,430 किलोग्राम था (उसे भी मक़्दिस के बाटों के हिसाब से तोला गया)। 26 जिन मर्दों की उम्र 20 साल या इस से ज़ाइद थी उन्हें चाँदी का आधा आधा सिक्का देना पड़ा। मर्दों की कुल तादाद 6,03,550 थी। 27 चूँकि दीवारों के तख़्तों के पाए और मुक़द्दसतरीन कमरे के दरवाज़े के सतूनों के पाए चाँदी के थे इस लिए तक़्रीबन पूरी चाँदी इन 100 पाइयों के लिए सर्फ़ हुई। 28 तक़्रीबन 30 किलोग्राम चाँदी बच गई। इस से चारदीवारी के खम्बों की हुकें और पट्टियाँ बनाई गईं, और यह खम्बों के ऊपर के सिरों पर भी चढ़ाई गई।

29 जो पीतल हदियों से जमा हुआ उस का वज़न तक़्रीबन 2,425 किलोग्राम था। 30 ख़ैमे के दरवाज़े के पाए, जानवरों को चढ़ाने की क़ुर्बानगाह, उस का जंगला, बर्तन और साज़-ओ-सामान, 31 चारदीवारी के पाए, सहन के दरवाज़े के पाए और ख़ैमे और चारदीवारी की तमाम मेख़ें इसी से बनाई गईं।

हारून का बालापोश

39 1 बज़लीएल की हिदायत पर कारीगरों ने नीले, अर्ग़वानी और क़िर्मिज़ी रंग का धागा ले कर मक़्दिस में ख़िदमत के लिए लिबास बनाए। उन्हों ने हारून के मुक़द्दस कपड़े उन हिदायात के ऐन मुताबिक़ बनाए जो रब्ब ने मूसा को दी थीं। 2 उन्हों ने इमाम-ए-आज़म का बालापोश बनाने के लिए सोना, नीले, अर्ग़वानी और क़िर्मिज़ी रंग का धागा और बारीक कतान इस्तेमाल किया। 3 उन्हों ने सोने को कूट कूट कर वर्क़ बनाया और फिर उसे काट कर धागे बनाए। जब नीले, अर्ग़वानी और क़िर्मिज़ी रंग के धागे और बारीक कतान से कपड़ा बनाया गया तो सोने का यह धागा महारत से कड़ाई के काम में इस्तेमाल हुआ। 4 उन्हों ने बालापोश के लिए दो पट्टियाँ बनाईं और उन्हें बालापोश के कंधों पर रख कर सामने और पीछे से बालापोश के साथ लगाइं। 5 पटका भी बनाया गया जिस से बालापोश को बाँधा जाता था। इस के लिए भी सोना, नीले, अर्ग़वानी और

क़िर्मिज़ी रंग का धागा और बारीक कतान इस्तेमाल
हुआ। यह उन हिदायात के ऐन मुताबिक़ हुआ जो
रब्ब ने मूसा को दी थीं। 6 फिर उन्हों ने अक़ीक़-
ए-अह्मर के दो पत्थर चुन लिए और उन्हें सोने के
ख़ानों में जड़ कर उन पर इस्राईल के बारह बेटों के
नाम कन्दा किए। यह नाम जौहरों पर उस तरह कन्दा
किए गए जिस तरह मुहर कन्दा की जाती है। 7 उन्हों
ने पत्थरों को बालापोश की दो पट्टियों पर यूँ लगाया
कि वह हारून के कंधों पर रब्ब को इस्राईलियों
की याद दिलाते रहें। यह सब कुछ रब्ब की दी गई
हिदायात के ऐन मुताबिक़ हुआ।

सीने का कीसा

8 इस के बाद उन्हों ने सीने का कीसा बनाया।
यह माहिर कारीगर का काम था और उन ही चीज़ों
से बना जिन से हारून का बालापोश भी बना था
यानी सोने और नीले, अर्ग़वानी और क़िर्मिज़ी रंग
के धागे और बारीक कतान से। 9 जब कपड़े को
एक दफ़ा तह किया गया तो कीसे की लम्बाई और
चौड़ाई नौ नौ इंच थी। 10 उन्हों ने उस पर चार
क़तारों में जवाहिर जड़े। हर क़तार में तीन तीन जौहर
थे। पहली क़तार में लाल, ज़बर्जद और ज़ुमुर्रद।
11 दूसरी में फ़ीरोज़ा, संग-ए-लाजवर्द और हज्र-उल-
क़मर। 12 तीसरी में ज़रक़ोन, अक़ीक़ और याक़ूत-
ए-अर्ग़वानी। 13 चौथी में पुखराज, अक़ीक़-ए-अह्मर
और यशब। हर जौहर सोने के ख़ाने में जड़ा हुआ था।
14 यह बारह जवाहिर इस्राईल के बारह क़बीलों की
नुमाइन्दगी करते थे। एक एक जौहर पर एक क़बीले
का नाम कन्दा किया गया, और यह नाम उस तरह
कन्दा किए गए जिस तरह मुहर कन्दा की जाती है।
15 अब उन्हों ने सीने के कीसे के लिए ख़ालिस
सोने की दो ज़न्जीरें बनाईं जो डोरी की तरह गुंधी
हुई थीं। 16 साथ साथ उन्हों ने सोने के दो ख़ाने और
दो कड़े भी बनाए। उन्हों ने यह कड़े कीसे के ऊपर
के दो कोनों पर लगाए। 17 फिर दोनों ज़न्जीरें उन
दो कड़ों के साथ लगाई गईं। 18 उन के दूसरे सिरे
बालापोश की कंधों वाली पट्टियों के दो ख़ानों के
साथ जोड़ दिए गए, फिर सामने की तरफ़ लगाए गए।
19 उन्हों ने कीसे के निचले दो कोनों पर भी सोने के
दो कड़े लगाए। वह अन्दर, बालापोश की तरफ़ लगे
थे। 20 अब उन्हों ने दो और कड़े बना कर बालापोश
की कंधों वाली पट्टियों पर लगाए। यह भी सामने की
तरफ़ लगे थे लेकिन नीचे, बालापोश के पटके के
ऊपर ही। 21 उन्हों ने सीने के कीसे के निचले कड़े
नीली डोरी से बालापोश के इन निचले कड़ों के साथ
बाँधे। यूँ कीसा पटके के ऊपर अच्छी तरह सीने के
साथ लगा रहा। यह उन हिदायात के ऐन मुताबिक़
हुआ जो रब्ब ने मूसा को दी थीं।

हारून का चोग़ा

22 फिर कारीगरों ने चोग़ा बुना। वह पूरी तरह नीले
धागे से बनाया गया। चोग़े को बालापोश से पहले
पहनना था। 23 उस के गिरीबान को बुने हुए कालर
से मज़्बूत किया गया ताकि वह न फटे। 24 उन्हों ने
नीले, अर्ग़वानी और क़िर्मिज़ी रंग के धागे से अनार
बना कर उन्हें चोग़े के दामन में लगा दिया। 25 उन
के दर्मियान ख़ालिस सोने की घंटियाँ लगाई गईं।
26 दामन में अनार और घंटियाँ बारी बारी लगाई गईं।
लाज़िम था कि हारून ख़िदमत करने के लिए हमेशा
यह चोग़ा पहने। रब्ब ने मूसा को यही हुक्म दिया था।

ख़िदमत के लिए दीगर लिबास

27 कारीगरों ने हारून और उस के बेटों के लिए
बारीक कतान के ज़ेरजामे बनाए। यह बुनने वाले
का काम था। 28 साथ साथ उन्हों ने बारीक कतान
की पगड़ियाँ और बारीक कतान के पाजामे बनाए।
29 कमरबन्द को बारीक कतान और नीले, अर्ग़वानी
और क़िर्मिज़ी रंग के धागे से बनाया गया। कड़ाई
करने वालों ने इस पर काम किया। सब कुछ उन
हिदायात के मुताबिक़ बनाया गया जो रब्ब ने मूसा
को दी थीं।

30 उन्हों ने मुक़द्दस ताज यानी ख़ालिस सोने की
तख़्ती बनाई और उस पर यह अल्फ़ाज़ कन्दा किए,
‘रब्ब के लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस।’ 31 फिर उन्हों ने
इसे नीली डोरी से पगड़ी के सामने वाले हिस्से से
लगा दिया। यह भी उन हिदायात के मुताबिक़ बनाया
गया जो रब्ब ने मूसा को दी थीं।

मुकम्मल सामान मूसा को दिखाया जाता है

32 आख़िरकार मक़्दिस का काम मुकम्मल हुआ।
इस्राईलियों ने सब कुछ उन हिदायात के मुताबिक़
बनाया था जो रब्ब ने मूसा को दी थीं। 33 वह मक़्दिस
की तमाम चीज़ें मूसा के पास ले आए यानी मुक़द्दस
ख़ैमा और उस का सारा सामान, उस की हुकें, दीवारों
के तख़्ते, शहतीर, सतून और पाए, 34 ख़ैमे पर मेंढों
की सुर्ख़ रंगी हुई खालों का ग़िलाफ़ और तख़स की
खालों का ग़िलाफ़, मुक़द्दसतरीन कमरे के दरवाज़े
का पर्दा, 35 अह्द का सन्दूक़ जिस में शरीअत की
तख़्तियाँ रखनी थीं, उसे उठाने की लकड़ियाँ और
उस का ढकना, 36 मख़्सूस रोटियों की मेज़, उस
का सारा सामान और रोटियाँ, 37 ख़ालिस सोने का
शमादान और उस पर रखने के चराग़ उस के सारे
सामान समेत, शमादान के लिए तेल, 38 बख़ूर जलाने
की सोने की क़ुर्बानगाह, मसह का तेल, ख़ुश्बूदार
बख़ूर, मुक़द्दस ख़ैमे के दरवाज़े का पर्दा, 39 जानवरों
को चढ़ाने की पीतल की क़ुर्बानगाह, उस का पीतल
का जंगला, उसे उठाने की लकड़ियाँ और बाक़ी
सारा सामान, धोने का हौज़ और वह ढाँचा जिस
पर हौज़ रखना था, 40 चारदीवारी के पर्दे उन के
खम्बों और पाइयों समेत, सहन के दरवाज़े का पर्दा,
चारदीवारी के रस्से और मेख़ें, मुलाक़ात के ख़ैमे
में ख़िदमत करने का बाक़ी सारा सामान 41 और
मक़्दिस में ख़िदमत करने के वह मुक़द्दस लिबास
जो हारून और उस के बेटों को पहनने थे।

42 सब कुछ उन हिदायात के मुताबिक़ बनाया गया
था जो रब्ब ने मूसा को दी थीं। 43 मूसा ने तमाम चीज़ों
का मुआइना किया और मालूम किया कि उन्हों ने
सब कुछ रब्ब की हिदायात के मुताबिक़ बनाया था।
तब उस ने उन्हें बर्कत दी।

मक़्दिस को खड़ा करने की हिदायात

40 1 फिर रब्ब ने मूसा से कहा, 2 “पहले महीने
की पहली तारीख़ को मुलाक़ात का ख़ैमा
खड़ा करना। 3 अह्द का सन्दूक़ जिस में शरीअत
की तख़्तियाँ हैं मुक़द्दसतरीन कमरे में रख कर उस
के दरवाज़े का पर्दा लगाना। 4 इस के बाद मख़्सूस
रोटियों की मेज़ मुक़द्दस कमरे में ला कर उस पर
तमाम ज़रूरी सामान रखना। उस कमरे में शमादान भी
ले आना और उस पर उस के चराग़ रखना। 5 बख़ूर
की सोने की क़ुर्बानगाह उस पर्दे के सामने रखना
जिस के पीछे अह्द का सन्दूक़ है। फिर ख़ैमे में
दाख़िल होने के दरवाज़े पर पर्दा लगाना। 6 जानवरों
को चढ़ाने की क़ुर्बानगाह सहन में ख़ैमे के दरवाज़े
के सामने रखी जाए। 7 ख़ैमे और इस क़ुर्बानगाह के
दर्मियान धोने का हौज़ रख कर उस में पानी डालना।
8 सहन की चारदीवारी खड़ी करके उस के दरवाज़े
का पर्दा लगाना।

9 फिर मसह का तेल ले कर उसे ख़ैमे और उस
के सारे सामान पर छिड़क देना। यूँ तू उसे मेरे
लिए मख़्सूस करेगा और वह मुक़द्दस होगा। 10 फिर
जानवरों को चढ़ाने की क़ुर्बानगाह और उस के
सामान पर मसह का तेल छिड़कना। यूँ तू उसे मेरे
लिए मख़्सूस करेगा और वह निहायत मुक़द्दस होगा।
11 इसी तरह हौज़ और उस ढाँचे को भी मख़्सूस
करना जिस पर हौज़ रखा गया है।

12 हारून और उस के बेटों को मुलाक़ात के ख़ैमे
के दरवाज़े पर ला कर ग़ुसल कराना। 13 फिर हारून
को मुक़द्दस लिबास पहनाना और उसे मसह करके
मेरे लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस करना ताकि इमाम के
तौर पर मेरी ख़िदमत करे। 14 उस के बेटों को ला कर
उन्हें ज़ेरजामे पहना देना। 15 उन्हें उन के वालिद की
तरह मसह करना ताकि वह भी इमामों के तौर पर
मेरी ख़िदमत करें। जब उन्हें मसह किया जाएगा तो

वह और बाद में उन की औलाद हमेशा तक मक़्दिस में इस ख़िदमत के लिए मख़्सूस होंगे।”

मक़्दिस को खड़ा किया जाता है

16 मूसा ने सब कुछ रब्ब की हिदायात के मुताबिक़ किया। 17 पहले महीने की पहली तारीख़ को मुक़द्दस ख़ैमा खड़ा किया गया। उन्हें मिस्र से निकले पूरा एक साल हो गया था। 18 मूसा ने दीवार के तख़्तों को उन के पाइयों पर खड़ा करके उन के साथ शहतीर लगाए। इसी तरह उस ने सतूनों को भी खड़ा किया। 19 उस ने रब्ब की हिदायात के ऐन मुताबिक़ दीवारों पर कपड़े का ख़ैमा लगाया और उस पर दूसरे ग़िलाफ़ रखे।

20 उस ने शरीअत की दोनों तख़्तियाँ ले कर अह्द के सन्दूक़ में रख दीं, उठाने के लिए लकड़ियाँ सन्दूक़ के कड़ों में डाल दीं और कफ़्फ़ारे का ढकना उस पर लगा दिया। 21 फिर उस ने रब्ब की हिदायात के ऐन मुताबिक़ सन्दूक़ को मुक़द्दसतरीन कमरे में रख कर उस के दरवाज़े का पर्दा लगा दिया। यूँ अह्द के सन्दूक़ पर पर्दा पड़ा रहा। 22 मूसा ने मख़्सूस रोटियों की मेज़ मुक़द्दस कमरे के शिमाली हिस्से में उस पर्दे के सामने रख दी जिस के पीछे अह्द का सन्दूक़ था। 23 उस ने रब्ब की हिदायत के ऐन मुताबिक़ रब्ब के लिए मख़्सूस की हुई रोटियाँ मेज़ पर रखीं। 24 उसी कमरे के जुनूबी हिस्से में उस ने शमादान को मेज़ के मुक़ाबिल रख दिया। 25 उस पर उस ने रब्ब की हिदायत के ऐन मुताबिक़ रब्ब के सामने चराग़ रख दिए। 26 उस ने बख़ूर की सोने की क़ुर्बानगाह भी उसी कमरे में रखी, उस पर्दे के बिलकुल सामने जिस के पीछे अह्द का सन्दूक़ था। 27 उस ने उस पर रब्ब की हिदायत के ऐन मुताबिक़ ख़ुश्बूदार बख़ूर जलाया।

28 फिर उस ने ख़ैमे का दरवाज़ा लगा दिया। 29 बाहर जा कर उस ने जानवरों को चढ़ाने की क़ुर्बानगाह ख़ैमे के दरवाज़े के सामने रख दी। उस पर उस ने रब्ब की हिदायत के ऐन मुताबिक़ भस्म होने वाली क़ुर्बानियाँ और ग़ल्ला की नज़रें चढ़ाईं।

30 उस ने धोने के हौज़ को ख़ैमे और उस क़ुर्बानगाह के दर्मियान रख कर उस में पानी डाल दिया। 31 मूसा, हारून और उस के बेटे उसे अपने हाथ-पाँओ धोने के लिए इस्तेमाल करते थे। 32 जब भी वह मुलाक़ात के ख़ैमे में दाख़िल होते या जानवरों को चढ़ाने की क़ुर्बानगाह के पास आते तो रब्ब की हिदायत के ऐन मुताबिक़ पहले ग़ुसल करते।

33 आख़िर में मूसा ने ख़ैमा, क़ुर्बानगाह और चारदीवारी खड़ी करके सहन के दरवाज़े का पर्दा लगा दिया। यूँ मूसा ने मक़्दिस की तामीर मुकम्मल की।

ख़ैमे में रब्ब का जलाल

34 फिर मुलाक़ात के ख़ैमे पर बादल छा गया और मक़्दिस रब्ब के जलाल से भर गया। 35 मूसा ख़ैमे में दाख़िल न हो सका, क्यूँकि बादल उस पर ठहरा हुआ था और मक़्दिस रब्ब के जलाल से भर गया था।

36 तमाम सफ़र के दौरान जब भी मक़्दिस के ऊपर से बादल उठता तो इस्राईली सफ़र के लिए तय्यार हो जाते। 37 अगर वह न उठता तो वह उस वक़्त तक ठहरे रहते जब तक बादल उठ न जाता। 38 दिन के वक़्त बादल मक़्दिस के ऊपर ठहरा रहता और रात के वक़्त वह तमाम इस्राईलियों को आग की सूरत में नज़र आता था। यह सिलसिला पूरे सफ़र के दौरान जारी रहा।

अहबार

भस्म होने वाली क़ुर्बानी

1 1 रब्ब ने मुलाक़ात के ख़ैमे में से मूसा को बुला
कर कहा 2 कि इस्राईलियों को इत्तिला दे,
“अगर तुम में से कोई रब्ब को क़ुर्बानी पेश करना
चाहे तो वह अपने गाय-बैलों या भेड़-बक्रियों में से
जानवर चुन ले।
3 अगर वह अपने गाय-बैलों में से भस्म होने वाली
क़ुर्बानी चढ़ाना चाहे तो वह बेऐब बैल चुन कर उसे
मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर पेश करे ताकि रब्ब
उसे क़बूल करे। 4 क़ुर्बानी पेश करने वाला अपना
हाथ जानवर के सर पर रखे तो यह क़ुर्बानी मक़्बूल
हो कर उस का कफ़्फ़ारा देगी। 5 क़ुर्बानी पेश करने
वाला बैल को वहाँ रब्ब के सामने ज़बह करे। फिर
हारून के बेटे जो इमाम हैं उस का ख़ून रब्ब को
पेश करके उसे दरवाज़े पर की क़ुर्बानगाह के चार
पहलूओं पर छिड़कें। 6 इस के बाद क़ुर्बानी पेश
करने वाला खाल उतार कर जानवर के टुकड़े टुकड़े
करे। 7 इमाम क़ुर्बानगाह पर आग लगा कर उस पर
तर्तीब से लकड़ियाँ चुनें। 8 उस पर वह जानवर के
टुकड़े सर और चर्बी समेत रखें। 9 लाज़िम है कि
क़ुर्बानी पेश करने वाला पहले जानवर की अंतड़ियाँ
और पिंडलियाँ धोए, फिर इमाम पूरे जानवर को
क़ुर्बानगाह पर जला दे। इस जलने वाली क़ुर्बानी की
ख़ुश्बू रब्ब को पसन्द है।
10 अगर भस्म होने वाली क़ुर्बानी भेड़-बक्रियों में से
चुनी जाए तो वह बेऐब नर हो। 11 पेश करने वाला
उसे रब्ब के सामने क़ुर्बानगाह की शिमाली सिम्त
में ज़बह करे। फिर हारून के बेटे जो इमाम हैं उस
का ख़ून क़ुर्बानगाह के चार पहलूओं पर छिड़कें।
12 इस के बाद पेश करने वाला जानवर के टुकड़े
टुकड़े करे और इमाम यह टुकड़े सर और चर्बी समेत
क़ुर्बानगाह की जलती हुई लकड़ियों पर तर्तीब से
रखे। 13 लाज़िम है कि क़ुर्बानी पेश करने वाला पहले
जानवर की अंतड़ियाँ और पिंडलियाँ धोए, फिर
इमाम पूरे जानवर को रब्ब को पेश करके क़ुर्बानगाह
पर जला दे। इस जलने वाली क़ुर्बानी की ख़ुश्बू रब्ब
को पसन्द है।
14 अगर भस्म होने वाली क़ुर्बानी परिन्दा हो तो वह
क़ुम्री या जवान कबूतर हो। 15 इमाम उसे क़ुर्बानगाह
के पास ले आए और उस का सर मरोड़ कर
क़ुर्बानगाह पर जला दे। वह उस का ख़ून यूँ निकलने
दे कि वह क़ुर्बानगाह की एक तरफ़ से नीचे टपके।
16 वह उस का पोटा और जो उस में है दूर करके
क़ुर्बानगाह की मशरिक़ी सिम्त में फैंक दे, वहाँ जहाँ
राख फैंकी जाती है। 17 उसे पेश करते वक़्त इमाम
उस के पर पकड़ कर परिन्दे को फाड़ डाले, लेकिन
यूँ कि वह बिलकुल टुकड़े टुकड़े न हो जाए। फिर
इमाम उसे क़ुर्बानगाह पर जलती हुई लकड़ियों पर
जला दे। इस जलने वाली क़ुर्बानी की ख़ुश्बू रब्ब को
पसन्द है।

ग़ल्ला की नज़र

2 1 अगर कोई रब्ब को ग़ल्ला की नज़र पेश करना
चाहे तो वह इस के लिए बेहतरीन मैदा इस्तेमाल
करे। उस पर वह ज़ैतून का तेल उंडेले और लुबान
रख कर 2 उसे हारून के बेटों के पास ले आए जो
इमाम हैं। इमाम तेल से मिलाया गया मुट्ठी भर मैदा
और तमाम लुबान ले कर क़ुर्बानगाह पर जला दे।
यह यादगार का हिस्सा है, और उस की ख़ुश्बू रब्ब
को पसन्द है। 3 बाक़ी मैदा और तेल हारून और उस
के बेटों का हिस्सा है। वह रब्ब की जलने वाली
क़ुर्बानियों में से एक निहायत मुक़द्दस हिस्सा है।

4 अगर यह क़ुर्बानी तनूर में पकाई हुई रोटी हो तो उस में ख़मीर न हो। इस की दो क़िस्में हो सकती हैं, रोटियाँ जो बेहतरीन मैदे और तेल से बनी हुई हों और रोटियाँ जिन पर तेल लगाया गया हो।

5 अगर यह क़ुर्बानी तवे पर पकाई हुई रोटी हो तो वह बेहतरीन मैदे और तेल की हो। उस में ख़मीर न हो। 6 चूँकि वह ग़ल्ला की नज़र है इस लिए रोटी को टुकड़े टुकड़े करना और उस पर तेल डालना।

7 अगर यह क़ुर्बानी कड़ाही में पकाई हुई रोटी हो तो वह बेहतरीन मैदे और तेल की हो।

8 अगर तू इन चीज़ों की बनी हुई ग़ल्ला की नज़र रब्ब के हुज़ूर लाना चाहे तो उसे इमाम को पेश करना। वही उसे क़ुर्बानगाह के पास ले आए। 9 फिर इमाम यादगार का हिस्सा अलग करके उसे क़ुर्बानगाह पर जला दे। ऐसी क़ुर्बानी की ख़ुश्बू रब्ब को पसन्द है। 10 क़ुर्बानी का बाक़ी हिस्सा हारून और उस के बेटों के लिए है। वह रब्ब की जलने वाली क़ुर्बानियों में से एक निहायत मुक़द्दस हिस्सा है।

11 ग़ल्ला की जितनी नज़रें तुम रब्ब को पेश करते हो उन में ख़मीर न हो, क्यूँकि लाज़िम है कि तुम रब्ब को जलने वाली क़ुर्बानी पेश करते वक़्त न ख़मीर, न शहद जलाओ। 12 यह चीज़ें फ़सल के पहले फलों के साथ रब्ब को पेश की जा सकती हैं, लेकिन उन्हें क़ुर्बानगाह पर न जलाया जाए, क्यूँकि वहाँ रब्ब को उन की ख़ुश्बू पसन्द नहीं है। 13 ग़ल्ला की हर नज़र में नमक हो, क्यूँकि नमक उस अह्द की नुमाइन्दगी करता है जो तेरे ख़ुदा ने तेरे साथ बाँधा है। तुझे हर क़ुर्बानी में नमक डालना है।

14 अगर तू ग़ल्ला की नज़र के लिए फ़सल के पहले फल पेश करना चाहे तो कुचली हुई कच्ची बालियाँ भून कर पेश करना। 15 चूँकि वह ग़ल्ला की नज़र है इस लिए उस पर तेल उंडेलना और लुबान रखना। 16 कुचले हुए दानों और तेल का जो हिस्सा रब्ब का है यानी यादगार का हिस्सा उसे इमाम तमाम लुबान के साथ जला दे। यह नज़र रब्ब के लिए जलने वाली क़ुर्बानी है।

सलामती की क़ुर्बानी

3 1 अगर कोई रब्ब को सलामती की क़ुर्बानी पेश करने के लिए गाय या बैल चढ़ाना चाहे तो वह जानवर बेऐब हो। 2 वह अपना हाथ जानवर के सर पर रख कर उसे मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर ज़बह करे। हारून के बेटे जो इमाम हैं उस का ख़ून क़ुर्बानगाह के चार पहलूओं पर छिड़कें। 3–4 पेश करने वाला अंतड़ियों पर की सारी चर्बी, गुर्दे उस चर्बी समेत जो उन पर और कमर के क़रीब होती है और जोड़कलेजी जलने वाली क़ुर्बानी के तौर पर रब्ब को पेश करे। इन चीज़ों को गुर्दों के साथ ही अलग करना है। 5 फिर हारून के बेटे यह सब कुछ भस्म होने वाली क़ुर्बानी के साथ क़ुर्बानगाह की लकड़ियों पर जला दें। यह जलने वाली क़ुर्बानी है, और इस की ख़ुश्बू रब्ब को पसन्द है। 6 अगर सलामती की क़ुर्बानी के लिए भेड़-बक्रियों में से जानवर चुना जाए तो वह बेऐब नर या मादा हो।

7 अगर वह भेड़ का बच्चा चढ़ाना चाहे तो वह उसे रब्ब के सामने ले आए। 8 वह अपना हाथ उस के सर पर रख कर उसे मुलाक़ात के ख़ैमे के सामने ज़बह करे। हारून के बेटे उस का ख़ून क़ुर्बानगाह के चार पहलूओं पर छिड़कें। 9–10 पेश करने वाला चर्बी, पूरी दुम, अंतड़ियों पर की सारी चर्बी, गुर्दे उस चर्बी समेत जो उन पर और कमर के क़रीब होती है और जोड़कलेजी जलने वाली क़ुर्बानी के तौर पर रब्ब को पेश करे। इन चीज़ों को गुर्दों के साथ ही अलग करना है। 11 इमाम यह सब कुछ रब्ब को पेश करके क़ुर्बानगाह पर जला दे। यह ख़ुराक जलने वाली क़ुर्बानी है।

12 अगर सलामती की क़ुर्बानी बक्री की हो 13 तो पेश करने वाला उस पर हाथ रख कर उसे मुलाक़ात के ख़ैमे के सामने ज़बह करे। हारून के बेटे जानवर का ख़ून क़ुर्बानगाह के चार पहलूओं पर छिड़कें। 14–15 पेश करने वाला अंतड़ियों पर की सारी चर्बी, गुर्दे उस चर्बी समेत जो उन पर और कमर के क़रीब

होती है और जोड़कलेजी जलने वाली क़ुर्बानी के तौर
पर रब्ब को पेश करे। इन चीज़ों को गुर्दों के साथ ही
अलग करना है। 16 इमाम यह सब कुछ रब्ब को
पेश करके क़ुर्बानगाह पर जला दे। यह ख़ुराक जलने
वाली क़ुर्बानी है, और इस की ख़ुश्बू रब्ब को पसन्द
है।

सारी चर्बी रब्ब की है। 17 तुम्हारे लिए ख़ून या चर्बी
खाना मना है। यह न सिर्फ़ तुम्हारे लिए मना है बल्कि
तुम्हारी औलाद के लिए भी, न सिर्फ़ यहाँ बल्कि हर
जगह जहाँ तुम रहते हो।”

गुनाह की क़ुर्बानी

4 1 रब्ब ने मूसा से कहा, 2 “इस्राईलियों को
बताना कि जो भी ग़ैरइरादी तौर पर गुनाह करके
रब्ब के किसी हुक्म को तोड़े वह यह करे :

इमाम के लिए गुनाह की क़ुर्बानी

3 अगर इमाम-ए-आज़म गुनाह करे और नतीजे में
पूरी क़ौम क़ुसूरवार ठहरे तो फिर वह रब्ब को एक
बेऐब जवान बैल ले कर गुनाह की क़ुर्बानी के तौर
पर पेश करे। 4 वह जवान बैल को मुलाक़ात के ख़ैमे
के दरवाज़े के पास ले आए और अपना हाथ उस
के सर पर रख कर उसे रब्ब के सामने ज़बह करे।
5 फिर वह जानवर के ख़ून में से कुछ ले कर ख़ैमे में
जाए। 6 वहाँ वह अपनी उंगली उस में डाल कर उसे
सात बार रब्ब के सामने यानी मुक़द्दसतरीन कमरे के
पर्दे पर छिड़के। 7 फिर वह ख़ैमे के अन्दर की उस
क़ुर्बानगाह के चारों सींगों पर ख़ून लगाए जिस पर
बख़ूर जलाया जाता है। बाक़ी ख़ून वह बाहर ख़ैमे
के दरवाज़े पर की उस क़ुर्बानगाह के पाए पर उंडेले
जिस पर जानवर जलाए जाते हैं। 8 जवान बैल की
सारी चर्बी, अंतड़ियों पर की सारी चर्बी, 9 गुर्दे उस
चर्बी समेत जो उन पर और कमर के क़रीब होती है
और जोड़कलेजी को गुर्दों के साथ ही अलग करना
है। 10 यह बिलकुल उसी तरह किया जाए जिस तरह
उस बैल के साथ किया गया जो सलामती की क़ुर्बानी
के लिए पेश किया जाता है। इमाम यह सब कुछ
उस क़ुर्बानगाह पर जला दे जिस पर जानवर जलाए
जाते हैं। 11 लेकिन वह उस की खाल, उस का सारा
गोश्त, सर और पिंडलियाँ, अंतड़ियाँ और उन का
गोबर 12 ख़ैमागाह के बाहर ले जाए। यह चीज़ें उस
पाक जगह पर जहाँ क़ुर्बानियों की राख फैंकी जाती
है लकड़ियों पर रख कर जला देनी हैं।

क़ौम के लिए गुनाह की क़ुर्बानी

13 अगर इस्राईल की पूरी जमाअत ने ग़ैरइरादी तौर
पर गुनाह करके रब्ब के किसी हुक्म से तजावुज़
किया है और जमाअत को मालूम नहीं था तो भी
वह क़ुसूरवार है। 14 जब लोगों को पता लगे कि हम
ने गुनाह किया है तो जमाअत मुलाक़ात के ख़ैमे के
पास एक जवान बैल ले आए और उसे गुनाह की
क़ुर्बानी के तौर पर पेश करे। 15 जमाअत के बुज़ुर्ग
रब्ब के सामने अपने हाथ उस के सर पर रखें, और
वह वहीं ज़बह किया जाए। 16 फिर इमाम-ए-आज़म
जानवर के ख़ून में से कुछ ले कर मुलाक़ात के ख़ैमे में
जाए। 17 वहाँ वह अपनी उंगली उस में डाल कर उसे
सात बार रब्ब के सामने यानी मुक़द्दसतरीन कमरे के
पर्दे पर छिड़के। 18 फिर वह ख़ैमे के अन्दर की उस
क़ुर्बानगाह के चारों सींगों पर ख़ून लगाए जिस पर
बख़ूर जलाया जाता है। बाक़ी ख़ून वह बाहर ख़ैमे
के दरवाज़े की उस क़ुर्बानगाह के पाए पर उंडेले
जिस पर जानवर जलाए जाते हैं। 19 इस के बाद वह
उस की तमाम चर्बी निकाल कर क़ुर्बानगाह पर जला
दे। 20 उस बैल के साथ वह सब कुछ करे जो उसे
अपने ज़ाती ग़ैरइरादी गुनाह के लिए करना होता है।
यूँ वह लोगों का कफ़्फ़ारा देगा और उन्हें मुआफ़ी
मिल जाएगी। 21 आख़िर में वह बैल को ख़ैमागाह के
बाहर ले जा कर उस तरह जला दे जिस तरह उसे
अपने लिए बैल को जला देना होता है। यह जमाअत
का गुनाह दूर करने की क़ुर्बानी है।

क़ौम के राहनुमा के लिए गुनाह की क़ुर्बानी

22 अगर कोई सरदार ग़ैरइरादी तौर पर गुनाह करके
रब्ब के किसी हुक्म से तजावुज़ करे और यूँ क़ुसूरवार
ठहरे तो 23 जब भी उसे पता लगे कि मुझ से गुनाह
हुआ है तो वह क़ुर्बानी के लिए एक बेऐब बक्रा ले
आए। 24 वह अपना हाथ बक्रे के सर पर रख कर
उसे वहाँ ज़बह करे जहाँ भस्म होने वाली क़ुर्बानियाँ
ज़बह की जाती हैं। यह गुनाह की क़ुर्बानी है। 25 इमाम
अपनी उंगली ख़ून में डाल कर उसे उस क़ुर्बानगाह के
चारों सींगों पर लगाए जिस पर जानवर जलाए जाते
हैं। बाक़ी ख़ून वह क़ुर्बानगाह के पाए पर उंडेले।
26 फिर वह उस की सारी चर्बी क़ुर्बानगाह पर उस
तरह जला दे जिस तरह वह सलामती की क़ुर्बानियों
की चर्बी जला देता है। यूँ इमाम उस आदमी का
कफ़्फ़ारा देगा और उसे मुआफ़ी हासिल हो जाएगी।

आम लोगों के लिए गुनाह की क़ुर्बानी

27 अगर कोई आम शख़्स ग़ैरइरादी तौर पर गुनाह
करके रब्ब के किसी हुक्म से तजावुज़ करे और यूँ
क़ुसूरवार ठहरे तो 28 जब भी उसे पता लगे कि मुझ
से गुनाह हुआ है तो वह क़ुर्बानी के लिए एक बेऐब
बक्री ले आए। 29 वह अपना हाथ बक्री के सर पर
रख कर उसे वहाँ ज़बह करे जहाँ भस्म होने वाली
क़ुर्बानियाँ ज़बह की जाती हैं। 30 इमाम अपनी उंगली
ख़ून में डाल कर उसे उस क़ुर्बानगाह के चारों सींगों
पर लगाए जिस पर जानवर जलाए जाते हैं। बाक़ी ख़ून
वह क़ुर्बानगाह के पाए पर उंडेले। 31 फिर वह उस की
सारी चर्बी उस तरह निकाले जिस तरह वह सलामती
की क़ुर्बानियों की चर्बी निकालता है। इस के बाद वह
उसे क़ुर्बानगाह पर जला दे। ऐसी क़ुर्बानी की ख़ुश्बू
रब्ब को पसन्द है। यूँ इमाम उस आदमी का कफ़्फ़ारा
देगा और उसे मुआफ़ी हासिल हो जाएगी।

32 अगर वह गुनाह की क़ुर्बानी के लिए भेड़ का
बच्चा लाना चाहे तो वह बेऐब मादा हो। 33 वह अपना
हाथ उस के सर पर रख कर उसे वहाँ ज़बह करे
जहाँ भस्म होने वाली क़ुर्बानियाँ ज़बह की जाती
हैं। 34 इमाम अपनी उंगली ख़ून में डाल कर उसे
उस क़ुर्बानगाह के चारों सींगों पर लगाए जिस पर
जानवर जलाए जाते हैं। बाक़ी ख़ून वह क़ुर्बानगाह
के पाए पर उंडेले। 35 फिर वह उस की तमाम चर्बी
उस तरह निकाले जिस तरह सलामती की क़ुर्बानी
के लिए ज़बह किए गए जवान मेंढे की चर्बी निकाली
जाती है। इस के बाद इमाम चर्बी को क़ुर्बानगाह पर
उन क़ुर्बानियों समेत जला दे जो रब्ब के लिए जलाई
जाती हैं। यूँ इमाम उस आदमी का कफ़्फ़ारा देगा और
उसे मुआफ़ी मिल जाएगी।

गुनाह की क़ुर्बानियों के बारे में ख़ास हिदायात

5 1 हो सकता है कि किसी ने यूँ गुनाह किया कि
उस ने कोई जुर्म देखा या वह उस के बारे में कुछ
जानता है। तो भी जब गवाहों को क़सम के लिए
बुलाया जाता है तो वह गवाही देने के लिए सामने
नहीं आता। इस सूरत में वह क़ुसूरवार ठहरता है।

2 हो सकता है कि किसी ने ग़ैरइरादी तौर पर किसी
नापाक चीज़ को छू लिया है, ख़्वाह वह किसी जंगली
जानवर, मवेशी या रेंगने वाले जानवर की लाश क्यूँ न
हो। इस सूरत में वह नापाक है और क़ुसूरवार ठहरता
है।

3 हो सकता है कि किसी ने ग़ैरइरादी तौर पर किसी
शख़्स की नापाकी को छू लिया है यानी उस की कोई
ऐसी चीज़ जिस से वह नापाक हो गया है। जब उसे
मालूम हो जाता है तो वह क़ुसूरवार ठहरता है।

4 हो सकता है कि किसी ने बेपर्वाई से कुछ करने
की क़सम खाई है, चाहे वह अच्छा काम था या
ग़लत। जब वह जान लेता है कि उस ने क्या किया
है तो वह क़ुसूरवार ठहरता है।

5 जो इस तरह के किसी गुनाह की बिना पर
क़ुसूरवार हो, लाज़िम है कि वह अपना गुनाह तस्लीम
करे। 6 फिर वह गुनाह की क़ुर्बानी के तौर पर एक
भेड़ या बक्री पेश करे। यूँ इमाम उस का कफ़्फ़ारा
देगा।

7 अगर क़ुसूरवार शख़्स ग़ुर्बत के बाइस भेड़ या बक्री न दे सके तो वह रब्ब को दो क़ुम्रियाँ या दो जवान कबूतर पेश करे, एक गुनाह की क़ुर्बानी के लिए और एक भस्म होने वाली क़ुर्बानी के लिए। 8 वह उन्हें इमाम के पास ले आए। इमाम पहले गुनाह की क़ुर्बानी के लिए परिन्दा पेश करे। वह उस की गर्दन मरोड़ डाले लेकिन ऐसे कि सर जुदा न हो जाए। 9 फिर वह उस के ख़ून में से कुछ क़ुर्बानगाह के एक पहलू पर छिड़के। बाक़ी ख़ून वह यूँ निकलने दे कि वह क़ुर्बानगाह के पाए पर टपके। यह गुनाह की क़ुर्बानी है। 10 फिर इमाम दूसरे परिन्दे को क़वाइद के मुताबिक़ भस्म होने वाली क़ुर्बानी के तौर पर पेश करे। यूँ इमाम उस आदमी का कफ़्फ़ारा देगा और उसे मुआफ़ी मिल जाएगी।

11 अगर वह शख़्स ग़ुर्बत के बाइस दो क़ुम्रियाँ या दो जवान कबूतर भी न दे सके तो फिर वह गुनाह की क़ुर्बानी के लिए डेढ़ किलोग्राम बेहतरीन मैदा पेश करे। वह उस पर न तेल उंडेले, न लुबान रखे, क्यूँकि यह ग़ल्ला की नज़र नहीं बल्कि गुनाह की क़ुर्बानी है। 12 वह उसे इमाम के पास ले आए जो यादगार का हिस्सा यानी मुट्ठी भर उन क़ुर्बानियों के साथ जला दे जो रब्ब के लिए जलाई जाती हैं। यह गुनाह की क़ुर्बानी है। 13 यूँ इमाम उस आदमी का कफ़्फ़ारा देगा और उसे मुआफ़ी मिल जाएगी। ग़ल्ला की नज़र की तरह बाक़ी मैदा इमाम का हिस्सा है।”

क़ुसूर की क़ुर्बानी

14 रब्ब ने मूसा से कहा, 15 “अगर किसी ने बेईमानी करके ग़ैरइरादी तौर पर रब्ब की मख़्सूस और मुक़द्दस चीज़ों के सिलसिले में गुनाह किया हो, ऐसा शख़्स क़ुसूर की क़ुर्बानी के तौर पर रब्ब को बेऐब और क़ीमत के लिहाज़ से मुनासिब मेंढा या बक्रा पेश करे। उस की क़ीमत मक़्दिस की शरह के मुताबिक़ मुक़र्रर की जाए। 16 जितना नुक़्सान मक़्दिस को हुआ है उतना ही वह दे। इस के इलावा वह मज़ीद 20 फ़ीसद अदा करे। वह उसे इमाम को दे दे और इमाम जानवर को क़ुसूर की क़ुर्बानी के तौर पर पेश करके उस का कफ़्फ़ारा दे। यूँ उसे मुआफ़ी मिल जाएगी।

17 अगर कोई ग़ैरइरादी तौर पर गुनाह करके रब्ब के किसी हुक्म से तजावुज़ करे तो वह क़ुसूरवार है, और वह उस का ज़िम्मादार ठहरेगा। 18 वह क़ुसूर की क़ुर्बानी के तौर पर इमाम के पास एक बेऐब और क़ीमत के लिहाज़ से मुनासिब मेंढा ले आए। उस की क़ीमत मक़्दिस की शरह के मुताबिक़ मुक़र्रर की जाए। फिर इमाम यह क़ुर्बानी उस गुनाह के लिए चढ़ाए जो क़ुसूरवार शख़्स ने ग़ैरइरादी तौर पर किया है। यूँ उसे मुआफ़ी मिल जाएगी। 19 यह क़ुसूर की क़ुर्बानी है, क्यूँकि वह रब्ब का गुनाह करके क़ुसूरवार ठहरा है।”

6 1 रब्ब ने मूसा से कहा, 2 “हो सकता है किसी ने गुनाह करके बेईमानी की है, मसलन उस ने अपने पड़ोसी की कोई चीज़ वापस नहीं की जो उस के सपुर्द की गई थी या जो उसे गिरवी के तौर पर मिली थी, या उस ने उस की कोई चीज़ चोरी की, या उस ने किसी से कोई चीज़ छीन ली, 3 या उस ने किसी की गुमशुदा चीज़ के बारे में झूट बोला जब उसे मिल गई, या उस ने क़सम खा कर झूट बोला है, या इस तरह का कोई और गुनाह किया है। 4 अगर वह इस तरह का गुनाह करके क़ुसूरवार ठहरे तो लाज़िम है कि वह वही चीज़ वापस करे जो उस ने चोरी की या छीन ली या जो उस के सपुर्द की गई या जो गुमशुदा हो कर उस के पास आ गई है 5 या जिस के बारे में उस ने क़सम खा कर झूट बोला है। वह उस का उतना ही वापस करके 20 फ़ीसद ज़ियादा दे। और वह यह सब कुछ उस दिन वापस करे जब वह अपनी क़ुसूर की क़ुर्बानी पेश करता है। 6 क़ुसूर की क़ुर्बानी के तौर पर वह एक बेऐब और क़ीमत के लिहाज़ से मुनासिब मेंढा इमाम के पास ले आए और रब्ब को पेश करे। उस की क़ीमत मक़्दिस की शरह के मुताबिक़ मुक़र्रर की जाए। 7 फिर इमाम रब्ब के सामने उस का कफ़्फ़ारा देगा तो उसे मुआफ़ी मिल जाएगी।”

भसम होने वाली क़ुर्बानी

8 रब्ब ने मूसा से कहा, 9 "हारून और उस के बेटों
को भस्म होने वाली क़ुर्बानियों के बारे में ज़ैल की
हिदायात देना : भस्म होने वाली क़ुर्बानी पूरी रात
सुब्ह तक क़ुर्बानगाह की उस जगह पर रहे जहाँ आग
जलती है। आग को बुझने न देना। 10 सुब्ह को इमाम
कतान का लिबास और कतान का पाजामा पहन कर
क़ुर्बानी से बची हुई राख क़ुर्बानगाह के पास ज़मीन
पर डाले। 11 फिर वह अपने कपड़े बदल कर राख
को ख़ैमागाह के बाहर किसी पाक जगह पर छोड़
आए। 12 क़ुर्बानगाह पर आग जलती रहे। वह कभी
भी न बुझे। हर सुब्ह इमाम लकड़ियाँ चुन कर उस
पर भस्म होने वाली क़ुर्बानी तर्तीब से रखे और उस
पर सलामती की क़ुर्बानी की चर्बी जला दे। 13 आग
हमेशा जलती रहे। वह कभी न बुझने पाए।

ग़ल्ला की नज़र

14 ग़ल्ला की नज़र के बारे में हिदायात यह हैं :
हारून के बेटे उसे क़ुर्बानगाह के सामने रब्ब को पेश
करें। 15 फिर इमाम यादगार का हिस्सा यानी तेल से
मिलाया गया मुट्ठी भर बेहतरीन मैदा और क़ुर्बानी का
तमाम लुबान ले कर क़ुर्बानगाह पर जला दे। इस
की ख़ुश्बू रब्ब को पसन्द है। 16 हारून और उस के
बेटे क़ुर्बानी का बाक़ी हिस्सा खा लें। लेकिन वह
उसे मुक़द्दस जगह पर यानी मुलाक़ात के ख़ैमे की
चारदीवारी के अन्दर खाएँ, और उस में ख़मीर न
हो। 17 उसे पकाने के लिए उस में ख़मीर न डाला
जाए। मैं ने जलने वाली क़ुर्बानियों में से यह हिस्सा
उन के लिए मुक़र्रर किया है। यह गुनाह की क़ुर्बानी
और क़ुसूर की क़ुर्बानी की तरह निहायत मुक़द्दस है।
18 हारून की औलाद के तमाम मर्द उसे खाएँ। यह
उसूल अबद तक क़ाइम रहे। जो भी उसे छुएगा वह
मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस हो जाएगा।"
19 रब्ब ने मूसा से कहा, 20 "जब हारून और उस
के बेटों को इमाम की ज़िम्मादारी उठाने के लिए
मख़्सूस करके तेल से मसह किया जाएगा तो वह डेढ़
किलोग्राम बेहतरीन मैदा पेश करें। उस का आधा
हिस्सा सुब्ह को और आधा हिस्सा शाम के वक़्त
पेश किया जाए। वह ग़ल्ला की यह नज़र रोज़ाना पेश
करें। 21 उसे तेल के साथ मिला कर तवे पर पकाना
है। फिर उसे टुकड़े टुकड़े करके ग़ल्ला की नज़र के
तौर पर पेश करना। उस की ख़ुश्बू रब्ब को पसन्द
है। 22 यह क़ुर्बानी हमेशा हारून की नसल का वह
आदमी पेश करे जिसे मसह करके इमाम-ए-आज़म
का उहदा दिया गया है, और वह उसे पूरे तौर पर
रब्ब के लिए जला दे। 23 इमाम की ग़ल्ला की नज़र
हमेशा पूरे तौर पर जलाना। उसे न खाना।"

गुनाह की क़ुर्बानी

24 रब्ब ने मूसा से कहा, 25 "हारून और उस के
बेटों को गुनाह की क़ुर्बानी के बारे में ज़ैल की
हिदायात देना : गुनाह की क़ुर्बानी को रब्ब के सामने
वहीं ज़बह करना है जहाँ भस्म होने वाली क़ुर्बानी
ज़बह की जाती है। वह निहायत मुक़द्दस है। 26 उसे
पेश करने वाला इमाम उसे मुक़द्दस जगह पर यानी
मुलाक़ात के ख़ैमे की चारदीवारी के अन्दर खाए।
27 जो भी इस क़ुर्बानी के गोश्त को छू लेता है
वह मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस हो जाता है। अगर क़ुर्बानी
के ख़ून के छींटे किसी लिबास पर पड़ जाएँ तो
उसे मुक़द्दस जगह पर धोना है। 28 अगर गोश्त को
हंडिया में पकाया गया हो तो उस बर्तन को बाद में
तोड़ देना है। अगर उस के लिए पीतल का बर्तन
इस्तेमाल किया गया हो तो उसे ख़ूब माँझ कर पानी
से साफ़ करना। 29 इमामों के ख़ान्दानों में से तमाम
मर्द उसे खा सकते हैं। यह खाना निहायत मुक़द्दस है।
30 लेकिन गुनाह की हर वह क़ुर्बानी खाई न जाए जिस
का ख़ून मुलाक़ात के ख़ैमे में इस लिए लाया गया है
कि मक़्दिस में किसी का कफ़्फ़ारा दिया जाए। उसे
जलाना है।

क़ुसूर की क़ुर्बानी

7 1 क़ुसूर की क़ुर्बानी जो निहायत मुक़द्दस है उस
के बारे में हिदायात यह हैं :
2 क़ुसूर की क़ुर्बानी वहीं ज़बह करनी है जहाँ भस्म
होने वाली क़ुर्बानी ज़बह की जाती है। उस का ख़ून
क़ुर्बानगाह के चार पहलूओं पर छिड़का जाए। 3 उस
की तमाम चर्बी निकाल कर क़ुर्बानगाह पर चढ़ानी है
यानी उस की दुम, अंतड़ियों पर की चर्बी, 4 गुर्दे उस
चर्बी समेत जो उन पर और कमर के क़रीब होती
है और जोड़कलेजी। इन चीज़ों को गुर्दों के साथ
ही अलग करना है। 5 इमाम यह सब कुछ रब्ब को
क़ुर्बानगाह पर जलने वाली क़ुर्बानी के तौर पर पेश
करे। यह क़ुसूर की क़ुर्बानी है। 6 इमामों के ख़ान्दानों
में से तमाम मर्द उसे खा सकते हैं। लेकिन उसे
मुक़द्दस जगह पर खाया जाए। यह निहायत मुक़द्दस
है।
7 गुनाह और क़ुसूर की क़ुर्बानी के लिए एक ही
उसूल है, जो इमाम क़ुर्बानी को पेश करके कफ़्फ़ारा
देता है उस को उस का गोश्त मिलता है। 8 इस
तरह जो इमाम किसी जानवर को भस्म होने वाली
क़ुर्बानी के तौर पर चढ़ाता है उसी को जानवर की
खाल मिलती है। 9 और इसी तरह तनूर में, कड़ाही
में या तवे पर पकाई गई ग़ल्ला की हर नज़र उस इमाम
को मिलती है जिस ने उसे पेश किया है। 10 लेकिन
हारून के तमाम बेटों को ग़ल्ला की बाक़ी नज़रें बराबर
बराबर मिलती रहें, ख़्वाह उन में तेल मिलाया गया
हो या वह ख़ुश्क हों।

सलामती की क़ुर्बानी

11 सलामती की क़ुर्बानी जो रब्ब को पेश की जाती
है उस के बारे में ज़ैल की हिदायात हैं :
12 अगर कोई इस क़ुर्बानी से अपनी शुक्रगुज़ारी का
इज़्हार करना चाहे तो वह जानवर के साथ बेख़मीरी
रोटी जिस में तेल डाला गया हो, बेख़मीरी रोटी जिस
पर तेल लगाया गया हो और रोटी जिस में बेहतरीन
मैदा और तेल मिलाया गया हो पेश करे। 13 इस के
इलावा वह ख़मीरी रोटी भी पेश करे। 14 पेश करने
वाला क़ुर्बानी की हर चीज़ का एक हिस्सा उठा कर
रब्ब के लिए मख़्सूस करे। यह उस इमाम का हिस्सा
है जो जानवर का ख़ून क़ुर्बानगाह पर छिड़कता है।
15 गोश्त उसी दिन खाया जाए जब जानवर को ज़बह
किया गया हो। अगली सुब्ह तक कुछ नहीं बचना
चाहिए।
16 इस क़ुर्बानी का गोश्त सिर्फ़ इस सूरत में अगले
दिन खाया जा सकता है जब किसी ने मन्नत मान कर
या अपनी ख़ुशी से उसे पेश किया है। 17 अगर कुछ
गोश्त तीसरे दिन तक बच जाए तो उसे जलाना है।
18 अगर उसे तीसरे दिन भी खाया जाए तो रब्ब यह
क़ुर्बानी क़बूल नहीं करेगा। उस का कोई फ़ाइदा नहीं
होगा बल्कि उसे नापाक क़रार दिया जाएगा। जो भी
उस से खाएगा वह क़ुसूरवार ठहरेगा। 19 अगर यह
गोश्त किसी नापाक चीज़ से लग जाए तो उसे नहीं
खाना है बल्कि उसे जलाया जाए। अगर गोश्त पाक
है तो हर शख़्स जो ख़ुद पाक है उसे खा सकता है।
20 लेकिन अगर नापाक शख़्स रब्ब को पेश की गई
सलामती की क़ुर्बानी का यह गोश्त खाए तो उसे उस
की क़ौम में से मिटा डालना है। 21 हो सकता है कि
किसी ने किसी नापाक चीज़ को छू लिया है चाहे वह
नापाक शख़्स, जानवर या कोई और घिनौनी और
नापाक चीज़ हो। अगर ऐसा शख़्स रब्ब को पेश की
गई सलामती की क़ुर्बानी का गोश्त खाए तो उसे उस
की क़ौम में से मिटा डालना है।”

चर्बी और ख़ून खाना मना है

22 रब्ब ने मूसा से कहा, 23 “इस्राईलियों को बता
देना कि गाय-बैल और भेड़-बक्रियों की चर्बी खाना
तुम्हारे लिए मना है। 24 तुम फ़ित्री तौर पर मरे हुए
जानवरों और फाड़े हुए जानवरों की चर्बी दीगर कामों
के लिए इस्तेमाल कर सकते हो, लेकिन उसे खाना
मना है। 25 जो भी उस चर्बी में से खाए जो जला कर
रब्ब को पेश की जाती है उसे उस की क़ौम में से मिटा

डालना है। 26 जहाँ भी तुम रहते हो वहाँ परिन्दों या दीगर जानवरों का ख़ून खाना मना है। 27 जो भी ख़ून खाए उसे उस की क़ौम में से मिटाया जाए।”

क़ुर्बानियों में से इमाम का हिस्सा

28 रब्ब ने मूसा से कहा, 29 “इस्राईलियों को बताना कि जो रब्ब को सलामती की क़ुर्बानी पेश करे वह रब्ब के लिए एक हिस्सा मख़्सूस करे। 30 वह जलने वाली यह क़ुर्बानी अपने हाथों से रब्ब को पेश करे। इस के लिए वह जानवर की चर्बी और सीना रब्ब के सामने पेश करे। सीना हिलाने वाली क़ुर्बानी हो। 31 इमाम चर्बी को क़ुर्बानगाह पर जला दे जबकि सीना हारून और उस के बेटों का हिस्सा है। 32 क़ुर्बानी की दहनी रान इमाम को उठाने वाली क़ुर्बानी के तौर पर दी जाए। 33 वह उस इमाम का हिस्सा है जो सलामती की क़ुर्बानी का ख़ून और चर्बी चढ़ाता है।

34 इस्राईलियों की सलामती की क़ुर्बानियों में से मैं ने हिलाने वाला सीना और उठाने वाली रान इमामों को दी है। यह चीज़ें हमेशा के लिए इस्राईलियों की तरफ़ से इमामों का हक़ हैं।”

35 यह उस दिन जलने वाली क़ुर्बानियों में से हारून और उस के बेटों का हिस्सा बन गईं जब उन्हें मक़्दिस में रब्ब की ख़िदमत में पेश किया गया। 36 रब्ब ने उस दिन जब उन्हें तेल से मसह किया गया हुक्म दिया था कि इस्राईली यह हिस्सा हमेशा इमामों को दिया करें।

37 ग़रज़ यह हिदायात तमाम क़ुर्बानियों के बारे में हैं यानी भस्म होने वाली क़ुर्बानी, ग़ल्ला की नज़र, गुनाह की क़ुर्बानी, क़ुसूर की क़ुर्बानी, इमाम को मक़्दिस में ख़िदमत के लिए मख़्सूस करने की क़ुर्बानी और सलामती की क़ुर्बानी के बारे में। 38 रब्ब ने मूसा को यह हिदायात सीना पहाड़ पर दीं, उस दिन जब उस ने इस्राईलियों को हुक्म दिया कि वह दश्त-ए-सीना में रब्ब को अपनी क़ुर्बानियाँ पेश करें।

हारून और उस के बेटों की मख़्सूसियत

8 1 रब्ब ने मूसा से कहा, 2 “हारून और उस के बेटों को मेरे हुज़ूर ले आना। नीज़ इमामों के लिबास, मसह का तेल, गुनाह की क़ुर्बानी के लिए जवान बैल, दो मेंढे और बेख़मीरी रोटियों की टोकरी ले आना। 3 फिर पूरी जमाअत को ख़ैमे के दरवाज़े पर जमा करना।”

4 मूसा ने ऐसा ही किया। जब पूरी जमाअत इकट्ठी हो गई तो 5 उस ने उन से कहा, “अब मैं वह कुछ करता हूँ जिस का हुक्म रब्ब ने दिया है।” 6 मूसा ने हारून और उस के बेटों को सामने ला कर ग़ुसल कराया। 7 उस ने हारून को कतान का ज़ेरजामा पहना कर कमरबन्द लपेटा। फिर उस ने चोग़ा पहनाया जिस पर उस ने बालापोश को महारत से बुने हुए पटके से बाँधा। 8 इस के बाद उस ने सीने का कीसा लगा कर उस में दोनों क़ुरए बनाम ऊरीम और तुम्मीम रखे। 9 फिर उस ने हारून के सर पर पगड़ी रखी जिस के सामने वाले हिस्से पर उस ने मुक़द्दस ताज यानी सोने की तख़्ती लगा दी। सब कुछ उस हुक्म के ऐन मुताबिक़ हुआ जो रब्ब ने मूसा को दिया था।

10 इस के बाद मूसा ने मसह के तेल से मक़्दिस को और जो कुछ उस में था मसह करके उसे मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस किया। 11 उस ने यह तेल सात बार जानवर चढ़ाने की क़ुर्बानगाह और उस के सामान पर छिड़क दिया। इसी तरह उस ने सात बार धोने के हौज़ और उस ढाँचे पर तेल छिड़क दिया जिस पर हौज़ रखा हुआ था। यूँ यह चीज़ें मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस हुईं। 12 उस ने हारून के सर पर मसह का तेल उंडेल कर उसे मसह किया। यूँ वह मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस हुआ।

13 फिर मूसा ने हारून के बेटों को सामने ला कर उन्हें ज़ेरजामे पहनाए, कमरबन्द लपेटे और उन के सरों पर पगड़ियाँ बाँधीं। सब कुछ उस हुक्म के ऐन मुताबिक़ हुआ जो रब्ब ने मूसा को दिया था।

14 अब मूसा ने गुनाह की क़ुर्बानी के लिए जवान बैल को पेश किया। हारून और उस के बेटों ने

अपने हाथ उस के सर पर रखे। 15मूसा ने उसे ज़बह
करके उस के ख़ून में से कुछ ले कर अपनी उंगली से
क़ुर्बानगाह के सींगों पर लगा दिया ताकि वह गुनाहों
से पाक हो जाए। बाक़ी ख़ून उस ने क़ुर्बानगाह के पाए
पर उंडेल दिया। यूँ उस ने उसे मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस
करके उस का कफ़्फ़ारा दिया। 16मूसा ने अंतड़ियों
पर की तमाम चर्बी, जोड़कलेजी और दोनों गुर्दे उन
की चर्बी समेत ले कर क़ुर्बानगाह पर जला दिए।
17लेकिन बैल की खाल, गोश्त और अंतड़ियों के
गोबर को उस ने ख़ैमागाह के बाहर ले जा कर जला
दिया। सब कुछ उस हुक्म के मुताबिक़ हुआ जो रब्ब
ने मूसा को दिया था।

18इस के बाद उस ने भस्म होने वाली क़ुर्बानी के
लिए पहला मेंढा पेश किया। हारून और उस के बेटों
ने अपने हाथ उस के सर पर रख दिए। 19मूसा ने
उसे ज़बह करके उस का ख़ून क़ुर्बानगाह के चार
पहलूओं पर छिड़क दिया। 20उस ने मेंढे को टुकड़े
टुकड़े करके सर, टुकड़े और चर्बी जला दी। 21उस
ने अंतड़ियाँ और पिंडलियाँ पानी से साफ़ करके पूरे
मेंढे को क़ुर्बानगाह पर जला दिया। सब कुछ उस
हुक्म के ऐन मुताबिक़ हुआ जो रब्ब ने मूसा को दिया
था। रब्ब के लिए जलने वाली यह क़ुर्बानी भस्म होने
वाली क़ुर्बानी थी, और उस की ख़ुश्बू रब्ब को पसन्द
थी।

22इस के बाद मूसा ने दूसरे मेंढे को पेश किया। इस
क़ुर्बानी का मक़सद इमामों को मक़्दिस में ख़िदमत के
लिए मख़्सूस करना था। हारून और उस के बेटों ने
अपने हाथ मेंढे के सर पर रख दिए। 23मूसा ने उसे
ज़बह करके उस के ख़ून में से कुछ ले कर हारून
के दहने कान की लौ पर और उस के दहने हाथ
और दहने पाँओ के अंगूठों पर लगाया। 24यही उस
ने हारून के बेटों के साथ भी किया। उस ने उन्हें
सामने ला कर उन के दहने कान की लौ पर और
उन के दहने हाथ और दहने पाँओ के अंगूठों पर
ख़ून लगाया। बाक़ी ख़ून उस ने क़ुर्बानगाह के चार
पहलूओं पर छिड़क दिया। 25उस ने मेंढे की चर्बी,
दुम, अंतड़ियों पर की सारी चर्बी, जोड़कलेजी, दोनों
गुर्दे उन की चर्बी समेत और दहनी रान अलग की।
26फिर वह रब्ब के सामने पड़ी बेख़मीरी रोटियों की
टोकरी में से एक सादा रोटी, एक रोटी जिस में तेल
डाला गया था और एक रोटी जिस पर तेल लगाया
गया था ले कर चर्बी और रान पर रख दी। 27उस ने
यह सब कुछ हारून और उस के बेटों के हाथों पर
रख कर उसे हिलाने वाली क़ुर्बानी के तौर पर रब्ब
को पेश किया। 28फिर उस ने यह चीज़ें उन से वापस
ले कर क़ुर्बानगाह पर जला दीं जिस पर पहले भस्म
होने वाली क़ुर्बानी रखी गई थी। रब्ब के लिए जलने
वाली यह क़ुर्बानी इमामों को मख़्सूस करने के लिए
चढ़ाई गई, और उस की ख़ुश्बू रब्ब को पसन्द थी।

29मूसा ने सीना भी लिया और उसे हिलाने वाली
क़ुर्बानी के तौर पर रब्ब के सामने हिलाया। यह
मख़्सूसियत के मेंढे में से मूसा का हिस्सा था। मूसा
ने इस में भी सब कुछ रब्ब के हुक्म के ऐन मुताबिक़
किया।

30फिर उस ने मसह के तेल और क़ुर्बानगाह पर के
ख़ून में से कुछ ले कर हारून, उस के बेटों और उन
के कपड़ों पर छिड़क दिया। यूँ उस ने उन्हें और उन
के कपड़ों को मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस किया।

31मूसा ने उन से कहा, “गोश्त को मुलाक़ात के
ख़ैमे के दरवाज़े पर उबाल कर उसे उन रोटियों के
साथ खाना जो मख़्सूसियत की क़ुर्बानियों की टोकरी
में पड़ी हैं। क्यूँकि रब्ब ने मुझे यही हुक्म दिया
है। 32गोश्त और रोटियों का बक़ाया जला देना।
33सात दिन तक मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े में
से न निकलना, क्यूँकि मक़्दिस में ख़िदमत के लिए
तुम्हारी मख़्सूसियत के इतने ही दिन हैं। 34जो कुछ
आज हुआ है वह रब्ब के हुक्म के मुताबिक़ हुआ
ताकि तुम्हारा कफ़्फ़ारा दिया जाए। 35तुम्हें सात रात
और दिन तक ख़ैमे के दरवाज़े के अन्दर रहना है।
रब्ब की इस हिदायत को मानो वर्ना तुम मर जाओगे,
क्यूँकि यह हुक्म मुझे रब्ब की तरफ़ से दिया गया
है।”

[36]हारून और उस के बेटों ने उन तमाम हिदायात पर अमल किया जो रब्ब ने मूसा की मारिफ़त उन्हें दी थीं।

हारून क़ुर्बानियाँ चढ़ाता है

9 [1]मख़्सूसियत के सात दिन के बाद मूसा ने आठवें दिन हारून, उस के बेटों और इस्राईल के बुज़ुर्गों को बुलाया। [2]उस ने हारून से कहा, "एक बेऐब बछड़ा और एक बेऐब मेंढा चुन कर रब्ब को पेश कर। बछड़ा गुनाह की क़ुर्बानी के लिए और मेंढा भस्म होने वाली क़ुर्बानी के लिए हो। [3]फिर इस्राईलियों को कह देना कि गुनाह की क़ुर्बानी के लिए एक बक्रा जबकि भस्म होने वाली क़ुर्बानी के लिए एक बेऐब यकसाला बछड़ा और एक बेऐब यकसाला भेड़ का बच्चा पेश करो। [4]साथ ही सलामती की क़ुर्बानी के लिए एक बैल और एक मेंढा चुनो। तेल के साथ मिलाई हुई ग़ल्ला की नज़र भी ले कर सब कुछ रब्ब को पेश करो। क्यूँकि आज ही रब्ब तुम पर ज़ाहिर होगा।"

[5]इस्राईली मूसा की मतलूबा तमाम चीज़ें मुलाक़ात के ख़ैमे के सामने ले आए। पूरी जमाअत क़रीब आ कर रब्ब के सामने खड़ी हो गई। [6]मूसा ने उन से कहा, "तुम्हें वही करना है जिस का हुक्म रब्ब ने तुम्हें दिया है। क्यूँकि आज ही रब्ब का जलाल तुम पर ज़ाहिर होगा।"

[7]फिर उस ने हारून से कहा, "क़ुर्बानगाह के पास जा कर गुनाह की क़ुर्बानी और भस्म होने वाली क़ुर्बानी चढ़ा कर अपना और अपनी क़ौम का कफ़्फ़ारा देना। रब्ब के हुक्म के मुताबिक़ क़ौम के लिए भी क़ुर्बानी पेश करना ताकि उस का कफ़्फ़ारा दिया जाए।"

[8]हारून क़ुर्बानगाह के पास आया। उस ने बछड़े को ज़बह किया। यह उस के लिए गुनाह की क़ुर्बानी था। [9]उस के बेटे बछड़े का ख़ून उस के पास ले आए। उस ने अपनी उंगली ख़ून में डुबो कर उसे क़ुर्बानगाह के सींगों पर लगाया। बाक़ी ख़ून को उस ने क़ुर्बानगाह के पाए पर उंडेल दिया। [10]फिर उस ने उस की चर्बी, गुर्दों और जोड़कलेजी को क़ुर्बानगाह पर जला दिया। जैसे रब्ब ने मूसा को हुक्म दिया था वैसे ही हारून ने किया। [11]बछड़े का गोश्त और खाल उस ने ख़ैमागाह के बाहर ले जा कर जला दी।

[12]इस के बाद हारून ने भस्म होने वाली क़ुर्बानी को ज़बह किया। उस के बेटों ने उसे उस का ख़ून दिया, और उस ने उसे क़ुर्बानगाह के चार पहलूओं पर छिड़क दिया। [13]उन्हों ने उसे क़ुर्बानी के मुख़्तलिफ़ टुकड़े सर समेत दिए, और उस ने उन्हें क़ुर्बानगाह पर जला दिया। [14]फिर उस ने उस की अंतड़ियाँ और पिंडलियाँ धो कर भस्म होने वाली क़ुर्बानी की बाक़ी चीज़ों पर रख कर जला दीं।

[15]अब हारून ने क़ौम के लिए क़ुर्बानी चढ़ाई। उस ने गुनाह की क़ुर्बानी के लिए बक्रा ज़बह करके उसे पहली क़ुर्बानी की तरह चढ़ाया। [16]उस ने भस्म होने वाली क़ुर्बानी भी क़वाइद के मुताबिक़ चढ़ाई। [17]उस ने ग़ल्ला की नज़र पेश की और उस में से मुट्ठी भर क़ुर्बानगाह पर जला दिया। यह ग़ल्ला की उस नज़र के इलावा थी जो सुब्ह को भस्म होने वाली क़ुर्बानी के साथ चढ़ाई गई थी। [18]फिर उस ने सलामती की क़ुर्बानी के लिए बैल और मेंढे को ज़बह किया। यह भी क़ौम के लिए थी। उस के बेटों ने उसे जानवरों का ख़ून दिया, और उस ने उसे क़ुर्बानगाह के चार पहलूओं पर छिड़क दिया। [19]लेकिन उन्हों ने बैल और मेंढे की चर्बी, दुम, अंतड़ियों पर की चर्बी और जोड़कलेजी निकाल कर [20]सीने के टुकड़ों पर रख दिया। हारून ने चर्बी का हिस्सा क़ुर्बानगाह पर जला दिया। [21]सीने के टुकड़े और दहनी रानें उस ने हिलाने वाली क़ुर्बानी के तौर पर रब्ब के सामने हिलाईं। उस ने सब कुछ मूसा के हुक्म के मुताबिक़ ही किया।

[22]तमाम क़ुर्बानियाँ पेश करने के बाद हारून ने अपने हाथ उठा कर क़ौम को बर्कत दी। फिर वह क़ुर्बानगाह से उतर कर [23]मूसा के साथ मुलाक़ात के ख़ैमे में दाख़िल हुआ। जब दोनों बाहर आए तो उन्हों ने क़ौम को बर्कत दी। तब रब्ब का जलाल

पूरी क़ौम पर ज़ाहिर हुआ। 24रब्ब के हुज़ूर से आग निकल कर क़ुर्बानगाह पर उतरी और भस्म होने वाली क़ुर्बानी और चर्बी के टुकड़े भस्म कर दिए। यह देख कर लोग ख़ुशी के नारे मारने लगे और मुँह के बल गिर गए।

नदब और अबीहू का गुनाह

10 1हारून के बेटे नदब और अबीहू ने अपने अपने बख़ूरदान ले कर उन में जलते हुए कोइले डाले। उन पर बख़ूर डाल कर वह रब्ब के सामने आए ताकि उसे पेश करें। लेकिन यह आग नाजाइज़ थी। रब्ब ने यह पेश करने का हुक्म नहीं दिया था। 2अचानक रब्ब के हुज़ूर से आग निकली जिस ने उन्हें भस्म कर दिया। वहीं रब्ब के सामने वह मर गए।

3मूसा ने हारून से कहा, "अब वही हुआ है जो रब्ब ने फ़रमाया था कि जो मेरे क़रीब हैं उन से मैं अपनी क़ुद्दूसियत ज़ाहिर करूँगा, मैं तमाम क़ौम के सामने ही अपने जलाल का इज़हार करूँगा।"

हारून ख़ामोश रहा। 4मूसा ने हारून के चचा उज़्ज़ीएल के बेटों मीसाएल और इल्सफ़न को बुला कर कहा, "इधर आओ और अपने रिश्तेदारों को मक़्दिस के सामने से उठा कर ख़ैमागाह के बाहर ले जाओ।" 5वह आए और मूसा के हुक्म के ऐन मुताबिक़ उन्हें उन के ज़ेरजामों समेत उठा कर ख़ैमागाह के बाहर ले गए।

6मूसा ने हारून और उस के दीगर बेटों इलीअज़र और इतमर से कहा, "मातम का इज़हार न करो। न अपने बाल बिखरने दो, न अपने कपड़े फाड़ो। वर्ना तुम मर जाओगे और रब्ब पूरी जमाअत से नाराज़ हो जाएगा। लेकिन तुम्हारे रिश्तेदार और बाक़ी तमाम इस्राईली ज़रूर इन का मातम करें जिन को रब्ब ने आग से हलाक कर दिया है। 7मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े के बाहर न निकलो वर्ना तुम मर जाओगे, क्यूँकि तुम्हें रब्ब के तेल से मसह किया गया है।" चुनाँचे उन्हों ने ऐसा ही किया।

इमामों के लिए हिदायात

8रब्ब ने हारून से कहा, 9"जब भी तुझे या तेरे बेटों को मुलाक़ात के ख़ैमे में दाख़िल होना है तो मै या कोई और नशाआवर चीज़ पीना मना है, वर्ना तुम मर जाओगे। यह उसूल आने वाली नसलों के लिए भी अबद तक अनमिट है। 10यह भी लाज़िम है कि तुम मुक़द्दस और ग़ैरमुक़द्दस चीज़ों में, पाक और नापाक चीज़ों में इमतियाज़ करो। 11तुम्हें इस्राईलियों को तमाम पाबन्दियाँ सिखानी हैं जो मैं ने तुम्हें मूसा की मारिफ़त बताई हैं।"

12मूसा ने हारून और उस के बचे हुए बेटों इलीअज़र और इतमर से कहा, "ग़ल्ला की नज़र का जो हिस्सा रब्ब के सामने जलाया नहीं जाता उसे अपने लिए ले कर बेख़मीरी रोटी पकाना और क़ुर्बानगाह के पास ही खाना। क्यूँकि वह निहायत मुक़द्दस है। 13उसे मुक़द्दस जगह पर खाना, क्यूँकि वह रब्ब की जलने वाली क़ुर्बानियों में से तुम्हारे और तुम्हारे बेटों का हिस्सा है। क्यूँकि मुझे इस का हुक्म दिया गया है। 14जो सीना हिलाने वाली क़ुर्बानी और दहनी रान उठाने वाली क़ुर्बानी के तौर पर पेश की गई है, वह तुम और तुम्हारे बेटे-बेटियाँ खा सकते हैं। उन्हें मुक़द्दस जगह पर खाना है। इस्राईलियों की सलामती की क़ुर्बानियों में से यह टुकड़े तुम्हारा हिस्सा हैं। 15लेकिन पहले इमाम रान और सीने को जलने वाली क़ुर्बानियों की चर्बी के साथ पेश करें। वह उन्हें हिलाने वाली क़ुर्बानी के तौर पर रब्ब के सामने हिलाएँ। रब्ब फ़रमाता है कि यह टुकड़े अबद तक तुम्हारे और तुम्हारे बेटों का हिस्सा हैं।"

16मूसा ने दरयाफ़्त किया कि उस बक्रे के गोश्त का क्या हुआ जो गुनाह की क़ुर्बानी के तौर पर चढ़ाया गया था। उसे पता चला कि वह भी जल गया था। यह सुन कर उसे हारून के बेटों इलीअज़र और इतमर पर ग़ुस्सा आया। उस ने पूछा, 17"तुम ने गुनाह की क़ुर्बानी का गोश्त क्यूँ नहीं खाया? तुम्हें उसे मुक़द्दस जगह पर खाना था। यह एक निहायत मुक़द्दस हिस्सा

है जो रब्ब ने तुम्हें दिया ताकि तुम जमाअत का क़ुसूर दूर करके रब्ब के सामने लोगों का कफ़्फ़ारा दो।
[18] चूँकि इस बक्रे का ख़ून मक़्दिस में न लाया गया इस लिए तुम्हें उस का गोश्त मक़्दिस में खाना था जिस तरह मैं ने तुम्हें हुक्म दिया था।"

[19] हारून ने मूसा को जवाब दे कर कहा, "देखें, आज लोगों ने अपने लिए गुनाह की क़ुर्बानी और भस्म होने वाली क़ुर्बानी रब्ब को पेश की है जबकि मुझ पर यह आफ़त गुज़री है। अगर मैं आज गुनाह की क़ुर्बानी से खाता तो क्या यह रब्ब को अच्छा लगता?"
[20] यह बात मूसा को अच्छी लगी।

पाक और नापाक जानवर

11 [1] रब्ब ने मूसा और हारून से कहा,
[2] "इस्राईलियों को बताना कि तुम्हें ज़मीन पर रहने वाले जानवरों में से ज़ैल के जानवरों को खाने की इजाज़त है :
[3] जिन के खुर या पाँओ बिलकुल चिरे हुए हैं और जो जुगाली करते हैं उन्हें खाने की इजाज़त है।
[4–6] ऊँट, बिज्जू या ख़रगोश खाना मना है। वह आप के लिए नापाक हैं, क्यूँकि वह जुगाली तो करते हैं लेकिन उन के खुर या पाँओ चिरे हुए नहीं हैं।
[7] सूअर न खाना। वह तुम्हारे लिए नापाक है, क्यूँकि उस के खुर तो चिरे हुए हैं लेकिन वह जुगाली नहीं करता।
[8] न उन का गोश्त खाना, न उन की लाशों को छूना। वह तुम्हारे लिए नापाक हैं।

[9] समुन्दरी और दरयाई जानवर खाने के लिए जाइज़ हैं अगर उन के पर और छिलके हों।
[10] लेकिन जिन के पर या छिलके नहीं हैं वह सब तुम्हारे लिए मक्रूह हैं, ख़्वाह वह बड़ी तादाद में मिल कर रहते हैं या नहीं।
[11] इस लिए उन का गोश्त खाना मना है, और उन की लाशों से भी घिन खाना है।
[12] पानी में रहने वाले तमाम जानवर जिन के पर या छिलके न हों तुम्हारे लिए मक्रूह हैं।

[13] ज़ैल के परिन्दे तुम्हारे लिए क़ाबिल-ए-घिन हों। इन्हें खाना मना है, क्यूँकि वह मक्रूह हैं : उक़ाब, दढ़ियल गिद्ध, काला गिद्ध,
[14] लाल चील, हर क़िस्म की काली चील,
[15] हर क़िस्म का कव्वा,
[16] उक़ाबी उल्लू, छोटे कान वाला उल्लू, बड़े कान वाला उल्लू, हर क़िस्म का बाज़,
[17] छोटा उल्लू, क़ूक़, चिंघाड़ने वाला उल्लू,
[18] सफ़ेद उल्लू, दश्ती उल्लू, मिस्री गिद्ध,
[19] लक़्लक़, हर क़िस्म का बूतीमार, हुदहुद और चमगादड़ [b]।

[20] तमाम पर रखने वाले कीड़े जो चार पाँओ पर चलते हैं तुम्हारे लिए मक्रूह हैं,
[21] सिवा-ए-उन के जिन की टाँगों के दो हिस्से हैं और जो फुदकते हैं। उन को तुम खा सकते हो।
[22] इस नाते से तुम मुख़्तलिफ़ क़िस्म के टिड्डे खा सकते हो।
[23] बाक़ी सब पर रखने वाले कीड़े जो चार पाँओ पर चलते हैं तुम्हारे लिए मक्रूह हैं।

[24–28] जो भी ज़ैल के जानवरों की लाशें छुए वह शाम तक नापाक रहेगा : (अलिफ़) खुर रखने वाले तमाम जानवर सिवा-ए-उन के जिन के खुर या पाँओ पूरे तौर पर चिरे हुए हैं और जो जुगाली करते हैं, (बे) तमाम जानवर जो अपने चार पंजों पर चलते हैं। यह जानवर तुम्हारे लिए नापाक हैं, और जो भी उन की लाशें उठाए या छुए लाज़िम है कि वह अपने कपड़े धो ले। इस के बावुजूद भी वह शाम तक नापाक रहेगा।

[29–30] ज़मीन पर रेंगने वाले जानवरों में से छछूँदर, मुख़्तलिफ़ क़िस्म के चूहे और मुख़्तलिफ़ क़िस्म की छिपकलियाँ तुम्हारे लिए नापाक हैं।
[31] जो भी उन्हें और उन की लाशें छू लेता है वह शाम तक नापाक रहेगा।
[32] अगर उन में से किसी की लाश किसी चीज़ पर गिर पड़े तो वह भी नापाक हो जाएगी। इस से कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता कि वह लकड़ी, कपड़े, चमड़े या टाट की बनी हो, न इस से कोई फ़र्क़ पड़ता है कि वह किस काम के लिए इस्तेमाल की जाती है।

---

[b] याद रहे कि क़दीम ज़माने के इन परिन्दों के अक्सर नाम मतरूक हैं या उन का मतलब बदल गया है, इस लिए उन का मुख़्तलिफ़ तर्जुमा हो सकता है।

उसे हर सूरत में पानी में डुबोना है। तो भी वह शाम तक नापाक रहेगी। 33 अगर ऐसी लाश मिट्टी के बर्तन में गिर जाए तो जो कुछ भी उस में है नापाक हो जाएगा और तुम्हें उस बर्तन को तोड़ना है। 34 हर खाने वाली चीज़ जिस पर ऐसे बर्तन का पानी डाला गया है नापाक है। इसी तरह उस बर्तन से निकली हुई हर पीने वाली चीज़ नापाक है। 35 जिस पर भी ऐसी लाश गिर पड़े वह नापाक हो जाता है। अगर वह तनूर या चूल्हे पर गिर पड़े तो उन को तोड़ देना है। वह नापाक हैं और तुम्हारे लिए नापाक रहेंगे। 36 लेकिन जिस चश्मे या हौज़ में ऐसी लाश गिरे वह पाक रहता है। सिर्फ़ वह जो लाश को छू लेता है नापाक हो जाता है। 37 अगर ऐसी लाश बीजों पर गिर पड़े जिन को अभी बोना है तो वह पाक रहते हैं। 38 लेकिन अगर बीजों पर पानी डाला गया हो और फिर लाश उन पर गिर पड़े तो वह नापाक हैं।

39 अगर ऐसा जानवर जिसे खाने की इजाज़त है मर जाए तो जो भी उस की लाश छुए शाम तक नापाक रहेगा। 40 जो उस में से कुछ खाए या उसे उठा कर ले जाए उसे अपने कपड़ों को धोना है। तो भी वह शाम तक नापाक रहेगा।

41 हर जानवर जो ज़मीन पर रेंगता है क़ाबिल-ए-घिन है। उसे खाना मना है, 42 चाहे वह अपने पेट पर चाहे चार या इस से ज़ाइद पाँओ पर चलता हो। 43 इन तमाम रेंगने वालों से अपने आप को घिन का बाइस और नापाक न बनाना, 44 क्यूँकि मैं रब्ब तुम्हारा ख़ुदा हूँ। लाज़िम है कि तुम अपने आप को मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस रखो, क्यूँकि मैं क़ुद्दूस हूँ। अपने आप को ज़मीन पर रेंगने वाले तमाम जानवरों से नापाक न बनाना। 45 मैं रब्ब हूँ। मैं तुम्हें मिस्र से निकाल लाया हूँ ताकि तुम्हारा ख़ुदा बनूँ। लिहाज़ा मुक़द्दस रहो, क्यूँकि मैं क़ुद्दूस हूँ।

46 ज़मीन पर चलने वाले जानवरों, परिन्दों, आबी जानवरों और ज़मीन पर रेंगने वाले जानवरों के बारे में शरअ यही है। 47 लाज़िम है कि तुम नापाक और पाक में इमतियाज़ करो, ऐसे जानवरों में जो खाने के लिए जाइज़ हैं और ऐसों में जो नाजाइज़ हैं।"

बच्चे की पैदाइश के बाद माँ पर पाबन्दियाँ

12 1 रब्ब ने मूसा से कहा, 2 "इस्राईलियों को बता कि जब किसी औरत के लड़का पैदा हो तो वह माहवारी के अय्याम की तरह सात दिन तक नापाक रहेगी। 3 आठवें दिन लड़के का ख़तना करवाना है। 4 फिर माँ मज़ीद 33 दिन इन्तिज़ार करे। इस के बाद उस की वह नापाकी दूर हो जाएगी जो ख़ून बहने से पैदा हुई है। इस दौरान वह कोई मख़्सूस और मुक़द्दस चीज़ न छुए, न मक़्दिस के पास जाए। 5 अगर उस के लड़की पैदा हो जाए तो वह माहवारी के अय्याम की तरह नापाक है। यह नापाकी 14 दिन तक रहेगी। फिर वह मज़ीद 66 दिन इन्तिज़ार करे। इस के बाद उस की वह नापाकी दूर हो जाएगी जो ख़ून बहने से पैदा हुई है।

6 जब लड़के या लड़की के सिलसिले में यह दिन गुज़र जाएँ तो वह मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर इमाम को ज़ैल की चीज़ें दे : भस्म होने वाली क़ुर्बानी के लिए एक यकसाला भेड़ का बच्चा और गुनाह की क़ुर्बानी के लिए एक जवान कबूतर या क़ुम्री। 7 इमाम यह जानवर रब्ब को पेश करके उस का कफ़्फ़ारा दे। फिर ख़ून बहने के बाइस पैदा होने वाली नापाकी दूर हो जाएगी। उसूल एक ही है, चाहे लड़का हो या लड़की।

8 अगर वह ग़ुर्बत के बाइस भेड़ का बच्चा न दे सके तो फिर वह दो क़ुम्रियाँ या दो जवान कबूतर ले आए, एक भस्म होने वाली क़ुर्बानी के लिए और दूसरा गुनाह की क़ुर्बानी के लिए। यूँ इमाम उस का कफ़्फ़ारा दे और वह पाक हो जाएगी।"

जिल्दी बीमारियाँ

13 1 रब्ब ने मूसा और हारून से कहा, 2 "अगर किसी की जिल्द में सूजन या पपड़ी या सफ़ेद दाग़ हो और ख़त्रा है कि वबाई जिल्दी बीमारी

हो तो उसे इमामों यानी हारून या उस के बेटों के
पास ले आना है। 3 इमाम उस जगह का मुआइना
करे। अगर उस के बाल सफ़ेद हो गए हों और वह
जिल्द में धंसी हुई हो तो वबाई बीमारी है। जब इमाम
को यह मालूम हो तो वह उसे नापाक क़रार दे।
4 लेकिन हो सकता है कि जिल्द की जगह सफ़ेद
तो है लेकिन जिल्द में धंसी हुई नहीं है, न उस के
बाल सफ़ेद हुए हैं। इस सूरत में इमाम उस शख़्स
को सात दिन के लिए अलाहिदगी में रखे। 5 सातवें
दिन इमाम दुबारा उस का मुआइना करे। अगर वह
देखे कि मुतअस्सिरा जगह वैसी ही है और फैली
नहीं तो वह उसे मज़ीद सात दिन अलाहिदगी में रखे।
6 सातवें दिन वह एक और मर्तबा उस का मुआइना
करे। अगर उस जगह का रंग दुबारा सेहतमन्द जिल्द
के रंग की मानिन्द हो रहा हो और फैली न हो तो वह
उसे पाक क़रार दे। इस का मतलब है कि यह मर्ज़
आम पपड़ी से ज़ियादा नहीं है। मरीज़ अपने कपड़े
धो ले तो वह पाक हो जाएगा। 7 लेकिन अगर इस
के बाद मुतअस्सिरा जगह फैलने लगे तो वह दुबारा
अपने आप को इमाम को दिखाए। 8 इमाम उस का
मुआइना करे। अगर जगह वाक़ई फैल गई हो तो
इमाम उसे नापाक क़रार दे, क्यूँकि यह वबाई जिल्दी
मर्ज़ है।

9 अगर किसी के जिस्म पर वबाई जिल्दी मर्ज़ नज़र
आए तो उसे इमाम के पास लाया जाए। 10 इमाम उस
का मुआइना करे। अगर मुतअस्सिरा जिल्द में सफ़ेद
सूजन हो, उस के बाल भी सफ़ेद हो गए हों, और
उस में कच्चा गोश्त मौजूद हो 11 तो इस का मतलब
है कि वबाई जिल्दी बीमारी पुरानी है। इमाम उस
शख़्स को सात दिन के लिए अलाहिदगी में रख कर
इन्तिज़ार न करे बल्कि उसे फ़ौरन नापाक क़रार दे,
क्यूँकि यह उस की नापाकी का सबूत है। 12 लेकिन
अगर बीमारी जल्दी से फैल गई हो, यहाँ तक कि
सर से ले कर पाँओ तक पूरी जिल्द मुतअस्सिर हुई
हो 13 तो इमाम यह देख कर मरीज़ को पाक क़रार
दे। चूँकि पूरी जिल्द सफ़ेद हो गई है इस लिए वह
पाक है। 14 लेकिन जब भी कहीं कच्चा गोश्त नज़र
आए उस वक़्त वह नापाक हो जाता है। 15 इमाम
यह देख कर मरीज़ को नापाक क़रार दे। कच्चा गोश्त
हर सूरत में नापाक है, क्यूँकि इस का मतलब है
कि वबाई जिल्दी बीमारी लग गई है। 16 अगर कच्चे
गोश्त का यह ज़ख़्म भर जाए और मुतअस्सिरा जगह
की जिल्द सफ़ेद हो जाए तो मरीज़ इमाम के पास
जाए। 17 अगर इमाम देखे कि वाक़ई ऐसा ही हुआ है
और मुतअस्सिरा जिल्द सफ़ेद हो गई है तो वह उसे
पाक क़रार दे।

18 अगर किसी की जिल्द पर फोड़ा हो लेकिन वह
ठीक हो जाए 19 और उस की जगह सफ़ेद सूजन या
सुर्ख़ी-माइल सफ़ेद दाग़ नज़र आए तो मरीज़ अपने
आप को इमाम को दिखाए। 20 अगर वह उस का
मुआइना करके देखे कि मुतअस्सिरा जगह जिल्द के
अन्दर धंसी हुई है और उस के बाल सफ़ेद हो गए
हैं तो वह मरीज़ को नापाक क़रार दे। क्यूँकि इस
का मतलब है कि जहाँ पहले फोड़ा था वहाँ वबाई
जिल्दी बीमारी पैदा हो गई है। 21 लेकिन अगर इमाम
देखे कि मुतअस्सिरा जगह के बाल सफ़ेद नहीं हैं, वह
जिल्द में धंसी हुई नज़र नहीं आती और उस का रंग
दुबारा सेहतमन्द जिल्द की मानिन्द हो रहा है तो वह
उसे सात दिन के लिए अलाहिदगी में रखे। 22 अगर
इस दौरान बीमारी मज़ीद फैल जाए तो इमाम मरीज़
को नापाक क़रार दे, क्यूँकि इस का मतलब है कि
वबाई जिल्दी बीमारी लग गई है। 23 लेकिन अगर
दाग़ न फैले तो इस का मतलब है कि यह सिर्फ़ उस
भरे हुए ज़ख़्म का निशान है जो फोड़े से पैदा हुआ
था। इमाम मरीज़ को पाक क़रार दे।

24 अगर किसी की जिल्द पर जलने का ज़ख़्म
लग जाए और मुतअस्सिरा जगह पर सुर्ख़ी-माइल
सफ़ेद दाग़ या सफ़ेद दाग़ पैदा हो जाए 25 तो इमाम
मुतअस्सिरा जगह का मुआइना करे। अगर मालूम हो
जाए कि मुतअस्सिरा जगह के बाल सफ़ेद हो गए हैं
और वह जिल्द में धंसी हुई है तो इस का मतलब
है कि चोट की जगह पर वबाई जिल्दी मर्ज़ लग

गया है। इमाम उसे नापाक क़रार दे, क्यूँकि वबाई जिल्दी बीमारी लग गई है। 26 लेकिन अगर इमाम ने मालूम किया है कि दाग़ में बाल सफ़ेद नहीं हैं, वह जिल्द में धंसा हुआ नज़र नहीं आता और उस का रंग सेहतमन्द जिल्द की मानिन्द हो रहा है तो वह मरीज़ को सात दिन तक अलाहिदगी में रखे। 27 अगर वह सातवें दिन मालूम करे कि मुतअस्सिरा जगह फैल गई है तो वह उसे नापाक क़रार दे। क्यूँकि इस का मतलब है कि वबाई जिल्दी बीमारी लग गई है। 28 लेकिन अगर दाग़ फैला हुआ नज़र नहीं आता और मुतअस्सिरा जिल्द का रंग सेहतमन्द जिल्द के रंग की मानिन्द हो गया है तो इस का मतलब है कि यह सिर्फ़ उस भरे हुए ज़ख़्म का निशान है जो जलने से पैदा हुआ था। इमाम मरीज़ को पाक क़रार दे।

29 अगर किसी के सर या दाढ़ी की जिल्द में निशान नज़र आए 30 तो इमाम मुतअस्सिरा जगह का मुआइना करे। अगर वह धंसी हुई नज़र आए और उस के बाल रंग के लिहाज़ से चमकते हुए सोने की मानिन्द और बारीक हों तो इमाम मरीज़ को नापाक क़रार दे। इस का मतलब है कि ऐसी वबाई जिल्दी बीमारी सर या दाढ़ी की जिल्द पर लग गई है जो ख़ारिश पैदा करती है। 31 लेकिन अगर इमाम ने मालूम किया कि मुतअस्सिरा जगह जिल्द में धंसी हुई नज़र नहीं आती अगरचि उस के बालों का रंग बदल गया है तो वह उसे सात दिन के लिए अलाहिदगी में रखे। 32 सातवें दिन इमाम जिल्द की मुतअस्सिरा जगह का मुआइना करे। अगर वह फैली हुई नज़र नहीं आती और उस के बालों का रंग चमकदार सोने की मानिन्द नहीं है, साथ ही वह जगह जिल्द में धंसी हुई भी दिखाई नहीं देती, 33 तो मरीज़ अपने बाल मुंडवाए। सिर्फ़ वह बाल रह जाएँ जो मुतअस्सिरा जगह से निकलते हैं। इमाम मरीज़ को मज़ीद सात दिन अलाहिदगी में रखे। 34 सातवें दिन वह उस का मुआइना करे। अगर मुतअस्सिरा जगह नहीं फैली और वह जिल्द में धंसी हुई नज़र नहीं आती तो इमाम उसे पाक क़रार दे। वह अपने कपड़े धो ले तो वह पाक हो जाएगा। 35 लेकिन अगर इस के बाद जिल्द की मुतअस्सिरा जगह फैलना शुरू हो जाए 36 तो इमाम दुबारा उस का मुआइना करे। अगर वह जगह वाक़ई फैली हुई नज़र आए तो मरीज़ नापाक है, चाहे मुतअस्सिरा जगह के बालों का रंग चमकते सोने की मानिन्द हो या न हो। 37 लेकिन अगर उस के ख़याल में मुतअस्सिरा जगह फैली हुई नज़र नहीं आती बल्कि उस में से काले रंग के बाल निकल रहे हैं तो इस का मतलब है कि मरीज़ की सेहत बहाल हो गई है। इमाम उसे पाक क़रार दे।

38 अगर किसी मर्द या औरत की जिल्द पर सफ़ेद दाग़ पैदा हो जाएँ 39 तो इमाम उन का मुआइना करे। अगर उन का सफ़ेद रंग हल्का सा हो तो यह सिर्फ़ बेज़रर पपड़ी है। मरीज़ पाक है।

40–41 अगर किसी मर्द का सर माथे की तरफ़ या पीछे की तरफ़ गंजा है तो वह पाक है। 42 लेकिन अगर उस जगह जहाँ वह गंजा है सुर्ख़ी-माइल सफ़ेद दाग़ हो तो इस का मतलब है कि वहाँ वबाई जिल्दी बीमारी लग गई है। 43 इमाम उस का मुआइना करे। अगर गंजी जगह पर सुर्ख़ी-माइल सफ़ेद सूजन हो जो वबाई जिल्दी बीमारी की मानिन्द नज़र आए 44 तो मरीज़ को वबाई जिल्दी बीमारी लग गई है। इमाम उसे नापाक क़रार दे।

नापाक मरीज़ का सुलूक

45 वबाई जिल्दी बीमारी का मरीज़ फटे कपड़े पहने। उस के बाल बिखरे रहें। वह अपनी मूँछों को किसी कपड़े से छुपाए और पुकारता रहे, ‘नापाक, नापाक।’ 46 जिस वक़्त तक वबाई जिल्दी बीमारी लगी रहे वह नापाक है। वह इस दौरान ख़ैमागाह के बाहर जा कर तन्हाई में रहे।

फफूँदी से निपटने का तरीक़ा

47 हो सकता है कि ऊन या कतान के किसी लिबास पर फफूँदी लग गई है, 48 या कि फफूँदी ऊन या कतान के किसी कपड़े के टुकड़े या किसी चमड़े

या चमड़े की किसी चीज़ पर लग गई है। 49 अगर
फफूँदी का रंग हरा या लाल सा हो तो वह फैलने
वाली फफूँदी है, और लाज़िम है कि उसे इमाम को
दिखाया जाए। 50 इमाम उस का मुआइना करके उसे
सात दिन के लिए अलाहिदगी में रखे। 51 सातवें दिन
वह दुबारा उस का मुआइना करे। अगर फफूँदी फैल
गई हो तो इस का मतलब है कि वह नुक़्सानदिह है।
मुतअस्सिरा चीज़ नापाक है। 52 इमाम उसे जला दे,
क्यूँकि यह फफूँदी नुक़्सानदिह है। लाज़िम है कि उसे
जला दिया जाए। 53 लेकिन अगर इन सात दिनों के
बाद फफूँदी फैली हुई नज़र नहीं आती 54 तो इमाम
हुक्म दे कि मुतअस्सिरा चीज़ को धुलवाया जाए।
फिर वह उसे मज़ीद सात दिन के लिए अलाहिदगी
में रखे। 55 इस के बाद वह दुबारा उस का मुआइना
करे। अगर वह मालूम करे कि फफूँदी तो फैली हुई
नज़र नहीं आती लेकिन उस का रंग वैसे का वैसा
है तो वह नापाक है। उसे जला देना, चाहे फफूँदी
मुतअस्सिरा चीज़ के सामने वाले हिस्से या पिछले
हिस्से में लगी हो। 56 लेकिन अगर मालूम हो जाए
कि फफूँदी का रंग माँद पड़ गया है तो इमाम कपड़े
या चमड़े में से मुतअस्सिरा जगह फाड़ कर निकाल
दे। 57 तो भी हो सकता है कि फफूँदी दुबारा उसी
कपड़े या चमड़े पर नज़र आए। इस का मतलब है
कि वह फैल रही है और उसे जला देना लाज़िम है।
58 लेकिन अगर फफूँदी धोने के बाद ग़ाइब हो जाए
तो उसे एक और दफ़ा धोना है। फिर मुतअस्सिरा
चीज़ पाक होगी।

59 यूँ ही फफूँदी से निपटना है, चाहे वह ऊन या
कतान के किसी लिबास को लग गई हो, चाहे ऊन
या कतान के किसी टुकड़े या चमड़े की किसी चीज़
को लग गई हो। इन ही उसूलों के तहत फ़ैसला करना
है कि मुतअस्सिरा चीज़ पाक है या नापाक।”

वबाई जिल्दी बीमारी के मरीज़ की शिफ़ा पर क़ुर्बानी

14 1 रब्ब ने मूसा से कहा, 2 “अगर कोई शख़्स
जिल्दी बीमारी से शिफ़ा पाए और उसे
पाक-साफ़ कराना है तो उसे इमाम के पास लाया
जाए 3 जो ख़ैमागाह के बाहर जा कर उस का मुआइना
करे। अगर वह देखे कि मरीज़ की सेहत वाक़ई
बहाल हो गई है 4 तो इमाम उस के लिए दो ज़िन्दा
और पाक परिन्दे, देओदार की लकड़ी, क़िर्मिज़ी रंग
का धागा और ज़ूफ़ा मंगवाए। 5 इमाम के हुक्म पर
परिन्दों में से एक को ताज़ा पानी से भरे हुए मिट्टी
के बर्तन के ऊपर ज़बह किया जाए। 6 इमाम ज़िन्दा
परिन्दे को देओदार की लकड़ी, क़िर्मिज़ी रंग के धागे
और ज़ूफ़ा के साथ ज़बह किए गए परिन्दे के उस ख़ून
में डुबो दे जो मिट्टी के बर्तन के पानी में आ गया है।
7 वह पानी से मिलाया हुआ ख़ून सात बार पाक होने
वाले शख़्स पर छिड़क कर उसे पाक क़रार दे, फिर
ज़िन्दा परिन्दे को खुले मैदान में छोड़ दे। 8 जो अपने
आप को पाक-साफ़ करा रहा है वह अपने कपड़े
धोए, अपने तमाम बाल मुंडवाए और नहा ले। इस
के बाद वह पाक है। अब वह ख़ैमागाह में दाख़िल हो
सकता है अगरचि वह मज़ीद सात दिन अपने डेरे में
नहीं जा सकता। 9 सातवें दिन वह दुबारा अपने सर
के बाल, अपनी दाढ़ी, अपने अब्रू और बाक़ी तमाम
बाल मुंडवाए। वह अपने कपड़े धोए और नहा ले।
तब वह पाक है।

10 आठवें दिन वह दो भेड़ के नर बच्चे और एक
यकसाला भेड़ चुन ले जो बेऐब हों। साथ ही वह ग़ल्ला
की नज़र के लिए तेल के साथ मिलाया गया साढे
4 किलोग्राम बेहतरीन मैदा और 300 मिलीलिटर
तेल ले। 11 फिर जिस इमाम ने उसे पाक क़रार दिया
वह उसे इन क़ुर्बानियों समेत मुलाक़ात के ख़ैमे के
दरवाज़े पर रब्ब को पेश करे। 12 भेड़ का एक नर
बच्चा और 300 मिलीलिटर तेल क़ुसूर की क़ुर्बानी के
लिए है। इमाम उन्हें हिलाने वाली क़ुर्बानी के तौर पर
रब्ब के सामने हिलाए। 13 फिर वह भेड़ के इस बच्चे
को ख़ैमे के दरवाज़े पर ज़बह करे जहाँ गुनाह की
क़ुर्बानियाँ और भस्म होने वाली क़ुर्बानियाँ ज़बह की
जाती हैं। गुनाह की क़ुर्बानियों की तरह क़ुसूर की यह
क़ुर्बानी इमाम का हिस्सा है और निहायत मुक़द्दस है।

14 इमाम ख़ून में से कुछ ले कर पाक होने वाले के दहने कान की लौ पर और उस के दहने हाथ और दहने पाँओ के अंगूठों पर लगाए। 15 अब वह 300 मिलीलिटर तेल में से कुछ ले कर अपने बाएँ हाथ की हथेली पर डाले। 16 अपने दहने हाथ के अंगूठे के साथ वाली उंगली इस तेल में डुबो कर वह उसे सात बार रब्ब के सामने छिड़के। 17 वह अपनी हथेली पर के तेल में से कुछ और ले कर पाक होने वाले के दहने कान की लौ पर और उस के दहने हाथ और दहने पाँओ के अंगूठों पर लगा दे यानी उन जगहों पर जहाँ वह क़ुसूर की क़ुर्बानी का ख़ून लगा चुका है। 18 इमाम अपनी हथेली पर का बाक़ी तेल पाक होने वाले के सर पर डाल कर रब्ब के सामने उस का कफ़्फ़ारा दे।

19 इस के बाद इमाम गुनाह की क़ुर्बानी चढ़ा कर पाक होने वाले का कफ़्फ़ारा दे। आख़िर में वह भस्म होने वाली क़ुर्बानी का जानवर ज़बह करे। 20 वह उसे ग़ल्ला की नज़र के साथ क़ुर्बानगाह पर चढ़ा कर उस का कफ़्फ़ारा दे। तब वह पाक है।

21 अगर शिफ़ायाब शख़्स ग़ुर्बत के बाइस यह क़ुर्बानियाँ नहीं चढ़ा सकता तो फिर वह क़ुसूर की क़ुर्बानी के लिए भेड़ का सिर्फ़ एक नर बच्चा ले आए। काफ़ी है कि कफ़्फ़ारा देने के लिए यही रब्ब के सामने हिलाया जाए। साथ साथ ग़ल्ला की नज़र के लिए डेढ़ किलोग्राम बेहतरीन मैदा तेल के साथ मिला कर पेश किया जाए और 300 मिलीलिटर तेल। 22 इस के इलावा वह दो क़ुम्रियाँ या दो जवान कबूतर पेश करे, एक को गुनाह की क़ुर्बानी के लिए और दूसरे को भस्म होने वाली क़ुर्बानी के लिए। 23 आठवें दिन वह उन्हें मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर इमाम के पास और रब्ब के सामने ले आए ताकि वह पाक-साफ़ हो जाए। 24 इमाम भेड़ के बच्चे को 300 मिलीलिटर तेल समेत ले कर हिलाने वाली क़ुर्बानी के तौर पर रब्ब के सामने हिलाए। 25 वह क़ुसूर की क़ुर्बानी के लिए भेड़ के बच्चे को ज़बह करे और उस के ख़ून में से कुछ ले कर पाक होने वाले के दहने कान की लौ पर और उस के दहने हाथ और दहने पाँओ के अंगूठों पर लगाए। 26 अब वह 300 मिलीलिटर तेल में से कुछ अपने बाएँ हाथ की हथेली पर डाले 27 और अपने दहने हाथ के अंगूठे के साथ वाली उंगली इस तेल में डुबो कर उसे सात बार रब्ब के सामने छिड़क दे। 28 वह अपनी हथेली पर के तेल में से कुछ और ले कर पाक होने वाले के दहने कान की लौ पर और उस के दहने हाथ और दहने पाँओ के अंगूठों पर लगा दे यानी उन जगहों पर जहाँ वह क़ुसूर की क़ुर्बानी का ख़ून लगा चुका है। 29 अपनी हथेली पर का बाक़ी तेल वह पाक होने वाले के सर पर डाल दे ताकि रब्ब के सामने उस का कफ़्फ़ारा दे। 30 इस के बाद वह शिफ़ायाब शख़्स की गुन्जाइश के मुताबिक़ दो क़ुम्रियाँ या दो जवान कबूतर चढ़ाए, 31 एक को गुनाह की क़ुर्बानी के लिए और दूसरे को भस्म होने वाली क़ुर्बानी के लिए। साथ ही वह ग़ल्ला की नज़र पेश करे। यूँ इमाम रब्ब के सामने उस का कफ़्फ़ारा देता है। 32 यह उसूल ऐसे शख़्स के लिए है जो वबाई जिल्दी बीमारी से शिफ़ा पा गया है लेकिन अपनी ग़ुर्बत के बाइस पाक हो जाने के लिए पूरी क़ुर्बानी पेश नहीं कर सकता।”

घरों में फफूँदी

33 रब्ब ने मूसा और हारून से कहा, 34 “जब तुम मुल्क-ए-कनआन में दाख़िल होगे जो मैं तुमहें दूँगा तो वहाँ ऐसे मकान होंगे जिन में मैं ने फफूँदी फैलने दी है। 35 ऐसे घर का मालिक जा कर इमाम को बताए कि मैं ने अपने घर में फफूँदी जैसी कोई चीज़ देखी है। 36 तब इमाम हुक्म दे कि घर का मुआइना करने से पहले घर का पूरा सामान निकाला जाए। वर्ना अगर घर को नापाक क़रार दिया जाए तो सामान को भी नापाक क़रार दिया जाएगा। इस के बाद इमाम अन्दर जा कर मकान का मुआइना करे। 37 वह दीवारों के साथ लगी हुई फफूँदी का मुआइना करे। अगर मुतअस्सिरा जगहें हरी या लाल सी हों और दीवार के अन्दर धंसी हुई नज़र आएँ 38 तो फिर इमाम घर से

निकल कर सात दिन के लिए ताला लगाए। 39 सातवें
दिन वह वापस आ कर मकान का मुआइना करे।
अगर फफूँदी फैली हुई नज़र आए 40 तो वह हुक्म दे
कि मुतअस्सिरा पत्थरों को निकाल कर आबादी के
बाहर किसी नापाक जगह पर फैंका जाए। 41 नीज़
वह हुक्म दे कि अन्दर की दीवारों को कुरेदा जाए
और कुरेदी हुई मिट्टी को आबादी के बाहर किसी
नापाक जगह पर फैंका जाए। 42 फिर लोग नए पत्थर
लगा कर घर को नए गारे से पलस्तर करें। 43 लेकिन
अगर इस के बावुजूद फफूँदी दुबारा पैदा हो जाए
44 तो इमाम आ कर दुबारा उस का मुआइना करे।
अगर वह देखे कि फफूँदी घर में फैल गई है तो इस
का मतलब है कि फफूँदी नुक़्सानदिह है, इस लिए घर
नापाक है। 45 लाज़िम है कि उसे पूरे तौर पर ढा दिया
जाए और सब कुछ यानी उस के पत्थर, लकड़ी और
पलस्तर को आबादी के बाहर किसी नापाक जगह
पर फैंका जाए।

46 अगर इमाम ने किसी घर का मुआइना करके
ताला लगा दिया है और फिर भी कोई उस घर में
दाख़िल हो जाए तो वह शाम तक नापाक रहेगा।
47 जो ऐसे घर में सोए या खाना खाए लाज़िम है कि
वह अपने कपड़े धो ले। 48 लेकिन अगर घर को नए
सिरे से पलस्तर करने के बाद इमाम आ कर उस
का दुबारा मुआइना करे और देखे कि फफूँदी दुबारा
नहीं निकली तो इस का मतलब है कि फफूँदी ख़त्म
हो गई है। वह उसे पाक क़रार दे। 49 उसे गुनाह से
पाक-साफ़ कराने के लिए वह दो परिन्दे, देओदार
की लकड़ी, क़िर्मिज़ी रंग का धागा और ज़ूफ़ा ले ले।
50 वह परिन्दों में से एक को ताज़ा पानी से भरे हुए
मिट्टी के बर्तन के ऊपर ज़बह करे। 51 इस के बाद वह
देओदार की लकड़ी, ज़ूफ़ा, क़िर्मिज़ी रंग का धागा
और ज़िन्दा परिन्दा ले कर उस ताज़ा पानी में डुबो दे
जिस के साथ ज़बह किए हुए परिन्दे का ख़ून मिलाया
गया है और इस पानी को सात बार घर पर छिड़क दे।
52 इन चीज़ों से वह घर को गुनाह से पाक-साफ़ करता
है। 53 आख़िर में वह ज़िन्दा परिन्दे को आबादी के
बाहर खुले मैदान में छोड़ दे। यूँ वह घर का कफ़्फ़ारा
देगा, और वह पाक-साफ़ हो जाएगा।

54–56 लाज़िम है कि हर क़िस्म की वबाई बीमारी
से ऐसे निपटो जैसे बयान किया गया है, चाहे वह
वबाई जिल्दी बीमारियाँ हों (मसलन ख़ारिश, सूजन,
पपड़ी या सफ़ेद दाग़), चाहे कपड़ों या घरों में फफूँदी
हो। 57 इन उसूलों के तहत फ़ैसला करना है कि कोई
शख़्स या चीज़ पाक है या नापाक।”

मर्दों की नापाकी

15 1 रब्ब ने मूसा और हारून से कहा,
2 “इस्राईलियों को बताना कि अगर किसी
मर्द को जरयान का मर्ज़ हो तो वह ख़ारिज होने वाले
माए के सबब से नापाक है, 3 चाहे माए बहता रहता
हो या रुक गया हो। 4 जिस चीज़ पर भी मरीज़ लेटता
या बैठता है वह नापाक है। 5–6 जो कोई भी उस के
लेटने की जगह को छुए या उस के बैठने की जगह पर
बैठ जाए वह अपने कपड़े धो कर नहा ले। वह शाम
तक नापाक रहेगा। 7 इसी तरह जो कोई भी ऐसे मरीज़
को छुए वह अपने कपड़े धो कर नहा ले। वह शाम
तक नापाक रहेगा। 8 अगर मरीज़ किसी पाक शख़्स
पर थूके तो यही कुछ करना है और वह शख़्स शाम
तक नापाक रहेगा। 9 जब ऐसा मरीज़ किसी जानवर
पर सवार होता है तो हर चीज़ जिस पर वह बैठ
जाता है नापाक है। 10 जो कोई भी ऐसी चीज़ छुए
या उसे उठा कर ले जाए वह अपने कपड़े धो कर
नहा ले। वह शाम तक नापाक रहेगा। 11 जिस किसी
को भी मरीज़ अपने हाथ धोए बग़ैर छुए वह अपने
कपड़े धो कर नहा ले। वह शाम तक नापाक रहेगा।
12 मिट्टी का जो बर्तन ऐसा मरीज़ छुए उसे तोड़ दिया
जाए। लकड़ी का जो बर्तन वह छुए उसे ख़ूब धोया
जाए।

13 जिसे इस मर्ज़ से शिफ़ा मिली है वह सात दिन
इन्तिज़ार करे। इस के बाद वह ताज़ा पानी से अपने
कपड़े धो कर नहा ले। फिर वह पाक हो जाएगा।
14 आठवें दिन वह दो क़ुम्रियाँ या दो जवान कबूतर ले

कर मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर रब्ब के सामने इमाम को दे। [15]इमाम उन में से एक को गुनाह की क़ुर्बानी के तौर पर और दूसरे को भस्म होने वाली क़ुर्बानी के तौर पर चढ़ाए। यूँ वह रब्ब के सामने उस का कफ़्फ़ारा देगा।

[16]अगर किसी मर्द का नुत्फ़ा ख़ारिज हो जाए तो वह अपने पूरे जिस्म को धो ले। वह शाम तक नापाक रहेगा। [17]हर कपड़ा या चमड़ा जिस से नुत्फ़ा लग गया हो उसे धोना है। वह भी शाम तक नापाक रहेगा। [18]अगर मर्द और औरत के हमबिसतर होने पर नुत्फ़ा ख़ारिज हो जाए तो लाज़िम है कि दोनों नहा लें। वह शाम तक नापाक रहेंगे।

औरतों की नापाकी

[19]माहवारी के वक़्त औरत सात दिन तक नापाक है। जो कोई भी उसे छुए वह शाम तक नापाक रहेगा। [20]इस दौरान जिस चीज़ पर भी वह लेटती या बैठती है वह नापाक है। [21–23]जो कोई भी उस के लेटने की जगह को छुए या उस के बैठने की जगह पर बैठ जाए वह अपने कपड़े धो कर नहा ले। वह शाम तक नापाक रहेगा। [24]अगर मर्द औरत से हमबिसतर हो और उसी वक़्त माहवारी के दिन शुरू हो जाएँ तो मर्द ख़ून लगने के बाइस सात दिन तक नापाक रहेगा। जिस चीज़ पर भी वह लेटता है वह नापाक हो जाएगी।

[25]अगर किसी औरत को माहवारी के दिन छोड़ कर किसी और वक़्त कई दिनों तक ख़ून आए या ख़ून माहवारी के दिनों के बाद भी जारी रहे तो वह माहवारी के दिनों की तरह उस वक़्त तक नापाक रहेगी जब तक ख़ून रुक न जाए। [26]जिस चीज़ पर भी वह लेटती या बैठती है वह नापाक है। [27]जो कोई भी ऐसी चीज़ को छुए वह अपने कपड़े धो कर नहा ले। वह शाम तक नापाक रहेगा। [28]ख़ून के रुक जाने पर औरत मज़ीद सात दिन इन्तिज़ार करे। फिर वह पाक होगी। [29]आठवें दिन वह दो क़ुम्रियाँ या दो जवान कबूतर ले कर मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर इमाम के पास आए। [30]इमाम उन में से एक को गुनाह की क़ुर्बानी के लिए और दूसरे को भस्म होने वाली क़ुर्बानी के लिए चढ़ाए। यूँ वह रब्ब के सामने उस की नापाकी का कफ़्फ़ारा देगा।

[31]लाज़िम है कि इस्राईलियों को ऐसी चीज़ों से दूर रखा जाए जिन से वह नापाक हो जाएँ। वर्ना मेरा वह मक़्दिस जो उन के दर्मियान है उन से नापाक हो जाएगा और वह हलाक हो जाएँगे।

[32]लाज़िम है कि इस क़िस्म के मुआमलों से ऐसे निपटो जैसे बयान किया गया है। इस में वह मर्द शामिल है जो जरयान का मरीज़ है और वह जो नुत्फ़ा ख़ारिज होने के बाइस नापाक है। [33]इस में वह औरत भी शामिल है जिस के माहवारी के अय्याम हैं और वह मर्द जो नापाक औरत से हमबिसतर हो जाता है।”

यौम-ए-कफ़्फ़ारा

16 [1]जब हारून के दो बेटे रब्ब के क़रीब आ कर हलाक हुए तो इस के बाद रब्ब मूसा से हमकलाम हुआ। [2]उस ने कहा,

“अपने भाई हारून को बताना कि वह सिर्फ़ मुक़र्ररा वक़्त पर पर्दे के पीछे मुक़द्दसतरीन कमरे में दाख़िल हो कर अह्द के सन्दूक़ के ढकने के सामने खड़ा हो जाए, वर्ना वह मर जाएगा। क्यूँकि मैं ख़ुद उस ढकने के ऊपर बादल की सूरत में ज़ाहिर होता हूँ। [3]और जब भी वह दाख़िल हो तो गुनाह की क़ुर्बानी के लिए एक जवान बैल और भस्म होने वाली क़ुर्बानी के लिए एक मेंढा पेश करे। [4]पहले वह नहा कर इमाम के कतान के मुक़द्दस कपड़े पहन ले यानी ज़ेरजामा, उस के नीचे पाजामा, फिर कमरबन्द और पगड़ी। [5]इस्राईल की जमाअत हारून को गुनाह की क़ुर्बानी के लिए दो बक्रे और भस्म होने वाली क़ुर्बानी के लिए एक मेंढा दे।

[6]पहले हारून अपने और अपने घराने के लिए जवान बैल को गुनाह की क़ुर्बानी के तौर पर चढ़ाए। [7]फिर वह दोनों बक्रों को मुलाक़ात के ख़ैमे के

दरवाज़े पर रब्ब के सामने ले आए। 8 वहाँ वह क़ुरआ
डाल कर एक को रब्ब के लिए चुने और दूसरे को
अज़ाज़ेल के लिए। 9 जो बक्रा रब्ब के लिए है उसे
वह गुनाह की क़ुर्बानी के तौर पर पेश करे। 10 दूसरा
बक्रा जो क़ुरए के ज़रीए अज़ाज़ेल के लिए चुना गया
उसे ज़िन्दा हालत में रब्ब के सामने खड़ा किया जाए
ताकि वह जमाअत का कफ़्फ़ारा दे। वहाँ से उसे
रेगिस्तान में अज़ाज़ेल के पास भेजा जाए।

11 लेकिन पहले हारून जवान बैल को गुनाह की
क़ुर्बानी के तौर पर चढ़ा कर अपना और अपने घराने
का कफ़्फ़ारा दे। उसे ज़बह करने के बाद 12 वह बख़ूर
की क़ुर्बानगाह से जलते हुए कोइलों से भरा हुआ
बर्तन ले कर अपनी दोनों मुट्ठियाँ बारीक ख़ुश्बूदार
बख़ूर से भर ले और मुक़द्दसतरीन कमरे में दाख़िल
हो जाए। 13 वहाँ वह रब्ब के हुज़ूर बख़ूर को जलते
हुए कोइलों पर डाल दे। इस से पैदा होने वाला धुआँ
अह्द के सन्दूक़ का ढकना छुपा देगा ताकि हारून
मर न जाए। 14 अब वह जवान बैल के ख़ून में से
कुछ ले कर अपनी उंगली से ढकने के सामने वाले
हिस्से पर छिड़के, फिर कुछ अपनी उंगली से सात
बार उस के सामने ज़मीन पर छिड़के। 15 इस के बाद
वह उस बक्रे को ज़बह करे जो क़ौम के लिए गुनाह
की क़ुर्बानी है। वह उस का ख़ून मुक़द्दसतरीन कमरे
में ले आए और उसे बैल के ख़ून की तरह अह्द के
सन्दूक़ के ढकने पर और सात बार उस के सामने
ज़मीन पर छिड़के। 16 यूँ वह मुक़द्दसतरीन कमरे का
कफ़्फ़ारा देगा जो इस्राईलियों की नापाकियों और
तमाम गुनाहों से मुतअस्सिर होता रहता है। इस से
वह मुलाक़ात के पूरे ख़ैमे का भी कफ़्फ़ारा देगा जो
ख़ैमागाह के दर्मियान होने के बाइस इस्राईलियों की
नापाकियों से मुतअस्सिर होता रहता है।

17 जितना वक़्त हारून अपना, अपने घराने का और
इस्राईल की पूरी जमाअत का कफ़्फ़ारा देने के लिए
मुक़द्दसतरीन कमरे में रहेगा इस दौरान किसी दूसरे
को मुलाक़ात के ख़ैमे में ठहरने की इजाज़त नहीं है।
18 फिर वह मुक़द्दसतरीन कमरे से निकल कर ख़ैमे
में रब्ब के सामने पड़ी क़ुर्बानगाह का कफ़्फ़ारा दे।
वह बैल और बक्रे के ख़ून में से कुछ ले कर उसे
क़ुर्बानगाह के चारों सींगों पर लगाए। 19 कुछ ख़ून
वह अपनी उंगली से सात बार उस पर छिड़क दे। यूँ
वह उसे इस्राईलियों की नापाकियों से पाक करके
मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस करेगा।

20 मुक़द्दसतरीन कमरे, मुलाक़ात के ख़ैमे और
क़ुर्बानगाह का कफ़्फ़ारा देने के बाद हारून ज़िन्दा
बक्रे को सामने लाए। 21 वह अपने दोनों हाथ उस के
सर पर रखे और इस्राईलियों के तमाम क़ुसूर यानी
उन के तमाम जराइम और गुनाहों का इक़रार करके
उन्हें बक्रे के सर पर डाल दे। फिर वह उसे रेगिस्तान
में भेज दे। इस के लिए वह बक्रे को एक आदमी के
सपुर्द करे जिसे यह ज़िम्मादारी दी गई है। 22 बक्रा
अपने आप पर उन का तमाम क़ुसूर उठा कर किसी
वीरान जगह में ले जाएगा। वहाँ साथ वाला आदमी
उसे छोड़ आए।

23 इस के बाद हारून मुलाक़ात के ख़ैमे में जाए
और कतान के वह कपड़े जो उस ने मुक़द्दसतरीन
कमरे में दाख़िल होने से पेशतर पहन लिए थे उतार
कर वहीं छोड़ दे। 24 वह मुक़द्दस जगह पर नहा कर
अपनी ख़िदमत के आम कपड़े पहन ले। फिर वह
बाहर आ कर अपने और अपनी क़ौम के लिए भस्म
होने वाली क़ुर्बानी पेश करे ताकि अपना और अपनी
क़ौम का कफ़्फ़ारा दे। 25 इस के इलावा वह गुनाह
की क़ुर्बानी की चर्बी क़ुर्बानगाह पर जला दे।

26 जो आदमी अज़ाज़ेल के लिए बक्रे को रेगिस्तान
में छोड़ आया है वह अपने कपड़े धो कर नहा ले।
इस के बाद वह ख़ैमागाह में आ सकता है।

27 जिस बैल और बक्रे को गुनाह की क़ुर्बानी के
लिए पेश किया गया और जिन का ख़ून कफ़्फ़ारा देने
के लिए मुक़द्दसतरीन कमरे में लाया गया, लाज़िम
है कि उन की खालें, गोश्त और गोबर ख़ैमागाह के
बाहर जला दिया जाए। 28 यह चीज़ें जलाने वाला बाद
में अपने कपड़े धो कर नहा ले। फिर वह ख़ैमागाह
में आ सकता है।

29 लाज़िम है कि सातवें महीने के दसवें दिन
इस्राईली और उन के दर्मियान रहने वाले परदेसी
अपनी जान को दुख दें और काम न करें। यह
उसूल तुम्हारे लिए अबद तक क़ाइम रहे। 30 इस दिन
तुम्हारा कफ़्फ़ारा दिया जाएगा ताकि तुम्हें पाक किया
जाए। तब तुम रब्ब के सामने अपने तमाम गुनाहों से
पाक ठहरोगे। 31 पूरा दिन आराम करो और अपनी
जान को दुख दो। यह उसूल अबद तक क़ाइम रहे।

32 इस दिन इमाम-ए-आज़म तुम्हारा कफ़्फ़ारा दे,
वह इमाम जिसे उस के बाप की जगह मसह किया
गया और इख़्तियार दिया गया है। वह कतान के
मुक़द्दस कपड़े पहन कर 33 मुक़द्दसतरीन कमरे,
मुलाक़ात के ख़ैमे, क़ुर्बानगाह, इमामों और जमाअत
के तमाम लोगों का कफ़्फ़ारा दे। 34 लाज़िम है कि
साल में एक दफ़ा इस्राईलियों के तमाम गुनाहों का
कफ़्फ़ारा दिया जाए। यह उसूल तुम्हारे लिए अबद
तक क़ाइम रहे।”

सब कुछ वैसे ही किया गया जैसा रब्ब ने मूसा को
हुक्म दिया था।

क़ुर्बानी चढ़ाने का मक़ाम

17 1 रब्ब ने मूसा से कहा, 2 “हारून, उस के
बेटों और तमाम इस्राईलियों को हिदायत
देना 3–4 कि जो भी इस्राईली अपनी गाय या भेड़-बक्री
मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर रब्ब को क़ुर्बानी के
तौर पर पेश न करे बल्कि ख़ैमागाह के अन्दर या
बाहर किसी और जगह पर ज़बह करे वह ख़ून बहाने
का क़ुसूरवार ठहरेगा। उस ने ख़ून बहाया है, और
लाज़िम है कि उसे उस की क़ौम में से मिटाया जाए।
5 इस हिदायत का मक़्सद यह है कि इस्राईली अब से
अपनी क़ुर्बानियाँ खुले मैदान में ज़बह न करें बल्कि
रब्ब को पेश करें। वह अपने जानवरों को मुलाक़ात
के ख़ैमे के दरवाज़े पर इमाम के पास ला कर उन्हें
रब्ब को सलामती की क़ुर्बानी के तौर पर पेश करें।
6 इमाम उन का ख़ून मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े
पर की क़ुर्बानगाह पर छिड़के और उन की चर्बी उस
पर जला दे। ऐसी क़ुर्बानी की ख़ुश्बू रब्ब को पसन्द
है। 7 अब से इस्राईली अपनी क़ुर्बानियाँ उन बक्रों के
देवताओं को पेश न करें जिन की पैरवी करके उन्हों
ने ज़िना किया है। यह उन के लिए और उन के बाद
आने वाली नसलों के लिए एक दाइमी उसूल है।

8 लाज़िम है कि हर इस्राईली और तुम्हारे दर्मियान
रहने वाला परदेसी अपनी भस्म होने वाली क़ुर्बानी
या कोई और क़ुर्बानी 9 मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े
पर ला कर रब्ब को पेश करे। वर्ना उसे उस की क़ौम
में से मिटाया जाएगा।

ख़ून खाना मना है

10 ख़ून खाना बिलकुल मना है। जो भी इस्राईली या
तुम्हारे दर्मियान रहने वाला परदेसी ख़ून खाए मैं उस
के ख़िलाफ़ हो जाऊँगा और उसे उस की क़ौम में
से मिटा डालूँगा। 11 क्यूँकि हर मख़्लूक़ के ख़ून में
उस की जान है। मैं ने उसे तुम्हें दे दिया है ताकि वह
क़ुर्बानगाह पर तुम्हारा कफ़्फ़ारा दे। क्यूँकि ख़ून ही
उस जान के ज़रीए जो उस में है तुम्हारा कफ़्फ़ारा देता
है। 12 इस लिए मैं कहता हूँ कि न कोई इस्राईली न
कोई परदेसी ख़ून खाए।

13 अगर कोई भी इस्राईली या परदेसी किसी
जानवर या परिन्दे का शिकार करके पकड़े जिसे
खाने की इजाज़त है तो वह उसे ज़बह करने के बाद
उस का पूरा ख़ून ज़मीन पर बहने दे और ख़ून पर
मिट्टी डाले। 14 क्यूँकि हर मख़्लूक़ का ख़ून उस की
जान है। इस लिए मैं ने इस्राईलियों को कहा है कि
किसी भी मख़्लूक़ का ख़ून न खाओ। हर मख़्लूक़
का ख़ून उस की जान है, और जो भी उसे खाए उसे
क़ौम में से मिटा देना है।

15 अगर कोई भी इस्राईली या परदेसी ऐसे जानवर
का गोश्त खाए जो फ़ित्री तौर पर मर गया या जिसे
जंगली जानवरों ने फाड़ डाला हो तो वह अपने कपड़े
धो कर नहा ले। वह शाम तक नापाक रहेगा। 16 जो
ऐसा नहीं करता उसे अपने क़ुसूर की सज़ा भुगतनी
पड़ेगी।”

नाजाइज़ जिन्सी ताल्लुक़ात

18 1रब्ब ने मूसा से कहा, 2“इस्राईलियों
को बताना कि मैं रब्ब तुम्हारा ख़ुदा हूँ।
3मिस्रियों की तरह ज़िन्दगी न गुज़ारना जिन में तुम
रहते थे। मुल्क-ए-कनआन के लोगों की तरह भी
ज़िन्दगी न गुज़ारना जिन के पास मैं तुमहें ले जा
रहा हूँ। उन के रस्म-ओ-रिवाज न अपनाना। 4मेरे
ही अह्काम पर अमल करो और मेरी हिदायात
के मुताबिक़ चलो। मैं रब्ब तुम्हारा ख़ुदा हूँ। 5मेरी
हिदायात और अह्काम के मुताबिक़ चलना, क्यूँकि
जो यूँ करेगा वह जीता रहेगा। मैं रब्ब हूँ।

6तुम में से कोई भी अपनी क़रीबी रिश्तेदार से
हमबिसतर न हो। मैं रब्ब हूँ।

7अपनी माँ से हमबिसतर न होना, वर्ना तेरे बाप
की बेहुरमती हो जाएगी। वह तेरी माँ है, इस लिए
उस से हमबिसतर न होना।

8अपने बाप की किसी भी बीवी से हमबिसतर न
होना, वर्ना तेरे बाप की बेहुरमती हो जाएगी।

9अपनी बहन से हमबिसतर न होना, चाहे वह तेरे
बाप या तेरी माँ की बेटी हो, चाहे वह तेरे ही घर में
या कहीं और पैदा हुई हो।

10अपनी पोती या नवासी से हमबिसतर न होना,
वर्ना तेरी अपनी बेहुरमती हो जाएगी।

11अपने बाप की बीवी की बेटी से हमबिसतर न
होना। वह तेरी बहन है।

12अपनी फूफी से हमबिसतर न होना। वह तेरे बाप
की क़रीबी रिश्तेदार है।

13अपनी ख़ाला से हमबिसतर न होना। वह तेरी माँ
की क़रीबी रिश्तेदार है।

14अपने बाप के भाई की बीवी से हमबिसतर न
होना, वर्ना तेरे बाप के भाई की बेहुरमती हो जाएगी।
उस की बीवी तेरी चची है।

15अपनी बहू से हमबिसतर न होना। वह तेरे बेटे
की बीवी है।

16अपनी भाबी से हमबिसतर न होना, वर्ना तेरे भाई
की बेहुरमती हो जाएगी।

17अगर तेरा जिन्सी ताल्लुक़ किसी औरत से हो तो
उस की बेटी, पोती या नवासी से हमबिसतर होना
मना है, क्यूँकि वह उस की क़रीबी रिश्तेदार हैं। ऐसा
करना बड़ी शर्मनाक हर्कत है।

18अपनी बीवी के जीते जी उस की बहन से शादी
न करना।

19किसी औरत से उस की माहवारी के दिनों में
हमबिसतर न होना। इस दौरान वह नापाक है।

20किसी दूसरे मर्द की बीवी से हमबिसतर न होना,
वर्ना तू अपने आप को नापाक करेगा।

21अपने किसी भी बच्चे को मलिक देवता को
क़ुर्बानी के तौर पर पेश करके जला देना मना है। ऐसी
हर्कत से तू अपने ख़ुदा के नाम को दाग़ लगाएगा। मैं
रब्ब हूँ।

22मर्द दूसरे मर्द के साथ जिन्सी ताल्लुक़ात न रखे।
ऐसी हर्कत क़ाबिल-ए-घिन है।

23किसी जानवर से जिन्सी ताल्लुक़ात न रखना, वर्ना
तू नापाक हो जाएगा। औरतों के लिए भी ऐसा करना
मना है। यह बड़ी शर्मनाक हर्कत है।

24ऐसी हर्कतों से अपने आप को नापाक न करना।
क्यूँकि जो क़ौमें मैं तुम्हारे आगे मुल्क से निकालूँगा
वह इसी तरह नापाक होती रहीं। 25मुल्क ख़ुद
भी नापाक हुआ। इस लिए मैं ने उसे उस के
क़ुसूर के सबब से सज़ा दी, और नतीजे में उस
ने अपने बाशिन्दों को उगल दिया। 26लेकिन तुम
मेरी हिदायात और अह्काम के मुताबिक़ चलो। न
देसी और न परदेसी ऐसी कोई घिनौनी हर्कत करें।
27क्यूँकि यह तमाम क़ाबिल-ए-घिन बातें उन से हुईं
जो तुम से पहले इस मुल्क में रहते थे। यूँ मुल्क
नापाक हुआ। 28लिहाज़ा अगर तुम भी मुल्क को
नापाक करोगे तो वह तुम्हें इसी तरह उगल देगा जिस
तरह उस ने तुम से पहले मौजूद क़ौमों को उगल
दिया। 29जो भी मज़कूरा घिनौनी हर्कतों में से एक
करे उसे उस की क़ौम में से मिटाया जाए। 30मेरे

अह्काम के मुताबिक़ चलते रहो और ऐसे क़ाबिल-
ए-घिन रस्म-ओ-रिवाज न अपनाना जो तुम्हारे आने
से पहले राइज थे। इन से अपने आप को नापाक न
करना। मैं रब्ब तुम्हारा ख़ुदा हूँ।”

मुक़द्दस क़ौम के लिए हिदायात

19 1 रब्ब ने मूसा से कहा, 2 “इस्राईलियों की
पूरी जमाअत को बताना कि मुक़द्दस रहो,
क्यूँकि मैं रब्ब तुम्हारा ख़ुदा क़ुद्दूस हूँ।
3 तुम में से हर एक अपने माँ-बाप की इज़्ज़त करे।
हफ़्ते के दिन काम न करना। मैं रब्ब तुम्हारा ख़ुदा हूँ।
4 न बुतों की तरफ़ रुजू करना, न अपने लिए देवता
ढालना। मैं ही रब्ब तुम्हारा ख़ुदा हूँ।
5 जब तुम रब्ब को सलामती की क़ुर्बानी पेश करते
हो तो उसे यूँ चढ़ाओ कि तुम मन्ज़ूर हो जाओ। 6 उस
का गोश्त उसी दिन या अगले दिन खाया जाए। जो भी
तीसरे दिन तक बच जाता है उसे जलाना है। 7 अगर
कोई उसे तीसरे दिन खाए तो उसे इल्म होना चाहिए
कि यह क़ुर्बानी नापाक है और रब्ब को पसन्द नहीं
है। 8 ऐसे शख़्स को अपने क़ुसूर की सज़ा उठानी
पड़ेगी, क्यूँकि उस ने उस चीज़ की मुक़द्दस हालत
ख़त्म की है जो रब्ब के लिए मख़्सूस की गई थी।
उसे उस की क़ौम में से मिटाया जाए।
9 कटाई के वक़्त अपनी फ़सल पूरे तौर पर न
काटना बल्कि खेत के किनारों पर कुछ छोड़ देना।
इस तरह जो कुछ कटाई करते वक़्त खेत में बच
जाए उसे छोड़ना। 10 अंगूर के बाग़ों में भी जो कुछ
अंगूर तोड़ते वक़्त बच जाए उसे छोड़ देना। जो अंगूर
ज़मीन पर गिर जाएँ उन्हें उठा कर न ले जाना। उन्हें
ग़रीबों और परदेसियों के लिए छोड़ देना। मैं रब्ब
तुम्हारा ख़ुदा हूँ।
11 चोरी न करना, झूट न बोलना, एक दूसरे को
धोका न देना।
12 मेरे नाम की क़सम खा कर धोका न देना, वर्ना
तुम मेरे नाम को दाग़ लगाओगे। मैं रब्ब हूँ।
13 एक दूसरे को न दबाना और न लूटना। किसी
की मज़्दूरी उसी दिन की शाम तक दे देना और उसे
अगली सुब्ह तक रोके न रखना।
14 बहरे को न कोसना, न अंधे के रास्ते में कोई
चीज़ रखना जिस से वह ठोकर खाए। इस में भी अपने
ख़ुदा का ख़ौफ़ मानना। मैं रब्ब हूँ।
15 अदालत में किसी की हक़तल्फ़ी न करना।
फ़ैसला करते वक़्त किसी की भी जानिबदारी न
करना, चाहे वह ग़रीब या असर-ओ-रसूख़ वाला हो।
इन्साफ़ से अपने पड़ोसी की अदालत कर।
16 अपनी क़ौम में इधर उधर फिरते हुए किसी पर
बुह्तान न लगाना। कोई भी ऐसा काम न करना जिस
से किसी की जान ख़त्रे में पड़ जाए। मैं रब्ब हूँ।
17 दिल में अपने भाई से नफ़रत न करना। अगर
किसी की सरज़निश करनी है तो रू-ब-रू करना, वर्ना
तू उस के सबब से क़ुसूरवार ठहरेगा।
18 इन्तिक़ाम न लेना। अपनी क़ौम के किसी शख़्स
पर देर तक तेरा ग़ुस्सा न रहे बल्कि अपने पड़ोसी से
वैसी मुहब्बत रखना जैसी तू अपने आप से रखता है।
मैं रब्ब हूँ।
19 मेरी हिदायात पर अमल करो। दो मुख़्तलिफ़
क़िस्म के जानवरों को मिलाप न करने देना। अपने
खेत में दो क़िस्म के बीज न बोना। ऐसा कपड़ा न
पहनना जो दो मुख़्तलिफ़ क़िस्म के धागों का बुना
हुआ हो।
20 अगर कोई आदमी किसी लौंडी से जिस की
मंगनी किसी और से हो चुकी हो हमबिसतर हो जाए
और लौंडी को अब तक न पैसों से न वैसे ही आज़ाद
किया गया हो तो मुनासिब सज़ा दी जाए। लेकिन उन्हें
सज़ा-ए-मौत न दी जाए, क्यूँकि उसे अब तक आज़ाद
नहीं किया गया। 21 क़ुसूरवार आदमी मुलाक़ात के
ख़ैमे के दरवाज़े पर एक मेंढा ले आए ताकि वह रब्ब
को क़ुसूर की क़ुर्बानी के तौर पर पेश किया जाए।
22 इमाम इस क़ुर्बानी से रब्ब के सामने उस के गुनाह
का कफ़्फ़ारा दे। यूँ उस का गुनाह मुआफ़ किया
जाएगा। 23 जब मुल्क-ए-कनआन में दाख़िल होने के

बाद तुम फलदार दरख़्त लगाओगे तो पहले तीन साल
उन का फल न खाना बल्कि उसे मम्नू [c]समझना।
24 चौथे साल उन का तमाम फल ख़ुशी के मुक़द्दस
नज़राने के तौर पर रब्ब के लिए मख़्सूस किया जाए।
25 पाँचवें साल तुम उन का फल खा सकते हो। यूँ
तुम्हारी फ़सल बढ़ाई जाएगी। मैं रब्ब तुम्हारा ख़ुदा
हूँ।
26 ऐसा गोश्त न खाना जिस में ख़ून हो। फ़ाल या
शुगून न निकालना।
27 अपने सर के बाल गोल शक्ल में न कटवाना, न
अपनी दाढ़ी को तराशना। 28 अपने आप को मुर्दों के
सबब से काट कर ज़ख़्मी न करना, न अपनी जिल्द
पर नुक़ूश गुदवाना। मैं रब्ब हूँ।
29 अपनी बेटी को कस्बी न बनाना, वर्ना उस की
मुक़द्दस हालत जाती रहेगी और मुल्क ज़िनाकारी के
बाइस हरामकारी से भर जाएगा।
30 हफ़्ते के दिन आराम करना और मेरे मक़्दिस का
एहतिराम करना। मैं रब्ब हूँ।
31 ऐसे लोगों के पास न जाना जो मुर्दों से राबिता
करते हैं, न ग़ैबदानों की तरफ़ रुजू करना, वर्ना तुम
उन से नापाक हो जाओगे। मैं रब्ब तुम्हारा ख़ुदा हूँ।
32 बूढ़े लोगों के सामने उठ कर खड़ा हो जाना,
बुज़ुर्गों की इज़्ज़त करना और अपने ख़ुदा का
एहतिराम करना। मैं रब्ब हूँ।
33 जो परदेसी तुम्हारे मुल्क में तुम्हारे दर्मियान रहता
है उसे न दबाना। 34 उस के साथ ऐसा सुलूक कर
जैसा अपने हमवतनों के साथ करता है। जिस तरह
तू अपने आप से मुहब्बत रखता है उसी तरह उस
से भी मुहब्बत रखना। याद रहे कि तुम ख़ुद मिस्र में
परदेसी थे। मैं रब्ब तुम्हारा ख़ुदा हूँ।
35 नाइन्साफ़ी न करना। न अदालत में, न लम्बाई
नापते वक़्त, न तोलते वक़्त और न किसी चीज़ की
मिक़्दार नापते वक़्त। 36 सहीह तराज़ू, सहीह बाट
और सहीह पैमाना इस्तेमाल करना। मैं रब्ब तुम्हारा
ख़ुदा हूँ जो तुम्हें मिस्र से निकाल लाया हूँ।
37 मेरी तमाम हिदायात और तमाम अहकाम मानो
और उन पर अमल करो। मैं रब्ब हूँ।”

जराइम की सज़ाएँ

20 1 रब्ब ने मूसा से कहा, 2 “इस्राईलियों को
बताना कि तुम में से जो भी अपने बच्चे
को मलिक देवता को क़ुर्बानी के तौर पर पेश करे
उसे सज़ा-ए-मौत देनी है। इस में कोई फ़र्क़ नहीं कि
वह इस्राईली है या परदेसी। जमाअत के लोग उसे
संगसार करें। 3 मैं ख़ुद ऐसे शख़्स के ख़िलाफ़ हो
जाऊँगा और उसे उस की क़ौम में से मिटा डालूँगा।
क्यूँकि अपने बच्चों को मलिक को पेश करने से उस ने
मेरे मक़्दिस को नापाक किया और मेरे नाम को दाग़
लगाया है। 4 अगर जमाअत के लोग अपनी आँखें
बन्द करके ऐसे शख़्स की हर्कतें नज़रअन्दाज़ करें
और उसे सज़ा-ए-मौत न दें 5 तो फिर मैं ख़ुद ऐसे शख़्स
और उस के घराने के ख़िलाफ़ खड़ा हो जाऊँगा। मैं
उसे और उन तमाम लोगों को क़ौम में से मिटा डालूँगा
जिन्हों ने उस के पीछे लग कर मलिक देवता को
सिज्दा करने से ज़िना किया है।
6 जो शख़्स मुर्दों से राबिता करने और ग़ैबदानी
करने वालों की तरफ़ रुजू करता है मैं उस के ख़िलाफ़
हो जाऊँगा। उन की पैरवी करने से वह ज़िना करता
है। मैं उसे उस की क़ौम में से मिटा डालूँगा। 7 अपने
आप को मेरे लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस रखो, क्यूँकि
मैं रब्ब तुम्हारा ख़ुदा हूँ। 8 मेरी हिदायात मानो और
उन पर अमल करो। मैं रब्ब हूँ जो तुम्हें मख़्सूस-ओ-
मुक़द्दस करता हूँ।
9 जिस ने भी अपने बाप या माँ पर लानत भेजी है
उसे सज़ा-ए-मौत दी जाए। इस हर्कत से वह अपनी
मौत का ख़ुद ज़िम्मादार है।

[c]लफ़्ज़ी तर्जुमा : नामख़्तून।

10 अगर किसी मर्द ने किसी की बीवी के साथ ज़िना किया है तो दोनों को सज़ा-ए-मौत देनी है।

11 जो मर्द अपने बाप की बीवी से हमबिसतर हुआ है उस ने अपने बाप की बेहुरमती की है। दोनों को सज़ा-ए-मौत देनी है। वह अपनी मौत के ख़ुद ज़िम्मादार हैं।

12 अगर कोई मर्द अपनी बहू से हमबिसतर हुआ है तो दोनों को सज़ा-ए-मौत देनी है। जो कुछ उन्हों ने किया है वह निहायत शर्मनाक है। वह अपनी मौत के ख़ुद ज़िम्मादार हैं।

13 अगर कोई मर्द किसी दूसरे मर्द से जिन्सी ताल्लुक़ात रखे तो दोनों को इस घिनौनी हर्कत के बाइस सज़ा-ए-मौत देनी है। वह अपनी मौत के ख़ुद ज़िम्मादार हैं।

14 अगर कोई आदमी अपनी बीवी के इलावा उस की माँ से भी शादी करे तो यह एक निहायत शर्मनाक बात है। दोनों को जला देना है ताकि तुम्हारे दर्मियान कोई ऐसी ख़बीस बात न रहे।

15 जो मर्द किसी जानवर से जिन्सी ताल्लुक़ात रखे उसे सज़ा-ए-मौत देना है। उस जानवर को भी मार दिया जाए। 16 जो औरत किसी जानवर से जिन्सी ताल्लुक़ात रखे उसे सज़ा-ए-मौत देनी है। उस जानवर को भी मार दिया जाए। वह अपनी मौत के ख़ुद ज़िम्मादार हैं।

17 जिस मर्द ने अपनी बहन से शादी की है उस ने शर्मनाक हर्कत की है, चाहे वह बाप की बेटी हो या माँ की। उन्हें इस्राईली क़ौम की नज़रों से मिटाया जाए। ऐसे शख़्स ने अपनी बहन की बेहुरमती की है। इस लिए उसे ख़ुद अपने क़ुसूर के नतीजे बर्दाश्त करने पड़ेंगे।

18 अगर कोई मर्द माहवारी के अय्याम में किसी औरत से हमबिसतर हुआ है तो दोनों को उन की क़ौम में से मिटाना है। क्यूँकि दोनों ने औरत के ख़ून के मम्बा से पर्दा उठाया है।

19 अपनी ख़ाला या फूफी से हमबिसतर न होना। क्यूँकि जो ऐसा करता है वह अपनी क़रीबी रिश्तेदार की बेहुरमती करता है। दोनों को अपने क़ुसूर के नतीजे बर्दाश्त करने पड़ेंगे।

20 जो अपनी चची या ताई से हमबिसतर हुआ है उस ने अपने चचा या ताया की बेहुरमती की है। दोनों को अपने क़ुसूर के नतीजे बर्दाश्त करने पड़ेंगे। वह बेऔलाद मरेंगे।

21 जिस ने अपनी भाबी से शादी की है उस ने एक नजिस हर्कत की है। उस ने अपने भाई की बेहुरमती की है। वह बेऔलाद रहेंगे।

22 मेरी तमाम हिदायात और अह्काम को मानो और उन पर अमल करो। वर्ना जिस मुल्क में मैं तुमहें ले जा रहा हूँ वह तुम्हें उगल देगा। 23 उन क़ौमों के रस्म-ओ-रिवाज के मुताबिक़ ज़िन्दगी न गुज़ारना जिन्हें मैं तुम्हारे आगे से निकाल दूँगा। मुझे इस सबब से उन से घिन आने लगी कि वह यह सब कुछ करते थे। 24 लेकिन तुम से मैं ने कहा, ‘तुम ही उन की ज़मीन पर क़ब्ज़ा करोगे। मैं ही उसे तुम्हें दे दूँगा, ऐसा मुल्क जिस में कस्रत का दूध और शहद है।’ मैं रब्ब तुम्हारा ख़ुदा हूँ, जिस ने तुम को दीगर क़ौमों में से चुन कर अलग कर दिया है। 25 इस लिए लाज़िम है कि तुम ज़मीन पर चलने वाले जानवरों और परिन्दों में पाक और नापाक का इमतियाज़ करो। अपने आप को नापाक जानवर खाने से क़ाबिल-ए-घिन न बनाना, चाहे वह ज़मीन पर चलते या रेंगते हैं, चाहे हवा में उड़ते हैं। मैं ही ने उन्हें तुम्हारे लिए नापाक क़रार दिया है। 26 तुम्हें मेरे लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस होना है, क्यूँकि मैं क़ुद्दूस हूँ, और मैं ने तुम्हें दीगर क़ौमों में से चुन कर अपने लिए अलग कर लिया है।

27 तुम में से जो मुर्दों से राबिता या ग़ैबदानी करता है उसे सज़ा-ए-मौत देनी है, ख़्वाह औरत हो या मर्द। उन्हें संगसार करना। वह अपनी मौत के ख़ुद ज़िम्मादार हैं।”

इमामों के लिए हिदायात

21 1 रब्ब ने मूसा से कहा, “हारून के बेटों को जो इमाम हैं बता देना कि इमाम अपने

आप को किसी इस्राईली की लाश के क़रीब जाने से नापाक न करे 2 सिवा-ए-अपने क़रीबी रिश्तेदारों के यानी माँ, बाप, बेटा, बेटी, भाई 3 और जो ग़ैरशादीशुदा बहन उस के घर में रहती है। 4 वह अपनी क़ौम में किसी और के बाइस अपने आप को नापाक न करे, वर्ना उस की मुक़द्दस हालत जाती रहेगी।

5 इमाम अपने सर को न मुंडवाएँ। वह न अपनी दाढ़ी को तराशें और न काटने से अपने आप को ज़ख़्मी करें।

6 वह अपने ख़ुदा के लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस रहें और अपने ख़ुदा के नाम को दाग़ न लगाएँ। चूँकि वह रब्ब को जलने वाली क़ुर्बानियाँ यानी अपने ख़ुदा की रोटी पेश करते हैं इस लिए लाज़िम है कि वह मुक़द्दस रहें। 7 इमाम ज़िनाकार औरत, मन्दिर की कस्बी या तलाक़याफ़्ता औरत से शादी न करें, क्यूँकि वह अपने रब्ब के लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस हैं। 8 इमाम को मुक़द्दस समझना, क्यूँकि वह तेरे ख़ुदा की रोटी को क़ुर्बानगाह पर चढ़ाता है। वह तेरे लिए मुक़द्दस ठहरे क्यूँकि मैं रब्ब क़ुद्दूस हूँ। मैं ही तुम्हें मुक़द्दस करता हूँ।

9 किसी इमाम की जो बेटी ज़िनाकारी से अपनी मुक़द्दस हालत को ख़त्म कर देती है वह अपने बाप की मुक़द्दस हालत को भी ख़त्म कर देती है। उसे जला दिया जाए।

10 इमाम-ए-आज़म के सर पर मसह का तेल उंडेला गया है और उसे इमाम-ए-आज़म के मुक़द्दस कपड़े पहनने का इख़तियार दिया गया है। इस लिए वह रंज के आलम में अपने बालों को बिखरने न दे, न कभी अपने कपड़ों को फाड़े। 11 वह किसी लाश के क़रीब न जाए, चाहे वह उस के बाप या माँ की लाश क्यूँ न हो, वर्ना वह नापाक हो जाएगा। 12 जब तक कोई लाश उस के घर में पड़ी रहे वह मक़्दिस को छोड़ कर अपने घर न जाए, वर्ना वह मक़्दिस को नापाक करेगा। क्यूँकि उसे उस के ख़ुदा के तेल से मख़्सूस किया गया है। मैं रब्ब हूँ। 13 इमाम-ए-आज़म को सिर्फ़ कुंवारी से शादी की इजाज़त है। 14 वह बेवा, तलाक़याफ़्ता औरत, मन्दिर की कस्बी या ज़िनाकार औरत से शादी न करे बल्कि सिर्फ़ अपने क़बीले की कुंवारी से, 15 वर्ना उस की औलाद मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस नहीं होगी। क्यूँकि मैं रब्ब हूँ जो उसे अपने लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस करता हूँ।”

16 रब्ब ने मूसा से यह भी कहा, 17 “हारून को बताना कि तेरी औलाद में से कोई भी जिस के जिस्म में नुक़्स हो मेरे हुज़ूर आ कर अपने ख़ुदा की रोटी न चढ़ाए। यह उसूल आने वाली नसलों के लिए भी अटल है। 18 क्यूँकि कोई भी माज़ूर मेरे हुज़ूर न आए, न अंधा, न लंगड़ा, न वह जिस की नाक चिरी हुई हो या जिस के किसी उज़्व में कमी बेशी हो, 19 न वह जिस का पाँओ या हाथ टूटा हुआ हो, 20 न कुबड़ा, न बौना, न वह जिस की आँख में नुक़्स हो या जिसे वबाई जिल्दी बीमारी हो या जिस के ख़ुस्ये कुचले हुए हों। 21 हारून इमाम की कोई भी औलाद जिस के जिस्म में नुक़्स हो मेरे हुज़ूर आ कर रब्ब को जलने वाली क़ुर्बानियाँ पेश न करे। चूँकि उस में नुक़्स है इस लिए वह मेरे हुज़ूर आ कर अपने ख़ुदा की रोटी न चढ़ाए। 22 उसे अल्लाह की मुक़द्दस बल्कि मुक़द्दसतरीन क़ुर्बानियों में से भी इमामों का हिस्सा खाने की इजाज़त है। 23 लेकिन चूँकि उस में नुक़्स है इस लिए वह मुक़द्दसतरीन कमरे के दरवाज़े के पर्दे के क़रीब न जाए, न क़ुर्बानगाह के पास आए। वर्ना वह मेरी मुक़द्दस चीज़ों को नापाक करेगा। क्यूँकि मैं रब्ब हूँ जो उन्हें अपने लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस करता हूँ।”

24 मूसा ने यह हिदायात हारून, उस के बेटों और तमाम इस्राईलियों को दीं।

क़ुर्बानी का गोश्त खाने की हिदायात

22 1 रब्ब ने मूसा से कहा, 2 “हारून और उस के बेटों को बताना कि इस्राईलियों की उन क़ुर्बानियों का एहतिराम करो जो तुम ने मेरे लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस की हैं, वर्ना तुम मेरे नाम

को दाग़ लगाओगे। मैं रब्ब हूँ। [3]जो इमाम नापाक होने के बावुजूद उन क़ुर्बानियों के पास आ जाए जो इस्राईलियों ने मेरे लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस की हैं उसे मेरे सामने से मिटाना है। यह उसूल आने वाली नसलों के लिए भी अटल है। मैं रब्ब हूँ।

[4]हारून की औलाद में से जो कोई भी वबाई जिल्दी बीमारी या जरयान का मरीज़ हो उसे मुक़द्दस क़ुर्बानियों में से अपना हिस्सा खाने की इजाज़त नहीं है। पहले वह पाक हो जाए। जो ऐसी कोई भी चीज़ छुए जो लाश से नापाक हो गई हो या ऐसे आदमी को छुए जिस का नुत्फ़ा निकला हो वह नापाक हो जाता है। [5]वह नापाक रेंगने वाले जानवर या नापाक शख़्स को छूने से भी नापाक हो जाता है, ख़्वाह वह किसी भी सबब से नापाक क्यूँ न हुआ हो। [6]जो ऐसी कोई भी चीज़ छुए वह शाम तक नापाक रहेगा। इस के इलावा लाज़िम है कि वह मुक़द्दस क़ुर्बानियों में से अपना हिस्सा खाने से पहले नहा ले। [7]सूरज के ग़ुरूब होने पर वह पाक होगा और मुक़द्दस क़ुर्बानियों में से अपना हिस्सा खा सकेगा। क्यूँकि वह उस की रोज़ी हैं। [8]इमाम ऐसे जानवरों का गोश्त न खाए जो फ़ित्री तौर पर मर गए या जिन्हें जंगली जानवरों ने फाड़ डाला हो, वर्ना वह नापाक हो जाएगा। मैं रब्ब हूँ।

[9]इमाम मेरी हिदायात के मुताबिक़ चलें, वर्ना वह क़ुसूरवार बन जाएँगे और मुक़द्दस चीज़ों की बेहुरमती करने के सबब से मर जाएँगे। मैं रब्ब हूँ जो उन्हें अपने लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस करता हूँ।

[10]सिर्फ़ इमाम के ख़ान्दान के अफ़राद मुक़द्दस क़ुर्बानियों में से खा सकते हैं। ग़ैरशहरी या मज़्दूर को इजाज़त नहीं है। [11]लेकिन इमाम का ग़ुलाम या लौंडी उस में से खा सकते हैं, चाहे उन्हें ख़रीदा गया हो या वह उस के घर में पैदा हुए हों। [12]अगर इमाम की बेटी ने किसी ऐसे शख़्स से शादी की है जो इमाम नहीं है तो उसे मुक़द्दस क़ुर्बानियों में से खाने की इजाज़त नहीं है। [13]लेकिन हो सकता है कि वह बेवा या तलाक़याफ़्ता हो और उस के बच्चे न हों। जब वह अपने बाप के घर लौट कर वहाँ ऐसे रहेगी जैसे अपनी जवानी में तो वह अपने बाप के उस खाने में से खा सकती है जो क़ुर्बानियों में से बाप का हिस्सा है। लेकिन जो इमाम के ख़ान्दान का फ़र्द नहीं है उसे खाने की इजाज़त नहीं है।

[14]जिस शख़्स ने नादानिस्ता तौर पर मुक़द्दस क़ुर्बानियों में से इमाम के हिस्से से कुछ खाया है वह इमाम को सब कुछ वापस करने के इलावा 20 फ़ीसद ज़ियादा दे। [15]इमाम रब्ब को पेश की हुई क़ुर्बानियों की मुक़द्दस हालत यूँ ख़त्म न करें [16]कि वह दूसरे इस्राईलियों को यह मुक़द्दस चीज़ें खाने दें। ऐसी हर्कत से वह उन को बड़ा क़ुसूरवार बना देंगे। मैं रब्ब हूँ जो उन्हें अपने लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस करता हूँ।”

जानवरों की क़ुर्बानियों के बारे में हिदायात

[17]रब्ब ने मूसा से कहा, [18]“हारून, उस के बेटों और इस्राईलियों को बताना कि अगर तुम में से कोई इस्राईली या परदेसी रब्ब को भस्म होने वाली क़ुर्बानी पेश करना चाहे तो तरीक़-ए-कार में कोई फ़र्क़ नहीं है, चाहे वह यह मन्नत मान कर या वैसे ही दिली ख़ुशी से कर रहा हो। [19]इस के लिए लाज़िम है कि तुम एक बेऐब बैल, मेंढा या बक्रा पेश करो। फिर ही उसे क़बूल किया जाएगा। [20]क़ुर्बानी के लिए कभी भी ऐसा जानवर पेश न करना जिस में नुक़्स हो, वर्ना तुम उस के बाइस मन्ज़ूर नहीं होगे। [21]अगर कोई रब्ब को सलामती की क़ुर्बानी पेश करना चाहे तो तरीक़-ए-कार में कोई फ़र्क़ नहीं है, चाहे वह यह मन्नत मान कर या वैसे ही दिली ख़ुशी से कर रहा हो। इस के लिए लाज़िम है कि वह गाय-बैलों या भेड़-बक्रियों में से बेऐब जानवर चुने। फिर उसे क़बूल किया जाएगा। [22]रब्ब को ऐसे जानवर पेश न करना जो अंधे हों, जिन के आज़ा टूटे या कटे हुए हों, जिन को रसौली हो या जिन्हें वबाई जिल्दी बीमारी लग गई हो। रब्ब को उन्हें जलने वाली क़ुर्बानी के तौर पर क़ुर्बानगाह पर पेश न करना। [23]लेकिन जिस गाय-बैल या भेड़-

बक्री के किसी उज़्व में कमी बेशी हो उसे पेश किया
जा सकता है। शर्त यह है कि पेश करने वाला उसे
वैसे ही दिली ख़ुशी से चढ़ाए। अगर वह उसे अपनी
मन्नत मान कर पेश करे तो वह क़बूल नहीं किया
जाएगा। 24 रब्ब को ऐसा जानवर पेश न करना जिस
के ख़ुस्ये कुचले, तोड़े या कटे हुए हों। अपने मुल्क
में जानवरों को इस तरह ख़सी न बनाना, 25 न ऐसे
जानवर किसी ग़ैरमुल्की से ख़रीद कर अपने ख़ुदा
की रोटी के तौर पर पेश करना। तुम ऐसे जानवरों के
बाइस मन्ज़ूर नहीं होगे, क्यूँकि उन में ख़राबी और
नुक़्स है।”

26 रब्ब ने मूसा से यह भी कहा, 27 “जब किसी
गाय, भेड़ या बक्री का बच्चा पैदा होता है तो लाज़िम
है कि वह पहले सात दिन अपनी माँ के पास रहे।
आठवें दिन से पहले रब्ब उसे जलने वाली क़ुर्बानी
के तौर पर क़बूल नहीं करेगा। 28 किसी गाय, भेड़
या बक्री के बच्चे को उस की माँ समेत एक ही दिन
ज़बह न करना। 29 जब तुम रब्ब को सलामती की
कोई क़ुर्बानी चढ़ाना चाहते हो तो उसे यूँ पेश करना
कि तुम मन्ज़ूर हो जाओ। 30 अगली सुब्ह तक कुछ
बचा न रहे बल्कि उसे उसी दिन खाना है। मैं रब्ब हूँ।
31 मेरे अह्काम मानो और उन पर अमल करो। मैं
रब्ब हूँ। 32 मेरे नाम को दाग़ न लगाना। लाज़िम है
कि मुझे इस्राईलियों के दर्मियान क़ुद्दूस माना जाए।
मैं रब्ब हूँ जो तुम्हें अपने लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस
करता हूँ। 33 मैं तुमहें मिस्र से निकाल लाया हूँ ताकि
तुम्हारा ख़ुदा हूँ। मैं रब्ब हूँ।”

23 1 रब्ब ने मूसा से कहा, 2 “इस्राईलियों को
बताना कि यह मेरी, रब्ब की ईदें हैं जिन
पर तुम्हें लोगों को मुक़द्दस इजतिमा के लिए जमा
करना है।

सबत का दिन

3 हफ़्ते में छः दिन काम करना, लेकिन सातवाँ दिन
हर तरह से आराम का दिन है। उस दिन मुक़द्दस
इजतिमा हो। जहाँ भी तुम रहते हो वहाँ काम न
करना। यह दिन रब्ब के लिए मख़्सूस सबत है।

फ़सह की ईद और बेख़मीरी रोटी की ईद

4 यह रब्ब की ईदें हैं जिन पर तुम्हें लोगों को
मुक़द्दस इजतिमा के लिए जमा करना है।
5 फ़सह की ईद पहले महीने के चौधवें दिन शुरू
होती है। उस दिन सूरज के ग़ुरूब होने पर रब्ब
की ख़ुशी मनाई जाए। 6 अगले दिन रब्ब की याद
में बेख़मीरी रोटी की ईद शुरू होती है। सात दिन
तक तुम्हारी रोटी में ख़मीर न हो। 7 इन सात दिनों के
पहले दिन मुक़द्दस इजतिमा हो और लोग अपना हर
काम छोड़ें। 8 इन सात दिनों में रोज़ाना रब्ब को जलने
वाली क़ुर्बानी पेश करो। सातवें दिन भी मुक़द्दस
इजतिमा हो और लोग अपना हर काम छोड़ें।”

पहले पूले की ईद

9 रब्ब ने मूसा से कहा, 10 “इस्राईलियों को बताना
कि जब तुम उस मुल्क में दाख़िल होगे जो मैं तुमहें
दूँगा और वहाँ अनाज की फ़सल काटोगे तो तुम्हें
इमाम को पहला पूला देना है। 11 इत्वार को इमाम
यह पूला रब्ब के सामने हिलाए ताकि तुम मन्ज़ूर
हो जाओ। 12 उस दिन भेड़ का एक यकसाला बेऐब
बच्चा भी रब्ब को पेश करना। उसे क़ुर्बानगाह पर
भस्म होने वाली क़ुर्बानी के तौर पर चढ़ाना। 13 साथ
ही ग़ल्ला की नज़र के लिए तेल से मिलाया गया 3
किलोग्राम बेहतरीन मैदा भी पेश करना। जलने वाली
यह क़ुर्बानी रब्ब को पसन्द है। इस के इलावा मै की
नज़र के लिए एक लिटर मै भी पेश करना। 14 पहले
यह सब कुछ करो, फिर ही तुम्हें नई फ़सल के अनाज
से खाने की इजाज़त होगी, ख़्वाह वह भुना हुआ हो,
ख़्वाह कच्चा या रोटी की सूरत में पकाया गया हो।
जहाँ भी तुम रहते हो वहाँ ऐसा ही करना है। यह
उसूल अबद तक क़ाइम रहे।

हफ़्तों की ईद यानी पन्तिकुस्त

15 जिस दिन तुम ने अनाज का पूला पेश किया उस
दिन से पूरे सात हफ़्ते गिनो। 16 पचासवें दिन यानी
सातवें इत्वार को रब्ब को नए अनाज की क़ुर्बानी
चढ़ाना। 17 हर घराने की तरफ़ से रब्ब को हिलाने
वाली क़ुर्बानी के तौर पर दो रोटियाँ पेश की जाएँ।
हर रोटी के लिए 3 किलोग्राम बेहतरीन मैदा इस्तेमाल
किया जाए। उन में ख़मीर डाल कर पकाना है। यह
फ़सल की पहली पैदावार की क़ुर्बानी हैं। 18 इन
रोटियों के साथ एक जवान बैल, दो मेंढे और भेड़ के
सात बेऐब और यकसाला बच्चे पेश करो। उन्हें रब्ब
के हुज़ूर भस्म होने वाली क़ुर्बानी के तौर पर चढ़ाना।
इस के इलावा ग़ल्ला की नज़र और मै की नज़र भी पेश
करनी है। जलने वाली इस क़ुर्बानी की ख़ुश्बू रब्ब
को पसन्द है। 19 फिर गुनाह की क़ुर्बानी के लिए एक
बक्रा और सलामती की क़ुर्बानी के लिए दो यकसाला
भेड़ के बच्चे चढ़ाओ। 20 इमाम भेड़ के यह दो बच्चे
मज़्कूरा रोटियों समेत हिलाने वाली क़ुर्बानी के तौर
पर रब्ब के सामने हिलाए। यह रब्ब के लिए मख़्सूस-
ओ-मुक़द्दस हैं और क़ुर्बानियों में से इमाम का हिस्सा
हैं। 21 उसी दिन लोगों को मुक़द्दस इजतिमा के लिए
जमा करो। कोई भी काम न करना। यह उसूल अबद
तक क़ाइम रहे, और इसे हर जगह मानना है।

22 कटाई के वक़्त अपनी फ़सल पूरे तौर पर न
काटना बल्कि खेत के किनारों पर कुछ छोड़ देना।
इस तरह जो कुछ कटाई करते वक़्त खेत में बच
जाए उसे छोड़ना। बचा हुआ अनाज ग़रीबों और
परदेसियों के लिए छोड़ देना। मैं रब्ब तुम्हारा ख़ुदा
हूँ।”

नए साल की ईद

23 रब्ब ने मूसा से कहा, 24 “इस्राईलियों को बताना
कि सातवें महीने का पहला दिन आराम का दिन है।
उस दिन मुक़द्दस इजतिमा हो जिस पर याद दिलाने के
लिए नरसिंगा फूँका जाए। 25 कोई भी काम न करना।
रब्ब को जलने वाली क़ुर्बानी पेश करना।”

कफ़्फ़ारा का दिन

26 रब्ब ने मूसा से कहा, 27 “सातवें महीने का
दसवाँ दिन कफ़्फ़ारा का दिन है। उस दिन मुक़द्दस
इजतिमा हो। अपनी जान को दुख देना और रब्ब को
जलने वाली क़ुर्बानी पेश करना। 28 उस दिन काम न
करना, क्यूँकि यह कफ़्फ़ारा का दिन है, जब रब्ब
तुम्हारे ख़ुदा के सामने तुम्हारा कफ़्फ़ारा दिया जाता
है। 29 जो उस दिन अपनी जान को दुख नहीं देता
उसे उस की क़ौम में से मिटाया जाए। 30 जो उस दिन
काम करता है उसे मैं उस की क़ौम में से निकाल कर
हलाक करूँगा। 31 कोई भी काम न करना। यह उसूल
अबद तक क़ाइम रहे, और इसे हर जगह मानना है।
32 यह दिन आराम का ख़ास दिन है जिस में तुम्हें
अपनी जान को दुख देना है। इसे महीने के नव्वें दिन
की शाम से ले कर अगली शाम तक मनाना।”

झोंपड़ियों की ईद

33 रब्ब ने मूसा से कहा, 34 “इस्राईलियों को बताना
कि सातवें महीने के पंद्रहवें दिन झोंपड़ियों की ईद
शुरू होती है। इस का दौरानिया सात दिन है। 35 पहले
दिन मुक़द्दस इजतिमा हो। इस दिन कोई काम न
करना। 36 इन सात दिनों के दौरान रब्ब को जलने
वाली क़ुर्बानियाँ पेश करना। आठवें दिन मुक़द्दस
इजतिमा हो। रब्ब को जलने वाली क़ुर्बानी पेश करो।
इस ख़ास इजतिमा के दिन भी काम नहीं करना है।

37 यह रब्ब की ईदें हैं जिन पर तुम्हें मुक़द्दस
इजतिमा करना है ताकि रब्ब को रोज़मर्रा की
मतलूबा जलने वाली क़ुर्बानियाँ और मै की नज़रें पेश
की जाएँ यानी भस्म होने वाली क़ुर्बानियाँ, ग़ल्ला की
नज़रें, ज़बह की क़ुर्बानियाँ और मै की नज़रें। 38 यह
क़ुर्बानियाँ उन क़ुर्बानियों के इलावा हैं जो सबत के
दिन चढ़ाई जाती हैं और जो तुम ने हदिए के तौर पर

या मन्नत मान कर या अपनी दिली ख़ुशी से पेश की
हैं।
39 चुनाँचे सातवें महीने के पंद्रहवें दिन फ़सल की
कटाई के इख़तिताम पर रब्ब की यह ईद यानी
झोंपड़ियों की ईद मनाओ। इसे सात दिन मनाना।
पहला और आख़िरी दिन आराम के दिन हैं। 40 पहले
दिन अपने लिए दरख़्तों के बेहतरीन फल, खजूर
की डालियाँ और घने दरख़्तों और सफ़ेदा की शाख़ें
तोड़ना। सात दिन तक रब्ब अपने ख़ुदा के सामने
ख़ुशी मनाओ। 41 हर साल सातवें महीने में रब्ब की
ख़ुशी में यह ईद मनाना। यह उसूल अबद तक क़ाइम
रहे। 42 ईद के हफ़्ते के दौरान झोंपड़ियों में रहना।
तमाम मुल्क में आबाद इस्राईली ऐसा करें। 43 फिर
तुम्हारी औलाद जानेगी कि इस्राईलियों को मिस्र से
निकालते वक़्त मैं ने उन्हें झोंपड़ियों में बसाया। मैं
रब्ब तुम्हारा ख़ुदा हूँ।”
44 मूसा ने इस्राईलियों को रब्ब की ईदों के बारे में
यह बातें बताईं।

रब्ब के सामने शमादान और रोटियाँ

24 1 रब्ब ने मूसा से कहा, 2 “इस्राईलियों को
हुक्म दे कि वह तेरे पास कूटे हुए ज़ैतूनों
का ख़ालिस तेल ले आएँ ताकि मुक़द्दस कमरे के
शमादान के चराग़ मुतवातिर जलते रहें। 3 हारून उन्हें
मुसल्सल, शाम से ले कर सुब्ह तक रब्ब के हुज़ूर
सँभाले यानी वहाँ जहाँ वह मुक़द्दसतरीन कमरे के
पर्दे के सामने पड़े हैं, उस पर्दे के सामने जिस के पीछे
अह्द का सन्दूक़ है। यह उसूल अबद तक क़ाइम
रहे। 4 वह ख़ालिस सोने के शमादान पर लगे चराग़ों
की देख-भाल यूँ करे कि यह हमेशा रब्ब के सामने
जलते रहें।
5 बारह रोटियाँ पकाना। हर रोटी के लिए 3
किलोग्राम बेहतरीन मैदा इस्तेमाल किया जाए।
6 उन्हें दो क़तारों में रब्ब के सामने ख़ालिस सोने
की मेज़ पर रखना। 7 हर क़तार पर ख़ालिस लुबान
डालना। यह लुबान रोटी के लिए यादगारी की
क़ुर्बानी है जिसे बाद में रब्ब के लिए जलाना है।
8 हर हफ़्ते को रब्ब के सामने ताज़ा रोटियाँ इसी
तर्तीब से मेज़ पर रखनी हैं। यह इस्राईलियों के लिए
अबदी अह्द की लाज़िमी शर्त है। 9 मेज़ की रोटियाँ
हारून और उस के बेटों का हिस्सा हैं, और वह उन्हें
मुक़द्दस जगह पर खाएँ, क्यूँकि वह जलने वाली
क़ुर्बानियों का मुक़द्दसतरीन हिस्सा हैं। यह अबद
तक उन का हक़ रहेगा।”

अल्लाह की तौहीन, ख़ूँरेज़ी और ज़ख़्मी करने की सज़ाएँ

10–11 ख़ैमागाह में एक आदमी था जिस का बाप
मिस्री और माँ इस्राईली थी। माँ का नाम सलूमीत
था। वह दिब्री की बेटी और दान के क़बीला की थी।
एक दिन यह आदमी ख़ैमागाह में किसी इस्राईली से
झगड़ने लगा। लड़ते लड़ते उस ने रब्ब के नाम पर
कुफ़्र बक कर उस पर लानत भेजी। यह सुन कर लोग
उसे मूसा के पास ले आए। 12 वहाँ उन्हों ने उसे पहरे
में बिठा कर रब्ब की हिदायत का इन्तिज़ार किया।
13 तब रब्ब ने मूसा से कहा, 14 “लानत करने वाले
को ख़ैमागाह के बाहर ले जाओ। जिन्हों ने उस
की यह बातें सुनी हैं वह सब अपने हाथ उस के
सर पर रखें। फिर पूरी जमाअत उसे संगसार करे।
15 इस्राईलियों से कहना कि जो भी अपने ख़ुदा पर
लानत भेजे उसे अपने क़ुसूर के नतीजे बर्दाश्त करने
पड़ेंगे। 16 जो भी रब्ब के नाम पर कुफ़्र बके उसे सज़ा-
ए-मौत दी जाए। पूरी जमाअत उसे संगसार करे। जिस
ने रब्ब के नाम पर कुफ़्र बका हो उसे ज़रूर सज़ा-ए-
मौत देनी है, ख़्वाह देसी हो या परदेसी।
17 जिस ने किसी को मार डाला है उसे सज़ा-ए-
मौत दी जाए। 18 जिस ने किसी के जानवर को मार
डाला है वह उस का मुआवज़ा दे। जान के बदले
जान दी जाए। 19 अगर किसी ने किसी को ज़ख़्मी
कर दिया है तो वही कुछ उस के साथ किया जाए
जो उस ने दूसरे के साथ किया है। 20 अगर दूसरे की
कोई हड्डी टूट जाए तो उस की वही हड्डी तोड़ी जाए।

अगर दूसरे की आँख ज़ाए हो जाए तो उस की आँख
ज़ाए कर दी जाए। अगर दूसरे का दाँत टूट जाए तो
उस का वही दाँत तोड़ा जाए। जो भी ज़ख़्म उस ने
दूसरे को पहुँचाया वही ज़ख़्म उसे पहुँचाया जाए।
[21] जिस ने किसी जानवर को मार डाला है वह उस
का मुआवज़ा दे, लेकिन जिस ने किसी इन्सान को
मार दिया है उसे सज़ा-ए-मौत देनी है। [22] देसी और
परदेसी के लिए तुम्हारा एक ही क़ानून हो। मैं रब्ब
तुम्हारा ख़ुदा हूँ।”

[23] फिर मूसा ने इस्राईलियों से बात की, और उन्हों
ने रब्ब पर लानत भेजने वाले को ख़ैमागाह से बाहर
ले जा कर उसे संगसार किया। उन्हों ने वैसा ही किया
जैसा रब्ब ने मूसा को हुक्म दिया था।

ज़मीन के लिए सबत का साल

25 [1] रब्ब ने सीना पहाड़ पर मूसा से कहा,
[2] “इस्राईलियों को बताना कि जब तुम उस
मुल्क में दाख़िल होगे जो मैं तुमहें दूँगा तो लाज़िम
है कि रब्ब की ताज़ीम में ज़मीन एक साल आराम
करे। [3] छः साल के दौरान अपने खेतों में बीज बोना,
अपने अंगूर के बाग़ों की काँट-छाँट करना और उन
की फ़सलें जमा करना। [4] लेकिन सातवाँ साल ज़मीन
के लिए आराम का साल है, रब्ब की ताज़ीम में सबत
का साल। उस साल न अपने खेतों में बीज बोना,
न अपने अंगूर के बाग़ों की काँट-छाँट करना। [5] जो
अनाज ख़ुद-ब-ख़ुद उगता है उस की कटाई न करना
और जो अंगूर उस साल लगते हैं उन को तोड़ कर
जमा न करना, क्यूँकि ज़मीन को एक साल के लिए
आराम करना है। [6] अलबत्ता जो भी यह ज़मीन आराम
के साल में पैदा करेगी उस से तुम अपनी रोज़ाना की
ज़रूरियात पूरी कर सकते हो यानी तू, तेरे ग़ुलाम और
लौंडियाँ, तेरे मज़्दूर, तेरे ग़ैरशहरी, तेरे साथ रहने वाले
परदेसी, [7] तेरे मवेशी और तेरी ज़मीन पर रहने वाले
जंगली जानवर। जो कुछ भी यह ज़मीन पैदा करती
है वह खाया जा सकता है।

बहाली का साल

[8] सात सबत के साल यानी 49 साल के बाद एक
और काम करना है। [9] पचासवें साल के सातवें महीने
के दसवें दिन यानी कफ़्फ़ारा के दिन अपने मुल्क
की हर जगह नरसिंगा बजाना। [10] पचासवाँ साल
मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस करो और पूरे मुल्क में एलान
करो कि तमाम बाशिन्दों को आज़ाद कर दिया जाए।
यह बहाली का साल हो जिस में हर शख़्स को उस
की मिल्कियत वापस की जाए और हर ग़ुलाम को
आज़ाद किया जाए ताकि वह अपने रिश्तेदारों के
पास वापस जा सके। [11] यह पचासवाँ साल बहाली
का साल हो, इस लिए न अपने खेतों में बीज बोना, न
ख़ुद-ब-ख़ुद उगने वाले अनाज की कटाई करना, और
न अंगूर तोड़ कर जमा करना। [12] क्यूँकि यह बहाली
का साल है जो तुम्हारे लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस है।
रोज़ाना उतनी ही पैदावार लेना कि एक दिन की
ज़रूरियात पूरी हो जाएँ। [13] बहाली के साल में हर
शख़्स को उस की मिल्कियत वापस की जाए।

[14] चुनाँचे जब कभी तुम अपने किसी हमवतन भाई
को ज़मीन बेचते या उस से खरीदते हो तो उस से
नाजाइज़ फ़ाइदा न उठाना। [15] ज़मीन की क़ीमत इस
हिसाब से मुक़र्रर की जाए कि वह अगले बहाली के
साल तक कितने साल फ़सलें पैदा करेगी। [16] अगर
बहुत साल रह गए हों तो उस की क़ीमत ज़ियादा
होगी, और अगर कम साल रह गए हों तो उस की
क़ीमत कम होगी। क्यूँकि उन फ़सलों की तादाद
बिक रही है जो ज़मीन अगले बहाली के साल तक
पैदा कर सकती है।

[17] अपने हमवतन से नाजाइज़ फ़ाइदा न उठाना
बल्कि रब्ब अपने ख़ुदा का ख़ौफ़ मानना, क्यूँकि मैं
रब्ब तुम्हारा ख़ुदा हूँ।

[18] मेरी हिदायात पर अमल करना और मेरे अह्काम
को मान कर उन के मुताबिक़ चलना। तब तुम
अपने मुल्क में महफ़ूज़ रहोगे। [19] ज़मीन अपनी पूरी
पैदावार देगी, तुम सेर हो जाओगे और महफ़ूज़ रहोगे।

20 हो सकता है कोई पूछे, ‘हम सातवें साल में क्या
खाएँगे जबकि हम बीज नहीं बोएँगे और फ़सल नहीं
काटेंगे?’ 21 जवाब यह है कि मैं छटे साल में ज़मीन
को इतनी बर्कत दूँगा कि उस साल की पैदावार तीन
साल के लिए काफ़ी होगी। 22 जब तुम आठवें साल
बीज बोओगे तो तुम्हारे पास छटे साल की इतनी
पैदावार बाक़ी होगी कि तुम फ़सल की कटाई तक
गुज़ारा कर सकोगे।

मौरूसी ज़मीन के हुक़ूक़

23 कोई ज़मीन भी हमेशा के लिए न बेची जाए,
क्यूँकि मुल्क की तमाम ज़मीन मेरी ही है। तुम मेरे
हुज़ूर सिर्फ़ परदेसी और ग़ैरशहरी हो। 24 मुल्क में
जहाँ भी ज़मीन बिक जाए वहाँ मौरूसी मालिक का
यह हक़ माना जाए कि वह अपनी ज़मीन वापस
ख़रीद सकता है।

25 अगर तेरा कोई हमवतन भाई ग़रीब हो कर
अपनी कुछ ज़मीन बेचने पर मज्बूर हो जाए तो
लाज़िम है कि उस का सब से क़रीबी रिश्तेदार उसे
वापस ख़रीद ले। 26 हो सकता है कि ऐसे शख़्स का
कोई क़रीबी रिश्तेदार न हो जो उस की ज़मीन वापस
ख़रीद सके, लेकिन वह ख़ुद कुछ देर के बाद इतने
पैसे जमा करता है कि वह अपनी ज़मीन वापस ख़रीद
सकता है। 27 इस सूरत में वह हिसाब करे कि ख़रीदने
वाले के लिए अगले बहाली के साल तक कितने
साल रह गए हैं। जितना नुक़्सान ख़रीदने वाले को
ज़मीन को बहाली के साल से पहले वापस देने से
पहुँचेगा उतने ही पैसे उसे देने हैं। 28 लेकिन अगर
उस के पास इतने पैसे न हों तो ज़मीन अगले बहाली
के साल तक ख़रीदने वाले के हाथ में रहेगी। फिर
उसे मौरूसी मालिक को वापस दिया जाएगा।

29 अगर किसी का घर फ़सीलदार शहर में है तो जब
वह उसे बेचेगा तो अपना घर वापस ख़रीदने का हक़
सिर्फ़ एक साल तक रहेगा। 30 अगर पहला मालिक
उसे पहले साल के अन्दर अन्दर न ख़रीदे तो वह
हमेशा के लिए ख़रीदने वाले की मौरूसी मिल्कियत
बन जाएगा। वह बहाली के साल में भी वापस नहीं
किया जाएगा।

31 लेकिन जो घर ऐसी आबादी में है जिस की
फ़सील न हो वह दीहात में शुमार किया जाता है।
उस के मौरूसी मालिक को हक़ हासिल है कि हर
वक़्त अपना घर वापस ख़रीद सके। बहाली के साल
में इस घर को लाज़िमन वापस कर देना है।

32 लेकिन लावियों को यह हक़ हासिल है कि वह
अपने वह घर हर वक़्त ख़रीद सकते हैं जो उन के
लिए मुक़र्रर किए हुए शहरों में हैं। 33 अगर ऐसा घर
किसी लावी के हाथ फ़रोख़्त किया जाए और वापस
न ख़रीदा जाए तो उसे लाज़िमन बहाली के साल में
वापस करना है। क्यूँकि लावी के जो घर उन के
मुक़र्ररा शहरों में होते हैं वह इस्राईलियों में उन की
मौरूसी मिल्कियत हैं। 34 लेकिन जो ज़मीनें शहरों के
इर्दगिर्द मवेशी चराने के लिए मुक़र्रर हैं उन्हें बेचने
की इजाज़त नहीं है। वह उन की दाइमी मिल्कियत
हैं।

ग़रीबों के लिए क़र्ज़ा

35 अगर तेरा कोई हमवतन भाई ग़रीब हो जाए और
गुज़ारा न कर सके तो उस की मदद कर। उस तरह
उस की मदद करना जिस तरह परदेसी या ग़ैरशहरी
की मदद करनी होती है ताकि वह तेरे साथ रहते हुए
ज़िन्दगी गुज़ार सके। 36 उस से किसी तरह का सूद न
लेना बल्कि अपने ख़ुदा का ख़ौफ़ मानना ताकि तेरा
भाई तेरे साथ ज़िन्दगी गुज़ार सके। 37 अगर वह तेरा
क़र्ज़दार हो तो उस से सूद न लेना। इसी तरह ख़ुराक
बेचते वक़्त उस से नफ़ा न लेना। 38 मैं रब्ब तुम्हारा
ख़ुदा हूँ। मैं तुम्हें इस लिए मिस्र से निकाल लाया कि
तुम्हें मुल्क-ए-कनआन दूँ और तुम्हारा ख़ुदा हूँ।

इस्राईली ग़ुलामों के हुक़ूक़

39 अगर तेरा कोई इस्राईली भाई ग़रीब हो कर
अपने आप को तेरे हाथ बेच डाले तो उस से ग़ुलाम
का सा काम न कराना। 40 उस के साथ मज़दूर

या ग़ैरशहरी का सा सुलूक करना। वह तेरे लिए बहाली के साल तक काम करे। 41 फिर वह और उस के बाल-बच्चे आज़ाद हो कर अपने रिश्तेदारों और मौरूसी ज़मीन के पास वापस जाएँ। 42 चूँकि इस्राईली मेरे ख़ादिम हैं जिन्हें मैं मिस्र से निकाल लाया इस लिए उन्हें ग़ुलामी में न बेचा जाए। 43 ऐसे लोगों पर सख़्ती से हुक्मरानी न करना बल्कि अपने ख़ुदा का ख़ौफ़ मानना।

44 तुम पड़ोसी ममालिक से अपने लिए ग़ुलाम और लौंडियाँ हासिल कर सकते हो। 45 जो परदेसी ग़ैरशहरी के तौर पर तुम्हारे मुल्क में आबाद हैं उन्हें भी तुम ख़रीद सकते हो। उन में वह भी शामिल हैं जो तुम्हारे मुल्क में पैदा हुए हैं। वही तुम्हारी मिल्कियत बन कर 46 तुमहारे बेटों की मीरास में आ जाएँ और वही हमेशा तुम्हारे ग़ुलाम रहें। लेकिन अपने हमवतन भाइयों पर सख़्त हुक्मरानी न करना।

47 अगर तेरे मुल्क में रहने वाला कोई परदेसी या ग़ैरशहरी अमीर हो जाए जबकि तेरा कोई हमवतन भाई ग़रीब हो कर अपने आप को उस परदेसी या ग़ैरशहरी या उस के ख़ान्दान के किसी फ़र्द को बेच डाले 48 तो बिक जाने के बाद उसे आज़ादी ख़रीदने का हक़ हासिल है। कोई भाई, 49 चचा, ताया, चचा या ताया का बेटा या कोई और क़रीबी रिश्तेदार उसे वापस ख़रीद सकता है। वह ख़ुद भी अपनी आज़ादी ख़रीद सकता है अगर उस के पास पैसे काफ़ी हों। 50 इस सूरत में वह अपने मालिक से मिल कर वह साल गिने जो उस के ख़रीदने से ले कर अगले बहाली के साल तक बाक़ी हैं। उस की आज़ादी के पैसे उस क़ीमत पर मब्नी हों जो मज़दूर को इतने सालों के लिए दिए जाते हैं। 51–52 जितने साल बाक़ी रह गए हैं उन के मुताबिक़ उस की बिक जाने की क़ीमत में से पैसे वापस कर दिए जाएँ। 53 उस के साथ साल-ब-साल मज़दूर का सा सुलूक किया जाए। उस का मालिक उस पर सख़्त हुक्मरानी न करे। 54 अगर वह इस तरह के किसी तरीक़े से आज़ाद न हो जाए तो उसे और उस के बच्चों को हर हालत में अगले बहाली के साल में आज़ाद कर देना है, 55 क्यूँकि इस्राईली मेरे ही ख़ादिम हैं। वह मेरे ही ख़ादिम हैं जिन्हें मैं मिस्र से निकाल लाया। मैं रब्ब तुम्हारा ख़ुदा हूँ।

फ़रमाँबरदारी का अज्र

26 1 अपने लिए बुत न बनाना। न अपने लिए देवता के मुजस्समे या पत्थर के मख़्सूस किए हुए सतून खड़े करना, न सिज्दा करने के लिए अपने मुल्क में ऐसे पत्थर रखना जिन में देवता की तस्वीर कन्दा की गई हो। मैं रब्ब तुम्हारा ख़ुदा हूँ। 2 सबत का दिन मनाना और मेरे मक़्दिस की ताज़ीम करना। मैं रब्ब हूँ।

3 अगर तुम मेरी हिदायात पर चलो और मेरे अह्काम मान कर उन पर अमल करो 4 तो मैं वक़्त पर बारिश भेजूँगा, ज़मीन अपनी पैदावार देगी और दरख़्त अपने अपने फल लाएँगे। 5 कस्रत के बाइस अनाज की फ़सल की कटाई अंगूर तोड़ते वक़्त तक जारी रहेगी और अंगूर की फ़सल उस वक़्त तक तोड़ी जाएगी जब तक बीज बोने का मौसम आएगा। इतनी ख़ुराक मिलेगी कि तुम कभी भूके नहीं होगे। और तुम अपने मुल्क में महफ़ूज़ रहोगे।

6 मैं मुल्क को अम्न-ओ-अमान बख़्शूँगा। तुम आराम से लेट जाओगे, क्यूँकि किसी ख़त्रे से डरने की ज़रूरत नहीं होगी। मैं वहशी जानवर मुल्क से दूर कर दूँगा, और वह तल्वार की क़त्ल-ओ-ग़ारत से बचा रहेगा। 7 तुम अपने दुश्मनों पर ग़ालिब आ कर उन का ताक़्क़ुब करोगे, और वह तुम्हारी तल्वार से मारे जाएँगे। 8 तुम्हारे पाँच आदमी सौ दुश्मनों का पीछा करेंगे, और तुम्हारे सौ आदमी उन के दस हज़ार आदमियों को भगा देंगे। तुम्हारे दुश्मन तुम्हारी तल्वार से मारे जाएँगे।

9 मेरी नज़र-ए-करम तुम पर होगी। मैं तुम्हारी औलाद की तादाद बढ़ाऊँगा और तुम्हारे साथ अपना अह्द क़ाइम रखूँगा। 10 एक साल इतनी फ़सल होगी कि जब अगली फ़सल की कटाई होगी तो नए अनाज के लिए जगह बनाने की ख़ातिर पुराने अनाज को

फैंक देना पड़ेगा। 11 मैं तुम्हारे दर्मियान अपना मस्कन
क़ाइम करूँगा और तुम से घिन नहीं खाऊँगा। 12 मैं
तुम में फिरूँगा, और तुम मेरी क़ौम होगे।
13 मैं रब्ब तुम्हारा ख़ुदा हूँ जो तुम्हें मिस्र से निकाल
लाया ताकि तुम्हारी ग़ुलामी की हालत ख़त्म हो जाए।
मैं ने तुम्हारे जूए को तोड़ डाला, और अब तुम आज़ाद
और सीधे हो कर चल सकते हो।

फ़रमाँबरदार न होने की सज़ा

14 लेकिन अगर तुम मेरी नहीं सुनोगे और इन तमाम
अह्काम पर नहीं चलोगे, 15 अगर तुम मेरी हिदायात
को रद्द करके मेरे अह्काम से घिन खाओगे और उन
पर अमल न करके मेरा अह्द तोड़ोगे 16 तो मैं जवाब
में तुम पर अचानक दह्शत तारी कर दूँगा। जिस्म को
ख़त्म करने वाली बीमारियों और बुख़ार से तुम्हारी
आँखें ज़ाए हो जाएँगी और तुम्हारी जान छिन जाएगी।
जब तुम बीज बोओगे तो बेफ़ाइदा, क्यूँकि दुश्मन
उस की फ़सल खा जाएगा। 17 मैं तुम्हारे ख़िलाफ़
हो जाऊँगा, इस लिए तुम अपने दुश्मनों के हाथ
से शिकस्त खाओगे। तुम से नफ़रत रखने वाले तुम
पर हुकूमत करेंगे। उस वक़्त भी जब कोई तुम्हारा
ताक़्क़ुब नहीं करेगा तुम भाग जाओगे।
18 अगर तुम इस के बाद भी मेरी न सुनो तो मैं तुम्हारे
गुनाहों के सबब से तुम्हें सात गुना ज़ियादा सज़ा दूँगा।
19 मैं तुम्हारा सख़्त ग़रूर ख़ाक में मिला दूँगा। तुम्हारे
ऊपर आस्मान लोहे जैसा और तुम्हारे नीचे ज़मीन
पीतल जैसी होगी। 20 जितनी भी मेहनत करोगे वह
बेफ़ाइदा होगी, क्यूँकि तुम्हारे खेतों में फ़सलें नहीं
पकेंगी और तुम्हारे दरख़्त फल नहीं लाएँगे।
21 अगर तुम फिर भी मेरी मुख़ालफ़त करोगे और
मेरी नहीं सुनोगे तो मैं इन गुनाहों के जवाब में तुम्हें
इस से भी सात गुना ज़ियादा सज़ा दूँगा। 22 मैं तुम्हारे
ख़िलाफ़ जंगली जानवर भेज दूँगा जो तुम्हारे बच्चों
को फाड़ खाएँगे और तुम्हारे मवेशी बर्बाद कर देंगे।
आख़िर में तुम्हारी तादाद इतनी कम हो जाएगी कि
तुम्हारी सड़कें वीरान हो जाएँगी।
23 अगर तुम फिर भी मेरी तर्बियत क़बूल न करो
बल्कि मेरे मुख़ालिफ़ रहो 24 तो मैं ख़ुद तुम्हारे
ख़िलाफ़ हो जाऊँगा। इन गुनाहों के जवाब में मैं तुम्हें
सात गुना ज़ियादा सज़ा दूँगा। 25 मैं तुम पर तल्वार
चला कर इस का बदला लूँगा कि तुम ने मेरे अह्द
को तोड़ा है। जब तुम अपनी हिफ़ाज़त के लिए शहरों
में भाग कर जमा होगे तो मैं तुम्हारे दर्मियान वबाई
बीमारियाँ फैलाऊँगा और तुम्हें दुश्मनों के हाथ में दे
दूँगा। 26 अनाज की इतनी कमी होगी कि दस औरतें
तुम्हारी पूरी रोटी एक ही तनूर में पका सकेंगी, और
वह उसे बड़ी एहतियात से तोल तोल कर तक़्सीम
करेंगी। तुम खा कर भी भूके रहोगे।
27 अगर तुम फिर भी मेरी नहीं सुनोगे बल्कि मेरे
मुख़ालिफ़ रहोगे 28 तो मेरा ग़ुस्सा भड़केगा और मैं
तुम्हारे ख़िलाफ़ हो कर तुम्हारे गुनाहों के जवाब में
तुमहें सात गुना ज़ियादा सज़ा दूँगा। 29 तुम मुसीबत
के बाइस अपने बेटे-बेटियों का गोश्त खाओगे। 30 मैं
तुम्हारी ऊँची जगहों की क़ुर्बानगाहें और तुम्हारी
बख़ूर की क़ुर्बानगाहें बर्बाद कर दूँगा। मैं तुम्हारी
लाशों के ढेर तुम्हारे बेजान बुतों पर लगाऊँगा और
तुम से घिन खाऊँगा। 31 मैं तुम्हारे शहरों को खंडरात
में बदल कर तुम्हारे मन्दिरों को बर्बाद करूँगा।
तुम्हारी क़ुर्बानियों की ख़ुश्बू मुझे पसन्द नहीं आएगी।
32 मैं तुम्हारे मुल्क का सत्यानास यूँ करूँगा कि जो
दुश्मन उस में आबाद हो जाएँगे उन के रोंगटे खड़े हो
जाएँगे। 33 मैं तुमहें मुख़्तलिफ़ ममालिक में मुन्तशिर
कर दूँगा, लेकिन वहाँ भी अपनी तल्वार को हाथ
में लिए तुम्हारा पीछा करूँगा। तुम्हारी ज़मीन वीरान
होगी और तुम्हारे शहर खंडरात बन जाएँगे। 34 उस
वक़्त जब तुम अपने दुश्मनों के मुल्क में रहोगे
तुम्हारी ज़मीन वीरान हालत में आराम के वह साल
मना सकेगी जिन से वह महरूम रही है। 35 उन तमाम
दिनों में जब वह बर्बाद रहेगी उसे वह आराम मिलेगा
जो उसे न मिला जब तुम मुल्क में रहते थे।
36 तुम में से जो बच कर अपने दुश्मनों के ममालिक
में रहेंगे उन के दिलों पर मैं दह्शत तारी करूँगा। वह

हवा के झोंकों से गिरने वाले पत्ते की आवाज़ से
चौंक कर भाग जाएँगे। वह फ़रार होंगे गोया कोई
हाथ में तल्वार लिए उन का ताक़्क़ुब कर रहा हो।
और वह गिर कर मर जाएँगे हालाँकि कोई उन का
पीछा नहीं कर रहा होगा। 37 वह एक दूसरे से टकरा
कर लड़खड़ाएँगे गोया कोई तल्वार ले कर उन के
पीछे चल रहा हो हालाँकि कोई नहीं है। चुनाँचे तुम
अपने दुश्मनों का सामना नहीं कर सकोगे। 38 तुम
दीगर क़ौमों में मुन्तशिर हो कर हलाक हो जाओगे,
और तुम्हारे दुश्मनों की ज़मीन तुम्हें हड़प कर लेगी।
39 तुम में से बाक़ी लोग अपने और अपने बापदादा
के क़ुसूर के बाइस अपने दुश्मनों के ममालिक में
गल सड़ जाएँगे। 40 लेकिन एक वक़्त आएगा कि
वह अपने और अपने बापदादा का क़ुसूर मान लेंगे।
वह मेरे साथ अपनी बेवफ़ाई और वह मुख़ालफ़त
तस्लीम करेंगे 41 जिस के सबब से मैं उन के ख़िलाफ़
हुआ और उन्हें उन के दुश्मनों के मुल्क में धकेल
दिया था। पहले उन का ख़तना सिर्फ़ ज़ाहिरी तौर
पर हुआ था, लेकिन अब उन का दिल आजिज़ हो
जाएगा और वह अपने क़ुसूर की क़ीमत अदा करेंगे।
42 फिर मैं इब्राहीम के साथ अपना अह्द, इस्हाक़ के
साथ अपना अह्द और याक़ूब के साथ अपना अह्द
याद करूँगा। मैं मुल्क-ए-कनआन भी याद करूँगा।
43 लेकिन पहले वह ज़मीन को छोड़ेंगे ताकि वह उन
की ग़ैरमौजूदगी में वीरान हो कर आराम के साल
मनाए। यूँ इस्राईली अपने क़ुसूर के नतीजे भुगतेंगे,
इस सबब से कि उन्हों ने मेरे अह्काम रद्द किए और
मेरी हिदायात से घिन खाई। 44 इस के बावुजूद भी मैं
उन्हें दुश्मनों के मुल्क में छोड़ कर रद्द नहीं करूँगा,
न यहाँ तक उन से घिन खाऊँगा कि वह बिलकुल
तबाह हो जाएँ। क्यूँकि मैं उन के साथ अपना अह्द
नहीं तोड़ने का। मैं रब्ब उन का ख़ुदा हूँ। 45 मैं उन
की ख़ातिर उन के बापदादा के साथ बंधा हुआ अह्द
याद करूँगा, उन लोगों के साथ अह्द जिन्हें मैं दूसरी
क़ौमों के देखते देखते मिस्र से निकाल लाया ताकि
उन का ख़ुदा हूँ। मैं रब्ब हूँ।”
46 रब्ब ने मूसा को इस्राईलियों के लिए यह तमाम
हिदायात और अह्काम सीना पहाड़ पर दिए।

मख़्सूस की हुई चीज़ों की वापसी

27 1 रब्ब ने मूसा से कहा, 2 “इस्राईलियों को
बताना कि अगर किसी ने मन्नत मान कर
किसी को रब्ब के लिए मख़्सूस किया हो तो वह
उसे ज़ैल की रक़म दे कर आज़ाद कर सकता है
(मुस्तामल सिक्के मक़्दिस के सिक्कों के बराबर हों)
: 3 उस आदमी के लिए जिस की उम्र 20 और 60
साल के दर्मियान है चाँदी के 50 सिक्के, 4 इसी उम्र
की औरत के लिए चाँदी के 30 सिक्के, 5 उस लड़के
के लिए जिस की उम्र 5 और 20 साल के दर्मियान
हो चाँदी के 20 सिक्के, इसी उम्र की लड़की के लिए
चाँदी के 10 सिक्के, 6 एक माह से ले कर 5 साल तक
के लड़के के लिए चाँदी के 5 सिक्के, इसी उम्र की
लड़की के लिए चाँदी के 3 सिक्के, 7 साठ साल से
बड़े आदमी के लिए चाँदी के 15 सिक्के और इसी उम्र
की औरत के लिए चाँदी के 10 सिक्के।
8 अगर मन्नत मानने वाला मुक़र्ररा रक़म अदा न
कर सके तो वह मख़्सूस किए हुए शख़्स को इमाम
के पास ले आए। फिर इमाम ऐसी रक़म मुक़र्रर करे
जो मन्नत मानने वाला अदा कर सके।
9 अगर किसी ने मन्नत मान कर ऐसा जानवर
मख़्सूस किया जो रब्ब की क़ुर्बानियों के लिए
इस्तेमाल हो सकता है तो ऐसा जानवर मख़्सूस-ओ-
मुक़द्दस हो जाता है। 10 वह उसे बदल नहीं सकता।
न वह अच्छे जानवर की जगह नाक़िस, न नाक़िस
जानवर की जगह अच्छा जानवर दे। अगर वह एक
जानवर दूसरे की जगह दे तो दोनों मख़्सूस-ओ-
मुक़द्दस हो जाते हैं।
11 अगर किसी ने मन्नत मान कर कोई नापाक
जानवर मख़्सूस किया जो रब्ब की क़ुर्बानियों के लिए
इस्तेमाल नहीं हो सकता तो वह उस को इमाम के
पास ले आए। 12 इमाम उस की रक़म उस की अच्छी
और बुरी सिफ़्तों का लिहाज़ करके मुक़र्रर करे। इस

मुक़र्ररा क़ीमत में कमी बेशी नहीं हो सकती। 13 अगर
मन्नत मानने वाला उसे वापस ख़रीदना चाहे तो वह
मुक़र्ररा क़ीमत जमा 20 फ़ीसद अदा करे।

14 अगर कोई अपना घर रब्ब के लिए मख़्सूस-
ओ-मुक़द्दस करे तो इमाम उस की अच्छी और बुरी
सिफ़तों का लिहाज़ करके उस की रक़म मुक़र्रर करे।
इस मुक़र्ररा क़ीमत में कमी बेशी नहीं हो सकती।
15 अगर घर को मख़्सूस करने वाला उसे वापस
ख़रीदना चाहे तो वह मुक़र्ररा रक़म जमा 20 फ़ीसद
अदा करे।

16 अगर कोई अपनी मौरूसी ज़मीन में से कुछ
रब्ब के लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस करे तो उस की
क़ीमत उस बीज की मिक़्दार के मुताबिक़ मुक़र्रर
की जाए जो उस में बोना होता है। जिस खेत में 135
किलोग्राम जौ का बीज बोया जाए उस की क़ीमत
चाँदी के 50 सिक्के होगी। 17 शर्त यह है कि वह अपनी
ज़मीन बहाली के साल के ऐन बाद मख़्सूस करे।
फिर उस की यही क़ीमत मुक़र्रर की जाए। 18 अगर
ज़मीन का मालिक उसे बहाली के साल के कुछ देर
बाद मख़्सूस करे तो इमाम अगले बहाली के साल
तक रहने वाले सालों के मुताबिक़ ज़मीन की क़ीमत
मुक़र्रर करे। जितने कम साल बाक़ी हैं उतनी कम
उस की क़ीमत होगी। 19 अगर मख़्सूस करने वाला
अपनी ज़मीन वापस ख़रीदना चाहे तो वह मुक़र्ररा
क़ीमत जमा 20 फ़ीसद अदा करे। 20 अगर मख़्सूस
करने वाला अपनी ज़मीन को रब्ब से वापस ख़रीदे
बग़ैर उसे किसी और को बेचे तो उसे वापस ख़रीदने
का हक़ ख़त्म हो जाएगा। 21 अगले बहाली के साल
यह ज़मीन मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस रहेगी और रब्ब की
दाइमी मिल्कियत हो जाएगी। चुनाँचे वह इमाम की
मिल्कियत होगी।

22 अगर कोई अपना मौरूसी खेत नहीं बल्कि
अपना ख़रीदा हुआ खेत रब्ब के लिए मख़्सूस करे
23 तो इमाम अगले बहाली के साल तक रहने वाले
सालों का लिहाज़ करके उस की क़ीमत मुक़र्रर
करे। खेत का मालिक उसी दिन उस के पैसे अदा
करे। यह पैसे रब्ब के लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस होंगे।
24 बहाली के साल में यह खेत उस शख़्स के पास
वापस आएगा जिस ने उसे बेचा था।

25 वापस ख़रीदने के लिए मुस्तामल सिक्के मक़्दिस
के सिक्कों के बराबर हों। उस के चाँदी के सिक्कों का
वज़न 11 ग्राम है।

26 लेकिन कोई भी किसी मवेशी का पहलौठा रब्ब
के लिए मख़्सूस नहीं कर सकता। वह तो पहले से
रब्ब के लिए मख़्सूस है। इस में कोई फ़र्क़ नहीं
कि वह गाय, बैल या भेड़ हो। 27 अगर उस ने कोई
नापाक जानवर मख़्सूस किया हो तो वह उसे मुक़र्ररा
क़ीमत जमा 20 फ़ीसद के लिए वापस ख़रीद सकता
है। अगर वह उसे वापस न ख़रीदे तो वह मुक़र्ररा
क़ीमत के लिए बेचा जाए।

28 लेकिन अगर किसी ने अपनी मिल्कियत में से
कुछ ग़ैरमशरूत तौर पर रब्ब के लिए मख़्सूस किया
है तो उसे बेचा या वापस नहीं ख़रीदा जा सकता,
ख़्वाह वह इन्सान, जानवर या ज़मीन हो। जो इस
तरह मख़्सूस किया गया हो वह रब्ब के लिए निहायत
मुक़द्दस है। 29 इसी तरह जिस शख़्स को तबाही के
लिए मख़्सूस किया गया है उस का फ़िद्या नहीं दिया
जा सकता। लाज़िम है कि उसे सज़ा-ए-मौत दी जाए।

30 हर फ़सल का दसवाँ हिस्सा रब्ब का है, चाहे
वह अनाज हो या फल। वह रब्ब के लिए मख़्सूस-ओ-
मुक़द्दस है। 31 अगर कोई अपनी फ़सल का दसवाँ
हिस्सा छुड़ाना चाहता है तो वह इस के लिए उस की
मुक़र्ररा क़ीमत जमा 20 फ़ीसद दे। 32 इसी तरह गाय-
बैलों और भेड़-बक्रियों का दसवाँ हिस्सा भी रब्ब के
लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस है, हर दसवाँ जानवर जो
गल्लाबान के डंडे के नीचे से गुज़रेगा। 33 यह जानवर
चुनने से पहले उन का मुआइना न किया जाए कि
कौन से जानवर अच्छे या कमज़ोर हैं। यह भी न
करना कि दसवें हिस्से के किसी जानवर के बदले
कोई और जानवर दिया जाए। अगर फिर भी उसे
बदला जाए तो दोनों जानवर रब्ब के लिए मख़्सूस-

ओ-मुक़द्दस होंगे। और उन्हें वापस ख़रीदा नहीं जा सकता।”

34 यह वह अह्काम हैं जो रब्ब ने सीना पहाड़ पर मूसा को इस्राईलियों के लिए दिए।

गिनती

इस्राईलियों की पहली मर्दुमशुमारी

1 1 इस्राईलियों को मिस्र से निकले हुए एक साल
से ज़ियादा अर्सा गुज़र गया था। अब तक
वह दश्त-ए-सीना में थे। दूसरे साल के दूसरे महीने
के पहले दिन रब्ब मुलाक़ात के ख़ैमे में मूसा से
हमकलाम हुआ। उस ने कहा,
2 “तू और हारून तमाम इस्राईलियों की मर्दुमशुमारी
कुंबों और आबाई घरानों के मुताबिक़ करना। उन
तमाम मर्दों की फ़हरिस्त बनाना 3 जो कम अज़ कम
बीस साल के और जंग लड़ने के क़ाबिल हों। 4 इस
में हर क़बीले के एक ख़ान्दान का सरपरस्त तुम्हारी
मदद करे। 5 यह उन के नाम हैं : रूबिन के क़बीले
से इलीसूर बिन शदियूर,
6 शमाऊन के क़बीले से सलूमीएल बिन सूरीशद्दी,
7 यहूदाह के क़बीले से नह्सोन बिन अम्मीनदाब,
8 इश्कार के क़बीले से नतनीएल बिन ज़ुग़र,
9 ज़बूलून के क़बीले से इलियाब बिन हेलोन,
10 यूसुफ़ के बेटे इफ़्राईम के क़बीले से इलीसमा
बिन अम्मीहूद, यूसुफ़ के बेटे मनस्सी के क़बीले से
जमलीएल बिन फ़दाह्सूर,
11 बिन्यमीन के क़बीले से अबिदान बिन जिदाऊनी,
12 दान के क़बीले से अख़ीअज़र बिन अम्मीशद्दी,
13 आशर के क़बीले से फ़जईएल बिन अक्रान,
14 जद के क़बीले से इलियासफ़ बिन दऊएल,
15 नफ़्ताली के क़बीले से अख़ीरा बिन एनान।”
16 यही मर्द जमाअत से इस काम के लिए बुलाए
गए। वह अपने क़बीलों के राहनुमा और कुंबों के
सरपरस्त थे। 17 इन की मदद से मूसा और हारून
ने 18 उसी दिन पूरी जमाअत को इकट्ठा किया। हर
इस्राईली मर्द जो कम अज़ कम 20 साल का था
रजिस्टर में दर्ज किया गया। रजिस्टर की तर्तीब उन
के कुंबों और आबाई घरानों के मुताबिक़ थी।
19 सब कुछ वैसा ही किया गया जैसा रब्ब ने हुक्म
दिया था। मूसा ने सीना के रेगिस्तान में लोगों की
मर्दुमशुमारी की। नतीजा यह निकला :
20–21 रूबिन के क़बीले के 46,500 मर्द,
22–23 शमाऊन के क़बीले के 59,300 मर्द,
24–25 जद के क़बीले के 45,650 मर्द,
26–27 यहूदाह के क़बीले के 74,600 मर्द,
28–29 इश्कार के क़बीले के 54,400 मर्द,
30–31 ज़बूलून के क़बीले के 57,400 मर्द,
32–33 यूसुफ़ के बेटे इफ़्राईम के क़बीले के 40,500
मर्द,
34–35 यूसुफ़ के बेटे मनस्सी के क़बीले के 32,200
मर्द,
36–37 बिन्यमीन के क़बीले के 35,400 मर्द,
38–39 दान के क़बीले के 62,700 मर्द,
40–41 आशर के क़बीले के 41,500 मर्द,
42–43 नफ़्ताली के क़बीले के 53,400 मर्द।
44 मूसा, हारून और क़बीलों के बारह राहनुमाओं
ने इन तमाम आदमियों को गिना। 45–46 उन की पूरी
तादाद 6,03,550 थी।
47 लेकिन लावियों की मर्दुमशुमारी न हुई, 48 क्यूँकि
रब्ब ने मूसा से कहा था, 49 “इस्राईलियों की
मर्दुमशुमारी में लावियों को शामिल न करना। 50 इस
के बजाय उन्हें शरीअत की सुकूनतगाह और उस
का सारा सामान सँभालने की ज़िम्मादारी देना। वह
सफ़र करते वक़्त यह ख़ैमा और उस का सारा
सामान उठा कर ले जाएँ, उस की ख़िदमत के लिए
हाज़िर रहें और रुकते वक़्त उसे अपने ख़ैमों से
घेरे रखें। 51 रवाना होते वक़्त वही ख़ैमे को समेटें
और रुकते वक़्त वही उसे लगाएँ। अगर कोई और

उस के क़रीब आए तो उसे सज़ा-ए-मौत दी जाएगी।
52 बाक़ी इस्राईली ख़ैमागाह में अपने अपने दस्ते के
मुताबिक़ और अपने अपने अलम के इर्दगिर्द अपने
ख़ैमे लगाएँ। 53 लेकिन लावी अपने ख़ैमों से शरीअत
की सुकूनतगाह को घेर लें ताकि मेरा ग़ज़ब किसी ग़लत शख़्स के नज़्दीक आने से इस्राईलियों की जमाअत पर नाज़िल न हो जाए। यूँ लावियों को शरीअत की सुकूनतगाह को सँभालना है।”

54 इस्राईलियों ने वैसा ही किया जैसा रब्ब ने मूसा को हुक्म दिया था।

ख़ैमागाह में क़बीलों की तर्तीब

2
1 रब्ब ने मूसा और हारून से कहा 2 कि
इस्राईली अपने ख़ैमे कुछ फ़ासिले पर मुलाक़ात के ख़ैमे के इर्दगिर्द लगाएँ। हर एक अपने अपने अलम और अपने अपने आबाई घराने के निशान के साथ ख़ैमाज़न हो।

3 इन हिदायात के मुताबिक़ मक़्दिस के मशरिक़ में यहूदाह का अलम था जिस के इर्दगिर्द तीन दस्ते ख़ैमाज़न थे। पहले, यहूदाह का क़बीला जिस का कमाँडर नह्सोन बिन अम्मीनदाब था,
4 और जिस के लश्कर के 74,600 फ़ौजी थे।
5 दूसरे, इश्कार का क़बीला जिस का कमाँडर नतनीएल बिन ज़ुग़र था,
6 और जिस के लश्कर के 54,400 फ़ौजी थे।
7 तीसरे, ज़बूलून का क़बीला जिस का कमाँडर इलियाब बिन हेलोन था
8 और जिस के लश्कर के 57,400 फ़ौजी थे।
9 तीनों क़बीलों के फ़ौजियों की कुल तादाद 1,86,400 थी। रवाना होते वक़्त यह आगे चलते थे।

10 मक़्दिस के जुनूब में रूबिन का अलम था जिस के इर्दगिर्द तीन दस्ते ख़ैमाज़न थे। पहले, रूबिन का क़बीला जिस का कमाँडर इलीसूर बिन शदियूर था,
11 और जिस के 46,500 फ़ौजी थे।
12 दूसरे, शमाऊन का क़बीला जिस का कमाँडर सलूमीएल बिन सूरीशद्दी था,
13 और जिस के 59,300 फ़ौजी थे।
14 तीसरे, जद का क़बीला जिस का कमाँडर इलियासफ़ बिन दऊएल था,
15 और जिस के 45,650 फ़ौजी थे।
16 तीनों क़बीलों के फ़ौजियों की कुल तादाद 1,51,450 थी। रवाना होते वक़्त यह मशरिक़ी क़बीलों के पीछे चलते थे।

17 इन जुनूबी क़बीलों के बाद लावी मुलाक़ात का ख़ैमा उठा कर क़बीलों के ऐन बीच में चलते थे। क़बीले उस तर्तीब से रवाना होते थे जिस तर्तीब से वह अपने ख़ैमे लगाते थे। हर क़बीला अपने अलम के पीछे चलता था।

18 मक़्दिस के मग़रिब में इफ़्राईम का अलम था जिस के इर्दगिर्द तीन दस्ते ख़ैमाज़न थे। पहले, इफ़्राईम का क़बीला जिस का कमाँडर इलीसमा बिन अम्मीहूद था,
19 और जिस के 40,500 फ़ौजी थे।
20 दूसरे, मनस्सी का क़बीला जिस का कमाँडर जमलीएल बिन फ़दाहसूर था,
21 और जिस के 32,200 फ़ौजी थे।
22 तीसरे, बिन्यमीन का क़बीला जिस का कमाँडर अबिदान बिन जिदाऊनी था,
23 और जिस के 35,400 फ़ौजी थे।
24 तीनों क़बीलों के फ़ौजियों की कुल तादाद 1,08,100 थी। रवाना होते वक़्त यह जुनूबी क़बीलों के पीछे चलते थे।

25 मक़्दिस के शिमाल में दान का अलम था जिस के इर्दगिर्द तीन दस्ते ख़ैमाज़न थे। पहले, दान का क़बीला जिस का कमाँडर अख़ीअज़र बिन अम्मीशद्दी था,
26 और जिस के 62,700 फ़ौजी थे।
27 दूसरे, आशर का क़बीला जिस का कमाँडर फ़जईएल बिन अक्रान था,
28 और जिस के 41,500 फ़ौजी थे।
29 तीसरे, नफ़्ताली का क़बीला जिस का कमाँडर अख़ीरा बिन एनान था,
30 और जिस के 53,400 फ़ौजी थे।
31 तीनों क़बीलों की कुल तादाद 1,57,600 थी। वह आख़िर में अपना अलम उठा कर रवाना होते थे।

32 पूरी ख़ैमागाह के फ़ौजियों की कुल तादाद 6,03,550 थी।
33 सिर्फ़ लावी इस तादाद में शामिल नहीं थे, क्यूँकि रब्ब ने मूसा को हुक्म दिया था कि उन की भर्ती न की जाए।

34यूँ इस्राईलियों ने सब कुछ उन हिदायात के
मुताबिक़ किया जो रब्ब ने मूसा को दी थीं। उन के
मुताबिक़ ही वह अपने झंडों के इर्दगिर्द अपने ख़ैमे
लगाते थे और उन के मुताबिक़ ही अपने कुंबों और
आबाई घरानों के साथ रवाना होते थे।

हारून के बेटे

3 1यह हारून और मूसा के ख़ान्दान का बयान है।
उस वक़्त का ज़िक्र है जब रब्ब ने सीना पहाड़
पर मूसा से बात की। 2हारून के चार बेटे थे। बड़ा
बेटा नदब था, फिर अबीहू, इलीअज़र और इतमर।
3यह इमाम थे जिन को मसह करके इस ख़िदमत का
इख़तियार दिया गया था। 4लेकिन नदब और अबीहू
उस वक़्त मर गए जब उन्हों ने दश्त-ए-सीना में रब्ब
के हुज़ूर नाजाइज़ आग पेश की। चूँकि वह बेऔलाद
थे इस लिए हारून के जीते जी सिर्फ़ इलीअज़र और
इतमर इमाम की ख़िदमत सरअन्जाम देते थे।

लावियों की मक़्दिस में ज़िम्मादारी

5रब्ब ने मूसा से कहा, 6“लावी के क़बीले को
ला कर हारून की ख़िदमत करने की ज़िम्मादारी
दे। 7उन्हें उस के लिए और पूरी जमाअत के लिए
मुलाक़ात के ख़ैमे की ख़िदमात सँभालना है। 8वह
मुलाक़ात के ख़ैमे का सामान सँभालें और तमाम
इस्राईलियों के लिए मक़्दिस के फ़राइज़ अदा करें।
9तमाम इस्राईलियों में से सिर्फ़ लावियों को हारून
और उस के बेटों की ख़िदमत के लिए मुक़र्रर कर।
10लेकिन सिर्फ़ हारून और उस के बेटों को इमाम
की हैसियत हासिल है। जो भी बाक़ियों में से उन की
ज़िम्मादारियाँ उठाने की कोशिश करेगा उसे सज़ा-ए-
मौत दी जाएगी।”

11रब्ब ने मूसा से यह भी कहा, 12“मैं ने इस्राईलियों
में से लावियों को चुन लिया है। वह तमाम इस्राईली
पहलौठों के इवज़ मेरे लिए मख़्सूस हैं, 13क्यूँकि
तमाम पहलौठे मेरे ही हैं। जिस दिन मैं ने मिस्र में
तमाम पहलौठों को मार दिया उस दिन मैं ने इस्राईल
के पहलौठों को अपने लिए मख़्सूस किया, ख़्वाह
वह इन्सान के थे या हैवान के। वह मेरे ही हैं। मैं
रब्ब हूँ।”

लावियों की मर्दुमशुमारी

14रब्ब ने सीना के रेगिस्तान में मूसा से कहा,
15“लावियों को गिन कर उन के आबाई घरानों और
कुंबों के मुताबिक़ रजिस्टर में दर्ज करना। हर बेटे
को गिनना है जो एक माह या इस से ज़ाइद का है।”
16मूसा ने ऐसा ही किया।

17लावी के तीन बेटे जैर्सोन, क़िहात और मिरारी
थे। 18जैर्सोन के दो कुंबे उस के बेटों लिब्नी और
सिमई के नाम रखते थे। 19क़िहात के चार कुंबे उस
के बेटों अम्राम, इज़्हार , हब्रून और उज़्ज़ीएल के नाम
रखते थे। 20मिरारी के दो कुंबे उस के बेटों महली
और मूशी के नाम रखते थे। ग़रज़ लावी के क़बीले
के कुंबे उस के पोतों के नाम रखते थे।

21जैर्सोन के दो कुंबों बनाम लिब्नी और सिमई
22के 7,500 मर्द थे जो एक माह या इस से ज़ाइद
के थे। 23उन्हें अपने ख़ैमे मग़रिब में मक़्दिस के
पीछे लगाने थे। 24उन का राहनुमा इलियासफ़ बिन
लाएल था, 25और वह ख़ैमे को सँभालते थे यानी
उस की पोशिशें, ख़ैमे के दरवाज़े का पर्दा, 26ख़ैमे
और क़ुर्बानगाह की चारदीवारी के पर्दे, चारदीवारी
के दरवाज़े का पर्दा और तमाम रस्से। इन चीज़ों से
मुताल्लिक़ सारी ख़िदमत उन की ज़िम्मादारी थी।

27क़िहात के चार कुंबों बनाम अम्राम, इज़्हार ,
हब्रून और उज़्ज़ीएल 28के 8,600 मर्द थे जो एक
माह या इस से ज़ाइद के थे और जिन को मक़्दिस
की ख़िदमत करनी थी। 29उन्हें अपने डेरे मक़्दिस
के जुनूब में डालने थे। 30उन का राहनुमा इलीसफ़न
बिन उज़्ज़ीएल था, 31और वह यह चीज़ें सँभालते थे
: अह्द का सन्दूक़, मेज़, शमादान, क़ुर्बानगाहें, वह
बर्तन और साज़-ओ-सामान जो मक़्दिस में इस्तेमाल
होता था और मुक़द्दसतरीन कमरे का पर्दा। इन चीज़ों
से मुताल्लिक़ सारी ख़िदमत उन की ज़िम्मादारी थी।

32 हारून इमाम का बेटा इलीअज़र लावियों के तमाम राहनुमाओं पर मुक़र्रर था। वह उन तमाम लोगों का इंचार्ज था जो मक़्दिस की देख-भाल करते थे।

33 मिरारी के दो कुंबों बनाम महली और मूशी 34 के 6,200 मर्द थे जो एक माह या इस से ज़ाइद के थे। 35 उन का राहनुमा सूरीएल बिन अबीख़ैल था। उन्हें अपने डेरे मक़्दिस के शिमाल में डालने थे, 36 और वह यह चीज़ें सँभालते थे : ख़ैमे के तख़्ते, उस के शहतीर, खम्बे, पाए और इस तरह का सारा सामान। इन चीज़ों से मुताल्लिक़ सारी ख़िदमत उन की ज़िम्मादारी थी। 37 वह चारदीवारी के खम्बे, पाए, मेख़ें और रस्से भी सँभालते थे।

38 मूसा, हारून और उन के बेटों को अपने डेरे मशरिक़ में मक़्दिस के सामने डालने थे। उन की ज़िम्मादारी मक़्दिस में बनी इस्राईल के लिए ख़िदमत करना थी। उन के इलावा जो भी मक़्दिस में दाख़िल होने की कोशिश करता उसे सज़ा-ए-मौत देनी थी।

39 उन लावी मर्दों की कुल तादाद जो एक माह या इस से ज़ाइद के थे 22,000 थी। रब्ब के कहने पर मूसा और हारून ने उन्हें कुंबों के मुताबिक़ गिन कर रजिस्टर में दर्ज किया।

लावी के क़बीले के मर्द पहलौठों के इवज़ी हैं

40 रब्ब ने मूसा से कहा, “तमाम इस्राईली पहलौठों को गिनना जो एक माह या इस से ज़ाइद के हैं और उन के नाम रजिस्टर में दर्ज करना। 41 उन तमाम पहलौठों की जगह लावियों को मेरे लिए मख़्सूस करना। इसी तरह इस्राईलियों के मवेशियों के पहलौठों की जगह लावियों के मवेशी मेरे लिए मख़्सूस करना। मैं रब्ब हूँ।” 42 मूसा ने ऐसा ही किया जैसा रब्ब ने उसे हुक्म दिया। उस ने तमाम इस्राईली पहलौठे 43 जो एक माह या इस से ज़ाइद के थे गिन लिए। उन की कुल तादाद 22,273 थी।

44 रब्ब ने मूसा से कहा, 45 “मुझे तमाम इस्राईली पहलौठों की जगह लावियों को पेश करना। इसी तरह मुझे इस्राईलियों के मवेशियों की जगह लावियों के मवेशी पेश करना। लावी मेरे ही हैं। मैं रब्ब हूँ। 46 लावियों की निस्बत बाक़ी इस्राईलियों के 273 पहलौठे ज़ियादा हैं। उन में से 47 हर एक के इवज़ चाँदी के पाँच सिक्के ले जो मक़्दिस के वज़न के मुताबिक़ हों (फ़ी सिक्का तक़्रीबन 11 ग्राम)। 48 यह पैसे हारून और उस के बेटों को देना।”

49 मूसा ने ऐसा ही किया। 50 यूँ उस ने चाँदी के 1,365 सिक्के (तक़्रीबन 16 किलोग्राम जमा करके 51 हारून और उस के बेटों को दिए, जिस तरह रब्ब ने उसे हुक्म दिया था।

क़िहातियों की ज़िम्मादारियाँ

4 1 रब्ब ने मूसा और हारून से कहा, 2 “लावी के क़बीले में से क़िहातियों की मर्दुमशुमारी उन के कुंबों और आबाई घरानों के मुताबिक़ करना। 3 उन तमाम मर्दों को रजिस्टर में दर्ज करना जो 30 से ले कर 50 साल के हैं और मुलाक़ात के ख़ैमे में ख़िदमत करने के लिए आ सकते हैं। 4 क़िहातियों की ख़िदमत मुक़द्दसतरीन कमरे की देख-भाल है।

5 जब ख़ैमे को सफ़र के लिए समेटना है तो हारून और उस के बेटे दाख़िल हो कर मुक़द्दसतरीन कमरे का पर्दा उतारें और उसे शरीअत के सन्दूक़ पर डाल दें। 6 इस पर वह तख़स की खालों का ग़िलाफ़ और आख़िर में पूरी तरह नीले रंग का कपड़ा बिछाएँ। इस के बाद वह सन्दूक़ को उठाने की लकड़ियाँ लगाएँ।

7 वह उस मेज़ पर भी नीले रंग का कपड़ा बिछाएँ जिस पर रब्ब को रोटी पेश की जाती है। उस पर थाल, पियाले, मै की नज़रें पेश करने के बर्तन और मर्तबान रखे जाएँ। जो रोटी हमेशा मेज़ पर होती है वह भी उस पर रहे। 8 हारून और उस के बेटे इन तमाम चीज़ों पर क़िर्मिज़ी रंग का कपड़ा बिछा कर आख़िर में उन के ऊपर तख़स की खालों का ग़िलाफ़ डालें। इस के बाद वह मेज़ को उठाने की लकड़ियाँ लगाएँ।

9 वह शमादान और उस के सामान पर यानी उस के चराग़, बत्ती कतरने की क़ैंचियों, जलते कोइले

के छोटे बर्तनों और तेल के बर्तनों पर नीले रंग का
कपड़ा रखें। 10 यह सब कुछ वह तख़स की खालों
के ग़िलाफ़ में लपेटें और उसे उठा कर ले जाने के
लिए एक चौखटे पर रखें।
11 वह बख़ूर जलाने की सोने की क़ुर्बानगाह पर भी
नीले रंग का कपड़ा बिछा कर उस पर तख़स की
खालों का ग़िलाफ़ डालें और फिर उसे उठाने की
लकड़ियाँ लगाएँ। 12 वह सारा सामान जो मुक़द्दस
कमरे में इस्तेमाल होता है ले कर नीले रंग के कपड़े
में लपेटें, उस पर तख़स की खालों का ग़िलाफ़ डालें
और उसे उठा कर ले जाने के लिए एक चौखटे पर
रखें।
13 फिर वह जानवरों को जलाने की क़ुर्बानगाह को
राख से साफ़ करके उस पर अर्ग़वानी रंग का कपड़ा
बिछाएँ। 14 उस पर वह क़ुर्बानगाह की ख़िदमत के
लिए सारा ज़रूरी सामान रखें यानी छिड़काओ के
कटोरे, जलते हुए कोइले के बर्तन, बेलचे और काँटे।
इस सामान पर वह तख़स की खालों का ग़िलाफ़
डाल कर क़ुर्बानगाह को उठाने की लकड़ियाँ लगाएँ।
15 सफ़र के लिए रवाना होते वक़्त यह सब कुछ
उठा कर ले जाना क़िहातियों की ज़िम्मादारी है।
लेकिन लाज़िम है कि पहले हारून और उस के बेटे
यह तमाम मुक़द्दस चीज़ें ढाँपें। क़िहाती इन में से कोई
भी चीज़ न छुएँ वर्ना मर जाएँगे।
16 हारून इमाम का बेटा इलीअज़र पूरे मुक़द्दस ख़ैमे
और उस के सामान का इंचार्ज हो। इस में चराग़ों का
तेल, बख़ूर, ग़ल्ला की रोज़ाना नज़र और मसह का तेल
भी शामिल है।”
17 रब्ब ने मूसा और हारून से कहा, 18 “ख़बरदार
रहो कि क़िहात के कुंबे लावी के क़बीले में से मिटने
न पाएँ। 19 चुनाँचे जब वह मुक़द्दसतरीन चीज़ों के
पास आएँ तो हारून और उस के बेटे हर एक को
उस सामान के पास ले जाएँ जो उसे उठा कर ले
जाना है ताकि वह न मरें बल्कि जीते रहें। 20 क़िहाती
एक लम्हे के लिए भी मुक़द्दस चीज़ें देखने के लिए
अन्दर न जाएँ, वर्ना वह मर जाएँगे।”

जैर्सोनियों की ज़िम्मादारियाँ

21 फिर रब्ब ने मूसा से कहा, 22 “जैर्सोन की औलाद
की मर्दुमशुमारी भी उन के आबाई घरानों और कुंबों
के मुताबिक़ करना। 23 उन तमाम मर्दों को रजिस्टर
में दर्ज करना जो 30 से ले कर 50 साल के हैं और
मुलाक़ात के ख़ैमे में ख़िदमत के लिए आ सकते हैं।
24 वह यह चीज़ें उठा कर ले जाने के ज़िम्मादार हैं
: 25 मुलाक़ात का ख़ैमा, उस की छत, छत पर रखी
हुई तख़स की खाल की पोशिश, ख़ैमे के दरवाज़े
का पर्दा, 26 ख़ैमे और क़ुर्बानगाह की चारदीवारी के
पर्दे, चारदीवारी के दरवाज़े का पर्दा, उस के रस्से
और उसे लगाने का बाक़ी सामान। वह उन तमाम
कामों के ज़िम्मादार हैं जो इन चीज़ों से मुन्सलिक
हैं। 27 जैर्सोनियों की पूरी ख़िदमत हारून और उस के
बेटों की हिदायात के मुताबिक़ हो। ख़बरदार रहो कि
वह सब कुछ ऐन हिदायात के मुताबिक़ उठा कर ले
जाएँ। 28 यह सब मुलाक़ात के ख़ैमे में जैर्सोनियों की
ज़िम्मादारियाँ हैं। इस काम में हारून इमाम का बेटा
इतमर उन पर मुक़र्रर है।”

मिरारियों की ज़िम्मादारियाँ

29 रब्ब ने कहा, “मिरारी की औलाद की
मर्दुमशुमारी भी उन के आबाई घरानों और कुंबों के
मुताबिक़ करना। 30 उन तमाम मर्दों को रजिस्टर में
दर्ज करना जो 30 से ले कर 50 साल के हैं और
मुलाक़ात के ख़ैमे में ख़िदमत के लिए आ सकते हैं।
31 वह मुलाक़ात के ख़ैमे की यह चीज़ें उठा कर ले
जाने के ज़िम्मादार हैं : दीवार के तख़्ते, शहतीर, खम्बे
और पाए, 32 फिर ख़ैमे की चारदीवारी के खम्बे, पाए,
मेख़ें, रस्से और यह चीज़ें लगाने का सामान। हर एक
को तफ़्सील से बताना कि वह क्या क्या उठा कर
ले जाए। 33 यह सब कुछ मिरारियों की मुलाक़ात
के ख़ैमे में ज़िम्मादारियों में शामिल है। इस काम में
हारून इमाम का बेटा इतमर उन पर मुक़र्रर हो।”

लावियों की मर्दुमशुमारी

34 मूसा, हारून और जमाअत के राहनुमाओं ने क़िहातियों की मर्दुमशुमारी उन के कुंबों और आबाई घरानों के मुताबिक़ की। 35–37 उन्हों ने उन तमाम मर्दों को रजिस्टर में दर्ज किया जो 30 से ले कर 50 साल के थे और जो मुलाक़ात के ख़ैमे में ख़िदमत कर सकते थे। उन की कुल तादाद 2,750 थी। मूसा और हारून ने सब कुछ वैसा ही किया जैसा रब्ब ने मूसा की मारिफ़त फ़रमाया था। 38–41 फिर जैर्सोनियों की मर्दुमशुमारी उन के कुंबों और आबाई घरानों के मुताबिक़ हुई। ख़िदमत के लाइक़ मर्दों की कुल तादाद 2,630 थी। मूसा और हारून ने सब कुछ वैसा ही किया जैसा रब्ब ने मूसा के ज़रीए फ़रमाया था। 42–45 फिर मिरारियों की मर्दुमशुमारी उन के कुंबों और आबाई घरानों के मुताबिक़ हुई। ख़िदमत के लाइक़ मर्दों की कुल तादाद 3,200 थी। मूसा और हारून ने सब कुछ वैसा ही किया जैसा रब्ब ने मूसा के ज़रीए फ़रमाया था। 46–48 लावियों के उन मर्दों की कुल तादाद 8,580 थी जिन्हें मुलाक़ात के ख़ैमे में ख़िदमत करना और सफ़र करते वक़्त उसे उठा कर ले जाना था।

49 मूसा ने रब्ब के हुक्म के मुताबिक़ हर एक को उस की अपनी अपनी ज़िम्मादारी सौंपी और उसे बताया कि उसे क्या क्या उठा कर ले जाना है। यूँ उन की मर्दुमशुमारी रब्ब के उस हुक्म के ऐन मुताबिक़ की गई जो उस ने मूसा की मारिफ़त दिया था।

नापाक लोग ख़ैमागाह में नहीं रह सकते

5 1 रब्ब ने मूसा से कहा, 2 "इस्राईलियों को हुक्म दे कि हर उस शख़्स को ख़ैमागाह से बाहर कर दो जिस को वबाई जिल्दी बीमारी है, जिस के ज़ख़्मों से माए निकलता रहता है या जो किसी लाश को छूने से नापाक है। 3 ख़्वाह मर्द हो या औरत, सब को ख़ैमागाह के बाहर भेज देना ताकि वह ख़ैमागाह को नापाक न करें जहाँ मैं तुम्हारे दर्मियान सुकूनत करता हूँ।" 4 इस्राईलियों ने वैसा ही किया जैसा रब्ब ने मूसा को कहा था। उन्हों ने रब्ब के हुक्म के ऐन मुताबिक़ इस तरह के तमाम लोगों को ख़ैमागाह से बाहर कर दिया।

ग़लत काम का मुआवज़ा

5 रब्ब ने मूसा से कहा, 6 "इस्राईलियों को हिदायत देना कि जो भी किसी से ग़लत सुलूक करे वह मेरे साथ बेवफ़ाई करता है और क़ुसूरवार है, ख़्वाह मर्द हो या औरत। 7 लाज़िम है कि वह अपना गुनाह तस्लीम करे और उस का पूरा मुआवज़ा दे बल्कि मुतअस्सिरा शख़्स का नुक़्सान पूरा करने के इलावा 20 फ़ीसद ज़ियादा दे। 8 लेकिन अगर वह शख़्स जिस का क़ुसूर किया गया था मर चुका हो और उस का कोई वारिस न हो जो यह मुआवज़ा वसूल कर सके तो फिर उसे रब्ब को देना है। इमाम को यह मुआवज़ा उस मेंढे के इलावा मिलेगा जो क़ुसूरवार अपने कफ़्फ़ारा के लिए देगा। 9–10 नीज़ इमाम को इस्राईलियों की क़ुर्बानियों में से वह कुछ मिलना है जो उठाने वाली क़ुर्बानी के तौर पर उसे दिया जाता है। यह हिस्सा सिर्फ़ इमामों को ही मिलना है।"

ज़िना के शक पर अल्लाह का फ़ैसला

11 रब्ब ने मूसा से कहा, 12 "इस्राईलियों को बताना, हो सकता है कि कोई शादीशुदा औरत भटक कर अपने शौहर से बेवफ़ा हो जाए और 13 किसी और से हमबिसतर हो कर नापाक हो जाए। उस के शौहर ने उसे नहीं देखा, क्यूँकि यह पोशीदगी में हुआ है और न किसी ने उसे पकड़ा, न इस का कोई गवाह है। 14 अगर शौहर को अपनी बीवी की वफ़ादारी पर शक हो और वह ग़ैरत खाने लगे, लेकिन यक़ीन से नहीं कह सकता कि मेरी बीवी क़ुसूरवार है कि नहीं 15 तो वह अपनी बीवी को इमाम के पास ले आए। साथ साथ वह अपनी बीवी के लिए क़ुर्बानी के तौर पर जौ का डेढ़ किलोग्राम बेहतरीन मैदा ले आए। इस पर न तेल उंडेला जाए, न बख़ूर डाला जाए, क्यूँकि

ग़ल्ला की यह नज़र ग़ैरत की नज़र है जिस का मक़सद
है कि पोशीदा क़ुसूर ज़ाहिर हो जाए। 16 इमाम औरत
को क़रीब आने दे और रब्ब के सामने खड़ा करे।
17 वह मिट्टी का बर्तन मुक़द्दस पानी से भर कर उस
में मक़्दिस के फ़र्श की कुछ ख़ाक डाले। 18 फिर वह
औरत को रब्ब को पेश करके उस के बाल खुलवाए
और उस के हाथों पर मैदे की नज़र रखे। इमाम के
अपने हाथ में कड़वे पानी का वह बर्तन हो जो लानत
का बाइस है।

19 फिर वह औरत को क़सम खिला कर कहे,
'अगर कोई और आदमी आप से हमबिसतर नहीं
हुआ है और आप नापाक नहीं हुई हैं तो इस कड़वे
पानी की लानत का आप पर कोई असर न हो।
20 लेकिन अगर आप भटक कर अपने शौहर से
बेवफ़ा हो गई हैं और किसी और से हमबिसतर हो
कर नापाक हो गई हैं 21 तो रब्ब आप को आप की
क़ौम के सामने लानती बनाए। आप बाँझ हो जाएँ
और आप का पेट फूल जाए। 22 जब लानत का यह
पानी आप के पेट में उतरे तो आप बाँझ हो जाएँ
और आप का पेट फूल जाए।' इस पर औरत कहे,
'आमीन, ऐसा ही हो।'

23 फिर इमाम यह लानत लिख कर काग़ज़ को बर्तन
के पानी में यूँ धो दे कि उस पर लिखी हुई बातें
पानी में घुल जाएँ। 24 बाद में वह औरत को यह पानी
पिलाए ताकि वह उस के जिस्म में जा कर उसे लानत
पहुँचाए। 25 लेकिन पहले इमाम उस के हाथों में से
ग़ैरत की क़ुर्बानी ले कर उसे ग़ल्ला की नज़र के तौर
पर रब्ब के सामने हिलाए और फिर क़ुर्बानगाह के
पास ले आए। 26 उस पर वह मुट्ठी भर यादगारी की
क़ुर्बानी के तौर पर जलाए। इस के बाद वह औरत
को पानी पिलाए। 27 अगर वह अपने शौहर से बेवफ़ा
थी और नापाक हो गई है तो वह बाँझ हो जाएगी, उस
का पेट फूल जाएगा और वह अपनी क़ौम के सामने
लानती ठहरेगी। 28 लेकिन अगर वह पाक-साफ़ है
तो उसे सज़ा नहीं दी जाएगी और वह बच्चे जन्म देने
के क़ाबिल रहेगी।

29–30 चुनाँचे ऐसा ही करना है जब शौहर ग़ैरत खाए
और उसे अपनी बीवी पर ज़िना का शक हो। बीवी
को क़ुर्बानगाह के सामने खड़ा किया जाए और इमाम
यह सब कुछ करे। 31 इस सूरत में शौहर बेक़ुसूर
ठहरेगा, लेकिन अगर उस की बीवी ने वाक़ई ज़िना
किया हो तो उसे अपने गुनाह के नतीजे बर्दाश्त करने
पड़ेंगे।"

जो अपने आप को मख़्सूस करते हैं

6 1 रब्ब ने मूसा से कहा, 2 "इस्राईलियों को
हिदायत देना कि अगर कोई आदमी या औरत
मन्नत मान कर अपने आप को एक मुक़र्ररा वक़्त के
लिए रब्ब के लिए मख़्सूस करे 3 तो वह मै या कोई
और नशाआवर चीज़ न पिए। न वह अंगूर या किसी
और चीज़ का सिरका पिए, न अंगूर का रस। वह
अंगूर या किशमिश न खाए। 4 जब तक वह मख़्सूस
है वह अंगूर की कोई भी पैदावार न खाए, यहाँ तक
कि अंगूर के बीज या छिलके भी न खाए। 5 जब तक
वह अपनी मन्नत के मुताबिक़ मख़्सूस है वह अपने
बाल न कटवाए। जितनी देर के लिए उस ने अपने
आप को रब्ब के लिए मख़्सूस किया है उतनी देर तक
वह मुक़द्दस है। इस लिए वह अपने बाल बढ़ने दे।
6 जब तक वह मख़्सूस है वह किसी लाश के क़रीब
न जाए, 7 चाहे वह उस के बाप, माँ, भाई या बहन की
लाश क्यूँ न हो। क्यूँकि इस से वह नापाक हो जाएगा
जबकि अभी तक उस की मख़्सूसियत लम्बे बालों
की सूरत में नज़र आती है। 8 वह अपनी मख़्सूसियत
के दौरान रब्ब के लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस है।

9 अगर कोई अचानक मर जाए जब मख़्सूस शख़्स
उस के क़रीब हो तो उस के मख़्सूस बाल नापाक
हो जाएँगे। ऐसी सूरत में लाज़िम है कि वह अपने
आप को पाक-साफ़ करके सातवें दिन अपने सर
को मुंडवाए। 10 आठवें दिन वह दो क़ुम्रियाँ या दो
जवान कबूतर ले कर मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े
पर आए और इमाम को दे। 11 इमाम इन में से एक
को गुनाह की क़ुर्बानी के तौर पर चढ़ाए और दूसरे

को भस्म होने वाली क़ुर्बानी के तौर पर। यूँ वह उस के लिए कफ़्फ़ारा देगा जो लाश के क़रीब होने से नापाक हो गया है। उसी दिन वह अपने सर को दुबारा मख़्सूस करे 12 और अपने आप को मुक़र्ररा वक़्त के लिए दुबारा रब्ब के लिए मख़्सूस करे। वह क़ुसूर की क़ुर्बानी के तौर पर एक साल का भेड़ का बच्चा पेश करे। जितने दिन उस ने पहले मख़्सूसियत की हालत में गुज़ारे हैं वह शुमार नहीं किए जा सकते क्यूँकि वह मख़्सूसियत की हालत में नापाक हो गया था। वह दुबारा पहले दिन से शुरू करे।

13 शरीअत के मुताबिक़ जब मख़्सूस शख़्स का मुक़र्ररा वक़्त गुज़र गया हो तो पहले उसे मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर लाया जाए। 14 वहाँ वह रब्ब को भस्म होने वाली क़ुर्बानी के लिए भेड़ का एक बेऐब यकसाला नर बच्चा, गुनाह की क़ुर्बानी के लिए एक बेऐब यकसाला भेड़ और सलामती की क़ुर्बानी के लिए एक बेऐब मेंढा पेश करे। 15 इस के इलावा वह एक टोकरी में बेख़मीरी रोटियाँ जिन में बेहतरीन मैदा और तेल मिलाया गया हो और बेख़मीरी रोटियाँ जिन पर तेल लगाया गया हो मुताल्लिक़ा ग़ल्ला की नज़र और मै की नज़र के साथ 16 रब्ब को पेश करे। पहले इमाम गुनाह की क़ुर्बानी और भस्म होने वाली क़ुर्बानी रब्ब के हुज़ूर चढ़ाए। 17 फिर वह मेंढे को बेख़मीरी रोटियों के साथ सलामती की क़ुर्बानी के तौर पर पेश करे। इमाम ग़ल्ला की नज़र और मै की नज़र भी चढ़ाए। 18 इस दौरान मख़्सूस शख़्स मुलाक़ात के ख़ैमे पर अपने मख़्सूस किए गए सर को मुंडवा कर तमाम बाल सलामती की क़ुर्बानी की आग में फैंके।

19 फिर इमाम मेंढे का एक पका हुआ शाना और टोकरी में से दोनों क़िस्मों की एक एक रोटी ले कर मख़्सूस शख़्स के हाथों पर रखे। 20 इस के बाद वह यह चीज़ें वापस ले कर उन्हें हिलाने की क़ुर्बानी के तौर पर रब्ब के सामने हिलाए। यह एक मुक़द्दस क़ुर्बानी है जो इमाम का हिस्सा है। सलामती की क़ुर्बानी का हिलाया हुआ सीना और उठाई हुई रान भी इमाम का हिस्सा हैं। क़ुर्बानी के इख़्तिताम पर मख़्सूस किए हुए शख़्स को मै पीने की इजाज़त है।

21 जो अपने आप को रब्ब के लिए मख़्सूस करता है वह ऐसा ही करे। लाज़िम है कि वह इन हिदायात के मुताबिक़ तमाम क़ुर्बानियाँ पेश करे। अगर गुन्जाइश हो तो वह और भी पेश कर सकता है। ब-हर-हाल लाज़िम है कि वह अपनी मन्नत और यह हिदायात पूरी करे।”

इमाम की बर्कत

22 रब्ब ने मूसा से कहा, 23 “हारून और उस के बेटों को बता देना कि वह इस्राईलियों को यूँ बर्कत दें,

24 ‘रब्ब तुझे बर्कत दे और तेरी हिफ़ाज़त करे।

25 रब्ब अपने चिहरे का मेहरबान नूर तुझ पर चमकाए और तुझ पर रहम करे।

26 रब्ब की नज़र-ए-करम तुझ पर हो, और वह तुझे सलामती बख़्शे।’

27 यूँ वह मेरा नाम ले कर इस्राईलियों को बर्कत दें। फिर मैं उन्हें बर्कत दूँगा।”

मक़्दिस की मख़्सूसियत के हदिए

7 1 जिस दिन मक़्दिस मुकम्मल हुआ उसी दिन मूसा ने उसे मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस किया। इस के लिए उस ने ख़ैमे, उस के तमाम सामान, क़ुर्बानगाह और उस के तमाम सामान पर तेल छिड़का। 2–3 फिर क़बीलों के बारह सरदार मक़्दिस के लिए हदिए ले कर आए। यह वही राहनुमा थे जिन्हों ने मर्दुमशुमारी के वक़्त मूसा की मदद की थी। उन्हों ने छत वाली छः बैल गाड़ियाँ और बारह बैल ख़ैमे के सामने रब्ब को पेश किए, दो दो सरदारों की तरफ़ से एक बैलगाड़ी और हर एक सरदार की तरफ़ से एक बैल।

4 रब्ब ने मूसा से कहा, 5 “यह तुह्फ़े क़बूल करके मुलाक़ात के ख़ैमे के काम के लिए इस्तेमाल कर। उन्हें लावियों में उन की ख़िदमत की ज़रूरत के मुताबिक़ तक़्सीम करना।” 6 चुनाँचे मूसा ने बैल

गाड़ियाँ और बैल लावियों को दे दिए। 7 उस ने दो बैल गाड़ियाँ चार बैलों समेत जैर्सोनियों को 8 और चार बैल गाड़ियाँ आठ बैलों समेत मिरारियों को दीं। मिरारी हारून इमाम के बेटे इतमर के तहत ख़िदमत करते थे। 9 लेकिन मूसा ने क़िहातियों को न बैल गाड़ियाँ और न बैल दिए। वजह यह थी कि जो मुक़द्दस चीज़ें उन के सपुर्द थीं वह उन को कंधों पर उठा कर ले जानी थीं।

10 बारह सरदार क़ुर्बानगाह की मख़्सूसियत के मौक़े पर भी हदिए ले आए। उन्हों ने अपने हदिए क़ुर्बानगाह के सामने पेश किए। 11 रब्ब ने मूसा से कहा, "सरदार बारह दिन के दौरान बारी बारी अपने हदिए पेश करें।" 12 पहले दिन यहूदाह के सरदार नहसोन बिन अम्मीनदाब की बारी थी। उस के हदिए यह थे : 13 चाँदी का थाल जिस का वज़न डेढ़ किलोग्राम था और छिड़काओ का चाँदी का कटोरा जिस का वज़न 800 ग्राम था। दोनों ग़ल्ला की नज़र के लिए तेल के साथ मिलाए गए बेहतरीन मैदे से भरे हुए थे। 14 इन के इलावा नहसोन ने यह चीज़ें पेश कीं : सोने का पियाला जिस का वज़न 110 ग्राम था और जो बख़ूर से भरा हुआ था, 15 एक जवान बैल, एक मेंढा, भस्म होने वाली क़ुर्बानी के लिए भेड़ का एक यकसाला बच्चा, 16 गुनाह की क़ुर्बानी के लिए एक बक्रा 17 और सलामती की क़ुर्बानी के लिए दो बैल, पाँच मेंढे, पाँच बक्रे और भेड़ के पाँच यकसाला बच्चे।

18–23 अगले ग्यारह दिन बाक़ी सरदार भी यही हदिए मक़्दिस के पास ले आए। दूसरे दिन इश्कार के सरदार नतनीएल बिन ज़ुग़र की बारी थी, 24–29 तीसरे दिन ज़बूलून के सरदार इलियाब बिन हेलोन की, 30–47 चौथे दिन रूबिन के सरदार इलीसूर बिन शदियूर की, पाँचवें दिन शमाऊन के सरदार सलूमीएल बिन सूरीशद्दी की, छटे दिन जद के सरदार इलियासफ़ बिन दऊएल की, 48–53 सातवें दिन इफ़्राईम के सरदार इलीसमा बिन अम्मीहूद की, 54–71 आठवें दिन मनस्सी के सरदार जमलीएल बिन फ़दाहसूर की, नव्वें दिन बिन्यमीन के सरदार अबिदान बिन जिदाऊनी की, दसवें दिन दान के सरदार अख़ीअज़र बिन अम्मीशद्दी की, 72–83 ग्यारवें दिन आशर के सरदार फ़जईएल बिन अक्रान की और बारहवें दिन नफ़्ताली के सरदार अख़ीरा बिन एनान की बारी थी।

84 इस्राईल के इन सरदारों ने मिल कर क़ुर्बानगाह की मख़्सूसियत के लिए चाँदी के 12 थाल, छिड़काओ के चाँदी के 12 कटोरे और सोने के 12 पियाले पेश किए। 85 हर थाल का वज़न डेढ़ किलोग्राम और छिड़काओ के हर कटोरे का वज़न 800 ग्राम था। इन चीज़ों का कुल वज़न तक़रीबन 28 किलोग्राम था। 86 बख़ूर से भरे हुए सोने के पियालों का कुल वज़न तक़रीबन डेढ़ किलोग्राम था (फ़ी पियाला 110 ग्राम)। 87 सरदारों ने मिल कर भस्म होने वाली क़ुर्बानी के लिए 12 जवान बैल, 12 मेंढे, भेड़ के 12 यकसाला बच्चे उन की ग़ल्ला की नज़रों समेत पेश किए। गुनाह की क़ुर्बानी के लिए उन्हों ने 12 बक्रे पेश किए 88 और सलामती की क़ुर्बानी के लिए 24 बैल, 60 मेंढे, 60 बक्रे और भेड़ के 60 यकसाला बच्चे। इन तमाम जानवरों को क़ुर्बानगाह की मख़्सूसियत के मौक़े पर चढ़ाया गया।

89 जब मूसा मुलाक़ात के ख़ैमे में रब्ब के साथ बात करने के लिए दाख़िल होता था तो वह रब्ब की आवाज़ अहद के सन्दूक़ के ढकने पर से यानी दो करूबी फ़रिश्तों के दर्मियान से सुनता था।

शमादान पर चराग़

8 1 रब्ब ने मूसा से कहा, 2 "हारून को बताना, 'तुझे सात चराग़ों को शमादान पर यूँ रखना है कि वह शमादान का सामने वाला हिस्सा रौशन करें'।"

3 हारून ने ऐसा ही किया। जिस तरह रब्ब ने मूसा को हुक्म दिया था उसी तरह उस ने चराग़ों को रख दिया ताकि वह सामने वाला हिस्सा रौशन करें। 4 शमादान पाए से ले कर ऊपर की कलियों तक सोने

के एक घड़े हुए टुकड़े का बना हुआ था। मूसा ने उसे उस नमूने के ऐन मुताबिक़ बनवाया जो रब्ब ने उसे दिखाया था।

लावियों की मख़्सूसियत

5 रब्ब ने मूसा से कहा, 6 “लावियों को दीगर इस्राईलियों से अलग करके पाक-साफ़ करना। 7 इस के लिए गुनाह से पाक करने वाला पानी उन पर छिड़क कर उन्हें हुक्म देना कि अपने जिस्म के पूरे बाल मुंडवाओ और अपने कपड़े धोओ। यूँ वह पाक-साफ़ हो जाएँगे। 8 फिर वह एक जवान बैल चुनें और साथ की ग़ल्ला की नज़र के लिए तेल के साथ मिलाया गया बेहतरीन मैदा लें। तू ख़ुद भी एक जवान बैल चुन। वह गुनाह की क़ुर्बानी के लिए होगा।

9 इस के बाद लावियों को मुलाक़ात के ख़ैमे के सामने खड़ा करके इस्राईल की पूरी जमाअत को वहाँ जमा करना। 10 जब लावी रब्ब के सामने खड़े हों तो बाक़ी इस्राईली उन के सरों पर अपने हाथ रखें। 11 फिर हारून लावियों को रब्ब के सामने पेश करे। उन्हें इस्राईलियों की तरफ़ से हिलाई हुई क़ुर्बानी की हैसियत से पेश किया जाए ताकि वह रब्ब की ख़िदमत कर सकें। 12 फिर लावी अपने हाथ दोनों बैलों के सरों पर रखें। एक बैल को गुनाह की क़ुर्बानी के तौर पर और दूसरे को भस्म होने वाली क़ुर्बानी के तौर पर चढ़ाओ ताकि लावियों का कफ़्फ़ारा दिया जाए।

13 लावियों को इस तरीक़े से हारून और उस के बेटों के सामने खड़ा करके रब्ब को हिलाई हुई क़ुर्बानी के तौर पर पेश करना है। 14 उन्हें बाक़ी इस्राईलियों से अलग करने से वह मेरा हिस्सा बनेंगे। 15 इस के बाद ही वह मुलाक़ात के ख़ैमे में आ कर ख़िदमत करें, क्यूँकि अब वह ख़िदमत करने के लाइक़ हैं। उन्हें पाक-साफ़ करके हिलाई हुई क़ुर्बानी के तौर पर पेश करने का सबब यह है 16 कि लावी इस्राईलियों में से वह हैं जो मुझे पूरे तौर पर दिए गए हैं। मैं ने उन्हें इस्राईलियों के तमाम पहलौठों की जगह ले लिया है। 17 क्यूँकि इस्राईल में हर पहलौठा मेरा है, ख़्वाह वह इन्सान का हो या हैवान का। उस दिन जब मैं ने मिस्रियों के पहलौठों को मार दिया मैं ने इस्राईल के पहलौठों को अपने लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस किया। 18 इस सिलसिले में मैं ने लावियों को इस्राईलियों के तमाम पहलौठों की जगह ले कर 19 उन्हें हारून और उस के बेटों को दिया है। वह मुलाक़ात के ख़ैमे में इस्राईलियों की ख़िदमत करें और उन के लिए कफ़्फ़ारा का इन्तिज़ाम क़ाइम रखें ताकि जब इस्राईली मक़्दिस के क़रीब आएँ तो उन को वबा से मारा न जाए।”

20 मूसा, हारून और इस्राईलियों की पूरी जमाअत ने एहतियात से रब्ब की लावियों के बारे में हिदायात पर अमल किया। 21 लावियों ने अपने आप को गुनाहों से पाक-साफ़ करके अपने कपड़ों को धोया। फिर हारून ने उन्हें रब्ब के सामने हिलाई हुई क़ुर्बानी के तौर पर पेश किया और उन का कफ़्फ़ारा दिया ताकि वह पाक हो जाएँ। 22 इस के बाद लावी मुलाक़ात के ख़ैमे में आए ताकि हारून और उस के बेटों के तहत ख़िदमत करें। यूँ सब कुछ वैसा ही किया गया जैसा रब्ब ने मूसा को हुक्म दिया था।

23 रब्ब ने मूसा से यह भी कहा, 24 “लावी 25 साल की उम्र में मुलाक़ात के ख़ैमे में अपनी ख़िदमत शुरू करें 25 और 50 साल की उम्र में रिटायर हो जाएँ। 26 इस के बाद वह मुलाक़ात के ख़ैमे में अपने भाइयों की मदद कर सकते हैं, लेकिन ख़ुद ख़िदमत नहीं कर सकते। तुझे लावियों को इन हिदायात के मुताबिक़ उन की अपनी अपनी ज़िम्मादारियाँ देनी हैं।”

रेगिस्तान में ईद-ए-फ़सह

9 1 इस्राईलियों को मिस्र से निकले एक साल हो गया था। दूसरे साल के पहले महीने में रब्ब ने दश्त-ए-सीना में मूसा से बात की।

2 “लाज़िम है कि इस्राईली ईद-ए-फ़सह को मुक़र्ररा वक़्त पर मनाएँ, 3 यानी इस महीने के चौधवें दिन, सूरज के ग़ुरूब होने के ऐन बाद। उसे तमाम क़वाइद

के मुताबिक़ मनाना।” 4 चुनाँचे मूसा ने इस्राईलियों से
कहा कि वह ईद-ए-फ़सह मनाएँ, 5 और उन्हों ने ऐसा
ही किया। उन्हों ने ईद-ए-फ़सह को पहले महीने के
चौधवें दिन सूरज के ग़ुरूब होने के ऐन बाद मनाया।
उन्हों ने सब कुछ वैसा ही किया जैसा रब्ब ने मूसा
को हुक्म दिया था।

6 लेकिन कुछ आदमी नापाक थे, क्यूँकि उन्हों ने
लाश छू ली थी। इस वजह से वह उस दिन ईद-ए-
फ़सह न मना सके। वह मूसा और हारून के पास
आ कर 7 कहने लगे, “हम ने लाश छू ली है, इस
लिए नापाक हैं। लेकिन हमें इस सबब से ईद-ए-फ़सह
को मनाने से क्यूँ रोका जाए? हम भी मुक़र्ररा वक़्त
पर बाक़ी इस्राईलियों के साथ रब्ब की क़ुर्बानी पेश
करना चाहते हैं।” 8 मूसा ने जवाब दिया, “यहाँ मेरे
इन्तिज़ार में खड़े रहो। मैं मालूम करता हूँ कि रब्ब
तुम्हारे बारे में क्या हुक्म देता है।”

9 रब्ब ने मूसा से कहा, 10 “इस्राईलियों को बता
देना कि अगर तुम या तुम्हारी औलाद में से कोई ईद-
ए-फ़सह के दौरान लाश छूने से नापाक हो या किसी
दूरदराज़ इलाक़े में सफ़र कर रहा हो, तो भी वह
ईद मना सकता है। 11 ऐसा शख़्स उसे ऐन एक माह
के बाद मना कर लेले के साथ बेख़मीरी रोटी और
कड़वा साग-पात खाए। 12 खाने में से कुछ भी अगली
सुब्ह तक बाक़ी न रहे। जानवर की कोई भी हड्डी
न तोड़ना। मनाने वाला ईद-ए-फ़सह के पूरे फ़राइज़
अदा करे। 13 लेकिन जो पाक होने और सफ़र न करने
के बावुजूद भी ईद-ए-फ़सह को न मनाए उसे उस
की क़ौम में से मिटाया जाए, क्यूँकि उस ने मुक़र्ररा
वक़्त पर रब्ब को क़ुर्बानी पेश नहीं की। उस शख़्स
को अपने गुनाह का नतीजा भुगतना पड़ेगा। 14 अगर
कोई परदेसी तुम्हारे दर्मियान रहते हुए रब्ब के सामने
ईद-ए-फ़सह मनाना चाहे तो उसे इजाज़त है। शर्त यह
है कि वह पूरे फ़राइज़ अदा करे। परदेसी और देसी
के लिए ईद-ए-फ़सह मनाने के फ़राइज़ एक जैसे हैं।”

मुलाक़ात के ख़ैमे पर बादल का सतून

15 जिस दिन शरीअत के मुक़द्दस ख़ैमे को खड़ा
किया गया उस दिन बादल आ कर उस पर छा गया।
रात के वक़्त बादल आग की सूरत में नज़र आया।
16 इस के बाद यही सूरत-ए-हाल रही कि बादल उस
पर छाया रहता और रात के दौरान आग की सूरत
में नज़र आता। 17 जब भी बादल ख़ैमे पर से उठता
इस्राईली रवाना हो जाते। जहाँ भी बादल उतर जाता
वहाँ इस्राईली अपने डेरे डालते। 18 इस्राईली रब्ब
के हुक्म पर रवाना होते और उस के हुक्म पर डेरे
डालते। जब तक बादल मक़्दिस पर छाया रहता उस
वक़्त तक वह वहीं ठहरते। 19 कभी कभी बादल
बड़ी देर तक ख़ैमे पर ठहरा रहता। तब इस्राईली
रब्ब का हुक्म मान कर रवाना न होते। 20 कभी कभी
बादल सिर्फ़ दो चार दिन के लिए ख़ैमे पर ठहरता।
फिर वह रब्ब के हुक्म के मुताबिक़ ही ठहरते और
रवाना होते थे। 21 कभी कभी बादल सिर्फ़ शाम से
ले कर सुब्ह तक ख़ैमे पर ठहरता। जब वह सुब्ह
के वक़्त उठता तो इस्राईली भी रवाना होते थे। जब
भी बादल उठता वह भी रवाना हो जाते। 22 जब तक
बादल मुक़द्दस ख़ैमे पर छाया रहता उस वक़्त तक
इस्राईली रवाना न होते, चाहे वह दो दिन, एक माह,
एक साल या इस से ज़ियादा अर्सा मक़्दिस पर छाया
रहता। लेकिन जब वह उठता तो इस्राईली भी रवाना
हो जाते। 23 वह रब्ब के हुक्म पर ख़ैमे लगाते और
उस के हुक्म पर रवाना होते थे। वह वैसा ही करते
थे जैसा रब्ब मूसा की मारिफ़त फ़रमाता था।

10 1 रब्ब ने मूसा से कहा, 2 “चाँदी के दो
बिगल घड़ कर बनवा ले। उन्हें जमाअत
को जमा करने और क़बीलों को रवाना करने के लिए
इस्तेमाल कर। 3 जब दोनों को देर तक बजाया जाए
तो पूरी जमाअत मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर
आ कर तेरे सामने जमा हो जाए। 4 लेकिन अगर एक
ही बजाया जाए तो सिर्फ़ कुंबों के बुज़ुर्ग तेरे सामने
जमा हो जाएँ। 5 अगर उन की आवाज़ सिर्फ़ थोड़ी

देर के लिए सुनाई दे तो मक़्दिस के मशरिक़ में मौजूद क़बीले रवाना हो जाएँ। 6 फिर जब उन की आवाज़ दूसरी बार थोड़ी देर के लिए सुनाई दे तो मक़्दिस के जुनूब में मौजूद क़बीले रवाना हो जाएँ। जब उन की आवाज़ थोड़ी देर के लिए सुनाई दे तो यह रवाना होने का एलान होगा। 7 इस के मुक़ाबले में जब उन की आवाज़ देर तक सुनाई दे तो यह इस बात का एलान होगा कि जमाअत जमा हो जाए।

8 बिगल बजाने की ज़िम्मादारी हारून के बेटों यानी इमामों को दी जाए। यह तुम्हारे और आने वाली नसलों के लिए दाइमी उसूल हो। 9 उन की आवाज़ उस वक़्त भी थोड़ी देर के लिए सुना दो जब तुम अपने मुल्क में किसी ज़ालिम दुश्मन से जंग लड़ने के लिए निकलोगे। तब रब्ब तुम्हारा ख़ुदा तुम्हें याद करके दुश्मन से बचाएगा।

10 इसी तरह उन की आवाज़ मक़्दिस में ख़ुशी के मौक़ों पर सुनाई दे यानी मुक़र्ररा ईदों और नए चाँद की ईदों पर। इन मौक़ों पर वह भस्म होने वाली क़ुर्बानियाँ और सलामती की क़ुर्बानियाँ चढ़ाते वक़्त बजाए जाएँ। फिर तुम्हारा ख़ुदा तुम्हें याद करेगा। मैं रब्ब तुम्हारा ख़ुदा हूँ।”

सीना पहाड़ से रवानगी

11 इस्राईलियों को मिस्र से निकले एक साल से ज़ाइद अर्सा हो चुका था। दूसरे साल के बीसवें दिन बादल मुलाक़ात के ख़ैमे पर से उठा। 12 फिर इस्राईली मुक़र्ररा तर्तीब के मुताबिक़ दश्त-ए-सीना से रवाना हुए। चलते चलते बादल फ़ारान के रेगिस्तान में उतर आया।

13 उस वक़्त वह पहली दफ़ा उस तर्तीब से रवाना हुए जो रब्ब ने मूसा की मारिफ़त मुक़र्रर की थी। 14 पहले यहूदाह के क़बीले के तीन दस्ते अपने अलम के तहत चल पड़े। तीनों का कमाँडर नहसोन बिन अम्मीनदाब था। 15 साथ चलने वाले क़बीले इश्कार का कमाँडर नतनीएल बिन ज़ुग़र था। 16 ज़बूलून का क़बीला भी साथ चला जिस का कमाँडर इलियाब बिन हेलोन था। 17 इस के बाद मुलाक़ात का ख़ैमा उतारा गया। जैर्सोनी और मिरारी उसे उठा कर चल दिए। 18 इन लावियों के बाद रूबिन के क़बीले के तीन दस्ते अपने अलम के तहत चलने लगे। तीनों का कमाँडर इलीसूर बिन शदियूर था। 19 साथ चलने वाले क़बीले शमाऊन का कमाँडर सलूमीएल बिन सूरीशद्दी था। 20 जद का क़बीला भी साथ चला जिस का कमाँडर इलियासफ़ बिन दऊएल था। 21 फिर लावियों में से क़िहाती मक़्दिस का सामान उठा कर रवाना हुए। लाज़िम था कि उन के अगली मन्ज़िल पर पहुँचने तक मुलाक़ात का ख़ैमा लगा दिया गया हो। 22 इस के बाद इफ़्राईम के क़बीले के तीन दस्ते अपने अलम के तहत चल दिए। उन का कमाँडर इलीसमा बिन अम्मीहूद था। 23 इफ़्राईम के साथ चलने वाले क़बीले मनस्सी का कमाँडर जमलीएल बिन फ़दाहसूर था। 24 बिन्यमीन का क़बीला भी साथ चला जिस का कमाँडर अबिदान बिन जिदाऊनी था। 25 आख़िर में दान के तीन दस्ते अक़बी मुहाफ़िज़ के तौर पर अपने अलम के तहत रवाना हुए। उन का कमाँडर अख़ीअज़र बिन अम्मीशद्दी था। 26 दान के साथ चलने वाले क़बीले आशर का कमाँडर फ़जईएल बिन अक्रान था। 27 नफ़्ताली का क़बीला भी साथ चला जिस का कमाँडर अख़ीरा बिन एनान था। 28 इस्राईली इसी तर्तीब से रवाना हुए।

मूसा होबाब को साथ चलने पर मज्बूर करता है

29 मूसा ने अपने मिदियानी सुसर रऊएल यानी यित्रो के बेटे होबाब से कहा, “हम उस जगह के लिए रवाना हो रहे हैं जिस का वादा रब्ब ने हम से किया है। हमारे साथ चलें! हम आप पर एहसान करेंगे, क्यूँकि रब्ब ने इस्राईल पर एहसान करने का वादा किया है।” 30 लेकिन होबाब ने जवाब दिया, “मैं साथ नहीं जाऊँगा बल्कि अपने मुल्क और रिश्तेदारों के पास वापस चला जाऊँगा।” 31 मूसा ने कहा, “मेहरबानी करके हमें न छोड़ें। क्यूँकि आप ही जानते हैं कि हम रेगिस्तान में कहाँ कहाँ अपने डेरे डाल

सकते हैं। आप रेगिस्तान में हमें रास्ता दिखा सकते हैं। [32] अगर आप हमारे साथ जाएँ तो हम आप को उस एहसान में शरीक करेंगे जो रब्ब हम पर करेगा।”

अहद के सन्दूक़ का सफ़र

[33] चुनाँचे उन्हों ने रब्ब के पहाड़ से रवाना हो कर तीन दिन सफ़र किया। इस दौरान रब्ब का अहद का सन्दूक़ उन के आगे आगे चला ताकि उन के लिए आराम करने की जगह मालूम करे। [34] जब कभी वह रवाना होते तो रब्ब का बादल दिन के वक़्त उन के ऊपर रहता। [35] सन्दूक़ के रवाना होते वक़्त मूसा कहता, “ऐ रब्ब, उठ। तेरे दुश्मन तित्तर-बित्तर हो जाएँ। तुझ से नफ़रत करने वाले तेरे सामने से फ़रार हो जाएँ।” [36] और जब भी वह रुक जाता तो मूसा कहता, “ऐ रब्ब, इस्राईल के हज़ारों ख़ान्दानों के पास वापस आ।”

तबएरा में रब्ब की आग

11 [1] एक दिन लोग ख़ूब शिकायत करने लगे। जब यह शिकायतें रब्ब तक पहुँचीं तो उसे ग़ुस्सा आया और उस की आग उन के दर्मियान भड़क उठी। जलते जलते उस ने ख़ैमागाह का एक किनारा भस्म कर दिया। [2] लोग मदद के लिए मूसा के पास आ कर चिल्लाने लगे तो उस ने रब्ब से दुआ की, और आग बुझ गई। [3] उस मक़ाम का नाम तबएरा यानी जलना पड़ गया, क्यूँकि रब्ब की आग उन के दर्मियान जल उठी थी।

मूसा 70 राहनुमा चुनता है

[4] इस्राईलियों के साथ जो अजनबी सफ़र कर रहे थे वह गोश्त खाने की शदीद आर्ज़ू करने लगे। तब इस्राईली भी रो पड़े और कहने लगे, “कौन हमें गोश्त खिलाएगा? [5] मिस्र में हम मछली मुफ़्त खा सकते थे। हाय, वहाँ के खीरे, तरबूज़, गन्दने, प्याज़ और लहसन कितने अच्छे थे! [6] लेकिन अब तो हमारी जान सूख गई है। यहाँ बस मन्न ही मन्न नज़र आता रहता है।”

[7] मन्न धनिए के दानों की मानिन्द था, और उस का रंग गूगल के गूँद की मानिन्द था। [8–9] रात के वक़्त वह ख़ैमागाह में ओस के साथ ज़मीन पर गिरता था। सुब्ह के वक़्त लोग इधर उधर घूमते फिरते हुए उसे जमा करते थे। फिर वह उसे चक्की में पीस कर या उखली में कूट कर उबालते या रोटी बनाते थे। उस का ज़ाइक़ा ऐसी रोटी का सा था जिस में ज़ैतून का तेल डाला गया हो।

[10] तमाम ख़ान्दान अपने अपने ख़ैमे के दरवाज़े पर रोने लगे तो रब्ब को शदीद ग़ुस्सा आया। उन का शोर मूसा को भी बहुत बुरा लगा। [11] उस ने रब्ब से पूछा, “तू ने अपने ख़ादिम के साथ इतना बुरा सुलूक क्यूँ किया? मैं ने किस काम से तुझे इतना नाराज़ किया कि तू ने इन तमाम लोगों का बोझ मुझ पर डाल दिया? [12] क्या मैं ने हामिला हो कर इस पूरी क़ौम को जन्म दिया कि तू मुझ से कहता है, ‘इसे उस तरह उठा कर ले चलना जिस तरह आया शीरख़्वार बच्चे को उठा कर हर जगह साथ लिए फिरती है। इसी तरह इसे उस मुल्क में ले जाना जिस का वादा मैं ने क़सम खा कर इन के बापदादा से किया है।’ [13] ऐ अल्लाह, मैं इन तमाम लोगों को कहाँ से गोश्त मुहय्या करूँ? वह मेरे सामने रोते रहते हैं कि हमें खाने के लिए गोश्त दो। [14] मैं अकेला इन तमाम लोगों की ज़िम्मादारी नहीं उठा सकता। यह बोझ मेरे लिए हद्द से ज़ियादा भारी है। [15] अगर तू इस पर इस्रार करे तो फिर बेहतर है कि अभी मुझे मार दे ताकि मैं अपनी तबाही न देखूँ।”

[16] जवाब में रब्ब ने मूसा से कहा, “मेरे पास इस्राईल के 70 बुज़ुर्ग जमा कर। सिर्फ़ ऐसे लोग चुन जिन के बारे में तुझे मालूम है कि वह लोगों के बुज़ुर्ग और निगहबान हैं। उन्हें मुलाक़ात के ख़ैमे के पास ले आ। वहाँ वह तेरे साथ खड़े हो जाएँ, [17] तो मैं उतर कर तेरे साथ हमकलाम हूँगा। उस वक़्त मैं उस रूह में से कुछ लूँगा जो मैं ने तुझ पर नाज़िल किया था और

उसे उन पर नाज़िल करूँगा। तब वह क़ौम का बोझ
उठाने में तेरी मदद करेंगे और तू इस में अकेला नहीं
रहेगा। 18 लोगों को बताना, ‘अपने आप को मख़्सूस-
ओ-मुक़द्दस करो, क्यूँकि कल तुम गोश्त खाओगे।
रब्ब ने तुम्हारी सुनी जब तुम रो पड़े कि कौन हमें
गोश्त खिलाएगा, मिस्र में हमारी हालत बेहतर थी।
अब रब्ब तुम्हें गोश्त मुहय्या करेगा और तुम उसे
खाओगे। 19 तुम उसे न सिर्फ़ एक, दो या पाँच दिन
खाओगे बल्कि 10 या 20 दिन से भी ज़ियादा अर्से
तक। 20 तुम एक पूरा महीना ख़ूब गोश्त खाओगे,
यहाँ तक कि वह तुम्हारी नाक से निकलेगा और तुम्हें
उस से घिन आएगी। और यह इस सबब से होगा कि
तुम ने रब्ब को जो तुम्हारे दर्मियान है रद्द किया और
रोते रोते उस के सामने कहा कि हम क्यूँ मिस्र से
निकले’।”

21 लेकिन मूसा ने एतिराज़ किया, “अगर क़ौम के
पैदल चलने वाले गिने जाएँ तो छः लाख हैं। तू किस
तरह हमें एक माह तक गोश्त मुहय्या करेगा? 22 क्या
गाय-बैलों या भेड़-बक्रियों को इतनी मिक़्दार में ज़बह
किया जा सकता है कि काफ़ी हो? अगर समुन्दर की
तमाम मछलियाँ उन के लिए पकड़ी जाएँ तो क्या
काफ़ी होंगी?”

23 रब्ब ने कहा, “क्या रब्ब का इख़तियार कम है?
अब तू ख़ुद देख लेगा कि मेरी बातें दुरुस्त हैं कि
नहीं।”

24 चुनाँचे मूसा ने वहाँ से निकल कर लोगों को
रब्ब की यह बातें बताईं। उस ने उन के बुज़ुर्गों में से
70 को चुन कर उन्हें मुलाक़ात के ख़ैमे के इर्दगिर्द
खड़ा कर दिया। 25 तब रब्ब बादल में उतर कर मूसा
से हमकलाम हुआ। जो रूह उस ने मूसा पर नाज़िल
किया था उस में से उस ने कुछ ले कर उन 70 बुज़ुर्गों
पर नाज़िल किया। जब रूह उन पर आया तो वह
नुबुव्वत करने लगे। लेकिन ऐसा फिर कभी न हुआ।
26 अब ऐसा हुआ कि इन सत्तर बुज़ुर्गों में से दो
ख़ैमागाह में रह गए थे। उन के नाम इल्दाद और मेदाद
थे। उन्हें चुना तो गया था लेकिन वह मुलाक़ात के
ख़ैमे के पास नहीं आए थे। इस के बावुजूद रूह उन
पर भी नाज़िल हुआ और वह ख़ैमागाह में नुबुव्वत
करने लगे। 27 एक नौजवान भाग कर मूसा के पास
आया और कहा, “इल्दाद और मेदाद ख़ैमागाह में ही
नुबुव्वत कर रहे हैं।”

28 यशूअ बिन नून जो जवानी से मूसा का मददगार
था बोल उठा, “मूसा मेरे आक़ा, उन्हें रोक दें!”
29 लेकिन मूसा ने जवाब दिया, “क्या तू मेरी ख़ातिर
ग़ैरत खा रहा है? काश रब्ब के तमाम लोग नबी होते
और वह उन सब पर अपना रूह नाज़िल करता!”
30 फिर मूसा और इस्राईल के बुज़ुर्ग ख़ैमागाह में
वापस आए।

31 तब रब्ब की तरफ़ से ज़ोरदार हवा चलने लगी
जिस ने समुन्दर को पार करने वाले बटेरों के ग़ोल
धकेल कर ख़ैमागाह के इर्दगिर्द ज़मीन पर फैंक दिए।
उन के ग़ोल तीन फ़ुट ऊँचे और ख़ैमागाह के चारों
तरफ़ 30 किलोमीटर तक पड़े रहे। 32 उस पूरे दिन
और रात और अगले पूरे दिन लोग निकल कर बटेरें
जमा करते रहे। हर एक ने कम अज़ कम दस बड़ी
टोकरियाँ भर लीं। फिर उन्हों ने उन का गोश्त ख़ैमे
के इर्दगिर्द ज़मीन पर फैला दिया ताकि वह ख़ुश्क हो
जाए।

33 लेकिन गोश्त के पहले टुकड़े अभी मुँह में थे कि
रब्ब का ग़ज़ब उन पर आन पड़ा, और उस ने उन
में सख़्त वबा फैलने दी। 34 चुनाँचे मक़ाम का नाम
क़ब्रोत-हत्तावा यानी ‘लालच की क़ब्रें’ रखा गया,
क्यूँकि वहाँ उन्हों ने उन लोगों को दफ़न किया जो
गोश्त के लालच में आ गए थे।

35 इस के बाद इस्राईली क़ब्रोत-हत्तावा से रवाना
हो कर हसीरात पहुँच गए। वहाँ वह ख़ैमाज़न हुए।

मरियम और हारून की मुख़ालफ़त

12 1 एक दिन मरियम और हारून मूसा के
ख़िलाफ़ बातें करने लगे। वजह यह थी कि
उस ने कूश की एक औरत से शादी की थी। 2 उन्हों ने
पूछा, “क्या रब्ब सिर्फ़ मूसा की मारिफ़त बात करता

है? क्या उस ने हम से भी बात नहीं की?” रब्ब ने
उन की यह बातें सुनीं।
3 लेकिन मूसा निहायत हलीम था। दुनिया में उस
जैसा हलीम कोई नहीं था। 4 अचानक रब्ब मूसा,
हारून और मरियम से मुख़ातिब हुआ, “तुम तीनों
बाहर निकल कर मुलाक़ात के ख़ैमे के पास आओ।”
तीनों वहाँ पहुँचे। 5 तब रब्ब बादल के सतून में उतर
कर मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर खड़ा हुआ। उस
ने हारून और मरियम को बुलाया तो दोनों आए।
6 उस ने कहा, “मेरी बात सुनो। जब तुम्हारे दर्मियान
नबी होता है तो मैं अपने आप को रोया में उस पर
ज़ाहिर करता हूँ या ख़्वाब में उस से मुख़ातिब होता
हूँ। 7 लेकिन मेरे ख़ादिम मूसा की और बात है। उसे
मैं ने अपने पूरे घराने पर मुक़र्रर किया है। 8 उस से
मैं रू-ब-रू हमकलाम होता हूँ। उस से मैं मुअम्मों
के ज़रीए नहीं बल्कि साफ़ साफ़ बात करता हूँ। वह
रब्ब की सूरत देखता है। तो फिर तुम मेरे ख़ादिम के
ख़िलाफ़ बातें करने से क्यूँ न डरे?”
9 रब्ब का ग़ज़ब उन पर आन पड़ा, और वह चला
गया। 10 जब बादल का सतून ख़ैमे से दूर हुआ तो
मरियम की जिल्द बर्फ़ की मानिन्द सफ़ेद थी। वह
कोढ़ का शिकार हो गई थी। हारून उस की तरफ़
मुड़ा तो उस की हालत देखी 11 और मूसा से कहा,
“मेरे आक़ा, मेहरबानी करके हमें इस गुनाह की सज़ा
न दें जो हमारी हमाक़त के बाइस सरज़द हुआ है।
12 मरियम को इस हालत में न छोड़ें। वह तो ऐसे बच्चे
की मानिन्द है जो मुर्दा पैदा हुआ हो, जिस के जिस्म
का आधा हिस्सा गल चुका हो।”
13 तब मूसा ने पुकार कर रब्ब से कहा, “ऐ अल्लाह,
मेहरबानी करके उसे शिफ़ा दे।” 14 रब्ब ने जवाब में
मूसा से कहा, “अगर मरियम का बाप उस के मुँह
पर थूकता तो क्या वह पूरे हफ़्ते तक शर्म महसूस न
करती? उसे एक हफ़्ते के लिए ख़ैमागाह के बाहर
बन्द रख। इस के बाद उसे वापस लाया जा सकता
है।”
15 चुनाँचे मरियम को एक हफ़्ते के लिए ख़ैमागाह
के बाहर बन्द रखा गया। लोग उस वक़्त तक सफ़र
के लिए रवाना न हुए जब तक उसे वापस न लाया
गया। 16 जब वह वापस आई तो इस्राईली हसीरात से
रवाना हो कर फ़ारान के रेगिस्तान में ख़ैमाज़न हुए।

मुल्क-ए-कनआन में इस्राईली जासूस

13 1 फिर रब्ब ने मूसा से कहा, 2 “कुछ आदमी
मुल्क-ए-कनआन का जाइज़ा लेने के लिए
भेज दे, क्यूँकि मैं उसे इस्राईलियों को देने को हूँ। हर
क़बीले में से एक राहनुमा को चुन कर भेज दे।”
3 मूसा ने रब्ब के कहने पर उन्हें दश्त-ए-फ़ारान से
भेजा। सब इस्राईली राहनुमा थे। 4 उन के नाम यह हैं
: रूबिन के क़बीले से सम्मूअ बिन ज़क्कूर,
5 शमाऊन के क़बीले से साफ़त बिन होरी,
6 यहूदाह के क़बीले से कालिब बिन यफ़ुन्ना,
7 इश्कार के क़बीले से इजाल बिन यूसुफ़,
8 इफ़्राईम के क़बीले से होसेअ बिन नून,
9 बिन्यमीन के क़बीले से फ़ल्ती बिन रफ़ू,
10 ज़बूलून के क़बीले से जद्दीएल बिन सोदी,
11 यूसुफ़ के बेटे मनस्सी के क़बीले से जिद्दी बिन
सूसी,
12 दान के क़बीले से अम्मीएल बिन जमल्ली,
13 आशर के क़बीले से सतूर बिन मीकाएल,
14 नफ़्ताली के क़बीले से नख़्बी बिन वुफ़्सी,
15 जद के क़बीले से जियूएल बिन माकी।
16 मूसा ने इन ही बारह आदमियों को मुल्क का
जाइज़ा लेने के लिए भेजा। उस ने होसेअ का नाम
यशूअ यानी ‘रब्ब नजात है’ में बदल दिया।
17 उन्हें रुख़्सत करने से पहले उस ने कहा, “दश्त-
ए-नजब से गुज़र कर पहाड़ी इलाक़े तक पहुँचो।
18 मालूम करो कि यह किस तरह का मुल्क है और
उस के बाशिन्दे कैसे हैं। क्या वह ताक़तवर हैं या
कमज़ोर, तादाद में कम हैं या ज़ियादा? 19 जिस
मुल्क में वह बसते हैं क्या वह अच्छा है कि नहीं?
वह किस क़िस्म के शहरों में रहते हैं? क्या उन

की चारदीवारियाँ हैं कि नहीं? 20मुल्क की ज़मीन ज़रख़ेज़ है या बंजर? उस में दरख़्त हैं कि नहीं? और जुरअत करके मुल्क का कुछ फल चुन कर ले आओ।” उस वक़्त पहले अंगूर पक गए थे।

21चुनाँचे इन आदमियों ने सफ़र करके दश्त-ए-सीन से रहोब तक मुल्क का जाइज़ा लिया। रहोब लबो-हमात के क़रीब है। 22वह दश्त-ए-नजब से गुज़र कर हब्रून पहुँचे जहाँ अनाक़ के बेटे अख़ीमान, सीसी और तल्मी रहते थे। (हब्रून को मिस्र के शहर ज़ुअन से सात साल पहले तामीर किया गया था)। 23जब वह वादी-ए-इस्काल तक पहुँचे तो उन्हों ने एक डाली काट ली जिस पर अंगूर का गुच्छा लगा हुआ था। दो आदमियों ने यह अंगूर, कुछ अनार और कुछ अन्जीर लाठी पर लटकाए और उसे उठा कर चल पड़े। 24उस जगह का नाम उस गुच्छे के सबब से जो इस्राईलियों ने वहाँ से काट लिया इस्काल यानी गुच्छा रखा गया।

25चालीस दिन तक मुल्क का खोज लगाते लगाते वह लौट आए। 26वह मूसा, हारून और इस्राईल की पूरी जमाअत के पास आए जो दश्त-ए-फ़ारान में क़ादिस की जगह पर इन्तिज़ार कर रहे थे। वहाँ उन्हों ने सब कुछ बताया जो उन्हों ने मालूम किया था और उन्हें वह फल दिखाए जो ले कर आए थे। 27उन्हों ने मूसा को रिपोर्ट दी, “हम उस मुल्क में गए जहाँ आप ने हमें भेजा था। वाक़ई उस मुल्क में दूध और शहद की कस्रत है। यहाँ हमारे पास उस के कुछ फल भी हैं। 28लेकिन उस के बाशिन्दे ताक़तवर हैं। उन के शहरों की फ़सीलें हैं, और वह निहायत बड़े हैं। हम ने वहाँ अनाक़ की औलाद भी देखी। 29अमालीक़ी दश्त-ए-नजब में रहते हैं जबकि हित्ती, यबूसी और अमोरी पहाड़ी इलाक़े में आबाद हैं। कनआनी साहिली इलाक़े और दरया-ए-यर्दन के किनारे किनारे बसते हैं।”

30कालिब ने मूसा के सामने जमाशुदा लोगों को इशारा किया कि वह ख़ामोश हो जाएँ। फिर उस ने कहा, “आएँ, हम मुल्क में दाख़िल हो जाएँ और उस पर क़ब्ज़ा कर लें, क्यूँकि हम यक़ीनन यह करने के क़ाबिल हैं।” 31लेकिन दूसरे आदमियों ने जो उस के साथ मुल्क को देखने गए थे कहा, “हम उन लोगों पर हम्ला नहीं कर सकते, क्यूँकि वह हम से ताक़तवर हैं।” 32उन्हों ने इस्राईलियों के दर्मियान उस मुल्क के बारे में ग़लत अफ़्वाहें फैलाईं जिस की तफ़्तीश उन्हों ने की थी। उन्हों ने कहा, “जिस मुल्क में से हम गुज़रे ताकि उस का जाइज़ा लें वह अपने बाशिन्दों को हड़प कर लेता है। जो भी उस में रहता है निहायत दराज़क़द है। 33हम ने वहाँ देओ भी देखे। (अनाक़ के बेटे देओं की औलाद थे)। उन के सामने हम अपने आप को टिड्डी जैसा महसूस कर रहे थे, और हम उन की नज़र में ऐसे थे भी।”

लोग कनआन में दाख़िल नहीं होना चाहते

14

1उस रात तमाम लोग चीख़ें मार मार कर रोते रहे। 2सब मूसा और हारून के ख़िलाफ़ बुड़बुड़ाने लगे। पूरी जमाअत ने उन से कहा, “काश हम मिस्र या इस रेगिस्तान में मर गए होते! 3रब्ब हमें क्यूँ उस मुल्क में ले जा रहा है? क्या इस लिए कि दुश्मन हमें तल्वार से क़त्ल करे और हमारे बाल-बच्चों को लूट ले? क्या बेहतर नहीं होगा कि हम मिस्र वापस जाएँ?” 4उन्हों ने एक दूसरे से कहा, “आओ, हम राहनुमा चुन कर मिस्र वापस चले जाएँ।”

5तब मूसा और हारून पूरी जमाअत के सामने मुँह के बल गिरे। 6लेकिन यशूअ बिन नून और कालिब बिन यफ़ुन्ना बाक़ी दस जासूसों से फ़र्क़ थे। परेशानी के आलम में उन्हों ने अपने कपड़े फाड़ कर 7पूरी जमाअत से कहा, “जिस मुल्क में से हम गुज़रे और जिस की तफ़्तीश हम ने की वह निहायत ही अच्छा है। 8अगर रब्ब हम से ख़ुश है तो वह ज़रूर हमें उस मुल्क में ले जाएगा जिस में दूध और शहद की कस्रत है। वह हमें ज़रूर यह मुल्क देगा। 9रब्ब से बग़ावत मत करना। उस मुल्क के रहने वालों से न डरें। हम उन्हें हड़प कर जाएँगे। उन की पनाह उन से जाती

रही है जबकि रब्ब हमारे साथ है। चुनाँचे उन से मत डरें।”

10 यह सुन कर पूरी जमाअत उन्हें संगसार करने के लिए तय्यार हुई। लेकिन अचानक रब्ब का जलाल मुलाक़ात के ख़ैमे पर ज़ाहिर हुआ, और तमाम इस्राईलियों ने उसे देखा। 11 रब्ब ने मूसा से कहा, “यह लोग मुझे कब तक हक़ीर जानेंगे? वह कब तक मुझ पर ईमान रखने से इन्कार करेंगे अगरचि मैं ने उन के दर्मियान इतने मोजिज़े किए हैं? 12 मैं उन्हें वबा से मार डालूँगा और उन्हें रू-ए-ज़मीन पर से मिटा दूँगा। उन की जगह मैं तुझ से एक क़ौम बनाऊँगा जो उन से बड़ी और ताक़तवर होगी।”

13 लेकिन मूसा ने रब्ब से कहा, “फिर मिस्री यह सुन लेंगे! क्यूँकि तू ने अपनी क़ुद्रत से इन लोगों को मिस्र से निकाल कर यहाँ तक पहुँचाया है। 14 मिस्री यह बात कनआन के बाशिन्दों को बताएँगे। यह लोग पहले से सुन चुके हैं कि रब्ब इस क़ौम के साथ है, कि तुझे रू-ब-रू देखा जाता है, कि तेरा बादल उन के ऊपर ठहरा रहता है, और कि तू दिन के वक़्त बादल के सतून में और रात को आग के सतून में इन के आगे आगे चलता है। 15 अगर तू एक दम इस पूरी क़ौम को तबाह कर डाले तो बाक़ी क़ौमें यह सुन कर कहेंगी, 16 ‘रब्ब इन लोगों को उस मुल्क में ले जाने के क़ाबिल नहीं था जिस का वादा उस ने उन से क़सम खा कर किया था। इसी लिए उस ने उन्हें रेगिस्तान में हलाक कर दिया।’ 17 ऐ रब्ब, अब अपनी क़ुद्रत यूँ ज़ाहिर कर जिस तरह तू ने फ़रमाया है। क्यूँकि तू ने कहा, 18 ‘रब्ब तहम्मुल और शफ़्क़त से भरपूर है। वह गुनाह और नाफ़रमानी मुआफ़ करता है, लेकिन हर एक को उस की मुनासिब सज़ा भी देता है। जब वालिदैन गुनाह करें तो उन की औलाद को भी तीसरी और चौथी पुश्त तक सज़ा के नताइज भुगतने पड़ेंगे।’ 19 इन लोगों का क़ुसूर अपनी अज़ीम शफ़्क़त के मुताबिक़ मुआफ़ कर। उन्हें उस तरह मुआफ़ कर जिस तरह तू उन्हें मिस्र से निकलते वक़्त अब तक मुआफ़ करता रहा है।”

20 रब्ब ने जवाब दिया, “तेरे कहने पर मैं ने उन्हें मुआफ़ कर दिया है। 21 इस के बावुजूद मेरी हयात की क़सम और मेरे जलाल की क़सम जो पूरी दुनिया को मामूर करता है, 22 इन लोगों में से कोई भी उस मुल्क में दाख़िल नहीं होगा। उन्हों ने मेरा जलाल और मेरे मोजिज़े देखे हैं जो मैं ने मिस्र और रेगिस्तान में कर दिखाए हैं। तो भी उन्हों ने दस दफ़ा मुझे आज़्माया और मेरी न सुनी। 23 उन में से एक भी उस मुल्क को नहीं देखेगा जिस का वादा मैं ने क़सम खा कर उन के बापदादा से किया था। जिस ने भी मुझे हक़ीर जाना है वह कभी उसे नहीं देखेगा। 24 सिर्फ़ मेरा ख़ादिम कालिब मुख़्तलिफ़ है। उस की रूह फ़र्क़ है। वह पूरे दिल से मेरी पैरवी करता है, इस लिए मैं उसे उस मुल्क में ले जाऊँगा जिस में उस ने सफ़र किया है। उस की औलाद मुल्क मीरास में पाएगी। 25 लेकिन फ़िलहाल अमालीक़ी और कनआनी उस की वादियों में आबाद रहेंगे। चुनाँचे कल मुड़ कर वापस चलो। रेगिस्तान में बहर-ए-क़ुल्ज़ुम की तरफ़ रवाना हो जाओ।”

26 रब्ब ने मूसा और हारून से कहा, 27 “यह शरीर जमाअत कब तक मेरे ख़िलाफ़ बुड़बुड़ाती रहेगी? उन के गिले-शिकवे मुझ तक पहुँच गए हैं। 28 इस लिए उन्हें बताओ, ‘रब्ब फ़रमाता है कि मेरी हयात की क़सम, मैं तुम्हारे साथ वही कुछ करूँगा जो तुम ने मेरे सामने कहा है। 29 तुम इस रेगिस्तान में मर कर यहीं पड़े रहोगे, हर एक जो 20 साल या इस से ज़ाइद का है, जो मर्दुमशुमारी में गिना गया और जो मेरे ख़िलाफ़ बुड़बुड़ाया। 30 गो मैं ने हाथ उठा कर क़सम खाई थी कि मैं तुझे उस में बसाऊँगा तुम में से कोई भी उस मुल्क में दाख़िल नहीं होगा। सिर्फ़ कालिब बिन यफ़ुन्ना और यशूअ बिन नून दाख़िल होंगे। 31 तुम ने कहा था कि दुश्मन हमारे बच्चों को लूट लेंगे। लेकिन उन ही को मैं उस मुल्क में ले जाऊँगा जिसे तुम ने रद्द किया है। 32 लेकिन तुम ख़ुद दाख़िल नहीं होगे। तुम्हारी लाशें इस रेगिस्तान में पड़ी रहेंगी। 33 तुम्हारे बच्चे 40 साल तक यहाँ रेगिस्तान में गल्लाबान होंगे।

उन्हें तुम्हारी बेवफ़ाई के सबब से उस वक़्त तक तक्लीफ़ उठानी पड़ेगी जब तक तुम में से आख़िरी शख़्स मर न गया हो। 34 तुम ने चालीस दिन के दौरान उस मुल्क का जाइज़ा लिया। अब तुम्हें चालीस साल तक अपने गुनाहों का नतीजा भुगतना पड़ेगा। तब तुम्हें पता चलेगा कि इस का क्या मतलब है कि मैं तुम्हारी मुख़ालफ़त करता हूँ। 35 मैं, रब्ब ने यह बात फ़रमाई है। मैं यक़ीनन यह सब कुछ उस सारी शरीर जमाअत के साथ करूँगा जिस ने मिल कर मेरी मुख़ालफ़त की है। इसी रेगिस्तान में वह ख़त्म हो जाएँगे, यहीं मर जाएँगे'।"

36–37 जिन आदमियों को मूसा ने मुल्क का जाइज़ा लेने के लिए भेजा था, रब्ब ने उन्हें फ़ौरन मुहलक वबा से मार डाला, क्यूँकि उन के ग़लत अफ़्वाहें फैलाने से पूरी जमाअत बुड़बुड़ाने लगी थी। 38 सिर्फ़ यशूअ बिन नून और कालिब बिन यफ़ुन्ना ज़िन्दा रहे।

39 जब मूसा ने रब्ब की यह बातें इस्राईलियों को बताईं तो वह ख़ूब मातम करने लगे। 40 अगली सुब्ह-सवेरे वह उठे और यह कहते हुए ऊँचे पहाड़ी इलाक़े के लिए रवाना हुए कि हम से ग़लती हुई है, लेकिन अब हम हाज़िर हैं और उस जगह की तरफ़ जा रहे हैं जिस का ज़िक्र रब्ब ने किया है।

41 लेकिन मूसा ने कहा, "तुम क्यूँ रब्ब की ख़िलाफ़वरज़ी कर रहे हो? तुम काम्याब नहीं होगे। 42 वहाँ न जाओ, क्यूँकि रब्ब तुम्हारे साथ नहीं है। तुम दुश्मनों के हाथों शिकस्त खाओगे, 43 क्यूँकि वहाँ अमालीक़ी और कनआनी तुम्हारा सामना करेंगे। चूँकि तुम ने अपना मुँह रब्ब से फेर लिया है इस लिए वह तुम्हारे साथ नहीं होगा, और दुश्मन तुम्हें तल्वार से मार डालेगा।"

44 तो भी वह अपने ग़रूर में जुरअत करके ऊँचे पहाड़ी इलाक़े की तरफ़ बढ़े, हालाँकि न मूसा और न अह्द के सन्दूक़ ही ने ख़ैमागाह को छोड़ा। 45 फिर उस पहाड़ी इलाक़े में रहने वाले अमालीक़ी और कनआनी उन पर आन पड़े और उन्हें मारते मारते हुर्मा तक तित्तर-बित्तर कर दिया।

कनआन में क़ुर्बानियाँ पेश करने का तरीक़ा

15 1 रब्ब ने मूसा से कहा, 2 "इस्राईलियों को बताना कि जब तुम उस मुल्क में दाख़िल होगे जो मैं तुमहें दूँगा 3–4 तो जलने वाली क़ुर्बानियाँ यूँ पेश करना :

अगर तुम अपने गाय-बैलों या भेड़-बक्रियों में से ऐसी क़ुर्बानी पेश करना चाहो जिस की ख़ुश्बू रब्ब को पसन्द हो तो साथ साथ डेढ़ किलोग्राम बेहतरीन मैदा भी पेश करो जो एक लिटर ज़ैतून के तेल के साथ मिलाया गया हो। इस में कोई फ़र्क़ नहीं कि यह भस्म होने वाली क़ुर्बानी, मन्नत की क़ुर्बानी, दिली ख़ुशी की क़ुर्बानी या किसी ईद की क़ुर्बानी हो।

5 हर भेड़ को पेश करते वक़्त एक लिटर मै भी मै की नज़र के तौर पर पेश करना। 6 जब मेंढा क़ुर्बान किया जाए 3 किलोग्राम बेहतरीन मैदा भी साथ पेश करना जो सवा लिटर तेल के साथ मिलाया गया हो। 7 सवा लिटर मै भी मै की नज़र के तौर पर पेश की जाए। ऐसी क़ुर्बानी की ख़ुश्बू रब्ब को पसन्द आएगी।

8 अगर तू रब्ब को भस्म होने वाली क़ुर्बानी, मन्नत की क़ुर्बानी या सलामती की क़ुर्बानी के तौर पर जवान बैल पेश करना चाहे 9 तो उस के साथ साढे 4 किलोग्राम बेहतरीन मैदा भी पेश करना जो दो लिटर तेल के साथ मिलाया गया हो। 10 दो लिटर मै भी मै की नज़र के तौर पर पेश की जाए। ऐसी क़ुर्बानी की ख़ुश्बू रब्ब को पसन्द है। 11 लाज़िम है कि जब भी किसी गाय, बैल, भेड़, मेंढे, बक्री या बक्रे को चढ़ाया जाए तो ऐसा ही किया जाए।

12 अगर एक से ज़ाइद जानवरों को क़ुर्बान करना है तो हर एक के लिए मुक़र्ररा ग़ल्ला और मै की नज़रें भी साथ ही पेश की जाएँ।

13 लाज़िम है कि हर देसी इस्राईली जलने वाली क़ुर्बानियाँ पेश करते वक़्त ऐसा ही करे। फिर उन की ख़ुश्बू रब्ब को पसन्द आएगी। 14 यह भी लाज़िम है कि इस्राईल में आरिज़ी या मुस्तक़िल तौर पर रहने वाले परदेसी इन उसूलों के मुताबिक़ अपनी

क़ुर्बानियाँ चढ़ाएँ। फिर उन की ख़ुश्बू रब्ब को पसन्द
आएगी। 15 मुल्क-ए-कनआन में रहने वाले तमाम
लोगों के लिए पाबन्दियाँ एक जैसी हैं, ख़्वाह वह
देसी हों या परदेसी, क्यूँकि रब्ब की नज़र में परदेसी
तुम्हारे बराबर है। यह तुम्हारे और तुम्हारी औलाद
के लिए दाइमी उसूल है। 16 तुम्हारे और तुम्हारे साथ
रहने वाले परदेसी के लिए एक ही शरीअत है।"

फ़सल के लिए शुक्रगुज़ारी की क़ुर्बानी

17 रब्ब ने मूसा से कहा, 18 "इस्राईलियों को बताना
कि जब तुम उस मुल्क में दाख़िल होगे जिस में मैं
तुमहें ले जा रहा हूँ 19 और वहाँ की पैदावार खाओगे
तो पहले उस का एक हिस्सा उठाने वाली क़ुर्बानी
के तौर पर रब्ब को पेश करना। 20 फ़सल के पहले
ख़ालिस आटे में से मेरे लिए एक रोटी बना कर उठाने
वाली क़ुर्बानी के तौर पर पेश करो। वह गाहने की
जगह की तरफ़ से रब्ब के लिए उठाने वाली क़ुर्बानी
होगी। 21 अपनी फ़सल के पहले ख़ालिस आटे में से
यह क़ुर्बानी पेश किया करो। यह उसूल हमेशा तक
लागू रहे।

नादानिस्ता गुनाहों के लिए क़ुर्बानियाँ

22 हो सकता है कि ग़ैरइरादी तौर पर तुम से ग़लती
हुई है और तुम ने उन अह्काम पर पूरे तौर पर अमल
नहीं किया जो रब्ब मूसा को दे चुका है 23 या जो
वह आने वाली नसलों को देगा। 24 अगर जमाअत
इस बात से नावाक़िफ़ थी और ग़ैरइरादी तौर पर
उस से ग़लती हुई तो फिर पूरी जमाअत एक जवान
बैल भस्म होने वाली क़ुर्बानी के तौर पर पेश करे।
साथ ही वह मुक़र्ररा ग़ल्ला और मै की नज़रें भी पेश
करे। इस की ख़ुश्बू रब्ब को पसन्द होगी। इस के
इलावा जमाअत गुनाह की क़ुर्बानी के लिए एक बक्रा
पेश करे। 25 इमाम इस्राईल की पूरी जमाअत का
कफ़्फ़ारा दे तो उन्हें मुआफ़ी मिलेगी, क्यूँकि उन का
गुनाह ग़ैरइरादी था और उन्हों ने रब्ब को भस्म होने
वाली क़ुर्बानी और गुनाह की क़ुर्बानी पेश की है।
26 इस्राईलियों की पूरी जमाअत को परदेसियों समेत
मुआफ़ी मिलेगी, क्यूँकि गुनाह ग़ैरइरादी था।

27 अगर सिर्फ़ एक शख़्स से ग़ैरइरादी तौर पर गुनाह
हुआ हो तो गुनाह की क़ुर्बानी के लिए वह एक
यकसाला बक्री पेश करे। 28 इमाम रब्ब के सामने
उस शख़्स का कफ़्फ़ारा दे। जब कफ़्फ़ारा दे दिया
गया तो उसे मुआफ़ी हासिल होगी। 29 यही उसूल
परदेसी पर भी लागू है। अगर उस से ग़ैरइरादी तौर
पर गुनाह हुआ हो तो वह मुआफ़ी हासिल करने के
लिए वही कुछ करे जो इस्राईली को करना होता है।

दानिस्ता गुनाहों के लिए सज़ा-ए-मौत

30 लेकिन अगर कोई देसी या परदेसी जान-बूझ कर
गुनाह करता है तो ऐसा शख़्स रब्ब की इहानत करता
है, इस लिए लाज़िम है कि उसे उस की क़ौम में से
मिटाया जाए। 31 उस ने रब्ब का कलाम हक़ीर जान
कर उस के अह्काम तोड़ डाले हैं, इस लिए उसे
ज़रूर क़ौम में से मिटाया जाए। वह अपने गुनाह का
ज़िम्मादार है।"

32 जब इस्राईली रेगिस्तान में से गुज़र रहे थे तो एक
आदमी को पकड़ा गया जो हफ़्ते के दिन लकड़ियाँ
जमा कर रहा था। 33 जिन्हों ने उसे पकड़ा था वह
उसे मूसा, हारून और पूरी जमाअत के पास ले आए।
34 चूँकि साफ़ मालूम नहीं था कि उस के साथ क्या
किया जाए इस लिए उन्हों ने उसे गिरिफ़्तार कर
लिया।

35 फिर रब्ब ने मूसा से कहा, "इस आदमी को
ज़रूर सज़ा-ए-मौत दी जाए। पूरी जमाअत उसे
ख़ैमागाह के बाहर ले जा कर संगसार करे।"
36 चुनाँचे जमाअत ने उसे ख़ैमागाह के बाहर ले जा
कर संगसार किया, जिस तरह रब्ब ने मूसा को हुक्म
दिया था।

अह्काम की याद दिलाने वाले फुन्दने

37 रब्ब ने मूसा से कहा, 38 "इस्राईलियों को बताना
कि तुम और तुम्हारे बाद की नसलें अपने लिबास के

किनारों पर फुन्दने लगाएँ। हर फुन्दना एक क़िर्मिज़ी डोरी से लिबास के साथ लगा हो। 39 इन फुन्दनों को देख कर तुम्हें रब्ब के तमाम अह्काम याद रहेंगे और तुम उन पर अमल करोगे। फिर तुम अपने दिलों और आँखों की ग़लत ख़्वाहिशों के पीछे नहीं पड़ोगे बल्कि ज़िनाकारी से दूर रहोगे। 40 फिर तुम मेरे अह्काम को याद करके उन पर अमल करोगे और अपने ख़ुदा के सामने मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस रहोगे। 41 मैं रब्ब तुम्हारा ख़ुदा हूँ जो तुम्हें मिस्र से निकाल लाया ताकि तुम्हारा ख़ुदा हूँ। मैं रब्ब तुम्हारा ख़ुदा हूँ।"

क़ोरह, दातन और अबीराम की सरकशी

16 1–2 एक दिन क़ोरह बिन इज़्हार मूसा के ख़िलाफ़ उठा। वह लावी के क़बीले का क़िहाती था। उस के साथ रूबिन के क़बीले के तीन आदमी थे, इलियाब के बेटे दातन और अबीराम और ओन बिन पलत। उन के साथ 250 और आदमी भी थे जो जमाअत के सरदार और असर-ओ-रसूख़ वाले थे, और जो कौंसल के लिए चुने गए थे। 3 वह मिल कर मूसा और हारून के पास आ कर कहने लगे, "आप हम से ज़ियादती कर रहे हैं। पूरी जमाअत मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस है, और रब्ब उस के दर्मियान है। तो फिर आप अपने आप को क्यूँ रब्ब की जमाअत से बढ़ कर समझते हैं?"

4 यह सुन कर मूसा मुँह के बल गिरा। 5 फिर उस ने क़ोरह और उस के तमाम साथियों से कहा, "कल सुब्ह रब्ब ज़ाहिर करेगा कि कौन उस का बन्दा और कौन मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस है। उसी को वह अपने पास आने देगा। 6 ऐ क़ोरह, कल अपने तमाम साथियों के साथ बख़ूरदान ले कर 7 रब्ब के सामने उन में अंगारे और बख़ूर डालो। जिस आदमी को रब्ब चुनेगा वह मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस होगा। अब तुम लावी ख़ुद ज़ियादती कर रहे हो।"

8 मूसा ने क़ोरह से बात जारी रखी, "ऐ लावी की औलाद, सुनो! 9 क्या तुम्हारी नज़र में यह कोई छोटी बात है कि रब्ब तुम्हें इस्राईली जमाअत के बाक़ी लोगों से अलग करके अपने क़रीब ले आया ताकि तुम रब्ब के मक़्दिस में और जमाअत के सामने खड़े हो कर उन की ख़िदमत करो? 10 वह तुझे और तेरे साथी लावियों को अपने क़रीब लाया है। लेकिन अब तुम इमाम का उह्दा भी अपनाना चाहते हो। 11 अपने साथियों से मिल कर तू ने हारून की नहीं बल्कि रब्ब की मुख़ालफ़त की है। क्यूँकि हारून कौन है कि तुम उस के ख़िलाफ़ बुड़बुड़ाओ?"

12 फिर मूसा ने इलियाब के बेटों दातन और अबीराम को बुलाया। लेकिन उन्हों ने कहा, "हम नहीं आएँगे। 13 आप हमें एक ऐसे मुल्क से निकाल लाए हैं जहाँ दूध और शहद की कस्रत है ताकि हम रेगिस्तान में हलाक हो जाएँ। क्या यह काफ़ी नहीं है? क्या अब आप हम पर हुकूमत भी करना चाहते हैं? 14 न आप ने हमें ऐसे मुल्क में पहुँचाया जिस में दूध और शहद की कस्रत है, न हमें खेतों और अंगूर के बाग़ों के वारिस बनाया है। क्या आप इन आदमियों की आँखें निकाल डालेंगे? नहीं, हम हरगिज़ नहीं आएँगे।"

15 तब मूसा निहायत ग़ुस्से हुआ। उस ने रब्ब से कहा, "उन की क़ुर्बानी को क़बूल न कर। मैं ने एक गधा तक उन से नहीं लिया, न मैं ने उन में से किसी से बुरा सुलूक किया है।"

16 क़ोरह से उस ने कहा, "कल तुम और तुम्हारे साथी रब्ब के सामने हाज़िर हो जाओ। हारून भी आएगा। 17 हर एक अपना बख़ूरदान ले कर उसे रब्ब को पेश करे।" 18 चुनाँचे हर आदमी ने अपना बख़ूरदान ले कर उस में अंगारे और बख़ूर डाल दिया। फिर सब मूसा और हारून के साथ मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर खड़े हुए। 19 क़ोरह ने पूरी जमाअत को दरवाज़े पर मूसा और हारून के मुक़ाबले में जमा किया था।

अचानक पूरी जमाअत पर रब्ब का जलाल ज़ाहिर हुआ। 20 रब्ब ने मूसा और हारून से कहा, 21 "इस जमाअत से अलग हो जाओ ताकि मैं इसे फ़ौरन

हलाक कर दूँ।” 22 मूसा और हारून मुँह के बल गिरे और बोल उठे, “ऐ अल्लाह, तू तमाम जानों का ख़ुदा है। क्या तेरा ग़ज़ब एक ही आदमी के गुनाह के सबब से पूरी जमाअत पर आन पड़ेगा?”

23 तब रब्ब ने मूसा से कहा, 24 “जमाअत को बता दे कि क़ोरह, दातन और अबीराम के डेरों से दूर हो जाओ।” 25 मूसा उठ कर दातन और अबीराम के पास गया, और इस्राईल के बुज़ुर्ग उस के पीछे चले। 26 उस ने जमाअत को आगाह किया, “इन शरीरों के ख़ैमों से दूर हो जाओ! जो कुछ भी उन के पास है उसे न छुओ, वर्ना तुम भी उन के साथ तबाह हो जाओगे जब वह अपने गुनाहों के बाइस हलाक होंगे।” 27 तब बाक़ी लोग क़ोरह, दातन और अबीराम के डेरों से दूर हो गए।

दातन और अबीराम अपने बाल-बच्चों समेत अपने ख़ैमों से निकल कर बाहर खड़े थे। 28 मूसा ने कहा, “अब तुम्हें पता चलेगा कि रब्ब ने मुझे यह सब कुछ करने के लिए भेजा है। मैं अपनी नहीं बल्कि उस की मर्ज़ी पूरी कर रहा हूँ। 29 अगर यह लोग दूसरों की तरह तबई मौत मरें तो फिर रब्ब ने मुझे नहीं भेजा। 30 लेकिन अगर रब्ब ऐसा काम करे जो पहले कभी नहीं हुआ और ज़मीन अपना मुँह खोल कर उन्हें और उन का पूरा माल हड़प कर ले और उन्हें जीते जी दफ़ना दे तो इस का मतलब होगा कि इन आदमियों ने रब्ब को हक़ीर जाना है।”

31 यह बात कहते ही उन के नीचे की ज़मीन फट गई। 32 उस ने अपना मुँह खोल कर उन्हें, उन के ख़ान्दानों को, क़ोरह के तमाम लोगों को और उन का सारा सामान हड़प कर लिया। 33 वह अपनी पूरी मिल्कियत समेत जीते जी दफ़न हो गए। ज़मीन उन के ऊपर वापस आ गई। यूँ उन्हें जमाअत से निकाला गया और वह हलाक हो गए। 34 उन की चीख़ें सुन कर उन के इर्दगिर्द खड़े तमाम इस्राईली भाग उठे, क्यूँकि उन्हों ने सोचा, “ऐसा न हो कि ज़मीन हमें भी निगल ले।”

35 उसी लम्हे रब्ब की तरफ़ से आग उतर आई और उन 250 आदमियों को भस्म कर दिया जो बख़ूर पेश कर रहे थे। 36 रब्ब ने मूसा से कहा, 37 “हारून इमाम के बेटे इलीअज़र को इत्तिला दे कि वह बख़ूरदानों को राख में से निकाल कर रखे। उन के अंगारे वह दूर फैंके। बख़ूरदानों को रखने का सबब यह है कि अब वह मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस हैं। 38 लोग उन आदमियों के यह बख़ूरदान ले लें जो अपने गुनाह के बाइस जाँ-ब-हक़ हो गए। वह उन्हें कूट कर उन से चादरें बनाएँ और उन्हें जलने वाली क़ुर्बानियों की क़ुर्बानगाह पर चढ़ाएँ। क्यूँकि वह रब्ब को पेश किए गए हैं, इस लिए वह मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस हैं। यूँ वह इस्राईलियों के लिए एक निशान रहेंगे।”

39 चुनाँचे इलीअज़र इमाम ने पीतल के यह बख़ूरदान जमा किए जो भस्म किए हुए आदमियों ने रब्ब को पेश किए थे। फिर लोगों ने उन्हें कूट कर उन से चादरें बनाईं और उन्हें क़ुर्बानगाह पर चढ़ा दिया। 40 हारून ने सब कुछ वैसा ही किया जैसा रब्ब ने मूसा की मारिफ़त बताया था। मक़्सद यह था कि बख़ूरदान इस्राईलियों को याद दिलाते रहें कि सिर्फ़ हारून की औलाद ही को रब्ब के सामने आ कर बख़ूर जलाने की इजाज़त है। अगर कोई और ऐसा करे तो उस का हाल क़ोरह और उस के साथियों का सा होगा।

41 अगले दिन इस्राईल की पूरी जमाअत मूसा और हारून के ख़िलाफ़ बुड़बुड़ाने लगी। उन्हों ने कहा, “आप ने रब्ब की क़ौम को मार डाला है।” 42 लेकिन जब वह मूसा और हारून के मुक़ाबले में जमा हुए और मुलाक़ात के ख़ैमे का रुख़ किया तो अचानक उस पर बादल छा गया और रब्ब का जलाल ज़ाहिर हुआ। 43 फिर मूसा और हारून मुलाक़ात के ख़ैमे के सामने आए, 44 और रब्ब ने मूसा से कहा, 45 “इस जमाअत से निकल जाओ ताकि मैं इसे फ़ौरन हलाक कर दूँ।” यह सुन कर दोनों मुँह के बल गिरे। 46 मूसा ने हारून से कहा, “अपना बख़ूरदान ले कर उस में क़ुर्बानगाह के अंगारे और बख़ूर डालें। फिर भाग कर

जमाअत के पास चले जाएँ ताकि उन का कफ़्फ़ारा दें। जल्दी करें, क्यूँकि रब्ब का ग़ज़ब उन पर टूट पड़ा है। वबा फैलने लगी है।"

47 हारून ने ऐसा ही किया। वह दौड़ कर जमाअत के बीच में गया। लोगों में वबा शुरू हो चुकी थी, लेकिन हारून ने रब्ब को बख़ूर पेश करके उन का कफ़्फ़ारा दिया। 48 वह ज़िन्दों और मुर्दों के बीच में खड़ा हुआ तो वबा रुक गई। 49 तो भी 14,700 अफ़राद वबा से मर गए। इस में वह शामिल नहीं हैं जो क़ोरह के सबब से मर गए थे।

50 जब वबा रुक गई तो हारून मूसा के पास वापस आया जो अब तक मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर खड़ा था।

हारून की लाठी से कोंपलें निकलती हैं

17 1 रब्ब ने मूसा से कहा, 2 "इस्राईलियों से बात करके उन से 12 लाठियाँ मंगवा ले, हर क़बीले के सरदार से एक लाठी। हर लाठी पर उस के मालिक का नाम लिखना। 3 लावी की लाठी पर हारून का नाम लिखना, क्यूँकि हर क़बीले के सरदार के लिए एक लाठी होगी। 4 फिर उन को मुलाक़ात के ख़ैमे में अह्द के सन्दूक़ के सामने रख जहाँ मेरी तुम से मुलाक़ात होती है। 5 जिस आदमी को मैं ने चुन लिया है उस की लाठी से कोंपलें फूट निकलेंगी। इस तरह मैं तुम्हारे ख़िलाफ़ इस्राईलियों की बुड़बुड़ाहट ख़त्म कर दूँगा।"

6 चुनाँचे मूसा ने इस्राईलियों से बात की, और क़बीलों के हर सरदार ने उसे अपनी लाठी दी। इन 12 लाठियों में हारून की लाठी भी शामिल थी। 7 मूसा ने उन्हें मुलाक़ात के ख़ैमे में अह्द के सन्दूक़ के सामने रखा। 8 अगले दिन जब वह मुलाक़ात के ख़ैमे में दाख़िल हुआ तो उस ने देखा कि लावी के क़बीले के सरदार हारून की लाठी से न सिर्फ़ कोंपलें फूट निकली हैं बल्कि फूल और पके हुए बादाम भी लगे हैं।

9 मूसा तमाम लाठियाँ रब्ब के सामने से बाहर ला कर इस्राईलियों के पास ले आया, और उन्हों ने उन का मुआइना किया। फिर हर एक ने अपनी अपनी लाठी वापस ले ली। 10 रब्ब ने मूसा से कहा, "हारून की लाठी अह्द के सन्दूक़ के सामने रख दे। यह बाग़ी इस्राईलियों को याद दिलाएगी कि वह अपना बुड़बुड़ाना बन्द करें, वर्ना हलाक हो जाएँगे।"

11 मूसा ने ऐसा ही किया। 12 लेकिन इस्राईलियों ने मूसा से कहा, "हाय, हम मर जाएँगे। हाय, हम हलाक हो जाएँगे, हम सब हलाक हो जाएँगे। 13 जो भी रब्ब के मक़्दिस के क़रीब आए वह मर जाएगा। क्या हम सब ही हलाक हो जाएँगे?"

इमामों और लावियों की ज़िम्मादारियाँ

18 1 रब्ब ने हारून से कहा, "मक़्दिस तेरी, तेरे बेटों और लावी के क़बीले की ज़िम्मादारी है। अगर इस में कोई ग़लती हो जाए तो तुम क़ुसूरवार ठहरोगे। इसी तरह इमामों की ख़िदमत सिर्फ़ तेरी और तेरे बेटों की ज़िम्मादारी है। अगर इस में कोई ग़लती हो जाए तो तू और तेरे बेटे क़ुसूरवार ठहरेंगे। 2 अपने क़बीले लावी के बाक़ी आदमियों को भी मेरे क़रीब आने दे। वह तेरे साथ मिल कर यूँ हिस्सा लें कि वह तेरी और तेरे बेटों की ख़िदमत करें जब तुम ख़ैमे के सामने अपनी ज़िम्मादारियाँ निभाओगे। 3 तेरी ख़िदमत और ख़ैमे में ख़िदमत उन की ज़िम्मादारी है। लेकिन वह ख़ैमे के मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस सामान और क़ुर्बानगाह के क़रीब न जाएँ, वर्ना न सिर्फ़ वह बल्कि तू भी हलाक हो जाएगा। 4 यूँ वह तेरे साथ मिल कर मुलाक़ात के ख़ैमे के पूरे काम में हिस्सा लें। लेकिन किसी और को ऐसा करने की इजाज़त नहीं है। 5 सिर्फ़ तू और तेरे बेटे मक़्दिस और क़ुर्बानगाह की देख-भाल करें ताकि मेरा ग़ज़ब दुबारा इस्राईलियों पर न भड़के। 6 मैं ही ने इस्राईलियों में से तेरे भाइयों यानी लावियों को चुन कर तुझे तुह्फ़े के तौर पर दिया है। वह रब्ब के लिए मख़्सूस हैं ताकि ख़ैमे में ख़िदमत करें। 7 लेकिन सिर्फ़ तू और तेरे बेटे इमाम

की ख़िदमत सरअन्जाम दें। मैं तुम्हें इमाम का उह्दा तुह्फ़े के तौर पर देता हूँ। कोई और क़ुर्बानगाह और मुक़द्दस चीज़ों के नज़्दीक न आए, वर्ना उसे सज़ा-ए-मौत दी जाए।”

इमामों का हिस्सा

8 रब्ब ने हारून से कहा, “मैं ने ख़ुद मुक़र्रर किया
है कि तमाम उठाने वाली क़ुर्बानियाँ तेरा हिस्सा हों।
यह हमेशा तक क़ुर्बानियों में से तेरा और तेरी औलाद
का हिस्सा हैं। 9 तुम्हें मुक़द्दसतरीन क़ुर्बानियों का वह
हिस्सा मिलना है जो जलाया नहीं जाता। हाँ, तुझे
और तेरे बेटों को वही हिस्सा मिलना है, ख़्वाह वह
मुझे ग़ल्ला की नज़रें, गुनाह की क़ुर्बानियाँ या क़ुसूर
की क़ुर्बानियाँ पेश करें। 10 उसे मुक़द्दस जगह पर
खाना। हर मर्द उसे खा सकता है। ख़याल रख कि
वह मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस है।
11 मैं ने मुक़र्रर किया है कि तमाम हिलाने वाली
क़ुर्बानियों का उठाया हुआ हिस्सा तेरा है। यह हमेशा
के लिए तेरे और तेरे बेटे-बेटियों का हिस्सा है। तेरे
घराने का हर फ़र्द उसे खा सकता है। शर्त यह है कि
वह पाक हो। 12 जब लोग रब्ब को अपनी फ़सलों का
पहला फल पेश करेंगे तो वह तेरा ही हिस्सा होगा।
मैं तुझे ज़ैतून के तेल, नई मै और अनाज का बेहतरीन
हिस्सा देता हूँ। 13 फ़सलों का जो भी पहला फल वह
रब्ब को पेश करेंगे वह तेरा ही होगा। तेरे घराने का
हर पाक फ़र्द उसे खा सकता है। 14 इस्राईल में जो
भी चीज़ रब्ब के लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस की गई है
वह तेरी होगी। 15 हर इन्सान और हर हैवान का जो
पहलौठा रब्ब को पेश किया जाता है वह तेरा ही है।
लेकिन लाज़िम है कि तू हर इन्सान और हर नापाक
जानवर के पहलौठे का फ़िद्या दे कर उसे छुड़ाए।
16 जब वह एक माह के हैं तो उन के इवज़ चाँदी
के पाँच सिक्के देना। (हर सिक्के का वज़न मक़्दिस के
बाटों के मुताबिक़ 11 ग्राम हो)। 17 लेकिन गाय-बैलों
और भेड़-बक्रियों के पहले बच्चों का फ़िद्या यानी
मुआवज़ा न देना। वह मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस हैं। उन
का ख़ून क़ुर्बानगाह पर छिड़क देना और उन की
चर्बी जला देना। ऐसी क़ुर्बानी रब्ब को पसन्द होगी।
18 उन का गोश्त वैसे ही तुम्हारे लिए हो, जैसे हिलाने
वाली क़ुर्बानी का सीना और दहनी रान भी तुम्हारे
लिए हैं।
19 मुक़द्दस क़ुर्बानियों में से तमाम उठाने वाली
क़ुर्बानियाँ तेरा और तेरे बेटे-बेटियों का हिस्सा हैं।
मैं ने उसे हमेशा के लिए तुझे दिया है। यह नमक का
दाइमी अह्द है जो मैं ने तेरे और तेरी औलाद के साथ
क़ाइम किया है।”

लावियों का हिस्सा

20 रब्ब ने हारून से कहा, “तू मीरास में ज़मीन
नहीं पाएगा। इस्राईल में तुझे कोई हिस्सा नहीं दिया
जाएगा, क्यूँकि इस्राईलियों के दर्मियान मैं ही तेरा
हिस्सा और तेरी मीरास हूँ। 21 अपनी पैदावार का जो
दसवाँ हिस्सा इस्राईली मुझे देते हैं वह मैं लावियों को
देता हूँ। यह उन की विरासत है, जो उन्हें मुलाक़ात के
ख़ैमे में ख़िदमत करने के बदले में मिलती है। 22 अब
से इस्राईली मुलाक़ात के ख़ैमे के क़रीब न आएँ, वर्ना
उन्हें अपनी ख़ता का नतीजा बर्दाश्त करना पड़ेगा
और वह हलाक हो जाएँगे। 23 सिर्फ़ लावी मुलाक़ात
के ख़ैमे में ख़िदमत करें। अगर इस में कोई ग़लती हो
जाए तो वही क़ुसूरवार ठहरेंगे। यह एक दाइमी उसूल
है। उन्हें इस्राईल में मीरास में ज़मीन नहीं मिलेगी।
24 क्यूँकि मैं ने उन्हें वही दसवाँ हिस्सा मीरास के तौर
पर दिया है जो इस्राईली मुझे उठाने वाली क़ुर्बानी के
तौर पर पेश करते हैं। इस वजह से मैं ने उन के बारे
में कहा कि उन्हें बाक़ी इस्राईलियों के साथ मीरास
में ज़मीन नहीं मिलेगी।”

लावियों का दसवाँ हिस्सा

25 रब्ब ने मूसा से कहा, 26 “लावियों को बताना
कि तुम्हें इस्राईलियों की पैदावार का दसवाँ हिस्सा
मिलेगा। यह रब्ब की तरफ़ से तुम्हारी विरासत होगी।
लाज़िम है कि तुम इस का दसवाँ हिस्सा रब्ब को

उठाने वाली क़ुर्बानी के तौर पर पेश करो। 27 तुम्हारी
यह क़ुर्बानी नए अनाज या नए अंगूर के रस की
क़ुर्बानी के बराबर क़रार दी जाएगी। 28 इस तरह तुम
भी रब्ब को इस्राईलियों की पैदावार के दसवें हिस्से
में से उठाने वाली क़ुर्बानी पेश करोगे। रब्ब के लिए
यह क़ुर्बानी हारून इमाम को देना। 29 जो भी तुम्हें
मिला है उस में से सब से अच्छा और मुक़द्दस हिस्सा
रब्ब को देना। 30 जब तुम इस का सब से अच्छा
हिस्सा पेश करोगे तो उसे नए अनाज या नए अंगूर के
रस की क़ुर्बानी के बराबर क़रार दिया जाएगा। 31 तुम
अपने घरानों समेत इस का बाक़ी हिस्सा कहीं भी खा
सकते हो, क्यूँकि यह मुलाक़ात के ख़ैमे में तुम्हारी
ख़िदमत का अज्र है। 32 अगर तुम ने पहले इस का
बेहतरीन हिस्सा पेश किया हो तो फिर इसे खाने में
तुम्हारा कोई क़ुसूर नहीं होगा। फिर इस्राईलियों की
मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस क़ुर्बानियाँ तुम से नापाक नहीं
हो जाएँगी और तुम नहीं मरोगे।"

सुर्ख़ गाय की राख

19 1 रब्ब ने मूसा और हारून से कहा,
2 "इस्राईलियों को बताना कि वह तुम्हारे
पास सुर्ख़ रंग की जवान गाय ले कर आएँ। उस में
नुक़्स न हो और उस पर कभी जूआ न रखा गया हो।
3 तुम उसे इलीअज़र इमाम को देना जो उसे ख़ैमे के
बाहर ले जाए। वहाँ उसे उस की मौजूदगी में ज़बह
किया जाए। 4 फिर इलीअज़र इमाम अपनी उंगली
से उस के ख़ून से कुछ ले कर मुलाक़ात के ख़ैमे
के सामने वाले हिस्से की तरफ़ छिड़के। 5 उस की
मौजूदगी में पूरी की पूरी गाय को जलाया जाए। उस
की खाल, गोश्त, ख़ून और अंतड़ियों का गोबर भी
जलाया जाए। 6 फिर वह देओदार की लकड़ी, ज़ूफ़ा
और क़िर्मिज़ी रंग का धागा ले कर उसे जलती हुई
गाय पर फैंके। 7 इस के बाद वह अपने कपड़ों को
धो कर नहा ले। फिर वह ख़ैमागाह में आ सकता है
लेकिन शाम तक नापाक रहेगा।
8 जिस आदमी ने गाय को जलाया वह भी अपने
कपड़ों को धो कर नहा ले। वह भी शाम तक नापाक
रहेगा।
9 एक दूसरा आदमी जो पाक है गाय की राख इकट्ठी
करके ख़ैमागाह के बाहर किसी पाक जगह पर डाल
दे। वहाँ इस्राईल की जमाअत उसे नापाकी दूर करने
का पानी तय्यार करने के लिए महफ़ूज़ रखे। यह
गुनाह से पाक करने के लिए इस्तेमाल होगा। 10 जिस
आदमी ने राख इकट्ठी की है वह भी अपने कपड़ों
को धो ले। वह भी शाम तक नापाक रहेगा। यह
इस्राईलियों और उन के दर्मियान रहने वाले परदेसियों
के लिए दाइमी उसूल हो।

लाश छूने से पाक हो जाने का तरीक़ा

11 जो भी लाश छुए वह सात दिन तक नापाक
रहेगा। 12 तीसरे और सातवें दिन वह अपने आप पर
नापाकी दूर करने का पानी छिड़क कर पाक-साफ़
हो जाए। इस के बाद ही वह पाक होगा। लेकिन
अगर वह इन दोनों दिनों में अपने आप को यूँ पाक
न करे तो नापाक रहेगा। 13 जो भी लाश छू कर अपने
आप को यूँ पाक नहीं करता वह रब्ब के मक़्दिस को
नापाक करता है। लाज़िम है कि उसे इस्राईल में से
मिटाया जाए। चूँकि नापाकी दूर करने का पानी उस
पर छिड़का नहीं गया इस लिए वह नापाक रहेगा।
14 अगर कोई डेरे में मर जाए तो जो भी उस वक़्त
उस में मौजूद हो या दाख़िल हो जाए वह सात दिन
तक नापाक रहेगा। 15 हर खुला बर्तन जो ढकने से
बन्द न किया गया हो वह भी नापाक होगा। 16 इसी
तरह जो खुले मैदान में लाश छुए वह भी सात दिन
तक नापाक रहेगा, ख़्वाह वह तल्वार से या तबई
मौत मरा हो। जो इन्सान की कोई हड्डी या क़ब्र छुए
वह भी सात दिन तक नापाक रहेगा।
17 नापाकी दूर करने के लिए उस सुर्ख़ रंग की गाय
की राख में से कुछ लेना जो गुनाह दूर करने के लिए
जलाई गई थी। उसे बर्तन में डाल कर ताज़ा पानी
में मिलाना। 18 फिर कोई पाक आदमी कुछ ज़ूफ़ा ले

और उसे उस पानी में डुबो कर मरे हुए शख़्स के ख़ैमे, उस के सामान और उन लोगों पर छिड़के जो उस के मरते वक़्त वहाँ थे। इसी तरह वह पानी उस शख़्स पर भी छिड़के जिस ने तबई या ग़ैरतबई मौत मरे हुए शख़्स को, किसी इन्सान की हड्डी को या कोई क़ब्र छूई हो। 19 पाक आदमी यह पानी तीसरे और सातवें दिन नापाक शख़्स पर छिड़के। सातवें दिन वह उसे पाक करे। जिसे पाक किया जा रहा है वह अपने कपड़े धो कर नहा ले तो वह उसी शाम पाक होगा।

20 लेकिन जो नापाक शख़्स अपने आप को पाक नहीं करता उसे जमाअत में से मिटाना है, क्यूँकि उस ने रब्ब का मक़्दिस नापाक कर दिया है। नापाकी दूर करने का पानी उस पर नहीं छिड़का गया, इस लिए वह नापाक रहा है। 21 यह उन के लिए दाइमी उसूल है। जिस आदमी ने नापाकी दूर करने का पानी छिड़का है वह भी अपने कपड़े धोए। बल्कि जिस ने भी यह पानी छुआ है शाम तक नापाक रहेगा। 22 और नापाक शख़्स जो भी चीज़ छुए वह नापाक हो जाती है। न सिर्फ़ यह बल्कि जो बाद में यह नापाक चीज़ छुए वह भी शाम तक नापाक रहेगा।"

चटान से पानी

20 1 पहले महीने में इस्राईल की पूरी जमाअत दश्त-ए-सीन में पहुँच कर क़ादिस में रहने लगी। वहाँ मरियम ने वफ़ात पाई और वहीं उसे दफ़नाया गया।

2 क़ादिस में पानी दस्तयाब नहीं था, इस लिए लोग मूसा और हारून के मुक़ाबले में जमा हुए। 3 वह मूसा से यह कह कर झगड़ने लगे, "काश हम अपने भाइयों के साथ रब्ब के सामने मर गए होते! 4 आप रब्ब की जमाअत को क्यूँ इस रेगिस्तान में ले आए? क्या इस लिए कि हम यहाँ अपने मवेशियों समेत मर जाएँ? 5 आप हमें मिस्र से निकाल कर उस नाख़ुशगवार जगह पर क्यूँ ले आए हैं? यहाँ न तो अनाज, न अन्जीर, अंगूर या अनार दस्तयाब हैं। पानी भी नहीं है!"

6 मूसा और हारून लोगों को छोड़ कर मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर गए और मुँह के बल गिरे। तब रब्ब का जलाल उन पर ज़ाहिर हुआ। 7 रब्ब ने मूसा से कहा, 8 "अह्द के सन्दूक़ के सामने पड़ी लाठी पकड़ कर हारून के साथ जमाअत को इकट्ठा कर। उन के सामने चटान से बात करो तो वह अपना पानी देगी। यूँ तू चटान में से जमाअत के लिए पानी निकाल कर उन्हें उन के मवेशियों समेत पानी पिलाएगा।"

9 मूसा ने ऐसा ही किया। उस ने अह्द के सन्दूक़ के सामने पड़ी लाठी उठाई 10 और हारून के साथ जमाअत को चटान के सामने इकट्ठा किया। मूसा ने उन से कहा, "ऐ बग़ावत करने वालो, सुनो! क्या हम इस चटान में से तुम्हारे लिए पानी निकालें?" 11 उस ने लाठी को उठा कर चटान को दो मर्तबा मारा तो बहुत सा पानी फूट निकला। जमाअत और उन के मवेशियों ने ख़ूब पानी पिया।

12 लेकिन रब्ब ने मूसा और हारून से कहा, "तुम्हारा मुझ पर इतना ईमान नहीं था कि मेरी क़ुद्दूसियत को इस्राईलियों के सामने क़ाइम रखते। इस लिए तुम उस जमाअत को उस मुल्क में नहीं ले जाओगे जो मैं उन्हें दूँगा।"

13 यह वाक़िआ मरीबा यानी 'झगड़ना' के पानी पर हुआ। वहाँ इस्राईलियों ने रब्ब से झगड़ा किया, और वहाँ उस ने उन पर ज़ाहिर किया कि वह क़ुद्दूस है।

अदोम इस्राईल को गुज़रने नहीं देता

14 क़ादिस से मूसा ने अदोम के बादशाह को इत्तिला भेजी, "आप के भाई इस्राईल की तरफ़ से एक गुज़ारिश है। आप को उन तमाम मुसीबतों के बारे में इल्म है जो हम पर आन पड़ी हैं। 15 हमारे बापदादा मिस्र गए थे और वहाँ हम बहुत अर्से तक रहे। मिस्रियों ने हमारे बापदादा और हम से बुरा सुलूक किया। 16 लेकिन जब हम ने चिल्ला कर रब्ब से मिन्नत की तो उस ने हमारी सुनी और फ़रिश्ता भेज कर हमें मिस्र से निकाल लाया। अब हम यहाँ क़ादिस शहर में हैं जो आप की सरहद्द पर है। 17 मेहरबानी करके

हमें अपने मुल्क में से गुज़रने दें। हम किसी खेत या अंगूर के बाग़ में नहीं जाएँगे, न किसी कुएँ का पानी पिएँगे। हम शाहराह पर ही रहेंगे। आप के मुल्क में से गुज़रते हुए हम उस से न दाईं और न बाईं तरफ़ हटेंगे।"

18 लेकिन अदोमियों ने जवाब दिया, "यहाँ से न गुज़रना, वर्ना हम निकल कर आप से लड़ेंगे।"
19 इस्राईल ने दुबारा ख़बर भेजी, "हम शाहराह पर रहते हुए गुज़रेंगे। अगर हमें या हमारे जानवरों को पानी की ज़रूरत हुई तो पैसे दे कर ख़रीद लेंगे। हम पैदल ही गुज़रना चाहते हैं, और कुछ नहीं चाहते।"

20 लेकिन अदोमियों ने दुबारा इन्कार किया। साथ ही उन्हों ने उन के साथ लड़ने के लिए एक बड़ी और ताक़तवर फ़ौज भेजी।

21 चूँकि अदोम ने उन्हें गुज़रने की इजाज़त न दी इस लिए इस्राईली मुड़ कर दूसरे रास्ते से चले गए।

हारून की वफ़ात

22 इस्राईल की पूरी जमाअत क़ादिस से रवाना हो कर होर पहाड़ के पास पहुँची।
23 यह पहाड़ अदोम की सरहद पर वाक़े था। वहाँ रब्ब ने मूसा और हारून से कहा,
24 "हारून अब कूच करके अपने बापदादा से जा मिलेगा। वह उस मुल्क में दाख़िल नहीं होगा जो मैं इस्राईलियों को दूँगा, क्यूँकि तुम दोनों ने मरीबा के पानी पर मेरे हुक्म की ख़िलाफ़वरज़ी की।
25 हारून और उस के बेटे इलीअज़र को ले कर होर पहाड़ पर चढ़ जा।
26 हारून के कपड़े उतार कर उस के बेटे इलीअज़र को पहना देना। फिर हारून कूच करके अपने बापदादा से जा मिलेगा।"

27 मूसा ने ऐसा ही किया जैसा रब्ब ने कहा। तीनों पूरी जमाअत के देखते देखते होर पहाड़ पर चढ़ गए।
28 मूसा ने हारून के कपड़े उतरवा कर उस के बेटे इलीअज़र को पहना दिए। फिर हारून वहाँ पहाड़ की चोटी पर फ़ौत हुआ, और मूसा और इलीअज़र नीचे उतर गए।
29 जब पूरी जमाअत को मालूम हुआ कि हारून इन्तिक़ाल कर गया है तो सब ने 30 दिन तक उस के लिए मातम किया।

कनआनी मुल्क-ए-अराद पर फ़त्ह

21 1 दश्त-ए-नजब के कनआनी मुल्क अराद के बादशाह को ख़बर मिली कि इस्राईली अथारिम की तरफ़ बढ़ रहे हैं। उस ने उन पर हम्ला किया और कई एक को पकड़ कर क़ैद कर लिया।
2 तब इस्राईलियों ने रब्ब के सामने मन्नत मान कर कहा, "अगर तू हमें उन पर फ़त्ह देगा तो हम उन्हें उन के शहरों समेत तबाह कर देंगे।"
3 रब्ब ने उन की सुनी और कनआनियों पर फ़त्ह बख़्शी। इस्राईलियों ने उन्हें उन के शहरों समेत पूरी तरह तबाह कर दिया। इस लिए उस जगह का नाम हुर्मा यानी तबाही पड़ गया।

पीतल का साँप

4 होर पहाड़ से रवाना हो कर वह बहर-ए-क़ुल्ज़ुम की तरफ़ चल दिए ताकि अदोम के मुल्क में से गुज़रना न पड़े। लेकिन चलते चलते लोग बेसबर हो गए।
5 वह रब्ब और मूसा के ख़िलाफ़ बातें करने लगे, "आप हमें मिस्र से निकाल कर रेगिस्तान में मरने के लिए क्यूँ ले आए हैं? यहाँ न रोटी दस्तयाब है न पानी। हमें इस घटिया क़िस्म की ख़ुराक से घिन आती है।"

6 तब रब्ब ने उन के दर्मियान ज़हरीले साँप भेज दिए जिन के काटने से बहुत से लोग मर गए।
7 फिर लोग मूसा के पास आए। उन्हों ने कहा, "हम ने रब्ब और आप के ख़िलाफ़ बातें करते हुए गुनाह किया। हमारी सिफ़ारिश करें कि रब्ब हम से साँप दूर कर दे।"

मूसा ने उन के लिए दुआ की
8 तो रब्ब ने मूसा से कहा, "एक साँप बना कर उसे खम्बे से लटका दे। जो भी डसा गया हो वह उसे देख कर बच जाएगा।"
9 चुनाँचे मूसा ने पीतल का एक साँप बनाया और खम्बा खड़ा करके साँप को उस से लटका दिया।

और ऐसा हुआ कि जिसे भी डसा गया था वह पीतल के साँप पर नज़र करके बच गया।

मोआब की तरफ़ सफ़र

[10] इस्राईली रवाना हुए और ओबोत में अपने ख़ैमे
लगाए। [11] फिर वहाँ से कूच करके अय्ये-अबारीम
में डेरे डाले, उस रेगिस्तान में जो मशरिक़ की तरफ़
मोआब के सामने है। [12] वहाँ से रवाना हो कर वह
वादी-ए-ज़रद में ख़ैमाज़न हुए। [13] जब वादी-ए-ज़रद से
रवाना हुए तो दरया-ए-अर्नोन के परले यानी जुनूबी
किनारे पर ख़ैमाज़न हुए। यह दरया रेगिस्तान में
है और अमोरियों के इलाक़े से निकलता है। यह
अमोरियों और मोआबियों के दर्मियान की सरहद्द है।
[14] इस का ज़िक्र किताब 'रब्ब की जंगें' में भी है,

"वाहेब जो सूफ़ा में है, दरया-ए-अर्नोन की वादियाँ
[15] और वादियों का वह ढलान जो आर शहर तक
जाता है और मोआब की सरहद्द पर वाक़े है।"

[16] वहाँ से वह बैर यानी 'कुआँ' पहुँचे। यह वही बैर
है जहाँ रब्ब ने मूसा से कहा, "लोगों को इकट्ठा कर
तो मैं उन्हें पानी दूँगा।" [17] उस वक़्त इस्राईलियों ने
यह गीत गाया,

"ऐ कुएँ, फूट निकल! उस के बारे में गीत गाओ,
[18] उस कुएँ के बारे में जिसे सरदारों ने खोदा, जिसे
क़ौम के राहनुमाओं ने असा-ए-शाही और अपनी
लाठियों से खोदा।"

फिर वह रेगिस्तान से मत्तना को गए, [19] मत्तना
से नहलीएल को और नहलीएल से बामात को।
[20] बामात से वह मोआबियों के इलाक़े की उस वादी
में पहुँचे जो पिसगा पहाड़ के दामन में है। इस पहाड़
की चोटी से वादी-ए-यर्दन का जुनूबी हिस्सा यशीमोन
ख़ूब नज़र आता है।

सीहोन और ओज की शिकस्त

[21] इस्राईल ने अमोरियों के बादशाह सीहोन को
इत्तिला भेजी, [22] "हमें अपने मुल्क में से गुज़रने दें।
हम सीधे सीधे गुज़र जाएँगे। न हम कोई खेत या
अंगूर का बाग़ छेड़ेंगे, न किसी कुएँ का पानी पिएँगे।
हम आप के मुल्क में से सीधे गुज़रते हुए शाहराह पर
ही रहेंगे।" [23] लेकिन सीहोन ने उन्हें गुज़रने न दिया
बल्कि अपनी फ़ौज जमा करके इस्राईल से लड़ने के
लिए रेगिस्तान में चल पड़ा। यहज़ पहुँच कर उस ने
इस्राईलियों से जंग की। [24] लेकिन इस्राईलियों ने उसे
क़त्ल किया और दरया-ए-अर्नोन से ले कर दरया-ए-
यब्बोक़ तक यानी अम्मोनियों की सरहद्द तक उस
के मुल्क पर क़ब्ज़ा कर लिया। वह इस से आगे
न जा सके क्यूँकि अम्मोनियों ने अपनी सरहद्द की
हिसारबन्दी कर रखी थी। [25] इस्राईली तमाम अमोरी
शहरों पर क़ब्ज़ा करके उन में रहने लगे। उन में
हस्बोन और उस के इर्दगिर्द की आबादियाँ शामिल
थीं।

[26] हस्बोन अमोरी बादशाह सीहोन का दार-उल-
हकूमत था। उस ने मोआब के पिछले बादशाह से
लड़ कर उस से यह इलाक़ा दरया-ए-अर्नोन तक छीन
लिया था। [27] उस वाकिए का ज़िक्र शाइरी में यूँ किया
गया है,

"हस्बोन के पास आ कर उसे अज़ सर-ए-नौ तामीर
करो, सीहोन के शहर को अज़ सर-ए-नौ क़ाइम करो।
[28] हस्बोन से आग निकली, सीहोन के शहर से
शोला भड़का। उस ने मोआब के शहर आर को जला
दिया, अर्नोन की बुलन्दियों के मालिकों को भस्म
किया।

[29] ऐ मोआब, तुझ पर अफ़सोस! ऐ कमोस देवता
की क़ौम, तू हलाक हुई है। कमोस ने अपने बेटों
को मफ़रूर और अपनी बेटियों को अमोरी बादशाह
सीहोन की क़ैदी बना दिया है।

[30] लेकिन जब हम ने अमोरियों पर तीर चलाए तो
हस्बोन का इलाक़ा दीबोन तक बर्बाद हुआ। हम ने
नुफ़ह तक सब कुछ तबाह किया, वह नुफ़ह जिस
का इलाक़ा मीदबा तक है।"

[31] यूँ इस्राईल अमोरियों के मुल्क में आबाद हुआ।
[32] वहाँ से मूसा ने अपने जासूस याज़ेर शहर भेजे।
वहाँ भी अमोरी रहते थे। इस्राईलियों ने याज़ेर और

उस के इर्दगिर्द के शहरों पर भी क़ब्ज़ा किया और
वहाँ के अमोरियों को निकाल दिया।
33 इस के बाद वह मुड़ कर बसन की तरफ़ बढ़े।
तब बसन का बादशाह ओज अपनी तमाम फ़ौज
ले कर उन से लड़ने के लिए शहर इद्रई आया।
34 उस वक़्त रब्ब ने मूसा से कहा, "ओज से न
डरना। मैं उसे, उस की तमाम फ़ौज और उस का
मुल्क तेरे हवाले कर चुका हूँ। उस के साथ वही
सुलूक कर जो तू ने अमोरियों के बादशाह सीहोन के
साथ किया, जिस का दार-उल-हकूमत हस्बोन था।"
35 इस्राईलियों ने ओज, उस के बेटों और तमाम फ़ौज
को हलाक कर दिया। कोई भी न बचा। फिर उन्हों
ने बसन के मुल्क पर क़ब्ज़ा कर लिया।

बलक़ बलआम को इस्राईल पर लानत भेजने के लिए बुलाता है

22 1 इस के बाद इस्राईली मोआब के मैदानों
में पहुँच कर दरया-ए-यर्दन के मशरिक़ी
किनारे पर यरीहू के आमने-सामने ख़ैमाज़न हुए।
2 मोआब के बादशाह बलक़ बिन सफ़ोर को मालूम
हुआ कि इस्राईलियों ने अमोरियों के साथ क्या कुछ
किया है। 3 मोआबियों ने यह भी देखा कि इस्राईली
बहुत ज़ियादा हैं, इस लिए उन पर दहशत छा गई।
4 उन्हों ने मिदियानियों के बुज़ुर्गों से बात की, "अब
यह हुजूम उस तरह हमारे इर्दगिर्द का इलाक़ा चट
कर जाएगा जिस तरह बैल मैदान की घास चट कर
जाता है।"
5 तब बलक़ ने अपने क़ासिद फ़तोर शहर को भेजे
जो दरया-ए-फ़ुरात पर वाक़े था और जहाँ बलआम
बिन बओर अपने वतन में रहता था। क़ासिद उसे
बुलाने के लिए उस के पास पहुँचे और उसे बलक़
का पैग़ाम सुनाया, "एक क़ौम मिस्र से निकल आई है
जो रू-ए-ज़मीन पर छा कर मेरे क़रीब ही आबाद हुई
है। 6 इस लिए आएँ और इन लोगों पर लानत भेजें,
क्यूँकि वह मुझ से ज़ियादा ताक़तवर हैं। फिर शायद
मैं उन्हें शिकस्त दे कर मुल्क से भगा सकूँ। क्यूँकि
मैं जानता हूँ कि जिन्हें आप बर्कत देते हैं उन्हें बर्कत
मिलती है और जिन पर आप लानत भेजते हैं उन पर
लानत आती है।"
7 यह पैग़ाम ले कर मोआब और मिदियान के बुज़ुर्ग
रवाना हुए। उन के पास इनआम के पैसे थे। बलआम
के पास पहुँच कर उन्हों ने उसे बलक़ का पैग़ाम
सुनाया। 8 बलआम ने कहा, "रात यहाँ गुज़ारें। कल
मैं आप को बता दूँगा कि रब्ब इस के बारे में क्या
फ़रमाता है।" चुनाँचे मोआबी सरदार उस के पास
ठहर गए।
9 रात के वक़्त अल्लाह बलआम पर ज़ाहिर हुआ।
उस ने पूछा, "यह आदमी कौन हैं जो तेरे पास
आए हैं?" 10 बलआम ने जवाब दिया, "मोआब के
बादशाह बलक़ बिन सफ़ोर ने मुझे पैग़ाम भेजा है,
11 'जो क़ौम मिस्र से निकल आई है वह रू-ए-ज़मीन
पर छा गई है। इस लिए आएँ और मेरे लिए उन पर
लानत भेजें। फिर शायद मैं उन से लड़ कर उन्हें भगा
देने में काम्याब हो जाऊँ'।" 12 रब्ब ने बलआम से
कहा, "उन के साथ न जाना। तुझे उन पर लानत
भेजने की इजाज़त नहीं है, क्यूँकि उन पर मेरी बर्कत
है।"
13 अगली सुब्ह बलआम जाग उठा तो उस ने बलक़
के सरदारों से कहा, "अपने वतन वापस चले जाएँ,
क्यूँकि रब्ब ने मुझे आप के साथ जाने की इजाज़त
नहीं दी।" 14 चुनाँचे मोआबी सरदार ख़ाली हाथ
बलक़ के पास वापस आए। उन्हों ने कहा, "बलआम
हमारे साथ आने से इन्कार करता है।" 15 तब बलक़
ने और सरदार भेजे जो पहले वालों की निस्बत तादाद
और उह्दे के लिहाज़ से ज़ियादा थे। 16 वह बलआम
के पास जा कर कहने लगे, "बलक़ बिन सफ़ोर कहते
हैं कि कोई भी बात आप को मेरे पास आने से न रोके,
17 क्यूँकि मैं आप को बड़ा इनआम दूँगा। आप जो
भी कहेंगे मैं करने के लिए तय्यार हूँ। आएँ तो सही
और मेरे लिए उन लोगों पर लानत भेजें।"
18 लेकिन बलआम ने जवाब दिया, "अगर बलक़
अपने महल को चाँदी और सोने से भर कर भी

मुझे दे तो भी मैं रब्ब अपने ख़ुदा के फ़रमान की
ख़िलाफ़वरज़ी नहीं कर सकता, ख़्वाह बात छोटी
हो या बड़ी। 19 आप दूसरे सरदारों की तरह रात यहाँ
गुज़ारें। इतने में मैं मालूम करूँगा कि रब्ब मुझे मज़ीद
क्या कुछ बताता है।”
20 उस रात अल्लाह बलआम पर ज़ाहिर हुआ और
कहा, “चूँकि यह आदमी तुझे बुलाने आए हैं इस लिए
उन के साथ चला जा। लेकिन सिर्फ़ वही कुछ करना
जो मैं तुझे बताऊँगा।”

बलआम की गधी

21 सुब्ह को बलआम ने उठ कर अपनी गधी पर
ज़ीन कसा और मोआबी सरदारों के साथ चल पड़ा।
22 लेकिन अल्लाह निहायत ग़ुस्से हुआ कि वह जा रहा
है, इस लिए उस का फ़रिश्ता उस का मुक़ाबला करने
के लिए रास्ते में खड़ा हो गया। बलआम अपनी गधी
पर सवार था और उस के दो नौकर उस के साथ चल
रहे थे। 23 जब गधी ने देखा कि रब्ब का फ़रिश्ता
अपने हाथ में तल्वार थामे हुए रास्ते में खड़ा है तो
वह रास्ते से हट कर खेत में चलने लगी। बलआम
उसे मारते मारते रास्ते पर वापस ले आया।
24 फिर वह अंगूर के दो बाग़ों के दर्मियान से गुज़रने
लगे। रास्ता तंग था, क्यूँकि वह दोनों तरफ़ बाग़ों की
चारदीवारी से बन्द था। अब रब्ब का फ़रिश्ता वहाँ
खड़ा हुआ। 25 गधी यह देख कर चारदीवारी के साथ
साथ चलने लगी, और बलआम का पाँओ कुचला
गया। उस ने उसे दुबारा मारा।
26 रब्ब का फ़रिश्ता आगे निकला और तीसरी
मर्तबा रास्ते में खड़ा हो गया। अब रास्ते से हट जाने
की कोई गुन्जाइश नहीं थी, न दाईं तरफ़ और न बाईं
तरफ़। 27 जब गधी ने रब्ब का फ़रिश्ता देखा तो वह
लेट गई। बलआम को ग़ुस्सा आ गया, और उस ने
उसे अपनी लाठी से ख़ूब मारा।
28 तब रब्ब ने गधी को बोलने दिया, और उस ने
बलआम से कहा, “मैं ने आप से क्या ग़लत सुलूक
किया है कि आप मुझे अब तीसरी दफ़ा पीट रहे
हैं?” 29 बलआम ने जवाब दिया, “तू ने मुझे बेवुक़ूफ़
बनाया है! काश मेरे हाथ में तल्वार होती तो मैं अभी
तुझे ज़बह कर देता!” 30 गधी ने बलआम से कहा,
“क्या मैं आप की गधी नहीं हूँ जिस पर आप आज
तक सवार होते रहे हैं? क्या मुझे कभी ऐसा करने
की आदत थी?” उस ने कहा, “नहीं।”
31 फिर रब्ब ने बलआम की आँखें खोलीं और उस
ने रब्ब के फ़रिश्ते को देखा जो अब तक हाथ में
तल्वार थामे हुए रास्ते में खड़ा था। बलआम ने मुँह
के बल गिर कर सिज्दा किया। 32 रब्ब के फ़रिश्ते ने
पूछा, “तू ने तीन बार अपनी गधी को क्यूँ पीटा? मैं
तेरे मुक़ाबले में आया हूँ, क्यूँकि जिस तरफ़ तू बढ़
रहा है उस का अन्जाम बुरा है। 33 गधी तीन मर्तबा
मुझे देख कर मेरी तरफ़ से हट गई। अगर वह न हटती
तो तू उस वक़्त हलाक हो गया होता अगरचि मैं गधी
को छोड़ देता।”
34 बलआम ने रब्ब के फ़रिश्ते से कहा, “मैं ने गुनाह
किया है। मुझे मालूम नहीं था कि तू मेरे मुक़ाबले में
रास्ते में खड़ा है। लेकिन अगर मेरा सफ़र तुझे बुरा
लगे तो मैं अब वापस चला जाऊँगा।” 35 रब्ब के
फ़रिश्ते ने कहा, “इन आदमियों के साथ अपना सफ़र
जारी रख। लेकिन सिर्फ़ वही कुछ कहना जो मैं तुझे
बताऊँगा।” चुनाँचे बलआम ने बलक़ के सरदारों के
साथ अपना सफ़र जारी रखा।
36 जब बलक़ को ख़बर मिली कि बलआम आ
रहा है तो वह उस से मिलने के लिए मोआब के उस
शहर तक गया जो मोआब की सरहद्द दरया-ए-अर्नोन
पर वाक़े है। 37 उस ने बलआम से कहा, “क्या मैं ने
आप को इत्तिला नहीं भेजी थी कि आप ज़रूर आएँ?
आप क्यूँ नहीं आए? क्या आप ने सोचा कि मैं आप
को मुनासिब इनआम नहीं दे पाऊँगा?” 38 बलआम
ने जवाब दिया, “ब-हर-हाल अब मैं पहुँच गया हूँ।
लेकिन मैं सिर्फ़ वही कुछ कह सकता हूँ जो अल्लाह
ने पहले ही मेरे मुँह में डाल दिया है।”
39 फिर बलआम बलक़ के साथ क़िर्यत-हुसात
गया। 40 वहाँ बलक़ ने गाय-बैल और भेड़-बक्रियाँ

क़ुर्बान करके उन के गोश्त में से बलआम और उस
के साथ वाले सरदारों को दे दिया। [41] अगली सुब्ह
बलक़ बलआम को साथ ले कर एक ऊँची जगह
पर चढ़ गया जिस का नाम बामोत-बाल था। वहाँ से
इस्राईली ख़ैमागाह का किनारा नज़र आता था।

बलआम की पहली बर्कत

23 [1] बलआम ने कहा, "यहाँ मेरे लिए सात
क़ुर्बानगाहें बनाएँ। साथ साथ मेरे लिए सात
बैल और सात मेंढे तय्यार कर रखें।" [2] बलक़ ने ऐसा
ही किया, और दोनों ने मिल कर हर क़ुर्बानगाह पर
एक बैल और एक मेंढा चढ़ाया। [3] फिर बलआम ने
बलक़ से कहा, "यहाँ अपनी क़ुर्बानी के पास खड़े
रहें। मैं कुछ फ़ासिले पर जाता हूँ, शायद रब्ब मुझ
से मिलने आए। जो कुछ वह मुझ पर ज़ाहिर करे मैं
आप को बता दूँगा।"

यह कह कर वह एक ऊँचे मक़ाम पर चला गया
जो हरियाली से बिलकुल महरूम था। [4] वहाँ अल्लाह
बलआम से मिला। बलआम ने कहा, "मैं ने सात
क़ुर्बानगाहें तय्यार करके हर क़ुर्बानगाह पर एक बैल
और एक मेंढा क़ुर्बान किया है।" [5] तब रब्ब ने उसे
बलक़ के लिए पैग़ाम दिया और कहा, "बलक़ के
पास वापस जा और उसे यह पैग़ाम सुना।" [6] बलआम
बलक़ के पास वापस आया जो अब तक मोआबी
सरदारों के साथ अपनी क़ुर्बानी के पास खड़ा था।
[7] बलआम बोल उठा,

"बलक़ मुझे अराम से यहाँ लाया है, मोआबी
बादशाह ने मुझे मशरिक़ी पहाड़ों से बुला कर कहा,
'आओ, याक़ूब पर मेरे लिए लानत भेजो। आओ,
इस्राईल को बददुआ दो।'

[8] मैं किस तरह उन पर लानत भेजूँ जिन पर अल्लाह
ने लानत नहीं भेजी? मैं किस तरह उन्हें बददुआ दूँ
जिन्हें रब्ब ने बददुआ नहीं दी?

[9] मैं उन्हें चटानों की चोटी से देखता हूँ, पहाड़ियों
से उन का मुशाहदा करता हूँ। वाक़ई यह एक ऐसी
क़ौम है जो दूसरों से अलग रहती है। यह अपने आप
को दूसरी क़ौमों से मुम्ताज़ समझती है।

[10] कौन याक़ूब की औलाद को गिन सकता है जो
गर्द की मानिन्द बेशुमार है। कौन इस्राईलियों का
चौथा हिस्सा भी गिन सकता है? रब्ब करे कि मैं
रास्तबाज़ों की मौत मरूँ, कि मेरा अन्जाम उन के
अन्जाम जैसा अच्छा हो।"

[11] बलक़ ने बलआम से कहा, "आप ने मेरे साथ
क्या किया है? मैं आप को अपने दुश्मनों पर लानत
भेजने के लिए लाया और आप ने उन्हें अच्छी-ख़ासी
बर्कत दी है।" [12] बलआम ने जवाब दिया, "क्या
लाज़िम नहीं कि मैं वही कुछ बोलूँ जो रब्ब ने बताने
को कहा है?"

बलआम की दूसरी बर्कत

[13] फिर बलक़ ने उस से कहा, "आएँ, हम एक
और जगह जाएँ जहाँ से आप इस्राईली क़ौम को
देख सकेंगे, गो उन की ख़ैमागाह का सिर्फ़ किनारा
ही नज़र आएगा। आप सब को नहीं देख सकेंगे।
वहीं से उन पर मेरे लिए लानत भेजें।" [14] यह कह
कर वह उस के साथ पिसगा की चोटी पर चढ़ कर
पहरेदारों के मैदान तक पहुँच गया। वहाँ भी उस
ने सात क़ुर्बानगाहें बना कर हर एक पर एक बैल
और एक मेंढा क़ुर्बान किया। [15] बलआम ने बलक़
से कहा, "यहाँ अपनी क़ुर्बानगाह के पास खड़े रहें।
मैं कुछ फ़ासिले पर जा कर रब्ब से मिलूँगा।"

[16] रब्ब बलआम से मिला। उस ने उसे बलक़ के
लिए पैग़ाम दिया और कहा, "बलक़ के पास वापस
जा और उसे यह पैग़ाम सुना दे।" [17] वह वापस चला
गया। बलक़ अब तक अपने सरदारों के साथ अपनी
क़ुर्बानी के पास खड़ा था। उस ने उस से पूछा, "रब्ब
ने क्या कहा?" [18] बलआम ने कहा, "ऐ बलक़, उठो
और सुनो। ऐ सफ़ोर के बेटे, मेरी बात पर ग़ौर करो।

[19] अल्लाह आदमी नहीं जो झूट बोलता है। वह
इन्सान नहीं जो कोई फ़ैसला करके बाद में पछताए।

क्या वह कभी अपनी बात पर अमल नहीं करता? क्या वह कभी अपनी बात पूरी नहीं करता?

20 मुझे बर्कत देने को कहा गया है। उस ने बर्कत दी है और मैं यह बर्कत रोक नहीं सकता।

21 याक़ूब के घराने में ख़राबी नज़र नहीं आती, इस्राईल में दुख दिखाई नहीं देता। रब्ब उस का ख़ुदा उस के साथ है, और क़ौम बादशाह की ख़ुशी में नारे लगाती है।

22 अल्लाह उन्हें मिस्र से निकाल लाया, और उन्हें जंगली बैल की ताक़त हासिल है।

23 याक़ूब के घराने के ख़िलाफ़ जादूगरी नाकाम है, इस्राईल के ख़िलाफ़ ग़ैबदानी बेफ़ाइदा है। अब याक़ूब के घराने से कहा जाएगा, 'अल्लाह ने कैसा काम किया है!'

24 इस्राईली क़ौम शेरनी की तरह उठती और शेरबबर की तरह खड़ी हो जाती है। जब तक वह अपना शिकार न खा ले वह आराम नहीं करता, जब तक वह मारे हुए लोगों का ख़ून न पी ले वह नहीं लेटता।"

25 यह सुन कर बलक़ ने कहा, "अगर आप उन पर लानत भेजने से इन्कार करें, कम अज़ कम उन्हें बर्कत तो न दें।" 26 बलआम ने जवाब दिया, "क्या मैं ने आप को नहीं बताया था कि जो कुछ भी रब्ब कहेगा मैं वही करूँगा?"

बलआम की तीसरी बर्कत

27 तब बलक़ ने बलआम से कहा, "आएँ, मैं आप को एक और जगह ले जाऊँ। शायद अल्लाह राज़ी हो जाए कि आप मेरे लिए वहाँ से उन पर लानत भेजें।" 28 वह उस के साथ फ़ग़ूर पहाड़ पर चढ़ गया। उस की चोटी से यर्दन की वादी का जुनूबी हिस्सा यशीमोन दिखाई दिया। 29 बलआम ने उस से कहा, "मेरे लिए यहाँ सात क़ुर्बानगाहें बना कर सात बैल और सात मेंढे तय्यार कर रखें।" 30 बलक़ ने ऐसा ही किया। उस ने हर एक क़ुर्बानगाह पर एक बैल और एक मेंढा क़ुर्बान किया।

24 1 अब बलआम को उस बात का पूरा यक़ीन हो गया कि रब्ब को पसन्द है कि मैं इस्राईलियों को बर्कत दूँ। इस लिए उस ने इस मर्तबा पहले की तरह जादूगरी का तरीक़ा इस्तेमाल न किया बल्कि सीधा रेगिस्तान की तरफ़ रुख़ किया 2 जहाँ इस्राईल अपने अपने क़बीलों की तर्तीब से ख़ैमाज़न था। यह देख कर अल्लाह का रूह उस पर नाज़िल हुआ, 3 और वह बोल उठा,

"बलआम बिन बओर का पैग़ाम सुनो, उस के पैग़ाम पर ग़ौर करो जो साफ़ साफ़ देखता है, 4 उस का पैग़ाम जो अल्लाह की बातें सुन लेता है, क़ादिर-ए-मुतलक़ की रोया को देख लेता है और ज़मीन पर गिर कर पोशीदा बातें देखता है।

5 ऐ याक़ूब, तेरे ख़ैमे कितने शानदार हैं! ऐ इस्राईल, तेरे घर कितने अच्छे हैं!

6 वह दूर तक फैली हुई वादियों की मानिन्द, नहर के किनारे लगे बाग़ों की मानिन्द, रब्ब के लगाए हुए ऊद के दरख़्तों की मानिन्द, पानी के किनारे लगे देओदार के दरख़्तों की मानिन्द हैं।

7 उन की बाल्टियों से पानी छलकता रहेगा, उन के बीज को कस्रत का पानी मिलेगा। उन का बादशाह अजाज से ज़ियादा ताक़तवर होगा, और उन की सल्तनत सरफ़राज़ होगी।

8 अल्लाह उन्हें मिस्र से निकाल लाया, और उन्हें जंगली बैल की सी ताक़त हासिल है। वह मुख़ालिफ़ क़ौमों को हड़प करके उन की हड्डियाँ चूर चूर कर देते हैं, वह अपने तीर चला कर उन्हें मार डालते हैं।

9 इस्राईल शेरबबर या शेरनी की मानिन्द है। जब वह दबक कर बैठ जाए तो कोई भी उसे छेड़ने की जुरअत नहीं करता। जो तुझे बर्कत दे उसे बर्कत मिले, और जो तुझ पर लानत भेजे उस पर लानत आए।"

10 यह सुन कर बलक़ आपे से बाहर हुआ। उस ने ताली बजा कर अपनी हिक़ारत का इज़्हार किया और कहा, "मैं ने तुझे इस लिए बुलाया था कि तू मेरे दुश्मनों पर लानत भेजे। अब तू ने उन्हें तीनों बार

बर्कत ही दी है। 11 अब दफ़ा हो जा! अपने घर वापस
भाग जा! मैं ने कहा था कि बड़ा इनआम दूँगा। लेकिन
रब्ब ने तुझे इनआम पाने से रोक दिया है।"
12 बलआम ने जवाब दिया, "क्या मैं ने उन लोगों
को जिन्हें आप ने मुझे बुलाने के लिए भेजा था नहीं
बताया था 13 कि अगर बलक़ अपने महल को चाँदी
और सोने से भर कर भी मुझे दे दे तो भी मैं रब्ब
की किसी बात की ख़िलाफ़वरज़ी नहीं कर सकता,
ख़्वाह मेरी नीयत अच्छी हो या बुरी। मैं सिर्फ़ वह
कुछ कर सकता हूँ जो अल्लाह फ़रमाता है। 14 अब
मैं अपने वतन वापस चला जाता हूँ। लेकिन पहले मैं
आप को बता देता हूँ कि आख़िरकार यह क़ौम आप
की क़ौम के साथ क्या कुछ करेगी।"

बलआम की चौथी बर्कत

15 वह बोल उठा,
"बलआम बिन बओर का पैग़ाम सुनो, उस का
पैग़ाम जो साफ़ साफ़ देखता है,
16 उस का पैग़ाम जो अल्लाह की बातें सुन लेता और
अल्लाह तआला की मर्ज़ी को जानता है, जो क़ादिर-ए-
मुतलक़ की रोया को देख लेता और ज़मीन पर गिर
कर पोशीदा बातें देखता है।
17 जिसे मैं देख रहा हूँ वह उस वक़्त नहीं है। जो
मुझे नज़र आ रहा है वह क़रीब नहीं है। याक़ूब के
घराने से सितारा निकलेगा, और इस्राईल से असा-ए-
शाही उठेगा जो मोआब के माथों और सेत के तमाम
बेटों की खोपड़ियों को पाश पाश करेगा।
18 अदोम उस के क़ब्ज़े में आएगा, उस का दुश्मन
सईर उस की मिल्कियत बनेगा जबकि इस्राईल की
ताक़त बढ़ती जाएगी।
19 याक़ूब के घराने से एक हुक्मरान निकलेगा जो
शहर के बचे हुओं को हलाक कर देगा।"

बलआम के आख़िरी पैग़ाम

20 फिर बलआम ने अमालीक़ को देखा और कहा,
"अमालीक़ क़ौमों में अव्वल था, लेकिन
आख़िरकार वह ख़त्म हो जाएगा।"
21 फिर उस ने क़ीनियों को देखा और कहा,
"तेरी सुकूनतगाह मुस्तहकम है, तेरा चटान में बना
घोंसला मज़बूत है।
22 लेकिन तू तबाह हो जाएगा जब असूर तुझे
गिरिफ़्तार करेगा।"
23 एक और दफ़ा उस ने बात की,
"हाय, कौन ज़िन्दा रह सकता है जब अल्लाह यूँ
करेगा?
24 कित्तीम के साहिल से बहरी जहाज़ आएँगे जो
असूर और इबर को ज़लील करेंगे, लेकिन वह ख़ुद
भी हलाक हो जाएँगे।"
25 फिर बलआम उठ कर अपने घर वापस चला
गया। बलक़ भी वहाँ से चला गया।

मोआब इस्राईलियों की आज़माइश करता है

25 1 जब इस्राईली शित्तीम में रह रहे थे तो
इस्राईली मर्द मोआबी औरतों से ज़िनाकारी
करने लगे। 2 यह ऐसा हुआ कि मोआबी औरतें अपने
देवताओं को क़ुर्बानियाँ पेश करते वक़्त इस्राईलियों
को शरीक होने की दावत देने लगीं। इस्राईली दावत
क़बूल करके क़ुर्बानियों से खाने और देवताओं को
सिज्दा करने लगे। 3 इस तरीक़े से इस्राईली मोआबी
देवता बनाम बाल-फ़ग़ूर की पूजा करने लगे, और
रब्ब का ग़ज़ब उन पर आन पड़ा। 4 उस ने मूसा से
कहा, "इस क़ौम के तमाम राहनुमाओं को सज़ा-
ए-मौत दे कर सूरज की रौशनी में रब्ब के सामने
लटका, वर्ना रब्ब का इस्राईलियों पर से ग़ज़ब नहीं
टलेगा।" 5 चुनाँचे मूसा ने इस्राईल के क़ाज़ियों से
कहा, "लाज़िम है कि तुम में से हर एक अपने उन
आदमियों को जान से मार दे जो बाल-फ़ग़ूर देवता
की पूजा में शरीक हुए हैं।"
6 मूसा और इस्राईल की पूरी जमाअत मुलाक़ात के
ख़ैमे के दरवाज़े पर जमा हो कर रोने लगे। इत्तिफ़ाक़
से उसी वक़्त एक आदमी वहाँ से गुज़रा जो एक

मिदियानी औरत को अपने घर ले जा रहा था। 7 यह
देख कर हारून का पोता फ़ीन्हास बिन इलीअज़र
जमाअत से निकला और नेज़ा पकड़ कर 8 उस
इस्राईली के पीछे चल पड़ा। वह औरत समेत अपने
ख़ैमे में दाख़िल हुआ तो फ़ीन्हास ने उन के पीछे पीछे
जा कर नेज़ा इतने ज़ोर से मारा कि वह दोनों में से
गुज़र गया। उस वक़्त वबा फैलने लगी थी, लेकिन
फ़ीन्हास के इस अमल से वह रुक गई। 9 तो भी
24,000 अफ़राद मर चुके थे।

10 रब्ब ने मूसा से कहा, 11 "हारून के पोते फ़ीन्हास
बिन इलीअज़र ने इस्राईलियों पर मेरा ग़ुस्सा ठंडा
कर दिया है। मेरी ग़ैरत अपना कर वह इस्राईल में
दीगर माबूदों की पूजा को बर्दाश्त न कर सका। इस
लिए मेरी ग़ैरत ने इस्राईलियों को नेस्त-ओ-नाबूद नहीं
किया। 12 लिहाज़ा उसे बता देना कि मैं उस के साथ
सलामती का अह्द क़ाइम करता हूँ। 13 इस अह्द
के तहत उसे और उस की औलाद को अबद तक
इमाम का उह्दा हासिल रहेगा, क्यूँकि अपने ख़ुदा की
ख़ातिर ग़ैरत खा कर उस ने इस्राईलियों का कफ़्फ़ारा
दिया।"

14 जिस आदमी को मिदियानी औरत के साथ मार
दिया गया उस का नाम ज़िम्री बिन सलू था, और
वह शमाऊन के क़बीले के एक आबाई घराने का
सरपरस्त था। 15 मिदियानी औरत का नाम कज़्बी
था, और वह सूर की बेटी थी जो मिदियानियों के
एक आबाई घराने का सरपरस्त था।

16 रब्ब ने मूसा से कहा, 17 "मिदियानियों को दुश्मन
क़रार दे कर उन्हें मार डालना। 18 क्यूँकि उन्हों ने
अपनी चालाकियों से तुम्हारे साथ दुश्मन का सा
सुलूक किया, उन्हों ने तुम्हें बाल-फ़ग़ूर की पूजा
करने पर उकसाया और तुम्हें अपनी बहन मिदियानी
सरदार की बेटी कज़्बी के ज़रीए जिसे वबा फैलते
वक़्त मार दिया गया बहकाया।"

दूसरी मर्दुमशुमारी

26 1 वबा के बाद रब्ब ने मूसा और हारून के
बेटे इलीअज़र से कहा,

2 "पूरी इस्राईली जमाअत की मर्दुमशुमारी उन के
आबाई घरानों के मुताबिक़ करना। उन तमाम मर्दों
को गिनना जो 20 साल या इस से ज़ाइद के हैं और
जो जंग लड़ने के क़ाबिल हैं।"

3–4 मूसा और इलीअज़र ने इस्राईलियों को बताया
कि रब्ब ने उन्हें क्या हुक्म दिया है। चुनाँचे उन्हों ने
मोआब के मैदानी इलाक़े में यरीहू के सामने, लेकिन
दरया-ए-यर्दन के मशरिक़ी किनारे पर मर्दुमशुमारी
की। यह वह इस्राईली आदमी थे जो मिस्र से निकले
थे।

5–7 इस्राईल के पहलौठे रूबिन के क़बीले के
43,730 मर्द थे। क़बीले के चार कुंबे हनूकी, फ़ल्लुवी,
हस्रोनी और कर्मी रूबिन के बेटों हनूक, फ़ल्लू, हस्रोन
और कर्मी से निकले हुए थे। 8 रूबिन का बेटा फ़ल्लू
इलियाब का बाप था 9 जिस के बेटे नमूएल, दातन
और अबीराम थे।

दातन और अबीराम वही लोग थे जिन्हें जमाअत
ने चुना था और जिन्हों ने क़ोरह के गुरोह समेत मूसा
और हारून से झगड़ते हुए ख़ुद रब्ब से झगड़ा किया।
10 उस वक़्त ज़मीन ने अपना मुँह खोल कर उन्हें
क़ोरह समेत हड़प कर लिया था। उस के 250 साथी
भी मर गए थे जब आग ने उन्हें भस्म कर दिया। यूँ
वह सब इस्राईल के लिए इब्रतअंगेज़ मिसाल बन गए
थे। 11 लेकिन क़ोरह की पूरी नसल मिटाई नहीं गई
थी।

12–14 शमाऊन के क़बीले के 22,200 मर्द थे।
क़बीले के पाँच कुंबे नमूएली, यमीनी, यक़ीनी,
ज़ारही और साऊली शमाऊन के बेटों नमूएल, यमीन,
यकीन, ज़ारह और साऊल से निकले हुए थे।

15–18 जद के क़बीले के 40,500 मर्द थे। क़बीले के
सात कुंबे सफ़ोनी, हज्जी, सूनी, उज़्नी, एरी, अरूदी

और अरेली जद के बेटों सफ़ोन, हज्जी, सूनी, उज़नी,
एरी, अरूद और अरेली से निकले हुए थे।
19–22 यहूदाह के क़बीले के 76,500 मर्द थे।
यहूदाह के दो बेटे एर और ओनान मिस्र आने से
पहले कनआन में मर गए थे। क़बीले के तीन कुंबे
सेलानी, फ़ारसी और ज़ारही यहूदाह के बेटों सेला,
फ़ारस और ज़ारह से निकले हुए थे।
फ़ारस के दो बेटों हस्रोन और हमूल से दो कुंबे
हस्रोनी और हमूली निकले हुए थे। 23–25 इश्कार के
क़बीले के 64,300 मर्द थे। क़बीले के चार कुंबे
तोलई, फ़ुव्वी, यसूबी और सिम्रोनी इश्कार के बेटों
तोला, फ़ुव्वा, यसूब और सिम्रोन से निकले हुए थे।
26–27 ज़बूलून के क़बीले के 60,500 मर्द थे।
क़बीले के तीन कुंबे सरदी, ऐलोनी और यहलीएली
ज़बूलून के बेटों सरद, ऐलोन और यहलीएल से
निकले हुए थे।
28 यूसुफ़ के दो बेटों मनस्सी और इफ़्राईम के अलग
अलग क़बीले बने।
29–34 मनस्सी के क़बीले के 52,700 मर्द थे।
क़बीले के आठ कुंबे मकीरी, जिलिआदी, ईअज़री,
ख़लक़ी, अस्रीएली, सिकमी, समीदाई और हिफ़री
थे। मकीरी मनस्सी के बेटे मकीर से जबकि
जिलिआदी मकीर के बेटे जिलिआद से निकले हुए
थे। बाक़ी कुंबे जिलिआद के छः बेटों ईअज़र,
ख़लक़, अस्रीएल, सिकम, समीदा और हिफ़र से
निकले हुए थे।
हिफ़र सिलाफ़िहाद का बाप था। सिलाफ़िहाद का
कोई बेटा नहीं बल्कि पाँच बेटियाँ महलाह, नूआह,
हुज्लाह, मिल्काह और तिर्ज़ा थीं।
35–37 इफ़्राईम के क़बीले के 32,500 मर्द थे।
क़बीले के चार कुंबे सूतलही, बकरी, तहनी और
ईरानी थे। पहले तीन कुंबे इफ़्राईम के बेटों सूतलह,
बकर और तहन से जबकि ईरानी सूतलह के बेटे
ईरान से निकले हुए थे।
38–41 बिन्यमीन के क़बीले के 45,600 मर्द थे।
क़बीले के सात कुंबे बालाई, अश्बेली, अख़ीरामी,
सूफ़ामी, हूफ़ामी, अर्दी और नामानी थे। पहले पाँच
कुंबे बिन्यमीन के बेटों बाला, अश्बेल, अख़ीराम,
सूफ़ाम और हूफ़ाम से जबकि अर्दी और नामानी
बाला के बेटों से निकले हुए थे।
42–43 दान के क़बीले के 64,400 मर्द थे। सब दान
के बेटे सूहाम से निकले हुए थे, इस लिए सूहामी
कहलाते थे।
44–47 आशर के क़बीले के 53,400 मर्द थे। क़बीले
के बाँच कुंबे यिमनी, इस्वी, बरीई, हिबरी और
मल्कीएली थे। पहले तीन कुंबे आशर के बेटों यिम्ना,
इस्वी और बरीआ से जबकि बाक़ी बरीआ के बेटों
हिबर और मल्कीएल से निकले हुए थे। आशर की
एक बेटी बनाम सिरह भी थी।
48–50 नफ़ताली के क़बीले के 45,400 मर्द थे।
क़बीले के चार कुंबे यहसीएली, जूनी, यिसरी और
सिल्लीमी नफ़ताली के बेटों यहसीएल, जूनी, यिसर
और सिल्लीम से निकले हुए थे।
51 इस्राईली मर्दों की कुल तादाद 6,01,730 थी।
52 रब्ब ने मूसा से कहा, 53 "जब मुल्क-ए-कनआन
को तक़्सीम किया जाएगा तो ज़मीन इन की तादाद
के मुताबिक़ देना है। 54 बड़े क़बीलों को छोटे
की निस्बत ज़ियादा ज़मीन दी जाए। हर क़बीले
का इलाक़ा उस की तादाद से मुताबिक़त रखे।
55–56 क़ुरआ डालने से फ़ैसला किया जाए कि हर
क़बीले को कहाँ ज़मीन मिलेगी। लेकिन हर क़बीले
के इलाक़े का रक़बा इस पर मब्नी हो कि क़बीले के
कितने अफ़राद हैं।"
57 लावी के क़बीले के तीन कुंबे जैर्सोनी, क़िहाती
और मिरारी लावी के बेटों जैर्सोन, क़िहात और
मिरारी से निकले हुए थे। 58 इस के इलावा लिब्नी,
हिब्रूनी, महली, मूशी और कोरही भी लावी के कुंबे
थे। क़िहात अम्राम का बाप था। 59 अम्राम ने लावी
औरत यूकबिद से शादी की जो मिस्र में पैदा हुई थी।
उन के दो बेटे हारून और मूसा और एक बेटी मरियम
पैदा हुए। 60 हारून के बेटे नदब, अबीहू, इलीअज़र
और इतमर थे। 61 लेकिन नदब और अबीहू रब्ब को

बख़ूर की नाजाइज़ क़ुर्बानी पेश करने के बाइस मर
गए। 62 लावियों के मर्दों की कुल तादाद 23,000
थी। इन में वह सब शामिल थे जो एक माह या इस
से ज़ाइद के थे। उन्हें दूसरे इस्राईलियों से अलग गिना
गया, क्यूँकि उन्हें इस्राईल में मीरास में ज़मीन नहीं
मिलनी थी।

63 यूँ मूसा और इलीअज़र ने मोआब के मैदानी
इलाक़े में यरीहू के सामने लेकिन दरया-ए-यर्दन के
मशरिक़ी किनारे पर इस्राईलियों की मर्दुमशुमारी की।
64 लोगों को गिनते गिनते उन्हें मालूम हुआ कि जो
लोग दश्त-ए-सीन में मूसा और हारून की पहली
मर्दुमशुमारी में गिने गए थे वह सब मर चुके हैं।
65 रब्ब ने कहा था कि वह सब के सब रेगिस्तान
में मर जाएँगे, और ऐसा ही हुआ था। सिर्फ़ कालिब
बिन यफ़ुन्ना और यशूअ बिन नून ज़िन्दा रहे।

सिलाफ़िहाद की बेटियाँ

27
1 सिलाफ़िहाद की पाँच बेटियाँ महलाह,
नूआह, हुज्लाह, मिल्काह और तिर्ज़ा थीं।
सिलाफ़िहाद यूसुफ़ के बेटे मनस्सी के कुंबे का
था। उस का पूरा नाम सिलाफ़िहाद बिन हिफ़र
बिन जिलिआद बिन मकीर बिन मनस्सी बिन यूसुफ़
था। 2 सिलाफ़िहाद की बेटियाँ मुलाक़ात के ख़ैमे
के दरवाज़े पर आ कर मूसा, इलीअज़र इमाम और
पूरी जमाअत के सामने खड़ी हुईं। उन्हों ने कहा,
3 "हमारा बाप रेगिस्तान में फ़ौत हुआ। लेकिन वह
क़ोरह के उन साथियों में से नहीं था जो रब्ब के
ख़िलाफ़ मुत्तहिद हुए थे। वह इस सबब से न मरा
बल्कि अपने ज़ाती गुनाह के बाइस। जब वह मर
गया तो उस का कोई बेटा नहीं था। 4 क्या यह ठीक
है कि हमारे ख़ान्दान में बेटा न होने के बाइस हमें
ज़मीन न मिले और हमारे बाप का नाम-ओ-निशान
मिट जाए? हमें भी हमारे बाप के दीगर रिश्तेदारों के
साथ ज़मीन दें।"

5 मूसा ने उन का मुआमला रब्ब के सामने पेश किया
6 तो रब्ब ने उस से कहा, 7 "जो बात सिलाफ़िहाद की
बेटियाँ कर रही हैं वह दुरुस्त है। उन्हें ज़रूर उन के
बाप के रिश्तेदारों के साथ ज़मीन मिलनी चाहिए।
उन्हें बाप का विरसा मिल जाए। 8 इस्राईलियों को
भी बताना कि जब भी कोई आदमी मर जाए जिस
का बेटा न हो तो उस की बेटी को उस की मीरास
मिल जाए। 9 अगर उस की बेटी भी न हो तो उस के
भाइयों को उस की मीरास मिल जाए। 10 अगर उस
के भाई भी न हों तो उस के बाप के भाइयों को उस
की मीरास मिल जाए। 11 अगर यह भी न हों तो उस
के सब से क़रीबी रिश्तेदार को उस की मीरास मिल
जाए। वह उस की ज़ाती मिल्कियत होगी। यह उसूल
इस्राईलियों के लिए क़ानूनी हैसियत रखता है। वह
इसे वैसा मानें जैसा रब्ब ने मूसा को हुक्म दिया है।"

यशूअ को मूसा का जानशीन मुक़र्रर किया जाता है

12 फिर रब्ब ने मूसा से कहा, "अबारीम के पहाड़ी
सिलसिले के मज़्कूर पहाड़ पर चढ़ कर उस मुल्क
पर निगाह डाल जो मैं इस्राईलियों को दूँगा। 13 उसे
देखने के बाद तू भी अपने भाई हारून की तरह कूच
करके अपने बापदादा से जा मिलेगा, 14 क्यूँकि तुम
दोनों ने दश्त-ए-सीन में मेरे हुक्म की ख़िलाफ़वरज़ी
की। उस वक़्त जब पूरी जमाअत ने मरीबा में मेरे
ख़िलाफ़ गिला-शिकवा किया तो तू ने चटान से
पानी निकालते वक़्त लोगों के सामने मेरी क़ुद्दूसियत
क़ाइम न रखी।" (मरीबा दश्त-ए-सीन के क़ादिस में
चश्मा है।)

15 मूसा ने रब्ब से कहा, 16 "ऐ रब्ब, तमाम जानों
के ख़ुदा, जमाअत पर राहनुमा मुक़र्रर कर 17 जो उन
के आगे आगे जंग के लिए निकले और उन के आगे
आगे वापस आ जाए, जो उन्हें बाहर ले जाए और
वापस ले आए। वर्ना रब्ब की जमाअत उन भेड़ों की
मानिन्द होगी जिन का कोई चरवाहा न हो।"

18 जवाब में रब्ब ने मूसा से कहा, "यशूअ बिन
नून को चुन ले जिस में मेरा रूह है, और अपना
हाथ उस पर रख। 19 उसे इलीअज़र इमाम और पूरी
जमाअत के सामने खड़ा करके उन के रू-ब-रू ही

उसे राहनुमाई की ज़िम्मादारी दे। [20] अपने इख़तियार में से कुछ उसे दे ताकि इस्राईल की पूरी जमाअत उस की इताअत करे। [21] रब्ब की मर्ज़ी जानने के लिए वह इलीअज़र इमाम के सामने खड़ा होगा तो इलीअज़र रब्ब के सामने ऊरीम और तुम्मीम इस्तेमाल करके उस की मर्ज़ी दरयाफ़्त करेगा। उसी के हुक्म पर यशूअ और इस्राईल की पूरी जमाअत ख़ैमागाह से निकलेंगे और वापस आएँगे।”

[22] मूसा ने ऐसा ही किया। उस ने यशूअ को चुन कर इलीअज़र और पूरी जमाअत के सामने खड़ा किया। [23] फिर उस ने उस पर अपने हाथ रख कर उसे राहनुमाई की ज़िम्मादारी सौंपी जिस तरह रब्ब ने उसे बताया था।

रोज़मर्रा की क़ुर्बानियाँ

28 [1] रब्ब ने मूसा से कहा, [2] “इस्राईलियों को बताना, ख़याल रखो कि तुम मुक़र्ररा औक़ात पर मुझे जलने वाली क़ुर्बानियाँ पेश करो। यह मेरी रोटी हैं और इन की ख़ुश्बू मुझे पसन्द है। [3] रब्ब को जलने वाली यह क़ुर्बानी पेश करना :

रोज़ाना भेड़ के दो यकसाला बच्चे जो बेऐब हों पूरे तौर पर जला देना। [4] एक को सुब्ह के वक़्त पेश करना और दूसरे को सूरज के डूबने के ऐन बाद। [5] भेड़ के बच्चे के साथ ग़ल्ला की नज़र भी पेश की जाए यानी डेढ़ किलोग्राम बेहतरीन मैदा जो एक लिटर ज़ैतून के कूट कर निकाले हुए तेल के साथ मिलाया गया हो। [6] यह रोज़मर्रा की क़ुर्बानी है जो पूरे तौर पर जलाई जाती है और पहली दफ़ा सीना पहाड़ पर चढ़ाई गई। इस जलने वाली क़ुर्बानी की ख़ुश्बू रब्ब को पसन्द है। [7–8] साथ ही एक लिटर शराब भी नज़र के तौर पर क़ुर्बानगाह पर डाली जाए। सुब्ह और शाम की यह क़ुर्बानियाँ दोनों ही इस तरीक़े से पेश की जाएँ।

सबत यानी हफ़्ते की क़ुर्बानी

[9] सबत के दिन भेड़ के दो और बच्चे चढ़ाना। वह भी बेऐब और एक साल के हों। साथ ही मै और ग़ल्ला की नज़रें भी पेश की जाएँ। ग़ल्ला की नज़र के लिए 3 किलोग्राम बेहतरीन मैदा तेल के साथ मिलाया जाए। [10] भस्म होने वाली यह क़ुर्बानी हर हफ़्ते के दिन पेश करनी है। यह रोज़मर्रा की क़ुर्बानियों के इलावा है।

हर माह के पहले दिन की क़ुर्बानी

[11] हर माह के शुरू में रब्ब को भस्म होने वाली क़ुर्बानी के तौर पर दो जवान बैल, एक मेंढा और भेड़ के सात यकसाला बच्चे पेश करना। सब बग़ैर नुक़्स के हों। [12] हर जानवर के साथ ग़ल्ला की नज़र पेश करना जिस के लिए तेल में मिलाया गया बेहतरीन मैदा इस्तेमाल किया जाए। हर बैल के साथ साढ़े 4 किलोग्राम, हर मेंढे के साथ 3 किलोग्राम [13] और भेड़ के हर बच्चे के साथ डेढ़ किलोग्राम मैदा पेश करना। भस्म होने वाली यह क़ुर्बानियाँ रब्ब को पसन्द हैं। [14] इन क़ुर्बानियों के साथ मै की नज़र भी क़ुर्बानगाह पर डालना यानी हर बैल के साथ दो लिटर, हर मेंढे के साथ सवा लिटर और भेड़ के हर बच्चे के साथ एक लिटर मै पेश करना। यह क़ुर्बानी साल में हर महीने के पहले दिन के मौक़े पर पेश करनी है। [15] इस क़ुर्बानी और रोज़मर्रा की क़ुर्बानियों के इलावा रब्ब को एक बक्रा गुनाह की क़ुर्बानी के तौर पर पेश करना।

फ़सह की क़ुर्बानियाँ

[16] पहले महीने के चौधवें दिन फ़सह की ईद मनाई जाए। [17] अगले दिन पूरे हफ़्ते की वह ईद शुरू होती है जिस के दौरान तुम्हें सिर्फ़ बेख़मीरी रोटी खानी है। [18] पहले दिन काम न करना बल्कि मुक़द्दस इजतिमा के लिए इकट्ठे होना। [19] रब्ब के हुज़ूर भस्म होने वाली क़ुर्बानी के तौर पर दो जवान बैल, एक मेंढा और भेड़ के सात यकसाला बच्चे पेश करना। सब बग़ैर नुक़्स के हों। [20] हर जानवर के साथ ग़ल्ला की नज़र

भी पेश करना जिस के लिए तेल के साथ मिलाया
गया बेहतरीन मैदा इस्तेमाल किया जाए। हर बैल के
साथ साढे 4 किलोग्राम, हर मेंढे के साथ 3 किलोग्राम
21 और भेड़ के हर बच्चे के साथ डेढ़ किलोग्राम मैदा
पेश करना। 22 गुनाह की क़ुर्बानी के तौर पर एक
बक्रा भी पेश करना ताकि तुम्हारा कफ़्फ़ारा दिया
जाए। 23–24 इन तमाम क़ुर्बानियों को ईद के दौरान
हर रोज़ पेश करना। यह रोज़मर्रा की भस्म होने वाली
क़ुर्बानियों के इलावा हैं। इस ख़ुराक की ख़ुश्बू रब्ब
को पसन्द है। 25 सातवें दिन काम न करना बल्कि
मुक़द्दस इजतिमा के लिए इकट्ठे होना।

फ़सल की कटाई की ईद की क़ुर्बानियाँ

26 फ़सल की कटाई के पहले दिन की ईद पर जब
तुम रब्ब को अपनी फ़सल की पहली पैदावार पेश
करते हो तो काम न करना बल्कि मुक़द्दस इजतिमा
के लिए इकट्ठे होना। 27–29 उस दिन दो जवान बैल,
एक मेंढा और भेड़ के सात यकसाला बच्चे क़ुर्बानगाह
पर पूरे तौर पर जला देना। इस के साथ ग़ल्ला और मै
की वही नज़रें पेश करना जो फ़सह की ईद पर भी पेश
की जाती हैं। 30 इस के इलावा रब्ब को एक बक्रा
गुनाह की क़ुर्बानी के तौर पर चढ़ाना।
31 यह तमाम क़ुर्बानियाँ रोज़मर्रा की भस्म होने
वाली क़ुर्बानियों और उन के साथ वाली ग़ल्ला और
मै की नज़रों के इलावा हैं। वह बेऐब हों।

नए साल की ईद की क़ुर्बानियाँ

29 1 सातवें माह के पंद्रहवें दिन भी काम न
करना बल्कि मुक़द्दस इजतिमा के लिए
इकट्ठे होना। उस दिन नरसिंगे फूँके जाएँ। 2 रब्ब
को भस्म होने वाली क़ुर्बानी पेश की जाए जिस की
ख़ुश्बू उसे पसन्द हो यानी एक जवान बैल, एक
मेंढा और भेड़ के सात यकसाला बच्चे। सब नुक़्स
के बग़ैर हों। 3 हर जानवर के साथ ग़ल्ला की नज़र भी
पेश करना जिस के लिए तेल के साथ मिलाया गया
बेहतरीन मैदा इस्तेमाल किया जाए। बैल के साथ
साढे 4 किलोग्राम, मेंढे के साथ 3 किलोग्राम 4 और
भेड़ के हर बच्चे के साथ डेढ़ किलोग्राम मैदा पेश
करना। 5 एक बक्रा भी गुनाह की क़ुर्बानी के तौर पर
पेश करना ताकि तुम्हारा कफ़्फ़ारा दिया जाए। 6 यह
क़ुर्बानियाँ रोज़ाना और हर माह के पहले दिन की
क़ुर्बानियों और उन के साथ की ग़ल्ला और मै की
नज़रों के इलावा हैं। इन की ख़ुश्बू रब्ब को पसन्द
है।

कफ़्फ़ारा के दिन की क़ुर्बानियाँ

7 सातवें महीने के दसवें दिन मुक़द्दस इजतिमा के
लिए इकट्ठे होना। उस दिन काम न करना और अपनी
जान को दुख देना। 8–11 रब्ब को वही क़ुर्बानियाँ पेश
करना जो इसी महीने के पहले दिन पेश की जाती
हैं। सिर्फ़ एक फ़र्क़ है, उस दिन एक नहीं बल्कि दो
बक्रे गुनाह की क़ुर्बानी के तौर पर पेश किए जाएँ
ताकि तुम्हारा कफ़्फ़ारा दिया जाए। ऐसी क़ुर्बानियाँ
रब्ब को पसन्द हैं।

झोंपड़ियों की ईद की क़ुर्बानियाँ

12 सातवें महीने के पंद्रहवें दिन भी काम न करना
बल्कि मुक़द्दस इजतिमा के लिए इकट्ठे होना। सात
दिन तक रब्ब की ताज़ीम में ईद मनाना। 13 ईद के
पहले दिन रब्ब को 13 जवान बैल, 2 मेंढे और 14
भेड़ के यकसाला बच्चे भस्म होने वाली क़ुर्बानी के
तौर पर पेश करना। इन की ख़ुश्बू उसे पसन्द है।
सब नुक़्स के बग़ैर हों। 14 हर जानवर के साथ ग़ल्ला
की नज़र भी पेश करना जिस के लिए तेल से मिलाया
गया बेहतरीन मैदा इस्तेमाल किया जाए। हर बैल के
साथ साढे 4 किलोग्राम, हर मेंढे के साथ 3 किलोग्राम
15 और भेड़ के हर बच्चे के साथ डेढ़ किलोग्राम मैदा
पेश करना। 16 इस के इलावा एक बक्रा भी गुनाह
की क़ुर्बानी के तौर पर पेश करना। यह क़ुर्बानियाँ
रोज़ाना की भस्म होने वाली क़ुर्बानियों और उन के
साथ वाली ग़ल्ला और मै की नज़रों के इलावा हैं।
17–34 ईद के बाक़ी छः दिन यही क़ुर्बानियाँ पेश करनी

हैं। लेकिन हर दिन एक बैल कम हो यानी दूसरे दिन 12, तीसरे दिन 11, चौथे दिन 10, पाँचवें दिन 9, छटे दिन 8 और सातवें दिन 7 बैल। हर दिन गुनाह की क़ुर्बानी के लिए बक्रा और मामूल की रोज़ाना की क़ुर्बानियाँ भी पेश करना। [35] ईद के आठवें दिन काम न करना बल्कि मुक़द्दस इजतिमा के लिए इकट्ठे होना। [36] रब्ब को एक जवान बैल, एक मेंढा और भेड़ के सात यकसाला बच्चे भस्म होने वाली क़ुर्बानी के तौर पर पेश करना। इन की ख़ुश्बू रब्ब को पसन्द है। सब नुक़्स के बग़ैर हों। [37–38] साथ ही वह तमाम क़ुर्बानियाँ भी पेश करना जो पहले दिन पेश की जाती हैं। [39] यह सब वही क़ुर्बानियाँ हैं जो तुम्हें रब्ब को अपनी ईदों पर पेश करनी हैं। यह उन तमाम क़ुर्बानियों के इलावा हैं जो तुम दिली ख़ुशी से या मन्नत मान कर देते हो, चाहे वह भस्म होने वाली, ग़ल्ला की, मै की या सलामती की क़ुर्बानियाँ क्यूँ न हों।”

[40] मूसा ने रब्ब की यह तमाम हिदायात इस्राईलियों को बता दीं।

मन्नत मानने के क़वाइद

30 [1] फिर मूसा ने क़बीलों के सरदारों से कहा, “रब्ब फ़रमाता है,

[2] अगर कोई आदमी रब्ब को कुछ देने की मन्नत माने या किसी चीज़ से पर्हेज़ करने की क़सम खाए तो वह अपनी बात पर क़ाइम रह कर उसे पूरा करे।

[3] अगर कोई जवान औरत जो अब तक अपने बाप के घर में रहती है रब्ब को कुछ देने की मन्नत माने या किसी चीज़ से पर्हेज़ करने की क़सम खाए [4] तो लाज़िम है कि वह अपनी मन्नत या क़सम की हर बात पूरी करे। शर्त यह है कि उस का बाप उस के बारे में सुन कर एतिराज़ न करे। [5] लेकिन अगर उस का बाप यह सुन कर उसे ऐसा करने से मना करे तो उस की मन्नत या क़सम मन्सूख़ है, और वह उसे पूरा करने से बरी है। रब्ब उसे मुआफ़ करेगा, क्यूँकि उस के बाप ने उसे मना किया है।

[6] हो सकता है कि किसी ग़ैरशादीशुदा औरत ने मन्नत मानी या किसी चीज़ से पर्हेज़ करने की क़सम खाई, चाहे उस ने दानिस्ता तौर पर या बेसोचे-समझे ऐसा किया। इस के बाद उस औरत ने शादी कर ली। [7] शादीशुदा हालत में भी लाज़िम है कि वह अपनी मन्नत या क़सम की हर बात पूरी करे। शर्त यह है कि उस का शौहर इस के बारे में सुन कर एतिराज़ न करे। [8] लेकिन अगर उस का शौहर यह सुन कर उसे ऐसा करने से मना करे तो उस की मन्नत या क़सम मन्सूख़ है, और वह उसे पूरा करने से बरी है। रब्ब उसे मुआफ़ करेगा। [9] अगर किसी बेवा या तलाक़शुदा औरत ने मन्नत मानी या किसी चीज़ से पर्हेज़ करने की क़सम खाई तो लाज़िम है कि वह अपनी हर बात पूरी करे।

[10] अगर किसी शादीशुदा औरत ने मन्नत मानी या किसी चीज़ से पर्हेज़ करने की क़सम खाई [11] तो लाज़िम है कि वह अपनी हर बात पूरी करे। शर्त यह है कि उस का शौहर उस के बारे में सुन कर एतिराज़ न करे। [12] लेकिन अगर उस का शौहर उसे ऐसा करने से मना करे तो उस की मन्नत या क़सम मन्सूख़ है। वह उसे पूरा करने से बरी है। रब्ब उसे मुआफ़ करेगा, क्यूँकि उस के शौहर ने उसे मना किया है। [13] चाहे बीवी ने कुछ देने की मन्नत मानी हो या किसी चीज़ से पर्हेज़ करने की क़सम खाई हो, उस के शौहर को उस की तस्दीक़ या उसे मन्सूख़ करने का इख़तियार है। [14] अगर उस ने अपनी बीवी की मन्नत या क़सम के बारे में सुन लिया और अगले दिन तक एतिराज़ न किया तो लाज़िम है कि उस की बीवी अपनी हर बात पूरी करे। शौहर ने अगले दिन तक एतिराज़ न करने से अपनी बीवी की बात की तस्दीक़ की है। [15] अगर वह इस के बाद यह मन्नत या क़सम मन्सूख़ करे तो उसे इस क़ुसूर के नताइज भुगतने पड़ेंगे।”

[16] रब्ब ने मूसा को यह हिदायात दीं। यह ऐसी औरतों की मन्नतों या क़समों के उसूल हैं जो ग़ैरशादीशुदा हालत में अपने बाप के घर में रहती हैं या जो शादीशुदा हैं।

मिदियानियों से जंग

31 1 रब्ब ने मूसा से कहा, 2 “मिदियानियों से
इस्राईलियों का बदला ले। इस के बाद तू
कूच करके अपने बापदादा से जा मिलेगा।”
3 चुनाँचे मूसा ने इस्राईलियों से कहा, “हथियारों
से अपने कुछ आदमियों को लेस करो ताकि वह
मिदियान से जंग करके रब्ब का बदला लें। 4 हर
क़बीले के 1,000 मर्द जंग लड़ने के लिए भेजो।”
5 चुनाँचे हर क़बीले के 1,000 मुसल्लह मर्द यानी
कुल 12,000 आदमी चुने गए। 6 तब मूसा ने उन्हें जंग
लड़ने के लिए भेज दिया। उस ने इलीअज़र इमाम के
बेटे फ़ीन्हास को भी उन के साथ भेजा जिस के पास
मक़्दिस की कुछ चीज़ें और एलान करने के बिगल
थे। 7 उन्हों ने रब्ब के हुक्म के मुताबिक़ मिदियानियों
से जंग की और तमाम आदमियों को मौत के घाट
उतार दिया। 8 इन में मिदियानियों के पाँच बादशाह
इवी, रक़म, सूर, हूर और रबा थे। बलआम बिन
बओर को भी जान से मार दिया गया।
9 इस्राईलियों ने मिदियानी औरतों और बच्चों को
गिरिफ़्तार करके उन के तमाम गाय-बैल, भेड़-
बकरियाँ और माल लूट लिया। 10 उन्हों ने उन की
तमाम आबादियों को ख़ैमागाहों समेत जला कर राख
कर दिया। 11–12 फिर वह तमाम लूटा हुआ माल
क़ैदियों और जानवरों समेत मूसा, इलीअज़र इमाम
और इस्राईल की पूरी जमाअत के पास ले आए
जो ख़ैमागाह में इन्तिज़ार कर रहे थे। अभी तक
वह मोआब के मैदानी इलाक़े में दरया-ए-यर्दन के
मशरिक़ी किनारे पर यरीहू के सामने ठहरे हुए थे।
13 मूसा, इलीअज़र और जमाअत के तमाम सरदार
उन का इस्तिक़बाल करने के लिए ख़ैमागाह से
निकले।
14 उन्हें देख कर मूसा को हज़ार हज़ार और सौ
सौ अफ़राद पर मुक़र्रर अफ़सरान पर ग़ुस्सा आया।
15 उस ने कहा, “आप ने तमाम औरतों को क्यूँ बचाए
रखा? 16 उन ही ने बलआम के मश्वरे पर फ़ग़ूर में
इस्राईलियों को रब्ब से दूर कर दिया था। उन ही
के सबब से रब्ब की वबा उस के लोगों में फैल
गई। 17 चुनाँचे अब तमाम लड़कों को जान से मार
दो। उन तमाम औरतों को भी मौत के घाट उतारना
जो कुंवारियाँ नहीं हैं। 18 लेकिन तमाम कुंवारियों को
बचाए रखना। 19 जिस ने भी किसी को मार दिया या
किसी लाश को छुआ है वह सात दिन तक ख़ैमागाह
के बाहर रहे। तीसरे और सातवें दिन अपने आप
को अपने क़ैदियों समेत गुनाह से पाक-साफ़ करना।
20 हर लिबास और हर चीज़ को पाक-साफ़ करना
जो चमड़े, बकरियों के बालों या लकड़ी की हो।”
21 फिर इलीअज़र इमाम ने जंग से वापस आने वाले
मर्दों से कहा, “जो शरीअत रब्ब ने मूसा को दी उस
के मुताबिक़ 22–23 जो भी चीज़ जल नहीं जाती उसे
आग में से गुज़ार देना ताकि पाक-साफ़ हो जाए।
उस में सोना, चाँदी, पीतल, लोहा, टीन और सीसा
शामिल है। फिर उस पर नापाकी दूर करने का पानी
छिड़कना। बाक़ी तमाम चीज़ें पानी में से गुज़ार देना
ताकि वह पाक-साफ़ हो जाएँ। 24 सातवें दिन अपने
लिबास को धोना तो तुम पाक-साफ़ हो कर ख़ैमागाह
में दाख़िल हो सकते हो।”

लूटे हुए माल की तक़्सीम

25 रब्ब ने मूसा से कहा, 26 “तमाम क़ैदियों और लूटे
हुए जानवरों को गिन। इस में इलीअज़र इमाम और
क़बाइली कुंबों के सरपरस्त तेरी मदद करें। 27 सारा
माल दो बराबर के हिस्सों में तक़्सीम करना, एक
हिस्सा फ़ौजियों के लिए और दूसरा बाक़ी जमाअत
के लिए हो। 28 फ़ौजियों के हिस्से के पाँच पाँच सौ
क़ैदियों में से एक एक निकाल कर रब्ब को देना।
इसी तरह पाँच पाँच सौ बैलों, गधों, भेड़ों और
बकरियों में से एक एक निकाल कर रब्ब को देना।
29 उन्हें इलीअज़र इमाम को देना ताकि वह उन्हें
रब्ब को उठाने वाली क़ुर्बानी के तौर पर पेश करे।
30 बाक़ी जमाअत के हिस्से के पचास पचास क़ैदियों
में से एक एक निकाल कर रब्ब को देना, इसी तरह

पचास पचास बैलों, गधों, भेड़ों और बक्रियों या दूसरे जानवरों में से भी एक एक निकाल कर रब्ब को देना। उन्हें उन लावियों को देना जो रब्ब के मक़्दिस को सँभालते हैं।”

31 मूसा और इलीअज़र ने ऐसा ही किया। 32–34 उन्हों ने 6,75,000 भेड़-बक्रियाँ, 72,000 गाय-बैल और 61,000 गधे गिने। 35 इन के इलावा 32,000 क़ैदी कुंवारियाँ भी थीं। 36–40 फ़ौजियों को तमाम चीज़ों का आधा हिस्सा मिल गया यानी 3,37,500 भेड़-बक्रियाँ, 36,000 गाय-बैल, 30,500 गधे और 16,000 क़ैदी कुंवारियाँ। इन में से उन्हों ने 675 भेड़-बक्रियाँ, 72 गाय-बैल, 61 गधे और 32 लड़कियाँ रब्ब को दीं। 41 मूसा ने रब्ब का यह हिस्सा इलीअज़र इमाम को उठाने वाली क़ुर्बानी के तौर पर दे दिया, जिस तरह रब्ब ने हुक्म दिया था। 42–47 बाक़ी जमाअत को भी लूटे हुए माल का आधा हिस्सा मिल गया। मूसा ने पचास पचास क़ैदियों और जानवरों में से एक एक निकाल कर उन लावियों को दे दिया जो रब्ब का मक़्दिस सँभालते थे। उस ने वैसा ही किया जैसा रब्ब ने हुक्म दिया था।

48 फिर वह अफ़्सर मूसा के पास आए जो लश्कर के हज़ार हज़ार और सौ सौ आदमियों पर मुक़र्रर थे। 49 उन्हों ने उस से कहा, “आप के ख़ादिमों ने उन फ़ौजियों को गिन लिया है जिन पर वह मुक़र्रर हैं, और हमें पता चल गया कि एक भी कम नहीं हुआ। 50 इस लिए हम रब्ब को सोने का तमाम ज़ेवर क़ुर्बान करना चाहते हैं जो हमें फ़त्ह पाने पर मिला था मसलन सोने के बाज़ूबन्द, कंगन, मुहर लगाने की अंगूठियाँ, बालियाँ और हार। यह सब कुछ हम रब्ब को पेश करना चाहते हैं ताकि रब्ब के सामने हमारा कफ़्फ़ारा हो जाए।”

51 मूसा और इलीअज़र इमाम ने सोने की तमाम चीज़ें उन से ले लीं। 52 जो चीज़ें उन्हों ने अफ़्सरान के लूटे हुए माल में से रब्ब को उठाने वाली क़ुर्बानी के तौर पर पेश कीं उन का पूरा वज़न तक़्रीबन 190 किलोग्राम था। 53 सिर्फ़ अफ़्सरान ने ऐसा किया। बाक़ी फ़ौजियों ने अपना लूट का माल अपने लिए रख लिया। 54 मूसा और इलीअज़र अफ़्सरान का यह सोना मुलाक़ात के ख़ैमे में ले आए ताकि वह रब्ब को उस की क़ौम की याद दिलाता रहे।

दरया-ए-यर्दन के मशरिक़ी किनारे पर आबाद क़बीले

32 1 रूबिन और जद के क़बीलों के पास बहुत से मवेशी थे। जब उन्हों ने देखा कि याज़ेर और जिलिआद का इलाक़ा मवेशी पालने के लिए अच्छा है 2 तो उन्हों ने मूसा, इलीअज़र इमाम और जमाअत के राहनुमाओं के पास आ कर कहा, 3–4 “जिस इलाक़े को रब्ब ने इस्राईल की जमाअत के आगे आगे शिकस्त दी है वह मवेशी पालने के लिए अच्छा है। अतारात, दीबोन, याज़ेर, निम्रा, हस्बोन, इलीआली, सबाम, नबू और बऊन जो इस में शामिल हैं हमारे काम आएँगे, क्यूँकि आप के ख़ादिमों के पास मवेशी हैं। 5 अगर आप की नज़र-ए-करम हम पर हो तो हमें यह इलाक़ा दिया जाए। यह हमारी मिल्कियत बन जाए और हमें दरया-ए-यर्दन को पार करने पर मज्बूर न किया जाए।”

6 मूसा ने जद और रूबिन के अफ़राद से कहा, “क्या तुम यहाँ पीछे रह कर अपने भाइयों को छोड़ना चाहते हो जब वह जंग लड़ने के लिए आगे निकलेंगे? 7 उस वक़्त जब इस्राईली दरया-ए-यर्दन को पार करके उस मुल्क में दाख़िल होने वाले हैं जो रब्ब ने उन्हें दिया है तो तुम क्यूँ उन की हौसलाशिकनी कर रहे हो? 8 तुम्हारे बापदादा ने भी यही कुछ किया जब मैं ने उन्हें क़ादिस-बर्नीअ से मुल्क के बारे में मालूमात हासिल करने के लिए भेजा। 9 इस्काल की वादी में पहुँच कर मुल्क की तफ़्तीश करने के बाद उन्हों ने इस्राईलियों की हौसलाशिकनी की ताकि वह उस मुल्क में दाख़िल न हों जो रब्ब ने उन्हें दिया था। 10 उस दिन रब्ब ने ग़ुस्से में आ कर क़सम खाई, 11 ‘उन आदमियों में से जो मिस्र से निकल आए हैं कोई उस मुल्क को नहीं देखेगा जिस का वादा मैं ने क़सम खा कर इब्राहीम, इस्हाक़ और याक़ूब से

किया था। क्यूँकि उन्हों ने पूरी वफ़ादारी से मेरी पैरवी
न की। सिर्फ़ वह जिन की उम्र उस वक़्त 20 साल से
कम है दाख़िल होंगे। [12] बुज़ुर्गों में से सिर्फ़ कालिब
बिन यफ़ुन्ना क़निज़्ज़ी और यशूअ बिन नून मुल्क में
दाख़िल होंगे, इस लिए कि उन्हों ने पूरी वफ़ादारी
से मेरी पैरवी की।' [13] उस वक़्त रब्ब का ग़ज़ब उन
पर आन पड़ा, और उन्हें 40 साल तक रेगिस्तान में
मारे मारे फिरना पड़ा, जब तक कि वह तमाम नसल
ख़त्म न हो गई जिस ने उस के नज़्दीक ग़लत काम
किया था। [14] अब तुम गुनाहगारों की औलाद अपने
बापदादा की जगह खड़े हो कर रब्ब का इस्राईल
पर ग़ुस्सा मज़ीद बढ़ा रहे हो। [15] अगर तुम उस की
पैरवी से हटोगे तो वह दुबारा इन लोगों को रेगिस्तान
में रहने देगा, और तुम इन की हलाकत का बाइस
बनोगे।"

[16] इस के बाद रूबिन और जद के अफ़राद दुबारा
मूसा के पास आए और कहा, "हम यहाँ फ़िलहाल
अपने मवेशी के लिए बाड़े और अपने बाल-बच्चों
के लिए शहर बनाना चाहते हैं। [17] इस के बाद हम
मुसल्लह हो कर इस्राईलियों के आगे आगे चलेंगे और
हर एक को उस की अपनी जगह तक पहुँचाएँगे।
इतने में हमारे बाल-बच्चे हमारे शहरों की फ़सीलों के
अन्दर मुल्क के मुख़ालिफ़ बाशिन्दों से महफ़ूज़ रहेंगे।
[18] हम उस वक़्त तक अपने घरों को नहीं लौटेंगे
जब तक हर इस्राईली को उस की मौरूसी ज़मीन
न मिल जाए। [19] दूसरे, हम ख़ुद उन के साथ दरया-ए-
यर्दन के मग़रिब में मीरास में कुछ नहीं पाएँगे, क्यूँकि
हमें अपनी मौरूसी ज़मीन दरया-ए-यर्दन के मशरिक़ी
किनारे पर मिल चुकी है।"

[20] यह सुन कर मूसा ने कहा, "अगर तुम ऐसा ही
करोगे तो ठीक है। फिर रब्ब के सामने जंग के लिए
तय्यार हो जाओ [21] और सब हथियार बाँध कर रब्ब
के सामने दरया-ए-यर्दन को पार करो। उस वक़्त
तक न लौटो जब तक रब्ब ने अपने तमाम दुश्मनों
को अपने आगे से निकाल न दिया हो। [22] फिर जब
मुल्क पर रब्ब का क़ब्ज़ा हो गया होगा तो तुम लौट
सकोगे। तब तुम ने रब्ब और अपने हमवतन भाइयों
के लिए अपने फ़राइज़ अदा कर दिए होंगे, और यह
इलाक़ा रब्ब के सामने तुम्हारा मौरूसी हक़ होगा।
[23] लेकिन अगर तुम ऐसा न करो तो फिर तुम रब्ब ही
का गुनाह करोगे। यक़ीन जानो तुम्हें अपने गुनाह की
सज़ा मिलेगी। [24] अब अपने बाल-बच्चों के लिए शहर
और अपने मवेशियों के लिए बाड़े बना लो। लेकिन
अपने वादे को ज़रूर पूरा करना।"

[25] जद और रूबिन के अफ़राद ने मूसा से कहा,
"हम आप के ख़ादिम हैं, हम अपने आक़ा के हुक्म
के मुताबिक़ ही करेंगे। [26] हमारे बाल-बच्चे और मवेशी
यहीं जिलिआद के शहरों में रहेंगे। [27] लेकिन आप के
ख़ादिम मुसल्लह हो कर दरया को पार करेंगे और रब्ब
के सामने जंग करेंगे। हम सब कुछ वैसा ही करेंगे
जैसा हमारे आक़ा ने हमें हुक्म दिया है।"

[28] तब मूसा ने इलीअज़र इमाम, यशूअ बिन नून
और क़बाइली कुंबों के सरपरस्तों को हिदायत दी,
[29] "लाज़िम है कि जद और रूबिन के मर्द मुसल्लह
हो कर तुम्हारे साथ ही रब्ब के सामने दरया-ए-यर्दन
को पार करें और मुल्क पर क़ब्ज़ा करें। अगर वह
ऐसा करें तो उन्हें मीरास में जिलिआद का इलाक़ा
दो। [30] लेकिन अगर वह ऐसा न करें तो फिर उन्हें
मुल्क-ए-कनआन ही में तुम्हारे साथ मौरूसी ज़मीन
मिले।"

[31] जद और रूबिन के अफ़राद ने इस्रार किया,
"आप के ख़ादिम सब कुछ करेंगे जो रब्ब ने कहा
है। [32] हम मुसल्लह हो कर रब्ब के सामने दरया-
ए-यर्दन को पार करेंगे और कनआन के मुल्क में
दाख़िल होंगे, अगरचि हमारी मौरूसी ज़मीन यर्दन
के मशरिक़ी किनारे पर होगी।"

[33] तब मूसा ने जद, रूबिन और मनस्सी के आधे
क़बीले को यह इलाक़ा दिया। उस में वह पूरा मुल्क
शामिल था जिस पर पहले अमोरियों का बादशाह
सीहोन और बसन का बादशाह ओज हुकूमत करते
थे। इन शिकस्तख़ुर्दा ममालिक के दीहात समेत
तमाम शहर उन के हवाले किए गए।

34 जद के क़बीले ने दीबोन, अतारात, अरोईर,
35 अतरात-शोफ़ान, याज़ेर, युगबहा, 36 बैत-निम्रा
और बैत-हारान के शहरों को दुबारा तामीर किया।
उन्हों ने उन की फ़सीलें बनाईं और अपने मवेशियों
के लिए बाड़े भी। 37 रूबिन के क़बीले ने हस्बोन,
इलीआली, क़िर्यताइम, 38 नबू, बाल-मऊन और
सिब्माह दुबारा तामीर किए। नबू और बाल-मऊन
के नाम बदल गए, क्यूँकि उन्हों ने उन शहरों को नए
नाम दिए जो उन्हों ने दुबारा तामीर किए।
39 मनस्सी के बेटे मकीर की औलाद ने जिलिआद
जा कर उस पर क़ब्ज़ा कर लिया और उस के तमाम
अमोरी बाशिन्दों को निकाल दिया। 40 चुनाँचे मूसा
ने मकीरियों को जिलिआद की सरज़मीन दे दी, और
वह वहाँ आबाद हुए। 41 मनस्सी के एक आदमी
बनाम याईर ने उस इलाक़े में कुछ बस्तियों पर क़ब्ज़ा
करके उन्हें हव्वोत-याईर यानी 'याईर की बस्तियाँ'
का नाम दिया। 42 इसी तरह उस क़बीले के एक और
आदमी बनाम नूबह ने जा कर क़नात और उस के
दीहात पर क़ब्ज़ा कर लिया। उस ने शहर का नाम
नूबह रखा।

इस्राईल के सफ़र के मर्हले

33 1 ज़ैल में उन जगहों के नाम हैं जहाँ जहाँ
इस्राईली क़बीले अपने दस्तों के मुताबिक़
मूसा और हारून की राहनुमाई में मिस्र से निकल कर
ख़ैमाज़न हुए थे। 2 रब्ब के हुक्म पर मूसा ने हर जगह
का नाम क़लमबन्द किया जहाँ उन्हों ने अपने ख़ैमे
लगाए थे। उन जगहों के नाम यह हैं :
3 पहले महीने के पंद्रहवें दिन इस्राईली रामसीस
से रवाना हुए। यानी फ़सह के दिन के बाद के दिन
वह बड़े इख़तियार के साथ तमाम मिस्रियों के देखते
देखते चले गए। 4 मिस्री उस वक़्त अपने पहलौठों
को दफ़न कर रहे थे, क्यूँकि रब्ब ने पहलौठों को
मार कर उन के देवताओं की अदालत की थी।
5 रामसीस से इस्राईली सुक्कात पहुँच गए जहाँ उन्हों
ने पहली मर्तबा अपने डेरे लगाए। 6 वहाँ से वह एताम
पहुँचे जो रेगिस्तान के किनारे पर वाक़े है। 7 एताम
से वह वापस मुड़ कर फ़ी-हख़ीरोत की तरफ़ बढ़े जो
बाल-सफ़ोन के मशरिक़ में है। वह मिज्दाल के क़रीब
ख़ैमाज़न हुए। 8 फिर वह फ़ी-हख़ीरोत से कूच करके
समुन्दर में से गुज़र गए। इस के बाद वह तीन दिन
एताम के रेगिस्तान में सफ़र करते करते मारा पहुँच
गए और वहाँ अपने ख़ैमे लगाए। 9 मारा से वह एलीम
चले गए जहाँ 12 चश्मे और खजूर के 70 दरख़्त थे।
वहाँ ठहरने के बाद 10 वह बहर-ए-क़ुल्ज़ुम के साहिल
पर ख़ैमाज़न हुए, 11 फिर दश्त-ए-सीन में पहुँच गए।
12 उन के अगले मर्हले यह थे : दुफ़्क़ा,
13–37 अलूस, रफ़ीदीम जहाँ पीने का पानी दस्तयाब
न था, दश्त-ए-सीना, क़ब्रोत-हत्तावा, हसीरात, रित्मा,
रिम्मोन-फ़ारस, लिब्ना, रिस्सा, क़हीलाता, साफ़र
पहाड़, हरादा, मक़हीलोत, तहत, तारह, मितक़ा,
हश्मूना, मौसीरोत, बनी-याक़ान, होर-हज्जिदजाद,
युत्बाता, अब्रूना, अस्यून-जाबर, दश्त-ए-सीन में वाक़े
क़ादिस और होर पहाड़ जो अदोम की सरहद्द पर
वाक़े है।
38 वहाँ रब्ब ने हारून इमाम को हुक्म दिया कि
वह होर पहाड़ पर चढ़ जाए। वहीं वह पाँचवें माह
के पहले दिन फ़ौत हुआ। इस्राईलियों को मिस्र से
निकले 40 साल गुज़र चुके थे। 39 उस वक़्त हारून
123 साल का था।
40 उन दिनों में अराद के कनआनी बादशाह ने सुना
कि इस्राईली मेरे मुल्क की तरफ़ बढ़ रहे हैं। वह
कनआन के जुनूब में हुकूमत करता था।
41–47 होर पहाड़ से रवाना हो कर इस्राईली ज़ैल
की जगहों पर ठहरे : ज़ल्मूना, फ़ूनोन, ओबोत,
अय्ये-अबारीम जो मोआब के इलाक़े में था, दीबोन-
जद, अल्मून-दिब्लाताइम और नबू के क़रीब वाक़े
अबारीम का पहाड़ी इलाक़ा। 48 वहाँ से उन्हों ने
यर्दन की वादी में उतर कर मोआब के मैदानी इलाक़े
में अपने डेरे लगाए। अब वह दरया-ए-यर्दन के
मशरिक़ी किनारे पर यरीहू शहर के सामने थे। 49 उन

के ख़ैमे बैत-यसीमोत से ले कर अबील-शित्तीम तक लगे थे।

तमाम कनआनी बाशिन्दों को निकालने का हुक्म

50 वहाँ रब्ब ने मूसा से कहा, 51 “इस्राईलियों को बताना कि जब तुम दरया-ए-यर्दन को पार करके मुल्क-ए-कनआन में दाख़िल होगे 52 तो लाज़िम है कि तुम तमाम बाशिन्दों को निकाल दो। उन के तराशे और ढाले हुए बुतों को तोड़ डालो और उन की ऊँची जगहों के मन्दिरों को तबाह करो। 53 मुल्क पर क़ब्ज़ा करके उस में आबाद हो जाओ, क्यूँकि मैं ने यह मुल्क तुम्हें दे दिया है। यह मेरी तरफ़ से तुम्हारी मौरूसी मिल्कियत है। 54 मुल्क को मुख़्तलिफ़ क़बीलों और ख़ान्दानों में क़ुरआ डाल कर तक़्सीम करना। हर ख़ान्दान के अफ़राद की तादाद का लिहाज़ रखना। बड़े ख़ान्दान को निस्बतन ज़ियादा ज़मीन देना और छोटे ख़ान्दान को निस्बतन कम ज़मीन। 55 लेकिन अगर तुम मुल्क के बाशिन्दों को नहीं निकालोगे तो बचे हुए तुम्हारी आँखों में ख़ार और तुम्हारे पहलूओं में काँटे बन कर तुम्हें उस मुल्क में तंग करेंगे जिस में तुम आबाद होगे। 56 फिर मैं तुम्हारे साथ वह कुछ करूँगा जो उन के साथ करना चाहता हूँ।”

मुल्क-ए-कनआन की सरहद्दें

34 1 रब्ब ने मूसा से कहा, 2 “इस्राईलियों को बताना कि जब तुम उस मुल्क में दाख़िल होगे जो मैं तुमहें मीरास में दूँगा तो उस की सरहद्दें यह होंगी :

3 उस की जुनूबी सरहद्द दश्त-ए-सीन में अदोम की सरहद्द के साथ साथ चलेगी। मशरिक़ में वह बहीरा-ए-मुर्दार के जुनूबी साहिल से शुरू होगी, फिर इन जगहों से हो कर मग़रिब की तरफ़ गुज़रेगी : 4 दर्रा-ए-अक़्रब्बीम के जुनूब में से, दश्त-ए-सीन में से, क़ादिस-बर्नीअ के जुनूब में से हसर-अद्दार और अज़्मून में से। 5 वहाँ से वह मुड़ कर मिस्र की सरहद्द पर वाक़े वादी-ए-मिस्र के साथ साथ बहीरा-ए-रूम तक पहुँचेगी। 6 उस की मग़रिबी सरहद्द बहीरा-ए-रूम का साहिल होगा। 7 उस की शिमाली सरहद्द बहीरा-ए-रूम से ले कर इन जगहों से हो कर मशरिक़ की तरफ़ गुज़रेगी : होर पहाड़, 8 लबो-हमात, सिदाद, 9 ज़िफ़्रून और हसर-एनान। हसर-एनान शिमाली सरहद्द का सब से मशरिक़ी मक़ाम होगा। 10 उस की मशरिक़ी सरहद्द शिमाल में हसर-एनान से शुरू होगी। फिर वह इन जगहों से हो कर जुनूब की तरफ़ गुज़रेगी : सिफ़ाम, 11 रिब्ला जो ऐन के मशरिक़ में है और किन्नरत यानी गलील की झील के मशरिक़ में वाक़े पहाड़ी इलाक़ा। 12 इस के बाद वह दरया-ए-यर्दन के किनारे किनारे गुज़रती हुई बहीरा-ए-मुर्दार तक पहुँचेगी। यह तुम्हारे मुल्क की सरहद्दें होंगी।”

13 मूसा ने इस्राईलियों से कहा, “यह वही मुल्क है जिसे तुम्हें क़ुरआ डाल कर तक़्सीम करना है। रब्ब ने हुक्म दिया है कि उसे बाक़ी साढे नौ क़बीलों को देना है। 14 क्यूँकि अढ़ाई क़बीलों के ख़ान्दानों को उन की मीरास मिल चुकी है यानी रूबिन और जद के पूरे क़बीले और मनस्सी के आधे क़बीले को। 15 उन्हें यहाँ, दरया-ए-यर्दन के मशरिक़ में यरीहू के सामने ज़मीन मिल चुकी है।”

मुल्क तक़्सीम करने के ज़िम्मादार आदमी

16 रब्ब ने मूसा से कहा, 17 “इलीअज़र इमाम और यशूअ बिन नून लोगों के लिए मुल्क तक़्सीम करें। 18 हर क़बीले के एक एक राहनुमा को भी चुनना ताकि वह तक़्सीम करने में मदद करे। जिन को तुम्हें चुनना है उन के नाम यह हैं :

19 यहूदाह के क़बीले का कालिब बिन यफ़ुन्ना,
20 शमाऊन के क़बीले का समूएल बिन अम्मीहूद,
21 बिन्यमीन के क़बीले का इलीदाद बिन किस्लोन,
22 दान के क़बीले का बुक़्क़ी बिन युगली,
23 मनस्सी के क़बीले का हन्नीएल बिन अफ़ूद,
24 इफ़्राईम के क़बीले का क़मूएल बिन सिफ़्तान,

25 ज़बूलून के क़बीले का इलीसफ़न बिन फ़र्नाक़,
26 इश्कार के क़बीले का फ़ल्तीएल बिन अज़्ज़ान,
27 आशर के क़बीले का अख़ीहूद बिन शलूमी,
28 नफ़ताली के क़बीले का फ़िदाहेल बिन
अम्मीहूद।”
29 रब्ब ने इन ही आदमियों को मुल्क को
इस्राईलियों में तक़सीम करने की ज़िम्मादारी दी।

लावियों के लिए शहर

35 1 इस्राईली अब तक मोआब के मैदानी
इलाक़े में दरया-ए-यर्दन के मशरिक़ी
किनारे पर यरीहू के सामने थे। वहाँ रब्ब ने मूसा
से कहा,
2 “इस्राईलियों को बता दे कि वह लावियों को
अपनी मिली हुई ज़मीनों में से रहने के लिए शहर
दें। उन्हें शहरों के इर्दगिर्द मवेशी चराने की ज़मीन भी
मिले। 3 फिर लावियों के पास रहने के लिए शहर और
अपने जानवर चराने के लिए ज़मीन होगी। 4 चराने के
लिए ज़मीन शहर के इर्दगिर्द होगी, और चारों तरफ़
का फ़ासिला फ़सीलों से 1,500 फ़ुट हो। 5 चराने की
यह ज़मीन मुरब्बा शक्ल की होगी जिस के हर पहलू
का फ़ासिला 3,000 फ़ुट हो। शहर इस मुरब्बा शक्ल
के बीच में हो। यह रक़बा शहर के बाशिन्दों के लिए
हो ताकि वह अपने मवेशी चरा सकें।

ग़ैरइरादी ख़ूँरेज़ी के लिए पनाह के शहर

6–7 “लावियों को कुल 48 शहर देना। इन में से छः
पनाह के शहर मुक़र्रर करना। उन में ऐसे लोग पनाह
ले सकेंगे जिन के हाथों ग़ैरइरादी तौर पर कोई हलाक
हुआ हो। 8 हर क़बीला लावियों को अपने इलाक़े के
रक़बे के मुताबिक़ शहर दे। जिस क़बीले का इलाक़ा
बड़ा है उसे लावियों को ज़ियादा शहर देने हैं जबकि
जिस क़बीले का इलाक़ा छोटा है वह लावियों को
कम शहर दे।”
9 फिर रब्ब ने मूसा से कहा, 10 “इस्राईलियों को
बताना कि दरया-ए-यर्दन को पार करने के बाद
11 कुछ पनाह के शहर मुक़र्रर करना। उन में वह
शख़्स पनाह ले सकेगा जिस के हाथों ग़ैरइरादी तौर
पर कोई हलाक हुआ हो। 12 वहाँ वह इन्तिक़ाम लेने
वाले से पनाह ले सकेगा और जमाअत की अदालत
के सामने खड़े होने से पहले मारा नहीं जा सकेगा।
13 इस के लिए छः शहर चुन लो। 14 तीन दरया-ए-
यर्दन के मशरिक़ में और तीन मुल्क-ए-कनआन में
हों। 15 यह छः शहर हर किसी को पनाह देंगे, चाहे
वह इस्राईली, परदेसी या उन के दर्मियान रहने वाला
ग़ैरशहरी हो। जिस से भी ग़ैरइरादी तौर पर कोई
हलाक हुआ हो वह वहाँ पनाह ले सकता है।
16–18 अगर किसी ने किसी को जान-बूझ कर लोहे,
पत्थर या लकड़ी की किसी चीज़ से मार डाला हो वह
क़ातिल है और उसे सज़ा-ए-मौत देनी है। 19 मक़्तूल
का सब से क़रीबी रिश्तेदार उसे तलाश करके मार
दे। 20–21 क्यूँकि जो नफ़रत या दुश्मनी के बाइस जान-
बूझ कर किसी को यूँ धक्का दे, उस पर कोई चीज़
फैंक दे या उसे मुक्का मारे कि वह मर जाए वह क़ातिल
है और उसे सज़ा-ए-मौत देनी है।
22 लेकिन वह क़ातिल नहीं है जिस से दुश्मनी के
बाइस नहीं बल्कि इत्तिफ़ाक़ से और ग़ैरइरादी तौर
पर कोई हलाक हुआ हो, चाहे उस ने उसे धक्का
दिया, कोई चीज़ उस पर फैंक दी 23 या कोई पत्थर
उस पर गिरने दिया। 24 अगर ऐसा हुआ तो लाज़िम
है कि जमाअत इन हिदायात के मुताबिक़ उस के
और इन्तिक़ाम लेने वाले के दर्मियान फ़ैसला करे।
25 अगर मुल्ज़िम बेक़ुसूर है तो जमाअत उस की
हिफ़ाज़त करके उसे पनाह के उस शहर में वापस ले
जाए जिस में उस ने पनाह ली है। वहाँ वह मुक़द्दस
तेल से मसह किए गए इमाम-ए-आज़म की मौत तक
रहे। 26 लेकिन अगर यह शख़्स इस से पहले पनाह के
शहर से निकले तो वह महफ़ूज़ नहीं होगा। 27 अगर
उस का इन्तिक़ाम लेने वाले से सामना हो जाए तो
इन्तिक़ाम लेने वाले को उसे मार डालने की इजाज़त
होगी। अगर वह ऐसा करे तो बेक़ुसूर रहेगा। 28 पनाह
लेने वाला इमाम-ए-आज़म की वफ़ात तक पनाह के

शहर में रहे। इस के बाद ही वह अपने घर वापस जा सकता है। 29यह उसूल दाइमी हैं। जहाँ भी तुम रहते हो तुम्हें हमेशा इन पर अमल करना है।

30जिस पर क़त्ल का इल्ज़ाम लगाया गया हो उसे सिर्फ़ इस सूरत में सज़ा-ए-मौत दी जा सकती है कि कम अज़ कम दो गवाह हों। एक गवाह काफ़ी नहीं है।

31क़ातिल को ज़रूर सज़ा-ए-मौत देना। ख़्वाह वह इस से बचने के लिए कोई भी मुआवज़ा दे उसे आज़ाद न छोड़ना बल्कि सज़ा-ए-मौत देना। 32उस शख़्स से भी पैसे क़बूल न करना जिस से ग़ैरइरादी तौर पर कोई हलाक हुआ हो और जो इस सबब से पनाह के शहर में रह रहा है। उसे इजाज़त नहीं कि वह पैसे दे कर पनाह का शहर छोड़े और अपने घर वापस चला जाए। लाज़िम है कि वह इस के लिए इमाम-ए-आज़म की वफ़ात का इन्तिज़ार करे।

33जिस मुल्क में तुम रहते हो उस की मुक़द्दस हालत को नापाक न करना। जब किसी को उस में क़त्ल किया जाए तो वह नापाक हो जाता है। जब इस तरह ख़ून बहता है तो मुल्क की मुक़द्दस हालत सिर्फ़ उस शख़्स के ख़ून बहने से बहाल हो जाती है जिस ने यह ख़ून बहाया है। यानी मुल्क का सिर्फ़ क़ातिल की मौत से ही कफ़्फ़ारा दिया जा सकता है। 34उस मुल्क को नापाक न करना जिस में तुम आबाद हो और मैं सुकूनत करता हूँ। क्यूँकि मैं रब्ब हूँ जो इस्राईलियों के दर्मियान सुकूनत करता हूँ।"

एक क़बीले की मौरूसी ज़मीन शादी से दूसरे क़बीले में मुन्तक़िल नहीं हो सकती

36 1एक दिन जिलिआद बिन मकीर बिन मनस्सी बिन यूसुफ़ के कुंबे से निकले हुए आबाई घरानों के सरपरस्त मूसा और उन सरदारों के पास आए जो दीगर आबाई घरानों के सरपरस्त थे। 2उन्हों ने कहा, "रब्ब ने आप को हुक्म दिया था कि आप क़ुरआ डाल कर मुल्क को इस्राईलियों में तक़्सीम करें। उस वक़्त उस ने यह भी कहा था कि हमारे भाई सिलाफ़िहाद की बेटियों को उस की मौरूसी ज़मीन मिलनी है। 3अगर वह इस्राईल के किसी और क़बीले के मर्दों से शादी करें तो फिर यह ज़मीन जो हमारे क़बीले का मौरूसी हिस्सा है उस क़बीले का मौरूसी हिस्सा बनेगी और हम उस से महरूम हो जाएँगे। फिर हमारा क़बाइली इलाक़ा छोटा हो जाएगा। 4और अगर हम यह ज़मीन वापस भी ख़रीदें तो भी वह अगले बहाली के साल में दूसरे क़बीले को वापस चली जाएगी जिस में इन औरतों ने शादी की है। इस तरह वह हमेशा के लिए हमारे हाथ से निकल जाएगी।"

5मूसा ने रब्ब के हुक्म पर इस्राईलियों को बताया, "जिलिआद के मर्द हक़-ब-जानिब हैं। 6इस लिए रब्ब की हिदायत यह है कि सिलाफ़िहाद की बेटियों को हर आदमी से शादी करने की इजाज़त है, लेकिन सिर्फ़ इस सूरत में कि वह उन के अपने क़बीले का हो। 7इस तरह एक क़बीले की मौरूसी ज़मीन किसी दूसरे क़बीले में मुन्तक़िल नहीं होगी। लाज़िम है कि हर क़बीले का पूरा इलाक़ा उसी के पास रहे।

8जो भी बेटी मीरास में ज़मीन पाती है उस के लिए लाज़िम है कि वह अपने ही क़बीले के किसी मर्द से शादी करे ताकि उस की ज़मीन क़बीले के पास ही रहे। 9एक क़बीले की मौरूसी ज़मीन किसी दूसरे क़बीले को मुन्तक़िल करने की इजाज़त नहीं है। लाज़िम है कि हर क़बीले का पूरा मौरूसी इलाक़ा उसी के पास रहे।"

10–11सिलाफ़िहाद की बेटियों महलाह, तिर्ज़ा, हुज्लाह, मिल्काह और नूआह ने वैसा ही किया जैसा रब्ब ने मूसा को बताया था। उन्हों ने अपने चचाज़ाद भाइयों से शादी की। 12चूँकि वह भी मनस्सी के क़बीले के थे इस लिए यह मौरूसी ज़मीन सिलाफ़िहाद के क़बीले के पास रही।

13रब्ब ने यह अह्काम और हिदायात इस्राईलियों को मूसा की मारिफ़त दीं जब वह मोआब के मैदानी इलाक़े में दरया-ए-यर्दन के मशरिक़ी किनारे पर यरीहू के सामने ख़ैमाज़न थे।

इस्तिस्ना

मूसा इस्राईलियों से मुख़ातिब होता है

1 1 इस किताब में वह बातें दर्ज हैं जो मूसा ने
तमाम इस्राईलियों से कहीं जब वह दरया-ए-
यर्दन के मशरिक़ी किनारे पर बियाबान में थे। वह
यर्दन की वादी में सूफ़ के क़रीब थे। एक तरफ़ फ़ारान
शहर था और दूसरी तरफ़ तोफ़ल, लाबन, हसीरात
और दीज़हब के शहर थे। 2 अगर अदोम के पहाड़ी
इलाक़े से हो कर जाएँ तो होरिब यानी सीना पहाड़
से क़ादिस-बर्नीअ तक का सफ़र 11 दिन में तै किया
जा सकता है।

3 इस्राईलियों को मिस्र से निकले 40 साल हो गए
थे। इस साल के ग्यारवें माह के पहले दिन मूसा ने
उन्हें सब कुछ बताया जो रब्ब ने उसे उन्हें बताने
को कहा था। 4 उस वक़्त वह अमोरियों के बादशाह
सीहोन को शिकस्त दे चुका था जिस का दार-उल-
हकूमत हस्बोन था। बसन के बादशाह ओज पर भी
फ़त्ह हासिल हो चुकी थी जिस की हुकूमत के मर्कज़
अस्तारात और इद्रई थे।

5 वहाँ, दरया-ए-यर्दन के मशरिक़ी किनारे पर जो
मोआब के इलाक़े में था मूसा अल्लाह की शरीअत
की तश्रीह करने लगा। उस ने कहा,

6 जब तुम होरिब यानी सीना पहाड़ के पास थे तो
रब्ब हमारे ख़ुदा ने हम से कहा, "तुम काफ़ी देर से
यहाँ ठहरे हुए हो। 7 अब इस जगह को छोड़ कर
आगे मुल्क-ए-कनआन की तरफ़ बढ़ो। अमोरियों
के पहाड़ी इलाक़े और उन के पड़ोस की क़ौमों के
पास जाओ जो यर्दन के मैदानी इलाक़े में आबाद हैं।
पहाड़ी इलाक़े में, मग़रिब के निशेबी पहाड़ी इलाक़े
में, जुनूब के दश्त-ए-नजब में, साहिली इलाक़े में,
मुल्क-ए-कनआन में और लुब्नान में दरया-ए-फ़ुरात
तक चले जाओ। 8 मैं ने तुम्हें यह मुल्क दे दिया है।
अब जा कर उस पर क़ब्ज़ा कर लो। क्यूँकि रब्ब
ने क़सम खा कर तुम्हारे बापदादा इब्राहीम, इस्हाक़
और याक़ूब से वादा किया था कि मैं यह मुल्क तुम्हें
और तुम्हारी औलाद को दूँगा।"

राहनुमा मुक़र्रर किए गए

9 उस वक़्त मैं ने तुम से कहा, "मैं अकेला तुम्हारी
राहनुमाई करने की ज़िम्मादारी नहीं उठा सकता।
10 रब्ब तुम्हारे ख़ुदा ने तुम्हारी तादाद इतनी बढ़ा
दी है कि आज तुम आस्मान के सितारों की मानिन्द
बेशुमार हो। 11 और रब्ब तुम्हारे बापदादा का ख़ुदा
करे कि तुम्हारी तादाद मज़ीद हज़ार गुना बढ़ जाए।
वह तुम्हें वह बर्कत दे जिस का वादा उस ने किया
है। 12 लेकिन मैं अकेला ही तुम्हारा बोझ उठाने
और झगड़ों को निपटाने की ज़िम्मादारी नहीं उठा
सकता। 13 इस लिए अपने हर क़बीले में से कुछ ऐसे
दानिशमन्द और समझदार आदमी चुन लो जिन की
लियाक़त को लोग मानते हैं। फिर मैं उन्हें तुम पर
मुक़र्रर करूँगा।"

14 यह बात तुम्हें पसन्द आई। 15 तुम ने अपने में से
ऐसे राहनुमा चुन लिए जो दानिशमन्द थे और जिन की
लियाक़त को लोग मानते थे। फिर मैं ने उन्हें हज़ार
हज़ार, सौ सौ और पचास पचास मर्दों पर मुक़र्रर
किया। यूँ वह क़बीलों के निगहबान बन गए। 16 उस
वक़्त मैं ने उन क़ाज़ियों से कहा, "अदालत करते
वक़्त हर एक की बात ग़ौर से सुन कर ग़ैरजानिबदार
फ़ैसले करना, चाहे दो इस्राईली फ़रीक़ एक दूसरे
से झगड़ा कर रहे हों या मुआमला किसी इस्राईली
और परदेसी के दर्मियान हो। 17 अदालत करते वक़्त
जानिबदारी न करना। छोटे और बड़े की बात सुन
कर दोनों के साथ एक जैसा सुलूक करना। किसी से
मत डरना, क्यूँकि अल्लाह ही ने तुम्हें अदालत करने

की ज़िम्मादारी दी है। अगर किसी मुआमले में फ़ैसला करना तुम्हारे लिए मुश्किल हो तो उसे मुझे पेश करो। फिर मैं ही उस का फ़ैसला करूँगा।" [18] उस वक़्त मैं ने तुम्हें सब कुछ बताया जो तुम्हें करना था।

मुल्क-ए-कनआन में जासूस

[19] हम ने वैसा ही किया जैसा रब्ब ने हमें कहा था। हम होरिब से रवाना हो कर अमोरियों के पहाड़ी इलाक़े की तरफ़ बढ़े। सफ़र करते करते हम उस वसी और हौलनाक रेगिस्तान में से गुज़र गए जिसे तुम ने देख लिया है। आख़िरकार हम क़ादिस-बर्नीअ पहुँच गए। [20] वहाँ मैं ने तुम से कहा, "तुम अमोरियों के पहाड़ी इलाक़े तक पहुँच गए हो जो रब्ब हमारा ख़ुदा हमें देने वाला है। [21] देख, रब्ब तेरे ख़ुदा ने तुझे यह मुल्क दे दिया है। अब जा कर उस पर क़ब्ज़ा कर ले जिस तरह रब्ब तेरे बापदादा के ख़ुदा ने तुझे बताया है। मत डरना और बेदिल न हो जाना!"

[22] लेकिन तुम सब मेरे पास आए और कहा, "क्यूँ न हम जाने से पहले कुछ आदमी भेजें जो मुल्क के हालात दरयाफ़्त करें और वापस आ कर हमें उस रास्ते के बारे में बताएँ जिस पर हमें जाना है और उन शहरों के बारे में इत्तिला दें जिन के पास हम पहुँचेंगे।" [23] यह बात मुझे पसन्द आई। मैं ने इस काम के लिए हर क़बीले के एक आदमी को चुन कर भेज दिया। [24] जब यह बारह आदमी पहाड़ी इलाक़े में जा कर वादी-ए-इस्काल में पहुँचे तो उस की तफ़्तीश की। [25] फिर वह मुल्क का कुछ फल ले कर लौट आए और हमें मुल्क के बारे में इत्तिला दे कर कहा, "जो मुल्क रब्ब हमारा ख़ुदा हमें देने वाला है वह अच्छा है।"

[26] लेकिन तुम जाना नहीं चाहते थे बल्कि सरकशी करके रब्ब अपने ख़ुदा का हुक्म न माना। [27] तुम ने अपने ख़ैमों में बुड़बुड़ाते हुए कहा, "रब्ब हम से नफ़रत रखता है। वह हमें मिस्र से निकाल लाया है ताकि हमें अमोरियों के हाथों हलाक करवाए। [28] हम कहाँ जाएँ? हमारे भाइयों ने हमें बेदिल कर दिया है। वह कहते हैं, 'वहाँ के लोग हम से ताक़तवर और दराज़क़द हैं। उन के बड़े बड़े शहरों की फ़सीलें आस्मान से बातें करती हैं। वहाँ हम ने अनाक़ की औलाद भी देखी जो देओ हैं'।"

[29] मैं ने कहा, "न घबराओ और न उन से ख़ौफ़ खाओ। [30] रब्ब तुम्हारा ख़ुदा तुम्हारे आगे आगे चलता हुआ तुम्हारे लिए लड़ेगा। तुम ख़ुद देख चुके हो कि वह किस तरह मिस्र [31] और रेगिस्तान में तुम्हारे लिए लड़ा। यहाँ भी वह ऐसा ही करेगा। तू ख़ुद गवाह है कि बियाबान में पूरे सफ़र के दौरान रब्ब तुझे यूँ उठाए फिरा जिस तरह बाप अपने बेटे को उठाए फिरता है। इस तरह चलते चलते तुम यहाँ तक पहुँच गए।" [32] इस के बावुजूद तुम ने रब्ब अपने ख़ुदा पर भरोसा न रखा। [33] तुम ने यह बात नज़रअन्दाज़ की कि वह सफ़र के दौरान रात के वक़्त आग और दिन के वक़्त बादल की सूरत में तुम्हारे आगे आगे चलता रहा ताकि तुम्हारे लिए ख़ैमे लगाने की जगहें मालूम करे और तुम्हें रास्ता दिखाए।

[34] जब रब्ब ने तुम्हारी यह बातें सुनीं तो उसे ग़ुस्सा आया और उस ने क़सम खा कर कहा, [35] "इस शरीर नसल का एक मर्द भी उस अच्छे मुल्क को नहीं देखेगा अगरचि मैं ने क़सम खा कर तुम्हारे बापदादा से वादा किया था कि मैं उसे उन्हें दूँगा। [36] सिर्फ़ कालिब बिन यफ़ुन्ना उसे देखेगा। मैं उसे और उस की औलाद को वह मुल्क दूँगा जिस में उस ने सफ़र किया है, क्यूँकि उस ने पूरे तौर पर रब्ब की पैरवी की।"

[37] तुम्हारी वजह से रब्ब मुझ से भी नाराज़ हुआ और कहा, "तू भी उस में दाख़िल नहीं होगा। [38] लेकिन तेरा मददगार यशूअ बिन नून दाख़िल होगा। उस की हौसलाअफ़्ज़ाई कर, क्यूँकि वह मुल्क पर क़ब्ज़ा करने में इस्राईल की राहनुमाई करेगा।" [39] तुम से रब्ब ने कहा, "तुम्हारे बच्चे जो अभी अच्छे और बुरे में इमतियाज़ नहीं कर सकते, वही मुल्क में दाख़िल होंगे, वही बच्चे जिन के बारे में तुम ने कहा कि दुश्मन उन्हें मुल्क-ए-कनआन में छीन लेंगे। उन्हें मैं मुल्क

दूँगा, और वह उस पर क़ब्ज़ा करेंगे। 40 लेकिन तुम
ख़ुद आगे न बढ़ो। पीछे मुड़ कर दुबारा रेगिस्तान में
बहर-ए-क़ुल्ज़ुम की तरफ़ सफ़र करो।”

41 तब तुम ने कहा, “हम ने रब्ब का गुनाह किया
है। अब हम मुल्क में जा कर लड़ेंगे, जिस तरह रब्ब
हमारे ख़ुदा ने हमें हुक्म दिया है।” चुनाँचे यह सोचते
हुए कि उस पहाड़ी इलाक़े पर हम्ला करना आसान
होगा, हर एक मुसल्लह हुआ। 42 लेकिन रब्ब ने मुझ
से कहा, “उन्हें बताना कि वहाँ जंग करने के लिए न
जाओ, क्यूँकि मैं तुम्हारे साथ नहीं हूँगा। तुम अपने
दुश्मनों के हाथों शिकस्त खाओगे।”

43 मैं ने तुम्हें यह बताया, लेकिन तुम ने मेरी न सुनी।
तुम ने सरकशी करके रब्ब का हुक्म न माना बल्कि
मग़रूर हो कर पहाड़ी इलाक़े में दाख़िल हुए। 44 वहाँ
के अमोरी बाशिन्दे तुम्हारा सामना करने निकले। वह
शहद की मक्खियों के ग़ोल की तरह तुम पर टूट पड़े
और तुम्हारा ताक़्क़ुब करके तुम्हें सईर से हुर्मा तक
मारते गए।

45 तब तुम वापस आ कर रब्ब के सामने ज़ार-ओ-
क़तार रोने लगे। लेकिन उस ने तवज्जुह न दी बल्कि
तुम्हें नज़रअन्दाज़ किया। 46 इस के बाद तुम बहुत
दिनों तक क़ादिस-बर्नीअ में रहे।

रेगिस्तान में दुबारा सफ़र

2 1 फिर जिस तरह रब्ब ने मुझे हुक्म दिया था हम
पीछे मुड़ कर रेगिस्तान में बहर-ए-क़ुल्ज़ुम की
तरफ़ सफ़र करने लगे। काफ़ी देर तक हम सईर यानी
अदोम के पहाड़ी इलाक़े के किनारे किनारे फिरते
रहे।

2 एक दिन रब्ब ने मुझ से कहा, 3 “तुम बहुत देर
से इस पहाड़ी इलाक़े के किनारे किनारे फिर रहे हो।
अब शिमाल की तरफ़ सफ़र करो। 4 क़ौम को बताना,
अगले दिनों में तुम सईर के मुल्क में से गुज़रोगे जहाँ
तुम्हारे भाई एसौ की औलाद आबाद है। वह तुम से
डरेंगे। तो भी बड़ी एहतियात से गुज़रना। 5 उन के
साथ जंग न छेड़ना, क्यूँकि मैं तुम्हें उन के मुल्क
का एक मुरब्बा फ़ुट भी नहीं दूँगा। मैं ने सईर का
पहाड़ी इलाक़ा एसौ और उस की औलाद को दिया
है। 6 लाज़िम है कि तुम खाने और पीने की तमाम
ज़रूरियात पैसे दे कर ख़रीदो।”

7 जो भी काम तू ने किया है रब्ब ने उस पर बर्कत
दी है। इस वसी रेगिस्तान में पूरे सफ़र के दौरान उस
ने तेरी निगहबानी की। इन 40 सालों के दौरान रब्ब
तेरा ख़ुदा तेरे साथ था, और तेरी तमाम ज़रूरियात
पूरी होती रहीं।

8 चुनाँचे हम सईर को छोड़ कर जहाँ हमारे भाई
एसौ की औलाद आबाद थी दूसरे रास्ते से आगे
निकले। हम ने वह रास्ता छोड़ दिया जो ऐलात
और अस्यून-जाबर के शहरों से बहीरा-ए-मुर्दार तक
पहुँचाता है और मोआब के बियाबान की तरफ़
बढ़ने लगे। 9 वहाँ रब्ब ने मुझ से कहा, “मोआब
के बाशिन्दों की मुख़ालफ़त न करना और न उन के
साथ जंग छेड़ना, क्यूँकि मैं उन के मुल्क का कोई
भी हिस्सा तुझे नहीं दूँगा। मैं ने आर शहर को लूत की
औलाद को दिया है।”

10 पहले ऐमी वहाँ रहते थे जो अनाक़ की औलाद
की तरह ताक़तवर, दराज़क़द और तादाद में ज़ियादा
थे। 11 अनाक़ की औलाद की तरह वह रफ़ाइयों में
शुमार किए जाते थे, लेकिन मोआबी उन्हें ऐमी कहते
थे।

12 इसी तरह क़दीम ज़माने में होरी सईर में आबाद
थे, लेकिन एसौ की औलाद ने उन्हें वहाँ से निकाल
दिया था। जिस तरह इस्राईलियों ने बाद में उस मुल्क
में किया जो रब्ब ने उन्हें दिया था उसी तरह एसौ की
औलाद बढ़ते बढ़ते होरियों को तबाह करके उन की
जगह आबाद हुए थे।

13 रब्ब ने कहा, “अब जा कर वादी-ए-ज़रद को
उबूर करो।” हम ने ऐसा ही किया। 14 हमें क़ादिस-
बर्नीअ से रवाना हुए 38 साल हो गए थे। अब वह
तमाम आदमी मर चुके थे जो उस वक़्त जंग करने
के क़ाबिल थे। वैसा ही हुआ था जैसा रब्ब ने क़सम
खा कर कहा था। 15 रब्ब की मुख़ालफ़त के बाइस

आख़िरकार ख़ैमागाह में उस नसल का एक मर्द भी
न रहा। 16 जब वह सब मर गए थे 17 तब रब्ब ने मुझ
से कहा, 18 "आज तुम्हें आर शहर से हो कर मोआब
के इलाक़े में से गुज़रना है। 19 फिर तुम अम्मोनियों
के इलाक़े तक पहुँचोगे। उन की भी मुख़ालफ़त न
करना, और न उन के साथ जंग छेड़ना, क्यूँकि मैं
उन के मुल्क का कोई भी हिस्सा तुम्हें नहीं दूँगा। मैं
ने यह मुल्क लूत की औलाद को दिया है।"

20 हक़ीक़त में अम्मोनियों का मुल्क भी रफ़ाइयों
का मुल्क समझा जाता था जो क़दीम ज़माने में वहाँ
आबाद थे। अम्मोनी उन्हें ज़मज़ुमी कहते थे, 21 और
वह देओ थे, ताक़तवर और तादाद में ज़ियादा। वह
अनाक़ की औलाद जैसे दराज़क़द थे। जब अम्मोनी
मुल्क में आए तो रब्ब ने रफ़ाइयों को उन के आगे
आगे तबाह कर दिया। चुनाँचे अम्मोनी बढ़ते बढ़ते
उन्हें निकालते गए और उन की जगह आबाद हुए,
22 बिलकुल उसी तरह जिस तरह रब्ब ने एसौ की
औलाद के आगे आगे होरियों को तबाह कर दिया
था जब वह सईर के मुल्क में आए थे। वहाँ भी वह
बढ़ते बढ़ते होरियों को निकालते गए और उन की
जगह आबाद हुए। 23 इसी तरह एक और क़दीम क़ौम
बनाम अव्वी को भी उस के मुल्क से निकाला गया।
अव्वी ग़ज़्ज़ा तक आबाद थे, लेकिन जब कफ़्तूरी
कफ़्तूर यानी क्रेते से आए तो उन्हों ने उन्हें तबाह
कर दिया और उन की जगह आबाद हो गए।

सीहोन बादशाह से जंग

24 रब्ब ने मूसा से कहा, "अब जा कर वादी-ए-
अर्नोन को उबूर करो। यूँ समझो कि मैं हस्बोन के
अमोरी बादशाह सीहोन को उस के मुल्क समेत
तुम्हारे हवाले कर चुका हूँ। उस पर क़ब्ज़ा करना
शुरू करो और उस के साथ जंग करने का मौक़ा
ढूँडो। 25 इसी दिन से मैं तमाम क़ौमों में तुम्हारे बारे
में दहशत और ख़ौफ़ पैदा करूँगा। वह तुम्हारी ख़बर
सुन कर ख़ौफ़ के मारे थरथराएँगी और काँपेंगी।"

26 मैं ने दश्त-ए-क़दीमात से हस्बोन के बादशाह
सीहोन के पास क़ासिद भेजे। मेरा पैग़ाम नफ़रत और
मुख़ालफ़त से ख़ाली था। वह यह था, 27 "हमें अपने
मुल्क में से गुज़रने दें। हम शाहराह पर ही रहेंगे और
उस से न बाईं, न दाईं तरफ़ हटेंगे। 28 हम खाने और
पीने की तमाम ज़रूरियात के लिए मुनासिब पैसे देंगे।
हमें पैदल अपने मुल्क में से गुज़रने दें, 29 जिस तरह
सईर के बाशिन्दों एसौ की औलाद और आर के रहने
वाले मोआबियों ने हमें गुज़रने दिया। क्यूँकि हमारी
मन्ज़िल दरया-ए-यर्दन के मग़रिब में है, वह मुल्क जो
रब्ब हमारा ख़ुदा हमें देने वाला है।"

30 लेकिन हस्बोन के बादशाह सीहोन ने हमें गुज़रने
न दिया, क्यूँकि रब्ब तुम्हारे ख़ुदा ने उसे बेलचक और
हमारी बात से इन्कार करने पर आमादा कर दिया था
ताकि सीहोन हमारे क़ाबू में आ जाए। और बाद में
ऐसा ही हुआ। 31 रब्ब ने मुझ से कहा, "यूँ समझ ले
कि मैं सीहोन और उस के मुल्क को तेरे हवाले करने
लगा हूँ। अब निकल कर उस पर क़ब्ज़ा करना शुरू
करो।"

32 जब सीहोन अपनी सारी फ़ौज ले कर हमारा
मुक़ाबला करने के लिए यहज़ आया 33 तो रब्ब हमारे
ख़ुदा ने हमें पूरी फ़त्ह बख़्शी। हम ने सीहोन, उस के
बेटों और पूरी क़ौम को शिकस्त दी। 34 उस वक़्त
हम ने उस के तमाम शहरों पर क़ब्ज़ा कर लिया और
उन के तमाम मर्दों, औरतों और बच्चों को मार डाला।
कोई भी न बचा। 35 हम ने सिर्फ़ मवेशी और शहरों
का लूटा हुआ माल अपने लिए बचाए रखा।

36 वादी-ए-अर्नोन के किनारे पर वाक़े अरोईर से
ले कर जिलिआद तक हर शहर को शिकस्त माननी
पड़ी। इस में वह शहर भी शामिल था जो वादी-ए-
अर्नोन में था। रब्ब हमारे ख़ुदा ने उन सब को हमारे
हवाले कर दिया। 37 लेकिन तुम ने अम्मोनियों का
मुल्क छोड़ दिया और न दरया-ए-यब्बोक़ के इर्दगिर्द
के इलाक़े, न उस के पहाड़ी इलाक़े के शहरों को
छेड़ा, क्यूँकि रब्ब हमारे ख़ुदा ने ऐसा करने से तुम्हें
मना किया था।

बसन के बादशाह ओज की शिकस्त

3 1इस के बाद हम शिमाल में बसन की तरफ़ बढ़ गए। बसन का बादशाह ओज अपनी तमाम फ़ौज के साथ निकल कर हमारा मुक़ाबला करने के लिए इद्रई आया। 2रब्ब ने मुझ से कहा, "उस से मत डर। मैं उसे, उस की पूरी फ़ौज और उस का मुल्क तेरे हवाले कर चुका हूँ। उस के साथ वह कुछ कर जो तू ने अमोरी बादशाह सीहोन के साथ किया जो हस्बोन में हुकूमत करता था।"

3ऐसा ही हुआ। रब्ब हमारे ख़ुदा की मदद से हम ने बसन के बादशाह ओज और उस की तमाम क़ौम को शिकस्त दी। हम ने सब को हलाक कर दिया। कोई भी न बचा। 4उसी वक़्त हम ने उस के तमाम शहरों पर क़ब्ज़ा कर लिया। हम ने कुल 60 शहरों पर यानी अर्जूब के सारे इलाक़े पर क़ब्ज़ा किया जिस पर ओज की हुकूमत थी। 5इन तमाम शहरों की हिफ़ाज़त ऊँची ऊँची फ़सीलों और कुंडे वाले दरवाज़ों से की गई थी। दीहात में बहुत सी ऐसी आबादियाँ भी मिल गईं जिन की फ़सीलें नहीं थीं। 6हम ने उन के साथ वह कुछ किया जो हम ने हस्बोन के बादशाह सीहोन के इलाक़े के साथ किया था। हम ने सब कुछ रब्ब के हवाले करके हर शहर को और तमाम मर्दों, औरतों और बच्चों को हलाक कर डाला। 7हम ने सिर्फ़ तमाम मवेशी और शहरों का लूटा हुआ माल अपने लिए बचाए रखा।

8यूँ हम ने उस वक़्त अमोरियों के इन दो बादशाहों से दरया-ए-यर्दन का मशरिक़ी इलाक़ा वादी-ए-अर्नोन से ले कर हर्मून पहाड़ तक छीन लिया। 9(सैदा के बाशिन्दे हर्मून को सिर्यून कहते हैं जबकि अमोरियों ने उस का नाम सनीर रखा)। 10हम ने ओज बादशाह के पूरे इलाक़े पर क़ब्ज़ा कर लिया। इस में मैदान-ए-मुर्तफ़ा के तमाम शहर शामिल थे, नीज़ सल्का और इद्रई तक जिलिआद और बसन के पूरे इलाक़े।

11बादशाह ओज देओ क़बीले रफ़ाई का आख़िरी मर्द था। उस का लोहे का ताबूत 13 से ज़ाइद फ़ुट लम्बा और छः फ़ुट चौड़ा था और आज तक अम्मोनियों के शहर रबा में देखा जा सकता है।

यर्दन के मशरिक़ में मुल्क की तक़्सीम

12जब हम ने दरया-ए-यर्दन के मशरिक़ी इलाक़े पर क़ब्ज़ा किया तो मैं ने रूबिन और जद के क़बीलों को उस का जुनूबी हिस्सा शहरों समेत दिया। इस इलाक़े की जुनूबी सरहद्द दरया-ए-अर्नोन पर वाक़े शहर अरोईर है जबकि शिमाल में इस में जिलिआद के पहाड़ी इलाक़े का आधा हिस्सा भी शामिल है। 13जिलिआद का शिमाली हिस्सा और बसन का मुल्क मैं ने मनस्सी के आधे क़बीले को दिया।

(बसन में अर्जूब का इलाक़ा है जहाँ पहले ओज बादशाह की हुकूमत थी और जो रफ़ाइयों यानी देओं का मुल्क कहलाता था। 14मनस्सी के क़बीले के एक आदमी बनाम याईर ने अर्जूब पर जसूरियों और माकातियों की सरहद्द तक क़ब्ज़ा कर लिया था। उस ने इस इलाक़े की बस्तियों को अपना नाम दिया। आज तक यही नाम हव्वोत-याईर यानी याईर की बस्तियाँ चलता है।)

15मैं ने जिलिआद का शिमाली हिस्सा मनस्सी के कुंबे मकीर को दिया 16लेकिन जिलिआद का जुनूबी हिस्सा रूबिन और जद के क़बीलों को दिया। इस हिस्से की एक सरहद्द जुनूब में वादी-ए-अर्नोन के बीच में से गुज़रती है जबकि दूसरी सरहद्द दरया-ए-यब्बोक़ है जिस के पार अम्मोनियों की हुकूमत है। 17उस की मग़रिबी सरहद्द दरया-ए-यर्दन है यानी किन्नरत (गलील) की झील से ले कर बहीरा-ए-मुर्दार तक जो पिसगा के पहाड़ी सिलसिले के दामन में है।

18उस वक़्त मैं ने रूबिन, जद और मनस्सी के क़बीलों से कहा, "रब्ब तुम्हारे ख़ुदा ने तुम्हें मीरास में यह मुल्क दे दिया है। लेकिन शर्त यह है कि तुम्हारे तमाम जंग करने के क़ाबिल मर्द मुसल्लह हो कर तुम्हारे इस्राईली भाइयों के आगे आगे दरया-ए-यर्दन को पार करें। 19सिर्फ़ तुम्हारी औरतें और बच्चे पीछे रह कर उन शहरों में इन्तिज़ार कर सकते हैं जो मैं

ने तुम्हारे लिए मुक़र्रर किए हैं। तुम अपने मवेशियों
को भी पीछे छोड़ सकते हो, क्यूँकि मुझे पता है कि
तुम्हारे बहुत ज़ियादा जानवर हैं। 20 अपने भाइयों के
साथ चलते हुए उन की मदद करते रहो। जब रब्ब
तुम्हारा ख़ुदा उन्हें दरया-ए-यर्दन के मग़रिब में वाक़े
मुल्क देगा और वह तुम्हारी तरह आराम और सुकून
से वहाँ आबाद हो जाएँगे तब तुम अपने मुल्क में
वापस जा सकते हो।"

मूसा को यर्दन पार करने की इजाज़त नहीं मिलती

21 साथ साथ मैं ने यशूअ से कहा, "तू ने अपनी
आँखों से सब कुछ देख लिया है जो रब्ब तुम्हारे ख़ुदा
ने इन दोनों बादशाहों सीहोन और ओज से किया।
वह यही कुछ हर उस बादशाह के साथ करेगा जिस
के मुल्क पर तू दरया को पार करके हम्ला करेगा।
22 उन से न डरो। तुम्हारा ख़ुदा ख़ुद तुम्हारे लिए जंग
करेगा।"

23 उस वक़्त मैं ने रब्ब से इल्तिजा करके कहा,
24 "ऐ रब्ब क़ादिर-ए-मुतलक़, तू अपने ख़ादिम को
अपनी अज़्मत और क़ुद्रत दिखाने लगा है। क्या
आस्मान या ज़मीन पर कोई और ख़ुदा है जो तेरी
तरह के अज़ीम काम कर सकता है? हरगिज़ नहीं!
25 मेहरबानी करके मुझे भी दरया-ए-यर्दन को पार
करके उस अच्छे मुल्क यानी उस बेहतरीन पहाड़ी
इलाक़े को लुब्नान तक देखने की इजाज़त दे।"

26 लेकिन तुम्हारे सबब से रब्ब मुझ से नाराज़ था।
उस ने मेरी न सुनी बल्कि कहा, "बस कर! आइन्दा
मेरे साथ इस का ज़िक्र न करना। 27 पिसगा की चोटी
पर चढ़ कर चारों तरफ़ नज़र दौड़ा। वहाँ से ग़ौर
से देख, क्यूँकि तू ख़ुद दरया-ए-यर्दन को उबूर नहीं
करेगा। 28 अपनी जगह यशूअ को मुक़र्रर कर। उस
की हौसलाअफ़्ज़ाई कर और उसे मज़्बूत कर, क्यूँकि
वही इस क़ौम को दरया-ए-यर्दन के मग़रिब में ले
जाएगा और क़बीलों में उस मुल्क को तक़्सीम करेगा
जिसे तू पहाड़ से देखेगा।"

29 चुनाँचे हम बैत-फ़ग़ूर के क़रीब वादी में ठहरे।

फ़रमाँबरदारी की अशद्द ज़रूरत

4 1 ऐ इस्राईल, अब वह तमाम अह्काम ध्यान से
सुन ले जो मैं तुमहें सिखाता हूँ। उन पर अमल
करो ताकि तुम ज़िन्दा रहो और जा कर उस मुल्क पर
क़ब्ज़ा करो जो रब्ब तुम्हारे बापदादा का ख़ुदा तुम्हें
देने वाला है। 2 जो अह्काम मैं तुमहें सिखाता हूँ उन
में न किसी बात का इज़ाफ़ा करो और न उन से कोई
बात निकालो। रब्ब अपने ख़ुदा के तमाम अह्काम
पर अमल करो जो मैं ने तुम्हें दिए हैं। 3 तुम ने ख़ुद
देखा है कि रब्ब ने बाल-फ़ग़ूर से क्या कुछ किया।
वहाँ रब्ब तेरे ख़ुदा ने हर एक को हलाक कर डाला
जिस ने फ़ग़ूर के बाल देवता की पूजा की। 4 लेकिन
तुम में से जितने रब्ब अपने ख़ुदा के साथ लिपटे रहे
वह सब आज तक ज़िन्दा हैं।

5 मैं ने तुम्हें तमाम अह्काम यूँ सिखा दिए हैं जिस
तरह रब्ब मेरे ख़ुदा ने मुझे बताया। क्यूँकि लाज़िम है
कि तुम उस मुल्क में इन के ताबे रहो जिस पर तुम
क़ब्ज़ा करने वाले हो। 6 इन्हें मानो और इन पर अमल
करो तो दूसरी क़ौमों को तुम्हारी दानिशमन्दी और
समझ नज़र आएगी। फिर वह इन तमाम अह्काम के
बारे में सुन कर कहेंगी, "वाह, यह अज़ीम क़ौम कैसी
दानिशमन्द और समझदार है!" 7 कौन सी अज़ीम
क़ौम के माबूद इतने क़रीब हैं जितना हमारा ख़ुदा
हमारे क़रीब है? जब भी हम मदद के लिए पुकारते
हैं तो रब्ब हमारा ख़ुदा मौजूद होता है। 8 कौन सी
अज़ीम क़ौम के पास ऐसे मुन्सिफ़ाना अह्काम और
हिदायात हैं जैसे मैं आज तुम्हें पूरी शरीअत सुना कर
पेश कर रहा हूँ?

9 लेकिन ख़बरदार, एहतियात करना और वह
तमाम बातें न भूलना जो तेरी आँखों ने देखी हैं। वह
उम्र भर तेरे दिल में से मिट न जाएँ बल्कि उन्हें अपने
बच्चों और पोते-पोतियों को भी बताते रहना। 10 वह
दिन याद कर जब तू होरिब यानी सीना पहाड़ पर
रब्ब अपने ख़ुदा के सामने हाज़िर था और उस ने मुझे
बताया, "क़ौम को यहाँ मेरे पास जमा कर ताकि मैं

उन से बात करूँ और वह उम्र भर मेरा ख़ौफ़ मानें
और अपने बच्चों को मेरी बातें सिखाते रहें।"
11 उस वक़्त तुम क़रीब आ कर पहाड़ के दामन
में खड़े हुए। वह जल रहा था, और उस की आग
आस्मान तक भड़क रही थी जबकि काले बादलों
और गहरे अंधेरे ने उसे नज़रों से छुपा दिया। 12 फिर
रब्ब आग में से तुम से हमकलाम हुआ। तुम ने
उस की बातें सुनीं लेकिन उस की कोई शक्ल न
देखी। सिर्फ़ उस की आवाज़ सुनाई दी। 13 उस ने
तुम्हारे लिए अपने अह्द यानी उन 10 अह्काम का
एलान किया और हुक्म दिया कि इन पर अमल करो।
फिर उस ने उन्हें पत्थर की दो तख़्तियों पर लिख
दिया। 14 रब्ब ने मुझे हिदायत की, "उन्हें वह तमाम
अह्काम सिखा जिन के मुताबिक़ उन्हें चलना होगा
जब वह दरया-ए-यर्दन को पार करके कनआन पर
क़ब्ज़ा करेंगे।"

बुतपरस्ती के बारे में आगाही

15 जब रब्ब होरिब यानी सीना पहाड़ पर तुम से
हमकलाम हुआ तो तुम ने उस की कोई शक्ल न
देखी। चुनाँचे ख़बरदार रहो 16 कि तुम ग़लत काम
करके अपने लिए किसी भी शक्ल का बुत न बनाओ।
न मर्द, औरत, 17 ज़मीन पर चलने वाले जानवर,
परिन्दे, 18 रेंगने वाले जानवर या मछली का बुत
बनाओ। 19 जब तू आस्मान की तरफ़ नज़र उठा
कर आस्मान का पूरा लश्कर देखे तो सूरज, चाँद
और सितारों की परस्तिश और ख़िदमत करने की
आज़माइश में न पड़ना। रब्ब तेरे ख़ुदा ने इन चीज़ों
को बाक़ी तमाम क़ौमों को अता किया है, 20 लेकिन
तुम्हें उस ने मिस्र के भड़कते भट्टे से निकाला है ताकि
तुम उस की अपनी क़ौम और उस की मीरास बन
जाओ। और आज ऐसा ही हुआ है।
21 तुम्हारे सबब से रब्ब ने मुझ से नाराज़ हो कर
क़सम खाई कि तू दरया-ए-यर्दन को पार करके उस
अच्छे मुल्क में दाख़िल नहीं होगा जो रब्ब तेरा ख़ुदा
तुझे मीरास में देने वाला है। 22 मैं यहीं इसी मुल्क में
मर जाऊँगा और दरया-ए-यर्दन को पार नहीं करूँगा।
लेकिन तुम दरया को पार करके उस बेहतरीन मुल्क
पर क़ब्ज़ा करोगे। 23 हर सूरत में वह अह्द याद
रखना जो रब्ब तुम्हारे ख़ुदा ने तुम्हारे साथ बाँधा है।
अपने लिए किसी भी चीज़ की मूरत न बनाना। यह
रब्ब का हुक्म है, 24 क्यूँकि रब्ब तेरा ख़ुदा भस्म कर
देने वाली आग है, वह ग़यूर ख़ुदा है।
25 तुम मुल्क में जा कर वहाँ रहोगे। तुम्हारे बच्चे
और पोते-नवासे उस में पैदा हो जाएँगे। जब इस
तरह बहुत वक़्त गुज़र जाएगा तो ख़त्रा है कि तुम
ग़लत काम करके किसी चीज़ की मूरत बनाओ। ऐसा
कभी न करना। यह रब्ब तुम्हारे ख़ुदा की नज़र में
बुरा है और उसे ग़ुस्सा दिलाएगा। 26 आज आस्मान
और ज़मीन मेरे गवाह हैं कि अगर तुम ऐसा करो
तो जल्दी से उस मुल्क में से मिट जाओगे जिस पर
तुम दरया-ए-यर्दन को पार करके क़ब्ज़ा करोगे। तुम
देर तक वहाँ जीते नहीं रहोगे बल्कि पूरे तौर पर
हलाक हो जाओगे। 27 रब्ब तुम्हें मुल्क से निकाल
कर मुख़्तलिफ़ क़ौमों में मुन्तशिर कर देगा, और वहाँ
सिर्फ़ थोड़े ही अफ़राद बचे रहेंगे। 28 वहाँ तुम इन्सान
के हाथों से बने हुए लकड़ी और पत्थर के बुतों की
ख़िदमत करोगे, जो न देख सकते, न सुन सकते, न
खा सकते और न सूँघ सकते हैं।
29 वहीं तू रब्ब अपने ख़ुदा को तलाश करेगा, और
अगर उसे पूरे दिल-ओ-जान से ढूँडे तो वह तुझे
मिल भी जाएगा। 30 जब तू इस तक्लीफ़ में मुब्तला
होगा और यह सारा कुछ तुझ पर से गुज़रेगा फिर
आख़िरकार रब्ब अपने ख़ुदा की तरफ़ रुजू करके
उस की सुनेगा। 31 क्यूँकि रब्ब तेरा ख़ुदा रहीम ख़ुदा
है। वह तुझे न तर्क करेगा और न बर्बाद करेगा। वह
उस अह्द को नहीं भूलेगा जो उस ने क़सम खा कर
तेरे बापदादा से बाँधा था।

रब्ब ही हमारा ख़ुदा है

32 दुनिया में इन्सान की तख़्लीक़ से ले कर आज
तक माज़ी की तफ़्तीश कर। आस्मान के एक सिरे से

दूसरे सिरे तक खोज लगा। क्या इस से पहले कभी
इस तरह का मोजिज़ाना काम हुआ है? क्या किसी
ने इस से पहले इस क़िस्म के अज़ीम काम की ख़बर
सुनी है? 33 तू ने आग में से बोलती हुई अल्लाह की
आवाज़ सुनी तो भी जीता बचा! क्या किसी और क़ौम
के साथ ऐसा हुआ है? 34 क्या किसी और माबूद ने
कभी जुरअत की है कि रब्ब की तरह पूरी क़ौम को
एक मुल्क से निकाल कर अपनी मिल्कियत बनाया
हो? उस ने ऐसा ही तुम्हारे साथ किया। उस ने तुम्हारे
देखते देखते मिस्रियों को आज़माया, उन्हें बड़े मोजिज़े
दिखाए, उन के साथ जंग की, अपनी बड़ी क़ुद्रत और
इख़तियार का इज़्हार किया और हौलनाक कामों से
उन पर ग़ालिब आ गया।

35 तुझे यह सब कुछ दिखाया गया ताकि तू जान
ले कि रब्ब ख़ुदा है। उस के सिवा कोई और नहीं
है। 36 उस ने तुझे नसीहत देने के लिए आस्मान से
अपनी आवाज़ सुनाई। ज़मीन पर उस ने तुझे अपनी
अज़ीम आग दिखाई जिस में से तू ने उस की बातें
सुनीं। 37 उसे तेरे बापदादा से पियार था, और उस
ने तुझे जो उन की औलाद हैं चुन लिया। इस लिए
वह ख़ुद हाज़िर हो कर अपनी अज़ीम क़ुद्रत से तुझे
मिस्र से निकाल लाया। 38 उस ने तेरे आगे से तुझ से
ज़ियादा बड़ी और ताक़तवर क़ौमें निकाल दीं ताकि
तुझे उन का मुल्क मीरास में मिल जाए। आज ऐसा
ही हो रहा है।

39 चुनाँचे आज जान ले और ज़हन में रख कि रब्ब
आस्मान और ज़मीन का ख़ुदा है। कोई और माबूद
नहीं है। 40 उस के अह्काम पर अमल कर जो मैं तुझे
आज सुना रहा हूँ। फिर तू और तेरी औलाद काम्याब
होंगे, और तू देर तक उस मुल्क में जीता रहेगा जो
रब्ब तुझे हमेशा के लिए दे रहा है।

यर्दन के मशरिक़ में पनाह के शहर

41 यह कह कर मूसा ने दरया-ए-यर्दन के मशरिक़
में पनाह के तीन शहर चुन लिए। 42 उन में वह शख़्स
पनाह ले सकता था जिस ने दुश्मनी की बिना पर
नहीं बल्कि ग़ैरइरादी तौर पर किसी को जान से मार
दिया था। ऐसे शहर में पनाह लेने के सबब से उसे
बदले में क़त्ल नहीं किया जा सकता था। 43 इस के
लिए रूबिन के क़बीले के लिए मैदान-ए-मुर्तफ़ा का
शहर बसर, जद के क़बीले के लिए जिलिआद का
शहर रामात और मनस्सी के क़बीले के लिए बसन
का शहर जौलान चुना गया।

शरीअत का पेशलफ़्ज़

44 दर्ज-ए-ज़ैल वह शरीअत है जो मूसा ने
इस्राईलियों को पेश की। 45 मूसा ने यह अह्काम और
हिदायात उस वक़्त पेश कीं जब वह मिस्र से निकल
कर 46 दरया-ए-यर्दन के मशरिक़ी किनारे पर थे। बैत-
फ़ग़ूर उन के मुक़ाबिल था, और वह अमोरी बादशाह
सीहोन के मुल्क में ख़ैमाज़न थे। सीहोन की रिहाइश
हस्बोन में थी और उसे इस्राईलियों से शिकस्त हुई थी
जब वह मूसा की राहनुमाई में मिस्र से निकल आए
थे। 47 उस के मुल्क पर क़ब्ज़ा करके उन्हों ने बसन
के मुल्क पर भी फ़त्ह पाई थी जिस का बादशाह ओज
था। इन दोनों अमोरी बादशाहों का यह पूरा इलाक़ा
उन के हाथ में आ गया था। यह इलाक़ा दरया-ए-यर्दन
के मशरिक़ में था। 48 उस की जुनूबी सरहद्द दरया-ए-
अर्नोन के किनारे पर वाक़े शहर अरोईर थी जबकि
उस की शिमाली सरहद्द सिर्यून यानी हर्मून पहाड़ थी।
49 दरया-ए-यर्दन का पूरा मशरिक़ी किनारा पिसगा के
पहाड़ी सिलसिले के दामन में वाक़े बहीरा-ए-मुर्दार
तक उस में शामिल था।

दस अह्काम

5 1 मूसा ने तमाम इस्राईलियों को जमा करके
कहा,

ए इस्राईल, ध्यान से वह हिदायात और अह्काम
सुन जो मैं तुमहें आज पेश कर रहा हूँ। उन्हें सीखो
और बड़ी एहतियात से उन पर अमल करो। 2 रब्ब
हमारे ख़ुदा ने होरिब यानी सीना पहाड़ पर हमारे साथ
अह्द बाँधा। 3 उस ने यह अह्द हमारे बापदादा के

साथ नहीं बल्कि हमारे ही साथ बाँधा है, जो आज
इस जगह पर ज़िन्दा हैं। 4 रब्ब पहाड़ पर आग में से
रू-ब-रू हो कर तुम से हमकलाम हुआ। 5 उस वक़्त
मैं तुम्हारे और रब्ब के दर्मियान खड़ा हुआ ताकि
तुम्हें रब्ब की बातें सुनाऊँ। क्यूँकि तुम आग से डरते
थे और इस लिए पहाड़ पर न चढ़े। उस वक़्त रब्ब
ने कहा,

6 "मैं रब्ब तेरा ख़ुदा हूँ जो तुझे मुल्क-ए-मिस्र की
ग़ुलामी से निकाल लाया। 7 मेरे सिवा किसी और
माबूद की परस्तिश न करना।

8 अपने लिए बुत न बनाना। किसी भी चीज़ की मूरत
न बनाना, चाहे वह आस्मान में, ज़मीन पर या समुन्दर
में हो। 9 न बुतों की परस्तिश, न उन की ख़िदमत
करना, क्यूँकि मैं तेरा रब्ब ग़यूर ख़ुदा हूँ। जो मुझ से
नफ़रत करते हैं उन्हें मैं तीसरी और चौथी पुश्त तक
सज़ा दूँगा। 10 लेकिन जो मुझ से मुहब्बत रखते और
मेरे अह्काम पूरे करते हैं उन पर मैं हज़ार पुश्तों तक
मेहरबानी करूँगा।

11 रब्ब अपने ख़ुदा का नाम बेमक़्सद या ग़लत
मक़्सद के लिए इस्तेमाल न करना। जो भी ऐसा करता
है उसे रब्ब सज़ा दिए बग़ैर नहीं छोड़ेगा।

12 सबत के दिन का ख़याल रखना। उसे इस तरह
मनाना कि वह मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस हो, उसी तरह
जिस तरह रब्ब तेरे ख़ुदा ने तुझे हुक्म दिया है। 13 हफ़्ते
के पहले छः दिन अपना काम-काज कर, 14 लेकिन
सातवाँ दिन रब्ब तेरे ख़ुदा का आराम का दिन है।
उस दिन किसी तरह का काम न करना। न तू, न तेरा
बेटा, न तेरी बेटी, न तेरा नौकर, न तेरी नौकरानी, न
तेरा बैल, न तेरा गधा, न तेरा कोई और मवेशी। जो
परदेसी तेरे दर्मियान रहता है वह भी काम न करे। तेरे
नौकर और तेरी नौकरानी को तेरी तरह आराम का
मौक़ा मिलना है। 15 याद रखना कि तू मिस्र में ग़ुलाम
था और कि रब्ब तेरा ख़ुदा ही तुझे बड़ी क़ुद्रत और
इख़्तियार से वहाँ से निकाल लाया। इस लिए उस ने
तुझे हुक्म दिया है कि सबत का दिन मनाना।

16 अपने बाप और अपनी माँ की इज़्ज़त करना
जिस तरह रब्ब तेरे ख़ुदा ने तुझे हुक्म दिया है। फिर
तू उस मुल्क में जो रब्ब तेरा ख़ुदा तुझे देने वाला है
ख़ुशहाल होगा और देर तक जीता रहेगा।

17 क़त्ल न करना।

18 ज़िना न करना।

19 चोरी न करना।

20 अपने पड़ोसी के बारे में झूटी गवाही न देना।

21 अपने पड़ोसी की बीवी का लालच न करना। न
उस के घर का, न उस की ज़मीन का, न उस के नौकर
का, न उस की नौकरानी का, न उस के बैल और न
उस के गधे का बल्कि उस की किसी भी चीज़ का
लालच न करना।"

22 रब्ब ने तुम सब को यह अह्काम दिए जब तुम
सीना पहाड़ के दामन में जमा थे। वहाँ तुम ने आग,
बादल और गहरे अंधेरे में से उस की ज़ोरदार आवाज़
सुनी। यही कुछ उस ने कहा और बस। फिर उस ने
उन्हें पत्थर की दो तख़्तियों पर लिख कर मुझे दे
दिया।

लोग रब्ब से डरते हैं

23 जब तुम ने तारीकी से यह आवाज़ सुनी और
पहाड़ की जलती हुई हालत देखी तो तुम्हारे क़बीलों
के राहनुमा और बुज़ुर्ग मेरे पास आए। 24 उन्हों ने
कहा, "रब्ब हमारे ख़ुदा ने हम पर अपना जलाल
और अज़्मत ज़ाहिर की है। आज हम ने आग में से
उस की आवाज़ सुनी है। हम ने देख लिया है कि जब
अल्लाह इन्सान से हमकलाम होता है तो ज़रूरी नहीं
कि वह मर जाए। 25 लेकिन अब हम क्यूँ अपनी जान
ख़त्रे में डालें? अगर हम मज़ीद रब्ब अपने ख़ुदा की
आवाज़ सुनें तो यह बड़ी आग हमें भस्म कर देगी और
हम अपनी जान से हाथ धो बैठेंगे। 26 क्यूँकि फ़ानी
इन्सानों में से कौन हमारी तरह ज़िन्दा ख़ुदा को आग
में से बातें करते हुए सुन कर ज़िन्दा रहा है? कोई भी
नहीं! 27 आप ही क़रीब जा कर उन तमाम बातों को
सुनें जो रब्ब हमारा ख़ुदा हमें बताना चाहता है। फिर

लौट कर हमें वह बातें सुनाएँ। हम उन्हें सुनेंगे और उन पर अमल करेंगे।"

28 जब रब्ब ने यह सुना तो उस ने मुझ से कहा, "मैं ने इन लोगों की यह बातें सुन ली हैं। वह ठीक कहते हैं। 29 काश उन की सोच हमेशा ऐसी ही हो! काश वह हमेशा इसी तरह मेरा ख़ौफ़ मानें और मेरे अहकाम पर अमल करें! अगर वह ऐसा करेंगे तो वह और उन की औलाद हमेशा काम्याब रहेंगे। 30 जा, उन्हें बता दे कि अपने ख़ैमों में लौट जाओ। 31 लेकिन तू यहाँ मेरे पास रह ताकि मैं तुझे तमाम क़वानीन और अहकाम दे दूँ। उन को लोगों को सिखाना ताकि वह उस मुल्क में उन के मुताबिक़ चलें जो मैं उन्हें दूँगा।"

32 चुनाँचे एहतियात से उन अहकाम पर अमल करो जो रब्ब तुम्हारे ख़ुदा ने तुम्हें दिए हैं। उन से न दाएँ हटो न बाएँ। 33 हमेशा उस राह पर चलते रहो जो रब्ब तुम्हारे ख़ुदा ने तुम्हें बताई है। फिर तुम काम्याब होगे और उस मुल्क में देर तक जीते रहोगे जिस पर तुम क़ब्ज़ा करोगे।

सब से बड़ा हुक्म

6 1 यह वह तमाम अहकाम हैं जो रब्ब तुम्हारे ख़ुदा ने मुझे तुम्हें सिखाने के लिए कहा। उस मुल्क में इन पर अमल करना जिस में तुम जाने वाले हो ताकि उस पर क़ब्ज़ा करो। 2 उम्र भर तू, तेरे बच्चे और पोते-नवासे रब्ब अपने ख़ुदा का ख़ौफ़ मानें और उस के उन तमाम अहकाम पर चलें जो मैं तुझे दे रहा हूँ। तब तू देर तक जीता रहेगा। 3 ऐ इस्राईल, यह मेरी बातें सुन और बड़ी एहतियात से इन पर अमल कर! फिर रब्ब तेरे ख़ुदा का वादा पूरा हो जाएगा कि तू काम्याब रहेगा और तेरी तादाद उस मुल्क में ख़ूब बढ़ती जाएगी जिस में दूध और शहद की कस्रत है।

4 सुन ऐ इस्राईल! रब्ब हमारा ख़ुदा एक ही रब्ब है। 5 रब्ब अपने ख़ुदा से अपने पूरे दिल, अपनी पूरी जान और अपनी पूरी ताक़त से पियार करना। 6 जो अहकाम मैं तुझे आज बता रहा हूँ उन्हें अपने दिल पर नक़्श कर। 7 उन्हें अपने बच्चों के ज़हननशीन करा। यही बातें हर वक़्त और हर जगह तेरे लबों पर हों ख़्वाह तू घर में बैठा या रास्ते पर चलता हो, लेटा हो या खड़ा हो। 8 उन्हें निशान के तौर पर और याददहानी के लिए अपने बाज़ूओं और माथे पर लगा। 9 उन्हें अपने घरों की चौखटों और अपने शहरों के दरवाज़ों पर लिख।

10 रब्ब तेरे ख़ुदा का वादा पूरा होगा जो उस ने क़सम खा कर तेरे बापदादा इब्राहीम, इस्हाक़ और याक़ूब के साथ किया कि मैं तुझे कनआन में ले जाऊँगा। जो बड़े और शानदार शहर उस में हैं वह तू ने ख़ुद नहीं बनाए। 11 जो मकान उस में हैं वह ऐसी अच्छी चीज़ों से भरे हुए हैं जो तू ने उन में नहीं रखीं। जो कुएँ उस में हैं उन को तू ने नहीं खोदा। जो अंगूर और ज़ैतून के बाग़ उस में हैं उन्हें तू ने नहीं लगाया। यह हक़ीक़त याद रख। जब तू उस मुल्क में कस्रत का खाना खा कर सेर हो जाएगा 12 तो ख़बरदार! रब्ब को न भूलना जो तुझे मिस्र की ग़ुलामी से निकाल लाया।

13 रब्ब अपने ख़ुदा का ख़ौफ़ मानना। सिर्फ़ उसी की इबादत करना और उसी का नाम ले कर क़सम खाना। 14 दीगर माबूदों की पैरवी न करना। इस में तमाम पड़ोसी अक़्वाम के देवता भी शामिल हैं। 15 वर्ना रब्ब तेरे ख़ुदा का ग़ज़ब तुझ पर नाज़िल हो कर तुझे मुल्क में से मिटा डालेगा। क्यूँकि वह ग़यूर ख़ुदा है और तेरे दर्मियान ही रहता है।

16 रब्ब अपने ख़ुदा को उस तरह न आज़माना जिस तरह तुम ने मस्सा में किया था। 17 ध्यान से रब्ब अपने ख़ुदा के अहकाम के मुताबिक़ चलो, उन तमाम हिदायात और क़वानीन पर जो उस ने तुझे दिए हैं। 18 जो कुछ रब्ब की नज़र में दुरुस्त और अच्छा है वह कर। फिर तू काम्याब रहेगा, तू जा कर उस अच्छे मुल्क पर क़ब्ज़ा करेगा जिस का वादा रब्ब ने तेरे बापदादा से क़सम खा कर किया था। 19 तब रब्ब की बात पूरी हो जाएगी कि तू अपने दुश्मनों को अपने आगे आगे निकाल देगा।

20 आने वाले दिनों में तेरे बच्चे पूछेंगे, “रब्ब हमारे
ख़ुदा ने आप को इन तमाम अह्काम पर अमल करने
को क्यूँ कहा?” 21 फिर उन्हें जवाब देना, “हम मिस्र
के बादशाह फ़िरऔन के ग़ुलाम थे, लेकिन रब्ब हमें
बड़ी क़ुद्रत का इज़्हार करके मिस्र से निकाल लाया।
22 हमारे देखते देखते उस ने बड़े बड़े निशान और
मोजिज़े किए और मिस्र, फ़िरऔन और उस के पूरे
घराने पर हौलनाक मुसीबतें भेजीं। 23 उस वक़्त वह
हमें वहाँ से निकाल लाया ताकि हमें ले कर वह
मुल्क दे जिस का वादा उस ने क़सम खा कर हमारे
बापदादा के साथ किया था। 24 रब्ब हमारे ख़ुदा ही ने
हमें कहा कि इन तमाम अह्काम के मुताबिक़ चलो
और रब्ब अपने ख़ुदा का ख़ौफ़ मानो। क्यूँकि अगर
हम ऐसा करें तो फिर हम हमेशा काम्याब और ज़िन्दा
रहेंगे। और आज तक ऐसा ही रहा है। 25 अगर हम
रब्ब अपने ख़ुदा के हुज़ूर रह कर एहतियात से उन
तमाम बातों पर अमल करेंगे जो उस ने हमें करने को
कही हैं तो वह हमें रास्तबाज़ क़रार देगा।”

दूसरी कनआनी क़ौमों को निकालना है

7 1 रब्ब तेरा ख़ुदा तुझे उस मुल्क में ले जाएगा
जिस पर तू जा कर क़ब्ज़ा करेगा। वह तेरे सामने
से बहुत सी क़ौमें भगा देगा। गो यह सात क़ौमें यानी
हित्ती, जिर्जासी, अमोरी, कनआनी, फ़रिज़्ज़ी, हिव्वी
और यबूसी तादाद और ताक़त के लिहाज़ से तुझ
से बड़ी होंगी 2 तो भी रब्ब तेरा ख़ुदा उन्हें तेरे हवाले
करेगा। जब तू उन्हें शिकस्त देगा तो उन सब को उस
के लिए मख़्सूस करके हलाक कर देना है। न उन के
साथ अह्द बाँधना और न उन पर रहम करना। 3 उन
में से किसी से शादी न करना। न अपनी बेटियों का
रिश्ता उन के बेटों को देना, न अपने बेटों का रिश्ता
उन की बेटियों से करना। 4 वर्ना वह तुम्हारे बच्चों को
मेरी पैरवी से दूर करेंगे और वह मेरी नहीं बल्कि उन
के देवताओं की ख़िदमत करेंगे। तब रब्ब का ग़ज़ब
तुम पर नाज़िल हो कर जल्दी से तुम्हें हलाक कर
देगा। 5 इस लिए उन की क़ुर्बानगाहें ढा देना। जिन
पत्थरों की वह पूजा करते हैं उन्हें चिकना-चूर कर
देना, उन के यसीरत देवी के खम्बे काट डालना और
उन के बुत जला देना।

6 क्यूँकि तू रब्ब अपने ख़ुदा के लिए मख़्सूस-ओ-
मुक़द्दस है। उस ने दुनिया की तमाम क़ौमों में से तुझे
चुन कर अपनी क़ौम और ख़ास मिल्कियत बनाया।
7 रब्ब ने क्यूँ तुम्हारे साथ ताल्लुक़ क़ाइम किया और
तुम्हें चुन लिया? क्या इस वजह से कि तुम तादाद
में दीगर क़ौमों की निस्बत ज़ियादा थे? हरगिज़ नहीं!
तुम तो बहुत कम थे। 8 बल्कि वजह यह थी कि रब्ब
ने तुम्हें पियार किया और वह वादा पूरा किया जो
उस ने क़सम खा कर तुम्हारे बापदादा के साथ किया
था। इसी लिए वह फ़िद्या दे कर तुम्हें बड़ी क़ुद्रत से
मिस्र की ग़ुलामी और उस मुल्क के बादशाह के हाथ
से बचा लाया। 9 चुनाँचे जान ले कि सिर्फ़ रब्ब तेरा
ख़ुदा ही ख़ुदा है। वह वफ़ादार ख़ुदा है। जो उस से
मुहब्बत रखते और उस के अह्काम पर अमल करते
हैं उन के साथ वह अपना अह्द क़ाइम रखेगा और
उन पर हज़ार पुश्तों तक मेहरबानी करेगा। 10 लेकिन
उस से नफ़रत करने वालों को वह उन के रू-ब-रू
मुनासिब सज़ा दे कर बर्बाद करेगा। हाँ, जो उस से
नफ़रत करते हैं, उन के रू-ब-रू वह मुनासिब सज़ा
देगा और झिजकेगा नहीं।

11 चुनाँचे ध्यान से उन तमाम अह्काम पर अमल
कर जो मैं आज तुझे दे रहा हूँ ताकि तू उन के
मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारे। 12 अगर तू उन पर तवज्जुह
दे और एहतियात से उन पर चले तो फिर रब्ब तेरा
ख़ुदा तेरे साथ अपना अह्द क़ाइम रखेगा और तुझ
पर मेहरबानी करेगा, बिलकुल उस वादे के मुताबिक़
जो उस ने क़सम खा कर तेरे बापदादा से किया था।
13 वह तुझे पियार करेगा और तुझे उस मुल्क में बर्कत
देगा जो तुझे देने का वादा उस ने क़सम खा कर तेरे
बापदादा से किया था। तुझे बहुत औलाद बख़्शने
के इलावा वह तेरे खेतों को बर्कत देगा, और तुझे
कस्रत का अनाज, अंगूर और ज़ैतून हासिल होगा।
वह तेरे रेवड़ों को भी बर्कत देगा, और तेरे गाय-बैलों

और भेड़-बक्रियों की तादाद बढ़ती जाएगी। [14] तुझे दीगर तमाम क़ौमों की निस्बत कहीं ज़ियादा बर्कत मिलेगी। न तुझ में और न तेरे मवेशियों में बाँझपन पाया जाएगा। [15] रब्ब हर बीमारी को तुझ से दूर रखेगा। वह तुझ में वह ख़तरनाक वबाएँ फैलने नहीं देगा जिन से तू मिस्र में वाक़िफ़ हुआ बल्कि उन्हें उन में फैलाएगा जो तुझ से नफ़रत रखते हैं।

[16] जो भी क़ौमें रब्ब तेरा ख़ुदा तेरे हाथ में कर देगा उन्हें तबाह करना लाज़िम है। उन पर रहम की निगाह से न देखना, न उन के देवताओं की ख़िदमत करना, वर्ना तू फंस जाएगा।

[17] गो तेरा दिल कहे, "यह क़ौमें हम से ताक़तवर हैं। हम किस तरह इन्हें निकाल सकते हैं?" [18] तो भी उन से न डर। वही कुछ ज़हन में रख जो रब्ब तेरे ख़ुदा ने फ़िरऔन और पूरे मिस्र के साथ किया। [19] क्यूँकि तू ने अपनी आँखों से रब्ब अपने ख़ुदा की वह बड़ी आज़्माने वाली मुसीबतें और मोजिज़े, उस का वह अज़ीम इख़्तियार और क़ुद्रत देखी जिस से वह तुझे वहाँ से निकाल लाया। वही कुछ रब्ब तेरा ख़ुदा उन क़ौमों के साथ भी करेगा जिन से तू इस वक़्त डरता है। [20] न सिर्फ़ यह बल्कि रब्ब तेरा ख़ुदा उन के दर्मियान ज़म्बूर भी भेजेगा ताकि वह भी तबाह हो जाएँ जो पहले हम्लों से बच कर छुप गए हैं। [21] उन से दहशत न खा, क्यूँकि रब्ब तेरा ख़ुदा तेरे दर्मियान है। वह अज़ीम ख़ुदा है जिस से सब ख़ौफ़ खाते हैं। [22] वह रफ़्ता रफ़्ता उन क़ौमों को तेरे आगे से भगा देगा। तू उन्हें एक दम ख़त्म नहीं कर सकेगा, वर्ना जंगली जानवर तेज़ी से बढ़ कर तुझे नुक़सान पहुचाएँगे।

[23] रब्ब तेरा ख़ुदा उन्हें तेरे हवाले कर देगा। वह उन में इतनी सख़्त अफ़्रा-तफ़्री पैदा करेगा कि वह बर्बाद हो जाएँगे। [24] वह उन के बादशाहों को भी तेरे क़ाबू में कर देगा, और तू उन का नाम-ओ-निशान मिटा देगा। कोई भी तेरा सामना नहीं कर सकेगा बल्कि तू उन सब को बर्बाद कर देगा।

[25] उन के देवताओं के मुजस्समे जला देना। जो चाँदी और सोना उन पर चढ़ाया हुआ है उस का लालच न करना। उसे न लेना वर्ना तू फंस जाएगा। क्यूँकि इन चीज़ों से रब्ब तेरे ख़ुदा को घिन आती है। [26] इस तरह की मक्रूह चीज़ अपने घर में न लाना, वर्ना तुझे भी उस के साथ अलग करके बर्बाद किया जाएगा। तेरे दिल में उस से शदीद नफ़रत और घिन हो, क्यूँकि उसे पूरे तौर पर बर्बाद करने के लिए मख़्सूस किया गया है।

रब्ब को न भूलना

8 [1] एहतियात से उन तमाम अह्काम पर अमल करो जो मैं आज तुझे दे रहा हूँ। क्यूँकि ऐसा करने से तुम जीते रहोगे, तादाद में बढ़ोगे और जा कर उस मुल्क पर क़ब्ज़ा करोगे जिस का वादा रब्ब ने तुम्हारे बापदादा से क़सम खा कर किया था।

[2] वह पूरा वक़्त याद रख जब रब्ब तेरा ख़ुदा रेगिस्तान में 40 साल तक तेरी राहनुमाई करता रहा ताकि तुझे आजिज़ करके आज़्माए और मालूम करे कि क्या तू उस के अह्काम पर चलेगा कि नहीं। [3] उस ने तुझे आजिज़ करके भूके होने दिया, फिर तुझे मन्न खिलाया जिस से न तू और न तेरे बापदादा वाक़िफ़ थे। क्यूँकि वह तुझे सिखाना चाहता था कि इन्सान की ज़िन्दगी सिर्फ़ रोटी पर मुन्हसिर नहीं होती बल्कि हर उस बात पर जो रब्ब के मुँह से निकलती है।

[4] इन 40 सालों के दौरान तेरे कपड़े न घिसे न फटे, न तेरे पाँओ सूजे। [5] चुनाँचे दिल में जान ले कि जिस तरह बाप अपने बेटे की तर्बीयत करता है उसी तरह रब्ब हमारा ख़ुदा हमारी तर्बियत करता है।

[6] रब्ब अपने ख़ुदा के अह्काम पर अमल करके उस की राहों पर चल और उस का ख़ौफ़ मान। [7] क्यूँकि वह तुझे एक बेहतरीन मुल्क में ले जा रहा है जिस में नहरें और ऐसे चश्मे हैं जो पहाड़ियों और वादियों की ज़मीन से फूट निकलते हैं। [8] उस की पैदावार अनाज, जौ, अंगूर, अन्जीर, अनार, ज़ैतून और शहद है। [9] उस में रोटी की कमी नहीं होगी, और तू किसी चीज़ से महरूम नहीं रहेगा। उस के

पत्थरों में लोहा पाया जाता है, और खुदाई से तू उस की पहाड़ियों से ताँबा हासिल कर सकेगा।

10 जब तू कसरत का खाना खा कर सेर हो जाएगा तो फिर रब्ब अपने ख़ुदा की तम्जीद करना जिस ने तुझे यह शानदार मुल्क दिया है। 11 ख़बरदार, रब्ब अपने ख़ुदा को न भूल और उस के उन अह्काम पर अमल करने से गुरेज़ न कर जो मैं आज तुझे दे रहा हूँ। 12 क्यूँकि जब तू कसरत का खाना खा कर सेर हो जाएगा, तू शानदार घर बना कर उन में रहेगा 13 और तेरे रेवड़, सोने-चाँदी और बाक़ी तमाम माल में इज़ाफ़ा होगा 14 तो कहीं तू मग़रूर हो कर रब्ब अपने ख़ुदा को भूल न जाए जो तुझे मिस्र की ग़ुलामी से निकाल लाया। 15 जब तू उस वसी और हौलनाक रेगिस्तान में सफ़र कर रहा था जिस में ज़हरीले साँप और बिच्छू थे तो वही तेरी राहनुमाई करता रहा। पानी से महरूम उस इलाक़े में वही सख़्त पत्थर में से पानी निकाल लाया। 16 रेगिस्तान में वही तुझे मन्न खिलाता रहा, जिस से तेरे बापदादा वाक़िफ़ न थे। इन मुश्किलात से वह तुझे आजिज़ करके आज़माता रहा ताकि आख़िरकार तू काम्याब हो जाए।

17 जब तुझे काम्याबी हासिल होगी तो यह न कहना कि मैं ने अपनी ही क़ुव्वत और ताक़त से यह सब कुछ हासिल किया है। 18 बल्कि रब्ब अपने ख़ुदा को याद करना जिस ने तुझे दौलत हासिल करने की क़ाबिलियत दी है। क्यूँकि वह आज भी उसी अह्द पर क़ाइम है जो उस ने तेरे बापदादा से किया था।

19 रब्ब अपने ख़ुदा को न भूलना, और न दीगर माबूदों के पीछे पड़ कर उन्हें सिज्दा और उन की ख़िदमत करना। वर्ना मैं ख़ुद गवाह हूँ कि तुम यक़ीनन हलाक हो जाओगे। 20 अगर तुम रब्ब अपने ख़ुदा की इताअत नहीं करोगे तो फिर वह तुम्हें उन क़ौमों की तरह तबाह कर देगा जो तुम से पहले इस मुल्क में रहती थीं।

मुल्क मिलने का सबब इस्राईल की रास्ती नहीं है

9 1 सुन ऐ इस्राईल! आज तू दरया-ए-यर्दन को पार करने वाला है। दूसरी तरफ़ तू ऐसी क़ौमों को भगा देगा जो तुझ से बड़ी और ताक़तवर हैं और जिन के शानदार शहरों की फ़सीलें आस्मान से बातें करती हैं। 2 वहाँ अनाक़ी बसते हैं जो ताक़तवर और दराज़क़द हैं। तू ख़ुद जानता है कि उन के बारे में कहा जाता है, “कौन अनाक़ियों का सामना कर सकता है?” 3 लेकिन आज जान ले कि रब्ब तेरा ख़ुदा तेरे आगे आगे चलते हुए उन्हें भस्म कर देने वाली आग की तरह हलाक करेगा। वह तेरे आगे आगे उन पर क़ाबू पाएगा, और तू उन्हें निकाल कर जल्दी मिटा देगा, जिस तरह रब्ब ने वादा किया है।

4 जब रब्ब तेरा ख़ुदा उन्हें तेरे सामने से निकाल देगा तो तू यह न कहना, “मैं रास्तबाज़ हूँ, इसी लिए रब्ब मुझे लाइक़ समझ कर यहाँ लाया और यह मुल्क मीरास में दे दिया है।” यह बात हरगिज़ दुरुस्त नहीं है। रब्ब उन क़ौमों को उन की ग़लत हर्कतों की वजह से तेरे सामने से निकाल देगा। 5 तू अपनी रास्तबाज़ी और दियानतदारी की बिना पर उस मुल्क पर क़ब्ज़ा नहीं करेगा बल्कि रब्ब उन्हें उन की शरीर हर्कतों के बाइस तेरे सामने से निकाल देगा। दूसरे, जो वादा उस ने तेरे बापदादा इब्राहीम, इस्हाक़ और याक़ूब के साथ क़सम खा कर किया था उसे पूरा होना है।

6 चुनाँचे जान ले कि रब्ब तेरा ख़ुदा तुझे तेरी रास्ती के बाइस यह अच्छा मुल्क नहीं दे रहा। हक़ीक़त तो यह है कि तू हटधर्म क़ौम है।

सोने का बछड़ा

7 याद रख और कभी न भूल कि तू ने रेगिस्तान में रब्ब अपने ख़ुदा को किस तरह नाराज़ किया। मिस्र से निकलते वक़्त से ले कर यहाँ पहुँचने तक तुम रब्ब से सरकश रहे हो। 8 ख़ासकर होरिब यानी सीना के दामन में तुम ने रब्ब को इतना ग़ुस्सा दिलाया कि वह तुम्हें हलाक करने को था। 9 उस वक़्त मैं पहाड़

पर चढ़ गया था ताकि पत्थर की तख़्तियाँ यानी उस अह्द की तख़्तियाँ मिल जाएँ जो रब्ब ने तुम्हारे साथ बाँधा था। कुछ खाए पिए बग़ैर मैं 40 दिन और रात वहाँ रहा।

10–11 जो कुछ रब्ब ने आग में से कहा था जब तुम पहाड़ के दामन में जमा थे वही कुछ उस ने अपनी उंगली से दोनों तख़्तियों पर लिख कर मुझे दिया।
12 उस ने मुझ से कहा, "फ़ौरन यहाँ से उतर जा। तेरी क़ौम जिसे तू मिस्र से निकाल लाया बिगड़ गई है। वह कितनी जल्दी से मेरे अह्काम से हट गए हैं। उन्हों ने अपने लिए बुत ढाल लिया है। 13 मैं ने जान लिया है कि यह क़ौम कितनी ज़िद्दी है। 14 अब मुझे छोड़ दे ताकि मैं उन्हें तबाह करके उन का नाम-ओ-निशान दुनिया में से मिटा डालूँ। उन की जगह मैं तुझ से एक क़ौम बना लूँगा जो उन से बड़ी और ताक़तवर होगी।"

15 मैं मुड़ कर पहाड़ से उतरा जो अब तक भड़क रहा था। मेरे हाथों में अह्द की दोनों तख़्तियाँ थीं।
16 तुम्हें देखते ही मुझे मालूम हुआ कि तुम ने रब्ब अपने ख़ुदा का गुनाह किया है। तुम ने अपने लिए बछड़े का बुत ढाल लिया था। तुम कितनी जल्दी से रब्ब की मुक़र्ररा राह से हट गए थे।

17 तब मैं ने तुम्हारे देखते देखते दोनों तख़्तियों को ज़मीन पर पटख़ कर टुकड़े टुकड़े कर दिया। 18 एक और बार मैं रब्ब के सामने मुँह के बल गिरा। मैं ने न कुछ खाया, न कुछ पिया। 40 दिन और रात मैं तुम्हारे तमाम गुनाहों के बाइस इसी हालत में रहा। क्यूँकि जो कुछ तुम ने किया था वह रब्ब को निहायत बुरा लगा, इस लिए वह ग़ज़बनाक हो गया था। 19 वह तुम से इतना नाराज़ था कि मैं बहुत डर गया। यूँ लग रहा था कि वह तुम्हें हलाक कर देगा। लेकिन इस बार भी उस ने मेरी सुन ली। 20 मैं ने हारून के लिए भी दुआ की, क्यूँकि रब्ब उस से भी निहायत नाराज़ था और उसे हलाक कर देना चाहता था।

21 जो बछड़ा तुम ने गुनाह करके बनाया था उसे मैं ने जला दिया, फिर जो कुछ बाक़ी रह गया उसे कुचल दिया और पीस पीस कर पाउडर बना दिया। यह पाउडर मैं ने उस चश्मे में फेंक दिया जो पहाड़ पर से बह रहा था।

22 तुम ने रब्ब को तबएरा, मस्सा और क़ब्रोत-हत्तावा में भी ग़ुस्सा दिलाया। 23 क़ादिस-बर्नीअ में भी ऐसा ही हुआ। वहाँ से रब्ब ने तुम्हें भेज कर कहा था, "जाओ, उस मुल्क पर क़ब्ज़ा करो जो मैं ने तुम्हें दे दिया है।" लेकिन तुम ने सरकश हो कर रब्ब अपने ख़ुदा के हुक्म की ख़िलाफ़वरज़ी की। तुम ने उस पर एतिमाद न किया, न उस की सुनी। 24 जब से मैं तुमहें जानता हूँ तुम्हारा रब्ब के साथ रवय्या बाग़ियाना ही रहा है।

25 मैं 40 दिन और रात रब्ब के सामने ज़मीन पर मुँह के बल रहा, क्यूँकि रब्ब ने कहा था कि वह तुम्हें हलाक कर देगा। 26 मैं ने उस से मिन्नत करके कहा, "ऐ रब्ब क़ादिर-ए-मुतलक़, अपनी क़ौम को तबाह न कर। वह तो तेरी ही मिल्कियत है जिसे तू ने फ़िद्या दे कर अपनी अज़ीम क़ुद्रत से बचाया और बड़े इख़तियार के साथ मिस्र से निकाल लाया। 27 अपने ख़ादिमों इब्राहीम, इस्हाक़ और याक़ूब को याद कर, और इस क़ौम की ज़िद, शरीर हर्कतों और गुनाह पर तवज्जुह न दे। 28 वर्ना मिस्री कहेंगे, 'रब्ब उन्हें उस मुल्क में लाने के क़ाबिल नहीं था जिस का वादा उस ने किया था, बल्कि वह उन से नफ़रत करता था। हाँ, वह उन्हें हलाक करने के लिए रेगिस्तान में ले आया।' 29 वह तो तेरी क़ौम हैं, तेरी मिल्कियत जिसे तू अपनी अज़ीम क़ुद्रत और इख़तियार से मिस्र से निकाल लाया।"

मूसा को नई तख़्तियाँ मिलती हैं

10 1 उस वक़्त रब्ब ने मुझ से कहा, "पत्थर की दो और तख़्तियाँ तराशना जो पहली तख़्तियों की मानिन्द हों। उन्हें ले कर मेरे पास पहाड़ पर चढ़ आ। लकड़ी का सन्दूक़ भी बनाना। 2 फिर मैं इन तख़्तियों पर दुबारा वही बातें लिखूँगा जो मैं

उन तख़्तियों पर लिख चुका था जो तू ने तोड़ डालीं।
तुम्हें उन्हें सन्दूक़ में महफ़ूज़ रखना है।”
3 मैं ने कीकर की लकड़ी का सन्दूक़ बनवाया और
दो तख़्तियाँ तराशीं जो पहली तख़्तियों की मानिन्द
थीं। फिर मैं दोनों तख़्तियाँ ले कर पहाड़ पर चढ़
गया। 4 रब्ब ने उन तख़्तियों पर दुबारा वह दस
अह्काम लिख दिए जो वह पहली तख़्तियों पर लिख
चुका था। (उन ही अह्काम का एलान उस ने पहाड़
पर आग में से किया था जब तुम उस के दामन में
जमा थे।) फिर उस ने यह तख़्तियाँ मेरे सपुर्द कीं।
5 मैं लौट कर उतरा और तख़्तियों को उस सन्दूक़ में
रखा जो मैं ने बनाया था। वहाँ वह अब तक हैं। सब
कुछ वैसा ही हुआ जैसा रब्ब ने हुक्म दिया था।

इमामों और लावियों की ख़िदमत

6 (इस के बाद इस्राईली बनी-याक़ान के कुओं से
रवाना हो कर मौसीरा पहुँचे। वहाँ हारून फ़ौत हुआ।
उसे दफ़न करने के बाद उस का बेटा इलीअज़र उस
की जगह इमाम बना। 7 फिर वह आगे सफ़र करते
करते जुदजूदा, फिर युत्बाता पहुँचे जहाँ नहरें हैं।
8 उन दिनों में रब्ब ने लावी के क़बीले को अलग
करके उसे रब्ब के अह्द के सन्दूक़ को उठा कर ले
जाने, रब्ब के हुज़ूर ख़िदमत करने और उस के नाम
से बर्कत देने की ज़िम्मादारी दी। आज तक यह उन
की ज़िम्मादारी रही है। 9 इस वजह से लावियों को
दीगर क़बीलों की तरह न हिस्सा न मीरास मिली।
रब्ब तेरा ख़ुदा ख़ुद उन की मीरास है। उस ने ख़ुद
उन्हें यह फ़रमाया है।)
10 जब मैं ने दूसरी मर्तबा 40 दिन और रात पहाड़
पर गुज़ारे तो रब्ब ने इस दफ़ा भी मेरी सुनी और तुझे
हलाक न करने पर आमादा हुआ। 11 उस ने कहा,
“जा, क़ौम की राहनुमाई कर ताकि वह जा कर उस
मुल्क पर क़ब्ज़ा करें जिस का वादा मैं ने क़सम खा
कर उन के बापदादा से किया था।”

रब्ब का ख़ौफ़

12 ऐ इस्राईल, अब मेरी बात सुन! रब्ब तेरा ख़ुदा
तुझ से क्या तक़ाज़ा करता है? सिर्फ़ यह कि तू
उस का ख़ौफ़ माने, उस की तमाम राहों पर चले,
उसे पियार करे, अपने पूरे दिल-ओ-जान से उस की
ख़िदमत करे 13 और उस के तमाम अह्काम पर
अमल करे। आज मैं उन्हें तुझे तेरी बेहतरी के लिए
दे रहा हूँ।
14 पूरा आस्मान, ज़मीन और जो कुछ उस पर है,
सब का मालिक रब्ब तेरा ख़ुदा है। 15 तो भी उस ने
तेरे बापदादा पर ही अपनी ख़ास शफ़्क़त का इज़्हार
करके उन से मुहब्बत की। और उस ने तुम्हें चुन
कर दूसरी तमाम क़ौमों पर तर्जीह दी जैसा कि आज
ज़ाहिर है। 16 ख़तना उस की क़ौम का निशान है,
लेकिन ध्यान रखो कि वह न सिर्फ़ ज़ाहिरी बल्कि
बातिनी भी हो। आइन्दा अड़ न जाओ।
17 क्यूँकि रब्ब तुम्हारा ख़ुदा ख़ुदाओं का ख़ुदा और
रबों का रब्ब है। वह अज़ीम और ज़ोरावर ख़ुदा है
जिस से सब ख़ौफ़ खाते हैं। वह जानिबदारी नहीं
करता और रिश्वत नहीं लेता। 18 वह यतीमों और
बेवाओं का इन्साफ़ करता है। वह परदेसी से पियार
करता और उसे ख़ुराक और पोशाक मुहय्या करता
है। 19 तुम भी उन के साथ मुहब्बत से पेश आओ,
क्यूँकि तुम भी मिस्र में परदेसी थे।
20 रब्ब अपने ख़ुदा का ख़ौफ़ मान और उस की
ख़िदमत कर। उस से लिपटा रह और उसी के नाम
की क़सम खा। 21 वही तेरा फ़ख़र है। वह तेरा ख़ुदा
है जिस ने वह तमाम अज़ीम और डराऔने काम किए
जो तू ने ख़ुद देखे। 22 जब तेरे बापदादा मिस्र गए थे
तो 70 अफ़राद थे। और अब रब्ब तेरे ख़ुदा ने तुझे
सितारों की मानिन्द बेशुमार बना दिया है।

रब्ब से मुहब्बत रख और उस की सुन

11 1 रब्ब अपने ख़ुदा से पियार कर और हमेशा
उस के अह्काम के मुताबिक़ ज़िन्दगी

गुज़ार। 2 आज जान लो कि तुम्हारे बच्चों ने नहीं बल्कि
तुम ही ने रब्ब अपने ख़ुदा से तर्बियत पाई। तुम ने
उस की अज़मत, बड़े इख़तियार और क़ुद्रत को देखा,
3 और तुम उन मोजिज़ों के गवाह हो जो उस ने मिस्र
के बादशाह फ़िरऔन और उस के पूरे मुल्क के सामने
किए। 4 तुम ने देखा कि रब्ब ने किस तरह मिस्री फ़ौज
को उस के घोड़ों और रथों समेत बहर-ए-क़ुल्ज़ुम में
ग़र्क़ कर दिया जब वह तुम्हारा ताक़्क़ुब कर रहे थे।
उस ने उन्हें यूँ तबाह किया कि वह आज तक बहाल
नहीं हुए।

5 तुम्हारे बच्चे नहीं बल्कि तुम ही गवाह हो कि यहाँ
पहुँचने से पहले रब्ब ने रेगिस्तान में तुम्हारी किस
तरह देख-भाल की। 6 तुम ने उस का इलियाब के
बेटों दातन और अबीराम के साथ सुलूक देखा जो
रूबिन के क़बीले के थे। उस दिन ज़मीन ने ख़ैमागाह
के अन्दर मुँह खोल कर उन्हें उन के घरानों, डेरों और
तमाम जानदारों समेत हड़प कर लिया।

7 तुम ने अपनी ही आँखों से रब्ब के यह तमाम
अज़ीम काम देखे हैं। 8 चुनाँचे उन तमाम अह्काम
पर अमल करते रहो जो मैं आज तुम्हें दे रहा हूँ ताकि
तुम्हें वह ताक़त हासिल हो जो दरकार होगी जब तुम
दरया-ए-यर्दन को पार करके मुल्क पर क़ब्ज़ा करोगे।
9 अगर तुम फ़रमाँबरदार रहो तो देर तक उस मुल्क
में जीते रहोगे जिस का वादा रब्ब ने क़सम खा कर
तुम्हारे बापदादा से किया था और जिस में दूध और
शहद की कस्रत है।

10 क्यूँकि यह मुल्क मिस्र की मानिन्द नहीं है जहाँ
से तुम निकल आए हो। वहाँ के खेतों में तुझे बीज बो
कर बड़ी मेहनत से उस की आबपाशी करनी पड़ती
थी 11 जबकि जिस मुल्क पर तुम क़ब्ज़ा करोगे उस
में पहाड़ और वादियाँ हैं जिन्हें सिर्फ़ बारिश का पानी
सेराब करता है। 12 रब्ब तेरा ख़ुदा ख़ुद उस मुल्क का
ख़याल रखता है। रब्ब तेरे ख़ुदा की आँखें साल के
पहले दिन से ले कर आख़िर तक मुतवातिर उस पर
लगी रहती हैं।

13 चुनाँचे उन अह्काम के ताबे रहो जो मैं आज तुम्हें
दे रहा हूँ। रब्ब अपने ख़ुदा से पियार करो और अपने
पूरे दिल-ओ-जान से उस की ख़िदमत करो। 14 फिर
वह ख़रीफ़ और बहार की सालाना बारिश वक़्त पर
भेजेगा। अनाज, अंगूर और ज़ैतून की फ़सलें पकेंगी,
और तू उन्हें जमा कर लेगा। 15 नीज़, अल्लाह तेरी
चरागाहों में तेरे रेवड़ों के लिए घास मुहय्या करेगा,
और तू खा कर सेर हो जाएगा।

16 लेकिन ख़बरदार, कहीं तुम्हें वरग़लाया न जाए।
ऐसा न हो कि तुम रब्ब की राह से हट जाओ और
दीगर माबूदों को सिज्दा करके उन की ख़िदमत करो।
17 वर्ना रब्ब का ग़ज़ब तुम पर आन पड़ेगा, और वह
मुल्क में बारिश होने नहीं देगा। तुम्हारी फ़सलें नहीं
पकेंगी, और तुम्हें जल्द ही उस अच्छे मुल्क में से
मिटा दिया जाएगा जो रब्ब तुम्हें दे रहा है।

18 चुनाँचे मेरी यह बातें अपने दिलों पर नक़्श कर
लो। उन्हें निशान के तौर पर और याददहानी के लिए
अपने हाथों और माथों पर लगाओ। 19 उन्हें अपने
बच्चों को सिखाओ। हर जगह और हमेशा उन के
बारे में बात करो, ख़्वाह तू घर में बैठा या रास्ते पर
चलता हो, लेटा हो या खड़ा हो। 20 उन्हें अपने घरों
की चौखटों और अपने शहरों के दरवाज़ों पर लिख
21 ताकि जब तक ज़मीन पर आस्मान क़ाइम है तुम
और तुम्हारी औलाद उस मुल्क में जीते रहें जिस का
वादा रब्ब ने क़सम खा कर तुम्हारे बापदादा से किया
था।

22 एहतियात से उन अह्काम की पैरवी करो जो मैं
तुमहें दे रहा हूँ। रब्ब अपने ख़ुदा से पियार करो, उस
के तमाम अह्काम पर अमल करो और उस के साथ
लिपटे रहो। 23 फिर वह तुम्हारे आगे आगे यह तमाम
क़ौमें निकाल देगा और तुम ऐसी क़ौमों की ज़मीनों
पर क़ब्ज़ा करोगे जो तुम से बड़ी और ताक़तवर हैं।
24 तुम जहाँ भी क़दम रखोगे वह तुम्हारा ही होगा,
जुनूबी रेगिस्तान से ले कर लुब्नान तक, दरया-ए-
फ़ुरात से बहीरा-ए-रूम तक। 25 कोई भी तुम्हारा
सामना नहीं कर सकेगा। तुम उस मुल्क में जहाँ

भी जाओगे वहाँ रब्ब तुम्हारा ख़ुदा अपने वादे के मुताबिक़ तुम्हारी दहशत और ख़ौफ़ पैदा कर देगा।
[26] आज तुम ख़ुद फ़ैसला करो। क्या तुम रब्ब की बर्कत या उस की लानत पाना चाहते हो? [27] अगर तुम रब्ब अपने ख़ुदा के उन अह्काम पर अमल करो जो मैं आज तुम्हें दे रहा हूँ तो वह तुम्हें बर्कत देगा।
[28] लेकिन अगर तुम उन के ताबे न रहो बल्कि मेरी पेशकरदा राह से हट कर दीगर माबूदों की पैरवी करो तो वह तुम पर लानत भेजेगा।

[29] जब रब्ब तेरा ख़ुदा तुझे उस मुल्क में ले जाएगा जिस पर तू क़ब्ज़ा करेगा तो लाज़िम है कि गरिज़ीम पहाड़ पर चढ़ कर बर्कत का एलान करे और ऐबाल पहाड़ पर लानत का। [30] यह दो पहाड़ दरया-ए-यर्दन के मग़रिब में उन कनआनियों के इलाक़े में वाक़े हैं जो वादी-ए-यर्दन में आबाद हैं। वह मग़रिब की तरफ़ जिल्जाल शहर के सामने मोरिह के बलूत के दरख़्तों के नज़्दीक हैं। [31] अब तुम दरया-ए-यर्दन को पार करके उस मुल्क पर क़ब्ज़ा करने वाले हो जो रब्ब तुम्हारा ख़ुदा तुम्हें दे रहा है। जब तुम उसे अपना कर उस में आबाद हो जाओगे [32] तो एहतियात से उन तमाम अह्काम पर अमल करते रहो जो मैं आज तुम्हें दे रहा हूँ।

मुल्क में रब्ब के अह्काम

12 [1] ज़ैल में वह अह्काम और क़वानीन हैं जिन पर तुम्हें ध्यान से अमल करना होगा जब तुम उस मुल्क में आबाद होगे जो रब्ब तेरे बापदादा का ख़ुदा तुझे दे रहा है ताकि तू उस पर क़ब्ज़ा करे। मुल्क में रहते हुए उम्र भर उन के ताबे रहो।

मुल्क में एक ही जगह पर मक़्दिस हो

[2] उन तमाम जगहों को बर्बाद करो जहाँ वह क़ौमें जिन्हें तुम्हें निकालना है अपने देवताओं की पूजा करती हैं, ख़्वाह वह ऊँचे पहाड़ों, पहाड़ियों या घने दरख़्तों के साय में क्यूँ न हों। [3] उन की क़ुर्बानगाहों को ढा देना। जिन पत्थरों की पूजा वह करते हैं उन्हें चिकना-चूर कर देना। यसीरत देवी के खम्बे जला देना। उन के देवताओं के मुजस्समे काट डालना। ग़रज़ इन जगहों से उन का नाम-ओ-निशान मिट जाए।

[4] रब्ब अपने ख़ुदा की परस्तिश करने के लिए उन के तरीक़े न अपनाना। [5] रब्ब तुम्हारा ख़ुदा क़बीलों में से अपने नाम की सुकूनत के लिए एक जगह चुन लेगा। इबादत के लिए वहाँ जाया करो, [6] और वहाँ अपनी तमाम क़ुर्बानियाँ ला कर पेश करो, ख़्वाह वह भस्म होने वाली क़ुर्बानियाँ, ज़बह की क़ुर्बानियाँ, पैदावार का दसवाँ हिस्सा, उठाने वाली क़ुर्बानियाँ, मन्नत के हदिए, ख़ुशी से पेश की गई क़ुर्बानियाँ या मवेशियों के पहलौठे क्यूँ न हों। [7] वहाँ रब्ब अपने ख़ुदा के हुज़ूर अपने घरानों समेत खाना खा कर उन काम्याबियों की ख़ुशी मनाओ जो तुझे रब्ब तेरे ख़ुदा की बर्कत के बाइस हासिल हुई हैं।

[8] उस वक़्त तुम्हें वह नहीं करना जो हम करते आए हैं। आज तक हर कोई अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ इबादत करता है, [9] क्यूँकि अब तक तुम आराम की उस जगह नहीं पहुँचे जो तुझे रब्ब तेरे ख़ुदा से मीरास में मिलनी है। [10] लेकिन जल्द ही तुम दरया-ए-यर्दन को पार करके उस मुल्क में आबाद हो जाओगे जो रब्ब तुम्हारा ख़ुदा तुम्हें मीरास में दे रहा है। उस वक़्त वह तुम्हें इर्दगिर्द के दुश्मनों से बचाए रखेगा, और तुम आराम और सुकून से ज़िन्दगी गुज़ार सकोगे।
[11] तब रब्ब तुम्हारा ख़ुदा अपने नाम की सुकूनत के लिए एक जगह चुन लेगा, और तुम्हें सब कुछ जो मैं बताऊँगा वहाँ ला कर पेश करना है, ख़्वाह वह भस्म होने वाली क़ुर्बानियाँ, ज़बह की क़ुर्बानियाँ, पैदावार का दसवाँ हिस्सा, उठाने वाली क़ुर्बानियाँ या मन्नत के ख़ास हदिए क्यूँ न हों। [12] वहाँ रब्ब के सामने तुम, तुम्हारे बेटे-बेटियाँ, तुम्हारे ग़ुलाम और लौंडियाँ ख़ुशी मनाएँ। अपने शहरों में आबाद लावियों को भी अपनी ख़ुशी में शरीक करो, क्यूँकि उन के पास मौरूसी ज़मीन नहीं होगी।

13 ख़बरदार, अपनी भस्म होने वाली क़ुर्बानियाँ हर जगह पर पेश न करना 14 बल्कि सिर्फ़ उस जगह पर जो रब्ब क़बीलों में से चुनेगा। वहीं सब कुछ यूँ मना जिस तरह मैं तुझे बताता हूँ।

15 लेकिन वह जानवर इस में शामिल नहीं हैं जो तू क़ुर्बानी के तौर पर पेश नहीं करना चाहता बल्कि सिर्फ़ खाना चाहता है। ऐसे जानवर तू आज़ादी से अपने तमाम शहरों में ज़बह करके उस बर्कत के मुताबिक़ खा सकता है जो रब्ब तेरे ख़ुदा ने तुझे दी है। ऐसा गोश्त हिरन और ग़ज़ाल के गोश्त की मानिन्द है यानी पाक और नापाक दोनों ही उसे खा सकते हैं। 16 लेकिन ख़ून न खाना। उसे पानी की तरह ज़मीन पर उंडेल कर ज़ाए कर देना।

17 जो भी चीज़ें रब्ब के लिए मख़्सूस की गई हैं उन्हें अपने शहरों में न खाना मसलन अनाज, अंगूर के रस और ज़ैतून के तेल का दसवाँ हिस्सा, मवेशियों के पहलौठे, मन्नत के हदिए, ख़ुशी से पेश की गई क़ुर्बानियाँ और उठाने वाली क़ुर्बानियाँ। 18 यह चीज़ें सिर्फ़ रब्ब के हुज़ूर खाना यानी उस जगह पर जिसे वह मक़्दिस के लिए चुनेगा। वहीं तू अपने बेटे-बेटियों, ग़ुलामों, लौंडियों और अपने क़बाइली इलाक़े के लावियों के साथ जमा हो कर ख़ुशी मना कि रब्ब ने हमारी मेहनत को बर्कत दी है। 19 अपने मुल्क में लावियों की ज़रूरियात उम्र भर पूरी करने की फ़िक्र रख।

20 जब रब्ब तेरा ख़ुदा अपने वादे के मुताबिक़ तेरी सरहद्दें बढ़ा देगा और तू गोश्त खाने की ख़्वाहिश रखेगा तो जिस तरह जी चाहे गोश्त खा सकेगा। 21 अगर तेरा घर उस मक़्दिस से दूर हो जिसे रब्ब तेरा ख़ुदा अपने नाम की सुकूनत के लिए चुनेगा तो तू जिस तरह जी चाहे अपने शहरों में रब्ब से मिले हुए मवेशियों को ज़बह करके खा सकता है। लेकिन ऐसा ही करना जैसा मैं ने हुक्म दिया है। 22 ऐसा गोश्त हिरन और ग़ज़ाल के गोश्त की मानिन्द है यानी पाक और नापाक दोनों ही उसे खा सकते हैं। 23 अलबत्ता गोश्त के साथ ख़ून न खाना, क्यूँकि ख़ून जानदार की जान है। उस की जान गोश्त के साथ न खाना। 24 ख़ून न खाना बल्कि उसे ज़मीन पर उंडेल कर ज़ाए कर देना। 25 उसे न खाना ताकि तुझे और तेरी औलाद को काम्याबी हासिल हो, क्यूँकि ऐसा करने से तू रब्ब की नज़र में सहीह काम करेगा।

26 लेकिन जो चीज़ें रब्ब के लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस हैं या जो तू ने मन्नत मान कर उस के लिए मख़्सूस की हैं लाज़िम है कि तू उन्हें उस जगह ले जाए जिसे रब्ब मक़्दिस के लिए चुनेगा। 27 वहीं, रब्ब अपने ख़ुदा की क़ुर्बानगाह पर अपनी भस्म होने वाली क़ुर्बानियाँ गोश्त और ख़ून समेत चढ़ा। ज़बह की क़ुर्बानियों का ख़ून क़ुर्बानगाह पर उंडेल देना, लेकिन उन का गोश्त तू खा सकता है।

28 जो भी हिदायात मैं तुझे दे रहा हूँ उन्हें एहतियात से पूरा कर। फिर तू और तेरी औलाद ख़ुशहाल रहेंगे, क्यूँकि तू वह कुछ करेगा जो रब्ब तेरे ख़ुदा की नज़र में अच्छा और दुरुस्त है।

29 रब्ब तेरा ख़ुदा उन क़ौमों को मिटा देगा जिन की तरफ़ तू बढ़ रहा है। तू उन्हें उन के मुल्क से निकालता जाएगा और ख़ुद उस में आबाद हो जाएगा। 30 लेकिन ख़बरदार, उन के ख़त्म होने के बाद भी उन के देवताओं के बारे में मालूमात हासिल न कर, वर्ना तू फंस जाएगा। मत कहना कि यह क़ौमें किस तरीक़े से अपने देवताओं की पूजा करती हैं? हम भी ऐसा ही करें। 31 ऐसा मत कर! यह क़ौमें ऐसे घिनौने तरीक़े से पूजा करती हैं जिन से रब्ब नफ़रत करता है। वह अपने बच्चों को भी जला कर अपने देवताओं को पेश करते हैं।

32 कलाम की जो भी बात मैं तुमहें पेश करता हूँ उस के ताबे रह कर उस पर अमल करो। न किसी बात का इज़ाफ़ा करना, न कोई बात निकालना।

देवताओं की तरफ़ लेजाने वालों से सुलूक

13 1 तेरे दर्मियान ऐसे लोग उठ खड़े होंगे जो अपने आप को नबी या ख़्वाब देखने वाले कहेंगे। हो सकता है कि वह किसी इलाही निशान या

मोजिज़े का एलान करें 2 जो वाक़ई वुजूद में आए।
साथ साथ वह कहें, “आ, हम दीगर माबूदों की पूजा
करें, हम उन की ख़िदमत करें जिन से तू अब तक
वाक़िफ़ नहीं है।” 3 ऐसे लोगों की न सुन। इस से
रब्ब तुम्हारा ख़ुदा तुम्हें आज़्मा कर मालूम कर रहा
है कि क्या तुम वाक़ई अपने पूरे दिल-ओ-जान से
उस से पियार करते हो। 4 तुम्हें रब्ब अपने ख़ुदा की
पैरवी करना और उसी का ख़ौफ़ मानना है। उस के
अह्काम के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारो, उस की सुनो,
उस की ख़िदमत करो, उस के साथ लिपटे रहो। 5 ऐसे
नबियों या ख़्वाब देखने वालों को सज़ा-ए-मौत देना,
क्यूँकि वह तुझे रब्ब तुम्हारे ख़ुदा से बग़ावत करने
पर उकसाना चाहते हैं, उसी से जिस ने फ़िद्या दे कर
तुम्हें मिस्र की ग़ुलामी से बचाया और वहाँ से निकाल
लाया। चूँकि वह तुझे उस राह से हटाना चाहते हैं
जिसे रब्ब तेरे ख़ुदा ने तेरे लिए मुक़र्रर किया है इस
लिए लाज़िम है कि उन्हें सज़ा-ए-मौत दी जाए। ऐसी
बुराई अपने दर्मियान से मिटा देना।

6 हो सकता है कि तेरा सगा भाई, तेरा बेटा या
बेटी, तेरी बीवी या तेरा क़रीबी दोस्त तुझे चुपके से
वरग़लाने की कोशिश करे कि आ, हम जा कर दीगर
माबूदों की पूजा करें, ऐसे देवताओं की जिन से न
तू और न तेरे बापदादा वाक़िफ़ थे। 7 ख़्वाह इर्दगिर्द
की या दूरदराज़ की क़ौमों के देवता हों, ख़्वाह दुनिया
के एक सिरे के या दूसरे सिरे के माबूद हों, 8 किसी
सूरत में अपनी रज़ामन्दी का इज़्हार न कर, न उस
की सुन। उस पर रहम न कर। न उसे बचाए रख, न
उसे पनाह दे 9 बल्कि उसे सज़ा-ए-मौत दे। और उसे
संगसार करते वक़्त पहले तेरा हाथ उस पर पत्थर
फैंके, फिर ही बाक़ी तमाम लोग हिस्सा लें। 10 उसे
ज़रूर पत्थरों से सज़ा-ए-मौत देना, क्यूँकि उस ने तुझे
रब्ब तेरे ख़ुदा से दूर करने की कोशिश की, उसी से
जो तुझे मिस्र की ग़ुलामी से निकाल लाया। 11 फिर
तमाम इस्राईल यह सुन कर डर जाएगा और आइन्दा
तेरे दर्मियान ऐसी शरीर हर्कत करने की जुरअत नहीं
करेगा।

12 जब तू उन शहरों में रहने लगेगा जो रब्ब तेरा
ख़ुदा तुझे दे रहा है तो शायद तुझे ख़बर मिल जाए
13 कि शरीर लोग तेरे दर्मियान से उभर आए हैं जो
अपने शहर के बाशिन्दों को यह कह कर ग़लत राह
पर लाए हैं कि आओ, हम दीगर माबूदों की पूजा
करें, ऐसे माबूदों की जिन से तुम वाक़िफ़ नहीं हो।
14 लाज़िम है कि तू दरयाफ़्त करके इस की तफ़्तीश
करे और ख़ूब मालूम करे कि क्या हुआ है। अगर
साबित हो जाए कि यह घिनौनी बात वाक़ई हुई है
15 तो फिर लाज़िम है कि तू शहर के तमाम बाशिन्दों
को हलाक करे। उसे रब्ब के सपुर्द करके सरासर
तबाह करना, न सिर्फ़ उस के लोग बल्कि उस के
मवेशी भी। 16 शहर का पूरा माल-ए-ग़नीमत चौक में
इकट्ठा कर। फिर पूरे शहर को उस के माल समेत रब्ब
के लिए मख़्सूस करके जला देना। उसे दुबारा कभी
न तामीर किया जाए बल्कि उस के खंडरात हमेशा
तक रहें।

17 पूरा शहर रब्ब के लिए मख़्सूस किया गया है,
इस लिए उस की कोई भी चीज़ तेरे पास न पाई जाए।
सिर्फ़ इस सूरत में रब्ब का ग़ज़ब ठंडा हो जाएगा,
और वह तुझ पर रहम करके अपनी मेहरबानी का
इज़्हार करेगा और तेरी तादाद बढ़ाएगा, जिस तरह
उस ने क़सम खा कर तेरे बापदादा से वादा किया है।
18 लेकिन यह सब कुछ इस पर मब्नी है कि तू रब्ब
अपने ख़ुदा की सुने और उस के उन तमाम अह्काम
पर अमल करे जो मैं तुझे आज दे रहा हूँ। वही कुछ
कर जो उस की नज़र में दुरुस्त है।

पाक और नापाक जानवर

14 1 तुम रब्ब अपने ख़ुदा के फ़र्ज़न्द हो। अपने
आप को मुर्दों के सबब से न ज़ख़्मी करो, न
अपने सर के सामने वाले बाल मुंडवाओ। 2 क्यूँकि तू
रब्ब अपने ख़ुदा के लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस क़ौम
है। दुनिया की तमाम क़ौमों में से रब्ब ने तुझे ही चुन
कर अपनी मिल्कियत बना लिया है।

3 कोई भी मकरूह चीज़ न खाना।

4 तुम बैल, भेड़-बक्री, 5 हिरन, ग़ज़ाल, मर्ग [d],
पहाड़ी बक्री, महात [e], ग़ज़ाल-ए-अफ़्रीक़ा [f]और
पहाड़ी बक्री खा सकते हो। 6 जिन के खुर या पाँओ
बिलकुल चिरे हुए हैं और जो जुगाली करते हैं उन्हें
खाने की इजाज़त है। 7 ऊँट, बिज्जू या ख़रगोश खाना
मना है। वह आप के लिए नापाक हैं, क्यूँकि वह
जुगाली तो करते हैं लेकिन उन के खुर या पाँओ चिरे
हुए नहीं हैं। 8 सूअर न खाना। वह तुम्हारे लिए नापाक
है, क्यूँकि उस के खुर तो चिरे हुए हैं लेकिन वह
जुगाली नहीं करता। न उन का गोश्त खाना, न उन
की लाशों को छूना।

9 पानी में रहने वाले जानवर खाने के लिए जाइज़
हैं अगर उन के पर और छिलके हों। 10 लेकिन जिन
के पर या छिलके नहीं हैं वह तुम्हारे लिए नापाक हैं।

11 तुम हर पाक परिन्दा खा सकते हो। 12 लेकिन
ज़ैल के परिन्दे खाना मना है : उक़ाब, दढ़ियल गिद्ध,
काला गिद्ध, 13 लाल चील, काली चील, हर क़िस्म
का गिद्ध, 14 हर क़िस्म का कव्वा, 15 उक़ाबी उल्लू,
छोटे कान वाला उल्लू, बड़े कान वाला उल्लू, हर क़िस्म
का बाज़, 16 छोटा उल्लू, चिंघाड़ने वाला उल्लू, सफ़ेद
उल्लू, 17 दश्ती उल्लू, मिस्री गिद्ध, क़ूक़, 18 लक़्लक़, हर
क़िस्म का बूतीमार, हुदहुद और चमगादड़ [g]।

19 तमाम पर रखने वाले कीड़े तुम्हारे लिए नापाक
हैं। उन्हें खाना मना है। 20 लेकिन तुम हर पाक परिन्दा
खा सकते हो।

21 जो जानवर ख़ुद-ब-ख़ुद मर जाए उसे न खाना। तू
उसे अपनी आबादी में रहने वाले किसी परदेसी को
दे या किसी अजनबी को बेच सकता है और वह उसे
खा सकता है। लेकिन तू उसे मत खाना, क्यूँकि तू
रब्ब अपने ख़ुदा के लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस क़ौम
है।

बक्री के बच्चे को उस की माँ के दूध में पकाना मना
है।

अपनी पैदावार का दसवाँ हिस्सा मख़्सूस करना

22 लाज़िम है कि तू हर साल अपने खेतों की
पैदावार का दसवाँ हिस्सा रब्ब के लिए अलग करे।
23 इस के लिए अपना अनाज, अंगूर का रस, ज़ैतून
का तेल और मवेशी के पहलौठे रब्ब अपने ख़ुदा के
हुज़ूर ले आना यानी उस जगह जो वह अपने नाम की
सुकूनत के लिए चुनेगा। वहाँ यह चीज़ें क़ुर्बान करके
खा ताकि तू उम्र भर रब्ब अपने ख़ुदा का ख़ौफ़ मानना
सीखे।

24 लेकिन हो सकता है कि जो जगह रब्ब तेरा ख़ुदा
अपने नाम की सुकूनत के लिए चुनेगा वह तेरे घर से
हद्द से ज़ियादा दूर हो और रब्ब तेरे ख़ुदा की बर्कत
के बाइस मज़्कूरा दसवाँ हिस्सा इतना ज़ियादा हो
कि तू उसे मक़्दिस तक नहीं पहुँचा सकता। 25 इस
सूरत में उसे बेच कर उस के पैसे उस जगह ले जा
जो रब्ब तेरा ख़ुदा अपने नाम की सुकूनत के लिए
चुनेगा। 26 वहाँ पहुँच कर उन पैसों से जो जी चाहे
ख़रीदना, ख़्वाह गाय-बैल, भेड़-बक्री, मै या मै जैसी
कोई और चीज़ क्यूँ न हो। फिर अपने घराने के साथ
मिल कर रब्ब अपने ख़ुदा के हुज़ूर यह चीज़ें खाना
और ख़ुशी मनाना। 27 ऐसे मौक़ों पर उन लावियों का
ख़याल रखना जो तेरे क़बाइली इलाक़े में रहते हैं,
क्यूँकि उन्हें मीरास में ज़मीन नहीं मिलेगी।

---

[d]यह हिरन के मुशाबेह होता है लेकिन फ़ित्रतन मुख़्तलिफ़ होता है। इस के सींग खोखले, बेशाख और उनझड़ होते हैं। antelope। याद रहे कि क़दीम ज़माने के इन जानवरों के अक्सर नाम मतरूक हैं या उन का मतलब बदल गया है, इस लिए उन का मुख़्तलिफ़ तर्जुमा हो सकता है।

[e]महात। दराज़क़द हिरनों की एक नौ जिस के सींग चक्करदार होते हैं। addax।

[f]ग़ज़ाल-ए-अफ़्रीक़ा। चिकारों की तीन इक़साम में से कोई जो अपने लम्बे और हल्क़ादार सींगों की वजह से मुम्ताज़ है। oryx।

[g]याद रहे कि क़दीम ज़माने के इन परिन्दों के अक्सर नाम मतरूक हैं या उन का मतलब बदल गया है, इस लिए उन का मुख़्तलिफ़ तर्जुमा हो सकता है।

28 हर तीसरे साल अपनी पैदावार का दसवाँ हिस्सा
अपने शहरों में जमा करना। 29 उसे लावियों को देना
जिन के पास मौरूसी ज़मीन नहीं है, नीज़ अपने शहरों
में आबाद परदेसियों, यतीमों और बेवाओं को देना।
वह आएँ और खाना खा कर सेर हो जाएँ ताकि रब्ब
तेरा ख़ुदा तेरे हर काम में बर्कत दे।

क़र्ज़दारों की बहाली का साल

15 1 हर सात साल के बाद एक दूसरे के कर्ज़े
मुआफ़ कर देना। 2 उस वक़्त जिस ने भी
किसी इस्राईली भाई को क़र्ज़ दिया है वह उसे मन्सूख़
करे। वह अपने पड़ोसी या भाई को पैसे वापस करने
पर मज्बूर न करे, क्यूँकि रब्ब की ताज़ीम में क़र्ज़
मुआफ़ करने के साल का एलान किया गया है। 3 इस
साल में तू सिर्फ़ ग़ैरमुल्की क़र्ज़दारों को पैसे वापस
करने पर मज्बूर कर सकता है। अपने इस्राईली भाई
के तमाम क़र्ज़ मुआफ़ कर देना।

4 तेरे दर्मियान कोई भी ग़रीब नहीं होना चाहिए,
क्यूँकि जब तू उस मुल्क में रहेगा जो रब्ब तेरा ख़ुदा
तुझे मीरास में देने वाला है तो वह तुझे बहुत बर्कत
देगा। 5 लेकिन शर्त यह है कि तू पूरे तौर पर उस की
सुने और एहतियात से उस के उन तमाम अह्काम
पर अमल करे जो मैं तुझे आज दे रहा हूँ। 6 फिर
रब्ब तुम्हारा ख़ुदा तुझे अपने वादे के मुताबिक़ बर्कत
देगा। तू किसी भी क़ौम से उधार नहीं लेगा बल्कि
बहुत सी क़ौमों को उधार देगा। कोई भी क़ौम तुझ
पर हुकूमत नहीं करेगी बल्कि तू बहुत सी क़ौमों पर
हुकूमत करेगा।

7 जब तू उस मुल्क में आबाद होगा जो रब्ब तेरा
ख़ुदा तुझे देने वाला है तो अपने दर्मियान रहने वाले
ग़रीब भाई से सख़्त सुलूक न करना, न कंजूस होना।
8 खुले दिल से उस की मदद कर। जितनी उसे ज़रूरत
है उसे उधार के तौर पर दे। 9 ख़बरदार, ऐसा मत
सोच कि क़र्ज़ मुआफ़ करने का साल क़रीब है, इस
लिए मैं उसे कुछ नहीं दूँगा। अगर तू ऐसी शरीर
बात अपने दिल में सोचते हुए ज़रूरतमन्द भाई को
क़र्ज़ देने से इन्कार करे और वह रब्ब के सामने तेरी
शिकायत करे तो तू क़ुसूरवार ठहरेगा। 10 उसे ज़रूर
कुछ दे बल्कि ख़ुशी से दे। फिर रब्ब तेरा ख़ुदा तेरे
हर काम में बर्कत देगा। 11 मुल्क में हमेशा ग़रीब और
ज़रूरतमन्द लोग पाए जाएँगे, इस लिए मैं तुझे हुक्म
देता हूँ कि खुले दिल से अपने ग़रीब और ज़रूरतमन्द
भाइयों की मदद कर।

ग़ुलामों को आज़ाद करने का फ़र्ज़

12 अगर कोई इस्राईली भाई या बहन अपने आप
को बेच कर तेरा ग़ुलाम बन जाए तो वह छः साल
तेरी ख़िदमत करे। लेकिन लाज़िम है कि सातवें साल
उसे आज़ाद कर दिया जाए। 13 आज़ाद करते वक़्त
उसे ख़ाली हाथ फ़ारिग़ न करना 14 बल्कि अपनी
भेड़-बक्रियों, अनाज, तेल और मै से उसे फ़य्याज़ी से
कुछ दे, यानी उन चीज़ों में से जिन से रब्ब तेरे ख़ुदा
ने तुझे बर्कत दी है। 15 याद रख कि तू भी मिस्र में
ग़ुलाम था और कि रब्ब तेरे ख़ुदा ने फ़िद्या दे कर
तुझे छुड़ाया। इसी लिए मैं आज तुझे यह हुक्म देता
हूँ।

16 लेकिन मुम्किन है कि तेरा ग़ुलाम तुझे छोड़ना न
चाहे, क्यूँकि वह तुझ से और तेरे ख़ान्दान से मुहब्बत
रखता है, और वह तेरे पास रह कर ख़ुशहाल है।
17 इस सूरत में उसे दरवाज़े के पास ले जा और उस
के कान की लौ चौखट के साथ लगा कर उसे सुताली
यानी तेज़ औज़ार से छेद दे। तब वह ज़िन्दगी भर तेरा
ग़ुलाम बना रहेगा। अपनी लौंडी के साथ भी ऐसा ही
करना।

18 अगर ग़ुलाम तुझे छः साल के बाद छोड़ना चाहे
तो बुरा न मानना। आख़िर अगर उस की जगह कोई
और वही काम तनख़्वाह के लिए करता तो तेरे
अख़राजात दुगने होते। उसे आज़ाद करना तो रब्ब
तेरा ख़ुदा तेरे हर काम में बर्कत देगा।

जानवरों के पहलौठे मख़्सूस हैं

19 अपनी गाइयों और भेड़-बक्रियों के नर पहलौठे रब्ब अपने ख़ुदा के लिए मख़्सूस करना। न गाय के पहलौठे को काम के लिए इस्तेमाल करना, न भेड़ के पहलौठे के बाल कतरना। 20 हर साल ऐसे बच्चे उस जगह ले जा जो रब्ब अपने मक़्दिस के लिए चुनेगा। वहाँ उन्हें रब्ब अपने ख़ुदा के हुज़ूर अपने पूरे ख़ान्दान समेत खाना।

21 अगर ऐसे जानवर में कोई ख़राबी हो, वह अंधा या लंगड़ा हो या उस में कोई और नुक़्स हो तो उसे रब्ब अपने ख़ुदा के लिए क़ुर्बान न करना। 22 ऐसे जानवर तू घर में ज़बह करके खा सकता है। वह हिरन और ग़ज़ाल की मानिन्द हैं जिन्हें तू खा तो सकता है लेकिन क़ुर्बानी के तौर पर पेश नहीं कर सकता। पाक और नापाक शख़्स दोनों उसे खा सकते हैं। 23 लेकिन ख़ून न खाना। उसे पानी की तरह ज़मीन पर उंडेल कर ज़ाए कर देना।

फ़सह की ईद

16 1 अबीब के महीने [h]में रब्ब अपने ख़ुदा की ताज़ीम में फ़सह की ईद मनाना, क्यूँकि इस महीने में वह तुझे रात के वक़्त मिस्र से निकाल लाया। 2 उस जगह जमा हो जा जो रब्ब अपने नाम की सुकूनत के लिए चुनेगा। उसे क़ुर्बानी के लिए भेड़-बक्रियाँ या गाय-बैल पेश करना। 3 गोश्त के साथ बेख़मीरी रोटी खाना। सात दिन तक यही रोटी खा, बिलकुल उसी तरह जिस तरह तू ने किया जब जल्दी जल्दी मिस्र से निकला। मुसीबत की यह रोटी इस लिए खा ताकि वह दिन तेरे जीते जी याद रहे जब तू मिस्र से रवाना हुआ। 4 लाज़िम है कि ईद के हफ़्ते के दौरान तेरे पूरे मुल्क में ख़मीर न पाया जाए।

जो क़ुर्बानी तू ईद के पहले दिन की शाम को पेश करे उस का गोश्त उसी वक़्त खा ले। अगली सुब्ह तक कुछ बाक़ी न रह जाए। 5 फ़सह की क़ुर्बानी किसी भी शहर में जो रब्ब तेरा ख़ुदा तुझे देगा न चढ़ाना 6 बल्कि सिर्फ़ उस जगह जो वह अपने नाम की सुकूनत के लिए चुनेगा। मिस्र से निकलते वक़्त की तरह क़ुर्बानी के जानवर को सूरज डूबते वक़्त ज़बह कर। 7 फिर उसे भून कर उस जगह खाना जो रब्ब तेरा ख़ुदा चुनेगा। अगली सुब्ह अपने घर वापस चला जा। 8 ईद के पहले छः दिन बेख़मीरी रोटी खाता रह। सातवें दिन काम न करना बल्कि रब्ब अपने ख़ुदा की इबादत के लिए जमा हो जाना।

फ़सल की कटाई की ईद

9 जब अनाज की फ़सल की कटाई शुरू होगी तो पहले दिन के सात हफ़्ते बाद 10 फ़सल की कटाई की ईद मनाना। रब्ब अपने ख़ुदा को उतना पेश कर जितना जी चाहे। वह उस बर्कत के मुताबिक़ हो जो उस ने तुझे दी है। 11 इस के लिए भी उस जगह जमा हो जा जो रब्ब अपने नाम की सुकूनत के लिए चुनेगा। वहाँ उस के हुज़ूर ख़ुशी मना। तेरे बाल-बच्चे, तेरे ग़ुलाम और लौंडियाँ और तेरे शहरों में रहने वाले लावी, परदेसी, यतीम और बेवाएँ सब तेरी ख़ुशी में शरीक हों। 12 इन अह्काम पर ज़रूर अमल करना और मत भूलना कि तू मिस्र में ग़ुलाम था।

झोंपड़ियों की ईद

13 अनाज गाहने और अंगूर का रस निकालने के बाद झोंपड़ियों की ईद मनाना जिस का दौरानिया सात दिन हो। 14 ईद के मौक़े पर ख़ुशी मनाना। तेरे बाल-बच्चे, तेरे ग़ुलाम और लौंडियाँ और तेरे शहरों में बसने वाले लावी, परदेसी, यतीम और बेवाएँ सब तेरी ख़ुशी में शरीक हों। 15 जो जगह रब्ब तेरा ख़ुदा मक़्दिस के लिए चुनेगा वहाँ उस की ताज़ीम में सात दिन तक यह ईद मनाना। क्यूँकि रब्ब तेरा ख़ुदा तेरी

[h]मार्च ता अप्रैल।

तमाम फ़सलों और मेहनत को बर्कत देगा, इस लिए ख़ूब ख़ुशी मनाना।

16 इस्राईल के तमाम मर्द साल में तीन मर्तबा उस मक़्दिस पर हाज़िर हो जाएँ जो रब्ब तेरा ख़ुदा चुनेगा यानी बेख़मीरी रोटी की ईद, फ़सल की कटाई की ईद और झोंपड़ियों की ईद पर। कोई भी रब्ब के हुज़ूर ख़ाली हाथ न आए। 17 हर कोई उस बर्कत के मुताबिक़ दे जो रब्ब तेरे ख़ुदा ने उसे दी है।

क़ाज़ी मुक़र्रर करना

18 अपने अपने क़बाइली इलाक़े में क़ाज़ी और निगहबान मुक़र्रर कर। वह हर उस शहर में हों जो रब्ब तेरा ख़ुदा तुझे देगा। वह इन्साफ़ से लोगों की अदालत करें। 19 न किसी के हुक़ूक़ मारना, न जानिबदारी दिखाना। रिश्वत क़बूल न करना, क्यूँकि रिश्वत दानिशमन्दों को अंधा कर देती और रास्तबाज़ की बातें पलट देती है। 20 सिर्फ़ और सिर्फ़ इन्साफ़ के मुताबिक़ चल ताकि तू जीता रहे और उस मुल्क पर क़ब्ज़ा करे जो रब्ब तेरा ख़ुदा तुझे देगा।

बुतपरस्ती की सज़ा

21 जहाँ तू रब्ब अपने ख़ुदा के लिए क़ुर्बानगाह बनाएगा वहाँ न यसीरत देवी की पूजा के लिए लकड़ी का खम्बा 22 और न कोई ऐसा पत्थर खड़ा करना जिस की पूजा लोग करते हैं। रब्ब तेरा ख़ुदा इन चीज़ों से नफ़रत रखता है।

17 1 रब्ब अपने ख़ुदा को नाक़िस गाय-बैल या भेड़-बक्री पेश न करना, क्यूँकि वह ऐसी क़ुर्बानी से नफ़रत रखता है।

2 जब तू उन शहरों में आबाद हो जाएगा जो रब्ब तेरा ख़ुदा तुझे देगा तो हो सकता है कि तेरे दर्मियान कोई मर्द या औरत रब्ब तेरे ख़ुदा का अह्द तोड़ कर वह कुछ करे जो उसे बुरा लगे। 3 मसलन वह दीगर माबूदों को या सूरज, चाँद या सितारों के पूरे लश्कर को सिज्दा करे, हालाँकि मैं ने यह मना किया है। 4 जब भी तुझे इस क़िस्म की ख़बर मिले तो इस का पूरा खोज लगा। अगर बात दुरुस्त निकले और ऐसी घिनौनी हर्कत वाक़ई इस्राईल में की गई हो 5 तो क़ुसूरवार को शहर के बाहर ले जा कर संगसार कर देना। 6 लेकिन लाज़िम है कि पहले कम अज़ कम दो या तीन लोग गवाही दें कि उस ने ऐसा ही किया है। उसे सज़ा-ए-मौत देने के लिए एक गवाह काफ़ी नहीं। 7 पहले गवाह उस पर पत्थर फैंकें, इस के बाद बाक़ी तमाम लोग उसे संगसार करें। यूँ तू अपने दर्मियान से बुराई मिटा देगा।

मक़्दिस में आलातरीन अदालत

8 अगर तेरे शहर के क़ाज़ियों के लिए किसी मुक़द्दमे का फ़ैसला करना मुश्किल हो तो उस मक़्दिस में आ कर अपना मुआमला पेश कर जो रब्ब तेरा ख़ुदा चुनेगा, ख़्वाह किसी को क़त्ल किया गया हो, उसे ज़ख़्मी कर दिया गया हो या कोई और मसला हो। 9 लावी के क़बीले के इमामों और मक़्दिस में ख़िदमत करने वाले क़ाज़ी को अपना मुक़द्दमा पेश कर, और वह फ़ैसला करें। 10 जो फ़ैसला वह उस मक़्दिस में करेंगे जो रब्ब चुनेगा उसे मानना पड़ेगा। जो भी हिदायत वह दें उस पर एहतियात से अमल कर। 11 शरीअत की जो भी बात वह तुझे सिखाएँ और जो भी फ़ैसला वह दें उस पर अमल कर। जो कुछ भी वह तुझे बताएँ उस से न दाईं और न बाईं तरफ़ मुड़ना।

12 जो मक़्दिस में रब्ब तेरे ख़ुदा की ख़िदमत करने वाले क़ाज़ी या इमाम को हक़ीर जान कर उन की नहीं सुनता उसे सज़ा-ए-मौत दी जाए। यूँ तू इस्राईल से बुराई मिटा देगा। 13 फिर तमाम लोग यह सुन कर डर जाएँगे और आइन्दा ऐसी गुस्ताख़ी करने की जुरअत नहीं करेंगे।

बादशाह के बारे में उसूल

14 तू जल्द ही उस मुल्क में दाख़िल होगा जो रब्ब तेरा ख़ुदा तुझे देने वाला है। जब तू उस पर क़ब्ज़ा करके उस में आबाद हो जाएगा तो हो सकता है कि तू एक दिन कहे, “आओ हम इर्दगिर्द की तमाम

क़ौमों की तरह बादशाह मुक़र्रर करें जो हम पर हुकूमत करे।” [15] अगर तू ऐसा करे तो सिर्फ़ वह शख़्स मुक़र्रर कर जिसे रब्ब तेरा ख़ुदा चुनेगा। वह परदेसी न हो बल्कि तेरा अपना इस्राईली भाई हो। [16] बादशाह बहुत ज़ियादा घोड़े न रखे, न अपने लोगों को उन्हें ख़रीदने के लिए मिस्र भेजे। क्यूँकि रब्ब ने तुझ से कहा है कि कभी वहाँ वापस न जाना। [17] तेरा बादशाह ज़ियादा बीवियाँ भी न रखे, वर्ना उस का दिल रब्ब से दूर हो जाएगा। और वह हद्द से ज़ियादा सोना-चाँदी जमा न करे।

[18] तख़्तनशीन होते वक़्त वह लावी के क़बीले के इमामों के पास पड़ी इस शरीअत की नक़ल लिखवाए। [19] यह किताब उस के पास महफ़ूज़ रहे, और वह उम्र भर रोज़ाना इसे पढ़ता रहे ताकि रब्ब अपने ख़ुदा का ख़ौफ़ मानना सीखे। तब वह शरीअत की तमाम बातों की पैरवी करेगा, [20] अपने आप को अपने इस्राईली भाइयों से ज़ियादा अहम नहीं समझेगा और किसी तरह भी शरीअत से हट कर काम नहीं करेगा। नतीजे में वह और उस की औलाद बहुत अर्से तक इस्राईल पर हुकूमत करेंगे।

इमामों और लावियों का हिस्सा

18 [1] इस्राईल के हर क़बीले को मीरास में उस का अपना इलाक़ा मिलेगा सिवा-ए-लावी के क़बीले के जिस में इमाम भी शामिल हैं। वह जलने वाली और दीगर क़ुर्बानियों में से अपना हिस्सा ले कर गुज़ारा करें। [2] उन के पास दूसरों की तरह मौरूसी ज़मीन नहीं होगी बल्कि रब्ब ख़ुद उन का मौरूसी हिस्सा होगा। यह उस ने वादा करके कहा है।

[3] जब भी किसी बैल या भेड़ को क़ुर्बान किया जाए तो इमामों को उस का शाना, जबड़े और ओझड़ी मिलने का हक़ है। [4] अपनी फ़सलों का पहला फल भी उन्हें देना यानी अनाज, मै, ज़ैतून का तेल और भेड़ों की पहली कतरी हुई ऊन। [5] क्यूँकि रब्ब ने तेरे तमाम क़बीलों में से लावी के क़बीले को ही मक़्दिस में रब्ब के नाम में ख़िदमत करने के लिए चुना है। यह हमेशा के लिए उन की और उन की औलाद की ज़िम्मादारी रहेगी।

[6] कुछ लावी मक़्दिस के पास नहीं बल्कि इस्राईल के मुख़्तलिफ़ शहरों में रहेंगे। अगर उन में से कोई उस जगह आना चाहे जो रब्ब मक़्दिस के लिए चुनेगा [7] तो वह वहाँ के ख़िदमत करने वाले लावियों की तरह मक़्दिस में रब्ब अपने ख़ुदा के नाम में ख़िदमत कर सकता है। [8] उसे क़ुर्बानियों में से दूसरों के बराबर लावियों का हिस्सा मिलना है, ख़्वाह उसे ख़ान्दानी मिल्कियत बेचने से पैसे मिल गए हों या नहीं।

जादूगरी मना है

[9] जब तू उस मुल्क में दाख़िल होगा जो रब्ब तेरा ख़ुदा तुझे दे रहा है तो वहाँ की रहने वाली क़ौमों के घिनौने दस्तूर न अपनाना। [10] तेरे दर्मियान कोई भी अपने बेटे या बेटी को क़ुर्बानी के तौर पर न जलाए। न कोई ग़ैबदानी करे, न फ़ाल या शुगून निकाले या जादूगरी करे। [11] इसी तरह मंत्र पढ़ना, हाज़िरात करना, क़िस्मत का हाल बताना या मुर्दों की रूहों से राबिता करना सख़्त मना है। [12] जो भी ऐसा करे वह रब्ब की नज़र में क़ाबिल-ए-घिन है। इन ही मकरूह दस्तूरों की वजह से रब्ब तेरा ख़ुदा तेरे आगे से उन क़ौमों को निकाल देगा। [13] इस लिए लाज़िम है कि तू रब्ब अपने ख़ुदा के सामने बेक़ुसूर रहे।

नबी का वादा

[14] जिन क़ौमों को तू निकालने वाला है वह उन की सुनती हैं जो फ़ाल निकालते और ग़ैबदानी करते हैं। लेकिन रब्ब तेरे ख़ुदा ने तुझे ऐसा करने की इजाज़त नहीं दी।

[15] रब्ब तेरा ख़ुदा तेरे वास्ते तेरे भाइयों में से मुझ जैसे नबी को बरपा करेगा। उस की सुनना। [16] क्यूँकि होरिब यानी सीना पहाड़ पर जमा होते वक़्त तू ने ख़ुद रब्ब अपने ख़ुदा से दरख़्वास्त की, “न मैं मज़ीद रब्ब अपने ख़ुदा की आवाज़ सुनना चाहता, न यह भड़कती हुई आग देखना चाहता हूँ, वर्ना मर

जाऊँगा।” 17 तब रब्ब ने मुझ से कहा, “जो कुछ वह कहते हैं वह ठीक है। 18 आइन्दा मैं उन में से तुझ जैसा नबी खड़ा करूँगा। मैं अपने अल्फ़ाज़ उस के मुँह में डाल दूँगा, और वह मेरी हर बात उन तक पहुँचाएगा। 19 जब वह नबी मेरे नाम में कुछ कहे तो लाज़िम है कि तू उस की सुन। जो नहीं सुनेगा उस से मैं ख़ुद जवाब तलब करूँगा। 20 लेकिन अगर कोई नबी गुस्ताख़ हो कर मेरे नाम में कोई बात कहे जो मैं ने उसे बताने को नहीं कहा था तो उसे सज़ा-ए-मौत देनी है। इसी तरह उस नबी को भी हलाक कर देना है जो दीगर माबूदों के नाम में बात करे।”

21 शायद तेरे ज़हन में सवाल उभर आए कि हम किस तरह मालूम कर सकते हैं कि कोई कलाम वाक़ई रब्ब की तरफ़ से है या नहीं। 22 जवाब यह है कि अगर नबी रब्ब के नाम में कुछ कहे और वह पूरा न हो जाए तो मतलब है कि नबी की बात रब्ब की तरफ़ से नहीं है बल्कि उस ने गुस्ताख़ी करके बात की है। इस सूरत में उस से मत डरना।

पनाह के शहर

19 1 रब्ब तेरा ख़ुदा उस मुल्क में आबाद क़ौमों को तबाह करेगा जो वह तुझे दे रहा है। जब तू उन्हें भगा कर उन के शहरों और घरों में आबाद हो जाएगा 2–3 तो पूरे मुल्क को तीन हिस्सों में तक़सीम कर। हर हिस्से में एक मर्कज़ी शहर मुक़र्रर कर। उन तक पहुँचाने वाले रास्ते साफ़-सुथरे रखना। इन शहरों में हर वह शख़्स पनाह ले सकता है जिस के हाथ से कोई ग़ैरइरादी तौर पर हलाक हुआ है। 4 वह ऐसे शहर में जा कर इन्तिक़ाम लेने वालों से महफ़ूज़ रहेगा। शर्त यह है कि उस ने न क़सदन और न दुश्मनी के बाइस किसी को मार दिया हो।

5 मसलन दो आदमी जंगल में दरख़्त काट रहे हैं। कुल्हाड़ी चलाते वक़्त एक की कुल्हाड़ी दस्ते से निकल कर उस के साथी को लग जाए और वह मर जाए। ऐसा शख़्स फ़रार हो कर ऐसे शहर में पनाह ले सकता है ताकि बचा रहे। 6 इस लिए ज़रूरी है कि ऐसे शहरों का फ़ासिला ज़ियादा न हो। क्यूँकि जब इन्तिक़ाम लेने वाला उस का ताक़्क़ुब करेगा तो ख़त्रा है कि वह तैश में उसे पकड़ कर मार डाले, अगरचि भागने वाला बेक़ुसूर है। जो कुछ उस ने किया वह दुश्मनी के सबब से नहीं बल्कि ग़ैरइरादी तौर पर हुआ। 7 इस लिए लाज़िम है कि तू पनाह के तीन शहर अलग कर ले।

8 बाद में रब्ब तेरा ख़ुदा तेरी सरहद्दें मज़ीद बढ़ा देगा, क्यूँकि यही वादा उस ने क़सम खा कर तेरे बापदादा से किया है। अपने वादे के मुताबिक़ वह तुझे पूरा मुल्क देगा, 9 अलबत्ता शर्त यह है कि तू एहतियात से उन तमाम अह्काम की पैरवी करे जो मैं तुझे आज दे रहा हूँ। दूसरे अल्फ़ाज़ में शर्त यह है कि तू रब्ब अपने ख़ुदा को पियार करे और हमेशा उस की राहों में चलता रहे। अगर तू ऐसा ही करे और नतीजतन रब्ब का वादा पूरा हो जाए तो लाज़िम है कि तू पनाह के तीन और शहर अलग कर ले। 10 वर्ना तेरे मुल्क में जो रब्ब तेरा ख़ुदा तुझे मीरास में दे रहा है बेक़ुसूर लोगों को जान से मारा जाएगा और तू ख़ुद ज़िम्मादार ठहरेगा।

11 लेकिन हो सकता है कोई दुश्मनी के बाइस किसी की ताक में बैठ जाए और उस पर हम्ला करके उसे मार डाले। अगर क़ातिल पनाह के किसी शहर में भाग कर पनाह ले 12 तो उस के शहर के बुज़ुर्ग इत्तिला दें कि उसे वापस लाया जाए। उसे इन्तिक़ाम लेने वाले के हवाले किया जाए ताकि उसे सज़ा-ए-मौत मिले। 13 उस पर रहम मत करना। लाज़िम है कि तू इस्राईल में से बेक़ुसूर की मौत का दाग़ मिटाए ताकि तू ख़ुशहाल रहे।

ज़मीनों की हद्दें

14 जब तू उस मुल्क में रहेगा जो रब्ब तेरा ख़ुदा तुझे मीरास में देगा ताकि तू उस पर क़ब्ज़ा करे तो ज़मीन की वह हद्दें आगे पीछे न करना जो तेरे बापदादा ने मुक़र्रर कीं।

अदालत में गवाह

15 तू किसी को एक ही गवाह के कहने पर क़ुसूरवार नहीं ठहरा सकता। जो भी जुर्म सरज़द हुआ है, कम अज़ कम दो या तीन गवाहों की ज़रूरत है। वर्ना तू उसे क़ुसूरवार नहीं ठहरा सकता।

16 अगर जिस पर इल्ज़ाम लगाया गया है इन्कार करके दावा करे कि गवाह झूट बोल रहा है 17 तो दोनों मक़्दिस में रब्ब के हुज़ूर आ कर ख़िदमत करने वाले इमामों और क़ाज़ियों को अपना मुआमला पेश करें। 18 क़ाज़ी इस का ख़ूब खोज लगाएँ। अगर बात दुरुस्त निकले कि गवाह ने झूट बोल कर अपने भाई पर ग़लत इल्ज़ाम लगाया है 19 तो उस के साथ वह कुछ किया जाए जो वह अपने भाई के लिए चाह रहा था। यूँ तू अपने दर्मियान से बुराई मिटा देगा। 20 फिर तमाम बाक़ी लोग यह सुन कर डर जाएँगे और आइन्दा तेरे दर्मियान ऐसी ग़लत हर्कत करने की जुरअत नहीं करेंगे। 21 क़ुसूरवार पर रहम न करना। उसूल यह हो कि जान के बदले जान, आँख के बदले आँख, दाँत के बदले दाँत, हाथ के बदले हाथ, पाँओ के बदले पाँओ।

जंग के उसूल

20 1 जब तू जंग के लिए निकल कर देखता है कि दुश्मन तादाद में ज़ियादा हैं और उन के पास घोड़े और रथ भी हैं तो मत डरना। रब्ब तेरा ख़ुदा जो तुझे मिस्र से निकाल लाया अब भी तेरे साथ है। 2 जंग के लिए निकलने से पहले इमाम सामने आए और फ़ौज से मुख़ातिब हो कर 3 कहे, “सन ऐ इस्राईल! आज तुम अपने दुश्मन से लड़ने जा रहे हो। उन के सबब से परेशान न हो। उन से न ख़ौफ़ खाओ, न घबराओ, 4 क्यूँकि रब्ब तुम्हारा ख़ुदा ख़ुद तुम्हारे साथ जा कर दुश्मन से लड़ेगा। वही तुम्हें फ़त्ह बख़्शेगा।”

5 फिर निगहबान फ़ौज से मुख़ातिब हों, “क्या यहाँ कोई है जिस ने हाल में अपना नया घर मुकम्मल किया लेकिन उसे मख़्सूस करने का मौक़ा न मिला? वह अपने घर वापस चला जाए। ऐसा न हो कि वह जंग के दौरान मारा जाए और कोई और घर को मख़्सूस करके उस में बसने लगे। 6 क्या कोई है जिस ने अंगूर का बाग़ लगा कर इस वक़्त उस की पहली फ़सल के इन्तिज़ार में है? वह अपने घर वापस चला जाए। ऐसा न हो कि वह जंग में मारा जाए और कोई और बाग़ का फ़ाइदा उठाए। 7 क्या कोई है जिस की मंगनी हुई है और जो इस वक़्त शादी के इन्तिज़ार में है? वह अपने घर वापस चला जाए। ऐसा न हो कि वह जंग में मारा जाए और कोई और उस की मंगेतर से शादी करे।”

8 निगहबान कहें, “क्या कोई ख़ौफ़ज़दा या परेशान है? वह अपने घर वापस चला जाए ताकि अपने साथियों को परेशान न करे।” 9 इस के बाद फ़ौजियों पर अफ़्सर मुक़र्रर किए जाएँ।

10 किसी शहर पर हम्ला करने से पहले उस के बाशिन्दों को हथियार डाल देने का मौक़ा देना। 11 अगर वह मान जाएँ और अपने दरवाज़े खोल दें तो वह तेरे लिए बेगार में काम करके तेरी ख़िदमत करें। 12 लेकिन अगर वह हथियार डालने से इन्कार करें और जंग छिड़ जाए तो शहर का मुहासरा कर। 13 जब रब्ब तेरा ख़ुदा तुझे शहर पर फ़त्ह देगा तो उस के तमाम मर्दों को हलाक कर देना। 14 तू तमाम माल-ए-ग़नीमत औरतों, बच्चों और मवेशियों समेत रख सकता है। दुश्मन की जो चीज़ें रब्ब ने तेरे हवाले कर दी हैं उन सब को तू इस्तेमाल कर सकता है। 15 यूँ उन शहरों से निपटना जो तेरे अपने मुल्क से बाहर हैं।

16 लेकिन जो शहर उस मुल्क में वाक़े हैं जो रब्ब तेरा ख़ुदा तुझे मीरास में दे रहा है, उन के तमाम जानदारों को हलाक कर देना। 17 उन्हें रब्ब के सपुर्द करके मुकम्मल तौर पर हलाक करना, जिस तरह रब्ब तेरे ख़ुदा ने तुझे हुक्म दिया है। इस में हित्ती, अमोरी, कनआनी, फ़रिज़्ज़ी, हिव्वी और यबूसी शामिल हैं। 18 अगर तू ऐसा न करे तो वह तुम्हें

रब्ब तुम्हारे ख़ुदा का गुनाह करने पर उकसाएँगे। जो घिनौनी हर्कतें वह अपने देवताओं की पूजा करते वक़्त करते हैं उन्हें वह तुम्हें भी सिखाएँगे।

[19] शहर का मुहासरा करते वक़्त इर्दगिर्द के फलदार दरख़्तों को काट कर तबाह न कर देना ख़्वाह बड़ी देर भी हो जाए, वर्ना तू उन का फल नहीं खा सकेगा। उन्हें न काटना। क्या दरख़्त तेरे दुश्मन हैं जिन का मुहासरा करना है? हरगिज़ नहीं! [20] उन दरख़्तों की और बात है जो फल नहीं लाते। उन्हें तू काट कर मुहासरे के लिए इस्तेमाल कर सकता है जब तक शहर शिकस्त न खाए।

नामालूम क़त्ल का कफ़्फ़ारा

21 [1] जब तू उस मुल्क में आबाद होगा जो रब्ब तुझे मीरास में दे रहा है ताकि तू उस पर क़ब्ज़ा करे तो हो सकता है कि कोई लाश खुले मैदान में कहीं पड़ी पाई जाए। अगर मालूम न हो कि किस ने उसे क़त्ल किया है [2] तो पहले इर्दगिर्द के शहरों के बुज़ुर्ग और क़ाज़ी आ कर पता करें कि कौन सा शहर लाश के ज़ियादा क़रीब है। [3] फिर उस शहर के बुज़ुर्ग एक जवान गाय चुन लें जो कभी काम के लिए इस्तेमाल नहीं हुई। [4] वह उसे एक ऐसी वादी में ले जाएँ जिस में न कभी हल चलाया गया, न पौदे लगाए गए हों। वादी में ऐसी नहर हो जो पूरा साल बहती रहे। वहीं बुज़ुर्ग जवान गाय की गर्दन तोड़ डालें।

[5] फिर लावी के क़बीले के इमाम क़रीब आएँ। क्यूँकि रब्ब तुम्हारे ख़ुदा ने उन्हें चुन लिया है ताकि वह ख़िदमत करें, रब्ब के नाम से बर्कत दें और तमाम झगड़ों और हम्लों का फ़ैसला करें। [6] उन के देखते देखते शहर के बुज़ुर्ग अपने हाथ गाय की लाश के ऊपर धो लें। [7] साथ साथ वह कहें, "हम ने इस शख़्स को क़त्ल नहीं किया, न हम ने देखा कि किस ने यह किया। [8] ऐ रब्ब, अपनी क़ौम इस्राईल का यह कफ़्फ़ारा क़बूल फ़रमा जिसे तू ने फ़िद्या दे कर छुड़ाया है। अपनी क़ौम इस्राईल को इस बेक़ुसूर के क़त्ल का क़ुसूरवार न ठहरा।" तब मक़्तूल का कफ़्फ़ारा दिया जाएगा।

[9] यूँ तू ऐसे बेक़ुसूर शख़्स के क़त्ल का दाग़ अपने दर्मियान से मिटा देगा। क्यूँकि तू ने वही कुछ किया होगा जो रब्ब की नज़र में दुरुस्त है।

जंगी क़ैदी औरत से शादी

[10] हो सकता है कि तू अपने दुश्मन से जंग करे और रब्ब तुम्हारा ख़ुदा तुझे फ़त्ह बख़्शे। जंगी क़ैदियों को जमा करते वक़्त [11] तुझे उन में से एक ख़ूबसूरत औरत नज़र आती है जिस के साथ तेरा दिल लग जाता है। तू उस से शादी कर सकता है। [12] उसे अपने घर में ले आ। वहाँ वह अपने सर के बालों को मुंडवाए, अपने नाख़ुन तराशे [13] और अपने वह कपड़े उतारे जो वह पहने हुए थी जब उसे क़ैद किया गया। वह पूरे एक महीने तक अपने वालिदैन के लिए मातम करे। फिर तू उस के पास जा कर उस के साथ शादी कर सकता है।

[14] अगर वह तुझे किसी वक़्त पसन्द न आए तो उसे जाने दे। वह वहाँ जाए जहाँ उस का जी चाहे। तुझे उसे बेचने या उस से लौंडी का सा सुलूक करने की इजाज़त नहीं है, क्यूँकि तू ने उसे मज्बूर करके उस से शादी की है।

पहलौठे के हुक़ूक़

[15] हो सकता है किसी मर्द की दो बीवियाँ हों। एक को वह पियार करता है, दूसरी को नहीं। दोनों बीवियों के बेटे पैदा हुए हैं, लेकिन जिस बीवी से शौहर मुहब्बत नहीं करता उस का बेटा सब से पहले पैदा हुआ। [16] जब बाप अपनी मिल्कियत वसियत में तक़्सीम करता है तो लाज़िम है कि वह अपने सब से बड़े बेटे का मौरूसी हक़ पूरा करे। उसे पहलौठे का यह हक़ उस बीवी के बेटे को मुन्तक़िल करने की इजाज़त नहीं जिसे वह पियार करता है। [17] उसे तस्लीम करना है कि उस बीवी का बेटा सब से बड़ा है, जिस से वह मुहब्बत नहीं करता। नतीजतन उसे

उस बेटे को दूसरे बेटों की निस्बत दुगना हिस्सा देना पड़ेगा, क्यूँकि वह अपने बाप की ताक़त का पहला इज़हार है। उसे पहलौठे का हक़ हासिल है।

सरकश बेटा

18 हो सकता है कि किसी का बेटा हटधर्म और
सरकश हो। वह अपने वालिदैन की इताअत नहीं
करता और उन के तम्बीह करने और सज़ा देने पर
भी उन की नहीं सुनता। 19 इस सूरत में वालिदैन उसे
पकड़ कर शहर के दरवाज़े पर ले जाएँ जहाँ बुज़ुर्ग
जमा होते हैं। 20 वह बुज़ुर्गों से कहें, "हमारा बेटा
हटधर्म और सरकश है। वह हमारी इताअत नहीं
करता बल्कि अय्याश और शराबी है।" 21 यह सुन
कर शहर के तमाम मर्द उसे संगसार करें। यूँ तू अपने
दर्मियान से बुराई मिटा देगा। तमाम इस्राईल यह सुन
कर डर जाएगा।

सज़ा-ए-मौत पाने वाले को उसी दिन दफ़नाना है

22 जब तू किसी को सज़ा-ए-मौत दे कर उस की
लाश किसी लकड़ी या दरख़्त से लटकाता है 23 तो
उसे अगली सुब्ह तक वहाँ न छोड़ना। हर सूरत में
उसे उसी दिन दफ़ना देना, क्यूँकि जिसे भी दरख़्त से
लटकाया गया है उस पर अल्लाह की लानत है। अगर
उसे उसी दिन दफ़नाया न जाए तो तू उस मुल्क को
नापाक कर देगा जो रब्ब तेरा ख़ुदा तुझे मीरास में दे
रहा है।

मदद करने के लिए तय्यार रहना

22 1 अगर तुझे किसी हमवतन भाई का बैल
या भेड़-बक्री भटकी हुई नज़र आए तो उसे
नज़रअन्दाज़ न करना बल्कि मालिक के पास वापस
ले जाना। 2 अगर मालिक का घर क़रीब न हो या तुझे
मालूम न हो कि मालिक कौन है तो जानवर को अपने
घर ला कर उस वक़्त तक सँभाले रखना जब तक
कि मालिक उसे ढूँडने न आए। फिर जानवर को उसे
वापस कर देना। 3 यही कुछ कर अगर तेरे हमवतन
भाई का गधा भटका हुआ नज़र आए या उस का
गुमशुदा कोट या कोई और चीज़ कहीं नज़र आए।
उसे नज़रअन्दाज़ न करना।

4 अगर तू देखे कि किसी हमवतन का गधा या बैल
रास्ते में गिर गया है तो उसे नज़रअन्दाज़ न करना।
जानवर को खड़ा करने में अपने भाई की मदद कर।

क़ुद्रती इन्तिज़ाम के तहत रहना

5 औरत के लिए मर्दों के कपड़े पहनना मना है। इसी
तरह मर्द के लिए औरतों के कपड़े पहनना भी मना
है। जो ऐसा करता है उस से रब्ब तेरे ख़ुदा को घिन
आती है।

6 अगर तुझे कहीं रास्ते में, किसी दरख़्त में या
ज़मीन पर घोंसला नज़र आए और परिन्दा अपने बच्चों
या अंडों पर बैठा हुआ हो तो माँ को बच्चों समेत न
पकड़ना। 7 तुझे बच्चे ले जाने की इजाज़त है लेकिन
माँ को छोड़ देना ताकि तू ख़ुशहाल और देर तक
जीता रहे।

8 नया मकान तामीर करते वक़्त छत पर चारों
तरफ़ दीवार बनाना। वर्ना तू उस शख़्स की मौत का
ज़िम्मादार ठहरेगा जो तेरी छत पर से गिर जाए।

9 अपने अंगूर के बाग़ में दो क़िस्म के बीज न बोना।
वर्ना सब कुछ मक़्दिस के लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस
होगा, न सिर्फ़ वह फ़सल जो तुम ने अंगूर के इलावा
लगाई बल्कि अंगूर भी।

10 बैल और गधे को जोड़ कर हल न चलाना।

11 ऐसे कपड़े न पहनना जिन में बनते वक़्त ऊन
और कतान मिलाए गए हैं।

12 अपनी चादर के चारों कोनों पर फुन्दने लगाना।

इज़्दिवाजी ज़िन्दगी की हिफ़ाज़त

13 अगर कोई आदमी शादी करने के थोड़ी देर
बाद अपनी बीवी को पसन्द न करे 14 और फिर उस
की बदनामी करके कहे, "इस औरत से शादी करने
के बाद मुझे पता चला कि वह कुंवारी नहीं है।"
15 जवाब में बीवी के वालिदैन शहर के दरवाज़े पर

जमा होने वाले बुज़ुर्गों के पास सबूत [i]ले आएँ कि बेटी शादी से पहले कुंवारी थी। [16]बीवी का बाप बुज़ुर्गों से कहे, "मैं ने अपनी बेटी की शादी इस आदमी से की है, लेकिन यह उस से नफ़रत करता है। [17]अब इस ने उस की बदनामी करके कहा है, 'मुझे पता चला कि तुम्हारी बेटी कुंवारी नहीं है।' लेकिन यहाँ सबूत है कि मेरी बेटी कुंवारी थी।" फिर वालिदैन शहर के बुज़ुर्गों को मज़कूरा कपड़ा दिखाएँ।

[18]तब बुज़ुर्ग उस आदमी को पकड़ कर सज़ा दें, [19]क्यूँकि उस ने एक इस्राईली कुंवारी की बदनामी की है। इस के इलावा उसे जुर्माने के तौर पर बीवी के बाप को चाँदी के 100 सिक्के देने पड़ेंगे। लाज़िम है कि वह शौहर के फ़राइज़ अदा करता रहे। वह उम्र भर उसे तलाक़ नहीं दे सकेगा।

[20]लेकिन अगर आदमी की बात दुरुस्त निकले और साबित न हो सके कि बीवी शादी से पहले कुंवारी थी [21]तो उसे बाप के घर लाया जाए। वहाँ शहर के आदमी उसे संगसार कर दें। क्यूँकि अपने बाप के घर में रहते हुए बदकारी करने से उस ने इस्राईल में एक अहमक़ाना और बेदीन हर्कत की है। यूँ तू अपने दर्मियान से बुराई मिटा देगा। [22]अगर कोई आदमी किसी की बीवी के साथ ज़िना करे और वह पकड़े जाएँ तो दोनों को सज़ा-ए-मौत देनी है। यूँ तू इस्राईल से बुराई मिटा देगा।

[23]अगर आबादी में किसी मर्द की मुलाक़ात किसी ऐसी कुंवारी से हो जिस की किसी और के साथ मंगनी हुई है और वह उस के साथ हमबिसतर हो जाए [24]तो लाज़िम है कि तुम दोनों को शहर के दरवाज़े के पास ला कर संगसार करो। वजह यह है कि लड़की ने मदद के लिए न पुकारा अगरचि उस जगह लोग आबाद थे। मर्द का जुर्म यह था कि उस ने किसी और की मंगेतर की इस्मतदरी की है। यूँ तू अपने दर्मियान से बुराई मिटा देगा।

[25]लेकिन अगर मर्द ग़ैरआबाद जगह में किसी और की मंगेतर की इस्मतदरी करे तो सिर्फ़ उसी को सज़ा-ए-मौत दी जाए। [26]लड़की को कोई सज़ा न देना, क्यूँकि उस ने कुछ नहीं किया जो मौत के लाइक़ हो। ज़ियादती करने वाले की हर्कत उस शख़्स के बराबर है जिस ने किसी पर हम्ला करके उसे क़त्ल कर दिया है। [27]चूँकि उस ने लड़की को वहाँ पाया जहाँ लोग नहीं रहते, इस लिए अगरचि लड़की ने मदद के लिए पुकारा तो भी उसे कोई न बचा सका।

[28]हो सकता है कोई आदमी किसी लड़की की इस्मतदरी करे जिस की मंगनी नहीं हुई है। अगर उन्हें पकड़ा जाए [29]तो वह लड़की के बाप को चाँदी के 50 सिक्के दे। लाज़िम है कि वह उसी लड़की से शादी करे, क्यूँकि उस ने उस की इस्मतदरी की है। न सिर्फ़ यह बल्कि वह उम्र भर उसे तलाक़ नहीं दे सकता।

[30]अपने बाप की बीवी से शादी करना मना है। जो कोई यह करे वह अपने बाप की बेहुरमती करता है।

मुक़द्दस इजतिमा में शरीक होने की शराइत

23 [1]जब इस्राईली रब्ब के मक़्दिस के पास जमा होते हैं तो उसे हाज़िर होने की इजाज़त नहीं जो काटने या कुचलने से ख़ोजा बन गया है। [2]इसी तरह वह भी मुक़द्दस इजतिमा से दूर रहे जो नाजाइज़ ताल्लुक़ात के नतीजे में पैदा हुआ है। उस की औलाद भी दसवीं पुश्त तक उस में नहीं आ सकती।

[3]कोई भी अम्मोनी या मोआबी मुक़द्दस इजतिमा में शरीक नहीं हो सकता। इन क़ौमों की औलाद दसवीं पुश्त तक भी इस जमाअत में हाज़िर नहीं हो सकती, [4]क्यूँकि जब तुम मिस्र से निकल आए तो वह रोटी और पानी ले कर तुम से मिलने न आए। न सिर्फ़ यह बल्कि उन्हों ने मसोपुतामिया के शहर फ़तोर में जा कर बलआम बिन बओर को पैसे दिए ताकि वह तुझ पर लानत भेजे। [5]लेकिन रब्ब तेरे ख़ुदा ने बलआम की न सुनी बल्कि उस की लानत बर्कत में बदल दी।

[i]यानी वह कपड़ा जिस पर नया जोड़ा सोया हुआ था।

क्यूँकि रब्ब तेरा ख़ुदा तुझ से पियार करता है। [6] उम्र भर कुछ न करना जिस से इन क़ौमों की सलामती और ख़ुशहाली बढ़ जाए।

[7] लेकिन अदोमियों को मक्रूह न समझना, क्यूँकि वह तुम्हारे भाई हैं। इसी तरह मिस्रियों को भी मक्रूह न समझना, क्यूँकि तू उन के मुल्क में परदेसी मेहमान था। [8] उन की तीसरी नसल के लोग रब्ब के मुक़द्दस इजतिमा में शरीक हो सकते हैं।

ख़ैमागाह में नापाकी

[9] अपने दुश्मनों से जंग करते वक़्त अपनी लश्करगाह में हर नापाक चीज़ से दूर रहना। [10] मसलन अगर कोई आदमी रात के वक़्त एहतिलाम के बाइस नापाक हो जाए तो वह लश्करगाह के बाहर जा कर शाम तक वहाँ ठहरे। [11] दिन ढलते वक़्त वह नहा ले तो सूरज डूबने पर लश्करगाह में वापस आ सकता है।

[12] अपनी हाजत रफ़ा करने के लिए लश्करगाह से बाहर कोई जगह मुक़र्रर कर। [13] जब किसी को हाजत के लिए बैठना हो तो वह इस के लिए गढ़ा खोदे और बाद में उसे मिट्टी से भर दे। इस लिए अपने सामान में खुदाई का कोई आला रखना ज़रूरी है।

[14] रब्ब तेरा ख़ुदा तेरी लश्करगाह में तेरे दर्मियान ही घूमता फिरता है ताकि तू महफ़ूज़ रहे और दुश्मन तेरे सामने शिकस्त खाए। इस लिए लाज़िम है कि तेरी लश्करगाह उस के लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस हो। ऐसा न हो कि अल्लाह वहाँ कोई शर्मनाक बात देख कर तुझ से दूर हो जाए।

फ़रार हुए ग़ुलामों की मदद करना

[15] अगर कोई ग़ुलाम तेरे पास पनाह ले तो उसे मालिक को वापस न करना। [16] वह तेरे साथ और तेरे दर्मियान ही रहे, वहाँ जहाँ वह बसना चाहे, उस शहर में जो उसे पसन्द आए। उसे न दबाना।

मन्दिर में इस्मतफ़रोशी मना है

[17] किसी देवता की ख़िदमत में इस्मतफ़रोशी करना हर इस्राईली औरत और मर्द के लिए मना है। [18] मन्नत मानते वक़्त न कस्बी का अज्र, न कुत्ते के पैसे [j] रब्ब के मक़्दिस में लाना, क्यूँकि रब्ब तेरे ख़ुदा को दोनों चीज़ों से घिन है।

अपने हमवतनों से सूद न लेना

[19] अगर कोई इस्राईली भाई तुझ से क़र्ज़ ले तो उस से सूद न लेना, ख़्वाह तू ने उसे पैसे, खाना या कोई और चीज़ दी हो। [20] अपने इस्राईली भाई से सूद न ले बल्कि सिर्फ़ परदेसी से। फिर जब तू मुल्क पर क़ब्ज़ा करके उस में रहेगा तो रब्ब तेरा ख़ुदा तेरे हर काम में बर्कत देगा।

अपनी मन्नत पूरी करना

[21] जब तू रब्ब अपने ख़ुदा के हुज़ूर मन्नत माने तो उसे पूरा करने में देर न करना। रब्ब तेरा ख़ुदा यक़ीनन तुझ से इस का मुतालबा करेगा। अगर तू उसे पूरा न करे तो क़ुसूरवार ठहरेगा। [22] अगर तू मन्नत मानने से बाज़ रहे तो क़ुसूरवार नहीं ठहरेगा, [23] लेकिन अगर तू अपनी दिली ख़ुशी से रब्ब के हुज़ूर मन्नत माने तो हर सूरत में उसे पूरा कर।

दूसरे के बाग़ में से गुज़रने का रवय्या

[24] किसी हमवतन के अंगूर के बाग़ में से गुज़रते वक़्त तुझे जितना जी चाहे उस के अंगूर खाने की इजाज़त है। लेकिन अपने किसी बर्तन में फल जमा न करना। [25] इसी तरह किसी हमवतन के अनाज के खेत में से गुज़रते वक़्त तुझे अपने हाथों से अनाज की बालियाँ तोड़ने की इजाज़त है। लेकिन दरान्ती इस्तेमाल न करना।

---

[j] यक़ीन से नहीं कहा जा सकता कि कुत्ते के पैसे से क्या मुराद है। ग़ालिबन इस के पीछे बुतपरस्ती का कोई दस्तूर है।

तलाक़ और दुबारा शादी

24 [1]हो सकता है कोई आदमी किसी औरत
से शादी करे लेकिन बाद में उसे पसन्द न
करे, क्यूँकि उसे बीवी के बारे में किसी शर्मनाक बात
का पता चल गया है। वह तलाक़नामा लिख कर उसे
औरत को देता और फिर उसे घर से वापस भेज देता
है। [2]इस के बाद उस औरत की शादी किसी और मर्द
से हो जाती है, [3]और वह भी बाद में उसे पसन्द नहीं
करता। वह भी तलाक़नामा लिख कर उसे औरत को
देता और फिर उसे घर से वापस भेज देता है। ख़्वाह
दूसरा शौहर उसे वापस भेज दे या शौहर मर जाए,
[4]औरत के पहले शौहर को उस से दुबारा शादी करने
की इजाज़त नहीं है, क्यूँकि वह औरत उस के लिए
नापाक है। ऐसी हर्कत रब्ब की नज़र में क़ाबिल-ए-
घिन है। उस मुल्क को यूँ गुनाहआलूदा न करना जो
रब्ब तेरा ख़ुदा तुझे मीरास में दे रहा है।

मज़ीद हिदायात

[5]अगर किसी आदमी ने अभी अभी शादी की हो
तो तू उसे भर्ती करके जंग करने के लिए नहीं भेज
सकता। तू उसे कोई भी ऐसी ज़िम्मादारी नहीं दे
सकता, जिस से वह घर से दूर रहने पर मज्बूर हो
जाए। एक साल तक वह ऐसी ज़िम्मादारियों से बरी
रहे ताकि घर में रह कर अपनी बीवी को ख़ुश कर
सके।

[6]अगर कोई तुझ से उधार ले तो ज़मानत के तौर
पर उस से न उस की छोटी चक्की, न उस की बड़ी
चक्की का पाट लेना, क्यूँकि ऐसा करने से तू उस की
जान लेगा यानी तू वह चीज़ लेगा जिस से उस का
गुज़ारा होता है।

[7]अगर किसी आदमी को पकड़ा जाए जिस ने अपने
हमवतन को अग़वा करके ग़ुलाम बना लिया या बेच
दिया है तो उसे सज़ा-ए-मौत देना है। यूँ तू अपने
दर्मियान से बुराई मिटा देगा।

[8]अगर कोई वबाई जिल्दी बीमारी तुझे लग जाए
तो बड़ी एहतियात से लावी के क़बीले के इमामों की
तमाम हिदायात पर अमल करना। जो भी हुक्म मैं ने
उन्हें दिया उसे पूरा करना। [9]याद कर कि रब्ब तेरे
ख़ुदा ने मरियम के साथ क्या किया जब तुम मिस्र से
निकल कर सफ़र कर रहे थे।

ग़रीबों के हुक़ूक़

[10]अपने हमवतन को उधार देते वक़्त उस के घर में
न जाना ताकि ज़मानत की कोई चीज़ मिले [11]बल्कि
बाहर ठहर कर इन्तिज़ार कर कि वह ख़ुद घर से
ज़मानत की चीज़ निकाल कर तुझे दे। [12]अगर वह
इतना ज़रूरतमन्द हो कि सिर्फ़ अपनी चादर दे सके
तो रात के वक़्त ज़मानत तेरे पास न रहे। [13]उसे सूरज
डूबने तक वापस करना ताकि क़र्ज़दार उस में लिपट
कर सो सके। फिर वह तुझे बर्कत देगा और रब्ब तेरा
ख़ुदा तेरा यह क़दम रास्त क़रार देगा।

[14]ज़रूरतमन्द मज़्दूर से ग़लत फ़ाइदा न उठाना,
चाहे वह इस्राईली हो या परदेसी। [15]उसे रोज़ाना
सूरज डूबने से पहले पहले उस की मज़्दूरी दे देना,
क्यूँकि इस से उस का गुज़ारा होता है। कहीं वह रब्ब
के हुज़ूर तेरी शिकायत न करे और तू क़ुसूरवार ठहरे।

[16]वालिदैन को उन के बच्चों के जराइम के सबब से
सज़ा-ए-मौत न दी जाए, न बच्चों को उन के वालिदैन
के जराइम के सबब से। अगर किसी को सज़ा-ए-
मौत देनी हो तो उस गुनाह के सबब से जो उस ने
ख़ुद किया है।

[17]परदेसियों और यतीमों के हुक़ूक़ क़ाइम रखना।
उधार देते वक़्त ज़मानत के तौर पर बेवा की चादर
न लेना। [18]याद रख कि तू भी मिस्र में ग़ुलाम था
और कि रब्ब तेरे ख़ुदा ने फ़िद्या दे कर तुझे वहाँ से
छुड़ाया। इसी वजह से मैं तुझे यह हुक्म देता हूँ।

[19]अगर तू फ़सल की कटाई के वक़्त एक पूला
भूल कर खेत में छोड़ आए तो उसे लाने के लिए
वापस न जाना। उसे परदेसियों, यतीमों और बेवाओं
के लिए वहीं छोड़ देना ताकि रब्ब तेरा ख़ुदा तेरे हर

काम में बर्कत दे। 20 जब ज़ैतून की फ़सल पक गई हो तो दरख़्तों को मार मार कर एक ही बार उन में से फल उतार। इस के बाद उन्हें न छेड़ना। बचा हुआ फल परदेसियों, यतीमों और बेवाओं के लिए छोड़ देना। 21 इसी तरह अपने अंगूर तोड़ने के लिए एक ही बार बाग़ में से गुज़रना। इस के बाद उसे न छेड़ना। बचा हुआ फल परदेसियों, यतीमों और बेवाओं के लिए छोड़ देना। 22 याद रख कि तू ख़ुद मिस्र में ग़ुलाम था। इसी वजह से मैं तुझे यह हुक्म देता हूँ।

कोड़े लगाने की मुनासिब सज़ा

25 1 अगर लोग अपना एक दूसरे के साथ झगड़ा ख़ुद निपटा न सकें तो वह अपना मुआमला अदालत में पेश करें। क़ाज़ी फ़ैसला करे कि कौन बेक़ुसूर है और कौन मुजरिम। 2 अगर मुजरिम को कोड़े लगाने की सज़ा देनी है तो उसे क़ाज़ी के सामने ही मुँह के बल ज़मीन पर लिटाना। फिर उसे इतने कोड़े लगाए जाएँ जितनों के वह लाइक़ है। 3 लेकिन उस को ज़ियादा से ज़ियादा 40 कोड़े लगाने हैं, वर्ना तेरे इस्राईली भाई की सर-ए-आम बेइज़्ज़ती हो जाएगी।

बैल का मुँह न बाँधना

4 जब तू फ़सल गाहने के लिए उस पर बैल चलने देता है तो उस का मुँह बाँध कर न रखना।

मर्हूम भाई की बीवी से शादी करने का हुक्म

5 अगर कोई शादीशुदा मर्द बेऔलाद मर जाए और उस का सगा भाई साथ रहे तो उस का फ़र्ज़ है कि बेवा से शादी करे। बेवा शौहर के ख़ान्दान से हट कर किसी और से शादी न करे बल्कि सिर्फ़ अपने देवर से। 6 पहला बेटा जो इस रिश्ते से पैदा होगा पहले शौहर के बेटे की हैसियत रखेगा। यूँ उस का नाम क़ाइम रहेगा।

7 लेकिन अगर देवर भाबी से शादी करना न चाहे तो भाबी शहर के दरवाज़े पर जमा होने वाले बुज़ुर्गों के पास जाए और उन से कहे, "मेरा देवर मुझ से शादी करने से इन्कार करता है। वह अपना फ़र्ज़ अदा करने को तय्यार नहीं कि अपने भाई का नाम क़ाइम रखे।" 8 फिर शहर के बुज़ुर्ग देवर को बुला कर उसे समझाएँ। अगर वह इस के बावुजूद भी उस से शादी करने से इन्कार करे 9 तो उस की भाबी बुज़ुर्गों की मौजूदगी में उस के पास जा कर उस की एक चप्पल उतार ले। फिर वह उस के मुँह पर थूक कर कहे, "उस आदमी से ऐसा सुलूक किया जाता है जो अपने भाई की नसल क़ाइम रखने को तय्यार नहीं।" 10 आइन्दा इस्राईल में देवर की नसल "नंगे पाँओ वाले की नसल" कहलाएगी।

झगड़े में नाज़ेबा हर्कतें

11 अगर दो आदमी लड़ रहे हों और एक की बीवी अपने शौहर को बचाने की ख़ातिर मुख़ालिफ़ के उज़्व-ए-तनासुल को पकड़ ले 12 तो लाज़िम है कि तू औरत का हाथ काट डाले। उस पर रहम न करना।

धोका न देना

13 तोलते वक़्त अपने थैले में सहीह वज़न के बाट रख, और धोका देने के लिए हल्के बाट साथ न रखना। 14 इसी तरह अपने घर में अनाज की पैमाइश करने का सहीह बर्तन रख, और धोका देने के लिए छोटा बर्तन साथ न रखना। 15 सहीह वज़न के बाट और पैमाइश करने के सहीह बर्तन इस्तेमाल करना ताकि तू देर तक उस मुल्क में जीता रहे जो रब्ब तेरा ख़ुदा तुझे देगा। 16 क्यूँकि उसे हर धोकेबाज़ से घिन है।

अमालीक़ियों को सज़ा देना

17 याद रहे कि अमालीक़ियों ने तुझ से क्या कुछ किया जब तुम मिस्र से निकल कर सफ़र कर रहे थे। 18 जब तू थकाहारा था तो वह तुझ पर हम्ला करके पीछे पीछे चलने वाले तमाम कमज़ोरों को जान से मारते रहे। वह अल्लाह का ख़ौफ़ नहीं मानते

थे। 19 चुनाँचे जब रब्ब तेरा ख़ुदा तुझे इर्दगिर्द के
तमाम दुश्मनों से सुकून देगा और तू उस मुल्क में
आबाद होगा जो वह तुझे मीरास में दे रहा है ताकि तू
उस पर क़ब्ज़ा करे तो अमालीक़ियों को यूँ हलाक
कर कि दुनिया में उन का नाम-ओ-निशान न रहे। यह
बात मत भूलना।

ज़मीन की पहली पैदावार रब्ब को पेश करना

26 1 जब तू उस मुल्क में दाख़िल होगा जो रब्ब
तेरा ख़ुदा तुझे मीरास में दे रहा है और तू
उस पर क़ब्ज़ा करके उस में आबाद हो जाएगा 2 तो
जो भी फ़सल तू काटेगा उस के पहले फल में से
कुछ टोकरे में रख कर उस जगह ले जा जो रब्ब तेरा
ख़ुदा अपने नाम की सुकूनत के लिए चुनेगा। 3 वहाँ
ख़िदमत करने वाले इमाम से कह, “आज मैं रब्ब
अपने ख़ुदा के हुज़ूर एलान करता हूँ कि उस मुल्क
में पहुँच गया हूँ जिस का हमें देने का वादा रब्ब ने
क़सम खा कर हमारे बापदादा से किया था।”

4 तब इमाम तेरा टोकरा ले कर उसे रब्ब तेरे ख़ुदा
की क़ुर्बानगाह के सामने रख दे। 5 फिर रब्ब अपने
ख़ुदा के हुज़ूर कह, “मेरा बाप आवारा फिरने वाला
अरामी था जो अपने लोगों को ले कर मिस्र में आबाद
हुआ। वहाँ पहुँचते वक़्त उन की तादाद कम थी,
लेकिन होते होते वह बड़ी और ताक़तवर क़ौम बन
गए। 6 लेकिन मिस्रियों ने हमारे साथ बुरा सुलूक
किया और हमें दबा कर सख़्त ग़ुलामी में फंसा दिया।
7 फिर हम ने चिल्ला कर रब्ब अपने बापदादा के ख़ुदा
से फ़र्याद की, और रब्ब ने हमारी सुनी। उस ने हमारा
दुख, हमारी मुसीबत और दबी हुई हालत देखी 8 और
बड़े इख़तियार और क़ुद्रत का इज़्हार करके हमें मिस्र
से निकाल लाया। उस वक़्त उस ने मिस्रियों में दहशत
फैला कर बड़े मोजिज़े दिखाए। 9 वह हमें यहाँ ले
आया और यह मुल्क दिया जिस में दूध और शहद
की कस्रत है। 10 ऐ रब्ब, अब मैं तुझे उस ज़मीन का
पहला फल पेश करता हूँ जो तू ने हमें बख़्शी है।”

अपनी पैदावार का टोकरा रब्ब अपने ख़ुदा के
सामने रख कर उसे सिज्दा करना। 11 ख़ुशी मनाना कि
रब्ब मेरे ख़ुदा ने मुझे और मेरे घराने को इतनी अच्छी
चीज़ों से नवाज़ा है। इस ख़ुशी में अपने दर्मियान रहने
वाले लावियों और परदेसियों को भी शामिल करना।

फ़ज़्ल का ज़रूरतमन्दों के लिए हिस्सा

12 हर तीसरे साल अपनी तमाम फ़सलों का दसवाँ
हिस्सा लावियों, परदेसियों, यतीमों और बेवाओं को
देना ताकि वह तेरे शहरों में खाना खा कर सेर हो
जाएँ। 13 फिर रब्ब अपने ख़ुदा से कह, “मैं ने वैसा
ही किया है जैसा तू ने मुझे हुक्म दिया। मैं ने अपने
घर से तेरे लिए मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस हिस्सा निकाल
कर उसे लावियों, परदेसियों, यतीमों और बेवाओं
को दिया है। मैं ने सब कुछ तेरी हिदायात के ऐन
मुताबिक़ किया है और कुछ नहीं भूला। 14 मातम
करते वक़्त मैं ने इस मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस हिस्से से
कुछ नहीं खाया। मैं इसे उठा कर घर से बाहर लाते
वक़्त नापाक नहीं था। मैं ने इस में से मुर्दों को भी कुछ
पेश नहीं किया। मैं ने रब्ब अपने ख़ुदा की इताअत
करके वह सब कुछ किया है जो तू ने मुझे करने को
फ़रमाया था। 15 चुनाँचे आस्मान पर अपने मक़्दिस
से निगाह करके अपनी क़ौम इस्राईल को बर्कत दे।
उस मुल्क को भी बर्कत दे जिस का वादा तू ने क़सम
खा कर हमारे बापदादा से किया और जो तू ने हमें
बख़्श भी दिया है, उस मुल्क को जिस में दूध और
शहद की कस्रत है।”

तुम रब्ब की क़ौम हो

16 आज रब्ब तेरा ख़ुदा फ़रमाता है कि इन अह्काम
और हिदायात की पैरवी कर। पूरे दिल-ओ-जान से
और बड़ी एहतियात से इन पर अमल कर।

17 आज तू ने एलान किया है, “रब्ब मेरा ख़ुदा है। मैं
उस की राहों पर चलता रहूँगा, उस के अह्काम के
ताबे रहूँगा और उस की सुनूँगा।” 18 और आज रब्ब
ने एलान किया है, “तू मेरी क़ौम और मेरी अपनी

मिल्कियत है जिस तरह मैं ने तुझ से वादा किया है।
अब मेरे तमाम अह्काम के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ार।
19 जितनी भी क़ौमें मैं ने ख़लक़ की हैं उन सब पर मैं
तुझे सरफ़राज़ करूँगा और तुझे तारीफ़, शुहरत और
इज़्ज़त अता करूँगा। तू रब्ब अपने ख़ुदा के लिए
मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस क़ौम होगा जिस तरह मैं ने वादा
किया है।”

ऐबाल पहाड़ पर क़ुर्बानगाह बनाना है

27 1 फिर मूसा ने बुज़ुर्गों से मिल कर क़ौम से
कहा, “तमाम हिदायात के ताबे रहो जो मैं
तुमहें आज दे रहा हूँ। 2 जब तुम दरया-ए-यर्दन को पार
करके उस मुल्क में दाख़िल होगे जो रब्ब तेरा ख़ुदा
तुझे दे रहा है तो वहाँ बड़े पत्थर खड़े करके उन पर
सफेदी कर। 3 उन पर लफ़्ज़-ब-लफ़्ज़ पूरी शरीअत
लिख। दरया को पार करने के बाद यही कुछ कर
ताकि तू उस मुल्क में दाख़िल हो जो रब्ब तेरा ख़ुदा
तुझे देगा और जिस में दूध और शहद की कस्रत
है। क्यूँकि रब्ब तेरे बापदादा के ख़ुदा ने यह देने का
तुझ से वादा किया है। 4 चुनाँचे यर्दन को पार करके
पत्थरों को ऐबाल पहाड़ पर खड़ा करो और उन पर
सफेदी कर।

5 वहाँ रब्ब अपने ख़ुदा के लिए क़ुर्बानगाह बनाना।
जो पत्थर तू उस के लिए इस्तेमाल करे उन्हें लोहे के
किसी औज़ार से न तराशना। 6 सिर्फ़ सालिम पत्थर
इस्तेमाल कर। क़ुर्बानगाह पर रब्ब अपने ख़ुदा को
भस्म होने वाली क़ुर्बानियाँ पेश कर। 7 सलामती की
क़ुर्बानियाँ भी उस पर चढ़ा। उन्हें वहाँ रब्ब अपने
ख़ुदा के हुज़ूर खा कर ख़ुशी मना। 8 वहाँ खड़े किए
गए पत्थरों पर शरीअत के तमाम अल्फ़ाज़ साफ़
साफ़ लिखे जाएँ।”

ऐबाल पहाड़ पर से लानत

9 फिर मूसा ने लावी के क़बीले के इमामों से
मिल कर तमाम इस्राईलियों से कहा, “ऐ इस्राईल,
ख़ामोशी से सुन। अब तू रब्ब अपने ख़ुदा की क़ौम
बन गया है, 10 इस लिए उस का फ़रमाँबरदार रह
और उस के उन अह्काम पर अमल कर जो मैं तुझे
आज दे रहा हूँ।”

11 उसी दिन मूसा ने इस्राईलियों को हुक्म दे
कर कहा, 12 “दरया-ए-यर्दन को पार करने के
बाद शमाऊन, लावी, यहूदाह, इश्कार, यूसुफ़ और
बिन्यमीन के क़बीले गरिज़ीम पहाड़ पर खड़े हो
जाएँ। वहाँ वह बर्कत के अल्फ़ाज़ बोलें। 13 बाक़ी
क़बीले यानी रूबिन, जद, आशर, ज़बूलून, दान और
नफ़्ताली ऐबाल पहाड़ पर खड़े हो कर लानत के
अल्फ़ाज़ बोलें।

14 फिर लावी तमाम लोगों से मुख़ातिब हो कर ऊँची
आवाज़ से कहें,

15 ‘उस पर लानत जो बुत तराश कर या ढाल कर
चुपके से खड़ा करे। रब्ब को कारीगर के हाथों से
बनी हुई ऐसी चीज़ से घिन है।’

जवाब में सब लोग कहें, ‘आमीन!’

16 फिर लावी कहें, ‘उस पर लानत जो अपने बाप
या माँ की तह्क़ीर करे।’

सब लोग कहें, ‘आमीन!’

17 ‘उस पर लानत जो अपने पड़ोसी की ज़मीन की
हुदूद आगे पीछे करे।’

सब लोग कहें, ‘आमीन!’

18 ‘उस पर लानत जो किसी अंधे की राहनुमाई
करके उसे ग़लत रास्ते पर ले जाए।’

सब लोग कहें, ‘आमीन!’

19 ‘उस पर लानत जो परदेसियों, यतीमों या बेवाओं
के हुक़ूक़ क़ाइम न रखे।’

सब लोग कहें, ‘आमीन!’

20 ‘उस पर लानत जो अपने बाप की बीवी से
हमबिसतर हो जाए, क्यूँकि वह अपने बाप की
बेहुरमती करता है।’

सब लोग कहें, ‘आमीन!’

21 ‘उस पर लानत जो जानवर से जिन्सी ताल्लुक़
रखे।’

सब लोग कहें, ‘आमीन!’

22 ‘उस पर लानत जो अपनी सगी बहन, अपने बाप
की बेटी या अपनी माँ की बेटी से हमबिसतर हो
जाए।’

सब लोग कहें, ‘आमीन!’

23 ‘उस पर लानत जो अपनी सास से हमबिसतर हो
जाए।’

सब लोग कहें, ‘आमीन!’

24 ‘उस पर लानत जो चुपके से अपने हमवतन को
क़त्ल कर दे।’

सब लोग कहें, ‘आमीन!’

25 ‘उस पर लानत जो पैसे ले कर किसी बेक़ुसूर
शख़्स को क़त्ल करे।’

सब लोग कहें, ‘आमीन!’

26 ‘उस पर लानत जो इस शरीअत की बातें क़ाइम
न रखे, न इन पर अमल करे।’

सब लोग कहें, ‘आमीन!’

फ़रमाँबरदारी की बर्कतें

28 1 रब्ब तेरा ख़ुदा तुझे दुनिया की तमाम
क़ौमों पर सरफ़राज़ करेगा। शर्त यह है कि
तू उस की सुने और एहतियात से उस के उन तमाम
अह्काम पर अमल करे जो मैं तुझे आज दे रहा हूँ।
2 रब्ब अपने ख़ुदा का फ़रमाँबरदार रह तो तुझे हर
तरह की बर्कत हासिल होगी। 3 रब्ब तुझे शहर और
दीहात में बर्कत देगा। 4 तेरी औलाद फले फूलेगी, तेरी
अच्छी-ख़ासी फ़सलें पकेंगी, तेरे गाय-बैलों और भेड़-
बक्रियों के बच्चे तरक़्क़ी करेंगे। 5 तेरा टोकरा फल से
भरा रहेगा, और आटा गूँधने का तेरा बर्तन आटे से
ख़ाली नहीं होगा। 6 रब्ब तुझे घर में आते और वहाँ
से निकलते वक़्त बर्कत देगा।

7 जब तेरे दुश्मन तुझ पर हम्ला करेंगे तो वह रब्ब
की मदद से शिकस्त खाएँगे। गो वह मिल कर तुझ
पर हम्ला करें तो भी तू उन्हें चारों तरफ़ मुन्तशिर कर
देगा।

8 अल्लाह तेरे हर काम में बर्कत देगा। अनाज की
कस्रत के सबब से तेरे गोदाम भरे रहेंगे। रब्ब तेरा
ख़ुदा तुझे उस मुल्क में बर्कत देगा जो वह तुझे
देने वाला है। 9 रब्ब अपनी क़सम के मुताबिक़ तुझे
अपनी मख़्सूस-ओ-मुक़द्दस क़ौम बनाएगा अगर तू
उस के अह्काम पर अमल करे और उस की राहों
पर चले। 10 फिर दुनिया की तमाम क़ौमें तुझ से ख़ौफ़
खाएँगी, क्यूँकि वह देखेंगी कि तू रब्ब की क़ौम है
और उस के नाम से कहलाता है।

11 रब्ब तुझे बहुत औलाद देगा, तेरे रेवड़ बढ़ाएगा
और तुझे कस्रत की फ़सलें देगा। यूँ वह तुझे उस
मुल्क में बर्कत देगा जिस का वादा उस ने क़सम
खा कर तेरे बापदादा से किया। 12 रब्ब आस्मान
के ख़ज़ानों को खोल कर वक़्त पर तेरी ज़मीन पर
बारिश बरसाएगा। वह तेरे हर काम में बर्कत देगा।
तू बहुत सी क़ौमों को उधार देगा लेकिन किसी का
भी क़र्ज़दार नहीं होगा। 13 रब्ब तुझे क़ौमों की दुम
नहीं बल्कि उन का सर बनाएगा। तू तरक़्क़ी करता
जाएगा और ज़वाल का शिकार नहीं होगा। लेकिन
शर्त यह है कि तू रब्ब अपने ख़ुदा के वह अह्काम
मान कर उन पर अमल करे जो मैं तुझे आज दे रहा
हूँ। 14 जो कुछ भी मैं ने तुझे करने को कहा है उस से
किसी तरह भी हट कर ज़िन्दगी न गुज़ारना। न दीगर
माबूदों की पैरवी करना, न उन की ख़िदमत करना।

नाफ़रमानी की लानतें

15 लेकिन अगर तू रब्ब अपने ख़ुदा की न सुने और
उस के उन तमाम अह्काम पर अमल न करे जो
मैं आज तुझे दे रहा हूँ तो हर तरह की लानत तुझ
पर आएगी। 16 शहर और दीहात में तुझ पर लानत
होगी। 17 तेरे टोकरे और आटा गूँधने के तेरे बर्तन पर
लानत होगी। 18 तेरी औलाद पर, तेरे गाय-बैलों और
भेड़-बक्रियों के बच्चों पर और तेरे खेतों पर लानत
होगी। 19 घर में आते और वहाँ से निकलते वक़्त
तुझ पर लानत होगी। 20 अगर तू ग़लत काम करके
रब्ब को छोड़े तो जो कुछ भी तू करे वह तुझ पर
लानतें, परेशानियाँ और मुसीबतें आने देगा। तब तेरा
जल्दी से सत्यानास होगा, और तू हलाक हो जाएगा।

21 रब्ब तुझ में वबाई बीमारियाँ फैलाएगा जिन के सबब से तुझ में से कोई उस मुल्क में ज़िन्दा नहीं रहेगा जिस पर तू अभी क़ब्ज़ा करने वाला है। 22 रब्ब तुझे मुहलक बीमारियों, बुख़ार और सूजन से मारेगा। झुलसाने वाली गर्मी, काल, पतरोग और फफूँदी तेरी फ़सलें ख़त्म करेगी। ऐसी मुसीबतों के बाइस तू तबाह हो जाएगा। 23 तेरे ऊपर आस्मान पीतल जैसा सख़्त होगा जबकि तेरे नीचे ज़मीन लोहे की मानिन्द होगी। 24 बारिश की जगह रब्ब तेरे मुल्क पर गर्द और रेत बरसाएगा जो आस्मान से तेरे मुल्क पर छा कर तुझे बर्बाद कर देगी।

25 जब तू अपने दुश्मनों का सामना करे तो रब्ब तुझे शिकस्त दिलाएगा। गो तू मिल कर उन की तरफ़ बढ़ेगा तो भी उन से भाग कर चारों तरफ़ मुन्तशिर हो जाएगा। दुनिया के तमाम ममालिक में लोगों के रोंगटे खड़े हो जाएँगे जब वह तेरी मुसीबतें देखेंगे। 26 परिन्दे और जंगली जानवर तेरी लाशों को खा जाएँगे, और उन्हें भगाने वाला कोई नहीं होगा। 27 रब्ब तुझे उन ही फोड़ों से मारेगा जो मिस्रियों को निकले थे। ऐसे जिल्दी अमराज़ फैलेंगे जिन का इलाज नहीं है। 28 तू पागलपन का शिकार हो जाएगा, रब्ब तुझे अंधापन और ज़हनी अब्तरी में मुब्तला कर देगा। 29 दोपहर के वक़्त भी तू अंधे की तरह टटोल टटोल कर फिरेगा। जो कुछ भी तू करे उस में नाकाम रहेगा। रोज़-ब-रोज़ लोग तुझे दबाते और लूटते रहेंगे, और तुझे बचाने वाला कोई नहीं होगा।

30 तेरी मंगनी किसी औरत से होगी तो कोई और आ कर उस की इस्मतदरी करेगा। तू अपने लिए घर बनाएगा लेकिन उस में नहीं रहेगा। तू अपने लिए अंगूर का बाग़ लगाएगा लेकिन उस का फल नहीं खाएगा। 31 तेरे देखते देखते तेरा बैल ज़बह किया जाएगा, लेकिन तू उस का गोश्त नहीं खाएगा। तेरा गधा तुझ से छीन लिया जाएगा और वापस नहीं किया जाएगा। तेरी भेड़-बक्रियाँ दुश्मन को दी जाएँगी, और उन्हें छुड़ाने वाला कोई नहीं होगा। 32 तेरे बेटे-बेटियों को किसी दूसरी क़ौम को दिया जाएगा, और तू कुछ नहीं कर सकेगा। रोज़-ब-रोज़ तू अपने बच्चों के इन्तिज़ार में उफ़क़ को तकता रहेगा, लेकिन देखते देखते तेरी आँखें धुन्दला जाएँगी।

33 एक अजनबी क़ौम तेरी ज़मीन की पैदावार और तेरी मेहनत-ओ-मशक़्क़त की कमाई ले जाएगी। तुझे उम्र भर ज़ुल्म और दबाओ बर्दाश्त करना पड़ेगा।

34 जो हौलनाक बातें तेरी आँखें देखेंगी उन से तू पागल हो जाएगा। 35 रब्ब तुझे तक्लीफ़दिह और लाइलाज फोड़ों से मारेगा जो तल्वे से ले कर चाँदी तक पूरे जिस्म पर फैल कर तेरे घुटनों और टाँगों को मुतअस्सिर करेंगे।

36 रब्ब तुझे और तेरे मुक़र्रर किए हुए बादशाह को एक ऐसे मुल्क में ले जाएगा जिस से न तू और न तेरे बापदादा वाक़िफ़ थे। वहाँ तू दीगर माबूदों यानी लकड़ी और पत्थर के बुतों की ख़िदमत करेगा। 37 जिस जिस क़ौम में रब्ब तुझे हाँक देगा वहाँ तुझे देख कर लोगों के रोंगटे खड़े हो जाएँगे और वह तेरा मज़ाक़ उड़ाएँगे। तू उन के लिए इब्रतअंगेज़ मिसाल होगा।

38 तू अपने खेतों में बहुत बीज बोने के बावुजूद कम ही फ़सल काटेगा, क्यूँकि टिड्डे उसे खा जाएँगे। 39 तू अंगूर के बाग़ लगा कर उन पर ख़ूब मेहनत करेगा लेकिन न उन के अंगूर तोड़ेगा, न उन की मै पिएगा, क्यूँकि कीड़े उन्हें खा जाएँगे। 40 गो तेरे पूरे मुल्क में ज़ैतून के दरख़्त होंगे तो भी तू उन का तेल इस्तेमाल नहीं कर सकेगा, क्यूँकि ज़ैतून ख़राब हो कर ज़मीन पर गिर जाएँगे।

41 तेरे बेटे-बेटियाँ तो होंगे, लेकिन तू उन से महरूम हो जाएगा। क्यूँकि उन्हें गिरिफ़्तार करके किसी अजनबी मुल्क में ले जाया जाएगा। 42 टिड्डियों के ग़ोल तेरे मुल्क के तमाम दरख़्तों और फ़सलों पर क़ब्ज़ा कर लेंगे। 43 तेरे दर्मियान रहने वाला परदेसी तुझ से बढ़ कर तरक़्क़ी करता जाएगा जबकि तुझ पर ज़वाल आ जाएगा। 44 उस के पास तुझे उधार देने के लिए पैसे होंगे जबकि तेरे पास उसे उधार देने

को कुछ नहीं होगा। आख़िर में वह सर और तू दुम
होगा।

45 यह तमाम लानतें तुझ पर आन पड़ेंगी। जब तक
तू तबाह न हो जाए वह तेरा ताक़्क़ुब करती रहेंगी,
क्यूँकि तू ने रब्ब अपने ख़ुदा की न सुनी और उस के
अह्काम पर अमल न किया। 46 यूँ यह हमेशा तक
तेरे और तेरी औलाद के लिए एक मोजिज़ाना और
इब्रतअंगेज़ इलाही निशान रहेंगी।

47 चूँकि तू ने दिली ख़ुशी से उस वक़्त रब्ब अपने
ख़ुदा की ख़िदमत न की जब तेरे पास सब कुछ था
48 इस लिए तू उन दुश्मनों की ख़िदमत करेगा जिन्हें
रब्ब तेरे ख़िलाफ़ भेजेगा। तू भूका, पियासा, नंगा और
हर चीज़ का हाजतमन्द होगा, और रब्ब तेरी गर्दन पर
लोहे का जूआ रख कर तुझे मुकम्मल तबाही तक ले
जाएगा।

49 रब्ब तेरे ख़िलाफ़ एक क़ौम खड़ी करेगा जो
दूर से बल्कि दुनिया की इन्तिहा से आ कर उक़ाब
की तरह तुझ पर झपट्टा मारेगी। वह ऐसी ज़बान
बोलेगी जिस से तू वाक़िफ़ नहीं होगा। 50 वह सख़्त
क़ौम होगी जो न बुज़ुर्गों का लिहाज़ करेगी और न
बच्चों पर रहम करेगी। 51 वह तेरे मवेशी और फ़सलें
खा जाएगी और तू भूकों मर जाएगा। तू हलाक हो
जाएगा, क्यूँकि तेरे लिए कुछ नहीं बचेगा, न अनाज,
न मै, न तेल, न गाय-बैलों या भेड़-बक्रियों के बच्चे।
52 दुश्मन तेरे मुल्क के तमाम शहरों का मुहासरा
करेगा। आख़िरकार जिन ऊँची और मज़्बूत फ़सीलों
पर तू एतिमाद करेगा वह भी सब गिर पड़ेंगी। दुश्मन
उस मुल्क का कोई भी शहर नहीं छोड़ेगा जो रब्ब
तेरा ख़ुदा तुझे देने वाला है।

53 जब दुश्मन तेरे शहरों का मुहासरा करेगा तो
तू उन में इतना शदीद भूका हो जाएगा कि अपने
बच्चों को खा लेगा जो रब्ब तेरे ख़ुदा ने तुझे दिए
हैं। 54–55 मुहासरे के दौरान तुम में से सब से शरीफ़
और शाइस्ता आदमी भी अपने बच्चे को ज़बह करके
खाएगा, क्यूँकि उस के पास कोई और ख़ुराक नहीं
होगी। उस की हालत इतनी बुरी होगी कि वह
उसे अपने सगे भाई, बीवी या बाक़ी बच्चों के साथ
तक़्सीम करने के लिए तय्यार नहीं होगा। 56–57 तुम
में से सब से शरीफ़ और शाइस्ता औरत भी ऐसा ही
करेगी, अगरचि पहले वह इतनी नाज़ुक थी कि फ़र्श
को अपने तल्वे से छूने की जुरअत नहीं करती थी।
मुहासरे के दौरान उसे इतनी शदीद भूक होगी कि
जब उस के बच्चा पैदा होगा तो वह छुप छुप कर उसे
खाएगी। न सिर्फ़ यह बल्कि वह पैदाइश के वक़्त बच्चे
के साथ ख़ारिज हुई आलाईश भी खाएगी और उसे
अपने शौहर या अपने बाक़ी बच्चों में बाँटने के लिए
तय्यार नहीं होगी। इतनी मुसीबत तुझ पर मुहासरे के
दौरान आएगी।

58 ग़रज़ एहतियात से शरीअत की उन तमाम बातों
की पैरवी कर जो इस किताब में दर्ज हैं, और रब्ब
अपने ख़ुदा के पुरजलाल और बारोब नाम का ख़ौफ़
मानना। 59 वर्ना वह तुझ और तेरी औलाद में सख़्त
और लाइलाज अमराज़ और ऐसी दह्शतनाक वबाएँ
फैलाएगा जो रोकी नहीं जा सकेंगी। 60 जिन तमाम
वबाओं से तू मिस्र में दह्शत खाता था वह अब तेरे
दर्मियान फैल कर तेरे साथ चिमटी रहेंगी। 61 न सिर्फ़
शरीअत की इस किताब में बयान की हुई बीमारियाँ
और मुसीबतें तुझ पर आएँगी बल्कि रब्ब और भी
तुझ पर भेजेगा, जब तक कि तू हलाक न हो जाए।

62 अगर तू रब्ब अपने ख़ुदा की न सुने तो
आख़िरकार तुम में से बहुत कम बचे रहेंगे, गो तुम
पहले सितारों जैसे बेशुमार थे। 63 जिस तरह पहले
रब्ब ख़ुशी से तुम्हें काम्याबी देता और तुम्हारी तादाद
बढ़ाता था उसी तरह अब वह तुम्हें बर्बाद और
तबाह करने में ख़ुशी मह्सूस करेगा। तुम्हें ज़बरदस्ती
उस मुल्क से निकाला जाएगा जिस पर तू इस वक़्त
दाख़िल हो कर क़ब्ज़ा करने वाला है। 64 तब रब्ब
तुझे दुनिया के एक सिरे से ले कर दूसरे सिरे तक
तमाम क़ौमों में मुन्तशिर कर देगा। वहाँ तू दीगर
माबूदों की पूजा करेगा, ऐसे देवताओं की जिन से
न तू और न तेरे बापदादा वाक़िफ़ थे।

65 उन ममालिक में भी न तू आराम-ओ-सुकून पाएगा, न तेरे पाँओ जम जाएँगे। रब्ब होने देगा कि तेरा दिल थरथराता रहेगा, तेरी आँखें परेशानी के बाइस धुन्दला जाएँगी और तेरी जान से उम्मीद की हर किरन जाती रहेगी। 66 तेरी जान हर वक़्त ख़त्रे में होगी और तू दिन रात दह्शत खाते हुए मरने की तवक़्क़ो करेगा। 67 सुब्ह उठ कर तू कहेगा, "काश शाम हो!" और शाम के वक़्त, "काश सुब्ह हो!" क्यूँकि जो कुछ तू देखेगा उस से तेरे दिल को दह्शत घेर लेगी।

68 रब्ब तुझे जहाज़ों में बिठा कर मिस्र वापस ले जाएगा अगरचि मैं ने कहा था कि तू उसे दुबारा कभी नहीं देखेगा। वहाँ पहुँच कर तुम अपने दुश्मनों से बात करके अपने आप को ग़ुलाम के तौर पर बेचने की कोशिश करोगे, लेकिन कोई भी तुम्हें ख़रीदना नहीं चाहेगा।"

मोआब में रब्ब के साथ नया अह्द

29 1 जब इस्राईली मोआब में थे तो रब्ब ने मूसा को हुक्म दिया कि इस्राईलियों के साथ एक और अह्द बाँधे। यह उस अह्द के इलावा था जो रब्ब होरिब यानी सीना पर उन के साथ बाँध चुका था। 2 इस सिलसिले में मूसा ने तमाम इस्राईलियों को बुला कर कहा, "तुम ने ख़ुद देखा कि रब्ब ने मिस्र के बादशाह फ़िरऔन, उस के मुलाज़िमों और पूरे मुल्क के साथ क्या कुछ किया। 3 तुम ने अपनी आँखों से वह बड़ी आज़्माइशें, इलाही निशान और मोजिज़े देखे जिन के ज़रीए रब्ब ने अपनी क़ुद्रत का इज़्हार किया।

4 मगर अफ़्सोस, आज तक रब्ब ने तुम्हें न समझदार दिल अता किया, न आँखें जो देख सकें या कान जो सुन सकें। 5 रेगिस्तान में मैं ने 40 साल तक तुम्हारी राहनुमाई की। इस दौरान न तुम्हारे कपड़े फटे और न तुम्हारे जूते घिसे। 6 न तुम्हारे पास रोटी थी, न मै या मै जैसी कोई और चीज़। तो भी रब्ब ने तुम्हारी ज़रूरियात पूरी कीं ताकि तुम सीख लो कि वही रब्ब तुम्हारा ख़ुदा है।

7 फिर हम यहाँ आए तो हस्बोन का बादशाह सीहोन और बसन का बादशाह ओज निकल कर हम से लड़ने आए। लेकिन हम ने उन्हें शिकस्त दी। 8 उन के मुल्क पर क़ब्ज़ा करके हम ने उसे रूबिन, जद और मनस्सी के आधे क़बीले को मीरास में दिया। 9 अब एहतियात से इस अह्द की तमाम शराइत पूरी करो ताकि तुम हर बात में काम्याब हो।

10 इस वक़्त तुम सब रब्ब अपने ख़ुदा के हुज़ूर खड़े हो, तुम्हारे क़बीलों के सरदार, तुम्हारे बुज़ुर्ग, निगहबान, मर्द, 11 औरतें और बच्चे। तेरे दर्मियान रहने वाले परदेसी भी लक्कड़हारों से ले कर पानी भरने वालों तक तेरे साथ यहाँ हाज़िर हैं। 12 तू इस लिए यहाँ जमा हुआ है कि रब्ब अपने ख़ुदा का वह अह्द तस्लीम करे जो वह आज क़सम खा कर तेरे साथ बाँध रहा है। 13 इस से वह आज इस की तस्दीक़ कर रहा है कि तू उस की क़ौम और वह तेरा ख़ुदा है यानी वही बात जिस का वादा उस ने तुझ से और तेरे बापदादा इब्राहीम, इस्हाक़ और याक़ूब से किया था। 14–15 लेकिन मैं यह अह्द क़सम खा कर न सिर्फ़ तुम्हारे साथ जो हाज़िर हो बाँध रहा हूँ बल्कि तुम्हारी आने वाली नसलों के साथ भी।

बुतपरस्ती की सज़ा

16 तुम ख़ुद जानते हो कि हम मिस्र में किस तरह ज़िन्दगी गुज़ारते थे। यह भी तुम्हें याद है कि हम किस तरह मुख़्तलिफ़ ममालिक में से गुज़रते हुए यहाँ तक पहुँचे। 17 तुम ने उन के नफ़रतअंगेज़ बुत देखे जो लकड़ी, पत्थर, चाँदी और सोने के थे। 18 ध्यान दो कि यहाँ मौजूद कोई भी मर्द, औरत, कुम्बा या क़बीला रब्ब अपने ख़ुदा से हट कर दूसरी क़ौमों के देवताओं की पूजा न करे। ऐसा न हो कि तुम्हारे दर्मियान कोई जड़ फूट कर ज़हरीला और कड़वा फल लाए।

[19] तुम सब ने वह लानतें सुनी हैं जो रब्ब नाफ़रमानों पर भेजेगा। तो भी हो सकता है कि कोई अपने आप को रब्ब की बर्कत का वारिस समझ कर कहे, "बेशक मैं अपनी ग़लत राहों से हटने के लिए तय्यार नहीं हूँ, लेकिन कोई बात नहीं। मैं महफ़ूज़ रहूँगा।" ख़बरदार, ऐसी हर्कत से वह न सिर्फ़ अपने ऊपर बल्कि पूरे मुल्क पर तबाही लाएगा।[k] [20] रब्ब कभी भी उसे मुआफ़ करने पर आमादा नहीं होगा बल्कि वह उसे अपने ग़ज़ब और ग़ैरत का निशाना बनाएगा। इस किताब में दर्ज तमाम लानतें उस पर आएँगी, और रब्ब दुनिया से उस का नाम-ओ-निशान मिटा देगा। [21] वह उसे पूरी जमाअत से अलग करके उस पर अह्द की वह तमाम लानतें लाएगा जो शरीअत की इस किताब में लिखी हुई हैं।

[22] मुस्तक़बिल में तुम्हारी औलाद और दूरदराज़ ममालिक से आने वाले मुसाफ़िर उन मुसीबतों और अमराज़ का असर देखेंगे जिन से रब्ब ने मुल्क को तबाह किया होगा। [23] चारों तरफ़ ज़मीन झुलसी हुई और गंधक और नमक से ढकी हुई नज़र आएगी। बीज उस में बोया नहीं जाएगा, क्यूँकि ख़ुदरौ पौदों तक कुछ नहीं उगेगा। तुम्हारा मुल्क सदूम, अमूरा, अदमा और ज़बोईम की मानिन्द होगा जिन को रब्ब ने अपने ग़ज़ब में तबाह किया। [24] तमाम क़ौमें पूछेंगी, 'रब्ब ने इस मुल्क के साथ ऐसा क्यूँ किया? उस के सख़्त ग़ज़ब की क्या वजह थी?' [25] उन्हें जवाब मिलेगा, 'वजह यह है कि इस मुल्क के बाशिन्दों ने रब्ब अपने बापदादा के ख़ुदा का अह्द तोड़ दिया जो उस ने उन्हें मिस्र से निकालते वक़्त उन से बाँधा था। [26] उन्हों ने जा कर दीगर माबूदों की ख़िदमत की और उन्हें सिज्दा किया जिन से वह पहले वाक़िफ़ नहीं थे और जो रब्ब ने उन्हें नहीं दिए थे। [27] इसी लिए उस का ग़ज़ब इस मुल्क पर नाज़िल हुआ और वह उस पर वह तमाम लानतें लाया जिन का ज़िक्र इस किताब में है। [28] वह इतना ग़ुस्से हुआ कि उस ने उन्हें जड़ से उखाड़ कर एक अजनबी मुल्क में फेंक दिया जहाँ वह आज तक आबाद हैं।'

[29] बहुत कुछ पोशीदा है, और सिर्फ़ रब्ब हमारा ख़ुदा उस का इल्म रखता है। लेकिन उस ने हम पर अपनी शरीअत का इन्किशाफ़ कर दिया है। लाज़िम है कि हम और हमारी औलाद उस के फ़रमाँबरदार रहें।

तौबा के मुसबत नतीजे

30 [1] मैं ने तुझे बताया है कि तेरे लिए क्या कुछ बर्कत का और क्या कुछ लानत का बाइस है। जब रब्ब तेरा ख़ुदा तुझे तेरी ग़लत हर्कतों के सबब से मुख़्तलिफ़ क़ौमों में मुन्तशिर कर देगा तो तू मेरी बातें मान जाएगा। [2] तब तू और तेरी औलाद रब्ब अपने ख़ुदा के पास वापस आएँगे और पूरे दिल-ओ-जान से उस की सुन कर उन तमाम अह्काम पर अमल करेंगे जो मैं आज तुझे दे रहा हूँ। [3] फिर रब्ब तेरा ख़ुदा तुझे बहाल करेगा और तुझ पर रहम करके तुझे उन तमाम क़ौमों से निकाल कर जमा करेगा जिन में उस ने तुझे मुन्तशिर कर दिया था। [4] हाँ, रब्ब तेरा ख़ुदा तुझे हर जगह से जमा करके वापस लाएगा, चाहे तू सब से दूर मुल्क में क्यूँ न पड़ा हो। [5] वह तुझे तेरे बापदादा के मुल्क में लाएगा, और तू उस पर क़ब्ज़ा करेगा। फिर वह तुझे तेरे बापदादा से ज़ियादा काम्याबी बख़्शेगा, और तेरी तादाद ज़ियादा बढ़ाएगा।

[6] ख़तना रब्ब की क़ौम का ज़ाहिरी निशान है। लेकिन उस वक़्त रब्ब तेरा ख़ुदा तेरे और तेरी औलाद का बातिनी ख़तना करेगा ताकि तू उसे पूरे दिल-ओ-जान से पियार करे और जीता रहे। [7] जो लानतें रब्ब तेरा ख़ुदा तुझ पर लाया था उन्हें वह अब तेरे दुश्मनों पर आने देगा, उन पर जो तुझ से नफ़रत रखते और तुझे ईज़ा पहुँचाते हैं। [8] क्यूँकि तू दुबारा रब्ब की सुनेगा और उस के तमाम अह्काम की पैरवी करेगा

[k] लफ़्ज़ी तर्जुमा : सेराब ज़मीन ख़ुश्क ज़मीन के साथ तबाह हो जाएगी।

जो मैं तुझे आज दे रहा हूँ। 9 जो कुछ भी तू करेगा उस में रब्ब तुझे बड़ी काम्याबी बख़्शेगा, और तुझे कस्रत की औलाद, मवेशी और फ़सलें हासिल होंगी। क्यूँकि जिस तरह वह तेरे बापदादा को काम्याबी देने में ख़ुशी महसूस करता था उसी तरह वह तुझे भी काम्याबी देने में ख़ुशी महसूस करेगा।

10 शर्त सिर्फ़ यह है कि तू रब्ब अपने ख़ुदा की सुने, शरीअत में दर्ज उस के अह्काम पर अमल करे और पूरे दिल-ओ-जान से उस की तरफ़ रुजू लाए।

11 जो अह्काम मैं आज तुझे दे रहा हूँ न वह हद्द से ज़ियादा मुश्किल हैं, न तेरी पहुँच से बाहर। 12 वह आस्मान पर नहीं हैं कि तू कहे, 'कौन आस्मान पर चढ़ कर हमारे लिए यह अह्काम नीचे ले आए ताकि हम उन्हें सुन सकें और उन पर अमल कर सकें?' 13 वह समुन्दर के पार भी नहीं हैं कि तू कहे, 'कौन समुन्दर को पार करके हमारे लिए यह अह्काम लाएगा ताकि हम उन्हें सुन सकें और उन पर अमल कर सकें?' 14 क्यूँकि यह कलाम तेरे निहायत क़रीब बल्कि तेरे मुँह और दिल में मौजूद है। चुनाँचे उस पर अमल करने में कोई भी रुकावट नहीं है।

ज़िन्दगी या मौत का चुनाओ

15 देख, आज मैं तुझे दो रास्ते पेश करता हूँ। एक ज़िन्दगी और ख़ुशहाली की तरफ़ ले जाता है जबकि दूसरा मौत और हलाकत की तरफ़। 16 आज मैं तुझे हुक्म देता हूँ कि रब्ब अपने ख़ुदा को पियार कर, उस की राहों पर चल और उस के अह्काम के ताबे रह। फिर तू ज़िन्दा रह कर तरक़्क़ी करेगा, और रब्ब तेरा ख़ुदा तुझे उस मुल्क में बर्कत देगा जिस में तू दाख़िल होने वाला है।

17 लेकिन अगर तेरा दिल इस रास्ते से हट कर नाफ़रमानी करे तो बर्कत की तवक़्क़ो न कर। अगर तू आज़्माइश में पड़ कर दीगर माबूदों को सिज्दा और उन की ख़िदमत करे 18 तो तुम ज़रूर तबाह हो जाओगे। आज मैं एलान करता हूँ कि इस सूरत में तुम ज़ियादा देर उस मुल्क में आबाद नहीं रहोगे जिस में तू दरया-ए-यर्दन को पार करके दाख़िल होगा ताकि उस पर क़ब्ज़ा करे।

19 आज आस्मान और ज़मीन तुम्हारे ख़िलाफ़ मेरे गवाह हैं कि मैं ने तुम्हें ज़िन्दगी और बर्कतों का रास्ता और मौत और लानतों का रास्ता पेश किया है। अब ज़िन्दगी का रास्ता इख़तियार कर ताकि तू और तेरी औलाद ज़िन्दा रहे। 20 रब्ब अपने ख़ुदा को पियार कर, उस की सुन और उस से लिपटा रह। क्यूँकि वही तेरी ज़िन्दगी है और वही करेगा कि तू देर तक उस मुल्क में जीता रहेगा जिस का वादा उस ने क़सम खा कर तेरे बापदादा इब्राहीम, इस्हाक़ और याक़ूब से किया था।"

यशूअ को मूसा की जगह मुक़र्रर किया जाता है

31 1 मूसा ने जा कर तमाम इस्राईलियों से मज़ीद कहा,

2 "अब मैं 120 साल का हो चुका हूँ। मेरा चलना फिरना मुश्किल हो गया है। और वैसे भी रब्ब ने मुझे बताया है, 'तू दरया-ए-यर्दन को पार नहीं करेगा।' 3 रब्ब तेरा ख़ुदा ख़ुद तेरे आगे आगे जा कर यर्दन को पार करेगा। वही तेरे आगे आगे इन क़ौमों को तबाह करेगा ताकि तू उन के मुल्क पर क़ब्ज़ा कर सके। दरया को पार करते वक़्त यशूअ तेरे आगे चलेगा जिस तरह रब्ब ने फ़रमाया है। 4 रब्ब वहाँ के लोगों को बिलकुल उसी तरह तबाह करेगा जिस तरह वह अमोरियों को उन के बादशाहों सीहोन और ओज समेत तबाह कर चुका है। 5 रब्ब तुम्हें उन पर ग़ालिब आने देगा। उस वक़्त तुम्हें उन के साथ वैसा सुलूक करना है जैसा मैं ने तुम्हें बताया है। 6 मज़्बूत और दिलेर हो। उन से ख़ौफ़ न खाओ, क्यूँकि रब्ब तेरा ख़ुदा तेरे साथ चलता है। वह तुझे कभी नहीं छोड़ेगा, तुझे कभी तर्क नहीं करेगा।"

7 इस के बाद मूसा ने तमाम इस्राईलियों के सामने यशूअ को बुलाया और उस से कहा, "मज़्बूत और दिलेर हो, क्यूँकि तू इस क़ौम को उस मुल्क में ले जाएगा जिस का वादा रब्ब ने क़सम खा कर

उन के बापदादा से किया था। लाज़िम है कि तू ही उसे तक़्सीम करके हर क़बीले को उस का मौरूसी इलाक़ा दे। 8 रब्ब ख़ुद तेरे आगे आगे चलते हुए तेरे साथ होगा। वह तुझे कभी नहीं छोड़ेगा, तुझे कभी नहीं तर्क करेगा। ख़ौफ़ न खाना, न घबराना।”

हर सात साल के बाद शरीअत की तिलावत

9 मूसा ने यह पूरी शरीअत लिख कर इस्राईल के तमाम बुज़ुर्गों और लावी के क़बीले के उन इमामों के सपुर्द की जो सफ़र करते वक़्त अह्द का सन्दूक़ उठा कर ले चलते थे। उस ने उन से कहा, 10–11 “हर सात साल के बाद इस शरीअत की तिलावत करना, यानी बहाली के साल में जब तमाम क़र्ज़ मन्सूख़ किए जाते हैं। तिलावत उस वक़्त करना है जब इस्राईली झोंपड़ियों की ईद के लिए रब्ब अपने ख़ुदा के सामने उस जगह हाज़िर होंगे जो वह मक़्दिस के लिए चुनेगा। 12 तमाम लोगों को मर्दों, औरतों, बच्चों और परदेसियों समेत वहाँ जमा करना ताकि वह सुन कर सीखें, रब्ब तुम्हारे ख़ुदा का ख़ौफ़ मानें और एहतियात से इस शरीअत की बातों पर अमल करें। 13 लाज़िम है कि उन की औलाद जो इस शरीअत से नावाक़िफ़ है इसे सुने और सीखे ताकि उम्र भर उस मुल्क में रब्ब तुम्हारे ख़ुदा का ख़ौफ़ माने जिस पर तुम दरया-ए-यर्दन को पार करके क़ब्ज़ा करोगे।”

रब्ब मूसा को आख़िरी हिदायात देता है

14 रब्ब ने मूसा से कहा, “अब तेरी मौत क़रीब है। यशूअ को बुला कर उस के साथ मुलाक़ात के ख़ैमे में हाज़िर हो जा। वहाँ मैं उसे उस की ज़िम्मादारियाँ सौंपूँगा।”

मूसा और यशूअ आ कर ख़ैमे में हाज़िर हुए 15 तो रब्ब ख़ैमे के दरवाज़े पर बादल के सतून में ज़ाहिर हुआ। 16 उस ने मूसा से कहा, “तू जल्द ही मर कर अपने बापदादा से जा मिलेगा। लेकिन यह क़ौम मुल्क में दाख़िल होने पर ज़िना करके उस के अजनबी देवताओं की पैरवी करने लग जाएगी। वह मुझे तर्क करके वह अह्द तोड़ देगी जो मैं ने उन के साथ बाँधा है। 17 फिर मेरा ग़ज़ब उन पर भड़केगा। मैं उन्हें छोड़ कर अपना चिहरा उन से छुपा लूँगा। तब उन्हें कच्चा चबा लिया जाएगा और बहुत सारी हैबतनाक मुसीबतें उन पर आएँगी । उस वक़्त वह कहेंगे, ‘क्या यह मुसीबतें इस वजह से हम पर नहीं आईं कि रब्ब हमारे साथ नहीं है?’ 18 और ऐसा ही होगा। मैं ज़रूर अपना चिहरा उन से छुपाए रखूँगा, क्यूँकि दीगर माबूदों के पीछे चलने से उन्हों ने एक निहायत शरीर क़दम उठाया होगा।

19 अब ज़ैल का गीत लिख कर इस्राईलियों को यूँ सिखाओ कि वह ज़बानी याद रहे और मेरे लिए उन के ख़िलाफ़ गवाही दिया करे। 20 क्यूँकि मैं उन्हें उस मुल्क में ले जा रहा हूँ जिस का वादा मैं ने क़सम खा कर उन के बापदादा से किया था, उस मुल्क में जिस में दूध और शहद की कस्रत है। वहाँ इतनी ख़ुराक होगी कि उन की भूक जाती रहेगी और वह मोटे हो जाएँगे। लेकिन फिर वह दीगर माबूदों के पीछे लग जाएँगे और उन की ख़िदमत करेंगे। वह मुझे रद्द करेंगे और मेरा अह्द तोड़ेंगे। 21 नतीजे में उन पर बहुत सारी हैबतनाक मुसीबतें आएँगी । फिर यह गीत जो उन की औलाद को याद रहेगा उन के ख़िलाफ़ गवाही देगा। क्यूँकि गो मैं उन्हें उस मुल्क में ले जा रहा हूँ जिस का वादा मैं ने क़सम खा कर उन से किया था तो भी मैं जानता हूँ कि वह अब तक किस तरह की सोच रखते हैं।”

22 मूसा ने उसी दिन यह गीत लिख कर इस्राईलियों को सिखाया।

23 फिर रब्ब ने यशूअ बिन नून से कहा, “मज़बूत और दिलेर हो, क्यूँकि तू इस्राईलियों को उस मुल्क में ले जाएगा जिस का वादा मैं ने क़सम खा कर उन से किया था। मैं ख़ुद तेरे साथ हूँगा।”

24 जब मूसा ने पूरी शरीअत को किताब में लिख लिया 25 तो वह उन लावियों से मुख़ातिब हुआ जो सफ़र करते वक़्त अह्द का सन्दूक़ उठा कर ले जाते थे। 26 “शरीअत की यह किताब ले कर रब्ब अपने

ख़ुदा के अह्द के सन्दूक़ के पास रखना। वहाँ वह पड़ी रहे और तेरे ख़िलाफ़ गवाही देती रहे। [27] क्यूँकि मैं ख़ूब जानता हूँ कि तू कितना सरकश और हटधर्म है। मेरी मौजूदगी में भी तुम ने कितनी दफ़ा रब्ब से सरकशी की। तो फिर मेरे मरने के बाद तुम क्या कुछ नहीं करोगे! [28] अब मेरे सामने अपने क़बीलों के तमाम बुज़ुर्गों और निगहबानों को जमा करो ताकि वह ख़ुद मेरी यह बातें सुनें और आस्मान और ज़मीन उन के ख़िलाफ़ गवाह हों। [29] क्यूँकि मुझे मालूम है कि मेरी मौत के बाद तुम ज़रूर बिगड़ जाओगे और उस रास्ते से हट जाओगे जिस पर चलने की मैं ने तुम्हें ताकीद की है। आख़िरकार तुम पर मुसीबत आएगी, क्यूँकि तुम वह कुछ करोगे जो रब्ब को बुरा लगता है, तुम अपने हाथों के काम से उसे ग़ुस्सा दिलाओगे।”

[30] फिर मूसा ने इस्राईल की तमाम जमाअत के सामने यह गीत शुरू से ले कर आख़िर तक पेश किया,

मूसा का गीत

32 [1] ऐ आस्मान, मेरी बात पर ग़ौर कर! ऐ ज़मीन, मेरा गीत सुन!

[2] मेरी तालीम बूँदा-बाँदी जैसी हो, मेरी बात शबनम की तरह ज़मीन पर पड़ जाए। वह बारिश की मानिन्द हो जो हरियाली पर बरसती है।

[3] मैं रब्ब का नाम पुकारूँगा। हमारे ख़ुदा की अज़्मत की तम्जीद करो!

[4] वह चटान है, और उस का काम कामिल है। उस की तमाम राहें रास्त हैं। वह वफ़ादार ख़ुदा है जिस में फ़रेब नहीं है बल्कि जो आदिल और दियानतदार है।

[5] एक टेढ़ी और कजरौ नसल ने उस का गुनाह किया। वह उस के फ़र्ज़न्द नहीं बल्कि दाग़ साबित हुए हैं।

[6] ऐ मेरी अहमक़ और बेसमझ क़ौम, क्या तुम्हारा रब्ब से ऐसा रवय्या ठीक है? वह तो तुम्हारा बाप और ख़ालिक़ है, जिस ने तुम्हें बनाया और क़ाइम किया।

[7] क़दीम ज़माने को याद करना, माज़ी की नसलों पर तवज्जुह देना। अपने बाप से पूछना तो वह तुझे बता देगा, अपने बुज़ुर्गों से पता करना तो वह तुझे इत्तिला देंगे।

[8] जब अल्लाह तआला ने हर क़ौम को उस का अपना अपना मौरूसी इलाक़ा दे कर तमाम इन्सानों को मुख़्तलिफ़ गुरोहों में अलग कर दिया तो उस ने क़ौमों की सरहद्दें इस्राईलियों की तादाद के मुताबिक़ मुक़र्रर कीं।

[9] क्यूँकि रब्ब का हिस्सा उस की क़ौम है, याक़ूब को उस ने मीरास में पाया है।

[10] यह क़ौम उसे रेगिस्तान में मिल गई, वीरान-ओ-सुन्सान बियाबान में जहाँ चारों तरफ़ हौलनाक आवाज़ें गूँजती थीं। उस ने उसे घेर कर उस की देख-भाल की, उसे अपनी आँख की पुतली की तरह बचाए रखा।

[11] जब उक़ाब अपने बच्चों को उड़ना सिखाता है तो वह उन्हें घोंसले से निकाल कर उन के साथ उड़ता है। अगर वह गिर भी जाएँ तो वह हाज़िर है और उन के नीचे अपने परों को फैला कर उन्हें ज़मीन से टकरा जाने से बचाता है। रब्ब का इस्राईल के साथ यही सुलूक था।

[12] रब्ब ने अकेले ही उस की राहनुमाई की। किसी अजनबी माबूद ने शिर्कत न की।

[13] उस ने उसे रथ पर सवार करके मुल्क की बुलन्दियों पर से गुज़रने दिया और उसे खेत का फल

खिला कर उसे चटान से शहद और सख़्त पत्थर से ज़ैतून का तेल मुहय्या किया।[l]
[14] उस ने उसे गाय की लस्सी और भेड़-बक्री का दूध चीदा भेड़ के बच्चों समेत खिलाया और उसे बसन के मोटे-ताज़े मेंढे, बक्रे और बेहतरीन अनाज अता किया। उस वक़्त तू आला अंगूर की उम्दा मै से लुत्फ़अन्दोज़ हुआ।

[15] लेकिन जब यसूरून [m]मोटा हो गया तो वह दोलत्तियाँ झाड़ने लगा। जब वह हलक़ तक भर कर तनोमन्द और फ़र्बा हुआ तो उस ने अपने ख़ुदा और ख़ालिक़ को रद्द किया, उस ने अपनी नजात की चटान को हक़ीर जाना।
[16] अपने अजनबी माबूदों से उन्हों ने उस की ग़ैरत को जोश दिलाया, अपने घिनौने बुतों से उसे ग़ुस्सा दिलाया।
[17] उन्हों ने बदरूहों को क़ुर्बानियाँ पेश कीं जो ख़ुदा नहीं हैं, ऐसे माबूदों को जिन से न वह और न उन के बापदादा वाक़िफ़ थे, क्यूँकि वह थोड़ी देर पहले वुजूद में आए थे।

[18] तू वह चटान भूल गया जिस ने तुझे पैदा किया, वही ख़ुदा जिस ने तुझे जन्म दिया।
[19] रब्ब ने यह देख कर उन्हें रद्द किया, क्यूँकि वह अपने बेटे-बेटियों से नाराज़ था।
[20] उस ने कहा, "मैं अपना चिहरा उन से छुपा लूँगा। फिर पता लगेगा कि मेरे बग़ैर उन का क्या अन्जाम होता है। क्यूँकि वह सरासर बिगड़ गए हैं, उन में वफ़ादारी पाई नहीं जाती।
[21] उन्हों ने उस की परस्तिश से जो ख़ुदा नहीं है मेरी ग़ैरत को जोश दिलाया, अपने बेकार बुतों से मुझे ग़ुस्सा दिलाया है। चुनाँचे मैं ख़ुद ही उन्हें ग़ैरत दिलाऊँगा, एक ऐसी क़ौम के ज़रीए जो हक़ीक़त में क़ौम नहीं है। एक नादान क़ौम के ज़रीए मैं उन्हें ग़ुस्सा दिलाऊँगा।
[22] क्यूँकि मेरे ग़ुस्से से आग भड़क उठी है जो पाताल की तह तक पहुँचेगी और ज़मीन और उस की पैदावार हड़प करके पहाड़ों की बुन्यादों को जला देगी।

[23] मैं उन पर मुसीबत पर मुसीबत आने दूँगा और अपने तमाम तीर उन पर चलाऊँगा।
[24] भूक के मारे उन की ताक़त जाती रहेगी, और वह बुख़ार और वबाई अमराज़ का लुक़्मा बनेंगे। मैं उन के ख़िलाफ़ फाड़ने वाले जानवर और ज़हरीले साँप भेज दूँगा।
[25] बाहर तल्वार उन्हें बेऔलाद कर देगी, और घर में दह्शत फैल जाएगी। शीरख़्वार बच्चे, नौजवान लड़के-लड़कियाँ और बुज़ुर्ग सब उस की गिरिफ़्त में आ जाएँगे।

[26] मुझे कहना चाहिए था कि मैं उन्हें चिकना-चूर करके इन्सानों में से उन का नाम-ओ-निशान मिटा दूँगा।
[27] लेकिन अन्देशा था कि दुश्मन ग़लत मतलब निकाल कर कहे, 'हम ख़ुद उन पर ग़ालिब आए, इस में रब्ब का हाथ नहीं है'।"
[28] क्यूँकि यह क़ौम बेसमझ और हिक्मत से ख़ाली है।
[29] काश वह दानिशमन्द हो कर यह बात समझें! काश वह जान लें कि उन का क्या अन्जाम है।
[30] क्यूँकि दुश्मन का एक आदमी किस तरह हज़ार इस्राईलियों का ताक़्क़ुब कर सकता है? उस के दो मर्द किस तरह दस हज़ार इस्राईलियों को भगा सकते हैं? वजह सिर्फ़ यह है कि उन की चटान ने उन्हें दुश्मन के हाथ बेच दिया। रब्ब ने ख़ुद उन्हें दुश्मन के क़ब्ज़े में कर दिया।

---

[l] लफ़्ज़ी तर्जुमा : चूसने दिया।
[m] यानी इस्राईल।

31 हमारे दुश्मन ख़ुद मानते हैं कि इस्राईल की चटान
हमारी चटान जैसी नहीं है।
32 उन की बेल तो सदूम की बेल और अमूरा के
बाग़ से है, उन के अंगूर ज़हरीले और उन के गुच्छे
कड़वे हैं।
33 उन की मै साँपों का मुहलक ज़हर है।

34 रब्ब फ़रमाता है, "क्या मैं ने इन बातों पर मुहर
लगा कर उन्हें अपने ख़ज़ाने में महफ़ूज़ नहीं रखा?
35 इन्तिक़ाम लेना मेरा ही काम है, मैं ही बदला
लूँगा। एक वक़्त आएगा कि उन का पाँओ फिसलेगा।
क्यूँकि उन की तबाही का दिन क़रीब है, उन का
अन्जाम जल्द ही आने वाला है।"

36 यक़ीनन रब्ब अपनी क़ौम का इन्साफ़ करेगा।
वह अपने ख़ादिमों पर तरस खाएगा जब देखेगा कि
उन की ताक़त जाती रही है और कोई नहीं बचा।
37 उस वक़्त वह पूछेगा, "अब उन के देवता कहाँ
हैं, वह चटान जिस की पनाह उन्हों ने ली?
38 वह देवता कहाँ हैं जिन्हों ने उन के बेहतरीन
जानवर खाए और उन की मै की नज़रें पी लीं। वह
तुम्हारी मदद के लिए उठें और तुम्हें पनाह दें।
39 अब जान लो कि मैं और सिर्फ़ मैं ख़ुदा हूँ। मेरे
सिवा कोई और ख़ुदा नहीं है। मैं ही हलाक करता
और मैं ही ज़िन्दा कर देता हूँ। मैं ही ज़ख़्मी करता
और मैं ही शिफ़ा देता हूँ। कोई मेरे हाथ से नहीं बचा
सकता।

40 मैं अपना हाथ आस्मान की तरफ़ उठा कर एलान
करता हूँ कि मेरी अबदी हयात की क़सम,
41 जब मैं अपनी चमकती हुई तल्वार को तेज़ करके
अदालत के लिए पकड़ लूँगा तो अपने मुख़ालिफ़ों से
इन्तिक़ाम और अपने नफ़रत करने वालों से बदला
लूँगा।
42 मेरे तीर ख़ून पी पी कर नशे में धुत हो जाएँगे, मेरी
तल्वार मक़्तूलों और क़ैदियों के ख़ून और दुश्मन के
सरदारों के सरों से सेर हो जाएगी।"

43 ऐ दीगर क़ौमो, उस की उम्मत के साथ ख़ुशी
मनाओ! क्यूँकि वह अपने ख़ादिमों के ख़ून का
इन्तिक़ाम लेगा। वह अपने मुख़ालिफ़ों से बदला ले
कर अपने मुल्क और क़ौम का कफ़्फ़ारा देगा।

44 मूसा और यशूअ बिन नून ने आ कर इस्राईलियों
को यह पूरा गीत सुनाया। 45–46 फिर मूसा ने उन से
कहा, "आज मैं ने तुम्हें इन तमाम बातों से आगाह
किया है। लाज़िम है कि वह तुम्हारे दिलों में बैठ
जाएँ। अपनी औलाद को भी हुक्म दो कि एहतियात
से इस शरीअत की तमाम बातों पर अमल करे।
47 यह ख़ाली बातें नहीं बल्कि तुम्हारी ज़िन्दगी का
सरचश्मा हैं। इन के मुताबिक़ चलने के बाइस तुम
देर तक उस मुल्क में जीते रहोगे जिस पर तुम दरया-
ए-यर्दन को पार करके क़ब्ज़ा करने वाले हो।"

मूसा का नबू पहाड़ पर इन्तिक़ाल

48 उसी दिन रब्ब ने मूसा से कहा, 49 "पहाड़ी
सिलसिले अबारीम के पहाड़ नबू पर चढ़ जा जो
यरीहू के सामने लेकिन यर्दन के मशरिक़ी किनारे पर
यानी मोआब के मुल्क में है। वहाँ से कनआन पर
नज़र डाल, उस मुल्क पर जो मैं इस्राईलियों को दे
रहा हूँ। 50 इस के बाद तू वहाँ मर कर अपने बापदादा
से जा मिलेगा, बिलकुल उसी तरह जिस तरह तेरा
भाई हारून होर पहाड़ पर मर कर अपने बापदादा से
जा मिला है। 51 क्यूँकि तुम दोनों इस्राईलियों के रू-
ब-रू बेवफ़ा हुए। जब तुम दश्त-ए-सीन में क़ादिस
के क़रीब थे और मरीबा के चश्मे पर इस्राईलियों
के सामने खड़े थे तो तुम ने मेरी क़ुद्दूसियत क़ाइम
न रखी। 52 इस सबब से तू वह मुल्क सिर्फ़ दूर से
देखेगा जो मैं इस्राईलियों को दे रहा हूँ। तू ख़ुद उस
में दाख़िल नहीं होगा।"

मूसा क़बीलों को बर्कत देता है

33 [1]मरने से पेशतर मर्द-ए-ख़ुदा मूसा ने इस्राईलियों को बर्कत दे कर [2]कहा,

“रब्ब सीना से आया, सईर [n]से उस का नूर उन पर तुलू हुआ। वह कोह-ए-फ़ारान से रौशनी फैला कर रिबबोत-क़ादिस से आया, वह अपने जुनूबी इलाक़े से रवाना हो कर उन की ख़ातिर पहाड़ी ढलानों के पास आया।

[3]यक़ीनन वह क़ौमों से मुहब्बत करता है, तमाम मुक़द्दसीन तेरे हाथ में हैं। वह तेरे पाँओ के सामने झुक कर तुझ से हिदायत पाते हैं।

[4]मूसा ने हमें शरीअत दी यानी वह चीज़ जो याक़ूब की जमाअत की मौरूसी मिल्कियत है।

[5]इस्राईल के राहनुमा अपने क़बीलों समेत जमा हुए तो रब्ब यसूरून [o]का बादशाह बन गया।

[6]रूबिन की बर्कत :

रूबिन मर न जाए बल्कि जीता रहे। वह तादाद में बढ़ जाए।

[7]यहूदाह की बर्कत :

ऐ रब्ब, यहूदाह की पुकार सुन कर उसे दुबारा उस की क़ौम में शामिल कर। उस के हाथ उस के लिए लड़ें। मुख़ालिफ़ों का सामना करते वक़्त उस की मदद कर।

[8]लावी की बर्कत :

तेरी मर्ज़ी मालूम करने के क़ुरए बनाम ऊरीम और तुम्मीम तेरे वफ़ादार ख़ादिम लावी के पास होते हैं। तू ने उसे मस्सा में आज़माया और मरीबा में उस से
लड़ा। [9]उस ने तेरा कलाम सँभाल कर तेरा अह्द क़ाइम रखा, यहाँ तक कि उस ने न अपने माँ-बाप का, न अपने सगे भाइयों या बच्चों का लिहाज़ किया।

[10]वह याक़ूब को तेरी हिदायात और इस्राईल को तेरी शरीअत सिखा कर तेरे सामने बख़ूर और तेरी क़ुर्बानगाह पर भस्म होने वाली क़ुर्बानियाँ चढ़ाता है।

[11]ऐ रब्ब, उस की ताक़त को बढ़ा कर उस के हाथों का काम पसन्द कर। उस के मुख़ालिफ़ों की कमर तोड़ और उस से नफ़रत रखने वालों को ऐसा मार कि आइन्दा कभी न उठें।

[12]बिन्यमीन की बर्कत :

बिन्यमीन रब्ब को पियारा है। वह सलामती से उस के पास रहता है, क्यूँकि रब्ब दिन रात उसे पनाह देता है। बिन्यमीन उस की पहाड़ी ढलानों के दर्मियान महफ़ूज़ रहता है।

[13]यूसुफ़ की बर्कत :

रब्ब उस की ज़मीन को बर्कत दे। आस्मान से क़ीमती ओस टपके और ज़मीन के नीचे से चश्मे फूट निकलें।

[14]यूसुफ़ को सूरज की बेहतरीन पैदावार और हर महीने का लज़ीज़तरीन फल हासिल हो।

[15]उसे क़दीम पहाड़ों और अबदी वादियों की बेहतरीन चीज़ों से नवाज़ा जाए।

[16]ज़मीन के तमाम ज़ख़ीरे उस के लिए खुल जाएँ। वह उस को पसन्द हो जो जलती हुई झाड़ी में सुकूनत करता था। यह तमाम बर्कतें यूसुफ़ के सर पर ठहरें, उस के सर पर जो अपने भाइयों में शहज़ादा है।

[17]यूसुफ़ साँड के पहलौठे जैसा अज़ीम है, और उस के सींग जंगली बैल के सींग हैं जिन से वह दुनिया की इन्तिहा तक सब क़ौमों को मारेगा। इफ़्राईम के बेशुमार अफ़राद ऐसे ही हैं, मनस्सी के हज़ारों अफ़राद ऐसे ही हैं।

[18]ज़बूलून और इश्कार की बर्कत :

[n]अदोम।

[o]इस्राईल।

ऐ ज़बूलून, घर से निकलते वक़्त ख़ुशी मना। ऐ इश्कार, अपने ख़ैमों में रहते हुए ख़ुश हो।
19 वह दीगर क़ौमों को अपने पहाड़ पर आने की दावत देंगे और वहाँ रास्ती की क़ुर्बानियाँ पेश करेंगे। वह समुन्दर की कस्रत और समुन्दर की रेत में छुपे हुए ख़ज़ानों को जज़ब कर लेंगे।

20 जद की बर्कत :
मुबारक है वह जो जद का इलाक़ा वसी कर दे। जद शेरबबर की तरह दबक कर किसी का बाज़ू या सर फाड़ डालने के लिए तय्यार रहता है।
21 उस ने अपने लिए सब से अच्छी ज़मीन चुन ली, राहनुमा का हिस्सा उसी के लिए महफ़ूज़ रखा गया। जब क़ौम के राहनुमा जमा हुए तो उस ने रब्ब की रास्त मर्ज़ी पूरी की और इस्राईल के बारे में उस के फ़ैसले अमल में लाया।

22 दान की बर्कत :
दान शेरबबर का बच्चा है जो बसन से निकल कर छलाँग लगाता है।

23 नफ़ताली की बर्कत :
नफ़ताली रब्ब की मन्ज़ूरी से सेर है, उसे उस की पूरी बर्कत हासिल है। वह गलील की झील और उस के जुनूब का इलाक़ा मीरास में पाएगा।

24 आशर की बर्कत :
आशर बेटों में सब से मुबारक है। वह अपने भाइयों को पसन्द हो। उस के पास ज़ैतून का इतना तेल हो कि वह अपने पाँओ उस में डुबो सके।
25 तेरे शहरों के दरवाज़ों के कुंडे लोहे और पीतल के हों, तेरी ताक़त उम्र भर क़ाइम रहे।

26 यसूरून के ख़ुदा की मानिन्द कोई नहीं है, जो आस्मान पर सवार हो कर, हाँ अपने जलाल में बादलों पर बैठ कर तेरी मदद करने के लिए आता है।
27 अज़ली ख़ुदा तेरी पनाहगाह है, वह अपने अज़ली बाज़ू तेरे नीचे फैलाए रखता है। वह दुश्मन को तेरे सामने से भगा कर उसे हलाक करने को कहता है।
28 चुनाँचे इस्राईल सलामती से ज़िन्दगी गुज़ारेगा, याक़ूब का चश्मा अलग और महफ़ूज़ रहेगा। उस की ज़मीन अनाज और अंगूर की कस्रत पैदा करेगी, और उस के ऊपर आस्मान ज़मीन पर ओस पड़ने देगा।
29 ऐ इस्राईल, तू कितना मुबारक है। कौन तेरी मानिन्द है, जिसे रब्ब ने बचाया है। वह तेरी मदद की ढाल और तेरी शान की तल्वार है। तेरे दुश्मन शिकस्त खा कर तेरी ख़ुशामद करेंगे, और तू उन की कमरें पाँओ तले कुचलेगा।”

मूसा की वफ़ात

34 1 यह बर्कत दे कर मूसा मोआब का मैदानी
इलाक़ा छोड़ कर यरीहू के मुक़ाबिल नबू
पहाड़ पर चढ़ गया। नबू पिसगा के पहाड़ी सिलसिले
की एक चोटी था। वहाँ से रब्ब ने उसे वह पूरा
मुल्क दिखाया जो वह इस्राईल को देने वाला था यानी
जिलिआद के इलाक़े से ले कर दान के इलाक़े तक,
2 नफ़ताली का पूरा इलाक़ा, इफ़्राईम और मनस्सी
का इलाक़ा, यहूदाह का इलाक़ा बहीरा-ए-रूम तक,
3 जुनूब में दश्त-ए-नजब और खजूर के शहर यरीहू
की वादी से ले कर ज़ुग़र तक। 4 रब्ब ने उस से कहा,
“यह वह मुल्क है जिस का वादा मैं ने क़सम खा कर
इब्राहीम, इस्हाक़ और याक़ूब से किया। मैं ने उन से
कहा था कि उन की औलाद को यह मुल्क मिलेगा।
तू उस में दाख़िल नहीं होगा, लेकिन मैं तुझे यहाँ ले
आया हूँ ताकि तू उसे अपनी आँखों से देख सके।”
5 इस के बाद रब्ब का ख़ादिम मूसा वहीं मोआब के
मुल्क में फ़ौत हुआ, बिलकुल उसी तरह जिस तरह
रब्ब ने कहा था। 6 रब्ब ने उसे बैत-फ़ग़ूर की किसी

वादी में दफ़न किया, लेकिन आज तक किसी को भी मालूम नहीं कि उस की क़ब्र कहाँ है।

7 अपनी वफ़ात के वक़्त मूसा 120 साल का था। आख़िर तक न उस की आँखें धुन्दलाईं, न उस की ताक़त कम हुई। 8 इस्राईलियों ने मोआब के मैदानी इलाक़े में 30 दिन तक उस का मातम किया।

9 फिर यशूअ बिन नून मूसा की जगह खड़ा हुआ। वह हिक्मत की रूह से मामूर था, क्यूँकि मूसा ने अपने हाथ उस पर रख दिए थे। इस्राईलियों ने उस की सुनी और वह कुछ किया जो रब्ब ने उन्हें मूसा की मारिफ़त बताया था।

10 इस के बाद इस्राईल में मूसा जैसा नबी कभी न उठा जिस से रब्ब रू-ब-रू बात करता था। 11 किसी और नबी ने ऐसे इलाही निशान और मोजिज़े नहीं किए जैसे मूसा ने फ़िरऔन बादशाह, उस के मुलाज़िमों और पूरे मुल्क के सामने किए जब रब्ब ने उसे मिस्र भेजा। 12 किसी और नबी ने इस क़िस्म का बड़ा इख़्तियार न दिखाया, न ऐसे अज़ीम और हैबतनाक काम किए जैसे मूसा ने इस्राईलियों के सामने किए।